धर्मशास्त्रीयव्यवस्थासंग्रहः

सरस्वतीभवनप्रकाशनमाला—८५

प्रधानसम्पादकः

पं० कुबेरनाथशुक्लः, एम. ए. व्याकरणाचार्यः

धर्मशास्त्रीयव्यवस्थासंग्रहः

सम्पादकः
श्रीसुभद्रशर्मा
राजकीयसरस्वतीभवनपुस्तकालयाध्यक्षः

प्राप्तिस्थानम्—
उत्तरप्रदेशशासकीयमुद्रणालयाध्यक्षः
इलाहाबाद

मूल्यम् ......

समर्पणपद्यानि

राजनीतिनिपुणोऽपि प्रत्याख्यातप्रियानृतव्याजः ॥
प्रेमोल्लसितसमाजः समाजनीयः समासद्भिः ॥ १ ॥

आधुनिकोऽपि निबद्धश्रद्धः प्राचीनपद्धतौ सुकृती ॥
धृतसंस्कृतसाहित्योद्धरणधुरश्चिद्विलासरसमधुरः ॥ २ ॥

श्रीसम्पूर्णानन्दोऽप्यानन्दतु मत्समर्पितं विन्दन् ॥
धर्मोत्तमव्यवस्थासंग्रहमुल्लासितं सद्यः ॥ ३ ॥

भवदादेशमहिम्ना ग्रन्थोऽयं वै प्रकाशितः श्लाघ्यः ॥
स्फुरतु भवत्करतलयोः सहस्रपत्रश्रिया निहितः ॥ ४ ॥

राज्यधुराभिर्भवतः सुबन्धुराभिर्न शान्तिमनुभवतः ॥
वस्त्वन्तरे लघुन्यपि प्रवृत्तिरस्यैरुदाहार्या ॥ ५ ॥

इति श्रीसुभद्रस्य

वक्तव्य

सन् १९५४ ई० में काशिक राजकीय संस्कृत महाविद्यालय के उपाधिवितरणोत्सव के अवसर पर सरस्वती-भवन के कुछ चुने हुए हस्त-लिखित ग्रन्थों की प्रदर्शनी हुई थी। उसमें इस राज्य के मुख्य मन्त्री डाक्टर श्री सम्पूर्णानन्दजी तथा भूतपूर्व शिक्षामन्त्री ठाकुर श्री हरगोविन्द सिंह जी ने धर्मशास्त्रीयव्यवस्था-संग्रह की तीन पुस्तकें देखकर इन्हें प्रकाशित कराने की इच्छा व्यक्त की। तदनन्तर शीघ्र ही प्रशासकीय आदेश हुआ कि इस ग्रन्थ के अविलम्ब प्रकाशन की व्यवस्था की जाय। अतः इसे जनता के समक्ष उपस्थित किया जा रहा है।

यह बात सर्वविदित है कि भारतवर्ष में अंग्रेजी राज्य की स्थापना के आरम्भिक दिनों में न्यायालयों की यह व्यवस्था थी कि वहाँ धर्मशास्त्र के ज्ञाता पण्डित तथा शरियत के जानकार मौलवी इस कार्य के लिये नियुक्त थे कि वे व्यवहार-निर्णयाधिकारियों की सहायता सबद्ध धर्मशास्त्र की दृष्टि से किया करें। सन् १८२४ ई० के आरम्भ से लेकर सन् १८३६ साल तक की कलकत्ते की सदर दीवानी अदालत द्वारा उससे सबद्ध प्रधानतया पण्डित वैद्यनाथ मिश्र से धर्मशास्त्र के विषय में जितनी जिज्ञासायें की गयी थीं तथा उन्होंने जो परामर्श दिये थे वे ग्रन्थ रूप में प्रकाशित किये जा रहे हैं। इस प्रसंग में यह भी ज्ञातव्य है कि आरम्भिक वर्षों में पण्डित रामतनुशर्मविद्यावागीश भी पण्डित वैद्यनाथ मिश्र के साथ परामर्श दिया करते थे, तथा मिश्रजी की अस्वस्थता की अवधि में उनके इस कार्य का सम्पादन पण्डित हीरानन्द मिश्र ने किया था।

पण्डितजी के पास अदालत से जो प्रश्न आते थे, प्रमाण सहित उनका जो उत्तर वे देते थे, उनकी प्रतिलिपि पण्डितजी अपने पास रख लेते थे। इन्हीं प्रतिलिपियों के आधार पर यह ग्रन्थ संपादित हुआ है। एक प्रति के आरम्भ में लिखा हुआ है 'श्रीवैद्यनाथमिश्रस्य पुस्तकमिदम्।'

इस व्यवस्था संग्रह में अदालतों द्वारा की गयी जिज्ञासाओं की भाषा बङ्गला है तथा पण्डितों ने उनके उत्तर संस्कृत में दिये हैं। अनेक अपील के मुकदमों में ऐसा भी हुआ था कि छोटी अदालतों से पण्डितों की तथा वादियों एवं प्रतिवादियों द्वारा उपस्थापित स्वतन्त्र पण्डितों की व्यवस्थायें भी पुनर्निरीक्षण के हेतु सदर दीवानी अदालत के पण्डित के पास भेजी जाती थीं। इस प्रकार की व्यवस्थाओं में भाषा विषयक नियमों में कुछ परिवर्तन भी हुआ है। व्यवस्थायें बङ्गाक्षर में लिखी गयी हैं, यहाँ तक कि हिन्दी के वाक्य भी उसी लिपि में हैं। हाँ, पण्डित वैद्यनाथ मिश्र के हस्ताक्षर देवनागर में हैं।

हिन्दुओं के उत्तराधिकार आदि से संबन्धित विषयों के नियम आज तक बहुत बदल चुके हैं, तथा इन व्यवस्थाओं के निर्णय बहुत अंशों में अमान्य हो गये हैं, पर इनका निजी महत्त्व कई दृष्टियों से स्पष्ट है। सर्वप्रथम तो १६वीं शताब्दी के पूर्व मध्यकालीन उत्तर भारत के समाज की स्थिति का बहुत कुछ परिचय हमें विश्वसनीय रूप से इसकी सहायता से प्राप्त होता है। बङ्गभाषा में उस समय का इतना बड़ा गद्य ग्रन्थ अभी तक उपलब्ध नहीं हुआ है। हमें इसकी सहायता से इस भाषा की ध्वनियों तथा पदों का विवरण बहुत-कुछ ज्ञात हो सकता है। इनके अतिरिक्त भारतीय न्यायव्यवस्था के इतिहास के अध्ययन के लिए बहुत ही उपयोगी सामग्री इस ग्रन्थ में निहित है।

इस प्रकार के इस ग्रन्थ से अधिक से अधिक विद्वान् लाभ उठावें इस ध्येय से इसे बङ्गला लिपि में नहीं छापकर देवनागरी लिपि में मुद्रित कराया गया है। बङ्गला भाग की भाषा में कुछ भी परिवर्तन नहीं किया गया, पर संस्कृत अंशों में जो बहुत सी अशुद्धियाँ थीं उनका संशोधन कर दिया गया है। बङ्गलिपि में अथवा मूलकोष में व–ब का भेद नहीं है—इस बात को दृष्टि में रखकर इन दोनों व्यञ्जनों के स्थान पर बाङ्गला में 'ब' ही लिखा गया है, एवं संस्कृत से भिन्न भाषाओं के 'व' वाले शब्द भी संस्कृत में भी वकार से ही लिखे गये हैं। संस्कृत भाग में उद्धृत वचनों के मूल ग्रन्थों का पत्रादि निर्देश यथासंभव दिया गया

वक्तव्य

सन् १९५४ ई० में काशिक राजकीय संस्कृत महाविद्यालय के उपाधिवितरणोत्सव के अवसर पर सरस्वती-भवन के कुछ चुने हुए हस्त-लिखित ग्रन्थों की प्रदर्शनी हुई थी। उसमें इस राज्य के मुख्य मन्त्री डाक्टर श्री सम्पूर्णानन्दजी तथा भूतपूर्व शिक्षामन्त्री ठाकुर श्री हरगोविन्द सिंह जी ने धर्मशास्त्रीयव्यवस्था-संग्रह की तीन पुस्तकें देखकर इन्हें प्रकाशित कराने की इच्छा व्यक्त की। तदनन्तर शीघ्र ही प्रशासकीय आदेश हुआ कि इस ग्रन्थ के अविलम्ब प्रकाशन की व्यवस्था की जाय। अतः इसे जनता के समक्ष उपस्थित किया जा रहा है।

यह बात सर्वविदित है कि भारतवर्ष में अंग्रेजी राज्य की स्थापना के आरम्भिक दिनों में न्यायालयों की यह व्यवस्था थी कि वहाँ धर्मशास्त्र के ज्ञाता पण्डित तथा शरियत के जानकार मौलवी इस कार्य के लिये नियुक्त थे कि वे व्यवहार-निर्णयाधिकारियों की सहायता संबद्ध धर्मशास्त्र की दृष्टि से किया करें। सन् १८२४ ई० के आरम्भ से लेकर सन् १८३६ साल तक की कलकत्ते की सदर दीवानी अदालत द्वारा उससे संबद्ध प्रधानतया पण्डित वैद्यनाथ मिश्र से धर्मशास्त्र के विषय में जितनी जिज्ञासायें की गयी थीं तथा उन्होंने जो परामर्श दिये थे वे ग्रन्थ रूप में प्रकाशित किये जा रहे हैं। इस प्रसंग में यह भी ज्ञातव्य है कि आरम्भिक वर्षों में पण्डित रामतनुधर्मविद्यावागीश भी पण्डित वैद्यनाथ मिश्र के साथ परामर्श दिया करते थे, तथा मिश्रजी की अस्वस्थता की अवधि में उनके इस कार्य का सम्पादन पण्डित हीरानन्द मिश्र ने किया था।

पण्डितजी के पास अदालत से जो प्रश्न आते थे, प्रमाण सहित उनका जो उत्तर वे देते थे, उनकी प्रतिलिपि पण्डितजी अपने पास रख लेते थे। इन्हीं प्रतिलिपियों के आधार पर यह ग्रन्थ संपादित हुआ है। एक प्रति के आरम्भ में लिखा हुआ है 'श्रीवैद्यनाथमिश्रस्य पुस्तकमिदम्।'

इस व्यवस्था-संग्रह में अदालतों द्वारा की गयी जिज्ञासाओं की भाषा बङ्गला है तथा पण्डितों ने उनके उत्तर संस्कृत में दिये हैं। अनेक अपील के मुकदमों में ऐसा भी हुआ था कि छोटी अदालतों से पण्डितों को तथा वादियों एवं प्रतिवादियों द्वारा उपस्थापित स्वतन्त्र पण्डितों को व्यवस्थायें भी—पुनर्निरीक्षण के हेतु, सदर दीवानी अदालत के पण्डित के पास भेजी जाती थीं। इस प्रकार की व्यवस्थाओं में भाषा विषयक नियमों में कुछ परिवर्तन भी हुआ है। व्यवस्थायें बङ्गाक्षर में लिखी गयी हैं, यहाँ तक कि हिन्दी के वाक्य भी उसी लिपि में हैं। हाँ, पण्डित वैद्यनाथ मिश्र के हस्ताक्षर देवनागर में हैं।

हिन्दुओं के उत्तराधिकार आदि से संबन्धित विषयों के नियम आज तक बहुत बदल चुके हैं, तथा इन व्यवस्थाओं के निर्णय बहुत अंशों में अमान्य हो गये हैं, पर इनका निजी महत्त्व कई दृष्टियों से स्पष्ट है। सर्वप्रथम तो १९वीं शताब्दी के पूर्व मध्यकालीन उत्तर भारत के समाज की स्थिति का बहुत कुछ परिचय हमें विश्वसनीय रूप से इसकी सहायता से प्राप्त होता है। बङ्गभाषा में उस समय का इतना बड़ा गद्य ग्रन्थ अभी तक उपलब्ध नहीं हुआ है। हमें इसकी सहायता से इस भाषा की ध्वनियों तथा पदों का विवरण बहुत-कुछ ज्ञात हो सकता है। इनके अतिरिक्त भारतीय न्याय-व्यवस्था के इतिहास के अध्ययन के लिए बहुत ही उपयोगी सामग्री इस ग्रन्थ में निहित है।

इस प्रकार के इस ग्रन्थ से अधिक से अधिक विद्वान् लाभ उठावें इस ध्येय से इसे बङ्गला लिपि में नहीं छापकर देवनागरी लिपि में मुद्रित कराया गया है। बङ्गला भाग की भाषा में कुछ भी परिवर्तन नहीं किया गया, पर संस्कृत अंशों में जो बहुत सी अशुद्धियाँ थीं उनका संशोधन कर दिया गया है। वङ्गलिपि में अथवा मूलकोष में व-ब का भेद नहीं है—इस बात को दृष्टि में रखकर इन दोनों व्यञ्जनों के स्थान पर बाङ्गला में 'ब' ही लिखा गया है, एवं संस्कृत से भिन्न भाषाओं के 'ब' वाले शब्द भी संस्कृत में भी बकार से ही लिखे गये हैं। संस्कृत भाग में उद्‌धृत वचनों के मूल ग्रन्थों का पत्रादि निर्देश यथासंभव दिया गया

है। अन्तिम भाग में पड़ने वाले ऐसे वचन जो बार-बार पूर्व भाग में आ चुके हैं उनके लिए ऐसा निर्देश प्रायः नहीं दिया गया है।

खेद के साथ लिखना पड़ता है कि हमें कई ग्रन्थ उपलब्ध नहीं हो सके, अतः उनके वचनों के पाठों का मिलान हम नहीं कर सके हैं।

इस ग्रन्थ के सम्पादन में हमें महाविद्यालय के प्रधानाचार्य पण्डित श्री कुबेरनाथ शुक्ल ने बार-बार प्रोत्साहन देकर सहायता की है। पुस्तकालय के हस्तलिखित ग्रन्थविभाग के मेरे साथियों में पण्डित श्रीविभूतिभूषण भट्टाचार्य ने विभिन्न प्रकार से समय-समय पर सहयोग दिया है, पण्डित श्रीचन्द्रभानु पाण्डेय तथा पण्डित श्रीनिशाकान्त पाठक ने प्रतिलिपि बनाने में सहायता की थी, पण्डित तारकनाथजी ने आरम्भ से लेकर समाप्ति तक किसी न किसी रूप में मेरे इस कार्य में हाथ बँटाया है, पण्डित श्रीरघुनाथ पाण्डेय संस्कृत के प्रूफ-संशोधन में मेरे निरन्तर सहयोगी रहे हैं तथा इस कार्य में समय-समय पर पण्डित श्रीराजाराम भट्टमहने भी सहयोग दिया है।

मैं इन सब साथियों का ऋणी हूँ, साथ-साथ यह भी व्यक्त करना आवश्यक समझता हूँ कि इस ग्रन्थ की त्रुटियों का उत्तरदायित्व एकमात्र मुझ पर ही है, मेरे इन सहायकों पर नहीं।

मुझे दुःख है कि प्रेस के कर्मचारियों की असावधानी के कारण तथा मेरे दृष्टिदोष के कारण बहुत सी अशुद्धियों का संशोधन ग्रन्थ के प्रारम्भिक भाग में नहीं हो सका है। टाइपों के टूटने तथा प्रूफ की अस्पष्टता के कारण भी कई स्थानों पर त्रुटियाँ रह गयी हैं। अतः सावधान रहने पर भी शुद्धिपत्र कुछ लम्बा हो गया है। तदर्थ मैं क्षमाप्रार्थी हूँ।

अन्त में मैं अपने माननीय गुरुदेव डा० श्री सुनीतिकुमारचटर्जी तथा कलकत्ता हाइकोर्ट के न्यायाधीश श्री प्रशान्तविहारीमुखर्जी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूँ, जिन्होंने इसे देखकर इसकी भूमिका की रचना में एवं ग्रन्थ के बङ्गाक्षर में भी प्रकाशित कराने के हेतु मेरी सब प्रकार की सहायता करने की उदारता प्रकट की है।

इस ग्रन्थ के वैशिष्ट्यों का निदर्शन बृहद् भूमिका के बिना नहीं हो सकता है। इस कार्य में कुछ अधिक समय लगेगा, तथा एतदर्थ मेरा कलकत्ते में कुछ सप्ताह बिताना आवश्यक है, जो अभी तक संभव मालूम नहीं पड़ रहा है। अतः भूमिका की प्रतीक्षा में ग्रन्थ के प्रकाशन में विलम्ब न कर इसे विद्वानों के समक्ष इस आशा से रख रहा हूँ कि सहृदय विद्वानों की दृष्टि इस पर पड़ेगी, तथा जिस भूमिका के लिखने की जो सुविधा मुझे नहीं हो सकी है, उसमें उनका भी सहयोग प्राप्त हो सकेगा।

श्रीसुभद्रझा
१९ चैत्र १८७९ शकाब्द



क्रमाङ्कः	नामसङ्केतः	ग्रन्थनाम	ग्रन्थप्रकाशननिवापनस्थानम्	लिखितमुद्रितविवरणम्	विशेषविवरणम्
१	अस.	अत्रिसंहिता	बङ्गवासीप्रेस, कलकत्ता सन् १३१६ बं०	मुद्रित०	ऊनविंशसंहितान्तर्गता (२ संस्करणम्)
२	आसं.	आपस्तम्बसंहिता	"	"	"
३	उसं.	उशनःसंहिता	"	"	"
४	उत.	उद्वाहतत्त्वम्	नारायणप्रेस, कलकत्ता, ई० १८९५	"	जीवानन्दविद्यासागरप्रकाशितम् (२ संस्करणम्)
५	कल्प.	कल्पतरुः	सरस्वतीभवनपुस्तकालय०, गु० सं० कालेज, काशी,	लिखित०	पुस्तकसंख्या १४०६१
६	कात्य.	कात्यायनस्मृतिः	आर्यसंस्कृतिप्रेस, पूना, ई०, सन १९३३	"	पी० वी० काणे
७	काषु	कालिकापुराणम्		"	
८	कृत्यक.	कृत्यकल्पतरुः	सरस्वतीभवनपुस्तकालय०, गु० सं० कालेज, काशी	लिखित०	पुस्तकसंख्या ११६७४।१३४७३
९	गाय.	गायत्रीतन्त्रम्	चन्द्रप्रभाप्रेस, काशी, ई० सन १८९७	मुद्रित०	हरिदासगुप्तेन प्रकाशितम्
१०	गौसं.	गौतमसंहिता	बङ्गवासीप्रेस, कलकत्ता, सन १३१६ बङ्गाब्द.	"	ऊनविंशसंहितान्तर्गता (२ संस्करणम्)
११	तित.	तिथितत्त्वम्	नारायणप्रेस, कलकत्ता, ई० सन १८९५	"	जीवानन्दविद्यासागरप्रकाशितम् (२ संस्करणम्)
१२	दसं.	दक्षसंहिता	बङ्गवासीप्रेस, कलकत्ता, सन १३१६ बङ्गाब्द	"	ऊनविंशसंहितान्तर्गता (२ संस्करण)
१३	दच.	दत्तकचन्द्रिका	गुर्जरप्रेस, कलकत्ता	"	मधुसूदनस्मृतिरत्नप्रकाशित०
१४	दमी.	दत्तकमीमांसा	"	"	"
१५	दत्तद.	दत्तकदर्पणः	सरस्वतीभवनपुस्तकालय०, गु० सं० कालेज, काशी,	लिखित०	पुस्तकसंख्या १२३०५
१६	दत्को.	दत्तककौमुदी	"	"	" १२६९२
१७	दाभा.	दायभागः	सिद्धेश्वरप्रेस, कलकत्ता, ई० सन १८९३	मुद्रित०	जीवानन्दविद्यासागरप्रकाशित० (२ संस्करणम्)

क्रमाङ्क	नामसङ्केतः	ग्रन्थनाम	ग्रन्थप्रकाशननिर्गमनस्थानम्	लिखितमुद्रितविवरणम्	विशेषविवरणम्
१८	दाय.	दायतत्त्वम्	नारायणप्रेस, कलकत्ता, ई० सन १८६५	मुद्रित०	जीवानन्दविद्यासागरप्रकाशित० (२ संस्करणम्)
१९	दायक्रम.	दायक्रमसंग्रहः	भवानीपुरमुद्रणप्रेस, कलकत्ता, ई० सन १८७८	"	—
२०	दानम.	दानमयूखः	गुजरातीप्रेस, मुम्बई, ई० सन १९२४	"	—
२१	दिव्यत.	दिव्यतत्त्वम्	नारायणप्रेस, कलकत्ता, ई० सन १८६५	"	जीवानन्दविद्यासागरप्रकाशित० (२ संस्करणम्)
२२	देवप्र.	देवप्रतिष्ठातत्त्वम्	"	"	"
२३	द्वैतनि.	द्वैतनिर्णयः	सागरेश्वरविद्यालयप्रेस, रामघाट, काशी, संवत् १९६५	"	सूर्यनारायणशुक्लप्रकाशित०
२४	द्वैतप	द्वैतपरिशिष्टम्	सरस्वतीभवनपुस्तकालय, ग० सं० कालेज, काशी	लिखित०	पुस्तकसंख्या ११३४१
२५	धर्मको.	धर्मकोशः	आनन्दाश्रमप्रेस, पूना, ई० सन १९२७	मुद्रित०	लक्ष्मणरामजीजोशीप्रकाशित०
२६	नारस्मृ.	नारदस्मृतिः	एशियाटिकसोसाइटी, कलकत्ता	"	—
२७	नारसं.	नारदीयमनुसंहिता	गवर्नमेण्टप्रेस, त्रिवेन्द्रम्, ई० सन् १९२९	"	के० साम्बशिवशास्त्रिसंशोधित०
२८	पराम.	परा. संहिता	बङ्गवासीप्रेस, कलकत्ता, सन १३१९ बङ्गाब्द०	"	उत्कलिकासंहितान्तर्गता (२ संस्करणम्)
२९	प्रयोत.	प्रयोगतत्त्वम्	नारायणप्रेस, कलकत्ता, ई० सन १८६५	"	जीवानन्दविद्यासागरप्रकाशित०, (२ संस्करणम्)
३०	प्रायवि	प्रायश्चित्तविवेकः	सिद्धेश्वरप्रेस, कलकत्ता, ई० सन १८९३	"	"
३१	बृस्मृ	बृहस्पतिस्मृतिः	राजकीयप्राच्यग्रन्थविमर्शालय०, बड़ोदा, संवत् १९९८	"	श्रीरङ्गस्वामिशर्मणा सम्पादिता,
३२	मस्मृ.	मनुस्मृति	गुजरातीप्रेस, मुम्बई, ई० सन १९१३	"	"
३३	मठप्र.	मठप्रतिष्ठातत्त्वम्	नारायणप्रेस, कलकत्ता, ई० १८६५	"	जीवानन्दविद्यासागरप्रकाशित०, (२ संस्करणम्)
३४	मलत.	मलमासतत्त्वम्	"	"	"

क्रमाङ्कः	नामसङ्केतः	ग्रन्थनाम	ग्रन्थप्रकाशननिधापनस्थानम्	लिखितमुद्रितविवरणम्	विशेषविवरणम्
३५	मद्पा.	मदनपारिजातः	सरस्वतीभवनपुस्तकालय०, ग० सं० कालेज, काशी	लिखित०	पुस्तकसंख्या ११६१५।१२०४२।
३६	मभा.	महाभारतम्	आर्यसंस्कृतिप्रेस, पूना, ई० सन १९३७	मुद्रित०	
३७	मिता.	मिताक्षरा	निर्णयसागरप्रेस, मुम्बई, ई० सन १९०९	,,	—
३८	यमसं.	यमसंहिता	वङ्गवासीप्रेस, कलकत्ता, सन १३१६ बङ्गाब्द	,,	ऊनविंशतिसंहितान्तर्गता (२ संस्करणम्)
३९	याज्ञ.	याज्ञवल्क्यस्मृतिः	निर्णयसागरप्रेस, मुम्बई, ई० सन १९०६	,,	—
४०	वसिसं.	वसिष्ठसंहिता	वङ्गवासीप्रेस, कलकत्ता, सन १३१६ बङ्गाब्द	,,	ऊनविंशतिसंहितान्तर्गता (२ संस्करणम्)
४१	बाल.	बालम्भट्टी	मद्रास, मजवादिप्रेस, ई० सन १९१२।	,,	—
४२	विचि.	विवादचिन्तामणिः	कलकत्तासागरसुधानिधिप्रेस, सन् १८३७	,,	—
४३	विच.	विवादचन्द्रः	दरभंगानगर्यां विद्यापतिमन्त्रालये मुद्रितः	,,	—
४४	विर.	विवादरत्नाकरः	एशियाटिकसोसाइटी, ई० सन १८८७ शकाब्द०, १८०९		—
४५	विसे.	विवादार्णवसेतुः	वेङ्कटेश्वरप्रेस, मुम्बई, सम्वत् १९४५	,,	—
४६	विभ.	विवादभङ्गार्णवः	सरस्वतीभवनपुस्तकालय, ग० सं० कालेज काशी	लिखित०	पुस्तकसंख्या-२२३८६।
४७	विस्मृ.	विष्णुस्मृतिः	एशियाटिक सोसाइटी, कलकत्ता, ई० सन १८८१	मुद्रित०	—
४८	वीमि.	वीरमित्रोदयः	सुधावर्षणप्रेस, कलकत्ता, ई० सन १८७५	,,	जीवानन्दविद्यासागरप्रकाशित०, व्यवहाराध्यायः।
४९	वैधसू.	वैखानसधर्मसूत्रम्	चौखम्बासंस्कृतसिरीज, बनारस ,, १९३०	,,	जयकृष्णदासहरिदासगुप्तप्रकाशित० ,,

अनुपलब्धपुस्तकनामानि—

१—व्यवहारकौस्तुभः
२—दायरहस्यम्
३—व्यवहारचिन्तामणिः
४—दत्तकदीधितिः
५—गौतमप्रश्नः
६—भक्तामरस्तुतिः
७—व्यवस्थार्णवः
८—धर्मरत्नम्

व्यवस्था-पत्र-संग्रह:

श्रीज्जयतितराम्

१—रोवकारि मिसिल आदालत देओयानी सदर ईरेजी १८२४ साल तारिख १० माह जुलाइ मताबक बङ्गला १२३१ साल तारिख २८ आषाढ रोज शनिवार आदालत मजकुरार द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्टनी इशमिट साहेबेर बैठके ···।

बाबु हरप्रकाश सिंह ·····आपीलाण्ट।

मृत बाजा[1] देलगञ्जन देओ ···· रष्पाडण्ट।

सन हालेर २५ मार्च मासेर हओया ए आदालतेर परिसप्टेर जवाबे सन हालेर १५ मेइ मासेर लिखित एलाका बारानसेर प्रवनसन कोटेर हाकिमदिगेरा पाठानो रिटरन ओ ताहार सम्बिलितेर रोवकारि ओ कागजात सहित सम्वरे पँहुछिया दृष्टे आइल। ताहार पर लाला राधाकृष्ण ओ मौलवि गोलाम एजदानि उकिलेरा मृत राजा देलगञ्जन देओयेर स्त्री रानी[2] गोलाव कोइरेर तरफ हइते आपनादिगेर नामिक एक केता ओकागचनामा[3] द्वारा ओ मौलवी नेयामत आलि बाबु शुभनाथ सिंहेर तरफ हइते आपन नामिक एक केता ओकागचनामा[3] दाखिल करिया हाजिर हइल। हाल शनेर ३ जुलाइ मासेर दाखिल हओया बाबु हरकनाथ सिंहेर सओयाल इत्यादि। ऐ सओयालेर सम्पर्कीय कागजात सम्वलित ताहार उकिल मुनशी हसन आलिर हाजिरिते दृष्टे (आ)इल। जाना गेल जे सरकारेर आइने राजा ओ राजार कथा नाहि, ओ ईरेजी १७९३ सालेर एगार

१. राजा।
२. रानी गोलाब कोइर।
३. ओकालतनामा।

आइन अनुसारे, जे इंरेजी १७९५ सालेर चौयल्लिप आइन मते वारानसेर एलाकाते जारि हय, ये व्यक्ति घन ओ वृत्ति राखिया मरे ताहार धन ओ वृत्ति, यदि हिन्दु हय शास्त्र माफिक ओ यदि मशलमान हय शरा माफिक, ताहार उत्तराधिकारिदिगेर मध्ये विभाग हइवेक। ओ ए मकर्द्दमाते मजुत कागजात अनुसारे आर यह दृष्टे ये राजा देलगञ्जन देओ अकस्मात दालानेर छात पड़िया मरियाछे प्रकाश वटे ये,ऐ व्यक्ति मरण पर्य्यन्त आपन धन ओ वृत्तिर उपर दखिल ओ कावेज छिल, ओ तखन मरयेर किछु अनुमान छिल ना आरन समस्ते कोन व्यक्तिके आपन धन ओ वृत्तिर उपर कखनो दखिल ओ कावेज कराइयाछिल ना। अत-एव आमार निकट ताहार स्त्री राणी गोलाव कोइरेर दखल एताहार नितान्त अमूलक ओ अनर्थक वटे; ओ पक्षे ए मकरदमार काजिया उपस्थित हओन पर्य्यन्त कहारो दखल छिलो ना, ओ तिन पक्षेर्ह दखल ना थाकन 'प्रकारेे इंरेजी १८१३ सालेर यह आइनेर लिः सम्पर्क प्रकाश वटे। ए कारण शास्त्रेर आज्ञा जानान निमित्ते पण्डितदिगेर स्थाने सओयाल करण आवश्यक हइल। ओ जाना गेल ये राजा भओयावल[1] देओ राजा ईश्वरि वक्स देओ ओ राजा देलगञ्जन देयो ओ बाबु आटुलाल[2] सिंह ओ बाबु शुभनाथ सिंहके उत्तराधिकारि राखिया मरिल, ओ ऐ चारि इहेर मध्ये प्रथम राजा ईश्वरि वक्स देओ अप्राप्तव्यवहार एक पुत्र, ये ताहार नाम जाना गेलो ना, ओ बड़ स्त्री राणी सिउराज कोइर ओ छोट स्त्री राणी अभिमान कोइरके उत्तराधिकारि राखिया मरिल। ताहार पर ऐ अप्राप्तव्यवहार पुत्र मरिल। तदपरे बाबु आटुलाल सिंह बाबु हरकनाथ ओ बाबु जयनाथ सिंहके उत्तराधिकारि राखिया मरिल। ताहार पर राजा देलगञ्जन देओ राणी गोलाव कोइरके उत्तराधिकारि राखिया निःसन्तान

१. भयावनदेव।

२. आल्ह.द सिंह

मरिल, श्रो बाबु शुमनाथ सिंह अद्यापि वर्तमान आछे। अतएव ए अदालतेर पण्डितदिगेर स्थाने जिज्ञासा जाय ये पश्चिम देशेर शास्त्रमते राजा देलगञ्जन देओवेर त्यक्त धन श्रो वृत्ति कोन व्यक्तिके, अर्थात् ताहार स्त्री राणी गोलाव कोङरके किम्वा ताहार भ्राता शुमनाथ सिंहके अथवा ताहार भ्रातुष्पुत्र हरकनाथ सिंह श्रो जयनाथ सिंहके अर्शे, श्रो एइ सओयालेर जवाव लिखने मृत व्यक्ति ये राजा छिल ताहार पर दृष्टि करिवेन ना। ऐ व्यक्तिरा अन्य २ लोक हओने जे प्रकार जवाव लिखितेन सेइ प्रकार जवाव लिखिवेन; श्रो पण्डितदिगेर जवाव दाखिल हओन परे पुनर्व्वार कागजात दृष्टे श्रानिया मनाशीव हुकुम देओया जाइवेक, श्रो एइ रोवकारि सओयालेर स्थाने जाना जाय, इहार नकल पण्डितदिगके समर्पण करा जाय।

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतकुर्टनीइश्वमिटसाहेवधर्म्माधिकरण-लिखितप्रश्नपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यत्र पुत्रपौत्रप्रपौत्रपर्य्यन्तरहितो देलगंजननामा कश्चन व्यक्तिविशेषो गोलावकोमराख्यां पत्नीमेकां शुमनाथसिंहनामानमेकं सोदरभ्रातरं हरकनाथ-सिंह-जयनाथसिंहनामानौ द्वौ भ्रातुष्पुत्रौ च संत्यज्य मृतः। तत्र तदीयविभक्त-स्थावरास्थावरधने तत्पत्न्या गोलावकोमराख्याया एवाधिकारः। मओया-[1] मलदेवसंज्ञकः चतुरः पुमान्[2] ईश्वरीविक्रयदेव-देलावर्गञ्जनदेव-बाबु-आल्हाद-सिंह-बाबु-शुमनाथसिंहानुत्तराधिकारिणः संत्यज्य मृतस्तत्र तेषान्तद्धन-मविभक्तं चेत्तदा देलगंजनयोर्य्यांशो सोदरभ्रातुः शुमनाथसिंहस्याधि-कारः, तत्पत्नी यावज्जीवमशनाच्छादनभागिनीति पश्चिमदेशप्रचलित-मिताक्षरादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था।

---

१. मओवलदेवसंज्ञकः

२. पुमांसि

अत्र प्रमाणम्

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धु —इत्यादि मिताक्षराग्रन्थधृत (पृ-२१७) याज्ञवल्क्य-वचनम् (२,१३५) ॥ १ ॥

अपुत्रधनं पत्न्यभिगामि तदभावे दुहितृगामि तदभावे मातृगामि तदभावे पितृगामि तदभावे भ्रातृगामि तदभावे भ्रातृपुत्रगामि इत्यादि तद्धृत-बृहद्विष्णु-वचनम् ॥ २ ॥

पत्नी गृह्णीयात् इत्येतद्वचनजातं विभक्तभ्रातृस्त्रीविषयम्। इति मिताक्षरा (पृ० २१७)-लिखनम् ॥ ३ ॥

अनन्तरः सपिण्डाद्यस्तस्य तस्य धनं भवेत्—इति मनुवचनञ्चेति (९, १८७)।

श्रीर्जयतितराम्

श्रीहरिः शरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्मविद्यावागीशेन

२—लम्बर २०४२

२ सदर देमनी आदालतेर द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्टनी इशमिट साहेबेर हुजुर हइते।

दुल्ली पाँडे ओ गयरह — आपीलाण्टान्

काशी पाँडे ओ गयरह — रेस्पाण्डण्टानेर

२०४२ लम्बरेर मकद्दमाते इङ्गरेजी सन १८२४ सालेर २९ जुलाइ मासेर रोवकारिर लिखित बेहारेर शास्त्रमते आइन्दा मङ्गलवार दिवस दुइ प्रहर पर्य्यन्त जवाव दाखिल करणेर म्यादे ए आदालतेर पण्डित वैद्यनाथ मिश्रेर नामे सओयाल एइ ये—

प्रथम सओयाल–

वेहारदेशेर चलितशास्त्रमते कोन व्यक्तिके, जे से आपन पितार एक पुत्र वटे, दत्तक प्रकारे पुत्रताते लओन सिद्ध वटे कि ना।

द्वितीय सओयाल–

स्थावर किंवा अस्थावर, साधारण ओ अविभक्त धनेर हेवा दाता व्यक्तिर अंशेर सम्वन्धे सिद्ध वटे किना।

तृतीय सओयाल–

महाब्राह्मणीय वृत्ति हस्तान्तर योग्य वटे कि ना। आर यद्यपि कयेक जन ब्राह्मणेर मध्ये साधारणे थाके ताहार मध्ये कोनो व्यक्तिके विभाग ना हओने विक्रय किम्वा हेवा प्रकारे आपन हिस्या हस्तान्तर करणेर क्षमता आछे कि ना।

चतुर्थ सओयाल–

महाब्राह्मणीय वृत्ति जे ताहार उपर अंशीरा दिन नियुक्त पाला प्रकारे दाखिल ओ भोगी थाके शास्त्रानुसारे एक पालार अंशी दिगेर अंश समस्त अंशीगणेर मध्ये साधारण ओ अविभक्त, किम्वा से पालार अंशीदिगेरइ पृथक् ओ विभक्त जाना जाय इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्[1]

जवाव-व्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतकुटंनीहशाहिबसाहेवधर्म्माधिकरण-लिखितप्रश्नपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्। यः कश्चित्[2] स्वपितुर्जनकस्यैक एव पुत्रः स त्र वेहारदेशप्रचलितशास्त्रानुसारेणान्यस्य दत्तकपुत्रत्वं न प्राप्नोतीति।

---

१. श्रीजं यतितराम्—व्यप०।

२. कश्चित—व्यप०।

अत्र प्रमाणम् —

नैकपुत्रेण कर्तव्यं पुत्रदानं कथञ्चन ।[1]
बहुपुत्रेण कर्त्तव्यं पुत्रदानं प्रयत्नतः ॥ इति दत्तकमीमांसा (पृष्ठ ६६) दत्तकचन्द्रिका (पृष्ठ ११) धृत-शौनकवचनम् ।

न त्वेवैकं पुत्रं दद्यात्[2] प्रतिगृह्णीयाद्वा स हि सन्तानाय पूर्वेषाम् इति मिताक्षरा-(२/२१३)-दत्तकमीमांसा-दत्तकचन्द्रिका (पृष्ठ १०)-धृतवसिष्ठवचनम् ।

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम् । सामुदायिकानेकस्वत्वास्पदीभूताविभक्त-साधारणस्थावरास्थावरधने स्वामिना मध्ये कश्चित् सर्वेषां स्वामिनामनुमतिं विना स्वांशं कल्पयित्वा तस्य दानं कर्त्तुं न शक्नोति ।

अत्र प्रमाणम् —

अविभक्ता विभक्ता वा सपिण्डाः[3] स्थावरे समाः ।
एको ह्यनीशः सर्वत्र दानाधमनविक्रये ॥ इति मिताक्षरा[4] (पृष्ठ २१६) धृत-व्यासवचनम् ।

निक्षेपः पुत्रदाराश्च सर्वस्वं चान्वये सति ।
आपत्स्वपि हि कष्टासु वर्तमानेन देहिना ।
अदेयान्याहुराचार्या यच्च साधारणं धनम् ॥ इति दत्तकमीमांसा (पृष्ठ ११२) धृत-नारदवचनम् ।

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम् —

महाब्राह्मणानां वृत्तिर्महाब्राह्म(ण)भिन्नगमनयोग्या न भवति, महाब्राह्मणानामेव प्रेतश्राद्धभोजन-प्रेतोद्देश्यकशय्या-दानादि-

---

1. कथञ्चन इति पाठो दत्तकमीमांसायाम् ।
2. न त्वेकं पुत्रं दद्यात्...धर्मकोषधृत व० स्मृ० १५/१-८, मिता०—२/१३० द० मी०—१११
3. "सपिण्डाः" इत्यस्य स्थाने "दायदाः" इति वा पाठः ; स्मृ० च० १११; करयोर्जिरियमिति मिताक्षरादा ज्ञातुं न शक्यते ।
4. द० मी० पृ० ११२, ध०को०—७१८

दान-स्वीकर्तृत्वेन तेषां वृत्तिर्महाब्राह्मणैकयोग्यत्वात्। तत्र यदि बहूनां महाब्राह्म(णा)नां साधारण्यविभक्ता सा वृत्तिर्भवति तदा तेषां मध्ये कस्यचिदप्येकस्य विभागं विनाऽन्येषामंशिनामनुमतिं विना तस्यांशं कल्पयित्वा विक्रयदानक्षमता नास्तीति।

अत्र प्रमाणम् :—

यत्तालङ्कारशय्यादि पितुर्यद्वाहनादिकम्।
गन्धमाल्यैः समभ्यर्च्य श्राद्धभोक्त्रे समर्पयेत्[१]॥ इति मिताक्षरा-(पृ० २/११६) लिखित-बृहस्पति-वचनम् (पृष्ठ २४६)।

निक्षेपः पुत्रदाराश्च सर्वस्वं चान्वये सति—इत्यादिदत्तकमीमांसा-धृतनारदवचनञ्च।

चतुर्थप्रश्नस्योत्तरम्—

यत्र बहूनां महाब्राह्मणानां काचिद् वृत्तिस्तस्यां वृत्तौ एतद्दिनोत्पन्नानि द्रव्याण्येतेषाम्, एतद्दिनोत्पन्नान्यन्येषामितिरीत्या ते नियुक्ता भोगिनश्च। तत्र एकदिनोत्पन्नद्रव्यभोगिनो दिनान्तरोत्पन्नद्रव्यभोगिभ्यो विभक्ता एव। तद्दिनोत्पन्नं द्रव्यं तद्दिनोत्पन्नद्रव्यभोगिनामसाधारणं विभक्तं भवति। किन्तु एकदिनोत्पन्नद्रव्यभोगिनां तद्दिनोत्पन्नं द्रव्यं साधारणमविभक्तञ्चेति मिताक्षरादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था।

अत्र प्रमाणम् :—

विभागो नाम द्रव्यसमुदायविषयाणामनेकस्वाम्यानामेकदेशेषु विषयतया व्यवस्थापनम्॥ इति मिताक्षरा (पृ० २१३) लिखनम्।

श्रीजर्जयतितराम् श्रीवैद्यनाथमिश्रशर्मा

---

[१] प०को०—१२२३, 'समर्पयेत्'इत्यस्य स्थाने "तदर्पयेत्" इति धर्मकोशस्थः पाठः।

३—द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्टनी इशमिट साहेवेर वैठके सश्रोयाल एइ ये—

सश्रोयाल

ए आदालतेर पण्डितेरा कल्य द्विप्रहरेर मध्ये ए विषयेर जबाव दाखिल करेन—ये जिला सारन साकिनेर हिन्दुजाति एक व्यक्ति दुइ सहोदर भ्रातार दुइ पुत्र ओ अन्य दुइ सहोदर भ्रातार कएक जन पौत्र उत्तराधिकारि राखिया मरियाछे, ओ ऐ देशेर चलित शास्त्रमते मृतव्यक्तिर त्यक्त धन केवल ताहार भ्रातृपुत्रदिगेके अर्शे, किंवा ताहार भ्रातृपुत्रदिग्गे एवं ताहार अन्य सहोदर दुइ भ्रातार पौत्र दिग्गेइ अर्शे इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

जबाब-व्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतकुर्टनीइशमिटसाहेवधर्म्माधिकरण-लिखितप्रश्नस्त्रमत्रलोकस्य याहशाबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते। यत्र सारणदेशीयहिन्दुजातीयः कश्चन व्यक्तिविशेषः चतुर्णां सोदरभ्रातॄणां मध्ये द्वयोर्भ्रात्रोर्द्वौ पुत्रौ द्वयोर्भ्रात्रोः कतिपयपौत्रांश्चोत्तराधिकारिणः संरक्ष्य मृतस्तत्र तदीयधने पुत्रपौत्रप्रपौत्ररूपापत्यपत्न्यादिभ्रातृपर्य्यन्तानपत्यधनाधि-कार्यभावे तत्सोदरभ्रातृपुत्रयोरधिकारो न तु तयोः सतो.[1] भ्रातृ-पौत्राणाम्-इति तद्देशप्रचलितमिताक्षरादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः इत्यादिमिताक्षरादि-ग्रन्थ (पृ० २।१३५) धृत-याज्ञवल्क्य-वचनम्।१।

---

१. सहोदर-व्यव०।

२. पौत्राश्च-व्यव०।

३. सतो-व्यव०।

अनपत्यस्य धनं पत्न्यभिगामि तदभावे दुहितृगामि तदभावे भ्रातृपुत्रगामि ॥ इत्यादि मिताक्षरादिग्रन्थ (पृ० २|१३५) धृत-विष्णु-वचनम्[1]। २।

बहवो ज्ञातयो यत्र सकुल्या बान्धवास्तथा।
यस्त्वासन्नतरस्तेषां सोऽनपत्यधनं हरेत्॥
इत्यादि बृहस्पति[2]वचनञ्चेति। ३।

श्रीउर्ज्जयतितराम् श्रीहरिःशरणम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

४—रोवकारि मिसिल आदालत देवोयानि सदर तारिख २९ माह आगस्त सन् १८२४ ई० मतावक १० माह भाद्र सन् १२३१ बाङ्गला ए अदालतेर कायम मकाम प्रथम हाकिम श्रीयुत जान हरवट हारिण्टोन साहेबेर बैठके।

मुसम्मात दिपु आपीलाण्ट
गौरिशङ्कर रेष्पाडण्ट

आपीलाण्टेर उकिल बाबु जगन्नाथ सिंह ओ रेष्पाडण्टेर एइ चारिकार वकिलगण मुनशी आमजद आलि ओ मुनशी आमिनदिन आहमद सालि हाजीर आसिल। एइ सनेर जुन मासेर ३० तारिखेर हुकुम मते रेष्पाडण्टेर उकिलगणेर दाखिल करा व्यवस्था तर्ज्जमा हइया ऐ तारिखे दाखिल हइया रेष्पा-डण्टेर दरखास्त सम्बि(स्वलि)त पड़ा गेल। रेष्पाडण्टेर उकिलगण जिज्ञासा कालीन जाहिर करिलेक जे गणेशदत्त शर्म्मा ओ त्रिपाठी वेदमणि शर्म्मा ओ चातुर्व्वेदि विश्वम्भरदत्त शर्म्मा ओ रामनाथ शर्म्मा ओ विक्रम शर्म्मा ऐ जुन मासेर ३० तारिखेर

---

१. "वृद्धविष्णु-व्यव०"

२. ध० कोष—२५१८ 'बृहस्पति' इत्यस्यस्थाने 'मनु'—इति पाठः—व्यव०।

दाखिल हओया व्यवस्थार लेखक पण्डितगण सदर आजिमाबाद साकिमेर प्रधान पण्डित वटेन, किन्तु ताहार मध्ये केह आदालतेर पण्डिति कर्म्म किम्बा सरकारेर अन्य कर्म्म राखे ना इति। अतएव यद्यपि एमत याजे पण्डितगणेर व्यवस्थार उपर ये सरकारेर चाकरगणेर मध्ये नाइ आदालतेर प्रत्यह(य) हइते पारे ना। किन्तु एइ दृष्टे ये एइ मकद्दमार तजविज ओ निष्पत्तिकालीन एइ आदालतेर पूर्व्वेर पण्डित शोभाशास्त्रिर माञुलि प्रयुक्त एक पण्डित अर्थात् रामतनुविद्यावागीशेर व्यवस्था लओया गियाछे, एइ क्षण शोभाशास्त्रिर पओजे वैद्यनाथ मिश्र पण्डित नियुक्त हइयाछेन हुकुम हइल, ये एइ मकद्दमार कागज मधि वैद्यनाथ मिश्रेर हाथोयाले करा जाय, तबे एइ सनेर फेब्रोयारि मासेर ६ तारिखेर रोवकारिर लिखित सओयाल सकलेर जवाब सुबे वेहारेर महाल सकल सहर पाटना प्रभृतिर चलित शास्त्रमते महरम ओ दशहरार तारिखेर पर १५ दिवसेर मध्ये व्यवस्था दाखिल करेन। तबे ताहार परे ए आदालतेर कायम मकाम हाकिमेर विवेचनाय एइ केताब जे उचित लाना जाइवेक हुकुम देओया जाइवेक इति।

रोवकारि मिसिल आदालतं देओयानी सदर तारिख ६ फेब्रयारि सन १८२४ इङ्गरेजी मताबक बङ्गला १२३० साल तारिख १८ माघ रोज सोमवार आदालत मजकुरार कायम मकाम हाकिम श्रीयुत जान हरबट हारिङ्गटोन साहेबेर बैठके।

- मुसम्मात हिंगु पाण्ड   आपीलाण्ट
- गौरीशङ्कर   रेस्पाण्डण्ट

आपिलाण्टेर वकिल बाबु जगन्नाथ सिंह ओ रोद रेस्पाण्डण्ट ओ ताहार वकिल मुनशी. दादारवकस ओ लाला ब्याउधलाल हाजिर हइल। एइ मासेर ३ तारिखेर हुकुममते सेरस्तादार एक केता कैफियत ताहार लिखित विषयेर मजमुने ओ अनुप सिंहेर

सन्तानेर कुरशीनामा एक केता दाखिल करिबेन[1] । दृष्टे आइल । तद्परे उभयेर उकिलेरा ऐ कुरशीनामार सत्यतार उपर स्वीकार करिबेक इति । ए मकद्दमार समस्त कागचेर अनुमोदने जाना गेल ये रप्पाडएट मुद्दइ एइ एजहारे सहर अजिमावादेर मध्ये जियाताम्पुल महल्या साकिमेर[2] गुलु चौधुरि पितामहेर ओ पितार स्वोपार्जित मालामाल मिलकियत ओ मकररि ग्राम सकल ओ शोना ओ रूपार अलङ्कार ओ ओ काँचा पाका वाटी सकल ओ ओगाहि पटी[3] ओ शतरञ्जी ओ गालिचा विछाना ओ पितलिया हाडी आदि वासन ओ पोपाकी कापड ओ दोशाला आदि वस्त्र सकल ये मिलकियत मकररि ग्राम सकल ओ ओगाहि पाटार उपर स्वत्व ओ वाटी सकल ओ अलङ्कार ओ शतरञ्जी ओ गालिचा आदिर किम्मत एकुने आन्दाजि मवलग ९००१ टाका निचेर लिखित माफिक हइवेक राखिया फसली १२१३ सालेर आश्विन मासे मुर्दहके ओ आपन भ्रातुष्पुत्र जगुके उत्तराधिकारि राखिया मरिलेक, ओ पूर्व्वाधिकारि मरणेर पर आपन पूर्व्वाधिकारिर त्यक्त धनेर उपर दखिल ओ भोगी हइल । ताहार[5] पर आमार भ्राता जगु फसली १२१६ सालेर १० माघ मासे केवल आमाके उत्तराधि(कारी) राखिया मरिल । एइ क्षणे ऐ जगु(र) स्त्री मसम्मात दिपु त्यक्त धनेर उपर दखिल हइया वसु नाम जगुर भागिनेयके आपन मालिक मक्तार जानिया समस्त धन, वस्त्र ओ ग्राम आदिर उपस्वत्व भोग कराइते छे, ओ आमाके, जो उत्तराधिकारि बटी, बेदखल करे इति । जगु बाबुर स्त्रि दीपु ओ ऐ जगु बाबुर भागिनेय वसुलालेर उपर

१, करिलेन—इति साधीयान् पाठः

२, साकिनेर इति साधीयान् पाठः ।

३, भोगादि कुठी ।

४. 'भोगादिपाटी' इत्यपि पठितुं शक्यते ।

५. जाहार ताहार—इति व्यप० ।

दाधि करिलेक, ओ मुद्दइर उकिल प्रवनसन कोटेर रद्द जवावे येओरा वयान करिलेक जे आमार मओक्कल गुलु बावुर त्यक्त धने दावि राखे, ओ गुलु बावुर मृत्युर पर गुलु बावुर सहोदर भ्रातार पुत्र जगु दखिल रहिल, जगुर मृत्युर पर आमार मओक्कल व्यतित, जे गुलु बावुर खुडतुता भ्रातुष्पुत्र हय, गुलु बावुर अन्य उत्तराधिकारि नाइ इति। ओ मुद्दाआलेहेरा प्रवनसन कोट आदालतेर जवावे ओ रद्द' जवावे' ओ एइ त्तण दसुनाखेर' मृत्युर पर मसम्मात दिपु आपीलाण्ट ए आदालतेर दाखिल करा आरजी मजुवाते यजुपसिंहेर त्यक्त धन ताहार पुत्रदिगेर मध्ये, अर्थात् आपीलाण्टेर पति जगु बावुर पितामह भोलानाथ ओ रष्पाडण्टेर पितामह शम्भुनाथेर सहित, विभाग हओन, ओ ऐ भोलानाथेर मौरसी हिस्यार दुइ केता बाटी व्यतित विरोधि समुदय धन गुलु बावुर निकट, ताहार पिता भोलानाथेर त्यक्त धन हइते, जे ऐ भोलानाथ हरनाथ सेठीर कन्या के विवाह करिया छिल, उपार्जन हओन ओ गुलु बावुर भ्रातुष्पुत्र जगन्नाथ बावुर उत्तराधिकारित्व-सत्वे गुलु बावुर एकरार जे गुलु बावुर मृत्युर पर ऐ एकरार मते ओ भ्रातुष्पुत्र सम्पर्केंगुलुबावुर मृत्युर आइयाम फसली ११११२ सालेर माह आश्विन हइते आपन मृत्यु फसली १२१६ सालेर माघमास पर्य्यन्त मुद्दइर ओ अन्य काहारो विना दाओया ओ आपत्तिते गुलु बावुर त्यक्त धनेर पर दखिल रहियाछे। एजाहार मुद्दइर उत्तराधिकारित्व सत्वेर उपर अस्वीकार हइल, ओ शास्त्रमते आपन उत्तराधिकारित्व-सत्वेर जाहेर करिलेक, ओ प्रवनसन कोटेर जओयावे मुद्दाआलेहेरा जाहेर करियाछिल जे हरनाथ सेठीर स्त्री भोलानाथेर प्रथम पुत्र बख्तीरामेर माहार(या)मही ये, एइ भोलानाथ हरनाथ

---

१. रद्द।

२. जवा मे ओ इति व्यप०।

३. दसुनाथेर इति साधीयान् पाठः।

सेठीर कन्याके विवाह करियाछिल, ऐ वस्तीरामके आपन पुत्र करिया लइया समस्त धन, वग्न ओ ओगाहि कुठीर[1] कारबारेर कर्त्ता करियाछिल। यथा वस्तीराम आपन जीवद्दशापर्य्यन्त ओगाहि ओ गयरहेर कारवार करियाछे, ऐ वस्तीरामेर मृत्यु पर अर्द्धेक[2] ओगाहि कारवारेर आञ्जाम गुलु वावु करियाछे, ओ वस्तीरामेर अर्द्धेक हिस्यार आञ्जाम ताहार पुत्र जगुलाल ओ दौहित्र दसुलाल दियाछे। यथा ओगाहिर कारवारे अनेक टाका महाजनेर देना हइयाछिल दसुलाल आपन मातार अलङ्कार विक्रय करिआ महाजनान् देनाते दियाछे। एइ क्षणेह महाजनान् देना वाकी आछे इति। किन्तु इङ्गरेजी १८१३ सालेर १७ आपरेल मासेर हम्रोया प्रवनसन फोर्टेर रोवकारिते मुदाआलेहे-दिगेर उकिल एइ विषय जिज्ञासाकालीन ये आपन जवाव दाविते लिखियाछे ये वस्तीरामके ऐ वस्तीरामेर माहा(ता) मही हरनाथ सेटीर[3] ओ आपन पुत्र करिया लइयाछे। जखन ऐ वस्तीराम अन्येर सन्तानेर मध्ये दाखिल हइल गुलुर मृत्युर पर वस्तीरामेर पुत्र जगु गुलुर उत्तराधिकारित्वे कि प्रकार आदालते हाजिर हइया मकद्दमार सओयाल जवाव करियाछे। जवाव दिलेक ये वस्तीराम आपन महा(ता)महीर दत्तक हइआ छिल ना, जवाव दाविते सहक्रमे लेखा गियाछे, ओ वस्तीराम आपन जीवद्दशाय आपन पुत्र जगुके गुलुर स्थाने समर्पन करिया छिल, ओ एइ हेतुते जगु गुलुर उत्तराधिकारित्वे आदालते हाजिर हइया नालिप करियाछिल इति। अर्थात् गुलु वावु मुदइ-मिवनजिवुल्वा ओ दोरदान खातुन मुदाआलेहेदिगेर मकद्दमाते ये मौजे मक्करिया ओ अनेर ए विवरावत ऐ गुलुर जीवद्दशाते सदर पाटनार आदालते तजविजेर निचे छिल। ऐ गुलुर उत्तराधिकारि

---

१. पाटीर।
२. अर्द्धेक।
३. सेठी।

तलबे इस्ताहार जारि हओन कालीन जगु बाबु उत्तराधिकारि-त्वे प्रकारे मुद्दइरा कायम मकाम हइया हाजिर हइया इङ्गरेजी १८०७ सालेर ११ युन मासेर हओया ऐ आदालतेर डिक्रि आपन सत्वे हासील करिलेक, ओ इङ्गरेजी १८२० सालेर २२ नवम्बर मासेर हओया ए आदालतेर साबेक चतुर्थ हाकीमेर हुकुम करा तहकिकाते गुलु बाबुर पितामह अनुपसिंहेर त्यक्त ताहार मृत्युर पर ताहार पुत्र भोलानाथेर दखली साहबाज मगल महल्लार छोटो दुइ केता बाटी व्यतित विरोधिय अन्य किछु माल अनुप सिंहेर त्यक्त साब्यस्थ हय नाइ, ओ ऐ छोटो दुइ केता बाटीर परिवर्त्ते ये भोलानाथेर हिस्या हय ऐ महल्लार अनुप सिंहेर त्यक्त ओ ताहार पुत्र ऐ मुद्दइर पितामह शम्भुनाथेर दखली। बड एक केता पाका बाटी हिजरि १२२२ साल मताबक फसली १२२४ सालेर २२ सहरस ६ बान तारिख स्वयं मुद्दइर निकट हइते लाला मूलचन्द्रेर निकट विक्रय हइल। यथा स्वयं लाला मूलचन्द्रेर जयानवन्दिते तहकिकत हइल, ओ यद्यपि अनुपसिंहेर त्यक्त मालामाल ताहार पुत्र भोलानाथ ओ शम्भु नाथेर मध्ये विभाग हओन दीर्घकालगत हओन हेतुते आपीलाण्टेर मानित साक्षीदिगेर साक्षाते उचित मत साब्यस्थ हइल ना। तत्रापि पृथक २ बाटीते ऐ दुइ भ्रातार उत्तराधिकारि दिगेर प्रथम दखल हेतुते ओ रेस्पाण्डेण्टेर मानित साक्षीर द्वाराय दीर्घकाल पर्य्यन्त एकान्न ओ साधारणेर कारबार साब्यस्थ ना हओने आपिलाण्टेर पति जगु बाबुर[1] मुरप भोलानाथ ओ मुरप शम्भुनाथेर मध्ये पूर्व्वे विभाग हओनेर द्रुत बोध हय। अतएव हुकुम हइल ये एइ रोवकारिर नकल उभयेर उकिलगणेर स्वीकार करा कुरसीनामा सम्वलित ए आदालतेर पण्डितदिगके

१ जगुर मुरप।

-समर्पन' करा जाय ये सुवे येहारेर चलित शास्त्रमते एक सप्ताहेर मध्ये एइ सञोयालेर जवाव व्यवस्था दाखिल करेन।

प्रथम सञोयालः—

उपरे उल्लेख करा विषय सकलेर ओ ऐ कुरसीनामार दृष्टे जगु वावुर मृत्युर पर गुलु वावु ओ जगु वावुर त्यक्त धनेर उपर कोन व्यक्ति उत्तराधिकारित्वेर सत्व राखे, ओ यद्यपि जगु वावुर स्त्री मसम्मात दिपु जीवदशा पर्य्यन्त ऐ धनेर उपर सत्व राखे, ताहार मृत्युर पर कोन व्यक्ति के वर्तिवे।

द्वितीय सञोयालः—

यद्यपि जगु वावुर पिता' वस्ती रामके ताहार मातामही हरनाथ सेठीर स्त्री आपन कर्त्ता पुत्र करिया थाके, ए हेतुते जगु वावुर खुडा गुलुवावुर त्यक्त धनेर उपर जगुवावुर उत्तराधिकारित्व स्वत्व नष्ट हय कि ना इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्।

एतद्धर्म्माधिकरणमण्डमाधिपतिस्थानाभिषिक्तश्रीयुतवानहरवर्टहारिण्टीन-साहेव-धर्म्माधिकरण-लिखित-प्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तदाशापितवंशावलीपत्रं चावलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्।

अनूपसिंहसंज्ञकः कश्चिद् व्यक्तिविशेषः पूर्व्वमासीत्तस्य पुत्रौ भोलानाथशम्भूनाथौ। तयोर्म्मध्ये भोलानाथोऽनूपसिंहस्य हर्म्यत्रयमध्ये लघुहर्म्यद्वयमादाय विभागपत्रादिकमकृत्वापि पृथगासीत्; शम्भूनाथोऽपि तथैव वृहत्तदेकहर्म्यमादायासीत्तथापि तद्दिनमारभ्य भोलानाथशम्भूनाथयोः पृथक् पृथक् स्थिति-² वाणिज्यकरणकृष्यादिना। एवं तयोः पुत्रपौत्राणामपि

१. पितार स्त्रीराम-व्यव०।

२. स्थिति-व्यव०।

पृथगेव स्थिति, वाणिज्यकरणकृष्यादिना[1] । एवं शम्भूनाथगृहीतानूप-सिंहीयवृहदेकदम्यंस्य केवलं[2] तत्पौत्रगौरीशंकरकर्तृकविक्रयेणापि चानूप-सिंहधनस्य विभाग एव निश्चितः । एवं निश्चिते विभागे भोलानाथपुत्र कश्चित् गुल्लुबाबुसंज्ञकः सोदरभ्रातृपुत्रादीनुत्तराधिकारिणः संत्यज्य मृतः । तदीय-समस्त-स्थावरास्थावरधनं तत्सोदरभ्रातृपुत्रेण जमुनाबाबुसंज्ञकेनोत्तराधिका-रित्वेन प्राप्तमिति । तदीयधनमपि जमुनाबाबुसंज्ञकस्य स्वत्वास्पदीभूतं जातम् । अतो जमुनाबाबुसंज्ञकस्य मरणोत्तरं तत्स्वत्वास्पदीभूतं यावद्धनं तदुत्तराधि-कारिणा(म्) भवति । अतस्तद्धने जमुनाबाबुसंज्ञकस्य पत्नी दीपुनाम्नी भवत्यधि-कारिणी । तत्पुत्राद्यन्यथाभावात् तन्मरणोत्तरं तदानीं वर्तमानानां तस्या भर्तुः सपिण्डादीनां मध्ये य आसन्नतरः सपिण्डादिस्तस्य (तद्धनं) भविष्य-तीति बेहारदेशप्रचलितमिताक्षरादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

विभागस्य निह्नवेऽपलापे ज्ञातिभिः पितृबन्धुभिः मातृबन्धुभिः मातुलादिभिः साक्षिभिः पूर्वोक्तलक्षणैः लेख्येन च विभागपत्रेण विभागभावना विभागनिश्चयो[3] ज्ञातव्यः, तथा यौतकैः पृथक्कृतैर्गृह-क्षेत्रैश्च—इति मिताक्षरा (पृष्ठ २३१) लिखनम् ॥१॥

दानग्रहणपश्वन्नगृहक्षेत्रपरिग्रहाः ।
विभक्तानां पृथग् ज्ञेयाः पाकधर्मागमव्ययाः ॥२॥
येषामेताः क्रिया लोके प्रवर्तन्ते स्वरिक्थतः ।
विभक्तानवगच्छेयुर्लेख्यमप्यन्तरेण तान् ॥३॥ इति विवादचिन्ता-मणि (२१।१०४)-वीरमित्रोदय-व्यवहारमयूखाद्यनेक-ग्रन्थधृतनारदवचनम् (*नारद०* १४।३६) ।

१. कृष्यादिना च व्यव० ।

२. केवल-व्यव० ।

३. 'निश्चयो' इत्यस्य स्थाने 'निर्णयो' मिताक्षरायाम् ।

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ॥
तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः शिष्यः सब्रह्मचारिणः—इत्यादि मिताक्षरादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् (२।१३५) ॥ ४ ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्

यद्यपि झगुबाबुसंज्ञकस्य पिता बस्तीरामः स्वमातामहस्य हरनाथसेटी[1] संज्ञकस्य स्त्रिया कृत्रिमपुत्रः कृतः, कृत्रिमपुत्रस्यैव मिथिलादेशे कर्तापुत्र इति प्रसिद्धिः, तथापि कृत्रिमपुत्रस्य जनकादिसपिण्डानां पुत्रत्वकरस्य च धनाधिकारित्वम्, तदुभयोः श्राद्धाधिकारित्वञ्च मैथिलग्रन्थकारसंमतं मिथिलादेशप्रचलितं च । अतो झगुबाबुसंज्ञकस्य पितृव्य(स्य) गुलजुबाबु-संज्ञकस्य मरणोत्तरं तदीयधने झगुबाबुसंज्ञकस्योत्तराधिकारित्वेन स्वत्व-नाशो न भवतीति ।

अत्र प्रमाणम्

स च पुत्रत्वकरस्यापि पिण्डप्रदः निजपित्रादीनां(च) पिण्डप्रदत्वं तस्य तिष्ठत्येव[2] इति शुद्धिविवेके[3] रुद्रधरोपाध्यायलिखितम् (पृ० ३१ पं० पङ्क्ति ६)।

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीहरिः शरणम्
श्रीरामतनुशर्मविद्यावागीशेन

---

१ हरनाथसेठी ।
२ तिष्ठत्येव—अप० ।
३ सन पुत्रत्वकरस्य पिण्डप्रदः इति शुद्धिविवेकपाठः ।

श्रीर्जयतिराम्

५ रोवकारि, सिछिल, आदालत देओयानी सदर इङ्गरेजी १८२४ साल तारिख २६ अक्तुवर मतावक ११ माह कार्त्तिक सन १२३१ याङ्गला रोज मङ्गलवार आदालत मजकुरार द्वितीय[1] हाकिम श्रीयुत कुर्टेनी इशमिट साहेवेर वैठके—

शेख गोलाम आली— वनाम—मिरजा एवराहिम वेग

मुनशी दादारवक्श उकिल विद्यमाने आसिया आपन नामिक एक केता ओकालतनामा सायेलेर तरफ हइते दाखिल करिलेक। तत परे हालसालेर १० आगस्ति मासेर लिखित धारानसेर कोर्ट आपीलेर रिटरन ताहार सम्वलितेर रोयकारि ओ मकद्दमार रोयदाद सहित पँहुछिया ए आदालतेर दाखिल करा सओयालादिर सङ्गे अद्य दृष्ट आइल। हुकुम हइल जे ए आदालतेर शरवे अधिकारीरा ५ लंवम्वे[2] वरावर शेख गोलाम आलीर दाओयार आरजि ओ १० लंवरे वरायत श्रीमति धनवंत ओ श्रीमति धन्नार सओयाल २० लंवरे वरायत मिरजा एवराहिम वेग मुद्दाआलेहेर दाखिल करा दाविर जवावेर मजमुन वेत्ता हइया फतोआ लिखेन जे आमिर वक्शेर त्यक्त धन ऐ मुद्दइ के अर्शे, किम्वा[3] ताहार माता ओ भगिनी सकल ओ भ्राता सकल कें ये अद्यापि हिन्दु जातिते छिर[4] आछे, ओ ए आदालतेर पण्डितेरा ५ ऐ तिन कागचेर मजमुनेर वेत्ता हइया ऐ सओयालेर जवाव वारानशेर शास्त्रानुसारे लिखेन। तवे फतोया ओ व्यवस्था दृष्ट हओन परे जे उचित हुकुम देओया जाइवेक।

---

१ द्वितीय-म्पप०।

२ लम्वरेर वावत—इति साधीयान् पाठः।

३ किम्वा किम्वा-म्पप०।

४ स्थिर।

श्रीर्ज्जयतितराम्

जवाबव्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतकुर्नीहश मिश्रसाहेबधर्म्माधिकरण-लिखितप्रश्नप्रतिरूपपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते। प्रमाणीभूतपत्रचयार्थपरिज्ञानेन मिरवक्शनाम्नी काचित् स्त्री पूर्वं हिन्दु-जातीया आसीत्, तज्जातिस्थितया तया यदुपार्जितं तत् स्वमात्रे दत्त्वा पश्चाद्यवन[1]जातीयेन मिरजाएवराहिमबेगसंज्ञकेन सह स्थिता, बहुकालं तद्गृहे[2] एव स्थित्वाऽकृतप्रायश्चित्तैव मृतेति ज्ञातम्। तत्र तथा यवनजाति-संसर्गे[3]णाकृतप्रायश्चित्तया हिन्दु-जाति-बहिर्भूतत्वात् यवनजातिस्थितया तया यदुपार्जितं[4] द्रव्यजातं तत्र हिन्दुजातिस्थितानां तन्मातृभगिन्यादीनां तत्सम्बन्धा-भावात् न तद्धनाधिकार इति वाराणस्यादि[5]प्रचलितमिताक्षरादिग्रन्था-नुसारिणी व्यवस्था।

अत्र प्रमाणम्—

याजनं योनिसंबन्धं स्वाध्यायं सहभोजनम्।

कृत्वा सद्यः पतत्येव पतितेन न संशयः॥

इति मिताक्षरादि (पृष्ठ ४१४) ग्रन्थधृतदेवलवचनम् ॥१॥

महापातकादी व्यवहार्य्यत्वं निषिद्धम्—इति मिताक्षरा— (पृष्ठ ३७५) लिखितम् ॥२॥

---

१ पश्चाद्यवन—व्यप०।

२ तद्गृहे—व्यप०।

३ संसर्गेण—व्यप०॥

४ उपार्जितम्—व्यप०।

५ वाराणस्यादि०—व्यप०।

पुरुषस्य यानि पतननिमित्तानि स्त्रीणामपि तान्येव—इति मिताक्षराधृतशौनकवचनश्चेति ॥३॥

श्रीर्ज्जयतितराम् — श्री हरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

श्रीर्ज्जयतितराम्

नम्बर २२६७

६ रोवकारि मिसिल आदालत देमानी सदर इङ्गरेजी १८२४ साल तारिख २३ माह नवम्बर मतावक वाङ्गला १२३१ साल ६ माह अग्रहायण रोज मङ्गलवार आदालत मजकुरार द्वितीय हाकिम श्री युत कुटँनी इशमिट साहेबेर वैठके।

रामसेयक सिंह — आपीलाएट

मृत हाजारि दमन सिंह ओ गायरह — रपाइण्टान्

रप्पाइएट दिगेर उकिल मौलवि नेयामत आलि हाजिर हइया १३ हाल मासेर हुकुमानुसारे निवेदन करिलेक ये हाजारि हरशहाय सिंहेर भ्राता रामशहाय सिंह अप्राप्त-व्यवहार घटे, ओ मृत हाजारिदमन सिंहेर स्त्री ओ दुइ कन्या वारान-सेर शास्त्रानुसारे सत्वाधिकारि नाइ, ए निमित्ते केवल हाजारि हरशहाय सिंहेर तरफ हइते ओकालतनामा दाखिल हय। हुकुम हइल ये ए रोवकारिर नकल ओ १३ तारिखेर हाल मासेर रोव-कारिर नकल एइ प्रश्नेते ये मृत हाजारिदमनसिंहेर त्यक्त धन याहार उत्तराधिकारिदिगेर विवरण अनुसारे, जाहा १३ तारिखेर रोवकारिते लेखा गिया छे, कोन व्यक्ति के अंशे, पण्डित दिगेके

समर्पण करा जाय, पण्डित दिगेर जबाब दाखिल हइलेन परे उचित हुकुम देओया जाइबेक इति।

१३ हाल मासेर रोवकारि एइ—ये हाल सालेर १६ आक्तुवर मासेर लिखित बारानसेर प्रवनसन कोटेर एक वेता रिटरन ताहार सम्वलितेर रोवकारिर सहित लम्वर पहुँछिया पडा गेल, जाना गेल—ये पूर्व्वे इङ्गरेजी १८८० साले १७ जुलाई मासेर टीकासिंह सूत्रधर ओ गुरुदत्त तेओयारिर एजाहारे प्रतिपन्न हय जे हाजारि दमनसिंह रामशहाय ओ हरशहाय नाम दुइ पुत्र आर दुइ कन्या ओ एक स्त्री उत्तराधिकारि राखिया मरियाछे, आर ए आदालते केवल हाजारि हरशहायसिंहेर तरफ हइते ओकालत नामा मौलवी नेयामत आलि उकिलेर नामे दाखिल हय, अतएव ऐ उकिलके जिज्ञासा गेलो ये कि निमित्ते पाच जन उत्तराधिकारिर मध्ये केवल एक उत्तराधि(कारि) ओकालत नामा दियाछे। जवाब दिलेक रप्पाडण्टदिगेर मध्ये राम सेठनसिंहेर स्थाने जे कलिकाता सहरे मजुत आछे जानिया निवेदन करिवेक। ए मते हुकुम हइल जे एइ क्षण स्थकित थाके, उकिल आइन्वा रिटरन पडिबार दिवस पर्य्यन्त आपन करार माफिक आमार आपने इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

जवाब-व्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतकुर्टनीइशमित्साहेवधर्म्माधिकरण-लिखितप्रश्नप्रतिरूपपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

यत्र हाजारीदमनसिंहसंज्ञकः कश्चित्[1] रामसहायसिंहहरसहायसिंह-

१—अप्रस-व्यप०।

२—कश्चिन व्यप०।

एकस्य द्वौ पुत्रौ पत्नीमेका द्वे च कन्ये संत्यज्य मृतस्य तदीयधने द्वौ पुत्रावधिकारिणौ भवतः, तयोः सतोः[1] तत्पत्न्यास्तत्कन्ययोर्वा नाधिकार इति वाराणस्यादिप्रचलितमिताक्षरादि-ग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था।

अत्र[2] प्रमाणम्

उत्पत्त्यैवार्थस्वामित्वं लभते[3] इत्याचार्याः—इति मिताक्षरादि (पृ० १९६) ग्रन्थधृतगौतमवचनम्। १

तस्मात्पैतृके पैतामहे च द्रव्ये जन्मनैव स्वत्वम्—इति मिताक्षरालिखितम्॥ २

अनपत्यस्य धनं[5] पत्न्यभिगामि तदभावे दुहितृगामि—इत्यादि मिताक्षरादि[4] (पृ० २१७) ग्रन्थधृतबृहद्विष्णुवचनञ्चेति।

श्रीर्जयतितराम् श्रीहरिः शरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

श्रीर्जयतितराम्

नम्बर २२८४

सओयाल—

७ सदर देओयानी आदालतेर द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्टनी इस्मिट साहेबेर हुजुर हइते २२८४ नंबरेर बावत।

१—सत्वे—व्यव०।

२—अथप्रमाणम्—व्यव०।

३—'लभते' इत्यस्य स्थाने 'लभेत' इति पाठः मिता०।

४—'बृहद्विष्णु०' इत्यस्य स्थाने 'वृद्धविष्णु०' इति पाठः मिता०।

५—अपुत्रधनमिति वा पाठः

जगमोहन मुखोपाध्याय प्रभृति ... आपिलाण्टान
पञ्चानन चट्टोपाध्याय प्रभृति ... रेष्पाण्डण्टानेर

मकद्दमाते इङ्गरेजी १८२४ सालेर २५ नवम्बर मासेर रोवकारिर लिखित ए आदालतेर पण्डितदिगेर नामे अगौये जवाव दाखिलकरण हुकुमे सओयाल एइ ये

कुशलचन्द्र चट्टोपाध्याय मानिक ठाकुरानी स्त्री ओ ताराचान्द्र ओ निमाइचरण पुत्रगणके उत्तराधिकारि राखिया मरिल, ओ निमाइचरण लुइधर पुत्रके उत्तराधिकारि राखिया मरिल, ओ लुइधर पञ्चानन ओ ईश्वरचन्द्र दुइ पुत्रगणके उत्तराधिकारि राखिया मरिल, ओ कुशलचन्द्रेर द्वितीय पुत्र ताराचान्द्र गोलकमनि कन्या ओ शशिमुखि स्त्रीके उत्तराधिकारि राखिया मरिल, ओ गोलकमनि जगमोहन मुखोपाध्याय ओ गोपीमोहन पुत्रगणके राखिया मरिल, तदपरे ताराचान्द्रेर स्त्री शशीमुखी मरिल, ओ मानिक ठाकुराणि आपन पुत्र ताराचान्द्र ओ निमाइचरणेर मृत्युर पर मरिल। बङ्गदेशेर शास्त्रमते कुशलचन्द्रेर अर्द्धेक त्यक्त धनेर, जे ताहार पुत्र ताराचान्द्रेर स्वत्व छिल, एइ क्षण निमाइचरणेर पौत्र पञ्चानन ओ ईश्वरचन्द्रके स्वत्व वर्त्ते, किम्वा ताराचान्द्रेर कन्या गोलकमणिर पुत्र जगमोहन मुखोपाध्याय ओ गोपीमोहन मुखोपाध्यायेर सत्व बटे इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

जवाबव्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतकुर्टनीइश.मरसाहेबधर्म्माधिकरण-
लिखितप्रश्नप्रतिरूपपत्रमवलोक्य यादृशाऽवबोधोजातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

यत्र कुशलचन्द्रचट्टोपाध्यायस्ताराचाँदनिमाइचरणसंज्ञकौ द्वौ पुत्रावुत्तराधिकारिणौ संस्थाप्य मृतस्तयोर्मध्ये निमाइचरणसंज्ञकः लुइधरसंज्ञकं

पुत्रमुत्तराधिकारिणं संस्थाप्य मृतः, लुद्दधरोऽपि पञ्चानन-ईश्वरचन्द्रसंज्ञकौ द्वौ पुत्रावुत्तराधिकारिणौ संस्थाप्य मृतः, एवं ताराचाँदसंज्ञकोऽपि शशिमुखीनाम्नीं पत्नीमुत्तराधिकारिणीं संस्थाप्य मृतः, शशिमुख्यपि जगमोहनमुखोपाध्याय-गोपीमोहनमुखोपाध्यायसंज्ञकौ द्वौ दौहित्रावुत्तराधिकारिणौ संस्थाप्य मृता, तत्र कुशलचन्द्रधनार्द्धस्य तत्पुत्रताराचाँदसक्तस्वामिकधनस्याधिकारिणौ ताराचाँदसंज्ञकस्य दौहित्रौ जगमोहनमुखोपाध्याय-गोपीमोहनमुखोपाध्यायौ भवत । न तु दौहित्रयोः सतो[1]र्भ्रातुष्पौत्राणामधिकारः इति वङ्गदेशप्रचलितदायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ।

तत्सुतो[2] गोत्रजो बन्धुः ।

इत्यादि दायभागादि(पृ० १५१)ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् (पृ० २१६) ।

श्रीहर्जयतितराम्   श्री हरिः शरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण   श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

श्रीहर्जयतितराम्

सदर देओयानी आदालतेर पण्डितगणेर स्थाने सओयाल—मुञ्ज[3] कि, ओ कोन वैदिक कर्म्मेते व्यवहार्य्य हयः । ओ शास्त्रानुसारे स्वर्णकार जातिदिगेर प्रति ऐ मुञ्ज[3] व्यवहार करणे निषेध आछे कि ना । यद्यपि स्यात् निषेध थाके, तबे कोन शास्त्रानुसारे, एवं बाङ्गलादेशेर स्वर्णकारदिगेर प्रति ताहार चलन आछे कि ना, आर कंपिनी बहादूरेर सरकारेर शासित देशसकलेर मध्यगत कोन देशे ऐ मुञ्ज[3] व्यवहार्य्य आछे कि ना । अतएव

---

१ सतो—ब्यप०

२ 'तत्सुतो' इत्यस्य स्थाने—'तत सुतो'—ब्यप० ।

३ मुञ्ज—ब्यप० ।

शास्त्रानुसारे ए सओयालेर जवाव लिखिया दाखिल करेन इति।

जवाब्-व्यवस्था

प्रयुक्तप्रश्नानुसारेण उत्तरं लिख्यते—

मुञ्जस्तृणविशेषः। तथाहि कस्मिंश्चिद्देशे वाराणस्यादौ मध्यदेशादौ, च भाषायां 'कास्य' इति प्रसिद्धोऽपरः[1] कश्चिन्मिथिलादेशादौ 'शरकाण्ड' इति प्रसिद्धो, वङ्गदेशादौ शरपाता इति प्रसिद्धः, कश्चिद् दीर्घपरिमाण-स्तृणवृन्तः, तस्य पुष्पगर्भकोषावरणरूपो मुञ्जः, भाषायाञ्च 'मुज' इति प्रसिद्धः। एवं तद्व्यवहारश्च ब्राह्मणजातेर्मौञ्जीनिबन्धनात्मक उपनयन संस्काररूपवैदिककर्म्मणि मेखलानिर्म्माणे। एवं स्वर्णकारजातीनां शूद्र-रूपत्वेन तादृशमुञ्जनिर्म्मित मेखलाव्यवहारः शास्त्रबोधितो न भवति। यद्यद् वैदिकं कर्म्म लोके प्रसिद्धं भवति तत्तत्सर्व्वं तत्तत्कर्म्मविधायकशास्त्रा-देवेति स्वर्णकारजातेरुपनयनविधायकशास्त्राभावात् निषेधवचनाच्च मुञ्ज-निर्मितमेखलाव्यवहारस्य निषेध एव। एवं वङ्गदेशीयस्वर्णकारजाती[2]नां तादृशमुञ्जनिर्म्मितमेखलाव्यवहारो नास्त्येव। एवं श्रीमत्सरकार-कंपिनीबाहादूराख्यसाब्वंभौमराजशासितदेशानाम्मध्ये कस्मिंश्चिदपि देशे स्वर्णकारजातीनां मौञ्जीनिबन्धनात्मक उपनयनसंस्काररूपवैदिककर्म्मण्य-धिकाराभावात् तादृशमुञ्जनिर्मितमेखलाव्यवहारो नास्तीति शास्त्रानु-सारिणी व्यवस्था।

अत्र प्रमाणम्—

'मुञ्जःशरः।' इति संस्कारतत्त्वे[3] रघुनन्दनभट्टाचार्य्यव्याख्यानम्।

मौञ्जीनिबन्धनमुपनयनम् इति—मन्वर्थमुक्तावल्यां द्वितीयाध्याये कुल्लूक[4]भट्टव्याख्यानम् (२।२७) ॥२॥

मौञ्जी त्रिवृत्[5] समा श्लक्ष्णा कार्य्या विप्रस्य मेखला।

---

१ पर कस्मिंश्चिद्—व्यप०। २ जातानां व्यप०। ३स्मृत० भाग। (पृ० ९३०)।
४ कुल्लुक—व्यप०। ५ त्रिवृत—व्य१०।

क्षत्रियस्य तु मौर्वी ज्या वैश्यस्य शणतान्तवी' —इति मनुवचनम् (२।४२) ॥ ३ ॥

दण्डाजिनोपवीतानि मेखलाञ्चैव धारयेत्—इत्यादिमिताक्षरादिधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् (१।२९) ॥४

पालाशादिदण्डमजिनं कार्ष्णादि, उपवीतं कार्पासादिनिर्मितं, मेखला मुञ्जादिनिर्मिता ब्राह्मणादिर्ब्रह्मचारी धारयेत् इत्यादि मिताक्षरा (पृ० ६) लिखनम् ॥५

द्विजानां षोडशैव स्युः शूद्राणां द्वादशैव हि।
पञ्चैव मिश्रजातीनां संस्काराः कुलधर्मतः ॥
वेदव्रतोपनयनमहानाम्नी महाव्रतम्।
विनाद्वादश शूद्राणां संस्काराणाममन्त्रतः :—

इति शूद्रकमलाकर (पृ० १६) धृतशार्ङ्गधरवचनञ्चेति ॥६॥

श्रीज्जयतितराम् श्रीहरिः शरणम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

एइ व्यवस्था दाखिल इंरेजि मिसिल मुञ्जेर सध्योयालेर[1] जवाव।

श्रीज्जयतितराम्

९—रोवकारि मिसिल आदालत देवानी सदर इङ्गरेजी १८२४ साल तारिख ४ माह जानआरि मवाबक बाङ्गला १२३१ माह पौष रोज मङ्गलवार आदालत मजकुरार द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्टनी इस्मिट साहेबेर बैठके—

[1] सध्योयालेर—म्प०।

श्रीमति हेमलता चौधुरानी आपीलाण्ट
श्रीमति पद्ममणि रेस्पाण्डण्ट

आपीलाण्टेर उकिलगण मुनशी महाम्मद पाना ओ मुनशी दादार बक्स ओ सदासुक पण्डित, ओ रेस्पाण्डण्टेर उकिलगण मुनशी हसन आली ओ ओजरदारान राममणि दास्यार उकिल मुनशी फ़किर महाम्मद ओ गौरकिशोर मजुमदारेर[1] उकिल मुनशी गोलाम बतुन[2] ओ स्वयं गौरकिशोर मजुमदार हाजिर हइल। मकर्द्दमा पूर्व्वे इङ्गरेजी १८२४ सालेर जुलाइ मासेर १४ ओ १५ ओ आगस्त मासेर २१ तारिख सकले तृतीय हाकिमेर बैठके रोबकार और प्रवनसन कोर्ट आदालतेर कागज सफल १ लम्बर अवधि ८५ लम्बर पर्य्यन्त पडा गिया स्थकित छिल, ओ एइ क्षण आमार बैठके रोबकार हइया प्रवनसन कोर्टेर कागज सफल १ लम्बर हइते तथाकार फएसला पर्य्यन्त ओ ए आदालतेर दाखिल हओया आरजी मजुबात ओ जबाब ओ उजरदारान राममणि दास्यार सओयाल ओ गौरकिशोर मजुमदारेर सओयाल हटी आइल। तत्परे राममणि दास्यार उकिलइ ये मकर्द्दमार सम्पर्कें[3] आपीलाण्ट ओ रेस्पाण्डण्टेर कोनो सत्व ना-करण ओ राममणि दास्यार ताहार सत्व अधिकारि थाकन ओ ऐ राममणि दास्यार दाखिल करा वंशावलीपत्र अनुसारे ऐ राममणि आपन पितामातार धनेर उपर स्थायी हओयार प्रार्थनाय विवरणे एक कीता सओयाल लम्बरे ... दाखिल करिलेक, पडा गेल। तदन्तर गौरकिशोर मजुमदारेर ओजरदारेर उकिल स्थाने, जे ताहार ओजरेर सओयाल ७१ लम्बरे दाखिल आछे, जिज्ञासा गेलो जे तोमार मकर्त्तेर मातार नाम कि छिल, ओ से कोन सने मरियाछे। जवाब दिलेक जे ताहार नाम नारायणि छील, ओ

१—बतुन—इति साधीयान् पाठः। २—मजुमदार—क्वप०।
३—सम्पर्कें—क्वप०।

वाङ्गला ११८९ साले आमार मक्लेर मातामह चौधरि रघुराम-रायेर मृत्युर पर आमार मक्लेर मातुल रामकिशोर रायेर समुखे मरियाछे। पुनर्व्वार जिज्ञासा गेलो जे कोन आपीले कि निमित्ते तोमार मक्लेर तरफ हइते ओजरेर सओयाल गुजरे नाइ। जवाब दिलेक जे आमार मक्ल ऐ रामकिशोर रायेर कन्या राममणिर पुत्र सकल एकबार मरण वार्त्ता हइते अज्ञात छिल, न तु या कोट आपीले ओजरेर सओयाल गुजराइत। तत्परे ऐ राममणि दास्यार उकिल स्थाने जिज्ञासा गेल जे तोमार मओक्कल कोट आपीले मकद्दमा दाएर थाकनकालीन कि निमित्ते ओजरेर सओयाल गुजराए नाइ। जवाब दिलेक जे आमार मक्ल वाङ्गला १२२५ साले वृन्दावन तीर्थे गीयाछिल, मकद्दमा निष्पत्तेर परे आशीयाछे, ए कार(ण) कोट आपीले ताहार तर्फ हइते सओयाल गुजरे नाइ। ताहार परे आपीलाण्ट ओ रष्पाडण्टेर उकिलान स्थाने जिज्ञासा गेल जे पूर्व्व पुरुस रघुराम चौधुरि दुइ पुत्र व्यतित नारायणि नाम एक कन्याओ राखिया मरियाछे कि ना; यद्यपि राखिया थाके गौरकिशोर मजुमदार ओजर-दार ऐ नारायणिर पुत्र बटे कि ना। आपीलाण्टेर उकिलेरा जवाब दिलेक जे आमरा नारायणिर वार्त्ता ज्ञात नाइ, एवं गौर किशोर मजुमदार ताहार कन्यार पुत्र एहाओ जानि ना, ओ रष्पाडण्टेर उकिल आरजि करिलेक जे चौधुरि रघुरामराय कोन कन्या राखिया मरे नाइ, ओ ऐ गौरकिशोर मजुमदार ऐ रघुराम रायेर कन्यार पुत्र नहे, वरं कोटेर फयसलार परे ऐ मजुमदार आमार मओक्कलार तरफ हइते आपनाके मोक्तारकार कहिया मकद्दमार सओयाल जवाबेर कारण आमार निकट रुजु छिल, ओ तत्कालीन आपन दौहित्रेर कोन उल्लेख करे नाइ, शेष द्वितीय पक्षेर सहित योग करिया दौहित्र मुख्य हइयाछे। ओज रदारेर[1] सओयाल गुजराइया छे। परे राम-

[1] ओजरेर—अप०।

मणि ओजरदारेर उकिल स्थाने जिज्ञासा गेल जे तोमार मओकला गौरकिशोर मजुमदारेर एजाहार सत्य कहे कि मिथ्या। जवाब दिलेक जे आमार मओकलार पाठानो वंशावलि पत्रानुसारे गौरकिशोर मजुमदार यथार्थरूप रघुराम रायेर कन्या नारायणिदास्यार पुत्र बोध हय, वरं हुकुम अनुसारे सादा कागजे वंशावलि पत्र'' लंबरे गुजराइवेक। जाना गेल जे बाङ्गला १२०१ सालेर १४ भाद्रमासेर लिखित पत्रमणि रप्पाडएटेर दाखिलकरा अनुमति पत्र जे, कोटेर नथी २३ लंबरे आछे, कोट आपीले ताहार कोन साव्यस्त हय नाइ। ओ यद्यपि स्यात् इङ्गरेजी १८१६ साले १३ आगस्त मासेर हओया ३८ लम्बर बाबत फेलेकटुरिर रोवकारिते रप्पाडएटेर पतिर अनुमतिर उल्लेख आछे। किन्तु ऐ रोवकारिर मजमुने जाना जाय जे रप्पाडएट ताहार आपन कथार सत्यतार कोन दस्तावेज तत्कालीन उपस्थित करे नाइ, ओ ताहार पति मरणेर मुद्दत २२ वाइश वत्सर परे उल्लेख हइयाछे। अतएव अनुमति पत्र एवं ऐ रूप आपीलाएटेर समुर रामचन्द्र रायेर तरफ हइते लेखा जाओन एजाहारे बाङ्गला १२१६ सालेर ३ आश्विन मासेर लिखित २८ लंबरेर एकरारनामा प्रत्ययेर किछु सत्यता राखे ना। ओ इहाओ जाना जाइतेछे ऐ रप्पाडएट एइ क्षण पर्य्यन्त ताहार आपन पतिर विना अनुमतिते किम्वा अनुमतिते कोन व्यक्तिके आपन पुत्रताते लय नाइ। बाकी रहिल उत्तराधिकारित्वेर कथा, अर्थात् ऐ जे रप्पाडएटके द्वितीय सने ताहार पति रामकुमार राय ओ पतिर भ्राता रामजीवन ओ *रामकमल रायेर त्यक्त धनेर मध्य किछु आर्शिवेक कि ना।* आर जाना जाइतेछे जे उभय पक्षइ ए कथा स्वीकृत[1] आछे। रप्पाडएटेर पति आपन पिता रामकेशव रायेर सम्मुखे[2] मरि-

१. स्विकृत–व्यव०। २. सम्मुख्ये–व्यव०।

याछे, ओ ताहार दुइ भ्राता ऐ रामकिशोर रायेर मृत्युर परे मरियाछे। एवं ताहाओ जाना गेल जे ए मकद्दमा उभय पक्ष स्वतिंत ऐ रामकेशव रायेर कन्या राममणि ऐ रामकेशव रायेर सहोदर ज्येष्ठ भ्राता रामचन्द्र रायेर मध्यम पुत्र रामलोचन रायेर स्त्री चन्द्रावली एइ क्षण पर्य्यन्त वर्त्तमान आछे, ओ कोर्ट आपीलेर समस्त कागजे रघुरामराय चौधुरि(र) कन्या नारायणिर कोनो उल्लेख जे गौरकिशोर मजुमदार आपनकें ऐ नारायणिर पुत्र कहे पाओया जायना, ओ ए आदालतें आपीलान्ट ओ रष्पाडण्टेर उकिलेरा आपनादिगेके नारायणिर उत्पत्ति हइते ओ गौरकिशोरमजुमदारेर दौहित्रता हइवे अज्ञात जाहेर करितेछे। अतएव हुकुम हइल जे ए आदालतेर पण्डितेरा उपरेर विवरण करा वृत्तान्त ओ कोर्टेर नथिर २७ नंबरेर दाखिलि वंशावलि पत्र जे एइ मकद्दमार विवरण माफिक बोध हइते छे पडिया ओ बुझिया बङ्गदेशेर शास्त्र अनुसारे व्यवस्था लिखिया देन जे रामकेशवरायेर पुत्र रामकुमाररायेर ध्वंश हइते जे ऐ रामकुमारराय पितार सम्मुखे[1] मरियाछे, ओ ऐ रामकुमाररायेर सहोदर भ्राता रामजीवन राय ओ रामकमल रायेर हिस्सा हइते, जे ताहारा आपनादिगेर पितार मृत्युर पर निःसन्तान मरियाछे दत्तक करणेर कथा उपत्स्येय[2] राममणि के स्वत्व बावत किछु अर्शे कि ना। यदि अर्शे, कि परिमान अर्शे। उचित जे परस्व दिवस दुइ प्रहर पर्य्यन्त एइ सओयालेर जवाव दाखिल करेन। ओ पण्डितदिगेर जवाव दाखिल हओय परे ताहार मजमुन दिष्टे उभयेर साक्षि सोननेर आवश्यक ओ अनावश्यक विषय उचित हुकुम देओया जाइवेक।

---

१. सम्मुखे—स्वप०। २. उपत्स्ये—इति सम्भीयान् पाठः।

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतकुर्टनीइशामिटसाहेबधर्म्माधिकरणलिखितपत्रप्रतिरूपपत्रान्तर्गतप्रश्नमेवं तदाज्ञापितवंशावलीपत्रं चावलोक्यावगत्य च यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

'यत्र रघुरामरायस्य द्वौ पुत्रौ, रामचन्द्ररायरामकेशवरायसंज्ञकौ स्थितौ। तयोर्म्मध्ये रामकेशवस्य त्रयः पुत्राः रामकुमाररामजीवनरामकमलसंज्ञकाः। तेषां मध्ये पितरि जीवत्येव यवनपत्नी रामकुमारः पद्ममणिनाम्नीं स्त्रियं संरक्ष्य मृतः, पश्चाद्रामकेशवोऽप्यशिष्टौ द्वौ पुत्रा वुत्तराधिकारिणौ संरक्ष्य मृतः, तत्र रामकेशवस्वार्जितधने तु पितरि जीवति रामकुमारस्य मरणात् स्वत्वनिवृत्तेस्तत्पत्न्याः पद्ममण्याः स्वभर्तृपैतृकधने नाधिकारः, किन्तु ग्रासाच्छादनभागित्वं स्वभर्त्तुरसाधारणधने चोत्तराधिकारित्वेन यावज्जीवम[1]धिकारः; एवं रामजीवनरामकमलयोर्म्मध्ये मातरि शङ्करीदास्यां सत्यां यद्येको मृतस्तदा तद्योग्यांशभागित्वं तन्मातुः शङ्करीदास्याः। एवं सत्यां च मातरि द्वयोर्म्मरणञ्चेत्तदा तन्मातुर्द्वयोर्धनाधिकारित्वम्। एवं मृतायां च मातरि तयोर्द्वयोर्मरणञ्चेत्तदा यदि रामकेशवस्य कन्यायाः राममण्याः पुत्राःस्थितास्तदा तेषां तयोर्धनाधिकारः; तेषां मरणोत्तरं तदुत्तराधिकारित्वेन तन्मातृ[2] राममण्या अधिकारः। यदि रामजीवन रामकमलयोः सतोरेव तयोर्माता शङ्करीदासी मृता, रामकेशवदौहित्राश्च मृतास्तदा राममण्यास्तयोर्भगिन्या न तद्धनाधिकारः। किन्तु तयोर्म्मरणोत्तरं रघुरामरायतत्पुत्रतत्पौत्रतत्प्रपौत्राणां मध्ये ये आसन्नास्तदानीं विद्यमानास्तेषामधिकारः। तेषां मरणोत्तरं तेषां ये उत्तराधिकारिणस्तेषामधिकार' इति 'बङ्गदेशप्रचलितदायभागदायतत्त्वादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

१—यावज्जीवम्—व्यप०।
२—तन्मातुराममण्या व्यप०।

अत्र प्रमाणम्—

उद्ध्वं पितुश्च मातुश्च समेत्य भ्रातरः समम् ।
भजेरन् पैतृकं रिक्थमनीशास्ते हि जीवतोः[1] ॥

इति दायभागादिग्रन्थ (पृ० ११) धृतमनुवचनम् (९।१०४) ॥१॥

पितर्य्युपरते पुत्रा विभजेयुर्धनं पितुः ।

अस्वाम्यं हि भवेदेषां निर्दोषे पितरि स्थिते—इति तद्धृतदेवल-वचनम् (पृ० १३) ॥२॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः—इत्यादि दायभागादिग्रन्थ (पृ० १५१) धृतयाज्ञवल्क्यवचनम् (२।१३५) ॥३॥

पितुरपि प्रपौत्रपर्य्यन्ताभावेपित्र्यदौहित्रस्याधिकारो बोद्धव्यः—इति दायभाग (पृ० २०८) लिखनञ्चेति ।

श्रीर्ज्जयतितराम् **श्री हरिः शरणम्**

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण **श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन**

श्रीर्ज्जयतितराम्

१०—सदर देवानी आदालतेर कायेम मकाम प्रथम हाकिम श्री युत जान हरवरट हारिङटीन साहेबेर हजुर हइते ए आदालतेर पण्डितदिगेर नाम ।

श्याम सुन्दर महेन्द्र — आपिलाण्ट
कृष्ण चन्द्र भ्रमरवरराय पापड — रेस्पाण्डण्टेर
२४ ६६ नंबरेर वावत मकद्दमाते अंगरेजी १८२५ सालेर

१—जीवतोः—मनु० ।
२—दाय० ११।४

१२ फिबरवरी मासेर रोवकारिर लिखित ए मकद्दमाते मुद्दइर दाखिल करा ६९ नंवरेर दस्तावेज चटार अर्थात् लिखन श्रो. जिला कटकेर कमिसनर साहेबेर काचारीते दाखिल हश्रोया उभयेर सश्रोयाल श्रो जवाब दृष्टे सुबे उडिस्यार चलित शास्त्रानुसारे एक सप्ताहेर मध्ये व्यवस्था दाखिल करण निर्वन्धे सवाल एइ ये—

लंवर २४६६

श्यामसुन्दरमहेन्द्र — आपीलाण्ट

कृष्णचन्द्रभ्रमरवरराय — रप्पाइण्ट

यद्यपि विरोधीय राज्य श्रो जमीदारिर दखिलकार राजा रामचन्द्र ऐ दस्तावेजेर मजमूने लिखन मुद्दइर निकट लिखिया थाके। तत्परे ऐ राज्य श्रो जमीदारीते मुद्दइके बिना दाखिलकार करशे मरिया थाके, ऐ लिखनेर लिखित त्यागकरण अच्छिद्रयत ताहार साव्यस्त हश्रोन प्रकारे मुद्दइसत्वेर ताहार लिखित राज्य श्रो जमिदारीर दान श्रो अच्छिद्रयत श्रो राजा रामचन्द्रेर श्रौरस पुत्र फुल बिवाहेर श्रीर गर्भजात कृष्णचन्द्र महेन्द्र आसल शुद्राभार्जेहेर वत्तराधिकारित्व-सत्व असिद्धतार लिपिते ऐ सुवार चलित शास्त्रानुसारे वलवत्तर श्रो गुणदायक वटे कि ना इति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रथम जवाब व्यवस्था—रामतनुविद्यावागीश—

राजा रामचन्द्रेण मानसिंहस्य राज्ञो दत्तकपुत्रकृष्णचन्द्रभ्रमरवरसंज्ञकस्य कर्त्तृत्वादिकरणार्थं कृष्णचन्द्रभ्रमरवरासन्निधानेऽपि यल्लिखितं तल्लिखनानुसारेण दानकरणादर्शनाच्च रामचन्द्रस्वत्वास्पदीभूतराज्यादौ तत्स्वत्वत्यागानन्तरं कृष्णचन्द्रभ्रमरवरस्य स्वत्वं जातम्। एवं रामचन्द्रलिखना(नु)रोधात् दासीगर्भजातः कृष्णचन्द्रमहेन्द्रस्तु पितृद्विट्, अतस्तद्राज्यादौ तस्य स्वत्वं भवितुं नार्हति इत्योड्रदेशचलितमनुमिताक्षरादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

तत्र प्रमाणम्—

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनम् (५।१५२) ॥१॥
मनसा पात्रमुद्दिश्य भूमौ तोयं विनिःक्षिपेत् ।
विद्यते सागरस्यान्तो दानस्यान्तो न विद्यते ॥ इति नारदवचनम्[1] ॥२॥
भूमिं दत्त्वा तु यः पत्रं कुर्य्याच्चन्द्रार्कसाक्षिकम् ।
अनाच्छेद्यमनाहार्य्यं दानलेख्यन्तु तद्विदुः ॥ इति बृहस्पति (पृ० ६१)-
वचनम्[2] ॥३॥

पितृद्विट् पतितः (षण्ढो) यश्च स्यादौपपातिकः ।
औरसा अपि नैतेंऽशं लभेरन् क्षेत्रजाः कुतः ॥
इति नारदवचनञ्च[3] इति (पृ० १६५) ॥४॥

श्रीहरिः शरणम्

श्रीरामतनुशर्मविद्यावागीशेन

श्रीर्ज्जयतिराम्

द्वितीय व्यवस्था—वैद्यनाथमिश्र—

एतद्धर्म्माधिकरणप्रथमाधिपतिस्थानाभिषिक्तश्रीयुक्तजानहरवरदहारिएटीन-साहेबधर्म्माधिकरणलिखितप्रश्नपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

प्रभोराज्ञापितवादिप्रतिवादिनोः प्रश्नोत्तरपत्रार्थपरिज्ञानेन राज्ञा

---

१. दानमयूखे नारद—(पृष्ठ० १२)। तत्र "दानस्यान्तो न विद्यते" इत्यस्य स्थाने "तस्यान्तो नैव विद्यते" इति पाठः ।

२. वृ०-परा०-२६४ । तत्र "चन्द्रार्कसाक्षिकम्" इत्यस्य स्थाने "चन्द्रार्ककालिकम्" इति पाठः । "तद्विदुः" इत्यस्य स्थाने "तदमुत्र" इति पाठः व्यव० मयूखे ।

३. नार०-पृ० १६५ । तत्र "औरसाः" इत्यस्य स्थाने "औरसा" इति पाठः ।

त्रिलोचनसिंहेन फूलविवाहितायां स्त्रियामुत्पन्नो राजा रामचन्द्रः शौर्य्येण तदुत्तराधिकारित्वेन वा समस्तमेव पैत्रं राज्यं प्राप्य कतिपयदिनान्युपभुज्य फूलविवाहितायां स्त्रियां कृष्णशरणनामानं कृष्णचन्द्रमहेन्द्रप्रसिद्धं[1] पुत्रमुत्पाद्य[2] कृष्णचन्द्रभ्रमरवरस्यैतद्धर्माधिकरणप्रतिवादिनोऽन्तिके चर्चापत्रसंज्ञकं[3] पत्रं प्रेषयित्वा मृत इति ज्ञातम्। तत्र यदि तद्देशे फूलविवाह-शब्देन शास्त्रोक्तगान्धर्वविवाह उच्यते तदा गान्धर्वविवाहसंस्कृतायां पत्न्यामुत्पन्नो[4] राजा रामचन्द्रः स्वपितुः मुख्य एवौरसः पुत्रः, तथा रामचन्द्रस्य फूलविवाहितायां स्त्रियामुत्पन्नः कृष्णचन्द्रमहेन्द्रो मुख्य एवौरसः पुत्रः। यदि च तद्देशे दास्येव फूलविवाहिताशब्देनोच्यते तदा दास्यामुत्पन्नो[4] राजा रामचन्द्रस्तथापि स्वपितुरौरस एव। उभयथा राजा रामचन्द्रः शूद्र एव। शूद्रेण विवाहितायां[5] स्त्रियामुत्पन्नो दास्यामुत्पन्नश्च धनाधिकारी भवत्येव। सति पुत्राद्यन्वये[6] धनाधिकारिणि विद्यमाने सर्वस्वदानं तदननुमत्या क्रमागतस्थावरस्थावरदानं चासिद्धम्। अतो रामचन्द्रप्रेषितपत्र-लिखितस्थावरदानादिवृत्तान्तेन रामचन्द्रस्वामिकास्थावरादौ कृष्णचन्द्र-भ्रमरवरस्यैतद्धर्माधिकरणप्रतिवादिनः स्वत्वं न भवति। एवं रामचन्द्रेण फूलविवाहितायां स्त्रियामुत्पन्नस्य कृष्णचन्द्रमहेन्द्रस्य तदुत्तराधिकारित्वेन स्वत्वनाशो न भवति—इति उत्कलदेशप्रचलितमनुमिताक्षरावीरमित्रोदय-व्यवहारमयूखप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

तत्र प्रमाणम्—

एक एवौरसः पुत्रः *पित्र्यस्य वसुनः प्रभुः*—इत्यादि मनुवचनम् (९।१६३) ॥१॥

स्वं कुटुम्बाविरोधेन देयं दारसुतादृते।

---

१. कृष्णानन्द—व्यव०।

२. उत्पाद्य—व्यव०।

३. "चटाक" इत्यपि भवितुमर्हति।

४. उत्पन्नो…व्यव०।

५. विवाहिता—व्यव०।

६. ०न्वये—व्यव०।

नान्वये[१] सति सर्वस्वं यच्चान्यस्मै प्रतिश्रुतम्[२]॥ इति मिताक्षरा-वीर-मित्रोदयादि (पृ० ६५१)अन्यधृतयाज्ञवल्क्यवचनम्[३] (२।७५) ॥२॥

पुत्रपौत्राद्यन्वये[४] विद्यमाने सर्वं धनं न दद्यात्—इति मिताक्षरा-(पृ० २४५)लिखनम् ॥३॥

स्थावरे तु स्वार्जिते पित्रादिप्राप्ते[५] च पुत्रादिपारतन्त्र्यमेव—इति मिताक्षरा(याज्ञ० २।११२ पृ० २००)लिखनम् ॥४॥

जातोऽपि दास्यां शूद्रेण कामतोऽंशहरो भवेत् ।
मृते पितरि कुर्य्युस्तं भ्रातरस्त्वर्द्धभागिकम् ॥
अभ्रातृको हरेत्सर्वं दुहितॄणां सुतादृते—इति मिताक्षरा-वीरमित्रोदयादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य(२।१३३-४ पृ० ३१६)वचनञ्चेति॥५॥

श्रीर्ज्जयतितराम् श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीर्ज्जयतितराम्

११ एइ मकर्द्दमाते प्रथमेते श्रीयुत कुर्टनी इरामिद साहेब द्वितीय हाकिमेर वैठकेते सओयाल। एइ ये

सओयाल—

जेला शाहाबाद साकिनेर एक व्यक्ति हिन्दु आपन सहोदर भ्रातार पुत्रके पुत्रभावे लइलेक। ताहार परए व्यक्तिर औरस पुत्र जन्मिल। ऐ व्यक्तिर मृत्युर पर ताहार त्यक्त धनेर मध्ये

---

१. नान्वये-व्यव० ।
२. प्रतिश्रुतम्—व्यव० ।
३. स्वकुटुम्बाविरोधेन—व्यव० ।
४. पुत्रपौत्रवत्यन्वये—व्यव० ।
५. स्वार्जिते पैत्रादि०—व्यव० ।

औरस पुत्र कि परिमान ओ दत्तक पुत्र कि परिमान पाइवेक, उचित–ये अतिशीघ्र एइ सओयालेर जवाव ऐ देशेर शास्त्रानुसारे दाखिल करेन इति ।

श्रीर्ज्जयतितराम्

जवाब-व्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुक्तकुर्टनीहरामिटसाहेवधर्म्माधिकरण-लिखितप्रश्नपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

यत्र कश्चित् हिन्दूजातीयः शाहाबादप्रदेशीयः सोदरभ्रातृपुत्रं[1] दत्तकत्वेन गृहीत्वानन्तरमौरसपुत्रमेकमुत्पाद्य मृतः, तत्र तदीयसमस्तस्थावरास्थावरधनं चतुर्द्धा विभज्य भागत्रयमौरसः[2] पुत्रो गृह्णीयात्[3], दत्तकपुत्रस्त्वेकं भागं गृह्णीयादिति शाहाबादप्रदेशादिचलितमिताक्षरादत्तकमीमांसादिग्रन्थानुसारिणी[4] व्यवस्था इति ।

तत्र प्रमाणम्—

तस्मिश्चेत् प्रतिगृहीते औरस उत्पद्यते[5] ।

चतुर्थभागभागी स्यात्'''दत्तकः ॥ इति मिताक्षरा(याज्ञ०२।१३२)-दत्तकमीमांसादि(द०मी० १०३/धृतवशिष्ठवचनम्[6] ॥

श्रीर्ज्जयतितराम् श्रीहरिः शरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

---

१. भ्रातृपुत्र—व्यप० ।

२. मौरसः—व्यप० ।

३. गृह्णीत—व्यप० ।

४. दत्तमीमांसा०—व्यप० ।

५. उत्पद्यते—व्यप० ।

६. तस्मिन् दत्तके प्रतिगृहीते यद्यौरस उत्पद्यते तदा दत्तकश्चतुर्थांशं लभते न समांशमित्यर्थः इति द०मी० पाठः ।

श्रीर्ज्जयतितराम्

सम्रोयाल—

१२—योगि जातिर स्त्री स्वामिर मरणेर पर आपन इच्छाते स्वामिर सहित दग्ध हइते पारे कि ना।

जवाब-व्यवस्था

योगिजातेः स्त्री स्वामिमरणानन्तरं स्वेच्छया स्वामिसहगमनं कर्त्तुमर्हतीति।

श्रीर्ज्जयतितराम् — श्रीहरिः शरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण — श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

एइ व्यवस्था दाखिल रेजेष्टर मेघनाटन साहेबेर निकट।

———

श्रीर्ज्जयतितराम्[1]

१३—सम्रोयाल—

रामकृष्णेर चारि पुत्र, बड पुत्र रामहरि, द्वितीय रामचन्द्र, तृतीय पुत्र राममोहन, चतुर्थ पुत्र रामकान्त। ताहार मध्ये रामहरिर आपन ऐ तिन भ्राता ओ पिता मर्त्तमाने[2] दुइ पुत्र राखिया मृत्यु हय। रामहरि आपन उपार्जन[3] द्वारा धन सञ्चय करिया दुइ पुत्रेर नामे उइल अर्थात्[4] विभागपत्र करिया देन। राम

१. श्रीर्ज्जयतितराम्—मूप०।
२. वर्त्तमाने [illegible] पाठः।
३. उपार्ज्जन—मूप०।
४. अर्थात्—मूप०।

कृष्ण ओ रामचन्द्र ओ राममोहन ओ रामकान्त प्रत्येके एइ धनेर अंशेर दाओया करे। यद्यपि ऐ धन रामहरि आपन धन ओ आपन शरीरायास द्वारा उपार्जन करिया थाके, ताहाते ताहारा किम्वा के के, एवं ताहादिगेर मध्ये कोन व्यक्ति ऐ धनेर कत अंश पाइते पारे। यद्यपि ऐ धन पितार धन ओ ताहार साहाय्यताते[1] एवं सुपारिश द्वारा उपार्जन करिया थाके ताहाते ताहारा कि रूप अंश पाइबे। एकान्न किम्बा पृथकान्न थाकिले ऐ धन ग्रहणेर कि विशेष इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्[2]

जयरामव्यवस्था

प्रभुकृतप्रश्नानुसारेणोत्तरं लिख्यते। यत्र चतुर्णां सोदरभ्रातॄणां मध्ये एको भ्राता पृथगन्नस्थितोऽपृथगन्नस्थितो वा विद्यमाने पितरि विद्यमानेषु त्रिषु भ्रातृषु चास्मदर्जितमस्मद्धनमस्मत्पुत्रयोरित्यभिप्रायेण[3] विभागपत्रं कृत्वा मृतस्तत्र यदि तद्धनं यदि पितृधनोपघातेन पितुः शरीरायासेन वा उपार्जितं स्यात्तदा तदुपार्जितसमस्तधनास्यार्द्धभागित्वं पितुरवशिष्टार्द्धभागस्य पञ्च भागान् कृत्वा भागद्वयमुपार्जकस्यैकैको भागस्त्रयाणां भ्रातॄणाम्। यदि च पितृधनानुपघातेन पितुः शरीरायासव्यापारव्यतिरेकेणोपार्जितं स्यात्तदा तद्भ्रातॄणां न तद्धनाधिकारः, किन्तु समुदायद्रव्यस्यार्द्धभागित्वं पितुरर्द्धभागित्वमुपार्जकस्य। उभयपक्ष एवोपार्जकपुत्रयोरुपार्जकभागभागित्वम् इति वङ्गदेशप्रचलितदायतत्त्वादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था।

अत्र प्रमाणम्।

द्व्यंशहरोऽर्द्धहरो वा पुत्रवित्तार्जनात्पिता—

इति दायभाग([illegible] ४८, २।६५)दायतत्त्वादि(दात०–२४,५)-ग्रन्थधृतकात्यायन(पृ ८५१)वचनम्।

---

१. साहाय्यताते—इति साधीयान् पाठः।

२. श्रीर्ज्जयतितराम्—व्यव०।

३. ०स्मद्पुत्रयो०—व्यव०।

तत्र पितृद्रव्योपघातेन पुत्रार्जितवित्तस्यार्द्धं पितुरर्जकस्य पुत्रस्यांश-द्वयमितरेषामेकैकांशिता[1], अनुपघाते पितुरंशद्वयमर्जकस्यापि तावदेव इतरेषामनंशित्वम्—इति दायभाग(पृ० ५१ २।७१)ग्रन्थलिखितैतद्वचनव्याख्यानञ्चेति ।

श्रीर्ज्जयतितराम् — श्रीहरिः शरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण — श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

श्रीर्ज्जयतितराम्

१४—नम्बर २३३६

रोयकारि मिसिल आदालत देओयानी सदर इंरेजी सन १८२५ साल तारिख ५ माह आपरेल मतायक बाङ्गला सन १२३१ साल २४ चैत्र रोज मङ्गलवार आदालत मजकुरार द्वितीय हाकिम श्रीयुत हुर्टनी इशमिट साहेवेर बैठके—

प्रियागसिंह — आपीलाण्ट

अजध्यासिंह — रष्पाडण्ट

आपीलाण्टेर उकिलगण मुनसी महम्मद प(ना)ह ओ लाला आयुधलाल[2] ओ रष्पाडण्टेर उकिलगण नवि नेयामत आली विद्यमाने आइल। मकद्दमा रोवकार हइल। कोट आपीलेर दाखिल हओया कागज लम्बर हइते तथाकार फयसला पर्य्यन्त ओ ए आदालते दाखिल हओया आरजि मजुवात ओ जबाव ओ २३३६ लम्बरे मकद्दमार कागजमकल पडागेल। तदपरे आपिलाण्टेर

---

१. ०कांशता—व्यव।

२. आयुधनाल आयुस्लाल—व्यव०।

उकिलेरा सनहिसिह् ओ मुसम्मात पाना आपीलाण्ट बालमुकुन्द रेस्पाण्डण्टेर मकर्द्दमाते इंरेजि १८१३ साले २० आपरेल मासेर हओया एक केता फयसला(र) नकल ओ जिला त्रिहोटेर देओयानी आदालतेर पण्डितेर एक केता व्यवस्थार नकल ओ जिला साहाबादेर देओयानी आदालतेर पण्डितेर व्यवस्थार नकल छय टाका मूल्येर फेरस्त द्वारा लम्बरे दाखिल करिल हटे आइल । तत्परे ए आदालतेर पण्डितदिगेर स्थाने सओयाल करागेल एइ यथाते जे जिला साहाबाद साकिनेर एक व्यक्ति हिन्दु आपन सहोदर भ्रातार पुत्रके पुत्रताते लइलेक । ताहार पर ऐ व्यक्तिर औरस पुत्र जन्मिल । ऐ व्यक्तिर मृत्युर पर ताहार त्यक्त धनेर मध्ये औरस पुत्र कि परिमान ओ दत्तक पुत्र कि परिमान पाइवेक । उचित जे अतिशिघ्र एइ सओयालेर जवाव पे देशेर शास्त्रानुसारे दाखिल करेन इति । सन १८२५ साल इङ्गरेजी तारिख ५ आपरेल यथा पण्डितेरा जवाव दाखिल करिलेक, ताहार तरजमार विवरण एइ ये, यद्यपि जिला साहाबाद साकिनेर एक व्यक्ति हिन्दु आपन सहोदरभ्रातृपुत्रके आपन पुत्रताते लइलेक। ओ तत्परे ऐ व्यक्तिर औरस पुत्र जन्मिलेक। ताहार मृत्युर पर ताहार स्थावरास्थावर समुदाय धन चारि अंश हइया, ताहार मध्ये हइते तिन अंश ताहार औरस पुत्रके ओ एकांश ताहार दत्तक पुत्रके वर्त्तिवेक । जिला साहाबाद ओ गयरहेर चलित मिताक्षरा ओ दत्तकमीमांसा प्रभृति ग्रन्थानुजाइ एइ व्यवस्था । इहार प्रमाण मिताक्षरा दत्तकमीमांसा ग्रन्थसकलेर लिखित वसिष्ठमुनिर[1] वचन । अर्थ एइ—यद्यपि कोन व्यक्ति प्रथम दत्तक ग्रहण करिया थाके ओ तदपरे ताहार औरस पुत्र जन्मे, से प्रकारे ताहार मृत्युर पर दत्तक[2] पुत्रके चतुर्थ अंश वर्त्तिवेक इति । यथा ए

१. मथिर—व्यप० ।

२. दत्त—व्यप० ।

आदालतेर पण्डितदिगेर जवाव अनुसारे उचित छिल जे कोर्टेर डिगरि रेस्पाडन्टेर दाविर अर्द्धेकेर, कारण जे पूर्व्व हइते अर्द्धेक त्यक्त धनेर उपर दखिल आछे, हइतो। ओ वृत्तान्त एइ ये आपील आदालतेर पण्डितेर जवाव अनुसारे दाओयार तिन एवं चौथाइर डिगरि हइयाछे। पण्डितेर स्थाने आपीलेर हाकिमेर सओयालेर वयान—जद्यपि हिन्दु जाति कोन व्यक्ति आपन[1] भ्रातुष्पुत्रके दत्तक करे, ओ ताहार दत्तक करणेर पर दत्तकग्रहीतेर एक पुत्र जन्मे। अतएव ए प्रकारे ऐ व्यक्तिर त्यक्त धनादि दत्तक औरस[2] पुत्रेर सहित शास्त्रानुसारे कि प्रकार विभाग हइवेक। कोर्ट आपीलेर पण्डितेर जवावे(र) तरजमार विवरण—इहार मिताक्षरा ओ व्यवहारमयूख प्रभृति शास्त्रानुसारे ऐ व्यक्तिर त्यक्त धनके दुइ अंश करिया परे एक अंशके चारि अंश करा जावेक। सेइ चारि अंशेर एकांश दत्तक पुत्रके वर्त्तिवेक, ओ अवशिष्ट समुदाय त्यक्त धन ऐ औरस पुत्रेर सत्व—वशिष्ठमुनि ओ कात्यायनमुनिर कथित एइ कथा। अतएव हुकुम हइल ये एइ रोयकारिर नकल ए आदालतेर पण्डितदिगके समर्पन करा जाय। ये आपिल आदालतेर पण्डितेर जवावे ये तदनुसारे मृत[3] व्यक्तिर समस्त धन मध्ये सोलो आनार चोर्द्द आना औरस पुत्रके ओ दुइ आना दत्तक पुत्रके वर्ते—शुद्ध वटे कि अशुद्ध, ओ यदि शुद्ध हय, तवे कि प्रकारे ऐ आदालतेर पण्डितदिगेर व्यवस्थाते सम्यक धनेर तिन चौथाइ, ये सोल आनार बार आना हय, औरस पुत्रे(र) सत्व, ओ चतुर्थांश[4] अर्थात् चारि आनार

---

१. आपन आपन—व्यप० ।

२. औरस—इति प्राचीनतम पाठः ।

३. मृत्यु—व्यप० ।

४. चर्थांश—व्यप० ।

दत्तक पुत्रेर सत्व लिखियाछे[1]। उचित ये कल्य दुइ प्रहरेर मध्ये एइ सओयालेर जवाव दाखिल करेन इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

जवावव्यवस्थापत्र।

एतद्धर्म्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतकुर्टंनीहशमिटसाहेबधर्म्माधिकरण-लिखितप्रश्नप्रतिरूपपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

एतद्विवादविषये कोर्टआपीलाख्यधर्म्माधिकरणनियुक्तपण्डितेन यत्तत्स्थानाधिपतिकृतप्रश्नोत्तरव्यवस्थापत्रे दत्तकपुत्रस्य गृहीतृधनाष्टमांश-भागित्वं लिखितम्, तल्लि(लि)तवशिष्ठवचनकात्यायनवचनाभ्यामेवमिदानीं तद्देशप्रचलितमन्यैश्च नायाति। तथा हि तल्लिखितवचनयोर्म्मध्ये वशिष्ठ-वचनस्यायमर्थः—दत्तकपुत्रे गृहीते सति यद्यौरसपुत्र उत्पद्यते तदा दत्तकपुत्रश्चतुर्थभागभागीति, एवं कात्यायनवचनस्यायमर्थः—औरसपुत्रे उत्पन्ने[2] सति दत्तकादयः पुत्राश्चतुर्थांशभागिन इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्　　　　श्रीहरिः शरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण　　　　श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

श्रीर्ज्जयतितराम्[3]

१५—रोवकारि मिसिल आदालत नेजामत इङ्गरेजी १८२५ साल तारिख ६ माह जुन मताबक सन १२३२ बाङ्गला २५ माह

---

१. लिखिया छे—व्याप०।

२. उत्पन्ने—व्यप०।

३. श्रीर्ज्जयति—व्यप०।

জ্যৈষ্ঠ রোজ সোমবার আদালত মজকুরার প্রথম হাকিমের কায়েম মোকাম শ্রীযুত কুর্টনী ইশমিট সাহেবের বৈঠকে।

ধর্ম্মচন্দ্র ও গয়রহ সায়েলান

সায়লদিগের উকিল সদাসুকপণ্ডিত হাজীর হইল। মৌজে ভূলুপুরের মণ্ডলহায়ের পুজারি-কর্ম্মে ভোজকজাতি ও শিব-নর্মাল্য-গ্রাহক কালুরামের বহালি বিষয়ে অন্য ২ বয়ান সম্বলিত সহর বারানশের মেজষ্টর সাহেব ও পলাকা বারানশের দায়ের সায়র আদালতের দ্বিতীয় হাকিমের হুকুমসফলের নারাজীতে সায়েলদিগের সখোয়াল, দুলাসীরাম ও মানিকচন্দ্রের নামিক মুক্তারনামা ও ঐ উকিলের নামিক ওকালতনামা ও ইঙ্গরেজী সন ১৮২০ সালের ৫ ও ১৬ মেই ও সন ১৮২৩ সালের ৬।১০ আকতুবর ও ২ দিজম্বর ও ১৮২৪ সালের মার্চ্চ মাসের লিখিত সহর বারানশের ফৌজদারি আদালতের ৬ কেতা রোবকারির নকল ইঙ্গরেজি সন ১৮২৪ সালের ৩ আপরেল ও সন হালের ২৬।৩১ মার্চ্চ ও ২৮ ও ৩০ আপরেল মাসের হুকোয়া পলাকা বারানশের দায়ের সায়ের আদালতের ৬ কেতা রোবকারির নকল ও ৪ কেতা এজাহারের নকল ও ৬ কেতা দরখাস্তের নকল ইত্যাদি দস্তাবেজ সহিত, যে হাল মাসের ৪ তারিখ দাখিল হইয়াছিল, তারাচন্দ্র ও লালচন্দ্রের উকিল মুনশী হসন আলীর হাজিরিতে, যে আপন নামিক তাহাদিগের পক্ষে ওকালতনামা দাখিল করিলেক, দরপেশ হইয়া দৃষ্টি আইল। তদপরে সায়েলদিগের উকিল পণ্ডিতদিগের[1] ব্যবস্থার তরজমায় নকল ইঙ্গরেজী অক্ষর ও পাঠে দাখিল করিলেক, পড়াগেল। পরে জিজ্ঞাসা গেল যে উভয়ের মানিত শালিসদিগের হাল সালের জানুয়ারি মাসের ২১ তারিখের পাঠানো কৈফিয়ত কোথা। জবাব দিলেক 'মজুদ নাই'।

---

১. পরিষদ পণ্ডিত—সম্পা০।

पुनराय जिज्ञासा गेल जे पाठशालार पण्डितेरा एमत लिखेन नाइ जे कालूराम पूजारिर बहालिर योग्य नहे, वरं एइ लिखिया छेन जे कोनो व्यक्ति भोजक पूजारि थाकने शास्त्रानुसारे हानि नाइ। आर एइ लिखिया छेन जेअतएव देवालय स्वतंत्र की साधारण थाकनेर विवरण आमारदीगेर निटक प्रकाश नाइ। यदि साधारण हय ओ अतएव ओ कालूरामके रहित करावार योग्य जाने, रहितेर योग्य वटे, ओ यदि बहाल राखनेर योग्य जाने, बहालिर योग्य वटे। अतएव जिज्ञासा जाय जे तोमार मश्रोकलेर सश्रोयाले कि निमित्ते व्यवस्थार मजमुनेर व्यतिक्रम लिखियाछे। जवाब दिलेक जे सश्रोयाल लिखन पर्य्यन्त व्यवस्था पहुँछिया छिल ना। परे व्यवस्थार इङ्गरेजीर तरजमाय जे दिगम्बरिदीगेर ओ सेतम्बरिदिगेर देवालय साधारण हय, कि स्वतन्त्र, ओ यद्यपि साधारण हय, ताहार पुजारि रहित ओ नियुक्त करण एक श्रेणीर क्षमताले हइते पारे, किम्वा दुइ श्रेणीरेइ क्षमतार आवश्यक राखे। आर कोन व्यक्ति भोजक जाति इश्रोन प्रकारे ऐ देवालयेते तहाके पूजारि हश्रोनेर निषेध शास्त्रानुसारे बोध हय कि ना। इंचित् ये सायेलदीगेर सश्रोयाल श्रो एइ रोवकारि श्रो इङ्गरेजी १८२४ सालेर ६ मार्च ओ १८२३ सालेर १० आक्तुवर मासेर लिखित सहर वारानशेर फौजदारि आदालतेर रोवकारि ओ सन हालेर २९ मार्च्च ओ २८।३० आपरेल हश्रोया वारानशेर कोट सरकटेर रोवकारि अवगत हइया ऐ सश्रोयाल सकलेर जवाब वुधवार पर दिवस दुइ प्रहर पर्य्यन्त[१] दाखिल करेन इति।

---

१. पर्यन्त—प्रति सायोवान् पाठः।

श्रीर्ज्जयतितराम्[1]

जवाब-व्यवस्था

एतद्धर्माधिकरणप्रथमाधिपविद्यानाभिषिक्तश्रीयुक्तकुर्टनीदशमिट-साहेबधर्माधिकरणलिखितप्रश्नपत्रनिरूपपत्रमेवं तदाज्ञापितैतद्धर्माधिकरण-वादिनां प्रश्नपत्रम् अङ्गरेजीयाब्दप्रतिपाद्यचतुर्विंशत्यधिकाष्टादशशताब्दीय-मार्चमासीयपष्ठदिवसलिखितत्रयोविंशत्यधिकाष्टादशशताब्दीयाषाढमासीय-दशमदिवसलिखितवाराणस्यधिकरणफौजदारिसंज्ञकधर्माधिकरणलिखित-विचारपत्रपञ्चविंशत्यधिकाष्टादशशताब्दीयमार्चमासीयोनत्रिंशद्दिवसीयताद-शाब्दीयाष्टाविंशतिदिवसीयत्रिंशद्दिवसीयापरैलमासीयवाराणस्यधिकरणक[2]-फोटसरकटसंज्ञकधर्माधिकरणलिखितविचारपत्राणि[3] चावलोक्य यादृश-बोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

उपरिलिखितपत्राणामर्थानवगमस्य वादिप्रतिवादिनोर्द्वयोरेव पारश-नाथाख्यदेवोपासकत्वमिति निश्चितम्। पारशनाथाख्यदेवोपासना च धर्मशास्त्रे न[4] क्वापि लिखितेति। पारशनाथाख्यदेवोपासकान्तर्गतयोर्दिगम्बर-श्वेताम्बरयोस्तद्देवालयः साधारणः, पृथक् पृथग्देवालयद्वयं वेत्यत्रापि धर्मशास्त्रालिखितत्वेन[5] धर्मशास्त्रानुसारेण तद्देवालयस्य साधारण्या-साधारण्यनिश्चयो भवतु नार्हति। परन्तु पञ्चविंशत्यधिकाष्टादशशताब्दीय-मार्चमासीयोनत्रिंशद्दिवसीयवाराणस्यधिकरणक—कोर्ट सरकट-संज्ञक-धर्मा-धिकरणलिखितविचारपत्रेण विवादास्पदीभूतमन्दिरद्वयमध्ये एकं[6] मन्दिरं दिगम्बराणामसाधारणमित्युभयवादिसिद्धमिति गम्यते। ततस्तस्मिन्न-

१. श्रीजयतितराम्—व्यप०।
२. वाराणस्यधिकरणक०—व्यप०।
३. ०पत्राणि—व्यप०।
४. ०ण—व्यप०।
५ धर्मशास्त्रालिखितत्वेन—व्यप०।
६. एकं एकं—व्यप०।

साधारणे मन्दिरे पूजकनियोगकरणं दोषसहितपूजकत्यागकरणं च दिगम्बरा-म्नायिस्वेच्छया भवति ।

द्वितीयञ्च मन्दिरं तयोर्द्वयोर्मध्ये कस्यासाधारणं भवतीत्युपरिलिखित-पत्रैर्नावगम्यते इति । द्वितीयं मन्दिरं तयोर्द्वयोः साधारणं चेत् तदा तत्र पूजकनियोगकरणं दोषसहितपूजकस्य त्यागकरणञ्च तयोर्द्वयोरे-वेच्छया भवति । यदि च तयोर्मध्ये एकस्यासाधारणं तन्मन्दिरमिति निश्चयो भवति तदा यस्यासाधारणं तन्मन्दिरं भवति तदिच्छयैव तत्र पूजकनियोग-करणं दोषसहितस्य पूजकस्य त्यागकरणमिति लोके व्यवहारसिद्धमपि । अथ च धर्मशास्त्रोक्तभूर्जकण्टकजातीय एव लोकभाषायां भोजक जाति-शब्देन प्रसिद्धः । स च भूर्जकण्टकः षोडशवर्षपर्यन्तमुपनयन-संस्कारहीनस्वरूपव्रात्याद्[1] ब्राह्मण्यामुत्पन्नो[2] भवति (कुल्लूकः—मनुः—१०।२१) । व्रात्यस्य तूपनयनसंस्कारहीनत्वेन पतितत्वाद् ब्राह्मणजात्युक्त-कर्मानर्हत्वम् । अतः सुतरां व्रात्योत्पन्नस्य भूर्जकण्टकशब्दवाच्यस्य भाषाया भोजक जातिशब्देन प्रसिद्धस्य धर्मशास्त्रोक्तब्राह्मणकर्मानर्हत्वम्—इति मनु-मिताक्षराविवादचिन्तामण्यादिग्रन्थानुसारेणोत्तरम् ।

तत्र प्रमाणम्—

कामादिति ऋत्याज्यत्यागे ऋत्विजः ।
सहत्विक्त्यागे[3] याज्यस्य च पणशतद्वयं दण्डः ॥
सदोषस्य तु त्यागे न दोषः इत्यर्थः ।
इति (पृ० ३३।१५-१६) विवादचिन्तामणिग्रन्थलिखनम् ॥१॥
द्विजातयः सवर्णासु जनयन्त्यव्रतांस्तु यान् ।
तान् सावित्रीपरिभ्रष्टान् व्रात्यानिति विनिर्दिशेत् ॥
इति मनुवचनम् (१०।२०) ।

---

१. व्रात्यादिप्रादुर्भाव—व्य० ।
२. उत्पद्य०—व्य० ।
३. ऋत्विक्०—विवाद० ।

व्रात्यात्तु जायते विप्रात् पापात्मा भूर्जकण्टकः ।
आवन्त्यवाटधानौ च पुष्पधः शैख एव च ॥
इति मनुवचनम् (१०।२१) ।
उपनयनकालस्य परमावधिमाह—
आ[1]षोडशाद्द्वाविंशाच्चतुर्विंशाच्च वत्सरात् ।
ब्रह्मक्षत्रविशां काल[2] औपनायनिकः परः ॥
अत ऊर्ध्वं पतन्त्येते सर्वधर्मबहिष्कृताः ।
सावित्रीपतिता व्रात्या व्रात्यस्तोमादृते[3] क्रतोः ॥ इति मिताक्षरा-
लिखनम् (या० स्मृ० १।३७-३८) ।

श्रीर्ज्जयतितराम् श्रीहरिः शरणम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

श्रीर्ज्जयतितराम्

१६—रोयकारि मिसिल अदालत नेजामत सदर इङ्गरेजी १८२५ साल तारिख २२ माह सेतम्बर मताबक वाङ्गला १२३२ साल ७ आश्विन रोज वृहस्पतिवार आदालत मजकुरार कायम मकाम प्रथम हाकिम श्रीयुत् कुटनी इशमिट साहेबेर बैठके ।

धर्मचन्द्रप्रभृति शायेल

सायेलदिगेर वकिल सदासुख पण्डित ओ ताराचान्द, सेवाम्वरिर वकिल मुनशी मुहम्मद पानाह ओ मुनशी हशन

१. आषोडशात्—अप० ।
२. ०श्च कालस्तु—अप० ।
३. कालश्चौपनायनिकः परः—अप० ।
४. व्रात्यस्तोमात् क्रतोर्विनेति—अप० ।

आलि हाजिर हइल। हुजुरेर तलब करा वारानशेन (वाराणसेय) पाटशाला(र) पण्डितदिगेर व्यवस्था असुद्ध, ओ ए आदालतेर पण्डितदिगेर व्यवस्था यथार्थ थाकन ओ शायेलदिगेर श्रेणीमत कोनो भोजाक जाति ठाकुर-पूजार कर्म्मेर योग्य ना हओन विशये ओ जती जाति पपाकर द्वाराय, जे साहादिगेर नाम एइ दरखास्तेर निचे लेखा गियाछे, ए विषयेर ताहाकी-कातेर मार्थनार सायेलदिगेर शओयाल अन्य-हेतु सम्वलित, ये हाल मासेर १७ तारिखे दाखिल हइयाछिल, अद्य ""कार पहुछा, हाल शनेर १२ आगस्त मासेर लिखित वारानशेर कोर्ट शरकदेर रिटरन ओ रोवकारि इत्यादि कागज ओ पाटशालार पण्डित-दिगेर जबाव सम्वलित पडा गेल। जाना गेल जे पाटशालार पण्डितेरा हाल शालेर २९ जुन मासेर हुकुम माफिक कालुराम भोजक पूजा करणेर योग्य हओन विशये द्वितीय व्यवस्था लिखियाछेन। अतएव हुकुम हइल ये ए आदालतेर[१] पण्डितेरा हालेर व्यवस्था सुन्दर रूप अनुमोदने पडीया ताहारदिगेर तजविजे शास्त्रानुसारे याहा हय लिखिया दाखिल करेन, ओ यद्यपि आपनदिगेर पूर्व्व व्यवस्थार कोन विशय परिवर्त्तकरण विवेचना करेन ताहार वेओरा कैफियत लिखेन, ओ सोमवार दिवस दुइ प्रहर पर्य्यन्त जबाव दाखिल करेन; ताहा हइले परे उचित हुकुम देओया याइवेक इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

जबाव व्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणप्रथमाधिपति-स्थानाभिषिक्त-श्रीयुत-कुर्टनी इस्मिट साहेब धर्म्माधिकरण-समर्पित-वाराणस्यधिकरणक-श्रीमत्-सरकार-कंपिनी

१. आदालतेरा पाटशालार हालेर—व्यव०।

बहादुराख्य-सार्व्वभौम-पाठशालास्थ-पण्डित-लिखित-व्यवस्था-पत्रम-वलोक्य विविच्य च शास्त्रानुसारेण पर्य्यवसितार्थो लिख्यते। उपरिलिखित-व्यवस्थापत्रे यानि प्रमाणानि लिखितानि तानि विश्वम्भरवास्तुशास्त्रस्थानि जातिविवेकस्थानि बालम्भट्टकृताचाराध्यायस्य मिताक्षराटीकारूपग्रन्थस्थानीति(१)लिखितम्। परन्तु केषां मुनीनां तानि वचनानीति तत्र न लिखितम्। तेषां ग्रन्थानामिदानीं प्रचाराभावात् कुत्रापि तदनुसारेण व्यवस्था न दीयते। केनापि यद्यप्यप्रचरिततत्तद्ग्रन्थानुसारेणैव तत्तत्पण्डितै-र्व्यवस्था दत्ता। परन्तु तद्व्यवस्थालिखितवचनजातैर्भोजकजातिर्देवमन्दिरे देवपूजार्थं नियोक्तव्य इति नायाति। तथा हि भोजकजातेरुत्पत्तिप्रकार-द्वयं लिखितम्। तैस्तद्वचनजातैः षोडशवर्षपर्य्यन्तमुपनयनसंस्काररहीन-स्वरूपव्रात्यद्विजाद् ब्राह्मण्यामुत्पन्नो भूर्जकण्टकजातिरित्येकः प्रकारः। द्वितीयश्च तस्मादेव भूर्जकण्टकाद् ब्राह्मण्याम् (उत्पन्नः) आवर्तकजातिः, आवर्तकाद् ब्राह्मण्यामुत्पन्नः कटधानजातिः, कटधानाद् ब्राह्मण्यामुत्पन्नः पुष्पशेखरजातिः, पुष्पशेखरजातीयायां स्त्रियां ब्राह्मणेनोत्पन्नो भोजक-जातिरिति।

स एव भोजको मागध इत्यनयोर्पक्षयोर्म्मध्ये पूर्व्वः पक्षस्तेषामभिमत-श्चेत्तदा पूर्व्वपक्षोक्तभूर्जकण्टकस्य देवपूजार्थं देवमन्दिरे नियोगः शास्त्रानु-सारेण न सम्भवति,संस्कारहीनस्य व्रात्यस्य सावित्रीपतितत्वेन धर्म्मशास्त्रोक्त-ब्राह्मण[2]जात्युक्तकर्म्मानधिकारित्वात्। तदुत्पन्नस्य भूर्जकण्टकस्यापि सावित्रीपतितत्वेन सुतरां धर्म्मशास्त्रोक्तब्राह्मणजात्युक्तकर्मा[3]नर्हत्वम्। द्वितीयः पक्षस्तेषामभिमतश्चेत्तदा द्वितीयपक्षोक्तभोजकजातेर्देवपूजार्थं देवमन्दिरे नियोगः शास्त्रानुसारेण कदाचिदपि न सम्भवति, सावित्रीपतित-

१. स्थानो०—स्था० ।

२. ०जात्युक्त०—स्था० ।

३. कर्म्मनर्ह०—स्था० ।

मात्यवंशोद्भवायां पुष्पशेखरायां स्त्रियां ब्राह्मणेनोत्पन्नस्य मोजकस्य तदभिमत-मागधाभिधस्य पतितस्त्रीजातत्वेन पतितत्वात्, मागधत्वेन वर्णसङ्करत्वाद्[1] धर्मशास्त्रोक्तब्राह्मणजात्युक्तकर्म्मानर्हत्वम् ।

यत्तु तैरुक्तं क्वचित्[2] पुस्तके भूर्जकण्टकस्य पूजकत्वविषये निषेधाभावाद् देवमन्दिरे देवपूजार्थं नियुक्तो मोजकजातीयः कालूरामाख्यो निष्कासयितुमयुक्त एव, तदपि न—

अत ऊर्ध्वं पतन्त्येते सर्वधर्मबहिष्कृताः । (यास्मृ० १।३८)
इत्यादिना योगीश्वरेण,
सावित्रीपतिता व्रात्या भवन्त्यार्य्यविगर्हिताः । (२।३६)

इत्यनेन मनुना [च] धर्मशास्त्रोक्तब्राह्मणजात्युक्तकर्म्ममात्र एव तस्यानधिकारविधानात् ।

यत्तूक्तम्–मोजकापेक्षया निकृष्टस्य देवलकादेर्धर्म्मशास्त्रे देवपूजकत्वमुक्तम्, तत्र प्रमाणं किमपि न लिखितं तैरस्माभिरपि न दृष्टं क्वापि, अतस्तदपि हेयमेव । तस्मादस्माभिर्लिखिता पूर्व्वव्यवस्थाऽस्मिन् विवादे परावर्तनयोग्या न भवतीति ।

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीहरिःशरणम्
श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

१. °शङ्कर°—व्यप० ।
२. कचित्—व्यप० ।

श्रीर्ज्जयतितराम्

लम्बर २३०२
१७ जानकीनाथराय प्रभृति — आपीलाण्टान्
गङ्गागोविन्दवन्द्योपाध्याय — रस्पाडण्ट
सओयाल

सदर देओयानी आदालतेर कायेम मोकाम प्रथम हाकिम श्रीयुत कुर्टनि इसमिठ साहेबेर हजुर हइते जानकीनाथराय प्रभृति आपिलाण्टान गङ्गागोविन्द(वन्द्यो)पाध्याय रस्पाडण्टेर २३०२ लम्बरेर मोकदमाते अंगरेजी १८२५ सालेर २९ जुन मासेर लिखित ए आदालतेर पण्डितानेर नामे कल्य दुइ प्रहर पर्य्यन्त वचन प्रमाणेर तफसील संवलित जबाव दाखिल करणे हुकुम। सवाल एइ ये :—

प्रथम सओयाल—१

वङ्गदेश निवासी एक जन ब्राह्मण आपन मातार त्यक्त धनेर उपर दखिल थाकिया वैमात्रेय भ्राता ओ स्त्री उत्तराधिकारि राखिया मरियाछे, ओइ त्यक्त धन स्त्रीके वर्त्तिवे, कि वैमात्रेय भ्राताके ?

द्वितीय सओयाल—२

यदपि स्त्रीके वर्त्ते, तवे स्त्री निःसन्ताना मरिले, ओइ त्यक्त धन वैमात्रेय भ्राताके आर्शिवे कि ना ?

तृतीय सओयाल—३

ओइ दुइ जनेर मातामह पृथक थाकन, एक वैमात्रेय भ्रातार उत्तराधिकारि द्वितीय वैमात्रेय भ्राता हओने शास्त्रमतो¹ निषेध आछे कि ना ?

¹ शास्त्रमते—इति स्वीयान् पाठः।

चतुर्थ सओयाल—४

यद्यपि प्रथम सओयालेर जवावानुसारे मृत व्यक्तिर त्यक्त धन स्त्रीके पतिर ऋण परिशो(ध)नार्थे ओ ताहार स्वर्गार्थे किम्वा अन्य हेतुते किम्वा आपन इच्छा ओ मतक्रमे ओइ सम्यक धन किम्वा तार मध्ये कतोक विक्रय ओ हेवाकरणेर क्षमता आछे कि ना ?

पञ्चम सओयाल—५

यद्यपि प्रपौत्र ओ पुत्रेर दौहित्रेर वैमात्रेय भ्राता वर्त्तमान आछे, ओइ दुइ जनेर मध्ये दौहित्रेर स्त्री, जे पतिमरणेर परे ताहार धनेते दखिलकार छिलो, निः सन्ताना मरिले पर मातामहेर त्यक्त धन कोन व्यक्तिके अर्शे ?

श्रीर्ज्जयतितराम्

जवाव-व्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणप्रथमाधिपतिस्थानाभिषिक्तश्रीयुतकुर्टनीहरामिटचाहेव-धर्म्माधिकरणलिखितप्रश्नपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

वङ्गदेशीयः कश्चन ब्राह्मणः स्वमातृत्यक्तधनं प्राप्य तद्धन आयत्तत्वं सम्पाद्य स्वपत्नीमुत्तराधिकारिणीं स्ववैमात्रेयभ्रातरञ्चोत्तराधिकारिणं संस्थाप्य मृतस्तत्र तद्धनं यदि स्वमातुस्स्त्रीधनं स्यादथवा तस्याः पैतृकं धनमुत्तराधिकारित्वेन तत्संक्रान्तं स्याद्, उभयथाप्युत्तराधिकारित्वेन पुत्रेण प्राप्तं तद्धनं पुत्रमरणानन्तरं पुत्रस्य ये उत्तराधिकारिणस्तेषामेव भवति, तत्र च सत्यां पत्न्यां तस्या एवाधिकारो न तु वैमात्रेयभ्रातुरिति ।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा । इत्यादि दायभागादि(दाभा० ११।४)ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् (२।१३५) ।

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरानुसारेण तद्धनाधिकारिण्याः पत्न्या मरणोत्तरं दुहितृदौहित्रपितृमातृसहोदर[1]भ्रातृपर्य्यन्ताभावे तद्धने वैमात्रेयभ्रातुरधिकार इति ।

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रमाणम् ॥ १ ॥ तत्रापि प्रथमं सोदरस्तदभावे वैमात्रेयः—इति दायभागादिग्रन्थ (दाभा०—११।५।७.)[2] लिखनम् ॥२॥

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

भिन्नमातामहकवैमात्रेयभ्रातृधने भिन्नमातामहकापरवैमात्रेयभ्रातुरधिकारे शास्त्रानुसारेण निषेधो नास्तीति ।

अत्र प्रमाणम्—

द्वितीयप्रश्नोत्तरलिखितप्रमाणम् ॥ २ ॥

चतुर्थप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरानुसारेण मृतस्य धनिनः पत्न्या गृहीतधनायाः पतिकृतकुटुम्बभरणार्थर्णपरिशोधनार्थं स्वशरीरधारणार्थं भर्तृकुटुम्बभरणार्थं पत्युरावश्यकश्राद्धाद्यर्थं च तद्धनविक्रयाधिकारः । एवं पतिस्वर्गार्थधनानुसारेण दानाधिकारोऽपि । परन्तु यावद्धनविक्रयेण[3] पतिकृतकुटुम्बभरणार्थर्णपरिशोधनं पतिश्राद्धादि पतिकुटुम्बभरणं स्वशरीरधारणञ्च भवति तावद्धनविक्रय एवाधिकारो, न त्वधिकधनविक्रये । यदि च समुदायधनविक्रय-

१. सहोदर०—व्यव० ।

२. भ्रातरस्तथेत्युक्तभ्रातुरधिकारावसरे प्रथमं सोदरो गृह्णीयादित्यर्थः । तस्य त्वभावे सापत्नो भ्राता, एकप्रभवत्वेन तस्यापि भ्रातृशब्दार्थत्वात् । (दाभा० ११।५।७) ।

३. ०विक्रयेण—व्यव० ।

व्यतिरेकेण पतिकृतकुटुम्बभरणार्थणपरिशोधनादिकमेव न भवति तदा तदर्थं समुदायधनविक्रयेऽप्यधिकारः, न तु स्वेच्छया स्वाभिप्रायेण वा समुदायधनस्य यत्किञ्चिद्धनस्य वा दानविक्रयाधिकारः ।

अत्र प्रमाणम्—

कर्तुकामेन[1] या भर्त्रा उक्ता देयमृणं त्वया ।
अप्रपन्नापि सा दाप्या धनं[2] यद्यात् श्रितं स्त्रिया ॥

इति विवादभङ्गार्णव (१ विवाभ०पृ०२०६) विवादार्णवसेतु(पृ० ३०) धृतनारदवचनम्[3] (पृ० ५१) ॥ १ ॥

यदि भर्तृधनं स्त्रिया गृहीतमप(पश्चा)पि स्वीकारमकुर्वत्यपि शोधयेत् । यदि तु मृत्युकाले भर्त्रा त्वया मम ऋणं देयमित्याज्ञापिता स्वीकारं करोति तदाऽगृहीतधनापि शोधयेत्—इति विवादभङ्गार्णवलिखनम् (१, पृ० २०६ ख) ॥ २ ॥

एवञ्च पत्युरौर्ध्वदेहिकक्रियार्थं दानादिकमप्यनुमतमिति—इति दायभागलिखनम् (११।१।६१) ॥३॥

वर्तनाशक्तौ आधानमप्यनुमतम्, तत्राप्यशक्तौ विक्रयणमपि—इत्यादि दायभागग्रन्थलिखनम् (११।१।६२) ॥ ४ ॥

रिक्थग्राही ऋणं दाप्यः—इत्यादि विवादभङ्गार्णवादि(१, पृ०२१४ ख) ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम्[4] (२।५१) ॥ ५ ॥

नापहारं स्त्रियः कुर्युः पतिवित्तात्[5] कथञ्चन—इति भारताद् (१३।४७।२४) अपहारशब्दार्थेन यथेष्टदानविक्रयाद्यनधिकार इति दायरहस्य लिखनञ्चेति ॥ ६ ॥

---

१. भर्तुकामेन—विभसे० ।

२. धनं यद्याश्रित स्त्रिया—विभसे० ।

३. न स्त्री पतिकृत दद्यादृण पुत्रकृत तथा । अभ्युपेतादृते यद्वा सह पत्या कृतं भवेत् ॥ नामसं० (पृ०२४) । विवादार्णवसेतौ धृतमिदं नारदीयं वचनं नारदमनुसंहितायां बहुभिभिन्नैः पदैः पठितम् ।

४. रिक्थग्राह ऋण दाप्य–इति याज्ञ०पाठः, ऋणग्राही व्यप० ।

५. दायाद्–इति पाठान्तरम् । पितृवित्तात् इति–धर्मकोशस्थ. पाठः ।

पञ्चमप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरानुसारेण धनाधिकारिणि दौहित्रेऽगते सति दौहित्र-मरणानन्तरं गृहीतधनायास्तत्पत्न्या मरणोत्तरं दौहित्रवैमात्रेयभ्रातुरधिकारो न तु प्रमुलिखितप्रभार्यागतधनाधिकारिदौहित्रप्रमातामहप्रपौत्रस्य वर्त्तमा-नस्याधिकार इति। वङ्गदेशप्रचलितदायभागदायतत्त्वविवादभङ्गार्णवविवा-दार्णवसेतुप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥ ५ ॥

अत्र प्रमाणम्—

तृतीयप्रश्नोत्तरविहितप्रमाणम् ॥ ३ ॥

श्रीजयपतिराम्	श्रीहरिःशरणम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण	श्रीरामतनुशर्मविद्यावागीशेन

नंबर २५२९

१८. रोयकारि मिसिल आदालत देमानी सदर अंरेजी १८२५ साल तारिख ३ माह अगस्ति मताबक बाङ्गला १२३२ साल तारिख २० माह श्रावण रोज बुधबार आदालत मजकुरार कायम मकाम प्रथम हाकिम श्रीयुत कुर्टनी इस्मिट साहेबेर बैठके :—

मृत राजा अरिमर्दनशाहि	आपिलाएट
शिवदयाल उपाध्याय	रस्पाडएट

हाल शालेर १६ जुन मासेर लिखित जिला गोरकपुरेर जज साहेबेर एक किता रिटरन ताहार शामिलेर रोयकारि आदि सम्बलित लम्बर पहुँछियाछे, अद्य पड़ा गेलो। हुकुम हइलो ये ए आदालतेर पण्डितेरा हाल सनेर २२ जुन मासेर हओया जिला गोरकपुरेर देमानी आदालतेर रोयकारिर मजमुन बोध करिया कल्य दुइ प्रहर पर्य्यन्त निवेदन करेन जे ऐ देशेर शास्त्रा-

नुसारे देलमर्दनशाहि ओ समशेरशाहि दुइ सहोदर भ्राता, ओ पृथ्वीपतिशाहि सहोदर भ्रातुष्पुत्र, एहार मध्ये मृत राजा अरिमर्दनशाहिर उत्तराधिकारि कोन व्यक्ति बोध हय। ओ मुनसी महम्मद पनाह ओ लाला अवधलाल ये प्रकारे ताहादिगेर नामिक ओकालतनामा ओइ देलमर्दनशाहिर तरफ हइते पँहुछियाछे ताहा कल्यकार मिशिले दाखिल करेन इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

जवाब-व्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणप्रथमाधिपतिस्थानाभिषिक्तश्रीयुतकुर्दनीइशामिटसाहेव-धर्म्माधिकरणलिखितप्रश्नप्रतिरूपपत्रमवलोक्य यादृशार्थबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

अज्ञानपत्यः पत्न्यादिपितृपर्य्यन्तरहितो राजा अरिमर्दनशाहिसंज्ञकः कश्चिद् व्यक्तिविशेषो दलमर्दनशाहि-शमशेरशाहिसंज्ञकौ द्वौ सोदरभ्रातरौ पृथ्वीपतिशाहिसंज्ञकमेकं सोदरभ्रातृपुत्रं च सरदय मृतः, तत्र तत्सोदरभ्रातरौ दलमर्दनशाहिशमशेरशाहिसंज्ञकावेव तदुत्तराधिकारिणौ। सतोः सोदरभ्रात्रोः सोदरभ्रातृपुत्रस्य पृथ्वीपतिशाहिसंज्ञकस्य न तदुत्तराधिकारित्वमिति। अत्र राज्ञोऽरिमर्दनशाहिसंज्ञकस्य मरणोत्तरं तदुत्तराधिकारित्वविषये विवदमानानां अंगरेजशब्दप्रतिपाद्यपञ्चविंशत्यधिकाष्टादशशताब्दीय—जुनमासीयद्वाविंशतिदिवसीयगोरखपुरसंज्ञकप्रदेशाधिकरणकदेमानी-आदालत-संज्ञकधर्म्माधिकरणलिखितविचारपत्रनिविष्टानां त्रयाणां मध्ये राज्ञी वदनकुमारिनाम्नी काचित् स्त्री यद्यपि लिखिता, परन्तु तस्याः कश्चिद् वृत्तान्तस्तद्विचारपत्रे न लिखित इति सा राज्ञी राजा-अरिमर्दनशाहि-संज्ञकस्य का भवतीति न ज्ञातः। अतएव सा राज्ञी राज्ञोऽरिमर्दनशाहि-संज्ञकस्योत्तराधिकारिणी भवति न वेत्यपि न लिखितः। एवं तत्पत्रनिविष्टानां त्रयाणां मध्ये पृथ्वीपतिशाहिसंज्ञकस्य धनिनो राज्ञः सोदर-

भ्रातृपुत्रश्चाहं राज्ञो दत्तकपुत्रः, एवं तमलिकनामाख्यं पत्रं राज्ञा मह्यं दत्तमित्यादिवृत्तान्तो यद्यपि तत्पत्रे लिखितः, किन्तु यथाशास्त्रं दत्तकपुत्रग्रहणं तेन राज्ञा कृतं न वेत्यस्य, एवं तमलिकनामाख्यं पत्रं तस्मै राज्ञा दत्तं न वेत्यस्य च तत्पत्र(।)लिखितत्वेन तस्य दत्तकपुत्रत्वादिसिद्धिर्भवति न वेत्यपि निश्चयः कर्त्तुं न शक्यत इति गोरखपुर-संज्ञक-प्रचलित-मिताक्षरा-वीरमित्रोदयप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा । तत्सुताः—

इत्यादि मिताक्षरा (पृ० २१९)वीरमित्रोदय (पृ० ६०२)प्रभृति-ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् (२।१३५) ॥१॥

अनपत्यस्य धनं पत्न्यभिगामि तदभावे दुहितृगामि तदभावे मातृगामि तदभावे पितृगामि तदभावे भ्रातृगामि तदभावे भ्रातृपुत्रगामि—इत्यादि तद्धृतवृहद्विष्णुवचनम् (मिता० पृ० २१७; वीर० पृ० ६०३) ॥२॥

अनन्तरः[1] सपिण्डाद्यस्तस्य तस्य धनं भवेत् । इत्यादि मनु(६।१८७)-वचनञ्चेति ॥ ३ ॥

श्रीर्जयतितराम्	श्रीहरिः शरणम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण	श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

श्रीर्जयतितराम्

१९. प्रथम हाकिम श्रीयुत कुर्टनी इशमिट साहेबेर चैठके सञ्चोयाल एइ ये—

पण्डितदिगेर स्थाने सञ्चोयाल :—

१. अनन्तरस्त्रि०—व्यय०।

ये हिन्दु ब्राह्मण हय, सोदरा दुइ भगिनीके विवाह करिया ओइ दुइ जनकेइ एकत्र आपन वाटीते राखिते पारे कि ना; वचन ओ कोन ग्रन्थेर लिखित ताहा सहित जवाव तलब इति ।

पण्डितदिगेर आरजि सन १८२५, १३ सेतम्बर दाखिल हइल ।

कल्य हुजुर हइते एइ मजमुने हुकुम हइयाछे ये हिन्दु ब्राह्मण जाति दुइ सहोदरा भग्नीके विवाह करिया एकत्र ऐ दुइ जनके आपन वाटीते राखिते पारे कि ना-वचन ओ ग्रन्थेर नाम सम्वलित आमरा जवाव दाखिल करि । सोदावन्द सहोदरा दुइ भगिनीके विवाह-करण ओ ताहादिगेके एकत्र आपन वाटीते राखन वङ्गदेशे सम्यक प्रकारे ओ पश्चिमदेशे कोनो स्थले चलित आछे । ये विषयेर दलिल धर्म्मशास्त्रेर ग्रन्थे एइ क्षण पर्य्यन्त पाइ नाइ । तलाप करितेछि; पाइले हुजुरे समर्पन करा प्रश्नेर जवाव दाखिल करिब ।

श्रीर्ज्जयतितराम्

जवाब-व्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणप्रथमाधिपतिस्थानाभिपिक्तश्रीयुतकुटंनीइरामिटसाहेब-धर्म्माधिकरणलिखित(म्)केनचिद् ब्राह्मणेनैकोदरप्रसूते द्वे कन्ये विवाह्य स्वगृहे स्थापयितुं शक्यते न वेत्यर्थकप्रश्न[1]पत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तद्नुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

वङ्गदेशे सर्व्वत्र, पश्चिमदेशेऽपि क्वचिदेकेनैकोदरप्रसूते द्वे कन्ये ततोप्यधिकतरा[2] विवाह्य स्वगृहे स्थाप्यन्ते इति व्यवहारः । अत्र विषये

१. प्रश०—व्यप० ।

२. ततोप्यधिकारा—व्यप० ।

यद्यपीदानीं प्रसिद्धधर्म्मशास्त्रे क्वापि विधिनिषेधौ न लिखितौ, तथापि पुराणादौ मुनीनां तादृशाचारदर्शनात्तदनुसारेणेदानीन्तनानामपि तादृशाचारः। अतएव तत्तद्देशाचारानुसारेणैव तत्तद्देशीयव्यवहारनिश्चयो भवितुमर्हतीति धर्मशास्त्रानुसारिणी व्यवस्था।

अत्र प्रमाणम्—

यावत् सूर्य उदेति स्म यावच्च प्रतितिष्ठति।
सर्व्वं तद्यौवनाश्वस्य मान्धातुः क्षेत्रमुच्यते॥ (९।६।१०)
शशबिन्दोर्दुहितरि बिन्दुमत्यामधान्नृपः।
पुरुकुत्समम्बरीषं मुचुकुन्दञ्च योगिनम्॥ (९।६।३८)
तेषां स्वसारः पञ्चाशत् सौभरिं वव्रिरे पतिम्। (९।६।३९-१)
वृतःस राजकन्याभिरेकः पञ्चशताबरः॥ (९।६।४३-२)
एवं गृहे वसन् कालं विरक्तो न्यासमास्थितः।
वनं जगामानुययुस्तत्पत्न्यः पतिदेवताः॥ (९।६।५३)
इति श्रीभागवतीयनवमस्कन्धे सौभर्य्युपाख्यानम्॥ १॥
देशजातिकुलानाञ्च ये धर्म्माः प्राक् प्रवर्त्तिताः।
तथैव ते पालनीयाः प्रजा प्रक्षुभ्यतेऽन्यथा॥

इतिवीरमित्रोदयग्रन्थ(धको०-पृ० १६५१, स्मृच०पृ० १०, धर्मास्तत्र०-इति पाठान्तरम्,)धृतबृहस्पतिवचनम्॥ २॥

जातिजानपदान् धर्मान्श्रेणीधर्मांश्च धर्मवित्।
समीक्ष्य कुलधर्मांश्च स्वधर्मं प्रतिपादयेत्॥
इति मनुवचनञ्चेति (८।४१)॥३॥

श्रीऊर्जंपतितराम्　　　　श्रीहरिःशरणम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण　　　　श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

---

१. श्लोकोऽयं धर्मकोषे न दृष्टः।

श्रीर्जयतितराम्[1]

सओयाल—

२०. रोवकारि मिसिल आदालत देओयानि सदर इंरेजि १८२५ साल तारिख ८ नवेम्बर मोतावक बाङ्गला १२३२ साल तारिख २४ कार्त्तिक रोज मङ्गलवार आदालत मजकुरार कायेम मोकाम प्रथम हाकिम श्रीयुत कुर्टनी इशमिट साहेबेर येठ—

कुन्दनगिर	आपिलाण्ट
दुर्गागिर ओ गायरह	रष्पाण्डण्टान

एइ सनेर तारिख १३ सेतम्बर माहार जेला कानपुरेर यजसाहेबेर एक केता रोवकारिर सम्वलित रिटरन "सन्यरे प्राप्त हइया धरा पडा गेल । हुकुम हइल ये ए अदालतेर पण्डितेरा एइ सनेर तारिख १० आगष्ट माहार गुजरान शिवराजपुरेर कायेम मोकाम थानादार सयिद कादेर आलिर आरजि दृष्टि करिया आरज करेन ये गङ्गा ब्राह्मन[2] यवन जातीया वेश्यार गर्भे जन्मिया ओ आपनार ज्ञानावस्थावधि हिन्दुर धर्म्म आचरण स्वीकार करिया छे, ओ ताहार पिता हिन्दु छिल, एतत्प्रयुक्त शास्त्रानुसारे हिन्दुर गणनाय आसिवेक कि ना, एवम् ए आदालतेर आरवावशारा उपरे उक्त कागज पडिया फतओया लेखेन ये ऐ व्यक्ति अपनार यवनि मातार त्यक्त धनेर उत्तराधिकारि (शरा) नुसारे हइते पारे कि ना । पण्डितदिगेर ओ आरवावशारा· प्रभृतिर (व्यवस्था) अवलोकनानन्तर उचित हुकुम देओया याइवेक इति ।

---

१. श्रीर्जयति०—न्यस०।

२. °ब्रह्मन—इ ति शुद्धोपाद् पाठः।

श्रीर्जयतितराम्

जवाब-व्यवस्था

एतद्धर्माधिकरणप्रथमाधिपतिस्थानाभिषिक्तश्रीयुतकुर्टनीदशामिटसाहेब-धर्म्माधिकरणलिखितप्रश्नपत्रमेवं तत्समर्पित अंगरेजी-शब्दप्रतिपाद्य[1] पञ्च-विंशत्यधिकाष्टादशशताब्दीयागस्तिमासीयदशादिवसलिखितशिवराजपुरग्राम-स्थस्थानपालप्रतिनिधि-सैयद-कादर-अली-संज्ञकस्य विज्ञप्तिपत्रमवलोक्य यादृशार्थबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

उपरिलिखितप्रश्नपत्रसमर्पितपत्राभ्यां गङ्गाबक्ससंज्ञकस्य यवन-जातीयवेश्यागर्भजातत्वेन लिखितस्य स्वज्ञानावधि हिन्दुजातीयधर्म्मा-चरणेऽपि सत्पितुर्हिन्दुजातित्वेऽपि हिन्दुजातावन्तर्भावः शास्त्रानुसारेण भवितुं न शक्यते। प्रत्युत[2] गङ्गाबक्सपितुर्हिन्दुजातीयस्य उमरावगिर-संज्ञकस्य सन्न्यासिनो[3] ज्ञानकृतयवनीगमनेनाकृतप्रायश्चित्तस्य यवन-जातितुल्यत्वेन तत्पुत्रस्य तज्जन्यत्वेन यवनीगर्भजातित्वेन च सुतरां यवन-जातीयत्वमेवेति कान्यपुरास्यप्रदेशप्रचलितमनुमिताक्षरानुसारिणी व्यवस्था इति।

तत्र प्रमाणम्—

चण्डालान्त्यस्त्रियो गत्वा भुक्त्वा च प्रतिगृह्य च।
पतत्यज्ञानतो विप्रो ज्ञानात्साम्यन्तु गच्छति॥

---

1. प्रतिपाद्य—व्या०।
2. प्रत्युत—व्य०।
3. सन्यासि—व्या०।

इति मनुसंहिता (११।१०५)मिताक्षरादिग्रन्थ[1]धृतमनुवचनम् ।

श्रीर्जयतितराम् **श्रीहरिःशरणम्**

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण **श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशे**

एइ व्यवस्था दाखिल कानैम मोकाम प्रथम हाकिम श्रीयुत कुर्ट इशामिट साहेबेर बैठके—

---

२१. सदर देओयानी आदालतेर द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्ट इशामिट साहेबेर सओयाल—

यद्यपि दुइ जन हिन्दु ब्राह्मण जाति सरिकिमते मदिरा बोतल सकल क्रय विक्रयेर वाणिज्य करे। ए प्रकार वाणिज्य बङ्ग देशे ओ पश्चिमदेशेर शास्त्रानुसारे सिद्ध बटे कि असिद्ध; अ यद्यपि असिद्ध हय सरिकीर शेष[2] हइले पर एक अंशीके अन्य अंशीर उपर ताहार लभ्येर अंश दाओया अर्शे कि ना। उचि ये ए विषयेर जवाब अगौणे दाखिल करेन इति।

जवाव-व्यवस्था

ब्राह्मणजातेर्मदिरापात्रव्यापारः शास्त्रसिद्धो न भवति। यद्यपि निन्दितत्वेन तेन कर्म्मणा द्वयोर्ब्राह्मणयोः संभूयकारिणोरुत्पन्नं धनम् तत्र[3] द्वयोः समांश इति शास्त्रानुसारिणी व्यवस्था।

तत्र प्रमाणम्—

याजनाध्यापनप्रतिग्रहैर्द्विजो धनमर्ज्जयेत्[4]—इति दायभाग[5]मिताक्षरा (पृ० ३१.२)धृतमनुवचनम् (१०।७६) ॥१॥

---

१. वचनमिदं मिताक्षरायामुपपातकशुद्धिप्रकरणे (याज्ञ० ३।२६५) नोपलभ्यते।

२. शेष शेप—व्यप०।

३. तत्र येर—व्यप०।

४. षण्णां [illegible] कर्म्मणामस्य त्रीणि कर्म्माणि जीविका।
याजनाध्यापने चैव विशुद्धाच्च प्रतिग्रहः॥
इति मनुस्मृतिवचनम्। तथा च मिताक्षरायाम्॥

५. दायभागे वचनमिदं नोपलभ्यते।

यदा तु स्वत्वं लौकिकं तदा—

असत्प्रतिग्रहादिलब्धस्यापि स्वत्वात् इति मिताक्षरा (पृ० १६८-१६६)

लिखनञ्चेति ॥२॥

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीहरिःशरणम्
श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

श्रीर्जयतितराम्

सओयाल

२२. नानाशास्त्राध्यापक श्रीयुत वैद्यनाथमिश्र तथा श्रीयुत रामतनुविद्यावागीशपण्डितान् सदर देओयानि आदालत सन्न-रित्रेषु—

यदि स्यात् कोन व्यक्तिर दुइ पुत्र थाके, सेइ व्यक्ति आपन जीवत्माने आपनार जमीदारी सेइ दुइ पुत्रके समर्पण करे, आर ताहार कतक दिवस परे ओइ कर्त्ता व्यक्तिर वर्त्तमाने ताहार ज्येष्ठ पुत्र एक स्त्री राखिया ताहाके पोष्यपुत्र राखिवार निमित्तक अनुमति पत्र लिखिया दिया मृत्यु हय। ताहार कतक दिवस परे ओइ कर्त्ता व्यक्ति, अर्थात् पुत्रदिगेर पितार, परलोक हय। सबे शास्त्रानुजाय ओइ कर्त्ता व्यक्तिर ज्येष्ठ पुत्रेर स्त्री जमीदारीर हिस्सा पाइवे पारे कि, केवल खोरपोष पाय। यदि स्यात् खोर-पोष पाय, सबे कर्त्ता व्यक्तिर कनिष्ठ पुत्रेर नाम संवलित ओइ स्त्रीलोकेर नाम सेरस्ताते दाखिल करा आवश्यक कि, कि प्रकार, शास्त्रानुजाय जाहा यथार्थ हय इहार विवेचना करिया अतित्व-राय प्रत्युत्तर लिखिवेन इथि। २२ फिवरवरि—

श्रीर्जयतितराम्

जवाब-व्यवस्था-पत्र ।

रोयडाख्यस्थानाधिपतिप्रेषितप्रश्नपत्रमवलोक्य यादृशस्तत्रोभो जातस्तद्नुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यदि पित्रा द्वयोः पुत्रयोः स्वस्वामिकसमस्तस्थावरास्थावरधनं समर्पितम्, ततःकिञ्चित्कालानन्तरं जीवत्येव पितरि तयोर्मध्ये ज्येष्ठः पुत्रः स्वजायां प्रति दत्तकपुत्रकरणार्थमनुमतिपत्रं लिखित्वा दत्त्वा मृतः, तदनन्तरं कनिष्ठपुत्रं संस्थाप्य तयोः पिता मृतः स्यात्, अत्र प्रश्नोः पत्रलिखितसमर्पणशब्दस्यार्थद्वयं भवति । स्वस्वत्वत्यागपूर्व्वकपरस्व[1]त्वापादनरूपं दानम्, सत्यपि स्वस्वत्वे धनसंरक्षणार्थमाज्ञाकरणं च । तत्र यदि पित्रा स्वस्वत्वत्यागपूर्व्वकपरस्वत्वापादनरूपं[2] दानं कृतं स्यात्तदा तद्दानेन पितुः स्वत्वापगमात् पुत्रयोरेव तद्धनं जातम् । अतो जीवत्यपि पितरि मृतस्य ज्येष्ठपुत्रस्यानुमत्या भविष्यत्तत्पत्नीकृतदत्तकः पुत्रस्तद्धने स्वपितृयोग्यांशं लब्धुमर्हति । यदि तदनुमत्या तत्पत्नीकृतो दत्तकः पुत्रो नैव भविष्यति तथापि दानपक्षे स्त्रीत्वेन तत्पत्न्यपि स्वभर्तृयोग्यांशभागिनी भवति । यदि च पित्रा सत्यपि स्वस्वत्वे धनसंरक्षणार्थमाज्ञा कृता स्यात्तदा तदाज्ञया पितुः स्वत्वाविनाशेन पुत्रयोस्तद्धनं न जातम् । अतो जीवति पितरि मृतस्य ज्येष्ठपुत्रस्य तद्धनाशयोग्यताविरहेण तद्धने स्त्रीत्वेन तत्पत्न्या नाधिकारः । किन्तु पत्यनुमत्या भविष्यद्दत्तकस्य पितामहधने यादृशोंऽशो भविष्यति तादृशांशसंरक्षणकर्तृत्वेन भविष्यद्[3]दत्तकस्याप्राप्तव्यवहारकालपर्य्यन्तं राज्ञा सा नियोक्तव्या । ततः सर्व्वथैव कर्त्तुः कनिष्ठपुत्रनामसहितं तस्या(पि) नाम राजस्थानेऽवश्यं लेख्यम्—इति वङ्गदेशप्रचलितमनुदायभागव्यवहारतत्त्वप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

---

१ °परस्वत्वादान°—व्यव० ।

२ °परस्वत्वापादान°—व्यव० ।

३. भविष्यत्°—व्यव० ।

तत्र प्रमाणम्—

स्वस्वत्वनिवृत्तिपूर्व्वकपरस्वत्वापादनं[1]*दानम्*–इति (याज्ञवल्क्यस्मृति-टीकासुबोधिनी पृ० ७४१) कुल्लूकभट्टलिखनम् ॥ १ ॥

न भ्रातरो न पितरः पुत्रा रिक्थहराः पितुः–इति मनुवचनम् ॥ २ ॥ (९।१८५)।

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा–इत्यादि दायभागादि(दाय० ११।१।४)ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥ ३ ॥ (२।१३५)

अस्वाम्यं हि भवेदेषां निर्दोषे पितरि स्थिते–इति दायभागादिग्रन्थधृत-देवलवचनम् (दाय ९।१।१८) ॥ ४ ॥

पुत्रान्[2] *द्वादश यानाह नृणां स्वायम्भुवो मनुः ।*
तेषां षड्बन्धुदायादाः षडदायादबान्धवाः ॥

औरसः क्षेत्रजश्चैव दत्तः कृत्रिम एव च ।
गूढोत्पन्नोऽपविद्धश्च दायादा बान्धवाश्च षट् ॥

–इति मनुवचनद्वयम् ॥५॥ (९।१५८-१५९)

ये जाता येऽप्यजाताश्च ये च गर्भे व्यवस्थिताः ।
वृत्तिं च तेऽभिकांक्षन्ति वृत्तिलोपो विगर्हितः ॥

–इति दायभागादि(ग्रन्थ-, दाय-२।४५)धृतमनुवचनम्[3] ॥६॥

अभावे बीजिनो माता तदभावे तु पूर्व्वजः ।

—इति व्यवहारतत्त्व(पृ० ६४६५)धृतनारदवचनम् (नारदसं० पृ० ३० २।३३) ॥७॥

---

१. °पादानं-व्या० ।

२. पुत्रान—व्या० ।

३. व्यासवचनमिदमिति धर्मकोशाकाराः, मिताक्षरायाम् (२।११३) इदमुद्धृतम् । मनुस्मृतौ तु नैतत् दृश्यते । मनोर्वचनमिदमिति दायभागेऽप्युल्लिखितम् ।

अप्राप्तव्यवहाराणां[1] धनं व्ययविवर्जितम् ।
न्यसेयुर्बन्धुमित्रेषु प्रोषितानां तथैव च ॥

–इति दायभाग(पृ० ९२ ३।१६)धृतकात्यायनवचनञ्चेति ॥८॥ (८४५)।

श्रीर्जयतितराम्	श्रीहरिः शरणम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण	श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

एइ व्यवस्था दाखिल योरङरमनु

श्रीर्जयतितराम्

२३—सदर नेजामत आदालतेर पण्डितदिगेर नामे सओयाल।

श्रीहट्टनिवासि एक व्यक्ति आपन दासी, ताहार चारि पुत्र ओ एक कन्या सहित मूल्य निर्धार्य्य करिया अन्य कोनो व्यक्तिर निकट विक्रय करिते चाहे। ताहारा अर्थात् ऐ दासी-प्रभृतिरा आदालते एइ रूप दरखास्त गुजराइलेक ये आमरा आपन मनिवेर सेवा करिते सम्मत आछि, तथापि आमारदिगेर मनिब शत्रुता करिया जाहार निकट आमारदिगेके विक्रय करिते उद्यत हइयाछे ताहार सहित एइ प्रकार याग करियाछे ये आमादिगेके भिन्न देशे निया पृथक २ भिन्न २ स्थाने विक्रय करे। अतएव जिज्ञासा जाय—श्रीहट्टदेशेर चलित शास्त्रमते एइरूप विक्रयेर स्थाने दासदिगेर ए प्रकार ओजर सिद्ध हय कि ना; यदि सिद्ध हय तबे ऐ दास-व्यक्तिरा आपनादिगेर स्वीकारमत अन्यत्रक जन क्रयकर्त्ता निर्दिष्ट करिते पारे कि ना; किम्बा ताहार निर्द्धार्य्य हओया मूल्य यद्यपि कोन प्रकारे मजुत करिते पारे, मूल्येर टाका आदाय करिया खालाश पाइते पारे कि ना इति।

---

१. बालपुत्रे मृते अर्थे रत्रे तद्बन्धुबन्धुभि-कात्या० ८४५॥

श्रीर्जयंतितराम्

जवाब-व्यवस्था

प्रभुकृतप्रश्नानुसारेणोत्तरलिख्यते—उपरिलिखितप्रश्नार्थावगमेन शास्त्रोक्तपञ्चदशदासानां मध्ये एतत्प्रश्नलिखितदासप्रभृतयो गृहजाता अवगम्यन्ते। तत्र च गृहजात-क्रीत-लब्ध-दायप्राप्तात्मविक्रेतॄणां पञ्चानां दासानां स्वामिप्रसादं विना न दास्यमोक्षः। तथा च यदि दासविक्रये प्रसन्नः स्वामी गृहजातादीनां पञ्चानां दासानां स्वकल्पितमूल्यद्वारा विक्रयेण दास्यमोक्षमिच्छति तदा प्रभुत्वात् स्वातन्त्र्याच्च[1] स्वामिसेवां कर्तुमिच्छतामपि दासानां विक्रयं कर्तुमर्हति। तत्र यदि स्वामिनिर्दिष्टक्रेतुः सकाशात् स्वकल्पितदासमूल्यग्रहणे दासानामात्यन्तिकं दुःखं स्यात्तदा दासनिर्दिष्टक्रेतुः सकाशादन्यस्मात् क्रेतुः सकाशाद्वा तदेव स्वकल्पितदासमूल्यं गृहीत्वा स्वामिनो गृहजातादिदासमोक्षणं शास्त्रीययुक्तिसिद्धं भवितुमर्हति, दासनिर्दिष्टक्रेतुः सकाशादन्यस्मात् क्रेतुः सकाशाद्वा स्वकल्पितदासमूल्यग्रहणेऽपि स्वामिनः क्षतिविरहात्[2]। परन्तु गृहजातादयो दासाः स्वधनात् स्वामिकल्पितमूल्यं दत्त्वा कदाचिदपि दास्यान्न मुच्यन्ते दासधनेऽपि स्वामिनः प्रभुत्वात्—इति वङ्गदेशान्तर्गतश्रीहट्टप्रदेशप्रचलितविवादभङ्गार्णवदायक्रमसंग्रहदायभागप्रभृतिग्रन्थ(ा)नुसारिणी व्यवस्थेति।

तत्र प्रमाणम्—

गृहजातस्तथा क्रीतो लब्धो दायादुपागतः।
अन्ना[3]कालभृतस्तद्वदाहितः स्वामिना च यः॥

---

१. स्वातन्त्र्या च—व्यव०।

२. विरहात्—व्यव०।

३. अनाका०—व्यव०। अन्नानादिभृतस्तद्दासत्व स्वा०…नाममे०। अनाकाल०—धर्मो०।

मोक्षितो[1] महतश्चर्णाद् युद्धे प्राप्तः पणे जितः ।
तवाहमित्युपगतः प्रव्रज्यावसितः[2] कृतः ॥

भक्तदासश्च विज्ञेयस्तथैव वडवाभृतः[3] ।
विक्रेता चात्मनः शास्त्रे दासाः पञ्चदश स्मृताः ॥

—इति विवादभङ्गार्णव(१ विवाभ० ५१६ क)दायक्रमसंग्रह (पृ० ५२)धृतनारदवचनम् (नामसं०-पृ० ६६), गृहजातो दास्यामुत्पन्नः[4] —इति दायक्रमसंग्रहव्याख्यानम् (पृ० ५२) ॥ २ ॥

एतेषां गृहजातादिचतुर्णामात्मविक्रेतुश्च स्वामिप्रसादं विना न दास्य-मोक्षः—इति दायक्रमसंग्रहलिखनम् (पृ० ५४) ॥ ३ ॥

केवलं शास्त्रमाश्रित्य न कर्त्तव्यो विनिर्णयः ।
युक्तिहीनविचारे तु धर्महानिः प्रजायते ॥

—इति व्यवहारतत्त्वादि(स्मृत० २।पृ० १९९)ग्रन्थधृतबृहस्पतिवचनम् (बृस्मृ०—१।११११) ॥ ४ ॥

भार्या पुत्रश्च दासश्च त्रय एवाधनाः[5] स्मृताः ।
यत्ते समधिगच्छन्ति यस्यैते[6] तस्य तद्धनम् ॥

---

१. श्वापाच्च मोक्षितोऽनल्पाद् युद्धप्राप्त—नामसं० ।
२. प्रव्रज्यावसान:—नामसं० ।
३. °हृत—धको० ।
४. °मुतपत्र—व्यप० ।
५. एव धना—व्यप० ।
६. यस्यैते तस्यैतत्—इति विवाभ० पाठः ।

इति विवादभङ्गार्णव(१ विवाम० ५३३क)दायभाग'दायतत्त्वादिग्रन्थधृतमनुवचनम् (८।४१६)चेति ॥ ५ ॥

श्रीर्ज्जयतितराम् श्रीहरिःशरणम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

एइ व्यवस्था दाखिल अंगरेजी मिसिलवे दासेर विषय ।

श्रीर्ज्जयतितराम्

२४—प्रश्न—यत्र कश्चिद् एतावत्'कालपर्य्यन्तमर्थाद्दशवर्षपर्य्यन्तं विंशतिवर्षपर्य्यन्तं वा तव दास्यमहं करिष्यामीति परिभाष्य स्थितः, तत्र दास्यावस्थायामुत्प'न्नान्यपत्यानि स्वामिनो दास्यं कर्तुमर्हन्ति न वेति । यद्यर्हन्ति तदा पितुर्दास्यकालपर्य्यन्तमधिक न्यूनं वेति च ।

एतस्योत्तरम्—

प्रमुक्तप्रश्नानुसारेणोत्तरं लिख्यते—

एतत्प्रश्नलिखितदासः शास्त्रोक्तपञ्चदशदासानां मध्ये क्रीतदासः । क्रीतदासस्य' मोक्षः क्रीतकाल'व्यपगमेनैव । दास्यावस्थायां क्रीत'क्रीतकालदासेनोत्पन्नानामपि दास्यमोक्षः पित्रा सहैव—इतिशास्त्रीययुक्तिसिद्धा व्यवस्था ।

श्रीर्ज्जयतितराम् श्रीहरिःशरणम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण 'श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

एइ व्यवस्था दाखिल आशिष्टण्ट साहेबेर निकटे ।

---

१. न च भार्य्या पुत्त्रश्चेत्यादिवद् अस्वातन्त्र्याभिप्रायमिति वाच्यम्, तदानीं स्वत्वे प्रमाणाभावात् । भार्य्यादिषु तु यत्ते समधिगच्छन्ति अर्जयन्तीति स्वत्वे सिद्धे पुनरस्वातन्त्र्यवर्णनम्—इति दायभागे (पृ० १२) मनुवचनमेतत् । वचनमिदं दायतत्त्वे न दृष्टम् ।

२. एतावता—व्यप० ।

३. उत्पन्ना०—व्यप० ।

४. क्रीत०—व्यप० ।

श्रीर्ज्जयतितराम्

ल० २३००

२५—सदर देश्रोयानी श्रादालतेर पण्डितदिगेके सश्रोयाल करा याइतेछे।—ई० १८२६ सालेर मार्च्चमासेर १३ तारिखे ऐ सदर देश्रोयानी श्रादालतेर प्रथम हाकिम श्रीयुत श्रोलीयम नसेष्टर साहेब श्रो चतुर्थ हाकिम श्रीयुत श्रोलीयम डोबिन साहेबेर बैठके—

मृत भवानीचरणचन्द्रेर उत्तराधिकारी राधावन्धवचन्द्र श्रो गयरह— श्रापीलाएटान—

मृत गोविन्दचन्द्रचौधुरिर उत्तराधिकारी जगतचन्द्र चौधरी श्रो गयरह— रेप्पाडएटान—

हुकुम हइल ये मृत राजा चित्रसेनेर प्रधाना रानी श्रापीलाएट श्रो कनिष्ठा रानी रेप्पाडएटेर ५३२ लम्बरेर मोकद्दमार श्रो जगतचन्द्रसेन श्रापीलाएट श्रो केशवानन्दगोस्वामी श्रो गयरह रेप्पाडएटेर ८३२ लम्बरेर मोकद्दमार दाखिल हश्रोया दुइ फेता व्यवस्था एवं १६ लम्बरेर भवाणीचरणेर नामिक मकररी पाट्टा श्रो ११ लम्बरेर गोविन्दचन्द्रेर नामिक मकररी पाट्टा श्रो ऐ पाट्टाजातेर सम्पर्कीय दुइ फेता रसीद ल० १५२२ तोमारदिगके अर्पण करा जाय। उचित[1] ये नीचेर लिखित सश्रोयालेर जश्रोयाब ३ तिन दिवसेर मध्ये दाखिल करेन।

उपरेर लिखित मोकर्द्दमार दाखिल हश्रोया व्यवस्थाते जाना याइतेछे ये देवशेवार भूमि हइते जाहा उत्पन्न हय ताहा देवतार वस्तु बटे, श्रो शास्त्रानुसारे देवतार भूमि विक्रय कि दान कि अन्यककरण सिद्ध नहे, आर केवल देवतार सेवार निर्व्वाह श्रो सरवराह हश्रोनेर अर्थे देवत्र भूमिर रक्षणापेक्षणेर क्षमता देवत्र

१. उचित्—न्यप० ।

करणीया व्यक्ति अर्थात् देवत्र भूमिर रक्षक ११ ओ १६ लम्बरेर पाट्टार *न्याय अन्य कोनो व्यक्तिके पुत्रपौत्रादिक्रमे सेलामीर टाका* (देओया पूर्व्व हय ना)। एतावता पनेर टाकार वदले मकररी जमाते मकररी पाट्टा देय। एमत् पाट्टा शास्त्रमते सिद्ध वटे, कि सेवायेत व्यक्तिर ऐ पाट्टा देओनेर क्षमता आछे; ओ पाट्टा देओयानीर व्यक्तिर मृत्यु परे ये व्यक्तिके ताहार रक्षणापेक्षणकरण उत्तराधिकारित्वे अर्शे से ऐ पाट्टा रहित करणेर ओ देवत्र भूमिर नूतन वन्दवस्त करणेर क्षमता राखे ना, ओ ए विषये वाङ्गलादेशेर चलित शास्त्रानुसारे किछु हुकुम कि व्यवहार आछे कि ना ओ एमत् मोकद्दमार सिद्ध असिद्ध हओन एइ अर्थे ये ऐ मकद्दमार देवत्र वस्तुर लाभ ओ क्षति हओने सम्पर्क[1] राखे (कि ना) इति—

एतद्धर्माधिकरणप्रथमाधिपतिश्रीयुत - अलीयमनयाइटसाहेवचतुर्थाधिपतिश्रीयुत - अलीयमडोरणसाहेवतदुभयधर्म्माधिकरणलिखितप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेयं तत्समर्पितव्यवस्थापत्रद्वयं षोडशाङ्काङ्कितैकादशाङ्काङ्कितमकररीपाट्टाग्राहकपत्रद्वयं त(त्)सम्बन्धिसप्तदशाङ्काङ्कितद्वादशाङ्काङ्कितरसीदग्राहकपत्रद्वयञ्चावलोक्य विविच्यच यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

देवसेवार्थोत्सृष्टभूम्यादिस्तदुत्पन्नञ्च द्रव्यं देवस्वम्। देवस्वभूम्यादिविक्रय-दान-बन्धक-करणे क्षमता देवार्थभूम्युत्सर्जकस्य[2] तदुत्तराधिकारिणो वा नास्ति। केवलं देवसेवानिर्व्वाहार्थं देवस्वभूम्यादे रक्षणा-वेक्षणादिकर्तृत्वं यो देवसेवां कारयति स एव वङ्गदेशे[3] सेवाइतशब्देनप्रसिद्धो यद्यन्यस्मै कस्मैचिद् देवार्थं दर्शनीयमुद्रा गृहीत्वा प्रभुसमर्पितोपरिलिखितमकररीपाट्टाग्राहकपत्रद्वयलिखितरीत्या - मकररीपाट्टाग्राहकं नियमपत्रं

१. सम्पर्क—व्यव०।
२. °भूम्युत्सर्ज°०—व्यव०।
३. वङ्गदेशे—व्यव०।

ददाति तदा तन्नियमपत्रं वङ्गदेशचलितव्यवहारानुसारेण च सिद्धं भवति, नहि देवस्वभूमेर्मकररीपाट्टासंज्ञकनियमपत्रदाने विक्रयो न च दानं न वा बन्धको भवति। मूल्यग्रहणप्रयुक्तस्वस्वत्वनाशकव्यापारस्यैव विक्रयपदार्थत्वेन स्वस्वत्वनिवृत्तिपूर्वकपरस्वत्वोत्पत्त्यनुकूलव्यापारस्य दानपदार्थत्वेन चाधमर्णेनोत्तमर्णसमीपे ऋणपरिशोधनकालपर्य्यन्तं विश्वासार्थं स्थापितस्य स्वकीयद्रव्यस्य बन्धकत्वेन च देवस्वभूमौ मकररीपाट्टासंज्ञकपत्रदातुः स्वत्वा[1] भावेन मूल्यग्रहणपूर्व्वकतन्निवृत्तेर्वा दानप्रकारेण वा तन्निवृत्तेरसम्भवात्, बन्धनेन स्थापनाभावाच्च। यथा राज्ञा ग्रामाधिपतिना वा स्वकीयग्राम-क्षेत्रादिः प्रत्याब्दिककरग्रहणार्थमन्यस्मै प्रजायै वा कालनियमं कृत्वा अकृत्वा वा पुत्रपौत्रादिक्रमेण प्रत्यब्दमेता मुद्रा दत्त्वा त्वयैतद्[2] ग्रामः क्षेत्रादिर्वा भुज्यतामिति नियमपत्रं पाट्टासंज्ञकपत्रं मकररीपाट्टासंज्ञकं वा दत्त्वा समर्प्यते[3], तथा देवसेवायोत्सृष्टभूमिरपि वङ्गदेशसेवाइतपदवाच्येन[4] उपरिलिखित-रीत्या समर्प्यते[5] इति वङ्गदेशव्यवहारः। देवस्वभूमावेतादृशव्यवहारसिद्धौ तद्भूमाव[6] तिवृष्ट्यनावृष्ट्या वा शस्यानुत्पादेऽपि नियमितद्रव्यसाध्यदेवसे-वाया अबाधः, इत्येव लाभः। तदसिद्धौ अतिवृष्ट्यादिदोषेण शस्यानुत्पा-दाद्[7] देवसेवाबाधोऽपि भवितुं शक्नोति, इत्येव क्षतिः। एवञ्चैतद्[8] विवादे पत्रयुपरिलिखितमकररीपाट्टासंज्ञकपत्रद्वयान्तर्गतषोडशाङ्काङ्कितश्री देवमुद्रा-ङ्कित नियमपत्रं तत्सम्बन्धिकबूलियतसंज्ञकपत्रञ्च वङ्गदेशे सेवाइतशब्दवाच्या या राज्ञा देवसेवार्थं दर्शनीयमुद्रा देवकोषे निवेश्य पुत्रपौत्रादिक्रमेण प्रत्यब्द-मेता मुद्रा दत्त्वा भुज्यतामित्युपरिलिखितनियमपत्रमन्यस्मै कस्मैचित् षोड-

---

१. स्वत्वाभावेन—व्यप० ।
२. त्वयैतत्—व्यप० ।
३. समर्प्यते—व्यप० ।
४. पदवाच्येन—व्यप० ।
५. समर्प्यते—व्यप० ।
६. तद्भूमा—व्यप० ।
७. चैतद्—व्यप० ।
८. मन्यस्मै कस्मै—व्यप० ।

शाधिकद्वादशशताब्दे दत्तं तन्नियमपत्रेऽन्यस्याधिककरदातुरुपस्थितिं यावत् प्रतिवर्षं त्वया भुज्यतामितिलिखनाभावात् तन्नियमपत्रदात्र्याः सेवाइतशब्द-वाच्याया मरणोत्तरं तदुत्तराधिकारित्वेन तस्या एव। देवसेवार्थोत्सृष्टभूमेः रक्षणावेक्षणादिकर्तृत्वं यस्य भवति स तु तत्तत्रमकर्म्मण्यं कृत्वा नियम-पत्रान्तरं दातुं न शक्नोति–इति वङ्गदेशप्रचलितमनुकुल्लूकभट्टकृतमन्वर्थ-मुक्तावलीविवादभङ्गार्णवप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था।

तत्र प्रमाणम्—

देवस्वं ब्राह्मणस्वं वा लोभेनोपहिनस्ति यः।
स पापात्मा परे लोके गृध्रोच्छिष्टेन जीवति॥
—इति मनुवचनम् ॥१॥ (११।२६)

प्रतिमादिदेवतार्थमुत्सृष्टं धनं देवस्वम्।
—इति कुल्लूकभट्टव्याख्यानम् ॥ २ ॥ (मनु० ११।२६)

देशजातिकुलानाञ्च ये धर्म्माः प्राक् प्रवर्तिताः।
तथैव ते पालनीयाः प्रजा प्रक्षुभ्यतेऽन्यथा॥
—इति बृहस्पतिवचनम् ॥ ३ ॥ (१।१२६)

एकत्र बन्धस्यान्यत्रबन्धदानवद् एकत्र वशीभूताया भूमेरन्यत्र वशी-भवनमयोग्यमिति भूमिसमर्पणसमये अन्यस्याधिककरदातुरुपस्थितिं यावत् प्रतिवर्षं त्वया भुज्यतामित्येव प्रतिज्ञा कर्तव्या–इति विवादभङ्गार्णव-(१ विभा० पृ० ३१० स)लिखनम् ॥४॥

एकत्र बन्धीभूतद्रव्यस्यान्यत्रबन्धकरणे परबन्धस्येव एकत्र वशीकृत-

१. कुल्लूक—व्यव०।
२. °वा भेनो°—व्यव०।
३. पापी परे°—व्यव०।
४. गृध्नो—व्यव०।
५. देशजातिकुलादीनां ये धर्मास्तत्प्रवर्तिता इति मुद्र०पाठः।

द्रव्यस्यान्यत्र वशीकरणेऽपि असिद्धिरेव-इति विवादभङ्गार्णवलिखनञ्चेति (१ विवाभ० पृ० ३१६ क) ॥ ५ ॥

श्रीर्ज्जयतितराम् **श्रीहरिःशरणम्**

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण **श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन**

एतद्धर्म्माधिकरणप्रथमाधिपति–श्रीयुतश्रोलियमलसेष्टरसाहेबैतद्धर्म्माधिकरणचतुर्थाधिपति — श्रीयुतश्रोलियमडोरनसाहेबैतदुभयधर्म्माधिकरणलिखितप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेयं तत्समर्पितव्यवस्थापत्रद्वयं षोडशाङ्काङ्कितैकादशाङ्काङ्कितमकररीपाटासंज्ञकपत्रद्वयं, तत्सम्बन्धिसप्तदशाङ्काङ्कित[1] द्वादशाङ्काङ्कितरसीदसंज्ञकपत्रद्वयमवलोक्य विविच्य च यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

देवसेवार्थो(स्त्रष्ट)भूमिरत्मक सेवाइतशब्देन (उच्यते)। यद्यसावन्यस्मै कस्मैचित् देवार्थदर्शनीयमुद्रा गृहीत्वा प्रभुसमर्पितोपरिनिश्चितमकररीपाटासंज्ञकपत्रद्वयम् लिखितरीत्या मकररीपाटासंज्ञकं पत्रं ददाति तदा तन्मकररीपाटासंज्ञकं पत्रं वङ्गदेशचलितव्यवहारानुसारेण शास्त्रानुसारेण च सिद्धंभवति। एवञ्च तन्मकररीपाटासंज्ञकपत्रदातृसेवायिताकर्त्तुर्म्मरणानन्तरं तदुत्तराधिकारित्वेन तस्या एव। देवसेवार्थभूमे रक्षणावेक्षणादिकर्तृत्वं यस्य भवति स यदि तन्मकररीपाटासंज्ञकपत्रेऽन्यस्याधिकारदातु[2]रुपस्थितिं यावत्प्रतिवर्षं त्वया भुज्यताम्—इति लिखनं (करोति),न चेत्तदा तन्मकररीपाटासंज्ञकं पत्रमकर्म्मण्यं कृत्वा नूतनबन्दोबस्तसंज्ञकमायामं कर्तुं न शक्नोति। एवञ्च देवसेवार्थभूमौ मकररीपाटासंज्ञकपत्रदानं व्यवहारानुसारेण शास्त्रानुसारेण च सिद्धं चेत्, अतिवृष्ट्याऽनावृष्ट्या वा तद्भूमौ[4] शस्यानुत्पादेऽपि नियमितद्रव्यसाध्यदेवसेवाया अबाधः–इत्येव लाभः। तदसिद्धावतिवृष्ट्यादि-

---

१ सप्तदशाङ्काङ्किततद्वाशा व्यप०।

२ सेवादत व्यक्त मीरस—व्यप०।

३ ०परिथत यावत—व्यप०।

४ तत्भूमौ—व्यप०।

-दोषेण शस्यानुत्पादाद्[1] देवसेवानाशोऽपि भवितुं शक्नोति इत्येव-द्वतिः-इति वङ्गदेशप्रचलितमनुविवादभङ्गार्णवप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ।

अत्र प्रमाणम्—

जातिजानपदान् धर्मान् श्रेणीधर्मांश्च धर्मवित् ।
-समीक्ष्य कुलधर्मांश्च स्वधर्मं प्रतिपालयेत्-इतिमनुवचनम् (८।४१) ॥१॥

एकत्र बन्धद्रव्यास्यान्यत्रबन्धदानवत् एकत्र वशीभूताया भूमेरन्यत्र वशीभवनमयोग्यम्-इति भूमिसमर्पणसमयेऽन्यस्याधिककरदातुरुपस्थितिं-यावत् प्रतिवर्षं त्वया भुज्यतामित्येव प्रतिज्ञा कर्तव्या—इति विवादभङ्गार्णवलिखनम् (१ पृ० २१० ख) ॥ २ ॥

एकत्र बन्धीभूतद्रव्यस्यान्यत्रबन्धकरणे परबन्धस्येव एकत्र वशीकृतद्रव्यस्यान्यत्रवशीकरणेऽपि, असिद्धिरेव—इतिविवादभङ्गार्णवलिखनञ्चेति (१ विवाभ० पृ०२१६क) ॥ ३ ॥

श्रीर्जयतितराम् श्रीहरिःशरणम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

सवाल

२६ सद्दर देवानी आदालतेर प्रथम हाकिम श्रीयुत ओलियम लसेष्टर साहेब ओ चतुर्थ हाकिम श्रीयुत ओलियम डोरण साहेबेर हुजुर हइते ओइ आदालतेर पण्डितगणेर प्रति अंगरेजी १८२६ साल १० अपरेल तारिकेर रोवकारिर हुकुमानुसारे—

राधावल्लभचन्द्र ओ गयरह आपीलाण्टान
जगच्चन्द्रचौधुरी ओ गयरह रेस्पाण्डेण्टान

पूर्व्वे मोकद्दिमासकले नंबर ५३२ ओ ८३२ यावत ये व्यवस्थासकल दाखिल हइयाछे ताहार सत्वे देवोत्तर भूमिर

---

1 °नुत्पादात्—व्यव० ।
2 प्रतिपादयेत्—मनु० ।

सेवाइतेर लिखित पुत्र-पौत्रादि क्रमे मोकररी पाटा सिद्ध हओनेर विषये तोमरा आपनारदिगेर मत उत्तरे लिखिया छ। अतएव पुनर्व्वार जिज्ञासा करा जाइतेछे ये हिन्दुलोकेर कोनो शास्त्रे मोकररी पाटार प्रस्ताव आछे; प्रबल सन्देहेर द्वाराय यदि एमत कोनो प्रस्ताव शास्त्रे पावा जाइतेछे ना, तबे पश्चाद्[1]ग्रन्थकारगनेर ग्रन्थेर मध्ये कोनो ग्रन्थे ताहार प्रस्ताव आछे, ओ तोमारदिगेर उत्तरेर लिखनानुसारे व्यवहार ओ ओइ व्यवहारेर सिद्धतार प्रस्ताव कोन ग्रन्थे पावा जाइतेछे। ये हेतुक एक्षणे एइ विषयेर सन्देह आछे ये कोनो वचन ए विषयेर जन्मे नाइ, वरं हिन्दुलोकेर ग्रन्थे ओ ए विषयेर प्रसङ्गमात्र नाइ ओ ए विषयेर विचार पूर्व्व व्यवस्थासकल ओ चलित आइनसकलेर अनुसारे आदालतेर हाकिमानेर सहितइ सम्पर्क राखे इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्[2]

जवाब-व्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणप्रथमाधिपतिश्रीयुतओलियमलसेष्टरसाहेवैतद्धर्म्मा[3]धिकरणचतुर्थाधिपतिश्रीयुत— ओलियमडोरणसाहेवैतदुभयधर्म्माधिकरणलिखितप्रश्नप्रतिरूपपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

हिन्दुजातेर्धर्म्मशास्त्रीयस्मृतिचन्द्रिकावीरमित्रोदय-व्यवहारमातृकाव्यवहारचिन्तामणि-विवादभङ्गार्णवग्रन्थेषु लोके भाषायां मकररीपाटाशब्देन प्रसिद्धस्य शास्त्रोक्तशासनपत्रस्यास्ति प्रस्तावः। एवमस्मदुत्तरलिखितव्यवहारस्य तादृशव्यवहारसिद्धतायाश्चोपरिलिखितग्रन्थेभ्यः प्राप्तत्वात्–इत्युपरिलिखितग्रन्थानुसारेणोत्तरम्।

---

१. पश्चात् व्यप॰।

२ श्रीर्ज्जयति॰—व्यप॰।

३ वैतद्धर्म्मा॰—व्यप॰।

अत्र प्रमाणम्—

राजलेख्यं स्थानकृतं स्वहस्तलिखितं तथा ।
लेख्यं तु त्रिविधं प्रोक्तं भिन्नं तद् बहुधा पुनः ॥
—इति वीरमित्रोदय[1]ग्रन्थधृतबृहस्पतिवचनम् (बृस्मृ० ६।४) ॥१॥

तत्रशासनं निरूपयितुमाह याज्ञवल्क्यः

शासनं कारयेद्धर्म्यं[4] स्थानवंशाभिसंयुतम् ॥ (बृस्मृ० ६।१६)
दत्त्वा भूमिं निबन्धं वा कृत्वा लेख्यं तु कारयेत् ।
आगामिभद्रनृपतिपरिज्ञाना[2]य पार्थिवः ॥ (यास्मृ० १।३१८)

निबन्धो वाणिज्यादिकरादिभिः प्रतिवर्षं प्रतिमासं वा किञ्चिद्धनमस्मै ब्राह्मणायास्यै देवतायै देयमित्यादिप्रभुसमयलभ्यमित्यर्थः । भूमिमिति ग्रामारामादीनामुपलक्षणार्थम् । अतएव बृहस्पतिः—

दत्त्वा भूम्यादिकं राजा ताम्रपट्टे[3]ऽथवा पटे ।
शासनं कारयेद्धर्म्यं स्थानवंशाभिसंयुतम् ॥
—इतिस्मृतिचन्द्रिकालिखनम् । २ (स्मृचन्द्र० २।५५)

योगीश्वरः शासनमाह :—

भूमिं दत्त्वा निबन्धं वा कृत्वा लेख्यं तु कारयेत् ।
आगामिभद्रनृपतिपरिज्ञानाय पार्थिवः ॥ (यास्मृ० १।३१८)

पटे वा ताम्रपट्टे वा स्वमुद्रापरिचिह्नितम्—इत्यादिवीरमित्रोदय(पृ० २५६)व्यवहारचिन्तामण्यादिग्रन्थलिखनम् ॥ ३ ॥

ताभिश्च यथोपयुक्तकरदानेन यथोपयुक्तस्वत्वमर्ज्यते । तद्वर्षे च राज्ञा तद्भूमेरन्यत्र दानविक्रयणादिकरणं न सिद्ध्यति । यदि तु प्रतिवर्षं त्वया भुज्यतामित्यादि प्रतिज्ञाभवत् तदा तु यावद्वर्षेष्वेव स्वत्वानुमतेः कदापि दानविक्रयादिकं न कर्तव्यमिति विवादभङ्गार्णवलिखनम् ॥४॥
(१ विवाभ० पृ० २०८ कख)

१. लिखित यावद् द्विविधं स्वहस्तकृतमन्यत्कृतञ्च—वी० मि० पृ० ५२०, यास्मृ०
२. °परिज्ञानाय—व्यप्र० ।
   २।८५ व्यमा० ३३६ तमे पृष्ठे वचनमिदमुद्धृतमिति धर्मको० ।
३. ताम्रपट्टेऽथवा पटे इति बृस्मृ० पाठान्तरम्, ताम्रपट्टे तथा पटे स्मृचन्द्र० ५५
४. °द्धर्म्यम्—बृस्मृ० ।

देशाचारविरुद्धं यद्व्यक्ताधिविधि¹लक्षणम् ।
तत्प्रमाणं स्मृतं लेख्यमविलुप्तक्रमाक्षरम् ॥

—इति वीरमित्रोदयग्रन्थधृतनारदवचनम् । (नामसं० २।११३) ॥५॥ पृ० ५२) ।

व्यवहारो हि बलवान् धर्म्मस्तेनावहीयते ।

—इति व्यवहारतत्त्व(पृ० १६६)व्यवहारमातृका(पृ० २८४)धृतनारदवचनम् । (नामसं—१।३४) ॥६॥

केवलं शास्त्रमाश्रित्य न कर्तव्यो विनिर्णयः ।

युक्तिहीनविचारे तु धर्म्महानिः प्रजायते ॥ —इति तत्तद्ग्रन्थधृत (व्यमा० २८२ : २६४)बृहस्पतिवचनम्, *युक्तिश्चौकव्यवहारः*²—इति तत्तद्ग्रन्थलिखनञ्चेति ।

श्रीश्जयतितराम् श्रीहरिः शरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

---

२७ सदर देवानी आदालतेर द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्टनी स्मिट साहेबेर हुजुर हइते ऐ आदालतेर पण्डितदिगेर नामे मित्रजितसिंहेर ओ श्रीमति मनुबिबी सायलार मकद्दमाते तिन रोजेर मध्ये पश्चिमदेशेर एवं बङ्गदेशेर शास्त्रमते जबाब दाखिल करणेर हुकुमे इंगरेजी १८२६ शालेर ३० मे मासेर रोवकारिर लिखित सवाल एइ—एक व्यक्ति क्षत्रिर स्त्री, ये ताहार आपन स्वामीर त्यक्त धने दाखिलकार छिल, ताहार आपन स्वामीर

---

१. ०विदृतल०—नामसं० ।

२. मिताक्षरा इति पठनीयं २।८६ ॥

२. युक्तिर्न्यायः स च लोकव्यवहारः इति व्यवहारमातृका—व्यत० पृ० १६६ ।

मातुल पुत्र राखिया मरियाछे। अन्य उत्तराधिकारी ना थाकन एवं ऐ मृत स्त्री-व्यक्तीर दत्तक पुत्र ना थाकन कालीन ऐ स्त्रीर त्यक्त धन ऐ पुत्र पाइते पारे कि ना इति।

यथावद्व्यवस्था(I)

एतद्धर्म्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतकुर्टनीह्यामिटसाहेबधर्म्माधिकरणलिखितप्रश्नप्रतिरूपपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते :—

यत्र कस्यचिद् अनपत्यस्य क्षत्रियस्य स्त्री स्वस्वामित्यक्तधने भोगवती आसीत्, स्वस्वामिमातुलपुत्रं संरक्ष्य मृता[1] स्यात्, तत्र यदि तस्याः स्वामिनः पश्चिमदेशचलितमिताक्षरादिग्रन्थलिखितक्रमेण पत्न्यादि—मातृ[2]ष्वस्रीयपर्य्यन्तानपत्यधनाधिकारिणो न स्युः, तदापश्चिमदेशचलितमिताक्षरादिग्रन्थानुसारेण एव बङ्गदेशचलितश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायक्रमसंग्रह-विवादार्णवसेतु-विवादभङ्गार्णव ग्रन्थलिखितक्रमेण पत्न्यादिमातुलपर्यन्तानपत्यधनाधिकारिणो यदि न स्युःतदा बङ्गदेशीयतत्तद्ग्रन्थानुसारेण अथ च बङ्गदेशीयश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकारूपग्रन्थलिखितक्रमेण पत्न्यादिमातृष्वस्रीयपर्य्यन्ता धनाधिकारिणो यदि स्युः, तदा बङ्गदेशीयतद्ग्रन्थानुसारेण एवञ्च तन्मतद्वय एव मृतायास्तस्याः स्त्रिया यदा दत्तकः पुत्रो नास्ति तदा च तस्याः स्त्रियास्त्यक्तधनं तत्स्वामिमातुल पुत्र आदावेव[3] बन्धुत्वेन प्राप्तुं शक्नोति—इति पश्चिमदेशचलितमिताक्षरादिग्रन्थानुसारिणी बङ्गदेशचलितदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकाक्रमसंग्रह - विवादार्णवसेतु - विवादभङ्गार्णवादि-ग्रन्थानुसारिणी च व्यवस्था।

---

१ मृता—व्यप०।

२ °ष्वस्रीय०—व्यप०।

३. आदावेव—व्यप०।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः—इत्यादि मिताक्षरादिग्रन्थलिखितयाज्ञवल्क्य-वचनम् (याःस्मृ० २।१३५)। १

गोत्रजाभावे बन्धवो धनभाजः। बन्धवश्च त्रिविधाः।

आत्मबन्धवः पितृबन्धवो मातृबन्धवश्चेति॥

यथोक्तम्—

आत्मपितृष्वसुः[1] पुत्रा आत्ममातृष्वसुः सुताः।

आत्ममातुलपुत्राश्च[2] विज्ञेया आत्मबान्धवाः॥

पितुः पितृष्वसुः पुत्राः पितुर्मातृष्वसुः सुताः।

पितु(र्)मातुलपुत्राश्च विज्ञेयाः पितृबान्धवाः॥

मातुः पितृष्वसुः पुत्रा मातुर्मातृष्वसुः सुताः।

मातुर्मातुलपुत्राश्च विज्ञेया मातृबान्धवाः॥

इति। *तत्र चान्तरङ्गत्वात् प्रथममात्मबन्धवो धनभाजस्तदभावे पितृ-बन्धवस्तदभावे मातृबन्धवः*—इति क्रमो वेदितव्यः—इति मिताक्षरादि-(मिता० २।१३, पृ० २१२) ग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

तदभावे मातुलस्तदभावे मातुलपुत्रस्तदभावे मातुलपौत्रस्तदभावे मातामहदौहित्रोऽधिकारी—इत्यादिश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृत(दाय)क्रमसंग्रह ग्रन्थलिखनम्। (१०।१५, पृ० ६) ॥ ३॥

---

१. आत्मपितृष्वसुः पुत्रा पितृमातृ०—व्यव०।

२. पितुर्मातुल०—व्यव०।

तत्र प्रथमं[1] मातुलस्तदभावे मातृष्वसीयस्याधिकारस्तदभावे मातुल-पुत्रपौत्राणां क्रमेणाधिकारः—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीका रूपग्रन्थलिखनम् । ॥ ४ ॥

श्रीर्जयतितराम् श्रीहरिःशरणम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

---

२८ नंबर—

रोबकारी मिसिल आदालत देवानी सदर अंगरेजी १८२६ साल तारीख ७ माहे दिशम्बर मताबक बाङ्गला १२३३ साल २३ माहे अग्रहायण रोज बृहस्पतिवार आदालत मजकुरार द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्टनी इशमिट साहेबेर बैठके ।

श्रीमति मुलक्षणा—	आपीलाण्ट
श्यामाप्रसादनन्दी ओ गयरह	रेप्पाण्डण्टान

सन हालेर २० नंबर (नवम्बर) मासेर लिखित जिला मेदनीपुरेर जजसाहेबेर एक किता रिटरन, ताहार सामिलेर रोबकारी ओ गयरह संवलित पहुचिया अत्र श्यामाप्रसादनन्दी ओ लक्ष्मीनारायणचौधुरीर उकिल मुनशी गोलाम बतुल ओ ब्रजलालचौधुरीर उकिल मुनसी दादारबकश ओ सदासुख पण्डित ओ आनन्दलालचौधुरी ओ नन्दलालचौधुरि ओ मसम्मात हरिप्रियामणी राणीर[2] उकील सदासुख

---

१. तत्रापि प्रथमं मातामहस्तदभावे मातुलतत्पुत्रपौत्राणां क्रमेणाधिकारः—इति दाय-भागटीकायां कृष्णतर्कालङ्कारलिखनम् (पृ० २१८, ११।६ पं०)

२. हरिप्रियामणी राणीर—व्यव० १

पण्डितेर हाजीरीते तीनि आदालतेर कागजात सहित दरपेस हइया पड़ा गेलो। तत्परे ब्रजलालचौधुरीर वकीलेरा अयोध्याप्रसाददास मुद्दई श्यामाप्रसादनन्दी ओ गैरह मुद्दाआलेहेर मोकद्दिमाते अंगरेजी १८२२ सालेर मार्च्च मासेर हओया एलाका कलिकातार कोर्ट आपीलेर एक किता रोवकारिर नकल ७ तंबरे दाखिल करिलेक, दृष्टि आइलो। जाना गेलो ये आदालतेर साबिक तृतीय हाकिम अंगरेजी १८२२ सालेर १४ सितम्बर मासेर हओया हुकुमे एइ लिखियाछेन ये विरोधी निष्पत्ति पर्य्यन्त मृत मधुसूदनेर हिस्सा सरबराहकारेर इलाकाते थाके, ओ ताहार हिस्सार मोनफा सरबराहकारेर निकटे आमानत थाके, ओ कि प्रकारे विरोधी निष्पत्ति हय, ओ कोन व्यक्तिर स्वत्व—ए विषयेर किछु तजवीज करेन नाइ, अतएव ए विषयेर हुकुम सादर करण आवश्यक हइलो, ओ अंगरेजी १८११ सालेर माइ मासेर लिखित ए आदालतेर फयसलार दृष्टे बोध हय जे दौहित्रदिगेर मध्ये अर्थात् डिगरीदारानेर मध्ये एक जन मरिले, ताहार हिस्सा कोन व्यक्तिके अर्शिवेक। ओइ फयसलाते ए विषयेर किछु हुकुम नाइ। आर अंगरेजी १८२२ सालेर मार्च्च मासेर ११ एगारह तारिकेर हओया कलिकाता(र) कोर्टेर रोयकारीते अन्य मोकद्दिमाते, अर्थात अयोध्याराम मुद्दइ बनाम श्यामाप्रसादनन्दी ओ गैरह मुद्दाआलेहेर मोकद्दिमाते सम्पर्क राखे, एइ हुकुम आछे ये मधुसूदन मुद्दाआलेहेर पिता अन्य उत्तराधिकारीरा मोकद्दिमार तदविर करे, ओ ओइ रोवकारी अन्य मोकद्दिमार सम्पर्कीय ए मोकद्दिमाय प्रवेश हइते पारे ना। वरं ओइ रोवकारीर गरज अयोध्याराम मुद्दइर मोकद्दिमार······ छिलो। मृत मधुसूदनेर उत्तराधिकारीदिगेर विरोध निष्पत्तिर ··छिलो ना, ओ से मोकद्दिमाते ओइ मुद्दइर नालिस कलिकातार कोर्टे डिसमिस हइया मृत मधुसूदनेर उत्तराधिकारीदिगेर विरोधेर किछु निष्पत्ति कोर्टे हय नाइ।

आर जाना जाय ये छय ६ जन दौहित्र अर्थात डिगरी(दारदिगे)र-मध्ये केवल ओइ मधुसूदन मरियाछे। बाकी पाच जन। ताहार मध्ये मृत व्यक्तिर सहोदर भ्राता तिनि एइ क्षण पर्य्यन्त वर्तमान आछे, ओ ब्रजलालचौधुरीर स्त्री हरिप्रियामणीर गर्भे अन्य दौहित्र जन्मे नाइ, आर मधुसूदनचौधुरीर पिता ब्रजलाल-चौधुरी ओ माता हरिप्रिया ओ सहोदर तीनि भ्राता, आनन्दलाल ओ नन्दलाल ओ गङ्गानारायणचौधुरीके राखिया मरियाछे। अतएव हुकुम हइलो ये ए आदालतेर पण्डितान् स्थाने सवाल करा जाय ये ओइ प्रकारे मृत मधुसूदनेर अंश कोन व्यक्तिके अर्शे; ताहार पिता आदि उत्तराधिकारिदिगेके किंवा मृत राजा जादवरायेर, ये ओइ छय जनेर मातामह छिलो, ताहार बाकी पाच जन दौहित्रके अर्शे। उचित ये अंगरेजी १८११ सालेर २७ माह मासेर हओया ए आदालतेर फयसलार मजमून ज्ञात हइया दायभागशास्त्र मते ये सेइ शास्त्र मते ए मोकद्दिमा ए आदालते निष्पत्ति हइयाछे; ओइ सवालेर जवाब परसु दुइ प्रहर पर्य्यन्त वचनग्रन्थेर वेओरा सम्वलित दाखिल करेन। पण्डितदिगेर जवाब दाखिल हइले पर उचित हुकुम देया जाइवेक इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्[1]

जवाबव्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतकुर्टनीइथामिटसाहेबधर्म्माधिकरणलिखितविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपमवलोक्यैवं तत्समर्पितांगरेजीशब्दप्रतिपाद्यैकादशाधिकाष्टादशशताब्दीयमाघमासीयसप्तविंशतिदिवसीयैतद्धर्म्मा-

१. श्रीजयति०—व्यप० ।
२. ०काष्टा०—व्यप० ।

धिकरणीयजयपत्रार्थमवगत्य च यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते। यत्र मधुसूदनचौधुरीसंज्ञकः कश्चिद् व्यक्तिविशेषो ब्रजलालचौधुरीसंज्ञकं पितरं हरिप्रियामणीनाम्नीं मातरमानन्दलाल-नन्दलालगङ्गानारायणचौधुरीसंज्ञकान् त्रीन् सोदरभ्रातॄन्[1] संरक्ष्य मृतः तत्रोपरिलिखितैर्दम्मांधिकरणीयजयपत्रानुसारेणोत्तराधिकारित्वेन मधुसूदनचौधुरीसंज्ञकस्यत्यास्पदीभूताशस्य तदीयधनत्वेन तन्मरणोत्तरं तदुत्तराधिकारिणामेवाधिकारो न तु पूर्वस्वाम्युत्तराधिकारिणाम्। तत्र च तत्पुत्र-पौत्र-पत्नी-दुहितृ-दौहित्र-पर्य्यन्ताभावे तत्पितु(र्) ब्रजलाल-चौधुरीसंज्ञकस्याधिकारः, (अ)सति पितरि मातृ-सोदर-भ्रात्रादीनाम्, एवं मृतस्य राज्ञो यादवरामरायस्य पूर्वधनस्वामिनोऽवशिष्टा(नां) पञ्चदौहित्राणां नाधिकारः—इति दायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था।

अत्र प्रमाणम्

अपुत्रधनं पत्न्यभिगामि तदभावे दुहितृगामि तदभावे पितृगामि तदभावे मातृगामि तदभावे भ्रातृगामि तदभावे भ्रातृपुत्रगामि—इत्यादि दायभागादि(दाभा० पृ० १५१,११।११।४)ग्रन्थधृतविष्णुवचनम् (विष्णु० १७।४)।१

दौहित्रस्याभावे पितुर्न्न मातुः—इत्यादि दायभागग्रन्थ (दाभा० पृ० १८५, ११।३।१)लिखनम्। २

तदभावे पिता तदभावे माता तदभावे भ्राता—इत्यादि श्रीकृष्ण-तर्कालङ्कारकृतदायभागटीकारूपग्रन्थ(दाभा० टी० पृ० २१८, प० १२)-लिखनञ्चेति।

श्रीर्जयतितराम् श्रीहरिः शरणम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

---

१. भ्रातॄन्—व्यप०।
२. तैते धर्म्मा०—व्यप०।

सवाल

२९—सदर देमानी आदालतेर द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्टनी इशस्मिट साहेबेर हजुर हइते कमलाकान्तघोशाल ओ गैरह् बनामे रामहरिनन्दिग्रामी ओ गैरहेर; मोकद्दिमाते अंगरेजी १८२६ सालेर १३ दिशम्बर मासे रोवकारीर लिखित अदालत मजकुरार पण्डितानेर नामे परसु दुइ प्रहर पर्य्यन्त यचन ओ प्रमाणेर बेओरा संवलित यथाव तलव मजमुले सयाल एइ ये—

गोवर्द्धननन्दिग्रामी नरेन्द्रनित्यानन्दग्रामी ओ शीताराम-नन्दिग्रामी दुइ पुत्र(के) उत्तराधिकारी राखिया मरिलो, ओ नरेन्द्र-नित्यानन्द एक पुत्र गोपीनाथके राखिया मरिलो, ओ सीताराम एक पुत्र सहदेव नाम ओ एक कन्या, (या)हार नाम प्रकाश नाइ, उत्तराधिकारी राखिया मरिलो। ओ ओइ गोपीनाथ तीनि पुत्र रामहरिनन्दिग्रामी ओ गौरहरिनन्दिग्रामी ओ हारुनन्दिग्रामी-के राखिया मरिलो; ओ सहदेव निःसन्तान मरिलो, ओ ताहार भगिनी एक कन्या राखिया मरिलो, ओ ओइ सहदेव आपन जीवद्दशाते भगिनीर मृत्युर पर आपन भगिनीर कन्यार जीव-द्दशाते ताहार आपन भगिनीर पुत्र रामशङ्करघोशालके कयेक विघा ब्रह्मोत्तर ओ देवत्तर भूमि दातव्य करियाछे; ओ ताहार दानपत्र लिखिया दियाछे; ओ ग्रहीताके दातव्य करा भूमिर उपर दखिल कराइया ताहार तीनि वत्सर परे मरियाछे; ओ दानकालीन गोपीनाथनन्दिग्रामीर पुत्र रामहरी ओ गौरहरी ओ हारु नन्दिग्रामी वर्त्तमान छिलो, एवं आछे। ओ ओइ गोपीनाथ मरियाछे, ओ दाता व्यक्तिर मृत्युर कएक वत्सर परे ग्रहीता व्यक्ति मरियाछे। ताहार पुत्रेरा दान करा-भूमीर उपर दखिल हइयाछे। वङ्गदेशेर शास्त्रानुसारे ओइ

सहदेवेर लिखिया देया हेबा सिद्ध, कि असिद्ध. ओ ताहा असिद्ध हइले कोन प्रकारे दान करा भूमि कोन व्यक्ति के अर्शे इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्[1]

यथात्र व्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतकुर्टनीइग्रामिटसाहेबधर्म्माधिकरणलिखितप्रश्नपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

यत्र गोवर्द्धननन्दिग्रामीसंज्ञकः कश्चिद् व्यक्तिविशेषो नरेन्द्रनित्यानन्दनन्दिग्रामीसीतारामनन्दिग्रामीसंज्ञकौ द्वौ पुत्रावुत्तराधिकारिणौ संरक्ष्य मृतः, नरेन्द्रनित्यानन्दोऽपि गोपीनाथसंज्ञकमेकं पुत्रं संरक्ष्य मृतः, एवं सीतारामोऽपि सहदेवनामानमेकं पुत्रमेकां कन्यां च संरक्ष्य मृतः, एवं गोपीनाथो रामहरी-गौरहरी-इरूसंज्ञकान् त्रीन् पुत्रान् संरक्ष्य मृतः, तत्रोपरिलिखितसहदेवः स्वजीवनदशायां स्वभगिनीदौहित्राय रामचन्द्रघोशालाय यदि कतिपयविधाशब्दवाच्याः[2] काञ्चिद् ब्रह्मत्रभूमिं देवत्रभूमिञ्च दत्त्वा, तस्याश्च दानपत्रं लिखित्वा दत्त्वा, तस्यां च अधीतुराय[3]त्वं सम्पाद्य संवत्सरत्रयानन्तरमनपत्य एव मृतस्तदा दानकाले इदानीं च गोपीनाथपुत्रेषु रामहर्य्यादुपरिलिखितेषु त्रिषु सत्स्वप्यविभक्तायां भूमौ स्वांशयोग्यायाः विभक्तायां च स्वांशरूपाया वा ब्रह्मत्रभूमेर्यद्दानं कृतं तद् यद्वदेशचलितशास्त्रानुसारेण सिद्धं भवति, स्वतन्त्रस्वामिकृतत्वात्, एवं दानपत्रलिखिताया देवत्रभूमेर्य्यद्दानं तन्न सिद्ध्यति[4], देवत्रभूमौ केवल देवताया एव स्वत्वं देवभिन्नानां केषाञ्चिदपि स्वत्वाभावात्। किन्तु देवत्रभूमेः संरक्षणावेक्षणादिकर्त्तृत्वं लोकानामेव व्यवहाराद् दृश्यते। तत्र यद्यनेन केनचिद् भूम्यधिपतिना देवसेवार्थं काचिद् भूमिर्न्नियमिता तत्संरक्षणादिकर्तृत्वं तद्देवपूजकत्वं वा सहदेवाय, तत्पूर्व्वपुरुषाय वा दत्तं स्यात्तदा

१. श्रीत्रं याति०—व्य०।

२. ०वाच्या काचित् ब्रह्मत्रभूमिर्देवत्रभूमिश्च दत्ता""दत्तः—व्य०।

३. रायन्त्र—व्य०।

४. सिद्ध्यति—व्य०।

तदेव स्वकर्तव्यस्ववशीभूतसंरक्षणादिकर्तृत्वं तद्देवपूजकत्वं वा यदि सहदेवेनोपरिलिखितरामशङ्करघोशालाय दत्तं स्याच्चदा, यदि वा स्वयमेव सहदेवेन देवसेवार्थं स्वीयकाचिद्भूमिर्नियमिता तस्याः संरक्षणादिकर्तृत्वं तद्देव पूजकत्वं वा तस्मै दत्तं स्यात्, तदा चैतदुभयविधं दानं लोकव्यवहारात्सिद्ध्यतीति, अतः शास्त्रानुसारेणापि सिद्धं भवितुमर्हतीति वङ्गदेशचलितदायभागमनुव्यवहारतत्त्वव्यवहारमातृकादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

स्वभागान् यदि दद्युस्ते विक्रीणीयुरथापि वा।

कुर्युर्यथेष्टं तत्सर्वमीशास्ते स्वधनस्य वै॥

इति दायभागादि(दाभा० २।२६, पृ० ३५)ग्रन्थधृतनारदवचनम् (नामस० पृ० १५७, १४।४२)। १

प्रदानं स्वाम्यकारणम्–इति मनुवचनम्। (मस्मृ० ५।१५२)। २

अस्वामिना कृतो यस्तु दायो विक्रय एव वा।

अकृतः स तु विज्ञेयो व्यवहारे यथा स्थितिः–इति मनुवचनम् (मस्मृ० ८।१९९)। ३

व्यवहारो हि बलवान् धर्मस्तेनावहीयते—इति व्यवहारतत्त्वादिग्रन्थ(व्यत० पृ० १९९)धृतनारदवचनम् (नामसं० पृ० ८, १।३४)

श्रीर्जयतितराम् श्रीहरिः शरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

---

१. ०लदेव०—व्यप० ।

२. ०नत्व०—व्यप० ।

३. स्वानंशान्—नामसं० ।

४. कुर्युरपि०—व्यप० ।

५. मीशाते—नामसं० ।

६. नावहीयते—नामसं० ।

सवाल

३०—सदर देवानी अदालतेर द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुटनी इशमिट साहेबेर हजुर हइते ओइ आदालतेर पण्डित दिगेर नामे अंगरेजी १८२५ सालेर १८ दिशम्बर मासेर रोवकारिर लिखित भवानीलालेर नामे हरीशावीबीर मोकद्दमाते परस्तु दुइ प्रहर पर्य्यन्त वचन ओ ग्रन्थेर वेओरा संवलित यवाव दाखिल करनेर हुकुमे सवाल, एइ ये—

एक व्यक्ति हिन्दु, कायस्थ जाति, स्त्री ओ पिताके राखिया मरिलो। ताहार पर पिता स्त्रीके, ये प्रथम मृत व्यक्तिर माता नहे, आर अप्राप्त-व्यवहार पुत्र ओ भगिनीर पुत्रके राखिया मरिलो। पश्चात् ऐ अप्राप्त-व्यवहार पुत्र निःसन्तान मरिलो। तत्परे ऐ पितार स्त्री, ये अप्राप्त-व्यवहार पुत्रेर मृत्युर परे ऐ पितार त्यक्त धनेर उपर दखिलकार हइयाछिलो, आपन पतिर भगिनीर पुत्रके, ये उपरे उल्लेख हइलो, ऐ त्यक्त धनेर असियतनामा लिखिया दिया ग्रहीताके दान करा वस्तुर उपर दखिल ना करा-इतेइ मरिलो मैथिलदेश ओ वङ्गदेशेर शास्त्रानुसारे ऐ असियत-नामा प्रथम मृत व्यक्तिर स्त्री थाकने ओ सिद्ध ओ चलित वटे, कि ना ? आर यद्यपि असियतनामा लिखा ना हइतो, एइ स्वीकार करा जाय उत्तराधिकारित्वक्रमे ऐ त्यक्त धन द्वितीय मृत व्यक्तिर भगिनीर पुत्रके किम्वा प्रथम मृत व्यक्तिर स्त्रीके अर्पितो इति।

श्रीर्जयतितराम्[1]

जबावव्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणद्वितीया(धि)पति - श्रीयुत-कुटनीइशमिटसाहेबधर्म्माधिकरणलिखितप्रश्नपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

---

१. श्रीर्ज्यतितराम्–व्य० ।

यदि कश्चित्कायस्थजातिः स्वस्त्रियं स्वपितरञ्च संत्यज्य मृतस्तदनन्तरं तत्पिता तद्विमातरमप्राप्तव्यवहारं पुत्रञ्चैकं स्वभगिनीपुत्रञ्च संत्यज्य मृतः, पश्चादप्राप्तव्यवहारः स पुत्रोऽप्यनपत्य एव मृतः, तदनन्तरमप्राप्तव्यवहारस्य पुत्रस्य पितुः पत्नी तस्मिन्विवादास्पदीभूतधने भोगवती भूत्वा स्वपतिभगिनीपुत्राय उपरिलिखिताय तस्यैव स्वायत्तीभूतधनस्य[1] अधियत-नामाख्यं पत्रं लिखित्वा दत्वा गृहीततत्पत्रं तत्पत्रलिखितवस्तु[2] भोगमकारयित्वा मृता स्यात्तदा मिथिलादेशचलितशास्त्रानुसारेण वङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेण च तदेव[3] अधियतनामाख्यपत्रं प्रथममृतव्यक्तेः स्त्रियां सत्यामसत्यां[4] वा सिद्धं प्रचलितं (च) भवितुं न शक्नोति। एवञ्च विवादास्पदीभूतधने उत्तराधिकारिणामयं क्रमः[5]। तथाहि जीवति पितरि प्रथममृतो यः पुत्रस्तदीयविभक्तमसाधारणञ्च धनं तत्पत्नी मिथिलादेशचलितशास्त्रानुसारेण वङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेण च प्राप्तुमर्हति; यदि च तस्य स्वोपार्जितं धन साधारणं स्थितं तदा तत्पत्नी तद्योग्यांशं वङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेण प्राप्तुमर्हति, न तु मिथिलादेशचलितशास्त्रानुसारेण, तद्देशीयग्रन्थकारैः साधारणधने विभागे सत्येव पत्न्याधिकारोल्लसनात्। एवञ्च प्रथममृतव्यक्तेर्विभक्तासाधारणधनातिरिक्तं विवादास्पदीभूतं धनं एतदुभयविधतदीयधनाभावे च समस्तमेव विवादास्पदीभूत धनं मिथिलादेशचलितशास्त्रानुसारेण, अथ च तस्यैव पुत्रस्य विभक्तासाधारणं धनं विना तदुपार्जितसाधारणधनेऽपि तद्योग्यांशञ्च विना विवादास्पदीभूत धनम्, एतद्विविधधनाभावे च समस्तमेव विवादास्पदीभूतं धनं वङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेण प्रथमपुत्रमरणोत्तरं तत्स्त्रियां सत्यामपि तत्पितुः स्वत्वास्पदीभूतम्, अतस्तस्मिन्मृते तस्याप्राप्तव्यवहारस्य पुत्रस्य उपरिलिखितपितृस्वत्वास्पदीभूतयावद्धनाधिकारे जाते सति तद्धनं तदीयमेव जातम्। अतस्तस्मिननपत्ये[6] मृते

---

१. ०धनस्याधि०—व्यप०।

२. गृहीतस्तत्पत्रलिखित०—व्यप०।

३. देशाधि०—व्यप०।

४. सत्यामा—व्यप०।

५. ०क्रमः०—व्यप०।

६. तस्मिन्नपत्ये—व्यप०।

तदुत्तराधिकारिणामेव तद्धनाधिकारः। तत्र च तत्पत्न्यादिसगोत्रपर्य्यन्ताभावे तत्पितुर्भागिनेयस्य आत्मबन्धुत्वेन मिथिलादेशचलितशास्त्रानुसारेण, एवं पत्न्यादितत्पितामहप्रपौत्रपर्यन्ताभावे तत्पितामहदौहित्रत्वेन बङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेण चाधिकारः। एवञ्च सति प्रथममृतव्यक्तेः स्त्री उपरिलिखितपतिस्वत्वास्पदीभूतधनाभावे एतद्धनादेव ग्रासाच्छादनाधिकारिणीति—इति मिथिलादेशचलितविवादचिन्तामण्यादिग्रन्थानुसारिणी बङ्गदेशचलितदायभागादिग्रन्थानुसारिणी च व्यवस्था।

तत्र प्रमाणम्—

स्त्रीणां[1] स्वपतिदायस्तु उपभोगफलः स्मृतः।
नापहारं स्त्रियः कुर्युः पतिवित्तात्[2] कथञ्चन॥

इति विवादचिन्तामणि(विचि० पृ० २३८) दायभागादि(दाभा० पृ० १७३, ११।१।६०)लिखितमहाभारतवचनम् (भारत-१३।४६७।२४)। १

अपहार ऐच्छिकं दानविक्रयादिकम्—इति विवादचिन्तामणिग्रन्थलिखनम् (पृ० २३८)। २

अनपत्यस्य धनं पत्न्यभिगामि तदभावे दुहितृगामि तदभावे मातृगामि तदभावे पितृगामि तदभावे भ्रातृगामि तदभावे भ्रातृपुत्रगामि—इत्यादि विवादचिन्तामण्यादि(विचि० पृ० २३५)ग्रन्थधृतविष्णुवचनम् (विस्मृ० पृ० ४६)। ३

इदं च *विभक्तपतिधनपरम्*—इति विवादचिन्तामणिलिखनम् (पृ० २३४)। ४

---

१. स्त्रीणां तु पतिदायाद्यम्—भारतम्।

२. ०वित्तान्—व्यप०, ०दायात्—दाभा०।

अतोऽविशेषेणैव विभक्तत्वाद्यनपेक्ष्यैव[1]। अपुत्रस्य भर्त्तुः कृत्स्नधने पत्न्यधिकारः—इत्यादि दायभागग्रन्थलिखनम् (पृ० १६६, ११।१।४६)। ५

'सगोत्राभावे बन्धुः'—याज्ञवल्क्य(वचना)त्, स (च) स्वबन्धुः पितृबन्धुर्मातृबन्धुश्च।

आत्मपितृष्वसुः[2] पुत्रा आत्ममातृष्वसुः[2] सुताः॥
आत्ममातुलपुत्राश्च[3] विज्ञेया आत्मबान्धवाः।
पितुः पितृष्वसुः पुत्रा पितुर्मातृष्वसुः सुता।
पितुर्मातुलपुत्राश्च विज्ञेया पितृबान्धवाः॥
मातुः[4] पितृष्वसुः[5] पुत्राः मातुर्मातृष्वसुः[5] सुताः।
मातुर्मातुलपुत्राश्च विज्ञेयाः मातृबान्धवाः॥

एतेषां क्रमेणाधिकारः—इति विवादचिन्तामणिलिखनम् (पृ० १४२)। ६

एवं पितामहप्रपितामहसन्ततेरपि दौहित्रान्तायाः पिण्डप्रत्यासत्ति[6]-क्रमेणाधिकारो बोद्धव्यः—इति दायभागग्रन्थलिखनम् (पृ० २०८-९)। ७

अविभागे तु शङ्ख।

भ्रातृभार्य्याणां (च) स्नुषाणाञ्च न्याय(तः प्र)सूतानामनपत्यानां पिण्डमात्रं गुरुर्दद्यात्॥

---

१. ०नपेक्ष्यैव—दाभा०।
२. ०स्वसु—व्यव०।
३. क्रम०—व्यव०।
४. पितुर्मा०—व्यव०।
५. मातुरि०—व्यव०।
६. प्रत्यासत्ति०—व्यव०।

जीर्णानि वासांस्यविक्रतानि[1]—इति विवादचिन्तामणिग्रन्थलिखन-न्चेति (पृ० २३६)

श्रीर्जयतितराम् **श्रीहरिःशरणम्**

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण **श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन**

३१—रोवकारि मिसिल आदालत देवानी सदर इङ्गरेजि १८२६ साल तारिख २८ माह देशम्बर मतावक वाङ्गला १२३३ साल तारिख १४ पौष रोज वृहस्पतिवार आदालत मजकुरार द्वितीय हाकिम *श्रीयुत कुर्टनी इशमिट* साहेबेर बैठके—

मृत गौरीप्रसादचौधुरि आपिलाण्ट
मसम्मात जयमालाचौधुराणी रेप्पाडण्ट

मृत्युञ्जयशर्म्मा शायेलेर उकिल सदासुखपण्डित विद्यमानें आइल। जयमालाचौधुराणी मुद्दाआलेहेर जमिदारि निलाम द्वाराय शायेलेर पञ्चोना डिगरिर टाका देयानेर बाबत। शायेलेर दरखास्त नामञ्जुरिर विषये कोर्ट आपिलेर तृतीय हाकिमेर मञ्जुर राखा सहर ढाकार जजसाहेबेर हुकुमेर असम्मतिते ओ ऐ चौधुराणीर जमिदारिर किछु निलाम करिया डिगरिर लिखित टाका देओयानेर निमित्ते कोर्ट आपीलेर हाकिमदिगेर नामे ए आदालतेर हुकुम सादर हओनेर प्रार्थनाय शाएलेर दरखास्त ऐ उकिलेर नामिक ओकालतनामा ओ सन हालेर १ मेइ मासेर लिखित जाहाङ्गीरनगरेर कोर्टेर रोवकारिर नकल आर कोर्टे दाखिल हओया शाएलेर सओयालेर नकल सम्वलित जे हाल मासेर २३ तारिखे ए आदालते दाखिल हइयाछिल अद्य दरपेप हइया दृष्ट आइल। जाना गेल ये इङ्गरेजि १८१४

---

[1] "स्यभिक्तानि"—ख्यपा०।

शालेर १६ देशम्बर मासेर ह्योया ए आदालतेर फयशला अनुसारे गोविन्द्रप्रसादचौधुरिर त्यक्त परगने काशीपुर शार्सिनाशन गयरह जमिदारिर आट आना रकमेर मध्ये ऐ गोविन्द प्रसादचौधुरिर प्रथमा स्त्री मसम्मात् पार्व्वतीचौधुरानिर दत्तक पुत्र गौरिप्रसादचौधुरिर स्वत्व अर्द्धेक परिमाणे, आ ऐ चौधुरिर द्वितीया स्त्री मसम्मात जयमालार दत्तक पुत्र शिवप्रसादेर स्वत्व द्वितीय अर्द्धेक परिमाणे सान्यस्त हइयाछे। आो ए आदलतेर फएशलार परे द्वितीय स्त्रीर दत्तक पुत्र शिवप्रसाद निःसन्तान मरिल; ओ ताहार मृत्यु हयोन हेतुते ऐ गौरिप्रसाद चौधुरिर ताहार त्यक्त चारि आना स्वत्वेर दाओया करिलेक, ओ ए आदालतेर पण्डितेरा इङ्गरेजी १८१७ शालेर ७ फेब्रओयारि मासे प्रथम हाकिमेर सओयालेर जवावे एक केवा व्यवस्था एइ मजमुने, ये शिवप्रसादचौधुरीर त्यक्त चारि आना अंश ऐ अप्राप्त-व्यवहारेर महीत्-माता जयमालाके अर्शे, ताहार भ्राता गौरीप्रसादके अर्शे ना, दाखिल करिलेन। ताहार पर तारिणीप्रसाद अप्राप्त-व्यवहार पुत्र राखिया ऐ गौरीप्रसाद मरिल, ओ इङ्गरेजि १८१६ शालेर ३१ आगष्ट मासे मृत्युञ्जय शर्म्मा शापल ऐ जयमालार नामे, ये ए क्षण पर्य्यन्त वर्त्तमान आछे, प्रकाश हय, ६७६।~)॥२ गण्डार डिगरि सहर ढाकार देओयानी आदालत हइते पाइल; ओ चाहितेछे ये ए चारि आना हिस्या किम्वा ताहार मध्ये किछु आपन हासिल करा डिगरिर टाका पाओनेर कारण विक्रय कराय, ओ वमसुकेर तारिख ये ए मृत्युञ्जयेर दाओयार मूल वटे अनिर्णय"। आर मसम्मात जयमाला-चौधुराणीर एजहार, एइ जे आमार एक कन्या, ताहार सन्तान जन्मे नाइ सम्भावना आछे; ओ द्वितीय कन्या पति-वर्त्तमाना, ताहार गर्भज, अप्राप्त-व्यवहार एक पुत्र आछे, ओ आमि स्वयं

१. सत्त-व्यव०।

द्वितीय एक पुत्रके दत्तक करियाछि। ए प्रकारे ए आदालतेर पण्डितदिगेर (स्थाने) जिज्ञासा जाय ये जयमालार एजहार सत्य-प्रकारे ऐ चारि आना अंश, किम्वा ताहार मध्ये किछु मृत्युञ्जय शर्म्मार पाओया डिगरि निमित्ते विक्रय हइते पारे कि ना, ओ ताहार एजहार मिथ्या हओन प्रकारे ताहार मृत्युर पर ऐ चारि आना हिस्या ताहार सपत्नीर पौत्र अर्थात् गौरीप्रसादचौधुरिर पुत्र तारिणीप्रसादचौधुरिके, किम्वा कोन व्यक्तिके अर्शिवेक, आर ताहार एजहार (प्रकारे) ताहार दुइ कन्या ओ एक दत्तक पुत्र थाकनेय विषये मिथ्याइ स्वीकार करणेर जवाव वङ्गदेशेर शास्त्रानुसारे मङ्गलवार दिवस दुइ प्रहर पर्य्यन्त दाखिल करेन इति।

जवावव्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतकुर्टनी – इशमिटसाहेवधर्म्माधि-करणालिखितविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनु-सारेणोत्तरं लिख्यते—

मृत्युञ्जयशर्म्मणः प्राप्तजयपत्रलिखितमृणं यदि शिवप्रसादस्यावश्यक-श्राद्धाद्यौर्द्ध्वदेहिकक्रियार्थं स्वभरणपोषणार्थं वा तन्मात्रा जयमालया कृतं तत्परिशोधनं यदि स्वसंक्रान्ततदीयांशविक्रयं विना न भवति तदा जय-मालोपस्थापितवृत्तान्तस्य सत्यत्वेऽसत्यत्वे वा तदर्थमुपरिलिखितमृण-परिशोधनोपयुक्तस्य तदीयांशान्तर्गतस्य विक्रयो भवितुमर्हति, न तु स्वेच्छया स्वाभिप्रायेण वा जयमालया कृतस्य ऋणस्य परिशोधनार्थम्। यथा पतिधने पत्न्याः पतिश्राद्धाद्यौर्द्ध्वदेहिकक्रियार्थं पतिकृतकुटुम्बभरणार्थर्ण-परिशोधनार्थं स्वभरणपोषणार्थसाधने विक्रयेऽशक्ताधिकारस्तथा पुत्रधने मातुरपि। एवञ्च जयमालामरणोत्तरं स एवांशस्तत्सपत्नीपौत्रस्य तारिणीप्रसादचतुर्धरिणस्य पूर्व्वधनस्वामिशिवप्रसादभ्रातृपुत्रस्य भविष्यति, यतः पुत्रधनस्योत्तराधिकारित्वेन मातृसंक्रान्तत्वेऽपि गृहीतपुत्रधनाया मातुरपगमे पूर्व्वधनस्वामिपुत्रस्य ये उत्तराधिकारिणस्तेषामेव तद्धनं

भवति। तत्र च तद्भ्रातृपर्य्यन्ताभावे[1] सुतरां भ्रातृपुत्रस्यैवाधिकारः, सति भ्रातृपुत्रे पितृदौहित्रस्यानधिकारात्, स्वामिमरणोत्तरमेकत्रीकृतस्य द्वितीय-दत्तकशास्त्रलिखितत्वाच्च—इतिवङ्गदेशप्रचलितदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कार-कृतदायभागटीकाक्रमसंग्रहविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम् :—

रिक्थमाह ऋणं दाप्यः—

इत्यादिविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थ(१विवा१७६ख)धृतयाज्ञवल्क्यवचनम्. (२।५१)। १

पत्नी तद्धनं भुञ्जीतैव, परं न तु तस्य दानाधानविक्रयान् कर्तुमर्हति। *तदाह-कात्यायनः*

अपुत्रा शयनं भर्तुः पालयन्ती गुरौ स्थिता।
भुञ्जीतामरणात् क्षान्ता दायादा ऊर्द्ध्वमाप्नुयुः॥ (कास्मृ० ९२१)

इतिदायभाग(पृ० १७१)ग्रन्थलिखनम्॥२॥

एवञ्च पत्युरौर्द्ध्वदेहिकक्रियार्थं दानादिकमप्यनुमतम्। अतएव *पत्न्या[2] शक्तावाधानमपि, तत्राप्यशक्तौ विक्रयणमपि*—इत्यादि दायभाग-ग्रन्थलिखनम्। (पृ० २६२, ११। १।६१-६२)

यद्वा पत्नीत्युपलक्षणम्, सौभाग्याधिकारेऽयमर्थो बोद्धव्यः।
पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः—इत्यादिदायभागादिग्रन्थ (दाभा० पृ० १५१) लिखितयाज्ञवल्क्यवचनम्॥ (२।१३५)५।

---

१ पर्य्यन्त०—न्यप०।

२ भार्य्यमाही—न्यप०।

३ पत्युरौर्द्ध्व०—न्यप०।

४ पत्न्याभा०—न्यप०।

५ पितरौ भ्रातरस्त०—न्यप०।

भ्रातृपौत्रस्याभावे पितुर्दौहित्रस्याधिकारः—इति (दाय)क्रमसंग्रह-लिखनञ्चेति (पृ० ६) । ६

श्रीर्ज्जयतितराम् श्रीहरिःशरणम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

श्रीर्ज्जयतितराम् ।

३२—यत्र धनिनः सप्तमपुरुषज्ञातिमातुलपुत्रौ विद्येते तत्र तयोर्म्मध्ये जीमूतवाहनकृतदायभागमते धनिनो मातुलपुत्रस्यैव धनित्यक्तधने धनिनिमृतेऽधिकारः, विज्ञानेश्वरकृतमिताक्षरामते तु तयोर्म्मध्ये सप्तमपुरुषज्ञातेरेवाधिकारी न तु मातुलपुत्र इति—

श्रीर्ज्जयतितराम् श्रीहरिःशरणम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

यह व्यवस्था दाखिल सदर देवानीका रजिष्टर साहेब श्री मेघनाटन साहेबका हजूर कलकत्तेका कोर्ट आपील आदालतिके हाकिमान्के सवालके जवाब इति—

श्रीवैद्यनाथपण्डित

सवाल

३३—आगम केत्ने प्रकार है ? सप्त प्रकार आगम कोन पुस्तकमे लिखा हो ? मिताक्षरा किम्वा अन्य कोइ ग्रन्थमे लिखा हो इति ।

यवाव

शास्त्रोक्त आगम सप्त प्रकार, ओ सप्त प्रकार आगम मिताक्षरा वीरमित्रोदय ओ गैरह् ग्रन्थमे लिखा है इति।

श्रीर्जयतितराम् श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

यह यवाव दाखिल नाएब रजिष्टर श्रीयुत विष्ट साहेबका हुजुरमो इति।

श्रीर्जयतितराम्

प्रथम सवाल

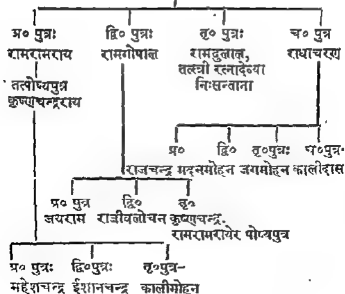
३४—कुशलरायेर चारि पुत्रेरा ओहार त्यक्त जमिदारी प्रभृतीर अंश सकलेर उपर समान अंशते दखिलकार थाकिया कुशलरायेर तृतीय पुत्र रामदुलाल आपन स्त्री रत्नादेव्याके राखिया निःसन्तान मरे, ओ ऐ स्त्रीलोक आपन जीवत्दशा पर्य्यन्त आपन स्वामीर त्यक्त जमिदारी-प्रभृतीर अंशेर उपर दखिल थाकिया राजीवलोचन ओ कृष्णचन्द्र ओ रामगोपालेर पुत्रगण, जयरामरायेर पुत्र हरिहरराय, ओ राधाचरणेर चारि पुत्र, राजचन्द्र ओ गयरहेर समक्षे मरिलो। अतएव रत्नादेव्या मजकुरार मृत्युर पर ताहार स्वामी अर्थात् कुशलराय मजकुरेर तृतीय पुत्र रामदुलालरायेर त्यक्त अंश शास्त्रानुसारे ताहारदिगेर मध्ये काहाके, की परिमान अर्शे इति।

द्वितीय सवाल

रामगोपालरायेर औरस पुत्र कृष्णचन्द्रके रामदुलालराय पोष्यपुत्रकरण प्रयुक्त कृष्णचन्द्र मजकुर रामदुलालेर त्यक्तेर

স্বত্বে তাহার স্ত্রী রত্নাদেব্যার মৃত্যুর পর আপন সহোদর ভ্রাতা রাজীবলোচন ও পিতৃব্যপুত্রগণ রাজচন্দ্র (ও) গয়রহের সহিত সমান মর্য্যাদা রাখিবেক, কি ওাহারদিগের সম্পর্কে ওাহার স্বত্ব ন্যূন কিম্বা অধিক হইবেক ইতি।

যদ্যপি রামগোপালরায়ের পুত্র জয়রামরায় রত্নাদেব্যার সমক্ষে মরিয়াথাকে, এ প্রযুক্ত তাহার পুত্র হরিহররায় রত্নাদেব্যা মজকুরার মৃত্যুর পর রাজীবলোচন ও গয়রহ রামদুলালের ভ্রাতুষ্পুত্রগণের ন্যায় ঐ রামদুলালের ত্যক্ত বিষয়ের অংশে স্বত্বাধিকারী হইবেক, কিম্বা রত্নার সমক্ষে তাহার পিতার মৃত্যু হওয়াতে প্রযুক্ত স্বত্বাধিকারী হইবেক ইতি।



श्रीर्जयतितराम्

अथात्रव्यवस्था

प्रष्टुसमर्पितवंशावलीपत्रानुसारेण प्रश्नानुसारेण चोत्तरं लिख्यते।

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

यत्र कुशलरायस्य चत्वारः पुत्राः स्वपितृत्यक्तस्थावरजङ्गमस्थावरार्धांश-चतुष्टयं कृत्वा स्वस्वांशभोगवन्तः स्थिता[1], तेषां मध्ये कुशलरायस्य तृतीय-पुत्रो रामदुलालः स्वपत्नीं रत्नादेवीं संरक्ष्य अनपत्य एव मृतः, ततो रत्ना-देवी स्वजीवनकालपर्यन्तं स्वपतित्यक्तसराजकरस्थावरांशभोगं कृत्वा रामगोपालपुत्रौ, राजीवलोचनकृष्णचन्द्रसंज्ञकौ, जगधमरायस्यैकं पुत्रं हरिहररायसंज्ञकं, राधाचरणस्य चतुरः[2] पुत्रान् रामचन्द्रमदनमोहन[3]-जग-मोहनकालिदासान् संरक्ष्य मृता स्यात्, तदा रत्नादेव्याः स्वामिनोऽपितु कुशलरायस्य तृतीयपुत्रस्य रामदुलालरायस्यांशं समस्तमेकादशधा वि-भज्य द्वौ द्वौ भागौ राधाचरणपुत्राणां रामचन्द्रमदनमोहनजगमोहन-कालिदासानां प्रत्येकं भवतः, तथैव द्वौ भागौ रामगोपालपुत्रस्य राजी-वलोचनस्य भवतः, अवशिष्टश्चैको भागो वंशावलीपत्रावगतरामरामराय-दत्तकपुत्रस्य कृष्णचन्द्रस्य भवति।

द्वितीयप्रश्नस्याप्यथाऽऽदमेवोत्तरम्—इतिवद्देशाचारविवादभागवि-वादभट्टाचार्यवदत्तकचन्द्रिकादिग्रन्थानुसारेणैव व्यवस्थेति।

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि रामगोपालरायस्य पुत्रो जयगोपालो रत्नादेव्यां सत्यां मृतः स्या-त्, तदा तत्पुत्रो हरिहररायो रत्नादेव्या मरणोत्तरं रामदुलालभ्रातृपुत्रराजी

१. स्थिता०—व्या०।
२. चतुर पुत्रान्—व्या०।
३. मदनमोहन—व्या०।

चलोचनादिवद् रामदुलालत्यकधने अधिकारी न भवति, सत्यां रत्ना-देव्यां मृतस्य जयरामरायस्य हरिहररायपितुस्तद्धने स्वत्वाभावात्। हरिहर-रायस्य तु रामदुलालभ्रातृपौत्रत्वेन सत्सु भ्रातृपुत्रेषु भ्रातृपौत्रस्य हरिहर-रायस्य तद्धनाधिकाराभावाच्च (नाधिकारः) इति—

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमद्वितीयप्रश्नोत्तरप्रमाण एवान्तर्गतप्रथमद्वितीयप्रमाणमेव। अत्र यद्यपि द्वितीयप्रश्ने कृष्णचन्द्रस्य रामदुलालरायदत्तकपुत्रत्वं लिखितं तथापि वंशावलीनेन कृष्णचन्द्रस्य रामरामजयदत्तकपुत्रत्वं निश्चित्यैवं व्यवस्था दत्ता। कृष्णचन्द्रस्य रामदुलालरायदत्तकपुत्रत्वं निश्चितं भवति चेत्तदा, तन्निश्चयोत्तरं तदुत्तरं दास्यामीति—

श्रीर्जयतितराम् श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथ मिश्रेण श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

एइ व्यवस्था दाखिल रजेष्टर साहेब श्रीयुत मेघनादन माहेवके हजुर कलकत्ता कोर्ट आदालत आदालतेको हाकिमानके सवालके यथाक्रमो कुरशोनामा, मे सवाल।

सवाल

३५—जिले कानपुर साकिनेर एक हिन्दु जमीदार तीन स्त्री राखितो। औ ताहार एक स्त्रीर गर्भे एक पुत्र औ द्वितीय स्त्रीर गर्भे औ एक पुत्र एवं अन्य स्त्रीगर्भ पाँच पुत्र छिलो। औ जमीदार मजकुर ओइ सात पुत्र वर्त्तमान राखिया लोकान्तर हय। जमी-दार मजकुरेर पैतृक जमीदारी ओइ सात सन्तानेर मध्ये की प्रकार अंश हइवेक इति।

सवाल

यदि स्यात् जमीदार मजकुरेर सन्तान सकलइ तीन स्त्रीर मध्ये एकेर गर्भजात हइया सकलइ परलोक प्राप्त हय तवे ओइ स्त्रीर कोनो सन्तान ना थाकाते ताहारदिगेर पैतृक हिस्सा की रूप बखरा हइवेक, एवं कोन कोन व्यक्तिके अर्शिवेक इति।

यथावव्यवस्था

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यत्र कस्यचित् कानपुरप्रदेशीयस्य हिन्दुजातेर्भूस्वामिनस्तिसृणां स्त्रीणां मध्ये एकस्या गर्भे एकः पुत्रो द्वितीयस्या अपि गर्भे एकः पुत्र एवमन्यस्या गर्भे पञ्च पुत्राः स्थिताः; स भूस्वामी यत्परिलिखितसप्तपुत्रान् संस्थाप्य मृतः स्यात्तदा तद्भूस्वामिनः[1] पैतृकं सराजकरस्थावरं धनं सप्तधा विभज्य सप्तपुत्राणां प्रत्येकमेकैकांशो भवतीति—

तत्र प्रमाणम्—

ऊर्ध्वं[2] पितुः पुत्रा विभजेयुर्धनं समम्—इति मिताक्षरा(पृ० ५७५, याःस्मृ० २।११४)वीरमित्रोदयादिग्रन्थधृतनारदवचनम्[3](धको० पृ० ११५२)।

यत्परिलिखितभूस्वा(मि)नस्तिसृणां[4] स्त्रीणां मध्ये एकस्या गर्भजाताः सन्ततयः सर्वाः परलोकं गतास्तदा तस्या मृतसन्तानायाः कस्या-

---

१. तद्भू०—व्यप० ।

२. पितुरूर्ध्वं गते पुत्रा विभजेरन् धनं समम्—नास्मृ० पृ० ७८। पितर्युपरते पुत्रा विभजेयुर्धनं पितुः—नास्मृ सं० पृ० १८६।

३. वीरमित्रोदये वचनमिदं न दृष्टम्। तत्रैतदर्थकम् विभजेरन् सुताः पित्रोरूर्ध्वं रिक्थमृणं समम्-इति (याःस्मृ० २।११७) धृतम्।

४. तिसृणाम्—व्यप० ।

(श्रि)द्वर्त्तमानसन्ततेरभावेन तासां सतीनां पैतृकधनांशस्यायं विभागप्रकारः—यद्युपरिलिखितप्रश्नलिखितसप्तसापत्नभ्रातृणां पैतृकं (धनं) सराजकरस्थावरमविभक्तं स्यात्तदा वर्त्तमाना ये सापत्नभ्रातरस्ते एव मृतानां सापत्नभ्रातृणां योऽशस्तस्य तत्पुत्रपौत्रप्रपौत्रसोदरभ्रातृपर्य्यन्ताभावे समानांशभागिनो भवन्ति। यदि च ते प्रथम परस्परं विभक्ताः पुनर्विभक्तं धनं मिश्रीकृत्यैकत्रैकधर्म्मेण संसृष्टाः सन्तः केचन मृतास्तदा येन येन सह ते संसृष्टाः (सन्तस्ते) स्थितास्तेषामेव[1] तद्धनम्, न त्वसंसृष्टानां पुत्राद्यभावेऽपि भवति। एतत्पक्षद्वये मृतानां धनग्राहिण्यः सकाशात् तत्तत्पत्न्यः तत्तन्मातरो[2] वा यावज्जीवमन्नाच्छादनभागिन्यः[3]। यदि च तेषां तद्धनं विभक्तमयथोपरिलिखितरीत्या ते संसृष्टा न स्थितास्तदा तेषां पुत्रपौत्रप्रपौत्ररूपापत्यपत्नीदुहितृदौहित्रपर्य्यन्ताभावे तेषां माता तत्तदंशभागिनी भवति—इति कानपुरप्रदेशचलितमिताक्षरावीरमित्रोदयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा—इत्यादि मिताक्षरादिग्रन्थ-(मिता० पृ० २१६)धृतयाज्ञवल्क्यवचनम् (२।१३५) ॥१॥

सोदराणामभावे भिन्नोदरा धनभाजः—इति मिताक्षरालिखनम् (पृ० २२२) ॥ २ ॥

संसृष्टिनस्तु संसृष्टी—इत्यादि तद्धृत(मिता० पृ० २२५)याज्ञवल्क्यवचनम् (२।१३८) ॥ ३ ॥

---

१. °णामंशो तत्त्व०—व्यप० ।

२ °मेतत्तद्धनं न चासंसृष्टानां पुत्राद्यभावे भवति—व्यप० ।

३ °पत्नी माता वा—व्यप० ।

४. °भागिनी—व्यप० ।

पत्नी गृह्णीयादित्येतद्वचनबलात् विभक्तभ्रातृत्वीविषयम्-इतिमितःक्षरालिखनम् (मिता० पृ० २१०) ॥ ५ ॥

श्रीर्जयतितराम् श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

एह व्यवस्था दाखिल रजिष्टर साहेब श्रीयुत मेयनाटनसाहेबका हजुर कलकत्तेका सदर कमिसनरके श्रीयुत राससाहेब सदर देवानी आदालतीके पञ्चम हाकिम(के) सवालके यवाव ।

३६—श्रीयुत रेजष्टर मेघनाटन साहेबेर देले सवाल—प्रसादसिंह नामे एक व्यक्ति राजपूतेर औरसे धानक जाति स्त्रीर गर्भे जन्मियाछे। इहाते यद्यपि ताहार पितार सहित ताहार मातार विवाह हैइया ना थाके, खोरपोष पाओनेर योग्यता राखे. कि ना-एइ सवालेर यवाव हिन्दुस्थानि पण्डित लिखिया देन इति।

पत्रानिव्यवस्था

यदि कश्चित् प्रसादसिंहो राजपुत्रबीजतो[1] धानकजातीयस्त्रीगर्भे उत्पन्नस्तत्र यद्यपि तत्पित्रा सह तन्मातुर्विवाहो नाभूत् तथापि ग्रासाच्छादनं प्राप्तुं[2] शक्नोतीति।

श्रीर्जयतितराम

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

एइ व्यवस्था दाखिल रेजस्टर श्रीयुत मेकनटन साहेबेर हुजुरे—

---

१. राजपूत बीजने—व्यव० ।
२. ग्रास०—व्यव० ।

सओयाल

३७—यद्यपि त्रिहोत जिला निवासी कोन व्यक्तिर भ्रातुष्पुत्र थाके से व्यक्ति दौहित्रके कृत्रिम पुत्र करिते पारे कि ना ?

यवाब

तीरभुक्तिप्रदेशीयेन केनचिदनपत्येन तद्देशचलितकेशवमिश्रकृतद्वैतपरिशिष्टरुद्रधरोपाध्यायकृतशुद्धिविवेकादिग्रन्थविवेचनया मनुवचनानुसारेण तद्देशीयपूर्व्वापरव्यवहारानुसारेण च सत्यपि भ्रातृपुत्रे दौहित्रः कृत्रिमपुत्रः कर्त्तुं शक्यते इति—

श्रीज्जंयतितराम्
श्रीरघुनाथशर्म्मण

एइ व्यवस्था दाखिल श्रीयुत रेजेष्टर मेकनटन साहेबेर हजुरे।

सओयाल

३८—एक विधवा स्त्रीलोक आपन पतिर अनुमतिते शास्त्रोक्त-विधि मत एक बालकके दत्तक करिलेक। ए प्रकारे ऐ स्त्रीर जीव-द्दशाते ताहार मृत पतिर धन पाओनेर स्वत्वाधिकारी ऐ दत्तक हय कि ना।

यवाब

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रप्रतिरूपमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

यद्येकया विधवया स्त्रिया पत्यनुमत्या शास्त्रोक्तविधिना एको बालको दत्तकः कृतः स्यात्तदा तस्यां स्त्रियां जीवन्त्यामपि तस्या मृतपतिधनप्राप्तेः

स्वत्वाधिकारी स एव, दत्तकः पुत्रो भवति, शास्त्रोक्तमुख्यगौणपुत्राणामेवं पौत्रप्रपौत्राणां चाभाव एव पत्न्यादीनामधिकाराभिधानात्—इति मिताक्षरादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

एवं मुख्यगौणपुत्राननुक्रम्यैतेषां दायग्रहणे क्रममाह—

पिण्डदोऽंशहरश्चैषां पूर्वाभावे परः परः—(याज्ञ० २।१३२) इति—मिताक्षरालिखनम् (पृ० २२४) ॥ १ ॥

मुख्यगौणसुता दायं गृह्णन्ति-इति निरूपितम्। तेषामभावे सर्वेषां दायादक्रम उच्यते। पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा—(याज्ञ० २।१३५) इत्यादि मिताक्षरादिग्रन्थलिखनम् (पृ० २२६) ॥२॥

श्रीश्रीजयतितराम् — श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथशर्म्मण — श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

एइ व्यवस्था दाखिल इङ्गरेजी मिशील

सओयाल

३९—ये मंकद्दमाते ऐ सओयाल करा गियाछे-आजमिर देशेर सम्पर्कीय छिल। जिज्ञास्य जाइतेछे ये बङ्ग देश दायभाग मते दत्तक पुत्रेर सत्वे ऐ आज्ञा सिद्ध घटे, कि ना। यदि सिद्ध ना हय ताहार हेतु वचन प्रमाण सम्वलित निवेदन करेण इति। २६ शेतम्बर सन १८२५ इंरेजि।

यत्राव-व्यवस्था

वङ्गदेशचलितदायभागादिग्रन्थमते दत्तकपुत्रस्य स्वत्वे इयमेव व्यवस्था प्रमाणं भवतीति ।

श्रीजर्जयतितराम् — श्रीहरिः शरणम्
श्रीरघुनाथमिश्रेण — श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

४०—सदर देवानी आदालतेर द्वितीय हाकिम श्रीयुत छुर्टनी इशमिट साहेबेर हुजुर हइते ऐ आदालतेर पण्डितदिगेर नामे अप्राप्तव्यवहार शिवनाथघोषेर पक्षे अक्षिवनबामवसुर[1] नामे भानुमतीदास्यार मकद्दमाते इङ्गरेजि १८२७ शालेर ७ फिबरुओरि मासेर रोबकारिर लिखित परस्व दुइ प्रहर पर्य्यन्त जबाब दाखिल करणेर हुकुमे सओयालात, एइ ये—

प्रथम सओयाल—

वङ्गदेशनिवासी एक व्यक्ति हिन्दु आपन तालुक हइते आपन स्त्रीके किछु भूमि पृथक करिया दिया ओ स्त्रीके ताहार उपर दखिल कराइया ताहार कएक वत्सर परे ऐ स्त्रीके ओ ताहार गर्भज तिन पुत्र राखिया मरियाछे। पश्चात् ऐ तिन पुत्रेर मध्ये एक जन स्त्री राखिया मरियाछे। तत्परे प्रथम मृत व्यक्तिर स्त्री बाकी दुइ पुत्र राखिया मरियाछे। जिज्ञासा करा जाइतेछे ये ऐ भूमिते मृत पुत्रेर स्त्रीर पत्यंशेर दाओया अर्शे कि ना ? ॥ १ ॥

द्वितीय सओयाल—

यद्यपि प्रथम मृत व्यक्तिर स्त्री ऐ पुत्रेर मृत्युर पूर्व्वे किम्वा ताहार पर ऐ सम्पत्क भूमिर हेवानामा बाकी दुइ पुत्रेर एक

---

[1] अक्षिनरामवसु-इति साधीयान् पाठः ।

জনার পুত্রকে লিখিয়া দিয়া থাকে, ও গৃহীতাকে হেবার[1] ভূমিতে দখিল করাইয়া থাকে এ প্রকার হেবা সিদ্ধ ও দাত্রীর অন্য পুত্রদিগের স্বত্বনাশ বোধক বটে কি না ॥ ২ ॥

তৃতীয় সওয়াল—

যদ্যপি প্রথম মৃত ব্যক্তির ঐ ভূমি পৃথক করিয়া দেওন কাল পর্য্যন্ত কেবল ঐ তিন পুত্রের মধ্যে এক জন, অর্থাৎ গৃহীতার পিতা, জন্মিয়া থাকে; এ প্রকারে শাস্ত্রের আজ্ঞাতে উত্তরাধিকারিত্ব স্বত্ব ও হেবা সিদ্ধ ... তার বিষয়ে বিশেষ আছে কি না ? ॥ ৩ ॥

শ্রীর্জয়তিতরাম্

যবাব-ব্যবস্থা

এতদ্ধর্ম্মাধিকরণ দ্বিতীয়াধিপতিশ্রীযুতকুর্টনীহরামিটসাহেবধর্ম্মাধিকরণালিখিতপ্রশ্নপত্রমবলোক্য যাদৃশবোধো জাতস্তদনুসারেণোত্তরং লিখ্যতে—

প্রথমপ্রশ্নস্যোত্তরম্—

যত্র বঙ্গদেশীয়ঃ কশ্চন হিন্দুজাতীয়ো ব্যক্তিবিশেষঃ স্বকীয়সরাজকরণাবসরাৎ স্বস্ত্রিয়ৈ কাঞ্চিদ্ভূমিং পৃথককৃত্য দত্ত্বা তদুপরি তস্যাশ্চ ভোগং কারয়িত্বা কতিপয়বৎসরানন্তরং তাং স্ত্রিয়ং তদ্গর্ভসম্ভূতান্ পুত্রাংশ্চ সংস্থাপ্য মৃতঃ, পশ্চাত্তেষাং ত্রয়াণাং মধ্যে কশ্চিদেকঃ পুত্রঃ স্বস্ত্রিয়ং সংস্থাপ্য মৃতঃ, তদনন্তরং প্রথমমৃতব্যক্তেঃ স্ত্রী চ অবশিষ্টৌ দ্বৌ পুত্রৌ সংস্থাপ্য মৃতা স্যাৎ তত্র তদ্ভূমৌ মাতরি জীবন্ত্যাং মৃতস্য পুত্রস্য স্ত্রী পত্নীং[2] কল্পয়িত্বা মাতু[3] নার্হতি। মাতরি মৃতায়ামেব বিদ্যমানানাং পুত্রাণাং পুত্রত্বেন মন্যুনে স্বত্বাতাধা

১ হেবার—স্যস।
২ পত্নী—স্যস।
৩ মাত্—স্যস।

दायत्वं भवति, जीवन्त्याञ्च मातरि मृतस्य मातृधने स्वत्वोत्पत्त्यभावेन दायत्वाभावात् तत्स्त्रियाः सुतरां तद्धनानधिकारित्वात् इति।

अत्र प्रमाणम्—

पूर्व्वस्वामिसम्बन्धाधीनं तत्स्वाम्युपरमे[1] यत्र द्रव्ये स्वत्वं तत्र निरूढो दायशब्दः – इति दायभागग्रन्थलिखितम् (पृ० ५) ॥ १ ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि प्रथममृतव्यक्तेः स्त्री तत्पुत्रमरणात् पूर्व्वं तदनन्तरं वा तस्याः स्वर्व्वस्या एव भूमेर्दानपत्रमवशिष्टयोर्द्वयोः पुत्रयोर्मध्ये एकस्य पुत्राय लिखित्वा दत्त्वा गृहीतदानिकृतभूमौ भोगं कारितवती स्यात्तदैतद्दानं सिद्धं भवितुम्, एवं दाम्या अन्यपुत्रादीनामुत्तराधिकारित्वेन स्वत्वनाशबोधकञ्च भवितुं नार्हति, यतो भर्त्तृदत्तस्थावरात्मकसौदायिकस्त्रीधने स्त्रिया दानाद्यनधिकारस्य विशेषतो दायभागादिग्रन्थलिखितत्वेनोपरिलिखितविवादास्पदीभूतधनस्य भर्त्तृदत्तस्थावरात्मकसौदायिकस्त्रीधनत्वमेव।

अत्र प्रमाणम्—

ऊढया कन्यया वापि पत्युः पितृगृहेऽथवा।

भर्त्तुः सकाशात् पित्रोर्वा लब्धं सौदायिकं स्मृतम्—इत्यादि दायभागादि(दाभा० पृ० ७६, ४।२२)ग्रन्थलिखितकात्यायनवचनम् (कास्मृ० ६०१) ॥ १ ॥

सौदायिके सदा स्त्रीणां स्वातन्त्र्यं परिकीर्त्तितम्।

विक्रये चैव दाने च यथेष्टं स्थावरेष्वपि—इति तद्धृत(दाभा० पृ० ७६, ४।२२)कात्यायनवचनम् (कास्मृ० ६०५) ॥ २ ॥

स्थावरेऽपि भर्त्तृदत्तमात्रे स्त्रिया दानाद्यनधिकारः। यथाह नारदः—

---

१ तत्स्वाम्योपरमे—दाभा०।

भर्त्रा प्रीतेन यद्दत्तं स्त्रियै तस्मिन् मृतेऽपि तत् ।
सा यथाकाममश्नीयाद् दद्यात् वा स्थावरादृते ॥—इत्यादि दाय भागग्रन्थलिखनम् (पृ० ७६ ७७, ४।२३, नास्मृ० पृ० ५६) ॥ २ ॥

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्यपि प्रथममृतव्यक्तिकर्त्तृकतद्भूमिपृथक्करणदानकालपर्यन्तं तेषां त्रयाणां पुत्राणां मध्ये केवलमेक एव अर्थाद् ग्रहीतुः पितैवोत्पन्नोऽभूद्, एतस्मिन् प्रकारे सत्यपि शास्त्राज्ञायामुत्तराधिकारित्वेन स्वत्वविषये एव दान सिद्ध्यसिद्धिविषये च विशेषो नास्ति—इति बङ्गदेशप्रचलितदायभागादि ग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥

श्रीहरिः शरणम्
श्रीदुर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

४१—रोवकारि मिसिल आदालत देओयानी सदर, इंगरेजि १८२७ शाल २४ माहे आपरेल मताबक (मताबक) बाङ्गला १२३४ शाल १२ माहे वैशाख रोज मङ्गलवार आदालत मज-ह्लुरार द्वितीय हाकिम श्रीयुत दुर्टनी इस्मिट साहेबेर बैठके ।

नवकिशोरदास सायेल

सायेलेर वकिल मुनसी गोलाम वतुल हाजीर हइल । सायेलेर सओयालेर लिखित निवेदनेर अनुमोदने ओ दस्तावेजातेर दृष्टे सायेलेर दखली स्थान हइते शरवराहकार महसुफी ओ अन्य २ विषय सम्वलित ए आदालतेर हुकुम सादर हओनेर

१ प्रथम—व्यव० ।

प्रार्थनाय ऐ सओयाल ओ जगन्नाथ चक्रवर्त्तिर नामिक मक्तार-नामा ओ ऐ उकिलेर नामिक ओकालतनामा ओ इंगरेजी १८२६ शालेर २० शेतम्बर मासेर हओया जिला मयमनसिंहेर आदालतेर रोयकारिर नकल ओ सन हालेर जनओरि मासेर २०।२७ तारिखेर लिखित जाहाङ्गीरनगरेर कोर्ट आपीलेर रोयकारिर नकल दुइ केता सम्बलित, जे हाल मासेर २१ तारिखे दाखिल हइयाछिल, अद्य पडा गेल। तदपरे सदासुखपण्डित उकिल सओयालेर शामिल दस्तावेजातेर दृष्टे सरबराहकार बहालीर प्रार्थनाय एक केता सओयाल रामशङ्करराय ओ शोभारामसरकारेर नामिक मक्तारनामा ओ आपन नामिक ओकालतनामा ओ बाङ्गला पाठ ओ अक्षर बाङ्गला १२३१ शालेर १३ पौष मासेर लिखित नवकिशोरदासेर लिखिया देया एक केता एकरारनामार नकल सम्बलित अप्राप्तव्यवहार गोपीमोहनदासेर माता राजेश्वरिदासीर पक्ष हइते दाखिल करिलेक दृष्टि आइल। ओ मुनशी हयदर आली उकिल हाजिर हइया रामकिशोररायेर तरफ हइते वाहार हिस्या क्रोक हइते खोलासा पाओनेर सजमुने एलाका जाहाङ्गीरनगरेर कोर्टेर हाकिमदिगेर हुकुम बहालिर प्रार्थनाय अन्य विषय सम्बलित एक केता सओयाल मये रघुनाथरायेर नामिक मक्तारनामा ओ आपन नामेर ओकालतनामा दाखिल करिलेक, पडा गेल। तदपरे सायेलेर उकिलेर स्थाने जिज्ञासा गेल जे आट भ्रातार मध्ये चारि भ्राता जे आपन स्त्री राखिया निःसन्तान मरियाछे से चारि भ्रातार नाम कि छिल। जवाब दिलेक जे शिवमोहन ओ व्रजकिशोर ओ शोभाराम ओ कुञ्जकिशोर। ताहार मध्ये कुञ्जकिशोरेर स्त्री ओ शिवमोहनेर स्त्री मरियाछे, ओ शोभारामेर स्त्री ओ व्रजकिशोरेर स्त्री वर्त्तमान आछे। जाना गेल जे नवकिशोर

१. जाहाङ्गीर०—ढाका।

दासेर सओयाले लेखा आछे ये आमार भ्राता गौरकिशोरदास संसार त्याग हइया आपन अस्थावर वस्तु आपन स्त्री राजेश्वरी दास्याके ओ स्थावर वस्तु आमाके दिया वैराग्य धर्म्माश्रय करिया देशान्तर हइया बहु काल परे पुनरायं आपन बाटीते आसियाछिल। तत्कालीन गोपीमोहनदास नामे एक पुत्र राजेश्वरीदास्यार गर्भे जन्मियाछे। किन्तु शास्त्रमते मसम्माव मजकुरार ओ ताहार पुत्रर सत्व मिलकियते रहे नाइ इति। एमते हुकुम हइलो जे, ए अदालतेर पण्डितादगेर स्थाने दुइ सओयाल करा जाय। एक एइ ये यद्यपि ऐ नवकिशोरदासेर एजहार सत्य हय, मन्यत हआया नाय राजेश्वरीदास्यार ओ ताहार पुत्र गोपीमोहनदासके गौरकिशोरदासेर मिलकियत अर्शे कि ना?'

द्वितीय, एइ ये सहोदर छोट भ्रातार मध्ये दुइ भ्रातार निसन्तान दुइ स्त्री जे अद्यापि वर्त्तमान आछे ताहारदिगेर प्रतित्यक्त दुइ अष्टम अंशेर सत्वाधिकारिणी बटे कि ना। उचित ये शनिवार पर्य्यन्त पण्डितदगेर शास्त्रानुसारे एइ दुइ सओयालेर जबाब दाखिल करण। पण्डितादिगेर व्यवस्था दृष्टे उचित[1] हुकुम देया जाइबेक।

सवाल-व्यवस्था।

एतद्धर्म्माधिकरण्याद्द्वितीयाधिपतश्रीयुतकुर्ब्बतीश्च मिरया देवधर्म्मार्थ करण लिखितावच व्यवस्थान्तर्गतप्रश्नद्वयरूपपत्रमवलोक्य यथाशास्त्र वत्त दनुस रेणोत्तर लिख्यते।

प्रथमप्रश्नोत्तरम्—

यद्यपि नवकिशोरदासोपस्थापितवृत्तान्तान्तर्गतनवकिशोरदाससम्प्रदान कगौरकिशोरदासक र्तृकस्वस्थल राशीभूतस्थावरधन समर्पण स्वस्त्रीराजेश्वरी

1 उचित्—स्पा०।

दासीसम्प्रदानकगौरकिशोररायकर्तृकतत्स्वत्वास्पदीभूतस्थावरधनविषयकञ्च दानं सत्यत्वेन मन्यमानं सन्निरुपाधिकं स्यात्तदा राजेश्वरीदास्यास्तत्पुत्रस्य गोपीमोहनदासस्य वा गौरकिशोररायकर्तृकनवकिशोरदाससम्प्रदानकतत्स्वत्वास्पदीभूतधनान्तर्गतनिरुपाधिदानकृतस्थावरवस्तुषु नाधिकारः। किन्तु प्रथिलिखितराजेश्वरीदासीसम्प्रदानकनिरुपाधिदानकृतस्थावरवस्तुषु राजेश्वरीदास्या मयस्येवाधिकारः, न तु तत्पुत्रस्य गोपीमोहनदासस्य। एवं यद्यप्युपस्थापितगौरकिशोररायकर्तृकसंसारत्यागस्य वैराग्यधर्माश्रयणवृत्तान्तस्य च सत्यत्वेन मन्यमानत्वेऽपि राजेश्वरीगर्भजातस्य गोपीमोहनदासस्य गौरकिशोररायौरसस्य तत्कृतोपरिलिखितदानविषयीभूतस्थावरास्थावरातिरिक्ततत्स्वत्वास्पदीभूतस्थावरास्थावरवस्तुषु तत्स्वत्वोपरमेऽधिकारः। यदि च उपरिलिखितं दानं सोपाधिकं स्यात्तदा तदुपाधिनिश्चयं विना सोपाधिदानकृतस्थावरास्थावरवस्तुषु राजेश्वरीदास्यास्तत्पुत्रस्य गोपीमोहनदासस्य वा अधिकारो भवति न वेति निश्चयो भवितुं न शक्नोति।

अत्र प्रमाणम्—

स्वभागान् यदि दद्युस्ते विक्रीणीयुरथापि वा।
कुर्य्युर्यथेष्टं तत्सर्वमीशास्ते स्वधनस्य वै॥ इति दायभागादि-(दाभा० पृ० ३५, २।२१) अन्यधृतनारदवचनम् (नारसृसं० पृ० १५७, १४।४२)॥ १॥

उत्पत्त्यैवार्थस्वामित्वं लभेत इति आचार्या इति गौतमवचनम्। (गौध० १०।४८)। *तदपि पितृस्वत्वोपरमेऽन्जजलस्य स्वामित्वहेतुत्वेनोत्पत्तिमात्रसम्बन्धेनान्यसम्बन्धाधिकेन* जनकधने पुत्राणां स्वामित्वापादनं

---

१. ०भूत०—व्यप०।
२. मोपी०—व्यप०।
३. ०दानं—व्यप०
४. स्वानंशान्—नारसृसं०।
५. सर्वमीशते—नारसृसं०।
६. ते—नारसृसं०।
७. ०र्थ स्वामित्वान्लभ०—व्यप०।
८. ०त्वादनम्०—व्यप०।
९. ०जलहेतुत्वेनोत्पत्ति०—व्यप०।

पुत्रो लभेत, नान्यः सम्बन्धीत्याचार्या मन्यन्ते इत्यर्थकम्—इतिदायतत्त्वलिखनम् (पृ० २) ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

अधुना सहोदरभ्रातॄणां मध्ये द्वयोर्भ्रात्रोरनपत्ये ई स्त्रियौ विद्यमाने स्याताम्, तयोः स्वस्वपतित्यक्तोक्तभ्रातृसाधारण समुदायधनान्तर्गतस्वस्वपतिभोग्यांशेऽधिकार—इति वङ्गदेशचलितदायभागदायतत्त्वविवादभङ्गार्णवविवादार्णवसेतुप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव 'पितरौ भ्रातरस्तथा—इत्यादि' दायभागादि(दाभा० पृ० १५१, ११।१।४)ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् (२, १३५) ॥ १ ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

श्रीर्जयतितराम् — श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथशर्म्मणः — श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

४२—रोवकारि मिसिले आदालत नेजामत इङ्गरेजी १८२७ शाल तारिख १ मेइ मताबक १९ माह बैशाख सन १२३४ शाल रोज मङ्गलवार आदालत मजकुरार द्वितीय हाकिम श्रीयुत धुर्टनी इशमिट साहेबेर बैठके—

शङ्करदास— शायेल।

शायेल हाजिर हइलो। हाल सनेर २९ मार्च्च मासेर लिखित आजिमाबादेर कोर्ट सरकोटेर एक केता रिटरन ताहार सम्बलितेर रोवकारि ओ मकद्दमार कागजात समेत पहुँछिया ए आदालते दाखिल हओया सओयाल आदि सहित अय पडागेल। हुकुम हइलो ये ए आदालतेर पण्डितदिगेर स्थाने सओयाल कराजाय ये यद्यपि मन्यत हओया जाय ये शङ्करदासपटन

ओयार सायेल ४४ टाका नगद किम्बा ५० टाकार एक केता तमस्सुक रामचरनपटनओयार स्थाने लिखाइया, लइया आपन स्त्री मसम्मति रघुवंशीयाके ऐ रामचरण स्थाने समर्पन करिया थाके, ओ रामचरण ऐ, स्त्रीके आपन स्त्रीत्व व्यवहारे आनियाथाके ओ स्वयं ऐ स्त्री आपन आशल पतिर दौरात्म्येर एजहारे रामचरणपटनओयारेर निकट थाकिते सम्मत थाके। ए प्रकारे शङ्करदास शायेलेर निमित्ते स्वामित्व स्वत्व बाकि रहियाछे कि ना। आर ऐ स्त्री ऐ रामचरणेर निकटे रहिबेक, किम्बा आशल पति तलब करण प्रकारे, सम्मत किम्बा असम्मत हय, पुनराय आशल पतिर निकट जाइबेक। उचित ये फौजदारिर कागजातेर मजमुन विवेचना करिया ए विषयेर जवाब पश्चिम देशेर शास्त्रानुसारे शनिवार पर्य्यन्त दाखिल करेन। तत्कालीन उचित हुकुम देया जाइबेक इति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

जंगानव्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतकुर्टनीइस्रामिटसाहेबधर्म्माधिकरणलिखितविचारणान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपनमेवं तत्समर्पितफौजदारिसम्बन्धधर्म्माधिकरणीयपत्राणि चावलोक्य विविच्य च याहृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तर लिख्यते—

यद्यर्थिशङ्करदासपटनओयारेण चतुश्चत्वारिंशद्राजतमुद्रा किं वा[1] पञ्चाशद्राजतमुद्राणामेकमृणलेख्य[2] रामचरणपटनओयारसकाशाल्लेखयित्वा गृहीत्वा स्वस्त्री रघुवंशीयानाम्नी तद्रामचरणस्याने समर्पितेति मन्यमान स्याद्, एव रामचरणपटनओयारो रघुवशीयया सह स्वस्त्रीवद्

१ °रणोर-व्यप०।
२ किम्बा—व्यप०।
३ °कं मरण०—व्यप०।

व्यवहारं कृतवान् स्याद्, अथ च सा स्त्री स्वकीयपाणिग्राहकपतिदौरात्म्योप-
स्थापनेन रामचरणपटनओयारस्य सन्निधौ स्थातुं सम्मता स्यादेतादृश-
प्रकारे सत्यर्थिनः शङ्करदासस्य पतित्वप्रयुक्तस्वत्वमस्त्येव; एवं सा स्त्री
स्वपतिकृताह्वाने[1] सति तत्सन्निधौ स्थातुमसम्मता सम्मता वा पुनः स्व-
कीयपाणिग्राहकपतिसन्निधौ गन्तुं योग्या भवति, यतः प्रभुसमर्पितफौजदारी-
संज्ञकधर्म्माधिकरणीयपत्रजातविवेचनया अर्थिशङ्करदासकर्तृकस्वस्त्रीविक्र-
य(य)स्य दानस्य वानवगमात्, प्रत्युत रक्तगोपालनामकसाक्ष्युपस्थापितवृत्ता-
न्तेनोपरिलिखितऋणलेख्यञ्च अर्थिशङ्करदासकर्तृकस्वीकाराभावावगमात्।
एवं रघुवंशीयोपस्थापितवृत्तान्तेन तस्या रामचरणपटनओयारस्थानस्थितौ
पतिदौरात्म्यमात्रस्यैव प्रयोजकत्वावगमात्, अथ च रामचरणपटनओयारोप-
स्थापितवृत्तान्तेन तस्याः पतिभगिनीपतित्वसम्बन्धेन तत्सन्निधानस्थित्यव-
गमाच्च। एवं रामचरणपटनओयारसंज्ञकप्रत्यर्थिनिर्दिष्टसाक्ष्युपस्थापित-
वृत्तान्तेनार्थिशङ्करदासकर्तृकरामचरणसकाशात् चतुश्चत्वारिंशद्राजत-
मुद्राग्रहणपूर्व्वकमेताश्चतुश्चत्वारिंशद्राजतमुद्रा मया गृहीता इयं रघुवंशीया-
नाम्नी स्त्री त्यक्तेत्यर्थकलेख्यदानं प्रतीयते। परन्तु तल्लेख्यस्य प्रभु-
समर्पितपत्रेष्वदर्शनेन मुद्राग्रहणस्यापि सन्देहः। यद्यपि मुद्रा गृहीतास्तदा
तत्पत्रजातनिविष्टऋणलेख्यस्य किमावश्यकत्वमिति। यदि च प्रत्यर्थिराम-
चरणनिर्दिष्टसाक्ष्युपस्थापितवृत्तान्तस्यैव सत्यत्वेन स्वीकारस्तथाप्येतादृश-
दारविक्रयस्य[3] शास्त्रानुसारेण व्यवहारानुसारेण च सिद्धिर्भवितुं नार्हति।
अथ च यदि कश्चित् शास्त्रव्यवहारविरुद्धं कर्म्म करोति तं दण्डयित्वा तथा
तत्कार्य्यमवश्यं परावर्त्तनीयम्। तस्माद्रामचरणसकाशात् गृहीता
रघुवंशीयानाम्नी स्त्री अर्थिना शङ्करदासेन स्वभर्त्रा यत्नतो भरणीया—इति
पश्चिमदेशचलितमनुमिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारमयूखस्मृतिचन्द्रिकादिग्र-
न्थानुसारिणी व्यवस्था—

---

१ °ह्वाने°—व्यप०।
२ °लेख्य—व्यप०।
३ °दारवि°—व्यप०।

अत्र प्रमाणम्—

निःक्षेपः पुत्रदाराश्च[1] सर्व्वस्वं चान्वये[2] सति ।
आपत्स्वपि हि कष्टासु वर्त्तमानेन देहिना ॥

अदेयान्याहुराचार्य्या यच्चान्यस्मै प्रतिश्रुतम्—इति मिताक्षरा(पृ० २४४)वीरमित्रोदयस्मृतिचन्द्रिका(पृ० १६१)व्यवहारमयूखादिग्रन्थलिखित-नारदवचनम् (नामसं०, पृ० ८६ ५।४,५) । १ ।

गृह्णा[3]त्यदत्तं यो[4] मोहाद् यश्चा[5]देयं प्रयच्छति ।
दण्ड[6]नीयावुभावेतौ धर्म्मज्ञेन महीक्षिता—इति (मिता० पृ० २४६; २।१७६,)वीरमित्रोदय(वीमि० पृ० ३६३)स्मृतिचन्द्रिकादिग्रन्थ-(.स्मृच० पृ० १६४)धृतनारदवचनम् (नामसं० पृ० ६१, ५।११; नास्मृपृ० १४०, ७।१२) । २ ।

अदत्तादेयग्रहणाद् गृहीतस्य परावर्त्तनमपि कार्य्यमिति गम्यते—इति वीरमित्रोदय(पृ० ३६४)ग्रन्थलिखनम्[7] ॥ ३ ॥

रक्षेत् कन्यां पिता विन्नां पतिः पुत्रास्तु[8] वार्द्धके ।
अभावे ज्ञातयस्तेषां न स्वातन्त्र्यं क्वचित् स्त्रियाः ॥

इति मिताक्षरा(पृ० २५)वीरमित्रोदयादि(वीमि० पृ० १५०)ग्रन्थलिखितयाज्ञवल्क्यवचनम् (१,८५) ४ ।

पिता रक्षति कौमारे भर्त्ता रक्षति यौवने ।
रक्षन्ति स्थाविरे पुत्र न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति ॥

इति मिताक्षरादि[9]ग्रन्थधृतमनुवचनञ्चेति (मस्मृ० पृ० ३४६) ५ ।

श्रीर्ज्जयतितराम्	श्रीहरिःशरणम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण	श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

---

१ निक्षेप पुत्रदार च—नास्मृ स० । २ सर्व्वस्व चात्र०—व्यमृ० ।
३ गृह्णत्य०—व्यम० । ४ लोभाद्—मिता० ।
५ ०यश्चा—नास्मृ० स०, यच्चादेय०—व्यम० ।
६ अदेयदायको दण्ड्यस्तथादत्तप्रतीक्षक—नास्मृ०, तथादेयस्य दायक—नमसं० ।
७ गृहीतस्यपरावर्तनमपि महीक्षिता कार्यम्—स्मृतिचन्द्रिकायाम् ।
८ पुत्राश्च—याज्ञ स्मृ० ।
९ मिताक्षरायान्तु-क्वचिदपि स्त्रीणां नैव स्वातन्त्र्यम्-इति लभ्यते ।

४३—आदालत आपिल एलाके अजिमाबाद—

शदर देओयानी आदालतेर पण्डितदिगेर स्थाने सओयाल-

जवाव—यद्यपि एक व्यक्ति गयाओयाल ब्राह्मण आपन सहोदरा भगीनि ओ ताहार पतिर नामे वाटीर दानपत्र, ये ताहार नकल पाठान याइतेछे, एइ प्रकार करियाथाके ये आपन जीवदशा पर्य्यन्त ऐ वाटीते थाकिया आमार मृत्युर परे उहारा आमार क्रिया कर्म्म करिबेक, ओ सहोदरा भगिनी, ओ ताहार पति दातार पूर्व्वे मरियाछे, ओ ताहार परे दाता- मरियाछे, ए प्रकारे शास्त्रानुसारे ऐ जायगा सहोदरा भगिनी ओ ताहार पतिर उत्तराधिकारिदिगेके अर्शाविक, किम्वा दातार उत्तराधिकारिदिगेके इति। शन १८२७ इङ्गरेजि तारिख ५ माहे मार्च्च मतावक २२ माहे फाल्गुण सन १२३४ फशली लेखा गेल—

रोवकारि मिशील आदालते दे(ओ)यानी सदर इंरेजी सन १८२७ साल तारिख १५ मेइ मतावक—

लच्छिराम—	आपीलाण्ट—
मशम्मात आनन्दियाइ—	रष्पाइण्ट—

शन हालेर ५ मार्च मासेर लिखित अजिमावादेर प्रवनशन कोर्टेर एक केता सार्टीफिकट ताहार सामिलेर रोवकारि आदि सहित पहुंछिया अद्य दृष्टि आइल। हुकुम हइल ये पण्डितदिगेर स्थाने जवाव शनिवार पर्य्यन्त दाखिल कराइया दृष्टि करा जावे इति।

इंरेजी शन १८२७ शालेर २६ मेइ व्यवस्था दाखिल हइया पाटन पाठानेर हुकुम सारद हइल—

श्रीजयतितराम्

जवावव्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतकुर्टनीदशमिटसाहेवधर्म्माधिकर-
णलिखितसर्वविंशत्यधिकाष्टादशशताब्दीयमेइमासीयपञ्चदशदिवसीयविचार-

पत्रलिखिताज्ञानुसारेण तत्समर्पितपाटलिपुत्राख्यनगरसम्बन्धिकोर्टपौला-ख्यधर्माधिकरणीयविचारपत्रादिनिविष्टप्रश्नपत्रमेवं दानपत्रप्रतिरूपपत्रञ्चाव-लोक्य विविच्य च यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥

यथैकः कश्चिद् गयावालब्राह्मणः स्वकीयसहोदरभगिनीनामकमेवं तत्पतिनामकञ्च यात्या दानपत्रमेतत्प्रकारेण लिखितवान्[1]—स्वजीवन-पर्य्यन्तं तस्यां वाट्यामहं स्थास्यामि[2]; अस्मन्निधनानन्तरं तावस्मत्क्रियाः करिष्यतः,एवं दातरि विद्यमाने सति तौ जायापती मृतौ स्यातामेवं तदनन्तरं दाता मृतश्चेत् एतत्प्रकारे सति उपरिलिखितदानपत्रलिखितरीत्या शास्त्रा-नुसारेण सा वाटी दातुः सहोदरभगिन्यास्तत्पत्युश्चोत्तराधिकारिणामेव भवति, न तु दातुरुत्तराधिकारिणाम्; यतो दानपत्रे श्रीविष्णुपदे सहोदर-भगिनीतत्पत्युभयसम्प्रदानकं कुशोदकग्रहणपूर्व्वकसङ्कल्पकरणपूर्व्वक-वाट्यादिसर्व्वस्वत्यागात्मकधर्म्मार्थदानं मया कृतमिति दात्रा लिखितम्। एतादृशवैधदानेन तदनन्तरकाल एव दातुः स्वत्वनिवृत्तिः, ग्रहीतुः स्वत्वो-त्पत्तिश्च भवति। एवं दात्रा सम्प्रदानभूतयोस्तयोर्जायापत्योः ससन्तानयोः स्वायत्तीभूतग्रहादिनिष्ठायत्तत्वसम्पादनमपि कृतमित्यपि लिखितम्। अन्य च दानादिना मद्दे[3] तद्गृहे तौ सम्प्रदानभूतौ जायापती दानपत्रानुसारेण तिष्ठतामायत्तत्वञ्च कुरुताम्, अस्मत्स्वत्वमद्यावधि किञ्चिदपि नास्तीति-दानपत्रलिखनेन दातुः स्वत्वविनाशस्य सम्प्रदानभूतयोस्तयोः स्वत्वस्य च दृढीभूतत्वेनावगमात्। अतएव दानकृतवाट्यां यावज्जीवं दातुः स्थितेः सम्प्रदानकर्तृकदातुः श्राद्धाद्यौर्द्ध्वदैहिकक्रियाकरणभावस्य च सम्प्रदान-स्वत्वोत्पत्तिप्रतिब(न्ध)कोपाधित्वं न सम्भवति, उपरिलिखितप्रकारैर्दानस्य वैधत्वेन धर्म्मप्रयोजनकत्वेन भोगद्वारा पूर्णतया सम्पन्नत्वेन चाऽप्रोपाधित्वा-भावात्—इति पाटलिपुत्रप्रदेशप्रचलितमनुमिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहार-मयूखादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

---

[1] लिखितवान—व्यप०।
[2] °स्याम्यसन्निध°—व्यप०।
[3] मध्ये—व्यप०।

अत्र प्रमाणम्—

देशे काल[1]उपायेन द्रव्यं श्रद्धासमन्वितम् ।
पात्रे प्रदीयते यत्तत् सकलं धर्म्मलक्षणम्—इति मिताक्षरादिग्रन्थ-
(मिताष्ट० ३)धृतयाज्ञवल्क्यवचनम् (१।६) ॥ १ ॥

प्रदीयते यथा न प्रत्यावर्त्तते तथा परस्वत्वावसानं त्यज्यते ।
एतद्धर्म्मस्योत्पादकम्—इति मिताक्षरालिखनम् (पृ० ३) ॥ २ ॥

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनम् (५।१५२) ॥ ३ ॥

स्वामी रिक्थक्रयसंविभागपरिग्रहाधिगमेषु (गौध० १०।३८) ।
ब्राह्मणस्याधिकं लब्धम्—(गौध० १०।३९) ।
क्षत्रियस्य विजितम् (गौध० १०।४०) ।
निर्व्विष्टं वैश्यशूद्रयोः (गौध० १०।४१) इति मिताक्षरा (पृ० १३५)
वीरमित्रोदयव्यवहारमयूखा(व्यम०८८ उत्त०)दिग्रन्थधृतगौतमवचनम् ॥४॥

तत्र च हिरण्यवत्तादावुदकदानानन्तरमेवोपादानादिसम्भवात्—
इत्यादिमिताक्षरालिखनम् (पृ० २४१) ॥ ५ ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्　　　　　　श्रीहरिःशरणम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण　　　　श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

४४—रोवकारि मिसिल आदालत देओयानि सदर इङ्गरेजि १८२७ शाल तारिख १४ माहे जुन मताबक बाङ्गला १२३४ शाल १ आषाढ़ रोज वृहस्पतिवार आदालत मजकुरार द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्टनी इशमिट साहेबेर वैठके—

राममोहनघोष ··वनामे ··रामधनराय···ओ गयरह ······ शायेलेर उकिल मुनशी गोलाम वतुल हाजिर हइल । सन हालेर ३१ मेइ मासेर हओया रोवकारिर लिखित पञ्चम हाकिमेर हुकुमानुसारे खास आपीलेर सओयाल ओ गयरह, तत्सम्पर्कीय

[1] काले—व्यम० ।

कागजात आमार बैठके उपस्थित हइया दृष्टे आइल। उभयेर एक बारे जाना जाइतेछे ये विरोधि लाट अर्थात् लाट परला वर्द्धमानेर काछारि मोकामे रासयात्रा दिवस निलाम हइया छे। मुद्दैदिगेर एजहार एइ रूप जाना याइतेछे ये आमरा रासयात्रार दिवस वाकि टाका जमिदारेर आमलाल निकट निया-छिलाम, जमिदारेर आमला रासयात्रार दिवस हओनेर ओ-जरे से दिवस वाकीर टाका लओनेर स्वीकार ना करिया जवाब दिलेक ये कल्य आइस, लओया जाइवेक, ओ आमरा गेले परे यात्रार दिवस हओनेओ महालेर द्वितीय बन्दवस्त कर्लेक, आर इङ्गरेजि ८१९ सालेर अष्टम आइनेर द्वादश धाराते हुकुम आछे-निलाम, अर्थात् द्वितीय वन्दवस्त, ये एइ आयन निर्दिष्ट ह-ओयार पूर्व्व हइया थाके, तत्सम्पर्केओ ये डाँडा ये ऐ आइनेर एकादश धाराते लेखाआछे, निलाम-अर्थात् द्वितीय बन्दवस्त, पूर्व्व प्रसिद्ध ओ विना शठताय ओ देश व्यवस्थार मत हओन नियमेओ वर्त्तिवेक। यथा सन्देह हइतेछे ये शास्त्रानुसारे एइ प्रकार कार्य रासयात्रार दिवस सिद्ध ना हय, विशेषतो रास-यात्रार दिवस कहिया वाकीर टाका लओने अस्वीकार हइया, आगत कल्य ताहा लओनेर करार करिया, वाकिदारदिगेक विदाय दिया, परे सेइ दिवस रासयात्रार दिवस हओनेओ वाकि दाविर हेतुते महालेर द्वितीय बन्दबस्त ये वाकिदार-दिगेर असाक्षाते करायाय सिद्ध रहिवेक ना। एइ प्रयुक्त ए विषये बङ्गदेशेर शास्त्रेर जिज्ञासा करण आवश्यक हइलो। ए कारण हुकुम हइलो ये आदालतेर पण्डितेरा बङ्गदेशेर शास्त्रा-नुसारे परस्व दुइ प्रहर पर्य्यन्त ए विषयेर जवाब लिखिया गुजराएन ये मुद्दैदिगेर एजहार सत्य ओ रासयात्रार दिवस निलाम हओन सत्वेओ ए प्रकार कार्य्य यथार्थ ओ सिद्ध हइते पारे कि ना, ओ पण्डितदिगेर जवाब दाखिल हइले परे उचित हुकुम देओया जाइवेक इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

जवाबव्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतकुर्टनीदशमिटसाहेबधर्म्माधिकरणलिखितविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यद्यर्थिवृत्तान्तस्य सत्यत्वं स्यात्तदैतादृशकार्य्यस्य छलकृतत्वेन, अथ चार्थिनोऽवशिष्टकरदानानुकूलव्यापारे सत्यपि सराजकरभूस्वाम्यधिकृतैस्तत्करमगृहीत्वा करदानानुरूपोपाधिसम्बन्धेन[1] भूस्वामिकृतदाननिमित्तमर्थिनां भोगोपयुक्तं स्वत्वं यत्र तस्य प्रयासान्तरकरणेन निष्पन्नत्वाच्च सिद्धिर्भवितुं[2] नार्हति; यतः सराजकरभूस्वामिसकाशात् करदानरूपोपाधिसम्बन्धेन[3] तत्कृतदानात् प्रजादीनां भोगोपयुक्तं स्वत्वमुत्पद्यते। तत्स्वत्वञ्च करदानरूपोपाधिसम्बन्धेन[4] तिष्ठति, तदभावे गच्छति। प्रकृते त्वर्थ्युपस्थापितवृत्तान्तेन अधिकर्तृकरदानाभावानवगमात् सुतरां करदानरूपोपाधिसम्बन्धेन भूस्वामिनो दाननिमित्तमर्थिनां भोगोपयुक्तं स्वत्वं गन्तुं न शक्नोति। अथ च भाषायां निलामशब्दवाच्यस्य द्वितीयबन्दबस्तशब्देन प्रसिद्धस्य द्वितीयप्रयासस्य राजग्राह्यदिवसीयत्वेन[5] सिद्धिर्भवति न वेत्यस्येदानीं वङ्गदेशप्रचलितग्रन्थेष्वलिखनात्—इति वङ्गदेशप्रचलितमनुविवादमञ्जार्य्यादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था।

अत्र प्रमाणम्—

योगाधमनविक्रीतं योगदानप्रतिग्रहम्।
यत्र वाप्युपधिं पश्येत् तत्सर्व्वं विनिवर्त्तयेत्[6]॥

—इति मनुवचनम् (८।१६५)॥ १॥

---

१. सम्बन्देन—व्यव०। २. सिद्धि०—व्यव०।
३. ष्वन्देन—व्यव० ४. ०न निति०—व्यव०।
५. दिवसीयत्वेन—व्यव०। ६. निविर्त्तयेत—व्यव०।

ताभिश्च वर्षो(र्ष)युक्तकरदानेन वर्षोपयुक्तस्वत्वमर्ज्यते। तद्वर्षे च राज्ञा तद्भूमेरन्यत्र दानविक्रयणादिकरणं न सिद्ध्यति। यदि तु प्रतिवर्षं भुज्यतां त्वया—इत्यादि प्रतिज्ञाभ्वत्तदा तु यावद्वर्षेष्वेव स्वत्वानुमतेः कदापि दानविक्रयादिकं न कर्त्तव्यम्। यदि तु प्रजा करं न ददाति तदा सोपाधिदानमुपाध्यसिद्धावसिद्धमिति अन्यत्र दातुं शक्नोतीति—इति विवादभङ्गार्णवलिखितम् (१ विवाभ० पृ०३०८ क, ख) ॥ २ ॥

करदानरूपोपाधिसम्बन्धेन राज्ञो दाननिमित्तमेव प्रजानां स्वामित्वं[1] जायते। अन्यत्र गमने च करदानाभावे उपाध्यसिद्ध्या दानासिद्धिः। न च राजसम्बन्धतुल्यसम्बन्धापत्तिरिति वाच्यम्, राज्ञस्तथाविधेच्छाभावात्। तथाहि-एतस्यां मम भूमौ मत्स्वत्वे विद्यमान एव निकृष्टं भोगोपयुक्तं तव स्वत्वं भवतु-इति राज्ञस्तुष्टया तादृशमेव स्वत्वं जायते-इति (१ विवाभ० पृ० ३१० क) विवादभङ्गार्णवलिखनञ्चेति ॥ ३ ॥

श्रीर्ज्जयतितराम् श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

४५—सदर देओयानी आदालतेर द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्टेनी इरामिट साहेबेर हजुर हइते आदालत मजकुरार पण्डितदिगेर नामे इङ्गरेजी १८२७ शालेर ३ जुलाइ मासेर रोयकारि लिखित छन्दासिंह आपिलाण्ट मशम्मात दुर्गाकुमार रेस्पाण्डण्टेर मकद्दमाते वृहस्पतिवार दिवा दुइ प्रहरेर मध्ये वचन ओ ग्रन्थेर वेओरा सम्वलित जवाव दाखिल करणेर हुकुमे सओयालसकल, ये एइ—

प्रथम सओयाल—

पाटना सहर निवासी एक व्यक्ति हिन्दु आपन तिन स्त्री ओ चारि कन्या थाकिते आपन धन आपन तिन स्त्रीर मध्ये एक

[1] स्वामित्व—व्यप०।

स्त्रीर भ्रातार ओ तिन स्त्रीर मध्ये द्वितीय स्त्रीर गर्भज कन्यार पतिके फशली १२१६ शालेर ४ माघ तारिखें लिखिया दिया फशलि १२१८ शालेर २ वैशाख तारिखे ऐ तिन स्त्री ओ चारि कन्याके राखिया मरियाछे। तद्देशेर शास्त्रानुसारे हेवानामा सिद्धि हइते पारे कि ना इति।

द्वितीय सओयाल—

ऐ व्यक्ति ओ ताहार तिन स्त्रीर मध्ये दुइ स्त्री मरणेर परे तृतीय स्त्रीर तिन कन्यार मध्ये[1] एक कन्या आपन दुइ भगिनीर विन सराकते, आपन मातार विद्यमाने, आपन[2] भ्रातार पत्नीदिगेर मध्ये एक जन निःसन्तान मरण हेतुते ऐ दाता व्यक्तिर त्यक्त धनेर अर्द्धेकेर दाओया करिलेक। ऐ दान मिथ्या हओन प्रकारे मृत कर्त्ता व्यक्तिर कन्यार पक्ष हइते ए प्रकार दाओया, ये मुद्दइयार मातार सम्मति क्रमे हइयाछे, सिद्ध हइते पारे कि ना इति।

तृतीय सओयाल—

ऐ दानेर सिद्धताते मुद्दाइयार माता प्रभृति ऐ मृत व्यक्तिर स्त्रीरदिगेर एक वार यद्यपि ऐ कन्यार दाओयार पूर्व्वं संघटन हइयाथाके कन्यार दाओयार निषेधि बोधक बटे कि ना इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

जबाबव्यवस्था

एतदर्म्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतकुर्टनीइगामिटसाहेबधर्म्माधिकरणलिखितप्रश्नप्रतिरूपपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

1. मध्ये मध्ये०—ब्यप०।
2. आपन मातार पत्नी०—ब्यप०।

यद्येकः कश्चित् पाटलिपुत्राख्यनगरनिवासी हिन्दुजातीयो व्यक्ति-विशेषः स्वकीयानां तिसृणां स्त्रीणामेवं चतसृणां कन्यकानां विद्यमानानां मध्ये तिसृणां स्त्रीणां मध्ये एकस्याः स्त्रिया भ्रात्रे द्वितीयस्याः कस्याश्चिज्जामात्रे स्वस्वत्वास्पदीभूतधनस्य[1] दानपत्रं लिखित्वा दत्त्वोपरिलिखितास्तिस्रः[2] स्त्रियश्चतस्रः कन्यकाश्च संरक्ष्य मृतश्चेत्तदा तद्दानपत्रं यदि तिसृणां स्त्री(णा)मन्नाच्छादनोपयुक्तं द्रव्यमेवं चतसृणां कन्यकानां मध्ये या न विवाहितास्तासां विवाहकालपर्य्यन्तमन्नाच्छादनोपयुक्तं द्रव्यमथ च विवाहोपयुक्तं द्रव्यं विनाऽवशिष्टधनस्य चेत्तदा तद्दानपत्रलिखितदत्तधनस्य दानमेतत्प्रकाराभावे चोपरिलिखितान्नाच्छादनाद्युपयुक्तद्रव्यं विनाऽवशिष्टधनस्य दानञ्च सिद्धं भवितुं शक्नोतीति—

अत्र प्रमाणम्—

स्वं कुटुम्बाविरोधेन[3] *देयम्*—इत्यादि मिताक्षरा(पृ० २४४)वीरमित्रोदय(पृ० ६५१)व्यवहारमयूखव्यवहारकौस्तुभादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् (२।७५) ॥ १ ॥

स्वमात्मीयं कुटुम्बाविरोधेन (कुटुम्बानुपरोधेन) कुटुम्बभरणावशिष्टमिति यावत्तद्द्यात् तद्भरणस्यावश्यकत्वात् । तथा च[4] *मनुः-वृद्धौ च मातापितरौ साध्वी भार्य्या सुतः शिशुः (८।२५)*—इति मिताक्षराग्रन्थलिखनम् (पृ० २४४)।

देयस्वरूपमाह नारदः[5] (नामसंपृ० ८९, ४।६)

द्रव्यं कुटुम्बभरणाद्[6] *यत्किञ्चिदतिरिच्यते ।*
तद्[7] *देयमुपहत्यान्यद् ददद्दोषमवाप्नुयात्*[8]—इति ।

---

१. स्वत्वस्त०—व्यव० । २. °तिस्रः स्त्रियश्च०—व्यव० ।
३. कुटुम्बविरोधेन—व्यव० । ४. यथाह०—मिता० ।
५. [illegible] एव—व्यव० । ६. भरणात्०—व्यव० ।
७. उपहत्यान्यात्तद्दो०—व्यव० । उपहत्यान्यं०—स्मृ० ।
८. ददद्दोषः समाप्नु०—नारद० ।

अन्यद्[1] उपहृत्य भर्त्तव्यकुटुम्बमनवरुध्येत्यर्थः[2]। उपरोधश्च (निस्वतया) भोजनाच्छादनादि[3]राहित्यनिबन्धनतोऽत्राभिमतो[4], न ताम्बूलादिभोगसाधनवैकल्यनिबन्धनः—इत्यादि (वीमि० पृ० ३६४)स्मृतिचन्द्रिका (पृ०१६०) ग्रन्थलिखनम्। ३।

कन्याभ्यश्च पितृद्रव्याद्देयं[5] वैवाहिकं वसु—इति स्मृतिचन्द्रिका-(पृ० १६०) ग्रन्थलिखितदेवलवचनम्। ४।

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

तद्व्यक्तेस्तिसृणां तत्स्त्रीणां मध्ये द्वयोः स्त्रियोश्च मरणोत्तरं तृतीयस्याः स्त्रियाः कन्याः, आसां मध्ये एकस्याः कन्यकायाः स्वकीय भगिनीद्वय-साधारण्यं विना विद्यमानायां स्वमातरि सा परमातॄणां मध्ये एकस्याः निःसन्तानायाः मरणेन तस्या दातृव्यक्तेस्त्यंकथनाद्धेमासिस्तद्दानस्य मिथ्यात्वप्रकारे सत्यपि तन्मातृसम्मत्यापि[7] सिद्धं भवितुं[6] न शक्नोति, यतस्तस्याः पूर्व्वमधिकारिण्यां मातरि विद्यमानायां तस्याः स्वत्वमेव नोत्पद्यते इति—

अत्र प्रमाणम्—

अनपत्यस्य धनं पत्न्यभिगामि तदभावे दुहितृगामि—इत्यादि मिताक्षरादि(मिता०पृ०२१७)ग्रन्थधृतवृहद्विष्णुवचनम् (विस्मृ०१७।६-७)। १।

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

तद्दानं दातृव्यक्तेरुत्तराधिकारिणां स्वत्वोत्पत्तिप्रतिबन्धकं चेदर्थिन्या मातृप्रभृतीनामर्थान्मृतव्यक्तेः स्त्रीणां ततत्कन्याया धनप्राप्तीच्छायाः[8] पूर्व्वकालीनस्य स्वीकारस्य तद्दानसाधकत्वेन निर्द्दिष्टस्य तत्कन्याया-स्तद्धनप्राप्तिनिरोधकत्वं विना साधकत्वं नास्ति—इति पाटलिपुत्राख्य-

१. अन्यत्—स्मृच०। २. उपरुध्ये०—स्मृच०।
३. ०दनोच्छेदनी१०—स्मृच०। ४. अत्राभितो०—स्मृच०।
५. वीरमित्रोदय०—व्यप०। ६. वितरुप०—स्मृच०।
७. ०सम्मत्यपि—व्यप०। ८. ०च्छया—व्यप०।

नगरप्रभृतिचलितमिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारमयूखव्यवहारकौस्तुभादि-ग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

(स्व)स्वत्वनिवृत्तिः परस्वत्वापादनञ्च दानम्—इति सुबोधिनीलिखनम्[1] (पृ० ७४१)

श्रीर्जयतितराम् श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

४६—रोवकारि मिसिल · आदालत देओयानी सदर इंरेजि १८२७ शाल· तारिख २२ माहे जुलाइ मवाफक बाङ्गला १२३४ शाल २९ आषाढ रोज बृहस्पतिवार आदालत मजकुरार द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्टेनी इशमिट साहेबेर बैठके।

छन्दासिंह आपिलाण्ट

मसम्मात दुर्गाकोंव्वर रेस्पाण्डेण्ट

ए आदालतेर पण्डितेरा हाल मासेर ३ तारिखेर हुकुमानुसारे व्यवस्था लम्बरे दाखिल करिलेन। आपिलाण्टेर उकिल मुनशी महम्मद पनाह ओ लाला आउधलालेर हाजिरिते दृष्टे आइल। तत् पूर्व्वे मुनशी दादार वक्स ओ मौलवी गोलाम एजदानी उकिलेरा आपनादिगेर नामिक एक केता ओकालतनामा ओ ए आदालतेर नाएव तहविलदारेर दस्तखति आपनादिगेर मेहनतानार[2] बाबत मबलग २६६॥. आनार रशीद ओ हाल शनेर ९ जुन मासेर इलोया आजिमाबादेर कोर्टेर रोयकारिर नकल दुइ

---

१. मिताक्षरा प्रति—व्यप० ।   २. मेहनतानाव बावत०—व्यप० ।

टाका मूल्यकेहर वण्ड[1] द्वाराय रष्पाडएटेर पक्ष हइवे लम्बरे दाखिल करिलेक, पडागेल। तत्‌परे रष्पांडएटेर उकिलदिगेर स्थाने जिज्ञासा करागेल ये फयशला जारि महकुंफिर ,बावत तोमादिगेर मश्रोक्केलार श्रोजर कि। जवाव दिलेक ये श्रामार-दिगेर मश्रोकेलार श्रोजर एइ ये फयशला जारि हइयाछे, श्रो मश्रोकेलारा दखल पाइयाछे। हुकुम हइल ये ए श्रादालतेर परिडतदिगेर स्थाने चतुर्थ शश्रोयाल करा जाय। से, एइ ये सहर पटना निवासी एक व्यक्ति हिन्दु तिन स्त्री राखिया, ये ताहार मध्ये एक स्त्री निःसन्ताना, श्रो एक स्त्रीर तिन कन्या, श्रो एक स्त्रीर एक कन्या जन्मियाछे, मरियाछे। श्रो ताहार परे जे स्त्री निःसन्ताना छिल मरियाछे। धर्मशास्त्रानुसारे मृत स्त्रीर अंश कोन व्यक्तिके, श्रो ताहार दाश्रोया करयोर क्षमता कोन व्यक्तिके अर्शे। उचित् ये एइ सश्रोयालेर उत्तर[2] परस्व दुइ प्रहर पर्य्यन्त ग्रन्थ श्रो वचनेर वेश्रोरा सम्वलित दाखिल करेण। ताहार परे उचित हुकुम देश्रोया श्राइवेक इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

जवावव्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतकुर्डनीदरशगिरस्याहेवधर्म्माधिकरणलिखितविचारप्रश्नान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमवलोक्य यादृशमोबो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

यद्येकः कश्चित् पाटलिपुत्राख्यनगरनिवासी हिन्दुजातीयो व्यक्तिविशेषस्तिस्रः स्त्रिय एवं तासां तिसृणां स्त्रीणां मध्ये एकस्या एकां कन्यामेकस्यास्तिस्रः कन्यका एकां निःसन्तानाञ्च[3] संरक्ष्य मृतः, तदनन्तरं निःसन्ताना स्त्री मृता चेत्तदा मृतायास्तस्या निःसन्तानायाः स्त्रियाः पतिपक्षधनांशो

१ ०दण्ड—व्यपा०। २ दत्तार—व्यपा०।
३ एका निःसन्तानाश्च—व्यपा०।

जीवन्तीनां तत्सपत्नीनामेव भवति, एवं तत्पाशीच्छ्राकरणक्षमतापि तत्सपत्नीनामेव, यतोऽनपत्यपतिधनस्योत्तराधिकारित्वेन पत्नीसंक्रान्तत्वेऽपि तन्मरणोत्तरं तद्धनं तद्भर्त्तुरुत्तराधिकारिणामेव भवति। तत्र च भर्त्तुरुत्तराधिकारिणां मध्ये पुत्रपौत्रप्रपौत्राभावे पत्न्या एव प्राधान्यम्—इति पाटलिपुत्राख्यनगरप्रभृतिचलितमिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारमयूखव्यवहारकौस्तुभादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था।

अथ प्रमाणम्—

अपुत्रा शयनं भर्त्तुः पालयन्ती गुरौ स्थिता।

भुञ्जीतामरणात् क्षान्ता दायादा ऊर्द्ध्वमाप्नुयुः—इति वीरमित्रोदयादि-(वीमि० पृ० ६२७)ग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् (कास्मृ० ६२१)॥१॥

अनपत्यस्य धनं पत्न्यभिगामि तदभावे दुहितृगामि—इत्यादि मिताक्षरादिग्रन्थधृत (मिता० पृ० २१७)वृद्धविष्णुवचनम् ॥ २ ॥

पत्नी दुहितरश्चैव—इत्यादि तत्तद्ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् (२।१३५) ॥ ३ ॥

श्रीर्जयतितराम् श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

४७—सदर देवोयानी आदालतेर द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्टनी इश्मिट शाहेबेर हुजुर हइते राय बंशीधर बनामे मनोहर लाल ओ गयरहेर मकद्दमाते इङ्गरेजी १८२७ शालेर २४ जुलाइ मासेर रोवकारिर लिखित परस्व दुइ प्रहर पर्य्यन्त वचन ओ ग्रन्थेर बेओरा सम्वलित जवाब दाखिल करणेर हुकुमे आदालत मजकुरारार पण्डितदिगेर नामे सओयाल सकल, एइ ये—

प्रथम सओयाल—

बेहार जिला निवासी एक व्यक्ति हिन्दु कायेत जाति पित्-रन विभाग करणेर परे दुइ भ्रातष्पुत्र ओ चारि दौहित्र राखिया

मरियाछे। ऐ देशेर शास्त्रानुसारे ताहार त्यक्त धन ताहार भ्रातुष्पुत्रदिगके अर्शे कि ताहार दौहित्रदिगेके ?

द्वितीय सओयाल—

यद्यपि ऐ व्यक्ति पितृधन विना विभाग करिये मरितो ताहार त्यक्त धन कोन व्यक्तिके अर्शितो ?

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतकुर्टनीहरामिटसाहेबधर्म्माधिकरणलिखितप्रश्नप्रतिरूपमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि वेहाराख्यप्रदेशनिवासी कश्चिदेकः कायस्थजातिः पितृधनविभागकरणानन्तरं द्वौ भ्रातुष्पुत्रौ चतुरो दौहित्रांश्च[1] संत्यज्य मृतः स्यात्तदा तत्त्यक्तधने चतुर्णां दौहित्राणामधिकारो, यतो दौहित्रेषु विद्यमानेषु विभक्तधने भ्रातृपुत्राणां नाधिकार इति।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा।
तत्सुतः—इत्यादि मिताक्षरावीरमित्रोदयादि(वीमि० ६०२)धृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥ १ ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि तद्व्यक्तिविशेषः पितृधनविभागमकृत्वा मृतस्तदा पितृधने तद्योग्यांशो भ्रातृपुत्रयोरेव भवति, न तु दौहित्राणां विभक्तधन एव पत्नीदुहितृदौहित्राणामधिकारस्य मिताक्षरादिग्रन्थलिखितत्वात्, अविभक्तधने तेषामधिकारस्यालिखितत्वाच्च, वरं बालम्भट्टकृतमिताक्षराटीकायां[2] विभक्तधन एव दौहित्राधिकारस्याविभक्तधने तदधिकाराभावस्य च स्पष्टीकृतत्वाच्चेति

१. दौहित्रान्—व्यव० । २. बालम्भट्ट०—व्यव० । ३. स्पष्टी०—व्यव० ।

वेहाराख्यप्रदेशाचलितमिताक्षरावीरमित्रोदयबालम्भट्टकृतमिताक्षराटीकादि-ग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

एवं दौहित्रभ्रातृसुतसमवाये मृतस्य विभक्तत्वे दौहित्रस्य बलवत्त्वस्य अंशहरणे सत्त्वेऽपि पिण्डादौ स एव बलवान्, अविभक्तत्वे तु पितुः[1] भ्रातृसुतानामेवांशहरत्वादपि—इति व्यवहाराध्यायस्य मिताक्षराटीकायां (पृ० २०) बालम्भट्टलिखनम् ॥ १ ॥

श्रीर्जयतितराम्	श्रीहरिःशरणम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण	श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

४८—सदर देश्रोयानी आदालतेर द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्टनी इशमिट साहेबेर हुजुर हइते ये आदालतेर पण्डितदिगेर नामे स्वयं ओ आपन अप्राप्त-व्यवहार भ्राता आनन्दीलालेर ओयाली रामघुमन्लाल सायेलेर मकर्द्दमाते इङ्गरेजी १८२७ शालेर २९ आगष्ट मासेर रोवकारिर लिखित सायेलेर सओयाल ओ आजिमायादेर कोर्टेर फयशला ये ताहाते आदालतेर सओयाल ओ तथाकार राधाकृष्णपण्डितेर जवाव लिखा आछे एइ ओ सम्पूर्ण अनुमोदन परे वचन ओ ग्रन्थेर वेओरात परस्व पर्य्यन्त जवाव दाखिल करणेर हुकुमे सओयाल, एइ ये—

सओयाल—

राधाकृष्णपण्डितेर लिखिया देया आपिल आदालतेर सओयालेर जवाव मिताक्षरा पुथि मत प्रसिद्ध वटे कि ना, अर्थात् दुइ दाओयार मध्ये सायेलदिगेर मासी जितकोँरेर दाओया किम्बा मायेलदिगेर दाओया प्रसिद्ध वटे, अथवा दुइ दाओयाइ मिथ्या

---

[1] पितुरिति पाठो नास्ति बालम्भट्टकृतटीकायाम् ।

श्री पण्डितेर जवाब प्रसिद्ध।

राधाकृष्णपण्डितेर व्यवस्था, एइ ये—

पतिमरणानन्तरं तत्पत्नी तद्धनम्[(धनमु)]ष्य दुहितृर्विहाय[1] मृता। तत्रैका दुहितृमती, द्वितीया पुत्रवती, द्वेऽपि विधवे, तृतीयास्ति[2] यौवना समर्तृका अनपत्या। तर्हि तद्धने ताः समांशभागिन्यो भवितुमर्हन्ति, दौहित्री तु न तद्धनहारिण्यौ। पत्नी दुहितरश्चैव—इति मिताक्षराधृतयाज्ञवल्क्यवचनात् (२।१३५)।

अङ्गादङ्गात् सम्भवति पुत्रवद् दुहिता नृणाम्।

*तस्मात् पितृधनं त्वन्यः कथं गृह्णाति मानवः—*इति (मिता० पृ० २११) बृहस्पतिवचनात्, सदृशी सदृशोनोढा—इति वचनाच।

त्रिवेदिश्रीराधाकृष्णशर्म्मणाम्।

श्रीर्ज्जयतितराम्

सदर देवोयानी अदालतेर सओयालेर जवाब व्यवस्था—

एतद्धर्म्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतकुर्टनीहयामिटसाहेबधर्म्माधिकरणलिखितप्रश्नप्रतिरूपपत्रं तत्समर्पितार्थिनिवेदनपत्रं चैवं पाटलिपुत्राख्यनगरसम्बन्धिकोर्टापीलाख्यधर्म्माधिकरणीयद्वयपत्रं तदन्तर्गततद्धर्म्माधिकरणीयप्रश्नमेयं राधाकृष्णाख्यपण्डितलिखिततत्प्रश्नोत्तरं चावलोक्य विविच्य च यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

विवादास्पदीभूतं धनं यदि शानकोमराख्यायाः पतिमरणानन्तरं तदीयधनत्वेनोत्तराधिकारित्वेन तत्प्राप्तं स्यात्, अथ च तिस्र एव दुहितरो निर्धना[3], सर्व्वा एव वा सधनास्तदा राधाकृष्णाख्यपण्डितलिखितकोर्टआपीलाख्यधर्म्माधिकरणप्रश्नोत्तरं मिताक्षराग्रन्थसम्मतं[4] भवति। यदि च तिसृणां दुहितृणां मध्ये एका निर्धना द्वे वा[5] निद्धने तदा तत्पण्डितस्योत्तरं

१. दुहितृ०—व्य०।
२. तृतीया तृतीया०—व्य०।
३. निद्वना०—व्य०।
४. सर्म्म०—व्य०।
५. द्वे वा०—व्य०।

तद्ग्रन्थसम्मतं न भवति, मिताक्षरायां दुहितुः पितृधनाधिकारप्रकरणे अप्रतिष्ठितानामर्थान्निर्धनानां दुहितॄणामभाव एव प्रतिष्ठितानामर्थात् सधनानां दुहितॄणामधिकारविधानात्। एवं चैतत्पक्षे द्वयोर्द्धनप्राप्तीच्छयोर्मध्ये *अर्थिनो मातृष्वसुर्जीतकोमराख्यायास्तत्समस्तधनप्राप्तीच्छा* केवलं तस्या एव निर्धनत्वे, द्वयोर्निर्धनत्वे तद्धनार्द्धप्राप्तीच्छा, तिसृणां निर्धनत्वे तत्तृतीयांशप्राप्तीच्छैव तद्ग्रन्थसम्मता भवति। यदि च विवादास्पदीभूतं धनं ग्यानकोमराख्यायास्तदीयशुल्काभिन्नं स्त्रीधनं भवति, *अथ च तिसृणां मध्ये पुत्रवत्याः सधनत्वे जीतकोमराख्यायास्तद्धनार्द्धप्राप्तीच्छा* तद्ग्रन्थसम्मता भवति, मिताक्षरायां दुहितॄणां मातुस्तादृशस्त्रीधनाधिकारप्रकरणे प्रतिष्ठितानामर्थान्निर्द्धनानाम् अनपत्यानां वा दुहितॄणामभाव एव प्रतिष्ठितानामर्थात् सधनानां सापत्यानां वा दुहितॄणामधिकारविधानात्। एवं तिसृणां मध्ये द्वयोः पुत्रपौत्ररूपापत्यरहितत्वावगमात् पुत्रवत्या निर्द्धनत्वे, जीतकोमराख्यायास्तद्धनतृतीयांशप्राप्तीच्छैव तद्ग्रन्थसम्मता भवति, तत्प्रकरणे मिताक्षरायां निर्द्धनानपत्ययोर्द्विविधयोरेव दुहित्रोः प्रथममधिकारविधानात्। *अर्थिनां तद्धनप्राप्तीच्छा* चोपरिलिखितपक्षद्वय एव विद्यमानत्वात् तत्प्रभृतिषु तद्ग्रन्थसम्मता न भवतीति।

अत्रप्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव—इत्यादि मिताक्षराग्रन्थधृत(पृ० २१७)याज्ञवल्क्यवचनम् (२।१३५)॥ १॥

अप्रतिष्ठिताप्रतिष्ठितानां समवाये अप्रतिष्ठितैव तदभावे प्रतिष्ठिता—इति दुहितुः पितृधनाधिकारप्रकरणे मिताक्षराग्रन्थलिखनम् (पृ० २२१) ॥ २॥

अप्रतिष्ठिता निर्द्धना अनपत्या वा—इति मिताक्षराग्रन्थलिखनम् (पृ० २२१, खपुस्तके)॥ ३॥

प्रतिष्ठिताऽप्रतिष्ठितासमवायेऽप्रतिष्ठिता गृह्णाति, तदभावे प्रतिष्ठिता। यथा गौतमो मुनिः स्त्रीधनं दुहितॄणामप्रत्तानामप्रतिष्ठितानां चेति। तत्र शब्दात् तत्र प्रत्तानां प्रतिष्ठितानाञ्च। अप्रतिष्ठिता निर्द्धना अनपत्या

वा। एतच्च शुल्कव्यतिरेकेण—इत्यादि दुहितॄणां मातुः स्त्रीधनाधिकार-प्रकरणे मिताक्षराग्रन्थलिखनं चेति (पृ० २२६) ॥ ४ ॥

श्रीर्जयतितराम् — श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण — श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

सओयाल—

४९—सदर देओयानी आदालतेर द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्टनी इसमिट साहेवेर हुजुर[1] हइते ऐ आदालतेर पण्डितदिगेर नामे इङ्गरेजि १८२७ सालेर ११ शेवम्बर मासेर रोयकारि लिखित अभिमानवाय[2] सा(ग)लेर मकद्दमाते परस्व दुइ प्रहर पर्य्यन्त वारानशा देशेर शास्त्रानुसारे वचन ओ ग्रन्थेर वेओरा सम्वलित जवाव दाखिल करणेर हुकुमे सओयाल, एइ ये—

हिन्दु चारि व्यक्ति टीका लइया आपनादिगेर मिलकियतेर मौजा एक व्यक्ति हिन्दुर निकट वन्धक राखिलेक। ताहार परे वन्धक दाता चारि जनेर मध्ये एक जन चाहिलेक ये ऐ वन्धकेर वेबाक टाका दिया समस्त मौजार वन्धक छाडाय, ओ वन्धक ग्रहीता बाकि वन्धक दाता तिन जनेर असम्मति जानाइया एक जन वन्धक दातार स्थाने समुदाय वन्धकि टाका लओन ओ समस्त मौजार वन्धक हइते छाडन स्वीकार न करिया चाहिलेक ये ऐ एक व्यक्ति वन्धक दातार स्थाने वन्धक वावद चतुर्थ अंश टाका लइया ताहार अंश परिमाण अर्थात् वन्धकि मौजार चतुर्थ अंश छाडिया दिया बाकि वारय आना मौजार उपर पूर्व्व मत बाकि तिन जन वन्धक दातार पक्ष हइते वन्धक

---

१. हुजुर हते०—व्य० २. अभिमानवाव—इति प्राचीनतर पाठः।
३. •येक बन्ध करे—व्य०।

छाडान पर्य्यन्त दाखिलकार थाके। अतएव जिज्ञासा जाइते छे। यद्यपि यथार्थइ वाकि तिन जन वन्धक दाता आपन २ हिस्यार वन्धक चतुर्थ वन्धक दातार पक्ष हइते छाडानेते सम्मत ना थाके, ताहारदिगेर असम्मति वाकी वारय आना हिस्यार वन्धक छाडानेते निषेधि वटे, किम्वा चतुर्थ वन्धक दाताके वर्त्ते, ये निजे समस्त वन्धकि टाका आदाय करिया आपन हिस्यार उपर अधिकार प्रकारे ओ वाकि तिन जन वन्धक दातार हिस्यार उपर वन्धक ग्रहीता प्रकारे दखल पान इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतकुर्टनीइशमिटसाहेवधर्म्माधिकरणे लिखितप्रश्नप्रतिरूपपत्रमवलोक्य यादृशावोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

प्रश्नार्थेन प्रश्नपत्रलिखिताशेष[1]शासाक चतुर्विधाध्यन्तर्गताकृतकालात्मक-भोग्याधित्वनिश्चयात्, तत्र यदि चतुर्भिर्हिन्दुजातीयैर्मुद्रा[2] गृहीत्वा स्वस्व-स्वास्पदीभूतग्राम एकस्य कस्यचित् हिन्दुजातीयस्य निकटे वन्धकीकृतः, तदनन्तरं वन्धकदातॄणां चतुर्णां मध्ये एकः कश्चिद् वन्धकग्रामस्य समस्तमुद्रा दत्त्वा सम्पूर्णग्रामो वन्धकात् मोक्तव्य इतीच्छति, तत्र यदि वन्धकीभूतग्रामश्चतुर्णां साधारणश्चेत्, तदा तदन्तर्गतत्रयाणां यथार्थभूता स्वस्वयोग्यांशमोचनासम्मतिः सुतरामवशिष्टद्वादशाणकपरिमितांशत्रयस्य[3] वन्धकमोचने प्रतिबन्धिका भवति। एवं चतुर्थवन्धकदातुरवशिष्टवन्धकदातॄणां त्रयाणां सम्मतिश्चेत्, तदैव समस्तमुद्रा दत्त्वा स्वांशे स्वामित्वेनावशिष्टवन्धकदातॄणां त्रयाणामंशे वन्धकग्रहीतृत्वेन[4] यस्तत्प्राप्तिर्भवितुमर्हति, यतः साधारणधने सर्व्वेषामंशिनामनुमतिं विना तन्मध्ये एकस्य कस्यचिद्दानाधमनविक्रयक्षमता नास्तीति। अतः सुतरां साधारणधनाधिमोचनाक्षमताप्यर्थसिद्धैव। यदि च वन्धकभूतग्रामे तेषामंशनिर्णयश्चेत्तदा वन्धकदातॄन्तर्गतत्रयाणामनुमतिं विनापि-

१. ०तापेशात्०—व्यप०।
२. चत्वारो हिन्दुजातीया—व्यप०।
३. ०त्रयाणां०—व्यप०।
४. ०गृहीत०—व्यप०।

प्चतुर्थबन्धकदाता पृथङ्[१]निर्दिष्टस्वांशं बन्धकान्मोचयितुमर्हति—इति वाराण-सीप्रचलितमिताक्षरादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

अविभक्तेषु द्रव्यस्य मध्यस्थत्वाद्[२]एकस्यानिश्चयत्वात् सर्वाभ्यनुज्ञावश्यं कार्य्या । विभक्तेषु (तूत्तरकालं विभक्ताविभक्तसंशयव्युदासेन व्यवहारसौक-र्याय सर्वाभ्यनुज्ञा, न पुनरेकस्यानीश्वरत्वेन । अतो) विभक्तानुमतिव्यतिरे-केणापि व्यवहारः सिद्धत्येव इति व्याख्येयम्—इति मिताक्षरादिग्रन्थ-लिखनम् (मिता० पृ० २००) ॥

श्रीर्ज्जयतितराम् श्रीहरिःशरणम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

५०—सदर देओयानी आदालतेर द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्टेनी इशमिद साहेबेर हुजुर हइते ऐ आदालतेर पण्डितदिगेर नामे इङ्गरेजि १८२७ सालेर ११ शेतम्बर मासेर रोवकारीर लिखित भवानीचरणदत्त सायेलेर मकर्द्दमाते निचेर लिखित दस्ता-वेजेर अनुमोदन पूर्व्वक परस्व दुइ प्रहर पर्य्यन्त वचन ओ ग्रन्थेर बेओरा सम्वलित जवाव दाखिल करणेर हुकुमे सओयालः—

एइ ये, सनातन हालदारेर स्त्री मुसम्मात जानकी, ये आपन पतिर मृत्यु परे बाङ्गला १२३२ सालेर २९ चैत्र मासेर हओया दस्तावेज भवानीचरणदत्तके लिखिया दियाछे, मुसम्मात मज-कुरार पक्ष हइते ए प्रकार दस्तावेज लिखिया देओन वङ्गदेशेर शास्त्रानुसारे सिद्ध छिल कि ना; ओ दस्तावेज लिखार एक वतसर परे मुसम्मात मजकुरार मृत्यु हओन हेतुके ऐ दस्तावेज जे तत्-सम्पर्के मुसम्मात मजकुरार पतिर भ्रातारा ओ भ्रातृष्पुत्रेरा प्रति-बन्धक ओ स्वीकार आछे मिथ्या हय कि ना इति ।

---

१. पृथक्—व्यप० । २. ०मध्यस्थता०—व्यप० ।

श्रीर्जयतितराम्

अथ व्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतकुर्टनीद्याश्मिटसाहेबधर्म्माधिकरणलिखितप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितबाङ्गलाख्यद्वात्रिंशदधिकद्वादशशताब्दीयोनत्रिंशद्दिवसीयचैत्रमासीयदस्तावेजसंज्ञकपत्रञ्चावलोक्य विविच्य च यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥

यदि सनातनहालदारस्त्रिया जानक्या पतिमरणानन्तरमुपरिलिखितदस्तावेजसंज्ञकपत्रं भवानीचरणदत्ताय लिखित्वा दत्तं तत्र तत्पत्रलिखितवृत्तान्तस्य सत्यत्वञ्चेत्तदैतादृशपत्रदानं वङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेण सिद्धमासीत्, यतोऽनपत्यपतिधनस्योत्तराधिकारित्वेन पत्नीसंक्रान्तत्वे पत्न्या वर्त्तनाद्यशक्तौ तदुपयुक्तधनाधानविक्रयणं शास्त्रानुमतं भवति । वर्त्तनादिमूलीभूतस्य तद्धनरक्षणस्यावश्यकत्वेन[1] सुतरां तद्धनरक्षणार्थं तदुपयुक्तस्य तद्धनस्याधानविक्रयणं शास्त्रसम्मतं भवति । प्रकृते तूपरिलिखितपत्रेण जानक्याः स्वामिमरणानन्तरं तत्पतिप्रत्यर्थिकतत्पतिभ्रात्राद्यर्थिकतत्पत्रलिखितविवादद्वयनिष्पत्तेस्तदधिकारित्वेन केवलं तस्या एव कर्त्तव्यत्वेन तत्र तस्या अशक्तया उपरिलिखितदस्तावेजसंज्ञकपत्रलिखितधनदानात् तद्विवादनिष्पत्त्या अवश्यं तत्पतिकर्त्तव्यस्वधनरक्षणवत् तत्पत्रलिखितधनादवशिष्टसमुदायनतित्यक्तधनरक्षणार्थत्वात् तत्पत्रस्य इत्यवगमात्, एवं तत्पत्रलिखनादनन्तरमेकसंवत्सरानन्तरं जानक्या मरणेन तत्पत्रं तस्याः पत्युः[2] भ्रातृभिरेवं तत्पतिभ्रातृपुत्रैश्च प्रतिबन्धमस्वीकृत्य च मिथ्या भवितुं नार्हति, यतस्तत्पत्रेण तल्लिखनसमये तत्पतिभ्रातृभिस्तत्पुत्रैर्वा उपरिलिखितविवादद्वयान्तर्गतैकस्मिन् विवादे विरोधित्वेन तया सह विवादं

१. रक्षणस्यावश्यक०—व्य०।

२ पतिः पतिः—व्य०।

कृत्वा तत्पत्रलिखनतस्तस्या निवारणं न कृतमित्यवगमाद्[१], इदानीं तस्या मरणेन तत्पत्रास्वीकारस्य तत्प्रतिबन्धस्य च अप्रयोजकत्वात्—इति वङ्ग-देशचलितदायभागविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

अतएव वर्त्तनाशक्तावाधानमप्यनुमतम् । तत्राप्यशक्तौ विक्रयणमपि—इति दायभागलिखनम् (पृ० १७३, ११।१।६२) । १ ।

तथा च भर्त्ता जीवन् यथा यस्य पोषणादिकं यद्वा कर्म्म करोति मृतभर्तृकापि स्वशक्त्यनुसारेण तथैव तस्य पोषणं तच कर्म्म कुर्व्वीत—इति विवादभङ्गार्णव(२ विवाभ० पृ० ३१६ क)लिखनञ्चेति ॥ २ ॥

श्रीर्जयतितराम्	श्रीहरिःशरणम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण	श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

५१—सदर देवानी आदालतेर पञ्चम हाकिम श्रीयुत आलक सुन्दर राश साहेवेर हुजुर हैते ऐ आदालतेर पण्डितदिगेर नामे इंराजि १८२७ सालेर ११ सेतम्बर मासेर रोवकारिर लिखित १८५७ लम्बरेर[२] वावत गणेश आर्पालाएट [३]विनसिया[३] रेष्पाडएटेर मकर्द्दमाते वारानश देशेर चलित शास्त्र मते वृहस्पतिवार पर्य्यन्त जवाव दाखिल करणेर हुकुमे सओयाल सकल एइ ये—

प्रथम सओयाल—

वारानश साकिनेर कल्लुजाति एक स्त्रीलोकेर विवाह कोन व्यक्तिर सहित हइयाछिल, ओ ताहार स्वामि अनुदेश हइल,

---

१. °गमात्—व्यव० । ३. विनसिया—इति साभीयाल् पाठः ।
२ लम्बो वावत—व्यव० ।

ओ ऐ स्त्रीलोक ताहार स्वामि अनुद्देश हओयार तेर वत्सरेर परे ताहार पतिर कनिष्ठ भ्रातार सहित साङ्गा करिते पारे कि ना, ए प्रकार (साङ्गा) शास्त्र अनुसारे सिद्ध हय कि ना।

द्वितीय सओयाल—

यद्यपि ए प्रकार साङ्गा सिद्ध हय, ओ ऐ स्त्रीलोकेर द्वितीय पति ऐ स्त्रीलोक व्यक्ति ओ आपन पिता ओ तिन सहोदरभ्राताके राखिया मरियाछे, ओ समस्त धन साधारण कि असाधारण हय, ए दुइ प्रकार मृत व्यक्तिर अस्थावर स्थावर धन कोन व्यक्तिके (अर्शे) इति।

जवाब व्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणप्रथमाधिपतिश्रीयुतश्रीलकशाण्डरधर्म्माधिकरणालिखितप्रश्नमतिरूपपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

शास्त्रे साङ्गाइशब्दवाच्यकार्य्यस्य प्रस्तावो नास्ति। परन्तु यदि वाराणसीप्रदेशीयानां[1] तैलकारजातीयानां प्रश्नपत्रलिखितप्रकारकसगाइशब्दवाच्यस्य व्यवहारश्चेत् तदा प्रश्नपत्रलिखितशास्त्रालिखितप्रकारकं[2] सगाइशब्दवाच्यं कार्य्यं[3] कर्त्तुं शक्नोति। एवमेतत्प्रकारकं सगाइशब्दवाच्यं तत्कार्य्यमुपरिलिखितव्यवहारसिद्धमिति चेत्तदा शास्त्रानुसारेणापि सिद्धं भवितुं शक्नोति, व्यवहारस्य शास्त्रानुसारेण बलवत्त्वादिति।

अत्र प्रमाणम्—

जातिजानपदान् धर्म्मान् श्रेणीधर्म्मांश्च धर्म्मवित्।
समीक्ष्य कुलधर्म्मांश्च स्वधर्म्मं प्रतिपालयेत्॥
इति—मनुवचनम् (८।४१)।१।

१ वारनसी०—व्यप०। ३. ०कार्य्यं—व्यप०।
२ शास्त्रप्रश्नलि०—व्यप०।

यस्मिन् देशे यदाचारो[1] व्यवहारः कुलस्थितिः ।
तथैव परिपाल्योऽसौ यदा वशमुपागतः ॥

—इति मिताक्षरादि(मिताक्षरा० १०५)ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् (१।३४३) । २ ।

स्पष्टशास्त्रानुपलम्भे तु देशव्यवहारानुरोधेन[2] निर्णयः कार्यः ।
इत्यप्याह स एव ।

तस्मात् शास्त्रानुसारेण राजकार्याणि साधयेत्, वाक्याभावे तु सर्वेषां देशदृष्टमतं नयेत्—इति वीरमित्रोदयलिखनम् । ३ ।

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि प्रश्नपत्रलिखितखगाहशब्दवाच्यं कार्यं प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितव्यवहारानुसारेण सिद्धं चेद्यं च तस्या एव स्त्रिया द्वितीयपतिस्तां स्त्रियमेव स्वपितरं त्रीन् स्वसोदरभ्रातॄन्[3] च संरक्ष्य मृतः स्यादेवं तदीयसमस्तस्थावरधनं पित्रा भ्रातृभिश्च सह[4] साधारणं चेत्तदा तदीयस्तदीयस्थावरधनांशः[5] भ्रातृणां च भवति; यदि च केवलं पित्रा सह धनं[6] साधारणं चेत्तदा केवलं पितुरेव; यदि वा केवलं भ्रातृभिः सह साधारणं चेत्तदा केवलं भ्रातॄणामेव भवति; असाधारणं तद्धनं चेद्यं च तद्देशीयानां तज्जातीयानां[7] यथा विवाहिता स्त्री असाधारणपतिधने अधिकारिणी भवति तथैव खगाहसंज्ञककार्यकृत् स्त्र्यपि तद्धने अधिकारिणी भवतीतिव्यवहारश्चेत्तदा सा शास्त्रानुसारेणापि[8] तद्धनं प्राप्तुं शक्नोति । एवं व्यवहारो न चेत्तदा धनस्यासाधारणत्वपक्षे तत्पितुरेव(तद्धनम्)—इति वाराणसी[9]प्रचलितमनुमिताक्षरावीरमित्रोदयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

---

१. य आ०—यास्मृ० ।
२. ०रोधेनैव—व्यप०
३. सोदर भ्रातॄन् स्वसंरक्ष्य—व्यप० ।
४. ०भिः सह—व्यप० ।
५. धनांश—व्यप० ।
६. धनं [illegible] साधा०—व्यप० ।
७. तज्जातीयानां—व्यप० ।
८. शास्त्रं प्राप्तं शक्नोति—व्यप० ।
९. वाराणसी—व्यप० ।

अत्र प्रमाणम्—

तदुपरिलिखितमेव । १ ।

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा—इत्यादि मिताक्षरादि(मिता॰ पृ॰ २१६)धृतयाज्ञवल्क्यवचनञ्चेति (२।१३५) । २ ।

श्रीउर्जयतितराम् श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

———

नं॰ १८६७

५२—रोवकारि मिसिल आदालते देओयानी सदर इङ्गरेजी १८२७ साल तारिख १५ माह सेतम्बर मोताबक बाङ्गला १२३४ साल रोज शनिवार आदालत मजकुरार पञ्चम हाकिम श्रीयुत. आलक सुन्दर राश साहेबेर वैठके—

गणेश आपीलाण्ट

मुशान्मति चेलसिया रेस्पाण्डेण्ट

एइ मासेर ११ तारिखेर हुकुमानुसारे ए आदालतेर पण्डित-गण लम्वरे व्यवस्था दाखिले करिलेर दृष्टे आसिया द्वितीय सओ-याल उचित हइल । अतएव हुकुम हइल ये ए रोवकारिर नकल एइ हुकुमे पण्डितगणके समर्पण करा जाय ये नीचेर लिखित सओयालेर जवाव तातिलेर परे दाखिल करेन ।

सओयाल—यद्यपि एइ मत सङ्काइ वारानश देशे सिद्ध हय आर ऐ दाखिल करा व्यवस्थार लिखित द्वितीय सओयालेर जवाव मते वोध हइते (छे ना) ये साङ्काइ स्त्रीर द्वितीय पतिर त्यक्त धन किछु साङ्काइ स्त्रिके अर्शिवेक कि ना; यदि ना अर्शे तवे ऐ स्त्रिर भरण पोषणेर अवधारण काहार जिम्वा थाकिवेक इति-

श्रीर्ज्जयतितराम्

उत्तरव्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणपत्रमाधिपतिश्रीयुतआलंकमुन्दरसाहेबधर्म्माधिकरणलिखितविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तर लिख्यते—

यदि वाराणस्यादिप्रदेशे[1] एतादृशसगाईशब्दवाच्यं कार्य्यं व्यवहारानुसारेण सिद्ध[2] भवति; एवं सगाइशब्दवाच्यकार्य्यकृत्स्त्रिया द्वितीयपतिस्यक्तधन यदि तत्पित्रा तद्भ्रातृभिश्च सह किंवा केवलं तद्भ्रातृभिः सह साधारणं चेत्तदा सगाइशब्दवाच्यकार्य्यकृत्स्त्रीस्वामित्वेन किञ्चिदपि तद्धनात् प्राप्तु[3] न शक्नोति। एवं चेत्तदा तस्याः स्त्रिया भरणपोषणं यावज्जीवनमेतद्विवादे पूर्व्वलिखितास्मद्व्यवस्थान्तर्गतद्वितीयप्रश्नोत्तरव्यवस्थानुसारेण तस्या द्वितीयपतित्यक्तसाधारणधनाधिकारिभिरेव कार्य्यम्। तत्र तस्य साधारणधनाधिकारिणो यदि पिता भ्रातरश्च सर्व्वे भवन्ति तदा तैः सर्व्वैरेव कर्त्तव्यम्, यदि च केवलं तत्पिता भवति अधिकारी तदा तेनैव कर्तव्यम्, यदि च केवलं तद्भ्रातर एव भवन्ति तदा तैरेव[4] कर्तव्यम्—इति वाराणस्यादिप्रचलितमिताक्षरावीरमित्रोदयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी गृह्णीयादित्येतद्वचनजाते विभक्तभ्रातृस्त्रीविषयम्—इति मिताक्षरालिखनम् (पृ०, २१७)। १।

भरणं चास्य कुर्व्वीरन् स्त्रीणामाजीवन[5]क्षयात्—इत्यादि मिताक्षरा (पृ० २२०)वीर *मित्रोदय*[6](पृ० ६३६ ख)ग्रन्थधृतनारदवचनम् (नास्मृ० पृ० १६६)। २।

---

१. वारानस्यादि०—व्यप०। २. सिद्ध सिद्ध०—व्यप०। ३. प्राप्त—व्यप०।

४. तेनैव०—व्यप०। ५. जीवित—नास्मृ०।

६ स्त्रीणामनस्थानां भरणमात्रं नारदेन प्रतिपादितमिति वीमि०ग्रन्थे। नारदवचनं [illegible] नोपलभ्यम्।

स्वर्याते स्वामिनि स्त्री तु ग्रासाच्छादनभागिनी ।
अविभक्ते धनांशे तु प्राप्नोत्यामरणान्तिकम् ॥

इति वीरमित्रोदयादि(वीमि० पृ० ६५४ ख)ग्रन्थधृतकात्यायन-वचनं चेति (कास्मृ० ६२२) । २ ।

श्रीर्जयतितराम्	श्रीहरिः शरणम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण	श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

५३—जिला गाजिपुरेर फौजदारि आदालतेर रोयकारि तारिख ५ छेतम्बर सन १८२७ इङ्गरेजी हेनरि ङिओनानओन फण्ड साहेब मेजेष्टरेर[1] बैठके ।

सरकार	मुद्दइ
ओमराओ राय हातिर ओयारिश—	
ओ दण्डधारि चौबे ओ भामराय	मुद्दाआलेहेम ।
ओ परस आहिर	

कारण मुधम्मात रामकलिर हाति हओ थानादानिवने इवसालि । अथ मकर्द्दमा रुवकार हइल । मुद्दाआलेहेने जओा-ब, ओ ओदनराय ओ सिओदयाल[2] ओ वनओारि ओ सिव-जोरराय ओ रामदेहलराय ओ आकुहुराय ओ अच्युत आनन्द ओ हरनाम रा(य)ओ रओसन आली ओ दस्त साक्षीदिगेर धजाहार दस्तुर मत लिखा जाइया मकर्द्दमार मिछिल सामिल पडागेल । जे हेतुक एइ मकर्द्दमार कएक प्रकरण बोध करा आव-श्यक, अतएव हुकुम हइल ये ओमराओ राय एक सउ टाकार जामिन दिया हाजिर थाके, एवं अन्य अन्य आसामीयान साक्षी-यान सहित विदाय हये । एक किता इङ्गराजी चिटी एक विषयेर

---

१. मेजेष्टर बेटेर । २. सिओदयाल—व्यप० ।

जिज्ञासा पूर्वक जे ब्राह्मण जाति व्यतिरिक्त सती स्त्रीलोकेर प्रति-स्वामीर मृत्यु संवाद श्रवणेर परे कत दिवस किम्वा काल अनुमरण हइवार रीति निरूपित आछे—सदर नेजामते-पाठान जाय इति ।

श्रीर्जयतितराम्

यथावव्यवस्था

प्रश्नमर्पितप्रश्नपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

पतिमरण[1]श्रवणानन्तरं ब्राह्मणजातिव्यतिरिक्ता स्त्री यद्यनुमरण-मिच्छति तदा शीघ्रमेवानुमरणं कर्त्तु महतीति शास्त्रे लिखितम्। किन्तु शीघ्रशब्दस्यार्थः कश्चिद् विशेषतो न लिखितः। परन्तु अनुमरणस्यायं व्यवहारः पतिमरणश्रवणानन्तरमनुमरणकर्त्री ब्राह्मणजातिव्यतिरिक्ता स्त्री प्रथमतोऽनुमरणमहं कारिष्यामितीच्छति[2]। तत्र यदि कश्चिल्लौकिकः प्रति-बन्धश्चेत्तदा तत्प्रतिबन्धकदूरी[3]करणानन्तरमपिशीघ्रमेवानुमरणं करोति। अथवा अनुमरणेच्छायां कृतायामपि यदि सा रजस्वला भवति तदा रज-स्वलाशौचानन्तरमपि अनुमरणं करोतिइति च व्यवहारः—इति गाजिपुरा-ख्यादिप्रचलितमिताक्षरादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

अयञ्च सकल एव सर्व्वासां स्त्रीणामगर्भिणीनामबालापत्याना-माचण्डालं साधारणो धर्म्मः—इति मिताक्षराग्रन्थलिखनम् (पृ० ६५)।१।

दयितं यान्यदेशस्थं मृतं श्रुत्वा पतिव्रता ॥
समारोहति[4] दीप्तेऽग्नौ[5] तस्याः शक्ति निबोधत ॥
यदि प्रविष्टो नरकं बद्धः पाशैः सुदारुणैः ।
संप्राप्तो यातनास्थानं गृहीतो यमकिङ्करैः ॥

---

१. पतिमरणा श्रवण०—व्यप० ।
२. ०मीतीच्छति—व्यप० ।
३. दूरी करण०—व्यप० ।
४. समारोहेत—(वीमि० पृ० १५२)।
५. दीप्ताग्नौ—व्यप० ।

तिष्ठते विवशो[1] दीनो वध्यमानः[2] स्वकर्मभि ।
व्यालग्राही यथा व्यालं बलाद्[3]गृह्णात्यशङ्कितः ।
तद्वद्भर्त्तारमादाय दिवं[4] याति तपोबलात् ।
तत्र सा भर्तृ परमा स्तूयमानाप्सरोगणैः ।
क्रीडते पतिना सार्द्धं यावदिन्द्राश्चतुर्द्दश ॥
इति व्यासवचनञ्चेति[5] । २ ।

श्रीर्ज्जयतितराम्	श्रीहरिःशरणम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण	श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

एइ व्यवस्था दाखिल हइलेनि मिथिल सती विषयेर —

५४—सदर देओयानि आदालतेर द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्टेनी इशमिट साहेबेर हुजुर हइते कालप्रसादराय सायेलेर मकद्दमाते इङ्गरेजी १८२७ सालेर २० आक्तुबर मासेर रोबकारिर लिखित मते परस्व दुइ प्रहर पर्य्यन्त बङ्ग देश चालित शास्त्रानुसारे इङ्गरेजी १८२४ सालेर २२ दिजम्बर मासेर लिखित जिला वर्द्धमानेर रोबकारी ओ इं० हाल सालेर १६ आपरेल मासेर लिखित कलिकातार कोर्टेर रोबकारि ओ सायेलेर सओयालेर मजमुन सकलेर अनुमोदने जवाब दाखिल करार हुकुमे आदालत मजकुरेर पण्डितगणेर नामे सओयाल।

यद्यपि इहार परे मृतपार्व्वतीचरणेर भगिनी मशम्मात श्यामासुन्दरी गर्भे एक पुत्र जन्मे। ऐ पार्व्वतीचरणेर पितामही मुशम्मात राशमणिर त्यक्त वस्तु ऐ पुत्रेर स्वत्व हइवेक कि ना ? यदि हइवेक, एइ क्षण ऐ वस्तु मसम्मात श्यामासुन्दरीर जिम्माय किम्वा

---

१. विवशा० —ध्य० ।
२. वेष्टमानः—वीमि० ।
३. विलादुद्धरते बलात्—वीमि० ।
४. तेनैव सह मोदते—वीमि० ।
५. कपोतिकाचित्राङ्गोपाख्यानम्० ।

पार्व्वतीचरणेर खुड़ागण अर्थात् कालीप्रसादराय ओ दुर्गासुन्दररायेर जिम्माय राखा जाइबेक; ओ यद्यपि उहार खुड़ागणेर जिम्बाय रहिबेक, विरोधीय वस्तु हस्तान्तर ना करण कराते उहादिगेर स्थान हइते जामिन लओया शास्त्रेर आज्ञा सम्मत बटे कि ना इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

उत्तरव्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतकुर्टनीहरामिल्टनसाहेबधर्म्माधिकरणलिखितप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तुल्समर्पितेङ्गरेजीयाब्दप्रतिपाद्यचतुर्व्विंशत्यधिकाष्टादशशताब्दीयद्वाविंशतिदिवसीयदिशम्बरमासीयवर्द्धमानजिलाख्यधर्म्माधिकरणीयविचारपत्रमथ च इङ्गरेजीयाब्दप्रतिपाद्यत्रिंशत्यधिकाष्टादशशताब्दीयषोडशदिवसीयापरेलमासीयकलिकाताकोर्टापीलाख्यधर्म्माधिकरणीयविचारपत्रमेतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिनिवेदनपत्रञ्चावलोक्य. विविच्य च यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

उपरिलिखितपत्रजाते रामसुन्दररायमरणानन्तरं तत्यक्तधनं तत्पुत्रेण पार्व्वतीचरणेन प्राप्तमिदं ज्ञातमिति, विवादास्पदीभूतधनं पार्व्वतीचरणस्यैव जातम्। अतस्तन्मरणानन्तरं तद्धनं तदुत्तराधिकारिणामेव भवति। तत्र च तदुत्तराधिकारिणां मध्ये पुत्रादिपितामहपर्य्यन्ताभावे तत्पितामह्या राधामण्या उत्तराधिकारित्वेन तद्धनं प्राप्तम्। राधामण्यां मृतायामेतत्परं यद्यपि मृतस्य पार्व्वतीचरणस्य भगिन्याः श्यामासुन्दर्य्या गर्भे एकः पुत्रो जनिष्यते तथापि पार्व्वतीचरणपितामहीराधामणिसंक्रान्ततदीयधने भविष्यतः पार्व्वतीचरणपितृदौहित्रस्याधिकारो न भविष्यति, यतो विवादास्पदीभूतधनस्योत्तराधिकारित्वेन पार्व्वतीचरणपितामहीसंक्रान्तत्वे तन्मरणोत्तरं तस्याः पूर्व्वमधिकारिपितामहादपि पूर्व्वमधिकारिणः पितृदौहित्र-

१ ०चरणेन—ज्ञात० ।

स्याधिकारप्रतिपादकशास्त्राभावात्—इति वङ्गदेशचलितश्रीकृष्णतर्कालङ्कार-दायभागटीकाविवादभङ्गार्णवदायक्रमसंग्रहादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

भ्रातृपौत्राभावे पितृदौहित्रः तदभावे पितामहः तदभावे पितामही—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकालिखनम् (पृ० २१८) ॥ १ ॥

दौहित्रान्तपितृसन्तानाभावे पितामहो धनाधिकारी आसन्नत्वात् तदभावे पितामही—इति विवादभङ्गार्णवलिखनम् (२ विवाभ० पृ० ३६४ ख) ॥ २ ॥

दौहित्रान्तस्वसन्तानाभावे पितुरधिकारवत् पितृदौहित्रान्तसन्तानाभावे पितामहाधिकारः[2], *सांदृष्टिकन्यायसिद्धत्वात् धनिभोग्यप्रपितामहपिण्डदातृत्वाच्च पितामहाभावे पितामही*—इति दायक्रमसंग्रहलिखनञ्चेति (पृ० ७) ॥ ३ ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्	**श्रीहरिश्शरणम्**
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण	**श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन**

५५—नं० ७१५५ आपील सदर आमीन—

रोयकारि आदालत देओयानी जिला वर्द्धमान इंरेजि १८२७ साल ११ जुन प्रथम रेजेष्टर श्रीयुत मेस्तर जान एङ्गलेश हारणी साहेबेर वैठके ।

रामप्रसादवन्द्योपाध्याय	आपीलाण्ट
आपन अप्राप्त-व्यवहारा कन्या	- -
अन्नपूर्णादेव्यार पक्ष हइते	- - -
श्रीमतिदेव्या ओ गयरह	रेष्पाण्डण्टान
सुवर्णादेव्या	ओजरदार

---

१ भ्रातुपुत्राभावे भ्रातृपौत्रः...तदभावे पितृदौहित्रः...तदभावे पिता०—दायभागटीकापाठः । ---

२. पितामहस्य, सांदृष्टिक०—दायक्रमसंग्रहपाठः ।

ए मकद्दमार विवरण दृष्टे एइ जिलार पण्डितेर उपर व्य-वस्था तलबे एइ सओयाल हइयाछिल। ये यद्यपि हइ भग्नि पितृधने दखिलकार हइया, ताहार मध्ये एक जन भग्नि ओ दुइ पुत्र समर्द्दे मरे, तबे मृत व्यक्तिर धन भग्निके अर्शिवेक, किम्वा ताहार पुत्र-दिगेके अर्शिवेक। ताहाते एइ रूप व्यवस्था पहुछिल ये मृतार धन ताहार भग्निके अर्शिवेक। एइ रूप आमार तलब करण मते एलाका कलिकातार कोर्ट आपिल आदालतेर पण्डितेर निकट हइते ये व्यवस्था पहुछियाछे जिलार व्यवस्था ऐक्यता हइल। किन्तु विचारेर दौंडाते हजुरेर विवेचना सम्मत ना हइया उपरेर लिखित सओयाल एइ बेओराते ये दाओया करा वस्तु साधारण ओ पृथक थाकन प्रकारे उपरेर बेओरा करा कोन उत्तराधिकारिके अर्शिवेक—इरेजि चिटी द्वारा हुगुलि जिलाते पाठान गिया-छिल। हुगुलि जिलार पण्डित ए जिलार व्यवस्थार नितान्त व्यतिक्रम, अर्थात् दाओया करा वस्तु साधारण किम्वा पृथक, दुइ प्रकारेइ पुत्रदिगेके अर्शिवेक लिखियाछे। अतएव व्यवस्थार व्यतिक्रम हओने सन्देह उत्पत्ति हइया ताहार निष्पत्ति कारण सदर देओयानि आदालतेर व्यवस्था तलब करण आवश्यक बोध हइया हुकुम हइल ये सओयाल एइ रोवकारिर नकल द्वारा जज साहेबेर समीपे एइ प्रार्थनाय पाठान जाय ये सओयालेर व्यवस्था सदर देओयानी आदालत हइते आनाइया ए आदलते पाठायेन इति।

रोवकारि आदालते देओयानी जिला वर्द्धमान तारिख १६ माह जुन शन १८२७ शाल मेस्तर हेनरि मेरट जज साहेबेर बैठके—

रामप्रसादवन्दोपाध्याय	आपीलाण्ट
आपन अप्राप्तव्यवहारा कन्या	
अन्नपूर्णादेव्यार पक्ष हइते—	रेप्पाडण्टान्
श्रीमतिदेव्या ओ गयरह	

सुवर्णादेव्या— ओजरदार

एइ मासेर ११ तारिखेर लिखित ए जिलार रेजेष्टर साहेबेर रोवकारिर एक केता नकल एक मृता स्त्रीर भग्नि ओ दुइ पुत्रेर उत्तराधिकारत्वेर[1] विशये ए आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था कोट आपिल आदालतेर व्यवस्थार सहित ऐक्य, ओ जिला हुगुलिर आदालतेर पण्डितेर व्यवस्थार सहित व्यतिक्रम हओन मजमुने एक केता सओयाल सम्बलित सदर देओयानी आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था हासिल करणेर कारण ऐ सओयाल सदर देओयानी आदालते पाठानेर प्रार्थनाय उपुल हइल। हुकुम हइल ये साहेब गौपुकेर आसल रोवकारि ऐ सओयाल सम्बलित एइ रोवकारिर नकल आमार इंरेजि चिटिर सामिल सदर देओयानि आदालतेर प्रबल प्रताप हाकिमानेर हजुरे पाठान जाय इति—

सओयाल—

यद्यपि कोन व्यक्ति आपन दुइ कन्या वर्त्तमाना राखिया फौत् करे। ताहार पर ऐ दुइ कन्यार एक कन्या आपन दुइ पुत्र ओ भग्निके राखिया फौत् करे। इहाते मृता कन्यार विशय ताहार भग्निके अर्शे, कि ताहार पुत्रदिगेर अर्शे ? इहार संसृष्ट मते ओ विभाग प्रयोगे पृथक २ शास्त्रानुसारे जवाब लिखिवेन इति।

श्रीदुर्ज्जयतितराम्

जवाबव्यवस्था

प्रश्नसमर्पितप्रश्नपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातास्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

यत्र कश्चिद्व्यक्तिविशेषः स्वकीये द्वे कन्ये संरक्ष्य मृतः, तदनन्तरं द्वयोः कन्ययोर्मध्ये एका कन्या द्वौ पुत्रौ एकां भगिनीञ्च संरक्ष्य मृता स्यात्, तत्र सा कन्या यदि अविवाहिता सती पितृधनाधिकारिणी चेत्तदा, यदि च

---

[1] उत्ताधिकारत्वे च—व्यप०।

द्विवाहिता सती पितृधनाधिकारिणी जाता, परन्तु तस्याः सा भगिनी वन्ध्या, पुत्रहीना विधवा चेत्तदा च, तस्याः पितृत्यक्तधनांशे तत्पुत्रयोरधिकारः। यदि च सा कन्या विवाहिता सती पितृधनाधिकारिणी जाता, अथ च तस्याः सा भगिनी वन्ध्या, पुत्रहीना विधवा वा नो चेत्तदा तद्भगिन्याः, अर्थात् पुत्रवत्याः सम्भावितपुत्रा(याः)वा, अधिकारः। पितृधने ऊढाया दुहितुरधिकारे जातेऽपि तन्मरणोत्तरं पितुरुत्तराधिकारिणामेव क्रमेण तद्धनं भवति। तत्र च पितुरुत्तराधिकारिणां मध्ये पुत्रादिपत्नीपर्यन्ताभावे दुहितुरेव प्राधान्याद् विभक्तेऽविभक्ते वा व्यावहारिकसंसृष्टिनि, असंसृष्टिनि वा सति पूर्वाधिकारिणी तदनन्तराधिकारिणां वङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेण अधिकाराभावाच्च—इति वङ्गदेशचलितदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृत-दायभागटीकादायक्रमसंग्रहविवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

पत्न्यभावे दुहिता...तत्रापि प्रथमं कुमारी...तत्रायं विशेषः। कन्या जाताधिकारा पश्चात् परिणीता सती अविद्यमानपुत्रा यदि म्रियेत तदा तत्पितृदाये सपुत्रायाः सम्भावितपुत्रायाश्च भगिन्यास्तुल्याधिकारः। न तु तद्भर्त्रादीनां, स्त्रीधन एव तेषामधिकारात्। कुमार्यभावे चोढायाः पुत्रवत्याः सम्भावितपुत्रायाश्च भगिन्यास्तुल्याधिकारः, तयोरेकतराभावे एकतराधिकारः। वन्ध्यापुत्रहीनविधवयोस्तु पुत्रद्वारेण पार्वणपिण्डदानोपकाराभावात्, पुत्रवतीसम्भावितपुत्रयोरसत्त्वेऽपि नाधिकारः...सर्व-दुहित्रभावे दौहित्रस्याधिकारः—इति दायक्रमसंग्रह(पृ० २-४) विवादार्णवसेतु(पृ० ४३-४४)प्रभृतिग्रन्थलिखनम्॥ १॥

१. पत्न्यभावे कुमारी धनाधिकारिणी।...तदभावे चोढा...तत्रायं विशेषः। कन्या जाताधिकारा पश्चात्परिणीता अविद्यमानपुत्रा यदि मृता तदा तत्पितृदाये सपुत्रायाश्च भगिन्यास्तुल्याधिकारो न तु तद्भर्त्रादीनां, स्त्रीधन एव तेषामधिकारात्। तदभावे पुत्रवती सम्भावितपुत्रा च तुल्याधिकारिणी एतयोरेकतराभावे अन्यतराधिकारः।...स्वपुत्रद्वारा पार्वणपिण्डदातृतया द्वयोरुपकाराविशेषाच्च।...वन्ध्यापुत्रहीनविधवयोस्तु नाधिकारः।...तयोरभावे दौहित्र.—इति विवादार्णवसेतुपाठः।

—एवञ्च दुहितुरप्यधिकारे जाते तस्यां मृतायां तदभावोक्ताः पितृधना-धिकारिणो गृह्णीयुः न तु दुहितृधनाधिकारिणः—इति दायभाग(पृ० १७४) ग्रन्थलिख(न)ञ्चेति ।

श्रीर्ज्जयतितराम् श्रीहरिःशरणम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन ।

नम्बर २५६५

५६—रोवकारी मिसिल आदालते देवोयानी सदर तारिख २४ माहे जानओरि सन १८२८ इङ्गरेजी मताबेक १२ माहे माघ सन १२३४ याङ्गला रोज वृहस्पतिवार ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत कटवरट थरलेन सिलि साहेबेर बैठके—

देविदयाल प्रभृति	आपीलाण्टान
हरहोरसिंह	रष्पाडेण्ट

आपीलाण्टेर उकिल मुनशी महम्मद पाणाह विद्यमान आशील । ए मकद्दमा गत दिवस रष्पाडण्टेर असाद्याते आमार बैठके रोबकार, ओ जिलार आदालतेर कागज-सकल १० लम्बर पर्य्यन्त पडागिया स्थकित छिल । पुनराय अद्य रोब-कार हइया ऐ आदालतेर बाकि कागज-सकल फयशला पर्य्यन्त ओ कोट आदालतेर तावत् कागज ओ ए आदालतेर समुदय कागज पडागेल । यथा ए मकद्दमार सम्पर्के नातक हुकुम सादर हओनेर पूर्व्वे एइ विषय जानिते जे हरहोरसिंहेर वारो वैशान शास्त्रानुसारे सात्व्यवस्थ वटे किना आवश्यक हइल । अतएव हुकुम हइल ये एइ रोबकारिर नकल सहित ए मकद्दमार समस्त कागज एइ आदालतेर पण्डीतगणके एइ हुकुमे समर्पण करा जाय ये मकद्दमार दाखिल हओया सम्यक कागज ओ सकल दस्तावेज दृष्टी करिया व्यवस्था लेखेन ये हरहोरसिंहेर वारो

विवाहिता सती पितृधनाधिकारिणी जाता, परन्तु तस्याः सा भगिनी वन्ध्या, पुत्रहीना विधवा चेत्तदा च, तस्याः पितृत्यक्तधनांशे तत्पुत्रयोरधिकारः। यदि च सा कन्या विवाहिता सती पितृधनाधिकारिणी जाता, अथ च तस्याः सा भगिनी वन्ध्या, पुत्रहीना विधवा वा नो चेत्तदा तद्भगिन्याः, अर्थात् पुत्रवत्याः सम्भावितपुत्रा(याः)वा, अधिकारः। पितृधने ऊढाया दुहितुरधिकारे जातेऽपि तन्मरणोत्तरं पितुरुत्तराधिकारिणामेव क्रमेण तद्धनं भवति। तत्र च पितुरुत्तराधिकारिणां मध्ये पुत्रादिपत्नीपर्यन्ताभावे दुहितुरेव प्राधान्याद् विभक्तेऽविभक्ते वा व्यावहारिकसंसृष्टिनि, असंसृष्टिनि वा सति पूर्वाधिकारिणो तदनन्तराधिकारिणां वङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेण अधिकाराभावाच्च—इति वङ्गदेशचलितदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृत-दायभागटीकादायक्रमसंग्रहविवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

[1]'पत्न्यभावे दुहिता...तत्रापि प्रथमं कुमारी...तत्रायं विशेषः। कन्या जाताधिकारा पश्चात् परिणीता सती अविद्यमानपुत्रा यदि म्रियेत तदा तत्पितृदाये सपुत्रायाः सम्भावितपुत्रायाश्च भगिन्यास्तुल्याधिकारः। न तु तद्भर्त्रादीनां, स्त्रीधन एव तेषामधिकारात्। कुमार्यभावे चोढायाः पुत्रवत्याः सम्भावितपुत्रायाश्च भगिन्यास्तुल्याधिकारः, तयोरेकतराभावे एकतराधिकारः। वन्ध्यापुत्रहीनविधवयोस्तु पुत्रद्वारेण पार्वणपिण्डदानोपकाराभावात्, पुत्रवतीसम्भावितपुत्रयोरसत्त्वेऽपि नाधिकारः...सर्व्वदुहित्रभावे दौहित्रस्याधिकारः—इति दायक्रमसंग्रह(पृ० ३-४) विवादार्णवसेतु(पृ० ४३-४४)प्रभृतिग्रन्थलिखनम्॥ १॥

---

१. पत्न्यभावे कुमारी धनाधिकारिणी।...तदभावे चोढा...तत्रायं विशेषः। कन्या जाताधिकारा पश्चात्परिणीता अविद्यमानपुत्रा यदि मृता तदा तत्पितृदाये सपुत्रायाश्च भगिन्यास्तुल्याधिकारो न तु तद्भर्त्रादीनां, स्त्रीधन एव तेषामधिकारात्। तदभावे पुत्रवती सम्भावितपुत्रा च तुल्याधिकारिणी एतयोरन्यतराभावे अन्यतराधिकारः।...सपुत्रतया पार्वणपिण्डदातृत्वात् द्वयोरुपकाराविशेषाच्च।...वन्ध्यापुत्रहीनविधवयोस्तु नाधिकारः।...तयोरभावे दौहित्र.—इति विवादार्णवसेतुपाठ.।

एवञ्च दुहितुरप्यधिकारे जाते तस्यां मृतायां तदभावोक्ताः पितृधनाधिकारिणो ग्रहीयुः न तु दुहितृधनाधिकारिणः—इति दायभाग(पृ० १७४) ग्रन्थलिख(न)ञ्चेति ।

श्रीर्ज्जयतितराम्	श्रीहरिःशरणम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण	श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन ।

नम्बर २१६५

९६—रोवकारी मिसिल आदालते देओयानी सदर तारिख २४ माहे जानओरि सन १८२८ इङ्गरेजी मतावेक १२ माहे माघ सन १२३४ बाङ्गला रोज बृहस्पतिवार पे आदालतेर हाकिम श्रीयुत कटवरट थरलेन सिलि साहेबेर बैठके—

देविदयाल प्रभृति	आपीलाण्टान्
हरहोरसिंह	रप्पाडेण्ट

आपीलाण्टेर उकिल मुनशी महम्मद पाणाह विद्यमान आशील । ए मकर्द्दमा गत दिवस रप्पाडण्टेर असाद्याते आमार बैठके रोवकार, ओ जिलार आदालतेर कागज-सकल १० नम्बर पर्य्यन्त पडागिया स्थगित छिल । पुनराय अद्य रोवकार हइया ऐ आदालतेर बाकि कागज-सकल फयशाला पर्य्यन्त ओ कोर्ट आदालतेर तावत् कागज ओ ए आदालतेर समुदय कागज पडागेल । यथा ए मकर्द्दमार सम्पर्के नातक हुकुम सादर हओनेर पूर्व्वे एइ विषय जानन जे हरहोरसिंहेर वारो वैशान शास्त्रानुसारे साव्यवस्थ बटे किना आवश्यक हइल । अतएव हुकुम हइल ये एइ रोवकारिर नकल सहित ए मकर्द्दमार समस्त कागज एइ आदालतेर पण्डीतगणके एइ हुकुमे [illegible] करा जाय ये मकर्द्दमार दाखिल हओया सम्यक कागज ओ सकल दस्तावेज दृष्टी करिया व्यवस्था लेखेन ये हरहोरसिंहेर वारो

वैशान शास्त्रानुसारे साव्यवस्थ घटे कि ना; ओ व्यवस्था दाखिल हओन परे उचित हुकुम सादर हइवेक इति।

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतकटवरटयरनेलसेलिसाहेबधर्म्माधिकरण-लिखितविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवंतत्समर्पितैतद्विवादपदविषयनि-विष्टपत्रजातं चावलोक्य विविच्य च यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

हरहोरसिंहनिर्दिष्टसाद्युपस्थापितवृत्तान्तेन वाराणस्यधिकरणककोट-आपीलाख्यधर्म्माधिकरणनिविष्टससदशाङ्काङ्कितव्यवस्थापत्रेणैव[1] महादया-ङ्काङ्किततद्व्यवस्थाप्रतिरूपपत्रेण चैव तद्व्यवस्थापत्रलिखितप्रश्नत्रयेण चैव-मेतद्विवादविषयनिविष्टपत्रजातैश्च हरहोरसिंहः स्वपितुर्जनकस्यैक एव पुत्रः, एवं जनकपितृमरणानन्तरं तन्मात्रा या मनेवाजसिंहाय भाषायां राशशिनी-शब्दप्रतिपाद्यदत्तकपुत्रकरणार्थं दत्त इति ज्ञातम्। एतादृशवृत्तान्ते सति हरहोरसिंहस्य या मनेवाजसिंहकर्तृकं भाषायां राशनशिनोशब्दप्रतिपाद्य-दत्तकपुत्रत्वं सिद्धं भवितुं न शक्नोति। एकमात्रपुत्रो दत्तकपुत्रकरणार्थं न दातव्यः—शास्त्रे निषेधस्मरणात्, भर्त्तुरनुमतिं विना स्त्रियाः पुत्रदान-निषेधाच्च। अयं च हरहोरसिंहनियुक्ते रुक्कानशब्दवाच्ये यद्व्यवस्थापत्रे वाराणस्यधिकरणककोटापिलाख्यधर्म्माधिकरणे निविष्टं तद्व्यवस्थापत्रे तत्प्रतिरूपपत्रे चेदमेव लिखितम्। काचिदेकपुत्रा तत्पुत्रभरणपोषणा-समर्था[2] स्त्री स्वकीयमेकपुत्रं दत्तवती[3]। आवयोः सकलकार्य्यकारी अयं पुत्रः अस्तु। अतएवायं द्व्यामुष्यायणः पुत्रः सिद्धो भवतीति तदीया-शुद्धम्। तादृक्[4] संविदः सत्यत्वस्य प्रभुसमर्पितपत्रजातैरेव प्राप्तत्वात्, पत्युरनु-मतिं विना केवलभरणाद्यसमर्थया मात्रा दत्तस्यैकमात्रपुत्रस्य द्व्यामुष्याय-णस्य शास्त्रालिखितत्वाद्[5], भर्त्तुरनुमतेः प्रभुसमर्पितैतद्विवादविषयनिविष्टपत्र-जातैरेवाप्राप्तत्वाच्च। अथ च जिलाख्यधर्म्माधिकरणनिविष्टपत्रान्तर्गत-

१. पत्रेण०—व्यप०।
२. भरणपोषणासमर्था०—व्यप०।
३. स्वकिया देक पुत्रमलेनरार विद्यरपत्ति०—व्यप०।
४. तादृश०—व्यप०।
५. इति शास्त्रे—व्यप०।

सदर्म्माधिकरणनियुक्तपण्डितलिखितव्यवस्थापत्रमेवं पाठशालास्थपण्डित-लिखितव्यवस्थापत्रं च शुद्धमशुद्धं वेत्यस्माभिर्न लिख्यते,[1] यतस्तद्व्यव-स्याद्वये हरहोरसिंहस्य दत्तकपुत्रत्वसिद्ध्यसिद्ध्योः प्रस्तावश्च नास्ति; इत्यत-स्तस्यानावश्यकत्वमेव—इति धाराणस्यादिप्रदेशचलितमिताक्षरावीरमित्रोदय-व्यवहारमाधवव्यवहारमयूखव्यवहारकौस्तुभदत्तकमीमांसादत्तकदीधितिदत्तक-चन्द्रिकादत्तकनिर्णयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

माता भर्त्तुरनुज्ञया[2] प्रोषिते प्रेते वा भर्त्तरि पित्रा वोभाभ्यां वा सवर्णाय यो यस्मै दीयते स तस्य दत्तकः पुत्रः।

यथाह मनुः—

माता पिता वा दद्यातां यमद्भिः पुत्रमापदि।

सदृशं प्रीतिसंयुक्तं स ज्ञेयो दत्त्रिमः सुतः॥—इति (९।१६८)।

आपद्ग्रहणादनापदि न देयः। दातुरयं प्रतिषेधः। तथा एकपुत्रो न देयः। "न त्वेवैकं पुत्रं दद्यात् प्रतिगृह्णीयाद्वेति वशिष्ठस्मरणात्", तथा "अनेक-पुत्रसद्भावेऽपि ज्येष्ठो न देयः। ज्येष्ठेन जातमात्रेण पुत्री भवति मानवः"—इति (मनु०—९।१०६)।

तस्यैव पुत्रकार्य्यकरणे मुख्यत्वात्—इति मिताक्षराग्रन्थलिखनम् (पृ० २१३-१४)॥ १॥

अपुत्रेणेति पुं(स्त्व)श्रवणात् न स्त्रिया अधिकार इति गम्यते। अतएव वशिष्ठः। न स्त्री पुत्रं दद्यात् प्रतिगृह्णीयाद्वा अन्यत्रानुज्ञानाद्भर्त्तुः—इति दत्तकमीमांसाग्रन्थलिखनम् (पृ० ७)॥ २॥

नैकपुत्रेण कर्त्तव्यं पुत्रदानं कदाचन।

बहुपुत्रेण कर्त्तव्यं पुत्रदानं प्रयत्नतः॥—इति दत्तकचन्द्रिकादत्तक-मीमांसादि (पृ० ६६)ग्रन्थधृतशौनकवचनञ्चेति (पृ० ११)॥ ३॥

श्रीर्जयतितराम्	श्रीहरिःशरणम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण	श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

---

१. लिखितो०—व्यप०। २. भर्त्तुराज्ञया०—व्यप०।

५७—रोवकारि मिसिल आदालत देओयानी सदर तारिख ५ माह मार्च सन १८२८ इङ्गरेजी मतावक २३ माह फाल्गुण सन १२३४ बाङ्गला रोज बुधवार ऐ आदालतेर द्वितीय हाकिम श्रीयुत आलक सुन्दर राश साहेबेर बैठके—

जयरामगिर वनाम मयागिर ओ देविगिर —,

सापल हाजीर आसील। इं० १८२७ शालेर १३ आगस्त मासेर लिखित मरसीदावादेर प्रवलसियल कोर्टेर एक केता रिट० रन तथाकार रोवकारि सहित ओ ताहार सम्वलित मकद्दमार रोएदाद पौछिया ऐ सनेर जुलाइ मासेर २३ तारिखे दृष्टे हओयाः सापलेर सओयाल प्रभृति, ताहार समपर्कीय कागज-सफल अद्य दृष्टे आशिल। यथा सापलेर सओयाल सम्पर्के चुडन्त हुकुम सादर हओनेर पूर्व्वे शास्त्र विवेचना करण उचित बोध हइलो, अतएव हुकुम हइलो ये एइ रोवकारिर नकल एइ हुकुमे एइ आदालतेर पण्डितगनके अर्पण कराजाय ये निचेर लिखित सओयालेर जवाब सोमवार पर्य्यन्त दाखिल करेण।

सओयाल—यद्यपि एक व्यक्त गोसाञी आपन गुरुर मृत्युर पर उहार त्यक्त धने दाखिल हइया अन्य व्यक्तिके आपन चेला नियुक्त करे, ओ ताहार पर आपन चेलार असम्मतिते आपन गुरुर त्यक्त धन ओ आपन स्वोपार्जित (धन)के गुरुर त्यक्त धन सम्वलित किम्वा पृथक् अन्य स्थाने हस्तान्तर करे। वङ्गदेश-चलित शास्त्रानुसारे एमत हस्तान्तर सिद्ध वटे कि ना इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्।

एतद्धर्म्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतआलकसुन्दरसाहेबधर्म्माधिकरण-लिखितविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यद्येतत्प्रश्नलिखितकश्चित्संन्यासिगोस्वामी स्वगुरोर्मृत्योः परं तत्त्यक्तधने आयत्तत्वं सम्पाद्यान्यं कश्चिद्व्यक्तिविशेषं शिष्यत्वेन नियुक्तवान्।

तदनन्तरं तच्छिष्यानुमतिं विना स्वगुरुत्यक्तमन्नं स्वोपार्जितधनं चैकीकृत्य पृथग्वान्यस्य 'कस्यचिन्निकटे हस्तान्तरं'[1] कृतवान् तस्मात्र तद्धनं यदि देवसेवार्थं नियमितं भवति तदा देवस्वत्वासद्भीभूततद्धने हस्तान्तरकर्तुः स्वत्वाभावेन, यदि च तद्धनमतिथिसेवार्थं नियमितं तत्रायं नियमश्चेदे-तद्धनादतिथिसेवैतत्स्थाननियुक्तेन कर्त्तव्या, न ॥ दानविक्रयावपि, तदा च शिष्यानुमत्या तदननुमत्या वा हस्तान्तरकरणं शास्त्रानुसारेण सिद्धं भवितुं नार्हति; यतः शास्त्रानुसारेण[2] पोष्यवर्गमरणे नरकं भवति । अथ च संन्या-सिनामिदानीन्तनानां प्रायशोऽतिथिसेवाव्यवहारो वर्त्तते । अथ चातिथिसेवार्थं धननियमोऽपि वर्त्तते । तद्धनदानविक्रयावपि न भवत इत्यपि व्यवहारः । व्यवहारस्यापि शास्त्रसिद्धप्रमाणत्वात् । अथ च संन्यासिनामनेके सम्प्रदाया अनेकाः अतस्तत्रैतत्प्रश्नलिखितसंन्यासिनो गोस्वामिनो गुरुपरम्परा-यामेतद्व्यवहारश्चेत् शिष्यानुमतिं विना गुरुणा गुरुपरम्परागतधनस्य हस्तान्तरं न कर्त्तव्यं तदा तादृशव्यवहारात् शिष्यानुमतिं विना गुरुपरम्परा-गतधनस्य हस्तान्तरकरणं शास्त्रानुसारेण भवितुं नार्हति । यदि च तद्गुरु-परम्परायां तादृशव्यवहारो न चेत्, तदैतत्प्रश्नलिखितधनं यदि देवसेवार्थ-मतिथिसेवार्थं वा नियमितं न भवति तदा च स्वोपार्जितस्य गुरुपरम्परागत-स्य चोभयविधधनस्यास्य[1] संन्यासिजातिव्यवहारात् शिष्यानुमतिं विनापि गुरुणा हस्तान्तरकरणं शास्त्रानुसारेण सिद्ध्यति, अतः शास्त्रानुसारेणापि सिद्धं भवितुमर्हति । व्यवहारस्य शास्त्रसिद्धप्रमाणत्वमुपरि लिखितमेव—इति बहुदेशप्रचलितमनुदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकाव्यवहारतत्त्वव्यवहारमातृकादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

देवस्वं ब्राह्मणस्वं वा लोभेनोपहिनस्ति यः ।

स पापात्मा परे लोके गृध्रोच्छिष्टेन जीवति ।—इति मनुवचनम् (११ । २६) । १ ।

---

१. हस्तान्तरं—व्यव० । २. शास्त्रानुसारेणापोष्य—व्यव० ।

१. धनस्यास्य ब्रातसंन्यासिव्य०—व्यव० ।

प्रतिमादिदेवतार्थमुत्सृष्टं[1] धनं देवस्वम्—इति कुल्लूकभट्टव्याख्यानमिति (पृ० ४३०) । २ ।

अस्वामिना कृतो यस्तु दायो विक्रय एव वा ।
अकृतस्स तु विज्ञेयो व्यवहारे यथा स्थितिः ॥—इति मनुवचनम् (८।१९९) । ३ ।

व्यवहारो हि बलवान् धर्म्मस्तेनावहीयते—इति व्यवहारतत्त्व(पृ० ४)व्यवहारमातृकादि(पृ० २८२)मन्यधृतनारदवचनम् । (पृ० १७) १।४०) ।४।

भरणं पोष्यवर्गस्य प्रशस्तं स्वर्गसाधनम् ।
नरकं पीडने चास्य तस्माद्यत्नेन तं भरेत् ॥—इति दायभागादिमन्यधृत(दाभा० पृ० ३३)मनुवचनम्[2] । ५ ।

पिता माता गुरुर्भार्य्या प्रजा दीनाः समाश्रिताः ।
अभ्यागतोऽतिथिश्चैव पोष्यवर्ग उदाहृतः ॥—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारधृतमनुवचनम्[3] (दाभाटी० पृ० ३४) । ६ ।

जातिजानपदान् धर्म्माञ्छ्रेणीधर्म्मांश्च धर्म्मवित् ।
समीक्ष्य कुलधर्म्मांश्च स्वधर्म्मं प्रतिपालयेत् ॥—इति मनुवचनं चेति (८।४१) । ७ ।

श्रीश्रीर्जयतितराम्	श्रीहरिःशरणम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण	श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

—इङ्गराजि दस्तखत—

---

१. देवता तदर्थम०—पा० ।

२. मनुस्मृतौ वचनमिदं नोपलभ्यते ।

३. वचनमिदं मनुस्मृतौ नोपलभ्यते यद्यपि वाक्यमिदं "मनुनैवोक्तम्" इति दायभागटीकालिखनम् ।

শশ্রোয়াল—

৫৮—এক ব্যক্তি সামন্ত রজপুত জাতীয় রাজা প্রথমা ও দ্বিতিয়া দুই বনিতা ও দ্বিতীয়া বনিতার এক দুহিতা ও স্থাবর ও অস্থাবর বস্তু স্বর্ণাদি রাখিয়া নিহতো অর্থাৎ মৃত্যু হয়। তদপরে এ নিহতো ব্যক্তির দ্বিতিয়া বনিতার এক দৌহিত্র হয়। ঐ দ্বিতিয় বনিতা ও তাহার দুহিতা ও দুহিতার পুত্র বর্ত্তমান আছে। এ সময়ে ঐ রাজার প্রথমা বনিতা আপন স্বামীর ফৌতের পর ঐ সকল বস্তুতে দখিলকার থকিয়া আপন সপত্নীর সাম্বৎসরের ভরণ পোষণের বেতন দিয়া আপন সজাতীয় চরি বৎসরের বয়ক্রমের এক ব্যক্তিকে পৌষ্যপুত্র রাখিয়াছে। এমতে প্রস্তা জিজ্ঞাসা করা জাইতেছে। ঐ যুত রাজার দ্বিতীয়া বনিতার দৌহিত্র বর্ত্তমানে প্রথমা বনিতা আপন স্বামীর বিনা অনুমতিতে পৌষ্যপুত্র করিতে পারে কি না। যদি পারে কোন শাস্ত্রের মত, ও যে শাস্ত্রের নাম কী, ও কোন বচন ও প্রমাণ তাহা এই শশ্রোয়ালের পৃষ্ঠে লিখিয়াদেন।

ইতি ইং সন ১৮১৮ সাল, তারিখ ৭ মার্চ্চ।

শ্রীর্জয়তিতরাম্

প্রভুসমর্পিতপ্রশ্নপত্রমবলোক্য যাদৃশাবোধো জাতস্তদনুসারেণোত্তরং লিখ্যতে

প্রশ্নপত্রলিখিতস্য রাজ্ঞো দ্বিতীয়বনিতায়া দৌহিত্রে বিদ্যমানে সতি প্রথমা বনিতা স্বস্বাম্যনুমতিং বিনা দত্তকপুত্রং কর্ত্তুং ন শক্নোতি—ইতি দত্তকমীমাংসা-দত্তকচন্দ্রিকা(পৃ০ ২)দত্তকদীধিতিপ্রভৃতিগ্রন্থানুসারিণী ব্যবস্থা—

অত্র প্রমাণম্—

ন স্ত্রী পুত্রং দদ্যাৎ প্রতিগৃহ্ণীয়াদ্ বাঽন্যত্রানুজ্ঞানাদ্ ভর্ত্তুঃ—ইতি দত্তক-মীমাংসা(পৃ০ ৭)দত্তকচন্দ্রিকা(পৃ০ ২)দত্তকদীধিতিপ্রভৃতিগ্রন্থধৃতবশিষ্ঠ-বচনম্।

শ্রীর্জয়তিতরাম্ শ্রীহরিঃশরণম্

শ্রীবৈদ্যনাথমিশ্রেণ শ্রীরামতনুশর্ম্মবিদ্যাবাগীশেন

नं० २६।८

५६—रोयकारि मिविल आदालत देओ्रानि सदर तारिख १३ माह मार्च्च सन १८२८ इङ्गरेजी मोतावक २ चैत्र सन १२३४ बाङ्गला रोज वृहस्पतिवार ऐ आदालतेर हाकिम कटवरट धरनेल मिली साहेवेर वैठके—

नफरमित्र ओ राजीवमित्र— आपीलाण्टान
रामकुमारचट्टोपाध्याय प्रभृति— रेप्पाडण्टान

आपीलाण्टानेर उकिलगण मुनशी हयदरालि ओ मुनशी गोलाम बतुल रेप्पाडण्टानेर उकीलगणेर मध्ये एक जन मौलवि करम्-होशेन हाजिर आशील। पूर्व्वे एइ मकद्दमा एइ मासेर ११ ओ १२ तारिख सकले रोवकार हइया ओ शहर आदालत ओ प्रविनशल कोटेर कागजसकल तथाकार फयशला सहित पडागिया दिवा आवसान हेतु स्थगित छिल, पुनराय अद्य उपस्थित हइया खाप आपीलेर सओ्राल याहा मौछुवातेर स्थाने करार दियाछे ओ ताहार जवाब इङ्गरेजी १८२४ शालेर १७।२८ (?) जुलाइ मासेर हओया ए आदालतेर रोवकारि सकल ओ आदालतेर समुदाय कागज पडागेल। जानागेल ये एइ मकद्दमाय सहरेर पण्डितेर निकट हइते दुइ व्यवस्था ओ कोटेर पण्डितेर निकट हइते एक व्यवस्था दाखिल हइयाछे, ओ ऐ व्यवस्थासकल परस्पर अनैक्य। अतएव चूडान्त हुकुम सादर हओनेर पूर्व्वे एइ आदालतेर पण्डितगणेर निकट व्यवस्था लओ्रोन उचित वोध हइया हुकुम हइल जे एइ रोवकारिर नकल नीचेर लिखित सओ्रालसकल लिखिया मकद्दमार समुदाय कागज सहित एइ आदालतेर पण्डितगणके समर्पण कराजाय।

प्रथम सओ्रोयाल। एइ जे यद्यपि रामकृष्णमित्रेर[१] स्त्री मुसम्मात धनमणि आपन पतिर मृत्युर पर आपन पतिर अंश ओ त्यक्त

---

१ मोः कृष्ण०—त्यः०।

यावत मलहि किसमतेर उपर, याहा उत्तराधिकारित्व प्रकारे उहाके पौंछियाछे, दखिल हइया ताहा आपन दौहित्र मानिक-लालके हेवा करिया थाके; एमत हेवा सिद्ध वटे कि ना।

द्वितीय। एइ ये यद्यपि हेवानामा लिखिया देओन परे मुसम्मात[1] मजकुरा ऐ लिखित वस्तुके पुनराय रष्पाटएटानेर पिता डोमनचट्टोपाध्यायेर निकट विक्रि करियाथाके, एमत विक्री करार ऐ मुसम्मातर[2] क्षमता छिल कि ना। ओ यदि स्यात् हेवा ओ विक्रय दुइओ सिद्धि ना हय तबे ऐ वस्तु आपीलाएटामके, ये धनमणिर पतिर भ्रातुष्पुत्र वटे, अर्शे कि ना?

तृतीय[3]। यद्यपि धनमणि एखन पर्य्यन्त जीवमान थाके तवे ऐ वस्तुते उहार स्वत्वाकी आछे कि ना। उचित ये पण्डितगण मकद्दमार समुदाय कागज दृष्टि करिया वङ्गदेश चलित शास्त्रानुसारे व्यवस्था दाखिल करेण इति।

श्रीहरिःशरणम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतकष्टवरटघरनेलखिलीसाहेबधर्माभिकरण-लिखितविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितैतद्विवादविषयनिविष्टपत्रजातं चावलोक्य विविच्य च यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

उपरिलिखितपत्रान्तर्गतमुरुषिदा[4]वादाख्यनगरसम्बन्धिधर्म्माधिकरणीय-जयपत्रेणैकत्रिंशदङ्काङ्कितविचारपत्रेण तद्धर्माधिकरणनियुक्तपण्डितसंबन्धि-प्रश्नपत्रेण चैवं कोर्टापीलाख्यधर्म्माभिकरणीयजयपत्रेणैकादशाङ्काङ्कितविचारपत्रेण तद्धर्म्माभिकरणनियुक्तपण्डितसम्बन्धिप्रश्नपत्रेण च रामकृष्णमित्र-मरणानन्तरं तत्त्यक्तधनं गङ्गागोविन्दमित्रेण तत्पुत्रेणोत्तराधिकारित्वेन-प्राप्तमिति ज्ञातम्। अतो रामकृष्णमित्रस्वत्वास्पदीभूतयावद्धने तस्यैव

1. असम्मात—व्यप०।
2. असम्मातर—व्यप०।
3. द्वितीय—व्यप०।
4. मुरुसिदावादाख्य—व्यप०।

स्वत्वं जातम् । अतस्तस्यानपत्यस्य पत्नीमारभ्य पितृपर्य्यन्तानपत्यधनाधिकारिरहितस्य मृतस्य स्त्रोत्तराधिकारित्वेन तन्मात्रा धनमन्या तद्धनं प्राप्यायत्तत्वं सम्पाद्य[1] माणिक्यलालनाम्ने स्वदौहित्राय दत्तं चेत्, तदा तद्दानं सिद्धं भवितुं न शक्नोति, यतो दानपत्रे धनमन्या लिखितं मया स्वेच्छया तुभ्यमेतद्भाषायामष्टादशगण्डाशब्दप्रतिपाद्यं धनं दत्तम्, अतएव स्वेच्छया स्त्रिया दानाद्यधिकारस्योत्तराधिकारित्वेन संक्रान्तधने शास्त्रासिद्धत्वात् । यथा पतित्यक्ते पत्नीसंक्रान्ते धने पत्न्याः स्वेच्छया दानाद्यनधिकारस्तथापुत्रत्यक्तेऽपि मातृसंक्रान्ते धने मातुरपीति ॥ ० ॥—

अत्र प्रमाणम्—

स्त्रीणां स्वपतिदायस्तु उपभोगफलः स्मृतः ।
नापहारं स्त्रियः कुर्य्युः पतिदायात् कथञ्चन ॥—इति दायभाग-(पृ० १७३)विवादभङ्गार्णवादि(पृ० २ विवाभ० ३२१ क०)ग्रन्थधृतभारतवचनम् (१३।४७।२४) । १ ।

नापहारं स्त्रियः कुर्य्युः पतिदायात् कथञ्चनेति भारतादपहारशब्दार्थेन यथेष्टदानविक्रयादौ नाधिकारः—इति दायरहस्यलिखनम् । २ ।

यद्वा पत्नीत्युपलक्षणम् । स्त्रीमात्राधिकारेऽयमर्थो बोद्धव्य—इतिदायभागादिग्रन्थलिखनम् ॥ ३ ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरानुसारेण शास्त्रासिद्धदानपत्रलिखनानन्तरं धनमणी तद्दानपत्रलिखितवस्तुनः पुनरेतद्धर्म्माधिकरणप्रत्यर्थिनां पितुः[2] डोमनचट्टोपाध्याय(स्य) सन्निधौ विक्रयं कृतवती स्याच्चदेतादृशविक्रयकरणे तस्या धनमण्याः क्षमता नासीत्, यतो विक्रयपत्रे स्वीकृतसंक्रान्तधनस्य[3] विक्रये शास्त्रोक्तावश्यकानां हेतूनामलिखनात् प्रभुसमर्पितावशिष्टपत्रआदेरप्राप्तत्वाच्च शास्त्रोक्तविक्रयहेतोर्विना पतित्यक्तधने यथा पत्न्या विक्रये नाधिकारस्तथा पुत्रत्यक्तधने मातुरपि नाधिकारः । एवञ्चोपरिलिखितप्रकारेण

---

१. सम्पाद्य—व्यप० ।　　　　२. पितु०—व्यप० ।
३. °नस्य शास्त्रोक्तहेतूना विक्रये आवश्यकानामलि०—व्यप० ।

दानविक्रययोरसिद्धौ सत्यां विवादास्पदीभूतधनान्तर्गतगङ्गागोविन्दमित्रस्य पूर्व्वस्वत्वास्पदीभूतभाषायामष्टादशगण्डाशब्दप्रतिपाद्यपरिमितवस्तुषु यदि गङ्गागोविन्दमित्रस्य पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्य वङ्गदेशचलितदायभागादिग्रन्थलिखितक्रमेण पत्नीमारभ्य पितामहपुत्रपर्य्यन्तानपत्यस्य धनाधिकारिणो न सुस्तदैतद्धर्म्माधिकरणार्थिनां गङ्गागोविन्दमित्रस्य पितामहपौत्राणामधिकारो भवतीति ।

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरप्रमाणत्रयम् । तदभावे पितामही तदभावे पितुः सोदरतदभावे पितुर्वैमात्रेयस्तदभावे पितृसोदरपुत्रस्तदभावे पितुर्वैमात्रेयपुत्रः— त्यादि श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकालिखनम् ।

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि धनमयी एतत्कालपर्य्यन्तं जीवति तदा विवादास्पदीभूतधनान्तर्गतभाषायामष्टादशगण्डाशब्दप्रतिपाद्यपरिमितं यद्रायकृष्णमित्रमरणोत्तरं स्वपुत्रेण गङ्गागोविन्दमित्रेण प्राप्तं तद्धने धनमय्या मातृत्वेन स्वत्वमेव, यतो गङ्गागोविन्दमित्रस्य पुत्रपौत्रप्रपौत्ररूपापत्यपत्नीदुहितृदौहित्रपर्य्यन्तानपत्यधनाधिकारिराहित्यात्[1] प्रमुसमर्पितप्रजातैरवगगादुपरिलिखितप्रकारेण दानविक्रययोरसिद्धत्वाच्च—इति वङ्गदेशचलितदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकाविवादभङ्गार्णवदायरहस्यादिग्रन्थानुसारिणी मत्या ।

तृतीयप्रश्नोत्तरप्रमाणम्—

*पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा तत्सुताः—*इत्यादि दाय(पृ १५१) भागादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् (२।१३५) ।

अत्र यद्यपि विवादास्पदीभूतं धनं भाषायामेकादशगण्डाधिकैकाणकपरिमितमिति विक्रयपत्रादिना ज्ञातम्, किन्तु तन्मध्ये भाषायामष्टादशगण्डाशब्दप्रतिपाद्यं यद्धनमय्या उत्तराधिकारित्वेन प्राप्तं तस्यैवेदमुत्तरं प्रसुसम-

१. ०राहित्यस्य—व्यप० ।

मितग्रन्थपत्रानुसारेण दत्तं, नावशिष्टस्य भाषायां त्रयोदशसप्तशाब्दप्रतिपादकस्य नैयकान्तविश्वासविक्रीतस्य तद्विषयकप्रमाणाभावात्—इतिनिवेदनमिति ।

श्रीज्जयतितराम् श्रीहरिःशरणम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

नम्बर २५६५

६०—रोवकारि मिसिल आदालते देयोानि सदर तारिख ९ माह आपरेल शन १८१८ इङ्गरेजी मोताबक २६ माह चैत्र शन १२३४ वाङ्गला रोज बुधवार ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत फटवरट थरनेल सिली साहेबेर बैठके ।

मुसम्मात ग्रानकोँयोर ओ जयाकोँयोर आपिलण्टान
दुखवहनसिंह ओ दोवदत्त रेस्पाडण्टान

आपिलण्टेर वकिलगण मौलवि गोलाम हजदाणी ओ लाला भाउधलाल, रेस्पाडण्टानेर वकिलगणेर मध्ये एक जन मदासुकपण्डित हाजीर आसिल । कल्य एइ मकर्दमा रोवकार हइया नालिशी आरजि पढ़ागिया दिवा अवसान प्रयुक्त स्थकित छिल, पुनराय अद्य उपस्थित हइया प्रविन्शान कोर्टेर बाकि कागज फयशला पर्य्यन्त ओ आदालते दाखिल हओया आरजि मजूरात ओ जवाव प्रभृति समस्त कागज गृहे आसोल । यथा ॥ मोकर्दमार सम्बन्धे चुडन्त हुकुम स(ा)देर हओनेर पूर्व्वे ॥ आदालतेर पण्डितगणेर स्थाने व्यवस्था लओन उचित हइल, अतएव हुकुम हइल ये एइ रोवकारि नकल मकर्दमार समुदय कागज सम्बलित पत्र सओयाले ए आदालतेर पण्डितगणे हाओला कराजाय ये मुसम्मात ग्रानकोँयोर आपन पिता केहरसिंहेर त्यक्त स्थावरवस्तुते ए आदालतेर डिकरि अनुसारे

उत्तराधिकारि प्रकारे कावेज हइयाछे, ओ मुसम्मात मजकुरा बन्धुसिंह नामे एक पुत्र ओ उम्मेदकौँओर ओ देओमुरत ओ नन्नाकौँओर नामिक तिन कन्या वा त ओ उहार पुत्र बन्धुसिंह जयाकौँओर नामे एक स्त्रि राखिया निःसन्तान मरिल। तत्परे मुसम्मात देओमुरत द्वितीय कन्या हुइ पुत्र अर्थात् रप्पाइएटान-के राखिया मृत्यु हइल, ओ ताहार पर उहार तृतीय कन्या मुसम्मात नन्नाकौँओर मृत बन्धुसिंहेर स्त्री मुसम्मात जया-कौँओरके ऐ समुदाय वस्तु किम्बा ताहार हइते किञ्चित दान करणेर क्रम निःसन्तान मरिल। अतएव मैथिल ओ पश्चिम देशेर चलित शास्त्रानुसारे ज्ञानकौँइरके (अपत्य) ना थाकाते तवे ताहार मृत्युर पर उहार सत्याधिकारि कोन व्यक्ति हइवेक। उचित ये कागज-सकल दृष्टी ओ अनुमोदन करिया एइ सओयालेर जवाव शास्त्रेर प्रमाण सहित सप्ताह मध्ये दाखिल करि(वे)न इति।

श्रीर्जयतितराम्

जवाबव्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतकटवरटयरनेलविलीश्राहेयधर्म्माधिकरणलिखितविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितैतद्विवादविषयनिविष्टपत्रजातञ्चावलोक्य विविच्य च यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

मत्सुसमर्पितपत्रान्तर्गतपद्विंशत्यङ्काङ्कितपूर्व्वलिखितैतद्धर्म्माधिकरणोभयपत्रानुसारेण केहरसिंहाजितसिंहयोर्विभक्तयोर्द्वयोः सोदरभ्रात्रोर्मध्ये केहरसिंहस्य पुत्रपौत्रप्रपौत्रपत्नीपर्य्यन्तरहितस्य मृतस्य समस्तविभक्तस्थावरधनांशे तद्दुहितुर्ज्ञानकौन्वराख्याया उत्तराधिकारित्वेनाधिकारे जाते सति, ज्ञानकौन्वराख्याया मिथिलादेशचलितशास्त्रानुसारेण पश्चिमदेशचलितशास्त्रानुसारेण चोपरिलिखितपैतृकसमुदायस्थावरधनांशस्य तदन्तर्गतकिञ्चिद्धनस्य वा

मृतस्वपुत्रबन्धुसिंहपत्नी जयाकोमराख्यामुद्दिश्य दानकरणे क्षमता नास्ति, यतः शास्त्रे लिखितं पुत्रप्रपौत्रपर्य्यन्तरहितस्य मृतस्य विभक्तधने पत्न्या उत्तराधिकारित्वेनाधिकारे जातेऽप्यदृष्टार्थं विना तदन्तर्गतकिञ्चिद्धनस्यापि दानानधिकारः। अत एव पत्नीतो जघन्याया दुहितुरर्थात् पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्य मृतस्य विभक्तधने प्रधानाधिकारिण्याः पत्न्याः पश्चादधिकारिण्या उत्तराधिकारित्वेन विभक्तपितृधनाधिकारे जातेऽप्यदृष्टार्थं विना तदन्तर्गतकिञ्चिद्धनस्य सुतरां दानाधिकारित्वेनोपरिलिखितपैतृकसमुदायस्थावरधनांशस्य दानकरणक्षमतायाः सुतरां दूरापास्तत्वाद्विवादास्पदीभूतधनस्य ज्ञानकोमराख्याया स्त्रीधनत्वाभावाच्च। प्रकृते तु प्रभुसमर्पितपत्रान्तर्गतचत्वारिंशदङ्काङ्कितदानपत्रेणावशिष्टपत्रजातेश्चादृष्टार्थदानानवगमात्, पैतृकसमुदायस्थावरधनांशदानावगमाच्च। एवञ्चोपरिलिखितप्रकारेण ज्ञानकोमराख्याया उपरिलिखितपैतृकसमस्तस्थावरधनांशस्य तदन्तर्गतकिञ्चिद्धनस्य वा दानकरणक्षमतायामसत्यां, तस्या मरणोत्तरं तद्धनं धनिनः केहरसिंहस्योत्तराधिकारिणामेव भवति; यतः शास्त्रानुसारेण पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्य मृतस्य विभक्तधने पत्न्या उत्तराधिकारित्वेनाधिकारे जातेऽपि तन्मरणोत्तरं तद्धनं तत्पत्युरुत्तराधिकारिणामेव यथा भवति तथा शास्त्रविवेचनया पुत्रादिपत्नीपर्यन्तरहितस्य मृतस्य विभक्तधने दुहितुरुत्तराधिकारित्वेनाधिकारे जातेऽपि तन्मरणोत्तरं तद्धनं तत्पितुरुत्तराधिकारिणामेव भवति। प्रकृते तु मिथिलादेशप्रचलितशास्त्रानुसारेण प्रभुसमर्पितपत्रान्तर्गतवंशावलीपत्रलिखितस्य धनिनः केहरसिंहस्य पितुः कृष्णसिंहस्य पितृपितामहप्रपितामहादिसन्ततीनां मध्ये यः कश्चित् केहरसिंहस्यासन्नतरः सपिण्डो ज्ञानकोमराख्याया मरणोत्तरं तद्धने स एवाधिकारी भविष्यति, यतो ज्ञानकोमराख्यायाः पितुर्धनिनः केहरसिंहस्योत्तराधिकारित्वं प्रमाणलिखितानाम्, अर्थात् ज्ञानकोमराख्याया मृतपुत्रबन्धुसिंहपत्न्या जयाकोमराख्याया एवं तत्प्रथमकन्याया उमेदकोमराख्याया एवं तद्द्वितीयकन्याया देवमूर्त्तिकोमराख्यायाः पुत्रयोरर्थादेतदभियोगाधिकरणप्रत्यर्थिनोरेव, एतद्भिन्नानामुपरिलिखितवंशावलीपत्रलिखितानां मध्ये कस्यचिदपि मिथिलादेशप्रचलितशास्त्रानुसारेण न भवति, यतो मिथिलादेशप्रचलितशास्त्रानुसारेण धनाधिकारिशृङ्खलायां

मेतादृशानां पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्य सम्बन्धिनामुल्लेखाभावात्, पश्चिमदेशचलितशास्त्रानुसारेणोपरिलिखितवंशावलीपटकलिखितसुतोसिंहाख्यो, यो धनिनः केहरसिंहस्य दौहित्रः, स यदि ज्ञानकोमराख्याया मरणोत्तरं स्थास्यति तदा तस्याधिकारो भविष्यति, यतः प्रश्नपत्रलिखितानामुपरिलिखितानामेवमुपरिलिखितवंशावलीपटकलिखितानामन्येषां च पश्चिमदेशचलितशास्त्रानुसारेण ज्ञानकोमराख्यायाः पितुर्धनिनः केहरसिंहस्योत्तराधिकारित्वं न भवति, यतः पश्चिमदेशचलितशास्त्रानुसार्यपुत्रधनाधिकारिशृङ्खलायामेतादृशापुत्रसम्बन्धिनामुल्लेखाभावात्—इति मिथिलादेशचलितविवादचिन्तामणिविवादरत्नाकरविवादचन्द्रादिग्रन्थानुसारिणी पश्चिमदेशचलितमिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारमाधवव्यवहारमयूखव्यवहारकौस्तुभादिग्रन्थानुसारिणी च व्यवस्था।

अत्र प्रमाणम्—

भारते (१३।४५।१२) :—

स्त्रीणां[1] स्वपतिदायस्तु उपभोगफलः स्मृतः।
नापहारं स्त्रियः कुर्युः पतिवित्तात् कथञ्चन॥

अपहारमैच्छिकदानविक्रयादिकम्—इति विवादचिन्तामणि(पृ० १३८) लिखनम्॥ १॥

यथेष्टविनियोगार्थं तु कन्यायाः पितृधनग्रहणं दूरापास्तमेव—इति वीरमित्रोदय (पृ० ६५६) ग्रन्थलिखनम्॥ २॥

अपुत्रा शयनं भर्तुः पालयन्ती गुरौ स्थिता।
भुञ्जीतामरणात् क्षान्ता दायादा ऊर्ध्वमाप्नुयुः॥

इति विवादरत्नाकरवीरमित्रोदयादिग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् (कारमृ० ९२१)॥३॥

स्वपुत्रस्तदभावे पौत्रस्तदभावे साध्वी भार्या तदभावे दुहिता तदभावे माता तदभावे पिता तदभावे भ्राता तदभावे तत्पुत्रस्तदभावे आसन्न-

---

१. स्त्रीणां ■ पतिदायाद्यमुपभोगफलं स्मृतम्—महाभा०।

सपिण्डस्तदभावे यथाक्रमं व्यवहितसपिण्डः—इत्यादि विवादचिन्तामणि (पृ० २४३) ग्रन्थलिखनम् ॥ ४ ॥

दुहित्रभावे दौहित्रो धनभाग्—इति मिताक्षरा (पृ० २२१) ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥ ५ ॥

दुहित्रभावे दौहित्रः—इति वीरमित्रोदयग्रन्थलिखनञ्चेति ॥६॥

श्रीर्ज्जयतितराम्	श्रीहरिःशरणम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण	श्रीरामतनुनाम्नविद्यावागीशेन

सओयाल—

६१—यदि कोन गृहस्तेर कन्याके ताहार पिता माता मूल्यादि ना लइया काहारो नफरेर सङ्गे विवाह देय, एवं विवाह देओया कालिन ऐ कन्यार पिता-माता ऐ कन्याके दासि करिया देओयार कोनो लिखित पडित अथवा अङ्गिकार ना करे, तवे सेइ कन्या ओ ताहार गर्भजात सन्तानसकल यथाशास्त्र दासि ओ नफर हइते पारे कि ना? एवं कोन शास्त्रानुसारे ए विषयेर निषेध कि विधिर व्यवस्था हय सेइ व्यवस्थार श्लोक ओ भाषाते विवरण अवगत हओया आवश्यक[1] इति।

प्रस्तुसमर्पितमप्रश्नमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

यत्र कस्यचिद् गृहस्थस्य कन्याया विवाहस्तत्पित्रा मात्रा वा मूल्यादिकमगृहीत्वा कस्यचिन्नफरशब्दवाच्येनार्थाद्दासेन सह कारितः, एवं विवाहसमये तस्याः पित्रा मात्रा वा दासीत्वेन दानस्य किञ्चिल्लिखितादिकमथवा स्वीकरणं न कृतं स्यात्तत्र यदि प्रश्नपत्रलिखितगृहस्थशब्द[2] (वाच्यः?) कस्यचिद् दासो(न)भवति, तत्कन्यापि कौमारावस्थायां कस्यचिद् दासी न स्थिता तदा, यदि वा प्रश्नपत्रलिखितगृहस्थशब्देन (वाच्यः) कस्यचिद्दासो

---

१ आवश्यक—व्यव०।

२. ०शब्देन कस्य०—व्यव०।

भवति, तत्कन्यापि कौमारावस्थायां कस्यचिद्दासी स्थिता, कस्यचिद्दासेन सह विवाहे तस्याः स्वामिनो यद्यनुमतिस्तदा च सा परिणेतृदासेश्वरस्य दासी भवितुं शक्नोति । एवञ्च सत्येतत्सत्त्वद्वये तस्या गर्भजाताः सन्ताना अपि तत्परिणेतृदासेश्वरस्य दास्यो दासाश्च भवितुं शक्नुवन्ति, उपरिलिखित-प्रकारेण तस्या दासीत्वेन तद्गर्भजातसन्तानानामपि शास्त्रोक्तपञ्चदश-दासान्तःपातिगृहजातात्मकप्रथमदासत्वात् । यदि च सा कन्या कौमारा-वस्थायां कस्यचिद्दासी स्थिता किन्तु कस्यचिद्दासेन सह विवाहे तस्याः स्वा-मिनो नानुमतिस्तदा च सा कन्या परिणेतृदासेश्वरस्य दासी भवितुं न शक्नोति, किन्तु पूर्व्वस्वामिन एव दासी भवति; एवं सत्येतस्तत्ते गर्भ-जाताः सन्ताना अपि एकस्य दासोत्पन्नत्वेन द्वितीयस्य दास्युत्पन्नत्वेन च द्वाभ्यामेव स्वामिभ्यां विभज्य ग्रहीतव्या भवन्ति—इति यत्प्रदेशाचलित-विवादभङ्गार्णवक्रमसंग्रहादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

दासेनोढा त्वदासी या सापि दासीत्वमाप्नुयात् ।
यस्माद् भर्त्ता प्रभुस्तस्याः[1] स्वाम्यधीनः प्रभुर्यतः ॥

इतिविवादभङ्गार्णव (१ विवा० पृ० ५२९ क)(दाय)क्रमसंग्रहादि-(दायक०पृ० ५४)ग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् (कास्मृ० ७२५) ।१।

सा च द्विविधा । कस्यापि न दासी, अन्यदासी च । तत्र पूर्व्वा दासोढात्वमात्रेणैव दासेश्वरस्य दासी, परा च *तत्प्रभोरनुमतिसहकारेण* अनुमता च न दासी—इति क्रमसंग्रहग्रन्थलिखनम् (पृ० ५४) । २ ।

गृहजातस्तथा क्रीतो लब्धो दायादुपागतः ।
अन्ना[2]कालभृतस्तद्वदाहितः स्वामिना च यः ॥
मोक्षितो महतश्चर्णाद् युद्धे प्राप्तः पणे जितः ।
तवाहमित्युपगतः प्रव्रज्या[3]वसितः कृतः ॥

---

१ तस्यान्—दारत्स० । २ ०प्रव्रज्यापसृत—नामसं० ।
३ भ्रानादिभ्रांस्तद्दाधक्तः स्वामिना न यः । भ्रयाच्च मोक्षितोऽनल्पाद् युद्धप्राप्तः पणे जितः—नामस० ।

भक्तदासश्च विज्ञेयस्तथैव वडवाभृतः[1]।
विक्रेता चात्मनः शास्त्रे दासाः पञ्चदश स्मृताः॥

इतिविवादभङ्गार्णव (१ विवा० ५१६ क) दायक्रमसंग्रहादि (दाक्रसं०—पृ० ५२) ग्रन्थधृतनारदवचनम् (नारसं०—पृ० ६६) ॥३॥ ० ॥ ० ॥

एवञ्च यद्यप्यनुमत्या[2] दासेन दासी परिणीता तदा च स्वस्वस्वामिनोरेव दासदास्यौ, तयोरपत्यन्तु द्वाभ्यामेव स्वामिभ्यां विभजनीयम्—इति (दाय)क्रमसंग्रहग्रन्थलिखनञ्चेति (पृ० ५५) ॥ ८ ॥ ० ॥

श्रीजयपतिशर्म
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

६२—सदर देओयानि आदालतेर द्वितीय हाकिम श्रीयुत बालक सुन्दर दास साहेबेर हजुर हइते अवाम-व्यवहार राजा शशीभूषणदेवरायेर पक्ष अशी ? कमलाकान्त चक्रवर्ति अपिलाण्ट गुरुगोविन्दचौधुरि रस्पाण्डण्टेर मकद्दमाय इङ्गरेजी १८२८ सालेर ११ माह सेप्टम्बर मताबक बाङ्गला १२३५ सालेर ३० माह भाद्र रोज शनिवारेर हओया रोबकारिर लिखित ऐ आदालतेर पण्डितगणेर नामे आपन्दा मिसिले जवाव दाखिल करणेर हुकुमे सओयाल—

सओयाल—

कागज-सकलेर द्वाराय पष्ट आछे ये पञ्चदेश निवासि राम शङ्कररराय नामिक एक व्यक्ति आपन जमिदारिर मध्ये एक ग्राम आपन माता राजराजेश्वरीर भरण ओ पोषणेर परिवर्त्ते याह्रा लगद् निर्दिष्ट छिल आपन माताके एइ प्रकार ओ एइ नियमे सोपर्द करिल ये ऐ ग्रामेर विक्रय कबाला कृष्णप्रसादनन्दी एक

---

१ प्रमत्वादत्ता कृत—नारसं०। २ यद्यनुमत्या—दाक्रसं०।

व्यक्तीर बिनामे लिखिया अन्य कोन व्यक्तिके ताहा विक्रय ओ हेबा ना करण, ओ ऐ राजराजेश्वरि आपन जीवद्दशा पर्य्यन्त ताहार उपस्वत्वे भोगवान थाकन, ओ ऐ मुसम्मातेर मृत्युर पर ऐ ग्राम ऐ रामसङ्करेर पुत्रेर हस्तेन सम्बलित आपन मातार स्थान हइते एक किता एकरारनामा, ओ कृष्णप्रसादनन्दि फरजि व्यक्ति हइते ऐ मुसम्मातेर लिखिया देओया एकरारनामार मजमुन मतो द्वितीय एक किता एकरारनामा लिखाइया लइल। तत् परे यखन सरकारेर बाकी खाजानार जन्ये समुदय महालेर, याहा ये रामशङ्करराय ओ ताहार पुत्र मोहनचन्द्रेर नामे कालेकटरि सिरस्ताते लेखाजाय, निलामेर इस्तहार कालेकटरि सिरस्ता हइते लटके, तखन ऐ राजराजेश्वरि ऐ रामशङ्करेर अभिप्राय ओ फरजि व्यक्ति कृष्णप्रसादेर सम्मतिते ये ग्राम ऐ रामशङ्कर आपन माता मुसम्मात राजराजेश्वरिके नगद मास अन्नच्छादनेर परिवर्त्ते दियाछिल द्वितीय एक व्यक्तिर हस्ते सम्यक प्रकारे विक्रय करिल। ओ ऐ कृष्णप्रसादनन्दिर नाम हइते कवाला लेखा गेल। अतएव जिज्ञासा करा याइतेछे ये ऐ रामशङ्करेर पुत्र मोहनचन्द्र प्राप्तव्यवहार थाकने, ओ द्वितीय विक्रीर सम्बन्धे ताहार अनुमति ना थाकने, ओ ऐ मोहनचन्द्रेर अप्राप्त-व्यवहारे ये द्वितीय विक्रिर सम्बन्धे उहार अनुमति थाकने, फरजी व्यक्ती कृष्णप्रसादनन्दिर लिखिया देओया द्वितीय विक्रयपत्र, याहा रामशङ्कर ओ ताहार माता मुसम्मात राजराजेश्वरिर अभिप्राय मते हइयाछे, वङ्गदेश चलित शास्त्रानुसारे सिद्धि ओ सङ्गत वटे कि ना इति।

एतद्धर्म्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतआलकसुन्दररासस।हेबधर्म्माधि-करणलिखितप्रश्नप्रतिरूपपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रश्नपत्रलिखितप्रकारकरामशङ्कररायकर्त्तृकस्वस्वत्वास्पदीभूतसराजकर-स्थावरान्तर्गतैकग्रामसम्बन्धिप्राथमिकस्थलविक्रयस्यार्थात् स्वमात्रे राजराजे-

श्वर्यै यावज्जीवं तद्ग्रामोत्पन्नोपस्वत्वभोगार्थं तद्ग्रामसमर्पणस्य प्रश्नपत्र-
लिखितप्रकारकाभ्यां राजराजेश्वरीलिखितसंक्षिप्तपत्रकृष्णप्रसादनन्दिनामक-
व्यक्त्यन्तरलिखितसंक्षिप्ताभ्यां राजराजेश्वर्य्या यावज्जीवं तद्ग्रामोत्पन्नोप-
स्वत्वभोगोपयुक्तमात्रस्वत्वोत्पादकत्वपर्य्यवसायित्वेन तद्ग्रामसम्बन्धिन्यां भूमौ
रामशङ्कररायस्य स्वत्वाविनाशकत्वात्, प्रश्नपत्रलिखितप्रकारेण राजरा-
जेश्वर्यै तद्ग्रामसमर्पणेन रामशङ्कररायस्य तद्भूमौ स्वत्वविनाशकयोर्वास्तवं
दानविक्रययोरनवगमाच्च, एवञ्च सति पितृस्वत्वे विद्यमाने पुत्रस्वत्वाभाव-
बोधकवङ्गदेशचलितशास्त्रेण प्रश्नपत्रलिखितप्रकारेण तद्ग्रामसम्बन्धिन्यां
भूमौ मोहनचन्द्रस्य पितृ रामशङ्कररायस्य स्वत्वे विद्यमाने मोहनचन्द्रस्य
स्वत्वोत्पत्तिर्न भवति । नहि राजराजेश्वरीलिखितसंक्षिप्तपत्रेण राजराजेश्वरी-
मरणोत्तरं मोहनचन्द्रस्य स्वत्वं रामशङ्करस्य स्वत्वविनाशो वा तद्ग्रामे तद्-
ग्रामोत्पन्नोपस्वत्वे वा भवति । उपरिलिखितप्रकारेण राजराजेश्वर्य्या यावज्जीवं
तद्ग्रामोत्पन्नोपस्वत्वमात्रस्वामित्वेन तद्ग्रामस्वामित्वाभावात् स्वमरणोत्तरं
तद्ग्रामोत्पन्नोपस्वत्वास्वामित्वात् राजराजेश्वरीलिखितैतादृशसंक्षिप्तपत्रस्य धर्म्म-
शास्त्रोक्तस्वत्वोत्पादकहेत्वनन्तःपातित्वाच्च । एवञ्च सति जीवन्त्यां राजरा-
जेश्वर्य्यां रामशङ्कररायेच जीवति सति सर्व्वथैव तद्ग्रामस्य तद्ग्रामोत्पन्नोप-
स्वत्वस्य चास्वामिनो मोहनचन्द्रस्य तद्ग्रामसम्बन्धिद्वितीयविक्रये अनुम-
तेरनावश्यकत्वेन तस्यप्राप्तव्यवहारतायां तदनुमतावसत्यामप्राप्तव्यवहारतायां
च तदनुमतौ सत्यामपि द्वितीयविक्रयस्य तद्ग्रामसम्बन्धिभूस्वामिरामशङ्कर-
रायाभिप्रायेण कृष्णप्रसादनन्दिनामकव्यक्त्यन्तरानुमत्या चोपरिलिखितप्र-
कारेण यावज्जीवं तद्ग्रामोत्पन्नोपस्वत्वस्वामिराजराजेश्वरीकृतत्वेनैव यदा
राजग्राह्यकरग्रहणार्थं समुदायस्य सराजकरस्यावरस्य यत्तद्ग्रामशङ्कररायतत्पु-
त्रमोहनचन्द्रयोर्नाम्ना केलटरीमञ्जकाबस्थाने लिखितं तस्य निलामसंज्ञक-
विक्रयाज्ञा तत्स्थानाधिपतिना दत्ता,तदा उपरिलिखितप्रकारेण जातत्वेन च
सिद्धेर्निष्प्रत्यूहत्वेन तत्प्रमाणभूतं कृष्णप्रसादनन्दिनामकव्यक्त्यन्तरनाम्ना
लिखितं द्वितीयविक्रयपत्रं यत्तद्राजराजेश्वरीरामशङ्करोभयसम्मत्या जातं शा-
स्त्रानुसारेण सिद्धं सङ्गतञ्च भवति, यतः स्वामिसम्मत्या अस्वामिकृतोऽपि
विक्रयः शास्त्रसिद्धः—इति वङ्गदेशचलितमनुकुल्लूकभट्टकृतमन्वर्थमुक्तावली-

दायभागदायतत्त्वविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

योगाधमनविक्रीतं योगदानप्रतिग्रहम् ।
यत्र वाप्युपधिं पश्येत्तत्सर्वं विनिवर्त्तयेत् ॥

इति मनुवचनम् (८,१६५) ॥ १ ॥

योगशब्दश्छलवाची । छलेन ये बन्धकविक्रयदानप्रतिग्रहाः क्रियन्ते न तत्त्वतो, अन्यत्रापि निःक्षेपादौ यत्र छद्म जानीयात्,वस्तुतो निःक्षेपादि न कृतं तत्सर्व्वं निवर्त्तते । इति मन्वर्थमुक्तावल्यां (पृ० ३०२) कुल्लूकभट्टव्याख्यानम् ॥ २ ॥

पितर्य्युपरते पुत्रा विभजेयुर्धनं पितुः ।
अस्वाम्यं हि भवेदेषां निर्दोषे पितरि स्थिते ॥

इति दायभाग(पृ० १३)दायतत्त्व(पृ० ३)विवादभङ्गार्णवादि(२ विवा० ५ क)ग्रन्थधृतदेवलवचनम् ॥ ३ ॥

सप्त वित्तागमा धर्म्म्या दायो लाभः क्रयो जयः ।
प्रयोगः कर्म्मयोगश्च सत्प्रतिग्रह एव च ॥ इति मनुवचनम् (१०,११६) ॥ ४ ॥

स्वभागान् यदि दद्युस्ते विक्रीणीयुरथापि वा ।
कुर्य्युर्यथेष्टं तत्सर्व्वमीशास्ते स्वधनस्य वै ॥

इति दायभागादि(पृ० ३५)ग्रन्थधृतनारद (१३।४२–४३)वचनम् ॥ ५ ॥

तथा च स्वामिनोऽनुमतिसत्त्वे तु अस्वामिकृतविक्रयोऽपि सिद्ध्यति व्यवहारोऽपि तथा–इति विवादभङ्गार्णव(१ विवा०२०३ ख) लिखनञ्चेति ॥ ६ ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

श्रीज्जयपतितराम्	श्रीहरिःशरणम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण	श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

६३—रोवकारि मिसिल आदालत देओयानी सदर तारिख २० माह माइ सन १८२८ इ० मोतावक ८ माह ज्यैष्ठ सन १२३५ वाङ्गला रोज मङ्गलवार। एइ आदालतेर द्वितीय हाकिम श्रीयुत आलक सुन्दर रास साहेबेर वैठके—

रत्नसिंह साएल

साएल हाजिर आसिल। साएलेर सओयाल एक आना छय दाम तेर कौडी नओ चुडिर। मकर्दमा ताहार त्रिगुण उपस्वत्व मयलग १३२१॥/॥४ उनिष दामा तिन कौडीर तायदादे खास आपिल मञ्जुर करणेर विषय एलाके आजिमावादेर प्रविनसन कोटेर हाकिमगणेर नामे हुकुम सादर हओनेर प्रार्थनाय मसम्मात धुपु ओ फथेसिंह ओ नियधारिसिंह ओ धोकलसिंह ओ कानायासिंहेर पक्षेर आपन नामिक मोक्तारनामा ओ एइ सनेर फेरवओरि माहेर ९ तारिखेर लिखित अजिमावादेर आपील आदालतेर एक कीता रोयकारिर नकल ओ ई १८२२ शालेर डिसम्बर मासेर १६ तारिखेर लिखित जेला वेहारेर रेजष्टर साहेवेर डिगरिर नकल एक केता ओ ई० १८२५ शालेर माइ मासेर ११ तारिखेर लिखित ऐ जिलार जज साहेवेर डिगरिर नकल सहित ये गत दिवस हुजुरे दाखिल हइयाछिल अद्य दृष्ट आसिल। यथा शाएलेर सओयालेर सम्बन्धे वृत्तान्त हुकुम सादर हओनेर पूर्व्वे ए आदालतेर पण्डितदिगेर उपर सओयाल करा उचित बोध हइल, अतएव हुकुम हइल ये एइ रोयकारिर नकल ए आदालतेर पण्डितगणके एइ हुकुमे अर्पन करा जाय ये निचेर लिखित सओयालेर जवाव एक सप्ताह मध्ये दाखिल करेन।

सओयाल—यद्यपि जिले वेहार निवासिनी हिन्दु एक स्त्री आदालत हइते आपन पतिर हिस्या वावत एक आना छय दाम तेर कौडी नओ कुडी जमिदारिर डिगरि हासिल

करिया ऐ रकमेर भूमि सकल स्वतन्त्र करिया लश्रोनेर ओ ऐ डिगरि मते ताहार उपर दखिल हश्रोनेर अनुमति डिगरिते लिखा थाकनेश्रो आपन हिस्यार भूमि सकल पृथक करिया ना लइया हिस्यार सदी मते ताहार उपस्वत्व लइया पुत्र सन्तान ना राखिया मरे, एवं ऐ मृत स्त्रीर कन्या ओ कन्यार पुत्रगण आपनादिगके ऐ हिस्यार स्वत्वाधिकार ओ एवं ऐ स्त्रीर पतिर भ्रातार सन्तानरा ऐ हिस्या आवश्यक थाकन यज्ञहारे ऐ मृत स्त्रीर कन्या ओ कन्यार पुत्रगणेर स्वत्वेर अस्वीकारे आपनादिगके ऐ रकमेर स्वत्वाधिकार करार देय—एमत अवस्थाय डिगरि हश्रोया रकम वएटक किम्वा अवएटक बोध हवेक, ओ ऐ मृत स्त्रीर कन्या ओ दौहित्रगणके अथवा ताहार पतिर भ्रातार सन्तान-गणके अर्पिवेक इति ।

श्रीर्जयतितराम्

जवाबव्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतश्रालकसुन्दरयाघसाहेबधर्म्माधि-करणलिखितविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्त-दनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

प्रभुकृतप्रश्नपत्रलिखितवृत्तान्ते यदि तत्प्रभुपत्रलिखितायाः स्त्रिया जीवतः पत्युरंशो विभक्तो जातः स्यात्तन्मरणानन्तरं तस्य पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहित-त्वेन तत्पतिभ्रातृपुत्रादिभिर्बलात्कारेण विभक्तं तत्पत्यंशं गृहीत्वा समुदायध-नमस्माकं साधारणमेव, नात्र विभागो जातः, अतएवेयं[1] पत्यंशयोग्यं प्राप्तुं नार्हतीत्युक्त्वा[2] तस्यै विभक्तः पत्यंशो न दत्तश्चेत्तदा यदि सा धर्म्माधिकरणे निवेदनं कृत्वा स्वपत्युर्विभक्तांशस्य जयपत्रं प्राप्तवती, तज्जयपत्रलिखित-धनस्य पृथक्कृत्य[3] ग्रहणस्यान्ते सति[4] तज्जयपत्रे लिखिते सत्यपि सा पृथक्-

१. °अत्र वेयं—व्यप० । २. प्राप्तुं नार्हतीत्युक्त्वा त वि०—व्यप० ।
३. पृथक्०—व्यप० । ४. ग्रहणस्यान्तमतो तज्जयपत्रे लिखिनाया सत्यमपि—व्यप० ।

-कृत्य तद्गृहीत्वा तदुपयुक्तोपस्वत्वं गृहीत्वा च मृताचेत् तथापि तत्क्रयपत्र-लिखितधनं विभक्तमेवावगम्यते। एवं[1] मृतायास्तस्याः स्त्रिया दुहितुस्त-दभावे दौहित्राणां तत्राधिकारस्तस्याः पत्युर्भ्रातृपुत्रादीनां नाधिकारः। यदि च तस्याः स्त्रिया जीवतः पत्युरंशो विभक्तो न जातश्चेत्तदा प्रभुकृत प्रश्नपत्र लिखितप्रकारेण तया अविभक्तधने पतियोग्यांशस्थावरोत्पन्नोपस्व त्वग्रहणेऽपि तत्क्रयपत्रलिखितधनमविभक्तमेवावगम्यते। एतत्पक्षे तद्धने तस्याः पतिभ्रातृपुत्रादीनामधिकारः, न तु तद्दुहितृणाम्, तदभावे दौहि-त्राणां वा—इति बेहाराख्यप्रदेशचलितमिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारमा-धवव्यवहारमयूखव्यवहारकौस्तुभमिताक्षराटीकासुबोधिनीव्यवहाराध्यायबाल म्भट्टकृतमिताक्षराटीकादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था।

अत्र प्रमाणम्—

विभागो नाम द्रव्यसमुदायविषयाणामनेकस्वाम्यानां तदेकदेशेषु विषयतया व्यवस्थापनम्—इति मिताक्षरा (पृ० १९७) ग्रन्थलिखनम् ॥१॥

विभागशब्दस्त्वनेकस्वाम्यानां द्रव्यसमुदायविषयाणां तत्तदेकदेशे व्य-वस्थापने शक्तः—इति वीरमित्रोदय (पृ० ५२२) ग्रन्थलिखनम् ॥२॥

पत्न्यभावे दुहितरोऽपुत्रविभक्ता संसृष्टिधनभाजः (विमि० पृ० ५५६)। *दुहितुरभावे दौहित्रः*—इति वीरमित्रोदयग्रन्थलिखनम् (पृ० ६६१)॥ ३॥

एवं दौहित्रभ्रातृसुतसमवाये मृतस्य विभक्तत्वे दौहित्रस्य बलवत्त्व-स्यशाहरणे सत्त्वेऽपि पिण्डादौ स एव बलवान्। अविभक्तत्वे (तु) तद्-भ्रातृसुतानामेवांशहरत्वादपि—इति व्यवहाराध्यायस्य मिताक्षराटीकायां बालम्भट (पृ० ८२०) लिखनञ्चेति ॥ ४॥

श्रीजर्जयतितराम्	श्रीहरिः शरणम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण	श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

---

१. एत—व्यप०।
२. ०तस विभक्तः—व्यप०।

६४—रोवकारि मिसिल आदालत दिमानि सदर तारीख ■ माह आगष्ट सन १८२८ अङ्गरेजी मतावक १४ माह श्रावण सन १२३(?) वाङ्गला रोज वृहस्पतिवार ओइ आदालतेर द्वितीय हाकिम श्रीयुत आलक सुन्दर रास साहेवेर वैठके—

गङ्गाधरवाचस्पति सायल

सायलेर उकील मुनसी फकिर महम्मद हाजिर आइलो। सायलेर हस्त हइते फतेहपुर परगणार मौजे आमरसिर वन्धक खालास विषये वारानसेर कोर्ट आपीलेर हाकिमानेर हुकुमेर असम्मतिते ओ ताहार वन्धक हओनेर विषये एइ आदालत हइते उचित हुकुम सादर हओनेर प्रार्थनाय अन्य हेतु सम्वलित सइलेर सओयाल ओइ उकिलेर नामिक उकालतनामा ओ एइ सनेर आपरेल मासेर ˙ ˙ तारिखेर लिखित वारानशेर आपील आदालतेर रोवकारीर नकल ओ इ १८(?) सालेर आगष्ट मासेर ˙ ˙ तारिखेर लिखित जिला फतेपुरेर आदालतेर एक-किता रोवकारिर नकल सम्वलित याहा एइ मासेर २ तारिखे दाखिल हइयाछिल, अद्य दृष्टे आसिल। यथा साइलेर सओयालेर सम्वन्धे हुकुम सादर हओनेर पूर्वे शास्त्रेर विवरण ज्ञात हओन उचित वोध हइल, अतएव हुकुम हइल ये आदालतेर पण्डित-गण निचेर लिखित सओयालेर जवाव एक सप्ताह मध्ये दाखिल करेण।

सओयाल

यद्यपि वारानश देसेर कोन जमिदारि चारि सरीकेर मध्ये एकत्र ओ साधारणे थाके, ओ जमिदारीर सरीकगण मध्ये दुइ जने आपन २ अवसटक हिस्या काहारोनिकट वन्धक राखे, तवे एइ प्रकार वन्धक वारानस देसेर चलित शास्त्रानुसारे सिद्ध घटे

१. राव—न्यव०। २. माहा—न्यव०।

कि ना ? ओ ताहा सिद्धि हओन विषये अन्य सरिकेर अनुमति[1] आवश्यक कि ना इति।

एतद्धर्म्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतआलकसुन्दररासलाहेबधर्म्माधिकरणलिखितविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

यद्यपि वाराणसीप्रदेशीया काचित्सराजकरभूश्चतुर्णामंशिनां मध्ये एकत्र साधारणी वर्त्तते। अथ च सराजकरभुवोऽशिना मध्ये द्वावविभक्तस्वस्वांशं कस्यचिन्निकटे बन्धकीकृत्य स्तुतः, तदैतादृशबन्धककरणमवशिष्टयोर्द्वयोरंशिनोरनुमतिं विना सिद्धं न भवति। अतएव तत्सिद्धयेऽवशिष्टानन्तरानुमति[2]रावश्यकी—इति वाराणसीप्रदेशचलितमिताक्षराधीरमित्रोदयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था।

अत्र प्रमाणम्—

अविभक्तेषु द्रव्यस्य मध्यगतत्वादेकस्यानीश्वरत्वात् सर्वाभ्यनुज्ञा अवश्यं कार्य्या। विभक्तेषु तु (उत्तरकाले विभक्ताविभक्तसंशयव्युदासेन व्यवहारसौकर्य्याय सर्वाभ्युनज्ञा न पुनरेकस्यानीश्वरत्वेन। अतो) विभक्तानुमतिव्यतिरेकेणापि व्यवहारः सिद्ध्यत्येवेति व्याख्येयः—इति मिताक्षरा (पृ० २००) ग्रन्थलिखनम् ॥ १ ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

एइ सवाल सोलही अगस्ति १६ रोज शनिवार प्रहर पाँच घण्टाके वखत मिला, ओ एकैसा २१ अगस्ति रोज वृहस्पतिवार चारि घण्टाके **** व्यवस्था दाखिल किया सिरस्तामों।

श्रीर्जयतितराम् श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

---

१. अनुमति—व्य०।

२. सिद्धांशयन्तरानुमति—व्य०।

नं० २५५३

६५—रोवकारि मिसिल आदालत देख्योयानि सदर तारिख ११ माह आगस्त सन १८२८ इङ्गरेजि मताबक २८ माह श्रावण शान १२३५ याङ्गला रोज सोमवार ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत कटवरट थरनेल शेलि साहेबेर बैठके—

जयरामधामि स्वयं ओ मृत वस्रोरिधामिर स्त्री दिपुधामिनिर अप्राप्तव्यवहार पुत्र रामचन्द्र धामिर पक्षे अलि प्रकारे—

आपिलाण्ट

सुशानधामि रस्पाडण्ट

स्वयं आपिलाण्ट ओ रस्पाडरटेर उकिल मौलवि गोलाम एजदानि हाजिर आसिल। ए मकर्दमा इ १८२७ सालेर २५ आगस्त मासेर हओया रोवकारिर लिखि। सावेक द्वितीय हाकिमेर हुकुम मते एइ मासेर सावेक ६ आ ७ तारिखे रावकार हइया ओ जिलार आदालतेर दाखिल हओया कागज सकल १ लम्बर हइते तथाकार फयशला आ प्रवणसन कार्टर कागज सकल तथाकार फयशला ओ ए आदालतेर कागज सकल १ लम्बर हइते ३२ लम्बर तक पडागिया दिवा अवशान प्रयुक्त स्थकित छिलो, पुनराय अद्य उपस्थित हइया ए आदालतेर बाकि कागज सकल इं १८२७ शालेर २५ आगस्त मासेर लिखित सावेक द्वितीय हाकिमेर राय सम्वलित दृष्टे आसिल। जानागेल ये जिला वेहारेर जज साहेब ऐ जिलार आदालतेर पण्डित हइते व्यवस्था लओन परे आपिलाण्टेर पूर्व पुरुस भोलाधामि ओरफे लछुमन धामि ओ मृत वस्रोरिधामिर दावि डिक्रि करेन। प्रवनसन कोर्टेर हाकिमगण शास्त्रानुसारे भोलाधामि ओरफे लक्ष्मणधामिके मशम्मात नेवाजो मतोफिया पुष्यपुत्र करण ओ मशम्मात मजकुरा वृत्ति रामशिला प्रभृति ऐ धामिके दान करणेर क्षमता ना थाकन दान करिया जेलार डिगरि रद करियाछेन। किन्तु

तद्विवादप्रत्यर्थिनी नेवाजोनाम्नी दत्तोत्तरतात्पर्य्यार्थेन च भर्त्रनुमत्यभावस्य निश्चितत्वेनावगमात्। एवं तस्या नेवाजोनाम्न्या रामशिलावृत्तिप्रभृतिधनस्य तस्मै लक्ष्मणधामिप्रसिद्धभोलाधामिनाम्ने[1] दानकरणक्षमतापिवास्तवं नासीद् तत्पत्रजातान्तर्गततद्धर्म्माधिकरणार्थिनिवेदनपत्रेणैवं कोटांपीलाख्यधर्म्माधिकरणीयजयपत्रेणापि च एतद्धर्म्माधिकरणीयपञ्चविंशत्यङ्काङ्कितैतद्धर्म्माधिकरणप्रत्यर्थिनिवेदनपत्रेण च विवादास्पदीभूतस्य रामशिलावृत्तिप्रभृतिधनस्य तस्या नेवाजोनाम्न्याः पतिधनत्वेनावगमाद् अथ च तत्पत्रजातान्तर्गतैतद्धर्म्माधिकरणीयचतुरङ्काङ्कितमाधयरामनामकार्थिसम्बन्धिविवादनिविष्टनेवाजोनाम्नीप्रत्यर्थिनीदत्तोत्तरपत्रेणैवं कोटांपीलाख्यधर्म्माधिकरणीयपञ्चविंशत्यङ्काङ्कितैतद्धर्म्माधिकरणप्रत्यर्थिनिवेदनपत्रेण च विवादास्पदीभूतरामशिलावृत्तिप्रभृतिधनस्य तस्या नेवाजोनाम्न्याः पत्युः क्रमागतत्वेनावगमाच्च। [2]यतस्तदुपरिलिखितप्रकारकपतिधनस्योत्तराधिकारित्वेन पत्नीसंक्रान्तत्वेऽप्यदृष्टार्थं विना तदन्तर्गतकिञ्चिद्धनस्यापि पत्न्या दानानधिकारः। प्रकृते तु तत्पत्रजातान्तर्गतजिलाख्यधर्म्माधिकरणीयचतुर्विंशत्यङ्काङ्कितलक्ष्मणधामिप्रसिद्धभोलाधामिनामकोद्देश्यकदानपत्रेण विवादास्पदीभूतधनस्यादृष्टार्थकदानानवगमाद् परं विवादास्पदीभूतोपरिलिखितप्रकारकसमस्तपतिधनस्य स्वेच्छया स्वाभिप्रायेण च नेवाजोनाम्नीकर्तृकदानावगमाच्च—इति वेदाराख्यप्रदेशप्रचलितदत्तकमीमांसादत्तकचन्द्रिकादत्तकदीधितिमिताक्षरावीरमित्रोदयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

न स्त्री पुत्रं दद्यात् प्रतिगृह्णीयाद्वा अन्यत्रानुज्ञानाद्भर्तुः—इति दत्तकमीमांसा(पृ० ७)दत्तकचन्द्रिका(पृ० ३) दत्तकदीधितिप्रभृतिग्रन्थधृतवशिष्ठवचनम् ॥ १॥

अपुत्रा शयनं भर्तुः पालयन्ती गुरौ स्थिता।
भुञ्जीतामरणात् क्षान्ता दायादा ऊर्ध्वमाप्नुयुः॥

---

१. °धाम्ने—व्या०। २. प्रकृते तु—व्या०।

इति वीरमित्रोदयादि(वीमि० स पृ० ६२७)ग्रन्थधृतकात्यायन(कास्मृ० ९२१)वचनम् ॥ २ ॥

स्त्रीणां[1] स्वपतिदायस्तु उपभोगफलः स्मृतः ।
नापहारं स्त्रियः कुर्य्युः पतिवित्तात्[2] कथञ्चन ॥

इति वीरमित्रोदयादि(वीमि० स पृ० ६२८)ग्रन्थधृतभारत(१३।४७।२४) वचनञ्चेति ॥ ३ ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

श्रीर्जयतितराम् श्रीहरिःशरणम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

नं० २६८४

६६—रोयकारि मिसिल आदालत देओयानी सदर तारिख १९ माह आगस्त सन १८२८ ई मताबक माह ५ भाद्र सन १२३५ बाङ्गला रोज मङ्गलवार पे आदालतेर पञ्चम हाकिम श्रीयुत राबर्ट हालडन राटार साहेबेर बैठके ।

राजा गिरीशचन्द्रराय आपिलाण्ट

मृत राजा ईशानचन्द्रदेवरायेर अप्राप्तव्यवहार पुत्रगण राजकोवर नरहरिचन्द्रदेवराय प्रभृतिर ओछ राजा उमेशचन्द्रराय—
रेस्पाण्डेण्ट—

आपिलाण्टेर उकिल मुनसि गोलाम मण्डल, रेस्पाण्डेण्टर उकिल सदासुक पण्डित हाजिर आसिल । एइ मकद्दमा फल्य रोयकार हइया प्रविन्शल कोर्टेर कागजसकल १ लम्बर हइते तथाकार फयसाला पर्य्यन्त ओ ए आदालतेर दाखिल हओया

१. स्त्रीणां तु पतिदायाद्उपभोगफलं स्मृतम्—भार० । २. °पतिवृत्तात्—भार० ।

आरसि[1] मजुयात पडागिया दिवा अवशान प्रयुक्त स्थकित स्थिल। पुनराय अद्य उपस्थित हइया ए आदालते दाखिल हइया जवाब दृष्टे आसिल। देशेर सर्व्वकालेर डाँडा आछे ये हिन्दु जाति ये पितार मृत्युर परे ताहार धन ओ वस्तु उत्तराधिकारिगणेर मध्ये बण्टन हय। किन्तु ताहार बहिर्भूत उभयेर पूर्व्व पुरुष मृत राजा कृष्णचन्द्रराय आपन जीवद्दशाय कोर्टेर नथिते दाखिल हओया हेबानामाय आपन समुदाय वस्तु अन्य पुत्रगणेर नैराशे आपिलाण्टेर पितामह ज्येष्ठ पुत्र राजा शिवचन्द्ररायके लिखिया दियाछे। यद्यपि ऐ राजा हइते देशेर ओ नियमेर डाँडार बहिर्भूत हइयाछे, तथा[2] च राजार दानकारण ओ हेबानामा लिखिया देओनेर क्षमता ताहाके छिल। किन्तु यथा ऐ हेबानामाते लेखा गियाछे ये कोङर शम्भुचन्द्रदेवरायेर अधिक पुण्य शालियाना मवलग १५००० हाजार टाका ओ कोङर महेशचन्द्रदेवरायेर शालियाना मवलग १०००० हाजार टाका ओ कोङर नरहरिचन्द्रदेवराय अप्राप्तव्यवहार प्रभृतिर पिता कोङर ईशानचन्द्रदेवरायेर[3] शालिआना मवलग १०००० हाजार टाका ओ मृत भैरवचन्द्रदेवरायेर पुण्यपुत्र माधवचन्द्र देवरा(ये)र २५०० आडाइ हाजार टाका ओ मृत कोङर हरचन्द्रदेवरायेर पोष्यपुत्र यज्ञचन्द्ररायेर[4] शालिआना मवलग २५०० आडाइ हाजार टाका मशाहरा देयाइया पाइवेन इति, ओ हेबानामार मजमुनेर द्वाराय राजार आकांक्षा स्पष्ट बोध हइतेछेना ये मशाहरा पाइयागणेर मृत्युर पर ताहादिगेर उत्तराधिकारिगण मशाहरा[5] देइया पाइवेन, किम्वा बन्ध हइवेक। ओ आमार बुद्धे आइसे ये अन्य पुत्रगणेर जन्ये येसकल मशाहरा नियुक्त राखियाछे[5] ताहा फलितार्थे जामिदारि[6] प्रभृतिर अंशेर बदले ये ताहारो ओहार स्वत्वाधिकार छिल, हइयाछे। ओ ऐ हेतुते ऐ मशाहरा

---

१. आरजि—इति साधीयान् पाठः। २. तत्रा च—व्यप०।
३. देवराय—व्यप०। ४. यज्ञचन्द्रराय शालि०—व्यप०।
५. राखिया छे—व्यप०। ६. जमिदारिर प्रभृ०—व्यप०।

प(ा)इया गणेर उत्तराधिकारिगणसकल आपन आपन पूर्व्व पुरुष-गणेर सत्वे नियुक्त हओया मशाहरा, याहा उहादिगेर पूर्व्व पुरुष-गणेर जमिदारि प्रभृतिर हिस्यार बदले वटे, पाओनेर बलवान स्वत्वाधिकारि बोध हय। किन्तु ऐ हेबानामाय मशाहरार विस्तारित लेखा ना थाकन सन्देह प्रयुक्त ये ऐ मशाहरासकल ताहा पाइयागणेर जीवद्दशा पर्य्यन्त बहाल थाकिवेक, किम्वा ताहारदिगेर मृत्युर पर ओहादिगेर उत्तराधिकारिगणकेओ आसिवेक। ऐ विषयेर उचित हुकुम सादर हओया अनुचित। अतएव चूडान्त हुकुम सादर हओनेर पूर्व्व सन्देह छेदनार्थे एइ आदालतेर पण्डितगण हइते एइ विषय जिज्ञासा करण उचित हइल ये यद्यपि मृत राजा कृष्णचन्द्ररायेर अन्य पुत्रगण पितृ-जमिदारिर प्रभृति मालामालेर अंश हइते नैराश हइवेन, ओ जमिदारि प्रभृतिर अंशेर बदले उहारदिगेर जन्ये मशाहेरा नियुक्त हइल, ए प्रयुक्त मशाहेरा पाओइयागणेर जीवद्दशा तक, किम्वा ताहारदिगेर मृत्युर परे उहादिगेर उत्तराधिकारीगणकेओ ऐसकल मशाहेरा अर्पेन पण्डितगणेर विवेचनाय हय। उचित ये हेबानामार मजमुन सुन्दर प्रकार ज्ञात हइया ऐ विषयेर जवाब आएन्दा मङ्गलवारेर दश घण्टा पर्य्यन्त दाखिल करेन। अतएव हुकुम हइलो ये एइ रोवकारिर नकल हेबानामा सहित पण्डितगणके अर्पन करा जाय ओ अद्य मकद्दमा स्थगित थाके इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणपञ्चमाधिपतिश्रीयुतराबर्टहालक्नराटरिसादेवधर्म्माधिकरणलिखितविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नविरूपपत्रमवलोक्य तत्समर्पितदानपत्रार्थमवगत्य च यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यद्यपि मृतस्य राज्ञः कृष्णचन्द्ररायस्यान्ये ये पुत्राः पैतृकराजकरभु[1]-

---

१. °राजकर॰ —म्यय॰।

प्रभृतिधनांशाधिरस्ता[1] अत्र च सराजकरभूमभृतेरंशविनिमये तेषां प्रभुस-मर्पितविचारपत्रलिखितप्रकारेण वार्षिकं नियुक्तम् । अतो वार्षिकग्राहिणां मरणानन्तरं तेषामुत्तराधिकारिणामपि तत्समस्तवार्षिकसमर्पणमस्मद्विवेचने सिद्धं भवति, यतः प्रभुसमर्पितदानपत्रेण मृतराजकृष्णचन्द्ररायकर्तृकराज-शिवचन्द्ररायोद्देश्यकस्वत्वास्पदीभूतसराजकरभूमभृतिधनदानावगमात् । तत्र यदि राजशिवचन्द्ररायमरणानन्तरं तदुत्तराधिकारिणां तद्दानाधीनराजशिव-चन्द्ररायस्वत्वास्पदीभूतसराजकरभूमभृतिधनाधिकारस्तदा तद्दानपत्रलिखि-तवार्षिकदानाधीनदानपत्रलिखितवार्षिकग्राहिस्वत्वास्पदीभूतवार्षिकधने तेषां मरणानन्तरं तद्वार्षिकग्राह्युत्तराधिकारिणामप्यधिकारस्य शास्त्रसिद्धत्वाद्, दानस्य उभयत्र तुल्यत्वाद् वार्षिकस्य तेषां सराजकरभूमभृतिधनांशविनिम-यत्वात् । यतस्तद्दानेन वार्षिकग्राहिणां स्वत्वोत्पत्तिरत एव तदुत्तराधिकारिणां तद्वार्षिकस्य दायत्वेन स्वत्वोत्पत्तेर्निष्प्रत्यूहत्वात् । अत्र च दानपत्रलिखित-प्रकारेण स्वपुत्रभैरवचन्द्रदेवस्य औरसपुत्रापेक्षया जघन्यदत्तकपुत्रमाधव-चन्द्रदेवसंज्ञकस्वपौत्रोद्देश्यकवार्षिकदानेन स्वपुत्रहरचन्द्रदेवस्य दत्तकपुत्र-यशचन्द्रदेवसंज्ञकस्वपौत्रोद्देश्यकवार्षिकदानेन च एवं मया यो नियमः कृत-स्तस्योल्लङ्घनं तैरेवं त्वया च कदाचिदपि न कर्त्तव्यम्; यदि कश्चित् कदाचिदेतन्नियमस्यान्यथाचरणोद्युक्तस्तदा तदन्यथाचरणं लोकतो धर्म्मतश्च राजसन्निधौ चाग्राह्यमितिदानपत्रलिखनेन च मृतस्य राज्ञः कृष्णचन्द्ररायस्य तथाभिप्रायावगमाच्च—इति वङ्गदेशप्रचलितसमुदायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति—

अत्र प्रमाणम्—

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनम् । (५।१५२) ॥ १ ॥
सप्त वित्तागमा धर्म्या दायो लाभः क्रयो जयः ।
प्रयोगः कर्म्मयोगश्च सत्प्रतिग्रह एव च ॥—इति मनुवचनम् ।
(१०।११५)

---

[1] °निरस्तः—व्य० ।

ततश्च पूर्व्वस्वामिसम्बन्धाधीनं तत्स्वाम्योपरमे यत्र द्रव्ये स्वत्वं तत्र निरूढो दायशब्दः—इति दायभाग(पृ० ५)ग्रन्थलिखनञ्चेति ।

श्रीर्जयतितराम्	श्रीहरिःशरणम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण	श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

नं० २५९०

६७—रोयकारि मिसिल आदालत देओयानि सदर तारिख २५ माह सेतम्बर सन १८२८ इं मवाबक ११ माह आश्विन सन १२३५ बाङ्गला रोज बृहस्पतिवार ऐ आदालतेर प्रथम हाकिम श्रीयुत उलियम नसष्टर साहेबेर बैठके ।

जयमणिदेव्या प्रभृति	आपिलाण्टगण
फकिरचन्द्रचक्रवर्त्ति	रप्पाइण्ट

आपिलाण्टगणेर उकिल मुनशी होसेन आलि ओ रप्पाइण्टेर उकिलगण मुनशी दादार बक्स ओ प्राणचन्द्र चट्टोपाध्याय हाजीर आसिल। ए मकद्दमा एइ सनेर आगष्ट मासेर २६ तारीखे आमार बैठके रोयकार हइया ए मकद्दामार खास आपिल मञ्जुरिर हेतु सम्वलित इं १८२३ सालेर नवम्बर मासेर ८ ओ इं १८२४ सालेर जानओरि मासेर ७ तारिखेर लिखित ए आदालतेर रोयकारि-सकलेर दृष्टे बोध हइल ये ए मकद्दमा शास्त्रे सम्पर्क राखन ओ सालेर हेतुसकल यथार्थ विवेचना ना हओन दृष्टे ताहार आपिल मञ्जूर हइयाछे। अतएव समुदय कागज दृष्ट हओनेर पूर्व्वे ऐ आदालतेर पण्डितगण हइते निचेर सओयालसकलेर जवावे व्यवस्था लओन उचित बोध हइया हुकुम हइल ये एइ रोयकारिर नकल ए आदालतेर पण्डितगणके समर्पण करा जाय, ये ऐ

सओयालसकलेर जवाब वङ्गदेश चलित शास्त्रानुसारे एक सप्ताह मध्ये दाखिल करेण।

प्रथम सओयाल। यद्यपि एक व्यक्ति पैतृक देवोत्तर भूमिसकल ओ देवसेवार पालि राखिया आपन स्त्री ओ पुत्र ओ पुत्रवधुर समक्षे मरे, ओ कथक दिवसान्तर मृत व्यक्तिर पुत्र ओ माता ओ स्त्री राखिया निसन्तान मरे, तवे दुइ स्त्रिलोक अर्थात् सासुडि ओ पुत्रवधुर मध्ये के ऐ त्यक्त धनेर स्वत्वाधिकारिणी हइवेक।

द्वितीय सओयाल। यदि स्यात् मृत व्यक्तिर पुत्रेर मृत्युर पर सासुडि ओ पुत्रवधु अनक्य प्रयुक्त ऐ सकल देवोत्तर भूमि सेवार पालि हिस्या करिया लइया ताहार नादावि आपनादिगेर हिस्या दान विक्रयेर क्षेभतार नियमे लिखित ओ पढित करिया थाके, तवे शास्त्रानुसारे देवोत्तर भूमि ओ ठाकुरसेवार पालि बाबत एमत लिखित पढित सिद्धि कि ना?

तृतीय सओयाल। यदि दुइ स्त्रीलोक नादाविर लिखित पडितेर अनुसारे देवोत्तर भूमिसकल ओ सेवार पालिते दखिल हइया ऐ सासुडि आपन पुत्रवधुर जिवदशाते आपन अंशेर देवोत्तर भूमिसकल ओ सेवार पालि काहारो निकट वन्धक राखेन, किम्वा आपन परकालेर कर्मेर पैतृके अथवा पतिर ऋण परिशोधनार्थे काहार हस्ते विक्रय करिया थाके, तवे एमत विक्रयसिद्धि हइवे कि ना इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

जवावव्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणप्रथमाधिपतिश्रीयुतअलियमनसप्टरसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्यप्येकः कश्चित् पित्राद्यायत्तभूतां समस्तां देवत्रभूमिमथ च देवसेवायाः कालिकांशं च संरक्ष्य विद्यमानायां स्वपत्न्यां स्वपुत्रे च विद्यमाने पुत्रवध्वां च विद्यमानायां मृतः, ततः किञ्चित्कालानन्तरं मृतव्यक्तेः पुत्रोऽपि स्वमातरं स्वपत्नीं च संरक्ष्य निःसन्तान एव मृतः, तदा द्वयोः श्वश्रूपुत्रवध्वोर्मध्ये पुत्रवधूरेवोपरिलिखितप्रकारकधनेऽधिकारिणी[1] भवति, यत उपरिलिखितप्रकारेण पितृमरणोत्तरं तत्यक्तधने तत्पुत्रस्याधिकारे जाते सति तद्धनं तत्पुत्रस्यैव जातम्। अतस्तन्मरणोत्तरं तदुत्तराधिकारिणामेव तद्धनाधिकारः। तत्र च तदुत्तराधिकारिणां मध्ये तस्य प्रश्नपत्रलिखितप्रकारेण पुत्रपौत्रप्रपौत्राभावे तत्पत्न्या एव प्राधान्यमिति—

अत्र प्रमाणम्—

तत्र प्रथमं पुत्रस्तदभावे पौत्रस्तदभावे प्रपौत्रः—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीका(पृ० २१८)लिखनम् ॥ १ ॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा—इत्यादि दायभागादिग्रन्थ(दाभा० पृ० १२१)धृतयाज्ञवल्क्यवचनम् (२।१३५) ॥ २ ॥ ० ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्यपि मृतव्यक्तेः पुत्रस्य मरणानन्तरं श्वश्रूपुत्रवध्वोरनैक्येन तत्समस्तदेवत्रभूमिमथ च देवसेवायाः कालिकांशं च विभज्य ताभ्यां गृहीत्वा तस्य देवत्रभूम्यादेः स्वस्वेतरांशप्राप्त्यनिच्छया कल्पितस्वस्वांशदानविक्रयक्षमतानियमेन लिखितं कृतं स्यात्तदा शास्त्रानुसारेण देवत्रभूमेर्देवसेवायाश्च कालिकांशस्यैतादृशं लिखितं सिद्धं भवितुं न शक्नोति, प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रकारेण पुत्रवध्वा एव पतित्यक्तधनाधिकारित्वेन तस्याश्च तद्धने स्वेच्छयादानविक्रयैतादृशविभागकरणक्षमताविरहाद् देवत्रभूमौ देवभिन्नानां केषाञ्चिदपि स्वत्वाभावाच्चेति—

---

१. अधिकारी०—व्य० ।

अत्र प्रमाणम्—

देवस्वं ब्राह्मणस्वं वा लोभेनोपहिनस्ति यः ।

स पापात्मा परे लोके गृध्रोच्छिष्टेन जीवति ॥—इति मनु (११।२६) वचनम् ॥ १ ॥

प्रतिमादिदेवतार्थमुत्सृष्टं[1] धनं देवस्वम्—इति कुल्लूकभट्ट (पृ० ४३०) व्याख्यानम् ॥ २ ॥

अपुत्रा शयनं भर्त्तुः पालयन्ती गुरौ स्थिता ।

भुञ्जीतामरणात् क्षान्ता दायादा ऊर्ध्वमाप्नुयुः ॥—इति दायभागादि (पृ० १७१)ग्रन्थधृतकात्यायन(कात्स्मृ० ९२१)वचनम् ॥३॥०॥०॥

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि द्वे स्त्रियौ[2] स्वस्वेतरांशप्राप्त्यनिच्छया लिखितानुसारेण समस्तदेवत्रभूमौ[3] देवसेवांशे चायत्तत्वं सम्पादितवत्यौ[4], तयोर्मध्ये श्वश्रूर्जीयस्यां स्वपुत्रवध्वां तल्लिखनानुसारेण स्वांशभूतत्वेन मन्यमाना या देवत्रभूमेस्तथाविधस्य देवसेवांशस्य च कस्यचिन्निकटे बन्धकमथवा स्वस्वर्गार्थोल्लेखेनाथवा पतिकृतर्णापाकरणार्थोल्लेखेन विक्रयं वा कृतवती तदेतादृशविक्रयकरणं सिद्धं भवितुं न शक्नोति, प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रकारेण तस्यास्तद्धनस्वामित्वाभावाद्, द्वितीयप्रश्नोत्तरलिखितप्रकारेण स्वस्वेतरांशप्राप्त्यनिच्छालिखितस्यासिद्धत्वेन तल्लिखितानुसारेणापि तस्यास्तद्धनस्वामित्वाभावाच्च—इति यज्ञदेशाचलितमनुकुल्लूकभट्टकृतमन्वर्थमुक्तावलीदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृततद्दायभागटीकाविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

अस्वामिविक्रयं दानमाधिञ्च विनिवर्त्तयेत् ।—विवादभङ्गार्णवादि (१ विवा ३१७ ख)ग्रन्थधृतकात्यायन(कात्स्मृ०—६१२)वचनम् ॥ १ ॥

---

१. °देवतातदर्थमु०—व्यप० । २. स्त्रियो०—व्यप० ।

३ देवत्र देवत्र भूमो—व्यप० । ४. संपादितवत्यो०—व्यप० ।

अस्वामिना कृतो यस्तु दायो विक्रय एव वा ।
अकृतः स तु विज्ञेयो व्यवहारे यथा स्थितिः ॥–इति मनु (८।१९९)
वचनञ्चेति ॥ २ ॥

श्रीर्जयतितराम् श्रीहरिःशरणम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

६८—रोवकारि मिसिल आदालत देओयानि सदर तारिख १ माह दिसम्बर सन १८२८ ई मतायक १७ माह अग्रहायण सन १२३५ बाङ्गला रोज सोमवार ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत स्टयरट थरलेन सिलि साहेबेर बैठके ।

मृत बाबु अभयनारायणसिंहेर स्त्री मुसम्मात पुनितकोङर ओ कन्या मुसम्मात अस्वमेधकोङर— साएल ।

साएलानेर उकिलगण मुनशी दादार बकस ओ मुनशी महम्मद आलि खा ओ बाबु रूपनारायणसिंह, द्वितीय पक्षेर उकिल सदा॰ सुरु पण्डित हाजिर आसिल। एइ सनेर नवम्बर मासेर २८ तारिखे उभयेर दाखिल करा सओयाल प्रभृति ताहार सम्पर्कीय कागजसकल आमार बैठके उपस्थित हइया दिवा अवसान प्रजुक्त स्थगित छिल, अद्य पुनराय रोवकार हइया ऐ कागजसकल एइ सनेर २७ आगस्त ओ २५ सितम्बर मासेर लिखित द्वितीय हाकिम ओ पञ्चम हाकिमेर राय सम्वलित दृष्टे आसिल। तत् परे बाबु रूपनारायणसिंहेर उकिल ई १८२७ सालेर मार्च्च मासेर २४ तारिखेर निवेदित आजिमाबादेर प्रविनसन कोर्टेर दाखिल हओया जेला त्रिहोतेर कालेक्टर साहेबेर सओयालेर एक किता नकल ओ इङ्गरेजि छय किता चिटिर नकल दाखिल करिल, पडागेल। यथा

এই মকদ্দমার চূড়ান্ত হুকুম সাদর হওনের পূর্ব্বে এ আদালতের পণ্ডিতগণ হইতে ব্যবস্থা লওন উচিত হইল অতএব হুকুম হইল যে এ আদালতের দাখিল হওয়া কাগজসকলের সম্বলিত এই রোবকারির নকল এই হুকুমে এ আদালতের পণ্ডিতগণকে সমর্পণ করা যায় যে এ আদালতের পণ্ডিতগণ ঐ কাগজসকলের দৃষ্টে মৈথিল দেশের চলিত শাস্ত্রানুসারে নিম্নের লিখিত সওয়ালের জবাব এক সপ্তাহ মধ্যে দাখিল করেণ।

সওয়াল—

চৌধরিটী আজিতসিংহের তিন পুত্র। প্রথম বাবু দিগবিজয়সিংহ, দ্বিতীয় বাবু সর্ব্বজিতসিংহ, তৃতীয় বাবু উমরাওসিংহ ছিল। উমরাওসিংহ তৃতীয় পুত্র নিস্সন্তান মরিল। বাবু দিগবিজয়সিংহের পুত্র বাবু ভুপনারায়নসিংহ ও বাবু সর্ব্বজিতসিংহের পুত্র বাবু রঞ্জীতসিংহ উত্তরাধিকারিত্ব স্বত্বে আপনর পিতার মাল ও মিলকিয়তে ভোগবান্ ছিলেন। তাহারদ্বিগের মৃত্যুর পর বাবু ভুপনারায়ণসিংহের পুত্র বাবু অভয়নারায়ণসিংহ ও বাবু রঞ্জিতসিংহের পুত্র বাবু রূপনারায়ণসিংহ আপনর পিতার ত্যক্ত ধন ও বস্তুতে দখিলকার হইয়া বাবু অভয়নারায়ণসিংহ মুসম্মাত মুনিবকোঙর স্ত্রী ও মুসম্মাত অস্বমেধকোঙর কন্যা, আ তৃতীয় পুরুসিয় খুড়তাত ভ্রাতা বাবু রূপনারায়ণসিংহকে রাখিয়া মৃত্যু হয়। অতএব জিজ্ঞাসা যায় যে যদ্যপি বাবু অভয়নারায়ণসিংহ আপন মৃত্যুর পূর্ব্বে তালুক কেবল নারায়ণপুর প্রভৃতির অর্দ্ধেক-হিস্যার উপর আপন খুড়তুতা ভ্রাতা বাবু রূপনারায়ণসিংহের সাধারণে দখিল থাকিয়া মরিয়া থাকে তবে ঐ মৃত ব্যক্তির ত্যক্ত বস্তু কোন ব্যক্তিকে অর্থাৎ স্ত্রী, কিম্বা কন্যা, কিম্বা বাবু রূপনারায়ণসিংহকে অর্সিবেক। আ যদ্যপি ঐ মৃত ব্যক্তির ত্যক্ত অর্দ্ধেক হিস্যা তাহার মৃত্যুর পূর্ব্বে বিভাগ হইয়া ঐ মৃত ব্যক্তি বিভাগ অনুসারে তাহার উপর ভোগবান হইয়া মরিয়া থাকে তবে ঐ ব্যক্তিগণের মধ্যে কোন ব্যক্তিকে মৃত ব্যক্তির ত্যক্ত বস্তু অর্সিবেক ইতি।

श्रीजयतितराम्

जवाबव्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतकटक्टरटयरलेनमिलीसाहेबधर्म्माधिकरण-
लिखितविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितैतद्विवादविषयनिविष्ट-
पत्रजातं चावलोक्य विविच्य च यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यद्यपि मृतबाबुअभयनारायणसिंहः स्वमृत्योः पूर्वं केशवनारायणपुर-
प्रभृतिसराजकरस्थावरस्याद्धांशो[1] स्वपितृव्यपुत्रबाबुरूपनारायणसिंहस्य साधा-
रण्येन भुञ्जानस्सन् मृतस्तदा तस्या एव मृतव्यक्तेस्त्यक्तं केशवनारायण-
पुरप्रभृतिसराजकरस्थावरस्याद्धांशं[2] बाबुरूपनारायणसिंहः सपिण्डत्वेन साधा-
रण्यप्रतियोगित्वेन च प्राप्तुं शक्नोति, प्रभुसमर्पितपत्रजातैर्विवादास्पदीभूत-
क्रमागतसराजकरस्थावरान्तर्गतकेशवनारायणपुरप्रभृतिग्रामाणां तत्तद्ग्रामा-
न्तर्गताया भूमेर्वा अंशपरिच्छेदानवगमाद् यत् तत्रत्रजातान्तर्गतारेजीशब्द-
प्रतिपाद्यपञ्चविंशत्यधिकाष्टादशशताब्दीयनवम्बरमासीयचतुर्थदिवसलिखित-
तीरभुक्तिप्रदेशीयकलक्टरपदाभिषिक्तसाहेबलिखितविचारपत्रेणैवं[3] सप्त-
विंशत्यधिकाष्टादशशताब्दीयापरैलमासीयपञ्चमदिवसलिखितकलक्टरपदा-
भिषिक्तसाहेबकृतनिवेदनपत्रेण च विवादास्पदीभूतस्य केशवनारायणपुर-
प्रभृतिसराजकरस्थावरस्याभयनारायणसिंहरूपनारायणसिंहयोस्साधारण्याव-
गमाद् एतादृशक्रमागतसाधारणधने पत्नीदुहित्रोरधिकारप्रतिपादकं मिथि-
लादेशप्रचलितशास्त्राभावाच्च। यदि च तस्या एव मृतव्यक्तेस्त्यक्ताद्धांशो[4]
विभक्तः, सा च मृतव्यक्तिविभागानुसारेण तदुपरि स्वायत्तत्वं सम्पाद्य मृता,
तदोपरिलिखितानां मध्ये पुनीतकोमराख्या, तत्पत्नी, तस्या एव मृतव्यक्ते-
स्त्यक्तधनं प्राप्तुं शक्नोति, पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्य मृतस्य विभक्तधने पत्न्याः
प्रधानाधिकारित्वात्"—इति मिथिलादेशप्रचलितविवादरत्नाकरविवादचिन्ता-
मणिविवादचन्द्रद्वैतनिर्णयद्वैतपरिशिष्टादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

---

१. ०द्धांशो—व्यव० ।   २ स्याद्धांश—व्यव० ।
३. पत्रेणैवं—व्यव० ।   ४ ०द्धा[illegible]—व्यव० ।

अत्र प्रमाणम्—

अपुत्रा शयनं भर्त्तुः पालयन्ती व्रते स्थिता ।
पत्न्येव दद्यात् तत्पिण्डं कृत्स्नमंशं लभेत च ॥—इति विवादरत्नाकर (पृ० ५११)विवादचिन्तामण्यादि(पृ० २३६)ग्रन्थधृतवृद्धमनुवचनम् ॥ १ ॥

इदञ्च *विभक्तपतिधनपरम्*—इति विवादचिन्तामणि(पृ० २३७) ग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

अविभक्ते[1] *मृते पत्यौ तस्यांश एव नाभूदिति*[2] *किमियं गृह्णातु । न च सैवांशप्रतियोगिनी प्रापकाभावात् । न चैतान्येव वाक्यानि प्रापकाणि तेषां*[3]*विभक्तधनपरत्वेनाप्युपपत्तेः*—इति विवादचिन्तामणि(पृ० २३७) ग्रन्थलिखनम् ॥ ३ ॥

भ्रातृभार्य्यायां विधवायां पत्याहितगर्भायां तद्देवरादीनां विभागे प्रक्रान्ते[4] *तस्या अपि शङ्कितपुत्रप्रसवायाः*[5] *दाय*[6] *आप्रसवं रक्ष्यः । स च तस्याः पुत्रे जाते*[7] *तत्पुत्रस्यैव भवति पुत्रेऽनुत्पन्ने तु देवरादिभिर्ग्राह्यः*—इत्यादि विवादचिन्तामणि (पृ० २३८) ग्रन्थलिखनम् ॥ ४ ॥

विभक्तानामपि यत्रांशपरिच्छेदो न जातस्तन्मध्यगमेव तिष्ठति तेन तत्र साधारणत्वमेव—इति विवादचिन्तामणि (ख वि० चि० पृ० १६१) द्वैतपरिशिष्टादिग्रन्थलिखनम् ॥ ५ ॥

अनपत्यस्य धनं पत्न्यभिगामि तदभावे दुहितृगामि तदभावे मातृगामि तदभावे पितृगामि तदभावे भ्रातृगामि तदभावे भ्रातृपुत्रगामि[8] *तद-*

---

१. अविभक्तमृते तु पत्यौ०—विचि० । २. ०भूत. किमि०—विचि० ।
३. एषां—विचि० । ४. प्राप्ते—विचि० ।
५. शाङ्कित०—क्वप । ६. भा ।०—विचि० ।
७. पुत्रे अनुत्पन्ने—विचि० ।
८. तदभावे भ्रातृपुत्रगामि—अत्रोऽयं विवादचिन्तामणौ नोपलभ्यते ।

भावे बन्धुगामि—इत्यादि विवादचिन्तामण्यादि(विचि० पृ० २३५)ग्रन्थ-लिखनञ्चेति ॥ ६ ॥—

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीहरिःशरणम्
श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

६९—सहर श्रीरामपुरेर देवानि आदालतेर जज साहेवेर हुजुर हइते सदर देवानि आदालतेर पण्डितेरदिगेर प्रति सओयाल—

यदि कोन व्यक्ति तिन पुत्र वर्त्तमाने लोकान्तर हय, परे ऐ तिन पुत्रेर मध्ये ताहादिगेर ज्येष्ठ भ्राता अन्न प्रार्थक्य हइया पैत्रक सर्व्व-साधारणेर एक वागान, याहाते कतक प्रकार वसति आछे एवं ताहादिगेर तिन भ्रातार अंशेर भिन्न२ सिमा चिह्नित हय नाइ, ताहार तिन अंशेर एक अंश कोन अन्य व्यक्तिके विक्रय करे। ताहाते यदि आर दुइ भ्राता प्रतिवादि हइया हाकिमेर निकट नालिस करिया ऐ तिन अंशेर एक अंश, याहा ताहादिगेर ज्येष्ठ भ्राता विक्रय करे, ताहार यथार्थ मूल्य दिया खरिदेर प्रार्थना राखे, तवे ऐ तिन अंशेर एक अंश खरिद करिते काहार अधिकार हयः ऐ दुइ भ्रातार, अथवा ऐ खरिदारेर—इहार व्यवस्था शास्त्रानुसारे लिखिवेन इति। शन १८२८, ७ मेइ मों शन १२३५, २६ वैशाख।

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते। यदि कश्चिद् व्यक्तिविशेषस्त्रीन् पुत्रान् संरक्ष्य मृतस्तदनन्तरं तेषां त्रयाणां पुत्राणां मध्ये ज्येष्ठः पृथग्भो भूत्वा पितृत्यक्तभ्रातृत्रयसाधारणैकात्मकसग्रहक-भूमेस्त्रयाणां भ्रातृणां विभागव्यञ्जकसीमाव्यवहृतायां अंशत्रयमध्ये एकमंश-मन्यस्मै कस्मैचिद् विक्रयं कृतवान्[1], कर्त्तुमिच्छति वा, तत्र यद्यवशिष्टौ द्वौ

---

१. कस्मैचित्—प्र० । २ प्रातशादेषो—प्र० ।

भ्रातरौ प्रतिवादिनौ[1] भूत्वा राजसन्निधौ निवेदनं कृत्वा तेषां त्रयाणामंशानामेकमंशमर्थोज्ज्येष्ठभ्राता विक्रीतं, विक्रेतव्यं वा, तस्य यथार्थं[2] मूल्यं दत्त्वा क्रेतुं प्रार्थयतस्तथापि तेषां[3] त्रयाणामंशानामेकमंशं क्रेतुं यस्मै उपरिलिखितविक्रय[4]-कर्त्ता प्रसन्नस्सन् विक्रेतुमिच्छति तस्यैवाधिकारः, यत इदानीं वङ्गदेशचलितधर्मशास्त्रे क्रयकर्त्तृविचारो न लिखितः—इति वङ्गदेशचलितदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकाविवादभङ्गार्णवविवादार्णवसेतुप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

स्वभागान् यदि दद्युस्ते विक्रीणीयुरथापि वा ।
कुर्य्युर्यथेष्टं तत्सर्वमीशास्ते स्वधनस्य वै ॥—इति दायभाग(पृ० ३५) विवादभङ्गार्णव(१ विम० ख ४२३)विवादार्णवसेतु (पृ० ८३)प्रभृतिग्रन्थधृतनारद(नामस० १३।४२-४३)वचनम् ॥ १ ॥

तथा च विभक्तस्येवाविभक्तस्थावरस्यापि[5] स्वामिकृतदानादि सिद्धय[6]-स्येव अक्षपातादिना पश्चादंशापरिचयसम्भवादितिभावः—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीका (पृ० ३५) लिखनञ्चेति ॥ २ ॥ ० ॥ ० ॥

श्रीश्रीर्जयतितराम् श्रीहरिःशरणम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

७०—रोयकारि मिसिल आदालत देओयानि सदर तारिख ८ माह आपरेल सन १८२९ ई० मतावक २७ माह चैत्र शन १२३५ बाङ्गला रोज बुधवार ऐ आदालतेर प्रथम हाकिम श्रीयुत अलियम नसप्टर साहेवेर बैठके—

---

१. प्रतिवादिनौ—व्यप० । २. यथार्थमूल्य—व्यप० ।
३. तेषा—व्यप० । ४. पुनरिलिखित—व्यप० ।
५. तथा च विभक्तस्यैवाविभ०—व्यप० । ६. सिद्धने च—व्यप० ।

सायेल

राजचन्द्रराय

एइ सनेर मारच मासेर १४ तारिखेर सायेलेर मकद्दमार कागज सकल रोवकार ओ दृष्टो हइया कोरक करा भूमि निलामेर निषेधि हुकुम सादर[1] हओन परे अनुमोदनार्थे स्थकित छिल, अद्य पुनराय उपस्थित हइया अन्य कागज सकल दृष्ट करागेल। यथा ए मकद्दमार सम्पर्के हुकुम हओनेर पूर्व्वे देवोत्तर भुमिसकलेर सम्बन्धे शास्त्रेर कथन आज्ञा विवेचना करा उचित हइल, अतएव हुकुम हइल ये एइ रोवकारि एइ आदालतेर पण्डितगणके समर्पण कराजाय, ये निचेर सओयालसकलेर जयावे दुइ सप्ताह मध्ये शास्त्रानुसारे व्यवस्था दाखिल करेण।

प्रथम सओयाल—यद्यपि शास्त्रानुसारे देवोत्तर भूमिसकल विक्रय करण एकान्त सिद्ध नहे। अतएव ताहार उपस्वत्व विक्रय करण (सिद्ध) हइवेक कि ना ?

द्वितीय सओयाल—सरबराहकारि कीम्वा सेवाइती प्रयुक्त देवोत्तर भूमि अथवा ताहार उपस्वत्वे सेवाइतेर किछु स्वत्व हय कि ना, ओ यद्यपि हय, ताहार किछु निर्दिष्ट आछे कि ना ? येमन एक विघा देवोत्तर भूमि किम्वा ताहार उपस्वत्व एक टाकार मध्ये सेवाइतेर स्वत्व कि परिमान हइवेक ?

तृतीय सओयाल—यद्यपि देवोत्तर भूमि किम्वा ताहार उपस्वत्वे सेवाइतेर स्वत्व परिमाने निर्दिष्ट हइयाथाके, तवे सेवाइतेर देनार निमित्ते सेवाइतेर स्वत्वेर परिमानेर भूमि अथवा ताहा हइते ये परिमाने उपस्वत्व सेवाइतके(?)सकल हइते पारे विक्रय हइवेक कि ना ?

चतुर्थ सओयाल—यद्यपि ये भूमिसकले किम्वा ताहार उपस्वत्वे सेवाइतेर स्वत्व वत्तिया समुदय देवोत्तर भूमिसकलेर सम्वलित थाके, ओ सिमा चिह्नओ भिन्न ना हइया थाके, तवे समुदय देवोत्तर भुमि, किम्वा ता हइते किञ्चित् वण्टक ना

[1] सोदर—सम्प०।

हओन हेतुक सेवाइतेर देनार जन्ये विक्रयेर योग्य हइवेक, किम्वा किछुइ नाइ इति ।

जवाव-व्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणप्रथमाधिपतिश्रीयुतालियमनसाहरसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितैतदब्दीयापरेलमासीयाष्टमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तन्मासीयषोडशादिने सपादघटिकाद्वयाधिकसमये मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

यतः शास्त्रानुसारेण देवत्रभूमीनां विक्रयकरणं कदाचिदपि न सिध्यति अतएव तदुत्पन्नोपस्वत्वस्यापि देवमात्रस्वत्वेन तदितरस्वत्वाभावात्तद्विक्रयकरणमपि न सिध्यति ।

अत्र प्रमाणम्—

देवस्वं ब्राह्मणस्वं वा लोभेनोपहिनस्ति यः ।
स पापात्मा परे लोके गृध्रोच्छिष्टेन जीवति ॥—इति मनुवचनम् (मनुस्मृ० ११।२६) ॥ १ ॥

प्रतिमा देवता । तदर्थमुत्सृष्टं धनं देवस्वम् ॥—इति मन्वर्थमुक्तावल्यां कुल्लूकभट्टलिखनम् (पृ० ४३०) ॥ २ ॥

अस्वामिना कृतो यस्तु दायो विक्रय एव वा ।
अकृतः स तु विज्ञेयो व्यवहारे यथा स्थितिः ॥—इति मनुवचनम् (मस्मृ० ८।१९९) ॥ ३ ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

भाषायां सरवराहकारशब्दवाच्यस्य सेवाइतशब्दवाच्यस्य वा भाषायां सरवराहकारीकर्म्मप्रयुक्तं सेवाइतीकर्म्मप्रयुक्तं वा देवत्रभूमौ तदुत्पन्नोपस्वत्वे वा किञ्चिदपि न स्वत्वं धर्म्मशास्त्रीयप्रमाणाभावादिति ।

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

द्वितीयप्रश्नोत्तरलिखितप्रकारेण देवत्रभूमौ तदुत्पन्नोपस्वत्वे वा सेवाइतशब्दवाच्यस्य स्वत्वाभावेन तद्देयपरिशोधनार्थं देवत्रभूमेस्तदुत्पन्नोपस्वत्वस्य

वा विक्रयो भवितुं नार्हति। चतुर्थप्रश्नोत्तरमप्यर्थाद(दा)यातमिति न पृथग् लिखितम्। —इति मन्वादिधर्मशास्त्रानुसारिणी[1] व्यवस्था—

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

नं० २७६६

७१—रोयकारि मिसिल आदालत देओयानी सदर तारिख १९ माह आपरेल सन १८२९ इं मताबक ४ माह वैशाख सन १२३६ बाङ्गला रोज बुधवार ए आदालतेर पञ्चम हाकिम श्रीयुत मान्किओ हेनरि टरम्बल साहेबेर बैठके।

बाबु गङ्गाप्रसादनारायण	आपीलाण्ट
बाबु लछमिनारायण	रष्पाइण्ट

आपीलाण्टेर उकिल मुनसी दादारवरूक ओ रष्पाइण्टेर उकिल लाला आउधलाल हाजिर आसिल। ए मकद्दमा एइ सनेर मार्च मासेर ३१ तारिखेर हुकुममते अद्य आमार बैठके रोयकार हइया प्रविशल कोर्टेर दाखिल हओया नालिसी आरजी प्रभृति कागच सकल तथाकार फयसला पर्य्यन्त ओ ए आदालते दाखिल हओया आपीलेर मजुयात ओ ताहार जओयाव प्रभृति कागजसकल गत मार्च मासेर ३१ तारिखेर ए आदालतेर तृतीय हाकिमेर विस्तिर्म्म[2] रोयकारि सम्बलित पडागेल। यथा बोध हइल ये मुद्दाआलेहे, एइ चरणकार आपीलाण्ट, एइ विषयेर आपत्ति राखे ये उभयेर पूर्व्व पुरुष मृत बाबु नरसिंहनारायणसिंहेर कनिष्ठ भ्राता बाबु फतेनारायणसिंहेर स्त्री मुसम्मात रामकोइरेर सालिसि शास्त्रानुसारे सिद्ध ओ जारि हओनेर योग्य नहे। अतएव ओ एवं जिला ओ कोर्टेर पण्डितगणेर दाखिल करा व्यवस्थासकल ओ एइ दृष्टे

1. मन्वादि०—व्या०।   2. विस्तीर्ण—इति साधीयान् पाठ.।

ये एकथा लओन वटे ऐ विषयेर सम्बन्धे शास्त्रेर आज्ञासकल ज्ञात हओन उचित हइया ए मकद्दमार सम्पर्के चूडन्त हुकुम छादर हओनेर पूर्व्वे हुकुम हइल ये एइ रोवकारिर नकल ए आदालतेर पण्डितगणके अर्पण करा जाय—ये निचेर सओयालसकलेर जवाब दुइ दिवसेर मध्ये व्यवस्था दाखिल करेण।

प्रथम सओयाल—जिला बारानसा चलित शास्त्रानुसारे लिखोकेर सालिसी सिद्ध वटे कि ना ?

द्वितीय सओयाल—यद्यपि दुइ व्यक्ति, नैकट्य कुटुम्ब, उभयेर विरोध ओ आपत्ति निष्पत्त्येर जन्ये, याहा उहादिगेर मध्ये थाके, आपन वंशेर एक स्त्रीलोकके, ये दुइ व्यक्तिर विस्वासी हय, आपनारदिगेर अभिप्राये सालिष नियुक्त करिया थाके, ओ ऐ स्त्रीलोक निष्पत्ती करिया देय। तबे एमत स्त्रीलोकेर सालिसी शास्त्रेर आज्ञासकलेर मते सिद्ध ओ ताहार फयसला जारि हओनेर योग्य हइवेक कि ना ? इति।

जवावव्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणाध्यक्षमाधिपतिश्रीयुतमान्तकिहेनरीटरम्बलसाहेबधर्म्माधिकरणलिखितैतद्वर्षीयापरैलमासीयपञ्चदशदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तन्मासीयषोडशदिने चतुर्थप्रहरे मया प्राप्तं तदवलोक्य याद्दशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

मिताक्षरावीरमित्रोदयग्रन्थानुसारेण स्त्रीकृतव्यवहारनिर्णयोऽसिद्ध एव। विवादचिन्तामणिविवादचन्द्रनारदस्मृत्याद्यनुसारेणापविवारणार्थं स्त्रीकृतोऽपि व्यवहारनिर्णयः सिद्ध्यति।

अत्र प्रमाणम्—

बलोप(१)धिविनिर्वृत्तान्व्यवहारान्निवर्तयेत्।
स्त्रीनक्तमन्तरागारबहिःशत्रुकृतांस्तथा॥

---

१. मत्सर्थ०—व्यव०।

इति मिताक्षरा(पृ० १४३)व्यवहारचिन्तामणिधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् (२।३१) ॥ १ ॥

स्त्रीषु रात्रौ[1] बहिर्ग्रामादन्तर्वेश्मन्यरातिषु ।
व्यवहारः कृतोऽप्येषु पुनः कर्तव्यतामियात् ॥

इत्यादि वीरमित्रोदयव्यवहारचिन्तामणिग्रन्थधृतनारदवचनम्(नामसं० १,३७) ॥ २ ॥

स्त्रीकृतान्यप्रमाणानि कार्याण्याहुरनापदि ।
विशेषतो गृहक्षेत्रदानाधमनविक्रयाः ॥—इति व्यवहारचिन्तामणिविवादचन्द्र(पृ० १४७)नारदस्मृत्यादिधृतनारदवचनम्(नामसं० २।२२) ॥ ३ ॥

आपत्प्रतीकारार्थं स्त्रीकृतमपि प्रमाणमेव, अनापदीत्यभिधानात् —इति विवादचन्द्रग्रन्थलिखनम् (पृ० १४७) ॥ ४ ॥

अनापदीत्यनेनापत्प्रतीकारार्थं स्त्रीकृतान्यपि प्रमाणान्येवेत्युक्तम्—इति व्यवहारचिन्तामणिग्रन्थलिखनम् ॥ ५ ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि द्वयोः सन्निहितसम्बन्धिनोर्विरोधस्यापत्तेश्च कस्याश्चिन्निष्पत्त्यर्थं[1] स्ववंशसम्बन्धिनी एका काचित् स्त्री, या तदुभयोर्विश्वस्ता[2], ज्येष्ठा, श्रेष्ठा च, स्वस्वाभिप्रायेण स्वसम्बन्धिविवादनिर्णयकर्तृत्वेन द्वाभ्यामेव विरोधिभ्यां नियुक्ता सती सैव स्त्री तद्विवादनिर्णयं कृतवती स्यात्तदैवंविधविवादनिर्णयो *मिताक्षरा[3]वीरमित्रोदयग्रन्थानुसारेण सिद्धो भवितुं* तत्कृतजयपत्रं चापिप्रचलितं भवितुं नार्हति, व्यवहारमाधवग्रन्थानुसारेण च तन्निर्णयः सिद्धो भवितुं तत्प्रमाणभूतं तज्जयपत्रं च प्रचलितं भवितुमर्हति, प्रश्नपत्रलिखितप्रकारेण द्वाभ्यामेव विरोधिभ्यां तदधिकारस्य तस्यै दत्तत्वेन तद्विवादनिष्पत्तेस्तदधीनत्वात् "यदि च तत्समये तया स्त्रिया यदि विवादनिर्णयो न भविष्यति तदा ह्यस्माकं महत्पापं[4] भविष्यति"—इति ज्ञात्वा द्वाभ्यामेव विरोधिभ्यां विश्वस्ता

---

१. निष्पत्त्यर्थं—व्यप० । २. °तदुभयोर्विश्वस्तो०—व्यप० ।
३. °मितक्षराक्षा०—व्यप० । ४. महत्पापस्य०—व्यप० ।

ज्येष्ठा श्रेष्ठा सा स्त्री तदापत्तिवारणाय[1] विवादनिर्णायकत्वेन नियुक्ता तदा तत्स्वीकृतविवादनिर्णयो व्यवहारचिन्तामणिविवादचन्द्रनारदस्मृत्याद्यनुसारेण सिद्धो भवितुं तत्प्रमाणभूतं तत्कृतजयपत्रं च प्रचलितं भवितुमर्हति-इति सारणदेशचलितमिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारचिन्तामणिविवादचन्द्रव्यवहारमाधवनारदस्मृत्यनुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणान्युपरिलिखितानि सख्यांख्येय ।

गुरुः स्वामी कुटुम्बी च पिता ज्येष्ठः पितामहः ।
विवादानथ[2] पश्येयुः स्वाधीने विषये नृणाम् ।।-इति व्यवहारमाधव-(पृ० २४) ग्रन्थधृतव्यासवचनम्चेति ।

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

—०—

नम्बर २७८९

७२—रोवकारि मिसिल आदालत देवोयानि सदर ४ माह माइ सन १८२९ इं मताबक २३ माह बैशाख सन १२३६ बाङ्गला रोज सोमवार ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत कटवरटथरलेनसिलि साहेबेर बैठके ।

मुसम्मातदुलादेइ ओ सोनोसिंह	आपिलाण्टान्
छेमाजितराय ओ किर्त्तिराय	रस्पाण्डण्ट

आपिलाण्टगणेर उकिल लाला आउधलाल, ओ रस्पाण्डण्टानेर उकिल मुनशी दादार बक्स हाजिर आसिल । ए मकद्दमा पूर्व्वे एइ सनेर आपरेल मासेर २७ ओ २८ ओ २९ तारिख सवाले रोवकार हइया, ओ जिलार आदालतेर समुदय कागज १ लम्बर हइते तथाकार फयशला पर्य्यन्त ओ प्रविनसल कोर्टेर कागजसकल फयश-

१. ०त्रिवारक विवादनिर्णयकत्वे—व्यव० । २. विवादानपि—धर्मकोष, पृ० ६४ ।

ला सहित ओ ए आदालतेर समस्त कागज ओ चेमाजितराय प्रभृतिर नामिक सेक मह्वाहेर आलि प्रभृतिर मकद्दमा जिलार आदालतेर समस्त कागज ओ कोर्टेर कागज १० लम्बर पर्य्यन्त पडागिया, दिया अवसान प्रयुक्त स्थकित छिल, अद्य पुनराय उपस्थित हइया ऐ मकद्दमा बावत कोर्टेर बाकी कागज दृष्टे आसिल। तत् परे रेष्पाडण्टेर उकिल इं १८२१ शालेर जुन मासेर २८ तारिखेर लिखित जिला वेहारेर आदालतेर एक किता फयशलार नकल इं १८२५ शालेर माइ मासेर २५ तारिखेर लिखित आजिमाबादेर प्रविनसन कोर्टेर एक किता फयशलार नकल ओ इं १८२७ शालेर सेतम्बर मासेर ६ ओ १३ तारिखेर लिखित ऐ प्रविनसन कोर्टेर दुइ किता रोबकारिर नकल ओ फशलि ११९९ सालेर रमजानेर १५ तारिखेर लिखित धर्म्मनारायणेर लिखा एक किता सराकतनामा ओ इं १७९४ शालेर नवम्बर मासेर २० तारिखेर लिखित सैयद महम्मद, ओ सैयद होसेन आलि ओ सैयद रोस्तम आलि ओ सैयद आलि आमजद-मुद्दइगणेर उकिल सैयद केरामत होसेनेर लिखा एक किता राजिनामार नकल १२ टाका मूल्येर फेहरस्तेर द्वाराय लम्बरे दाखिल करिल, पडागेल। यथा ए मकद्दमार चुडन्त हुकम सादर हओनेर पूर्व्व एइ आदालतेर पण्डित हइते व्यवस्था लओन उचित बोध हइल, अतएव हुकम हइल ये मकद्दमार कागज सहित एइ रोबकारिर नकल पण्डितके समर्पण करा जाय। उचित ये पण्डित मौं ···· ए मकद्दमार समस्त कागजेर अनुमोदने निचेर लिखित दुइ सओयालेर जवाब एक सप्ताह मध्ये दाखिल करेण।

प्रथम सओयाल—यद्यपि विरोधीय वस्तु बण्टक हइयाथाके, ऐ अवस्थाय मुसम्मात दुलारदेइ आपिलाण्ट आपन जीवद्दशापर्य्यन्त केवल भरण-पोषण पाइवेक, किम्वा आपन पतिर त्यक्त-हिस्याय दखिलकार थाकिया ताहार उपस्वत्वे भोगवान थाकिवेक ओ ताहा दानेर क्षमता राखिवेक कि ना इति।

द्वितीय सओयाल—विरोधीय वस्तु अवष्टक थाकने मुसम्मात मजकुरा प्रथम सओयालेर विस्तिर्ण सत्व-सकल हइते कोन स्वत्वेर स्वत्वाधिकारि वटे इति ।

श्रीर्ज्जयतितराम्

जवाबव्यवस्था

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतकटवर्टपरलेनसिलीसाहेबधर्म्माधिकरण-लिखितैतदब्दीयमैमासीयचतुर्थदिवसीयविचारणनान्तर्गतप्रश्नमतिरूपपत्रमेवं तदुपर्पितैतद्विवादविषयनिविष्टप्रश्नजातं यदस्माधीयपत्रप्रदिने यामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्यपि विवादास्पदीभूतं वस्तु विभक्तमभूत्तदा दुलारदेइनाम्नी एतद्धर्म्माधिकरणार्थिनी स्वजीवनपर्य्यन्तं पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्वपतित्यक्तविभक्तधनांशे स्वायत्तत्वं सम्पाद्य तदुपस्वत्वे भोगवती स्थास्यति । एवं तद्वस्तुनो आवश्यकादृष्टार्थं विना दानक्षमता तस्या न स्थास्यति, यतः पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्य मृतस्य विभक्तधने पत्न्या उत्तराधिकारित्वेनाधिकारे जातेऽप्यावश्यकादृष्टार्थं विना तद्धनस्य दानकरणक्षमता नास्तीति ।

अत्र प्रमाणम्—

तस्मादपुत्रस्य स्वर्यातस्या[1]संसृष्टिनो धनं परिणीता स्त्री संयता सकलमेव गृह्णातीतिस्थितम्—इति मिताक्षरा(पृ० २२१)ग्रन्थलिखनम् ॥ १ ॥

पत्नी गृह्णीयादित्येद्वचनजातं विभक्तस्त्रीविषयम्—इति मिताक्षराग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

स्त्रीणां स्वपतिदायस्तु उपभोगफलः स्मृतः ।
नापहारं स्त्रियः कुर्य्युः पतिवित्तात् कथञ्चन ॥

इति—वीरमित्रोदयादि (विमि० व्य० पृ० ६२८) ग्रन्थधृतमहाभारतवचनम् (१३।४७।२४) ॥ ३ ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

---

१. व्यालस्य—व्यव० ।

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

विवादास्पदीभूतं धनमविभक्तं चेत्तदैतद्धर्म्माधिकरणार्थिनी दुलारदेइ-नाम्नी प्रथमप्रश्नलिखितस्वत्वसमुदायान्तर्गतकेवलं यावज्जीवं भरणपोषण-प्राप्तिरूपप्रथमप्रकारोपयुक्तस्वत्वाधिकारिणी भवति, प्रभुसमर्पितपत्रजातैर्विवादास्पदीभूतधनस्य विभागानवगमात्—इति वेहारदेशप्रचलितमिताक्षरावीर-मित्रोदयव्यवहारमयूखव्यवहारकौस्तुभादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था।

अत्र प्रमाणम्—

स्वर्याते स्वामिनि स्त्री तु ग्रासाच्छादनभागिनी।

अविभक्ते धनांशे तु प्राप्नोत्यामरणान्तिकम् ॥—इति वीरमित्रोदयादि-(वीमि० व्य० पृ० ६५४)ग्रन्थधृतकात्यायनवचनं (कास्मृ० ९२२) चेति।१।

१८ मै सन हाल, दो प्रहर बाद दाखिल किया—

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

सं० १७९३

७३—रोयकारी मिसिल आदालत देओयानि सदर तारिख ६ माह माइ सन १८२९ ई० मवाफक २५ माह वैशाख सन १२३६ बाङ्गला रोज बुधवार ऐ आदालतेर पञ्चम हाकिम श्रीयुत मान्तेगिओ हेनरि टरम्बल साहेबेर बैठके।

गोवर्द्धनलाल— आपिलाएट

मोहनलाल ओ मृत सोहनलालेर उत्तराधिकारि गङ्गाप्रसाद— रेस्पाडएटान

आपिलाएटेर उकिल मुनशी दादार बकस ओ रेस्पाडएटानेर मध्ये मोहनलाल रेषपाढएटेर उकिल लाला आउधलाल हाजिर आसिल। अद्य ए मकद्दमा तरतिब[1] लम्बर मते आमार

---

[1] तरतिब—व्यप०।

निकट रोवकार हइया ई १८२८ सालेर मार्च मासेर ३१ तारिखेर लिखित ए आदालतेर परिसिष्टेर उत्तरे एइ सणेर आपरेलमासेर १६ तारिखेर लिखित जिला रामगडेर जजसाहेबेर[1] पाठानो विवरण ताहार समभिव्याहारीय[2] रोवकारि प्रभृति कागजातसकल सहित लम्बरे पौहुछिया पडागेल। यथा वेचुसिंह ओ द्वितीय येचुसिंह सादिगण, ओ गङ्गाप्रसादेर पिता मोहनलाल ओ भ्राता जोगललालेर एजाहारे ओ रेप्पाडराटगणेर मध्ये एक रेप्पाडएट मृत सोहनलालेर स्त्री मुसम्मात घोपार दरखास्ते ऐ मृत व्यक्ति गङ्गाप्रसादके पोष्यपुत्र लओन साव्यस्थ हइल, अतएव हुकुम हइल जे मृत रेप्पाडएटेर स्थाने गङ्गाप्रसादेर नाम लेखा जाय। ताहाओ लेखागेल, ओ गङ्गाप्रसाद ऐ मृत व्यक्तिर उत्तराधिकारि साव्यस्थ हओनेओ स्वयं किम्वा उकिलेर द्वाराय ए अदालते हाजिरहय नाइ, अतएव ऐ व्यक्तिर सम्बन्धे ए मकद्दमार तजविज एकसपार्टि प्रकारे कराजाय। किन्तु प्रकाश हय ये जद्यपि अन्यकेह मृत सोहनलालेर उत्तराधिकारि ओ गङ्गाप्रसादेर पोष्यपुत्रता मिथ्या हओनेर दावि करे। एइ हुकुम ताहारे दावि ओ स्वत्वेर तजविजेर निषेधीय हइवेकना। ततपरे प्रविनसन कोठ दाखिल हओया लालिखि आरजि प्रभृति कागजसकल तथाकार फयसला पर्य्यन्त ए आदालते दाखिल हइया आपिलेर मजुयात ओ ताहार जवाव पडागेल। जानागेल जे ए मकद्दमार तजविज सास्त्रे सम्पर्क राखे। अतएव ए मकद्दमार सम्बन्धे चूड(ा)न्त हुकुम सादर हओनेर पूर्व्वे सास्त्रे(र) आज्ञासकल ज्ञात हओनार्थे व्यवस्था लओन उचित वोध हइया हुकुम हइल ये ए मकद्दमा अद्य स्थकित थाके, ओ एइ रोवकारिर नकल ७० लम्वरेर ई १८१९ सालेर जानओरि मासेर १७ तारिखेर लिखित हेवानामा[3] दस्तावेज सहित ए आदालतेर पण्डितके समार्पन कराजाय, जे पश्चिम देशेर, जाहाते रामगड जिला थाकिवेक, चलित शास्त्रानुसारेनिचेर

१ साहेबेर—व्यप०। २ समन्यातीय—व्यप०। ३. हेवानामा—व्यर०।

लिखित सथोयालसकलेर जवाबे एक साम(।)ह मध्ये व्यवस्था लिखिया दाखिल करेन।

प्रथम सओयाल—यद्यपि हिन्दु जाति हइते एक व्यक्ति आपन कृत स्थावर वस्तुसकल आपन पुत्रगण हइते एक पुत्रके दान करिया, दान गृहीताके ताहार दखल देओयाय। अतएव ऐ दान गृहीतार अन्य भ्रातागण थाकनेओ ताहार स्वत्वे ऐ दान सिद्धि हइवेक कि ना, ओ दातार मृत्युर पर आपन आपन अंश पाओनेर जन्ये अन्य भ्रातागणेर दावि असैं कि ना?

द्वितीय सओयाल—यद्यपि एक व्यक्ति हिन्दुर पाच पुत्र, ओ ताहारदिगेर मध्ये ये पुत्र भ्रातागण हइते कनिष्ठ छिल अन्ध थाके, ओ ऐ व्यक्ति आपन कृत अस्थावर वस्तुसकल चार पुत्रके, याहारा अन्ध नहे, सुस्थ स्वरिर थटेन, दिया आपन कृत स्थावर वस्तु, जाहा मूल्येर द्वाराय चारि पुत्रेर एक २ पुत्रेर अस्थावर वस्तुर अंश हइते तुल्यकिम्वान्यून थाके, अन्ध पुत्रके आपन विशाय उपजन करण हइते प्रत्तम थाकन हेते दान करिया थाके, तबे ऐ दान एमत पुत्रेर स्वत्वे सिद्धि ओ यथार्थ हइवेक कि ना?

तृतीय सओयाल—चण्डाल १ वागदि २ साहा ३ सुँडी ४ काँओरा ५ धोपा ६ ओ डोम ७—एइ कय व्यक्तिर सुकृतिपत्रेर द्वाराय शपथ हय कि ना इति।

सओयाल सुप्रीम कोर्टोदालतिका मेघनाटन साहेवका हुकुम से यवाव देना होगा इति।

नकलयवाव

प्रश्नपत्रलिखितजातीयानां शास्त्रानुसारेण स्वीकृतिपत्रद्वारा शपथो भवितुं न शक्नोति प्रमाणाभावादिति—

एतद्धर्म्माधिकरणप्रमाधिपतिश्रीयुतमान्वरोयूहेनरीटरम्वलणदेवधर्म्माधिकरणलिखितैतदब्दीयमेमासीयषष्ठदिवसलिखितविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रति–

रूपपत्रं यत्तन्माघीयनवमदिने यामद्वयानन्तरं (मया) प्राप्तं तदवलोक्य एवं तत्समर्पितदानपत्रञ्च विविच्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

यत्रैकः कश्चित् हिन्दुजातीयो व्यक्तिविशेषः स्वोपार्जितं सर्व्वमेव स्थावरं स्वपुत्राणां मध्ये एकस्मै पुत्राय दत्त्वा दानग्रहीतुस्तदुपरि स्वायत्तत्वं सम्पादितवान् स्यात्तत्र तद्दानं यदि पित्रा सर्व्वपुत्रानुमत्या कृतं तदा तद्दानग्रहीतुर्भ्रात्रन्तरेषु विद्यमानेष्वपि[1] तदर्थं तद्दानं सिद्धं भवितुं शक्नोति, एवं दातुर्म्मरणानन्तरं, दानग्रहीतुर्भ्रात्रन्तराणां स्वयोग्यांशप्राप्तीच्छा न सम्भवति। यदा च पित्रा तद्दानं सर्व्वपुत्रानुमत्या न कृतं तदा तद्दानग्रहीतुर्भ्रात्रन्तरेषु सत्सु तदर्थं तद्दानं सिद्धं भवितुं न शक्नोति, एवं दातुर्म्मरणानन्तरं दानग्रहीतुर्भ्रात्रन्तराणां स्वस्वयोग्यांशप्राप्त्यर्थं तत्प्राप्तीच्छा सम्भवत्येव, यतः सर्व्वपुत्रानुमतिं विना पितुः स्वार्जितस्थावरस्यापि दानकरणक्षमताया अभावेन न तत्कृतदानेन तेषां तत्र स्वत्वविच्छेदाभावात्। प्रकृते तु प्रभुसमर्पितदानपत्रेण तद्दाने दानग्रहीतुर्भ्रात्रन्तराणामनुमतेरनवगमाच्च ।

अत्र प्रमाणम्—

स्थावरे तु स्वार्जिते पित्रादिप्राप्ते च पुत्रादिपारतन्त्र्यमेव—इति मिताक्षरा(पृ० २००)वीरमित्रोदय[2](स० पृ० ५३२)व्यवहारमाधव(पृ० ३३२)व्यवहारकौस्तुभादिग्रन्थलिखनम् ॥ १ ॥

स्थावरं द्विपदं चैव यद्यपि स्वयमर्जितम् ।
असम्भूय सुतान् सर्व्वान् न दानं न च विक्रयः ॥

ये जाता येऽप्यजाताश्च ये च गर्भे व्यवस्थिताः ।
वृत्तिं तेऽपि हि कांक्षन्ति न दानं न च विक्रयः ॥—इति उपरिलिखितग्रन्थधृतव्यासस्य(मिता० पृ० २००)वचनद्वयञ्चेति ॥ २ ॥

---

१. विद्यमाने०—व्यप० ।

२. स्थावरादौ [illegible] स्वार्जिते पित्रादिपरम्पराप्राप्ते पुत्रादिपारतन्त्र्यं तुल्यमेवेति पाठः वीमि० स ।

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्यप्येकस्य कस्यचित् हिन्दुजातीयस्य पञ्चपुत्राः, एतेषां मध्ये यः सर्व्वेभ्यो भ्रातृभ्यः कनिष्ठ आसीत् सोऽन्धः, एवं स एव व्यक्तिविशेषः स्वोपार्ज्जितम्-स्थावरं सर्व्वं वस्तु अन्धभिन्नेभ्यः स्वस्वशरीरेभ्यश्चतुर्भ्यः[1] पुत्रेभ्योऽदत्त। स्वोपार्ज्जितं स्थावरं वस्तु यन्मूल्यद्वारा चतुर्णां पुत्राणाम् एकैकपुत्रांशादस्थावरधनांशात् तुल्यं न्यूनं वा भवति, तदन्धपुत्राय तद्दृष्ट्वा दत्तवान्। अयं च स्वयं धनोपार्ज्जनाक्षमः। तत्रापि सर्व्वपुत्रानुमत्या दत्तञ्चेत् सिद्ध्यति, नो चेन्न सिद्ध्यते, इति पश्चिमदेशान्तर्गतरामगडजिलाख्यावान्तरदेशचलितमिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारमाधवव्यवहारकौस्तुभादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था।

अत्र प्रमाणानि श्रीएयुपरिलिखितान्येव ॥ २ ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

७४। रोयकारि मिसिल आदालत देओयानि मदर तारिख २७ माह माइ सन १८२९ ई मताबक १५ माह ज्यैष्ठ सन १२१६ बाङ्गला रोज बुधवार ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत अलियस नसष्टर साहेबेर वैठके।

हलधरमुखोपाध्याय — आपिलाण्ट
अन्नपूर्णादेव्या प्रभृति — रस्पाण्डण्टान्

आपिलाण्टेर उकिल मुनशी सोहेन आलि ओ स्वयं आपिलाण्ट हाजिर आसिल, ओ रस्पाण्डण्टानेर उकिल सदासुक पण्डित काहिलिर······आपल्ये हाजिर हइलो ना। एइ मासेर २५ तारिखेर हुकुमानुसारे ए मकर्द्दमा आमार वैठके उपस्थित

[1] स्वस्वशरीरेभ्यश्च०—स्वेर०।

हइया नालिपि आरजि प्रभृति प्रविनसल कोर्टेर कागचसकल ६६ लम्बर पर्य्यन्त पडागिया स्थकित छिल,अद्य पुनराय उपस्थित हइया प्रविणसन कोर्टेर वाकि कागजसकल तथाकार फयशला पर्य्यन्त ओ आपिलेर मजुवात ओ ताहार जवाव पडागेल। समस्त कागजेर अनुमोदने यद्यपि रप्पाढण्टानेर मध्ये एक रप्पाडएट अन्नपूर्णादेव्यार लिखा एजाहार आपिलेण्टेर दरपेष करा ई १८ (?) ७ शालेर जुन मासेर १२ तारिखेर लिखित २६ लम्बरेर दानपत्र निदर्शनेर सत्यतार प्रति पूर्ण सन्देह हइतेछे। किन्तु चूडान्त हुकुम (सादर) हओनेर पूर्व्वे ए आदालतेर पण्डित हइते नीचेर विस्तीर्ण हेतुसकलेर विवेचना कारण उचित वोध हइया हुकुम हइल ये प्रविनसल कोर्टेर नथिर १ नम्बरेर वाङ्गला १२११ शालेर आश्विन मासेर १ तारिखेर लिखित मृत वलराम भट्टाचार्य्येर लिखा मोक्तारनामा ओ च्छाव्विस २६ लम्बरेर दानपत्र एइ रोयकारिर नकल सहित ए आदालतेर पण्डितके समर्पण करा जाय, ये ऐ निदर्शनसकलेर उपर अनुमोदन करिया, वाङ्गालार चलित शास्त्रानुसारे नीचेर लिखित प्रश्न सकलेर जवाव एक सप्ताह मध्ये दाखिल करेण।

प्रथम सओयाल–मुसम्मात अन्नपूर्णार दान सिद्ध वटे कि ना, ओ द्वितीय व्यक्तिगणेर अंशेर सम्बन्धे ताहा असिद्ध हओने अन्नपूर्णादेव्यार स्वयं अंश वावत सिद्ध हइवेक कि ना। ओ यद्यपि सिद्ध हय, उहार कि परिमाण अंश हइवेक।

द्वितीय (सओयाल)—वलरामभट्टाचार्य्येर लिखा मोक्तारनामा मते मुद्दाआलेहेके किछु अंश अर्शे कि ना,ओ वलरामभट्टाचार्य्यके ताहार आपन एक स्त्री उहार मृत पुत्रेर स्त्री ओ उहार मृत पुत्रेर स्त्री ओ अविवाहिता एक कन्या थाकनेओ मुद्दाआलेहेके अंश देओनेर क्षमता छिल किना इति।

---

१. लिखित शास्त्रानु सारूलेर—स्प०।

श्रीर्ज्जयतितराम्

अनावश्यव्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतालियमनाष्टरसाहेबधर्म्माधिकरणलिखि-तैतद्ब्दीयपञ्चत्रिंशत्तिदिवसीयमेइमासीयविचारपत्रान्तर्गतमप्रतिरूपप्रश्नमेवं तत्समर्पितकोटांपिलाख्यधर्म्माधिकरणलिखितपत्रान्तर्गतोनविंशत्यङ्काङ्कितबा-ह्लाख्यैकादशाधिकद्वादशशताब्दीयाश्विनमासीयप्रथमदिवसीयमृतबलराम-भट्टाचार्य्यलिखितमोक्तारनामासंज्ञकपत्रमेवं पञ्चविंशत्यङ्काङ्कितदानपत्रञ्च यज्जु-नमासीयपञ्चदशदिने सार्द्धघटिकाचतुष्टयाधिकयामद्वये मया प्राप्तं तदव-लोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

अन्नपूर्णाकृतदानं सिद्धं भवितुं न शक्नोति, यतः प्रभुसमर्पितमोक्तार-नामाभिज्ञकपत्रदानपत्राभ्यां विवादास्पदीभूतधनस्यान्नपूर्णादेव्याः पत्युर्बलराम-भट्टाचार्य्यस्य पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्य मृतस्योत्तराधिकारित्वेन तत्सङ्क्रान्तत्वे-नावगमेन, तस्याश्च स्वेच्छया स्वाभिप्रायेण वा तद्धने दानानधिकारात्। प्रकृते तु प्रभुसमर्पितदानपत्रेण स्वेच्छया स्वाभिप्रायेण च दानावगमात् पत्न्यां विद्यमानायामन्येषामर्थाद् दुहित्रादीनां केषाञ्चिदपि पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहि-तस्य मृतस्य धनेऽधिकारप्रतिपादकग्रन्थदेशाचलितत्वात्ताभावेनांशविवेचनाया[1] अनावश्यकत्वादिति—

अत्र प्रमाणम्—

अपुत्रा शयनं भर्त्तुः पालयन्ती गुरौ स्थिता।

भुञ्जीतामरणात् क्षान्ता दायादा ऊर्द्ध्वमाप्नुयुः—इति दायभागादि-(दाभा पृ० १७१) ग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् (कास्मृ० ९२१)। १।

स्त्रीणां स्वपतिदायस्तु उपभोगफलः स्मृतः।

नापहारं स्त्रियः कुर्युः पतिवित्तात् कथञ्चन॥—इति भारतादपहार-शब्दार्थेन यथेष्टदानविक्रयाद्यनधिकारः—इति दायरहस्यग्रन्थलिखनम्॥२॥

१ धनेऽधिकार०—पाठ०।

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा—इत्याद्युपरिलिखितग्रन्थधृत-याज्ञवल्क्यवचनञ्चेति (पृ० २१६, २।१३५) ॥ ४ ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

बलरामभट्टाचार्य्यलिखितमोकारनामासंज्ञकपत्रानुसारेण प्रत्यर्थिनः किञ्चिदप्यंशत्वेन प्राप्तुं नार्हन्ति, तत्पत्रेण प्रत्यर्थिनामंशप्राप्तिप्रयोजकस्य तत्स्वत्वोत्पत्तिप्रयोजकस्य प्रत्यर्थिन उद्दिश्य बलरामभट्टाचार्य्यकृतस्य दानादेरनवगमात्। बलरामभट्टाचार्यस्य पत्न्यामेकस्यां पुत्रवध्वामदत्तायां कन्यायामेकस्यां विद्यमानायामपि स्वातन्त्र्याद्बाधकाभावाच्च प्रत्यर्थिनांऽशदानक्षमता आसीत्—इति वङ्गदेशचलितदायभागदायरहस्यश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायक्रमसंग्रहविवादभङ्गार्णवविवादार्णवसेत्वादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

जुनमासस्य षड्विंशतिदिने शुक्रवासरे घटिकाधिकयामद्वये दत्तेति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

सं० २४९६

७५—रोयकारि मिसिल आदालत देवोयानि सदर तारिख ३ माह जुन सन १८२९ ई मताबक २२ माह ज्यैष्ठ सन १२३६ बाङ्गला रोज बुधवार ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत अलियम लसटर साहेबेर वैठके—

आकबरराय प्रभृति मोकलेशगण आपिलाएटान्
यदुनाथसिंह ओ साहेबसिंह प्रभृति रप्पाडएटान्

रप्पाडएटानेर मध्ये रामप्रतापसिंह एक रप्पाडएट हाजिर आसिया ए मकर्द्दमार सानि तजविजेर प्रार्थनाय एक किता सओयाल वारानशेर पाठशालार ओ कलिकातार कालेजेर पण्डितगणेर दुइ किता व्यवस्था ओ ताहार एक किता इङ्गरेजि तरजमा ओ १०५७ लम्बरेर मकर्द्दमा ओ ए मकद्दमा बाबत ई १८२३

सालेर माइ मासेर १० (तारिखेर) ओ एइ सनेर फेबरुओरि मासेर २४ तारिखसकलेर लिखित आखेरि दुइ किता रोयकारिर नकल सम्वलित लं दाखिल करिल। एइ सनेर फेबरुओरि मासेर २४ तारिखेर हुओया ए आदालतेर फयशला सहित पडागेल। यथा रप्पाइएटाणेर सओयालेर उपर चूडन्त हुकुम सादर हुओनेर पूर्ब्बे १७५७ लम्बरेर मकद्दमा बाबत इंरेजि १८२१ शालेर फेबरुओरि मासेर २ तारिखेर हुओया रोयकारिर लिखित सओयालेर जबाबे ए आदालतेर एइक्षणकार पण्डित इहते व्यवस्था लओन ओ इहा अवगत हुओन ये ऐ लम्बरेर सरेर नथिते ३३ सम्बरे प्रथित ए आदालतेर पूर्ब्बेर पण्डितदिगेर व्यवस्था शास्त्रानुसारे यथार्थ घटे कि ना उचित इइल। अतएव हुकुम हइल ये एइ रोयकारि ओ ई १८२१ शालेर फेब्रुओरि मासेर २ तारिखेर हुओया ए आदालतेर रोयकारिर लिखित सओयाल ओ ताहार जबाबे ए आदालतेर पूर्ब्बेर पण्डितगणेर व्यवस्था ओ रप्पाइएटेर दाखिल करा दुइ किता व्यवस्था सहित ए आदालतेर एइक्षणकार पण्डितके समर्पण करा जाय, जे ई १८२१ शालेर फेबरुओरि मासेर २ तारिखेर हुओया रोयकारिर लिखित सओयालेर ओ समर्पित व्यवस्था सकर मजमुनसकलेर अनुमोदने चलित शास्त्रानुसारे व्यवस्था एइ कैफियत सम्वलित, ये पूर्ब्बेर पण्डितगणेर व्यवस्था शास्त्रेर आज्ञानुसारे कि, ताहार किछु विपर्य्यय घटे, लिखिया दुइ सप्ताह मध्ये दाखिल करेण इति।

जबाबव्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतालियमनशद्दरसाहेबधर्म्माधिकरणलिखितैतदब्दीयजुनमासीयतृतीयदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतात्मापितं तद्विचारपत्रम् एवमङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यैकविंशत्यधिकाष्टादशशताब्दीयफेबर(अरि)मासीयद्वितीयदिवसीयैतद्धर्म्माधिकरणलिखितविचारपत्रलिखितप्रश्नप्रतिरूपपत्रं तदुत्तरञ्चैतद्धर्म्माधिकरणनियुक्ताभ्यां पूर्व्वपण्डिताभ्यां लिखितं व्यवस्थापत्र-

मेवमेतद्धर्म्माधिकरणप्रत्यर्थिनिविष्टं व्यवस्थाद्वयञ्च यत्तन्मार्गशीर्षैकादशदिने घटिकात्रयाधिकयामद्वये मया प्राप्तं तदवलोक्य विविच्य च यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

यद्यपि कस्यचित्[1] साधारणसराजकरस्थावरस्य कतिचिदंशिनः क्रयकर्त्तारश्च, येषामुपरि तत्स्थावरसम्बन्धिराजकरदानसंरक्षणाथेत्यादिकर्तृत्वभारः स्थितस्ते, तावदप्राप्तव्यवहारेष्वंशान्तरेषु विद्यमानेष्वेवं तेषामनुमतिं विना[2] राजकरदानार्थं कस्यचिन्निकटे तस्यैव सराजकरस्थावरस्य विक्रयं कृतवन्तः स्युस्तदा स विक्रयः सिद्धो भवितुं प्रचलितुञ्च न शक्नोति, प्रभुकृतप्रभलिलि(ता)याममवस्थायां सत्यां साधारणस्थावरधने सर्व्वेषामंशिनामनुमतिं विना एकस्य द्वयोर्बहूनां[3] वा स्वस्वांशयोग्यस्य समुदायस्य वा दानाधमनविक्रयानधिकाराद्, इदानीं बेहारदेशप्रचलितग्रन्थेषु प्रभुसमर्पितवाराणस्यधिकरण्यकपाठशालास्थपण्डितलिखितव्यवस्थापत्रे कलकत्ताख्यमदानगरसंबन्धि[4]-पाठशालास्थपण्डितलिखितव्यवस्थापत्रे चाप्राप्तव्यवहारेषु अंशान्तरेषु सत्सु प्राप्तव्यवहारैरंशिभिः साधारणसराजकरस्थावरसमुदायस्य[5] स्वस्वांशयोग्यस्य वा राजकरदानार्थं विक्रयः कर्त्तुं शक्यते, तैश्च कृतो विक्रयः सिद्धो भवितुं शक्नोतीत्येतद्विषयकस्य प्रमाणस्यालिखितत्वाच्च, शास्त्रानुसारेण बालकानामप्राप्तव्यवहाराणां धनस्य सर्व्वतोभावेन राज्ञो रक्षकत्वेन राजकरदानार्थमप्राप्तव्यवहाराणां विक्रयस्य भवितुमशक्यत्वाच्च[6]—इति बेहारदेशचलितमनुमिताक्षरामिताक्षराटीकासुबोधिनीवीरमित्रोदयव्यवहारमाधवव्यवहारमयूखव्यवहारकौस्तुभादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

एवञ्चैतद्धर्म्माधिकरणनियुक्ताभ्यां पूर्व्वपण्डिताभ्यां पूर्व्वं या व्यवस्था दत्ता सा बेहारदेशचलितशास्त्रसिद्धैव । नहि तस्यां व्यवस्थायां कश्चित्तद्व्यतिक्रमोऽप्यस्ति—इति अगस्तिमासस्य चतुर्थदिने घटिकैकाधिकयामद्वये मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।

---

१. कस्यचित्—व्यव० ।
२. तेषामसम्मतिविभिन्नधना०—व्यव० ।
३. बहूनां—व्यव० ।
४. संबंधि—व्यव० ।
५. स्थावरस्य—व्यव० ।
६. ०मशक्यत्वाच्च—व्यव० ।

अत्र प्रमाणम्—

स्थावरस्य समस्तस्य गोत्रसाधारणस्य च ।
नैकः कुर्यात्क्रयं दानं[1] परस्परमतं विना ॥—इति वीरमित्रोदयादि-
(वी० मि० व्य० पृ० ५८६) ग्रन्थधृतव्यासवचनम् ॥ १ ॥

अविभक्तेषु द्रव्यस्य मध्यगतत्वादेकस्यानीश्वरत्वात्सर्वाभ्यनुज्ञा अवश्यं कार्या, विभक्तेषु तूत्तरकालं विभक्ताविभक्तसंशयव्युदासेन व्यवहारसौकर्याय सर्वाभ्यनुज्ञा, न पुनरेकस्यानीश्वरत्वेन । अतो विभक्तानुमतिव्यतिरेकेणापि व्यवहारः सिद्ध्यत्येव—इति मिताक्षरा(पृ०२००) ग्रन्थलिखनम् ॥२॥

अत्रापि त्वविभक्तानुज्ञामन्तरेण दानाद्यसिद्धिः साधारणत्वाद्[2] द्रव्यस्य । विभक्तानुमतिव्यतिरेकेणापि दानादिकमुपपद्यते—इत्यादि मिताक्षराटीकासुबोधिनी (पृ० ६११) ग्रन्थलिखनम् ॥ ३ ॥

बालदायादिकं रिक्थं[3] तावद्राजानुपालयेत्[4] ।
यावत्स स्यात् समावृत्तो यावच्चातीतशैशवः ॥ —इति मनु(८।२७)-
वचनञ्चेति ॥ ४ ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

नं० ५५१२

७६—रोबकारि मिसिल आदालत देओयानि सदर तारिख ४ माह आगस्त सन १८२९ ई मताबक २१ माह श्रावण सन १२३६ बाङ्गला रोज मङ्गलवार ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत बाब-रट हालडन रासटरि साहेवेर बैठके ॥—

---

१. मध्यस्थत्वात्—मिता० ।
२. दाय—व्यव० ।
३. साधारणत्वात्—व्यव० ।
४. बालकम्—व्यव० ।
५. रक्षा—व्यव० ।

जयरामधामि स्वयं उक्ति प्रकारे मृत वखेरि-
धामिर ओ दिपु धामिनिर अप्राप्तव्यवहार पुत्र

रामचन्द्रधामिर पक्षे—	आपिलाण्ट—
सुशनधामि—	रेस्पाण्डण्ट—

आपिलाण्ट स्वयं ओ रेस्पाण्डण्टेर उकिल मौलवि गोलाम एजदानि हाजिर आसिल। एइ सनेर जुन मासेर ३० तारिखेर हुओया जेला वेहारेर जजसाहेबेर एक किता रिटरण, ताहार सम्बलित रोवकारि प्रभृति पौंचिया अथ एइ मकद्दमार नथि सम्वलित रोवकार हइया जिलार आदालतेर कागजसकल १ नम्बर हइते तथाकार फयशला पर्य्यन्त ओ मथिनशान कोर्टेर कागजात फयशला सहित ओ ए आदालतेर समस्त कागज इंराजि १८२७ शालेर आगस्त मासेर २५ तारिखेर हुओया एइ आदालतेर पूर्व्वेर द्वितीय हाकिम श्रीयुत फोरटनि इसमिद साहेबेर ओ इं० १८२८ शालेर १५ सेतम्बर मासेर लिखित ए आदालतेर हाकिम श्रीयुत फटयरट थरलेन सिली साहेबेर रायसकलेर सम्बलित पडागेल। ये हेतुक ए मकद्दमाते स्त्रीलोकेर पक्ष हइते पोष्यपुत्र राखा जाओन विशये जेलार आदालतेर नथिर गृथित व्यवस्थासकल ओ ए आदालतेर पण्डितगणेर व्यवस्थार मध्ये एइ प्रकार अनैक्य हइयाछे ये जिला वेहारेर आदालतेर नथिर व्यवस्था लेखा आछे ये स्त्रीलोके स्वामिर विना अनुमतिते पोष्यपुत्र राखनेर क्षमता राखे ओ ए आदालतेर पण्डितगणेर व्यवस्थाय लेखागियाछे ये स्त्रीलोक स्वामीर अनुमति व्यतीत पोष्यपुत्र राखार क्षमता[1] हवेक ना। अतएव चूडान्त हुकुम सादर हओनेर[2] पूर्व्वे वेहारदेशेर चलित शास्त्र ओ धामिदिगेर वंसेर[3] डाँडा ओ व्यवहार ये यद्यपि कोन स्त्रीलोके पतिर अनुमति व्यतीत पोष्यपुत्र राखिया थाके, ऐ पोष्यपुत्र शास्त्रानुसारे उहारदिगेर वंशेर डाँडा ओ व्यवहार दृष्टे सिद्ध हइ-

---

१ क्षमता ना हवेक—व्यव०। २ हओनेर—व्यव०। ३ वंशेर डांडा—व्यव०।

याछे कि ना—अवगत हओन आवश्यक हइया हुकुम हइल ये एइ रोवकारिर नकल एइ हुकुमे ये ऐ जिलार जजसाहेब साकिम ऐ जिलार तिन चारि जन प्रधान पण्डितगणेर द्वाराय तथाकार चलित शास्त्रेर आज्ञा सकल ओ धार्म्मिगणेर वंशेर डाँडा ओ व्यवहार उपरेर लिखित प्रकारे तहकिकात् करिया ये साव्यस्त हय ताहार॰ कैफीयत लओयाजिमा कागजसकलेर सम्वलित, ओ यद्यपि फखन ओ धार्म्मिरदिगेर पोष्यपुत्र विषय याहा पतिर अनुमति व्यतीत राखियाछे, अन्य कोन एक मकर्द्दमा ऐ जिलार आदालते उपस्थित ओ निष्पत्ति हइयाथाके सेइ मकर्द्दमार आशल रोयदाद॰ ओ पाठाएन एक मास मेयादे परिसिष्टेर लेफाफा जेला वेहारेर जजसाहेबेर निकट पाठान याय, ओ एइ रोवकारिर द्वितीय नकल,एइ कारण ए आदालतेर पण्डित वैद्यनाथमिश्रेर हाओ॰ याला कराजाय ये ऐ पण्डित एइ कथासकलेर जवाब ये एइ मक॰ र्द्दमा बावत ताहान दाखिलकरा व्यवस्था ओ जेला वेहारेर आदा- लतेर नथिर गृथित व्यवस्थासकले ये ये ग्रन्थेर नामसकल लेखा आछे, ऐ सकल व्यवस्था ये सकल ग्रन्थेर वचनसकलेर मते घटे कि ना, एइ रोवकारिर नकल पाओनेर तारिख हइते एक सप्ताहं मध्ये दखिल करेण इति ।

एतदस्मांधिकरणाधिपतिश्रीयुतरावरटहालडनराटरीसाहेबधर्म्माधिक - रणलिखितैतदध्दीयागस्तिमासीयचतुर्थदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूप॰ पत्रं यसन्मासीयचतुर्विंशतिदिने घटिकैकाधिकयामद्वये मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

अस्मल्लिखितव्यवस्थाया वेहारदेशीयजिलाख्यावान्तरधर्म्माधिकरणीय॰ व्यवस्थाभिः सह विरोधे इदमेव कारणम्—दत्तकमीमांसादत्तकचन्द्रिकादत्तक॰ दीधितिदत्तकदर्पणदत्तककौमुदीवीरमित्रोदयव्यवहारमयूरा देदत्तकविषयक - ग्रन्थमात्र एव 'न स्त्री पुत्रं दद्यात् प्रतिगृह्णीयाद्वाऽन्यत्रानुज्ञानाद् भर्त्तुः' इति स्त्रियाभर्त्त्रनुमतिं विना दत्तकपुत्रग्रहणाधिकारनिषेधकवशिष्ठवचनस्य लिखि- तत्वात् कस्मिंश्चिदपि वेहारदेशचलितग्रन्थे कस्यचिदपि मुनेरेतादृशं वचनं

लिखितं नास्ति तद्वचनानुसारेण स्त्रियाभर्त्तनुमतिं विनापि दत्तकपुत्रग्रहणाधिकारो भवेत्। यद्विषयस्य मुनिवचनेन ग्रन्थमात्र एव निषेधो लिखितः[1] स विषयः शास्त्रानुसारेण सिद्धो भवितुं न शक्नोति। एवं जिलाख्यधर्माधिकरणीयपत्रजातान्तर्गताश्चतस्रो व्यवस्थास्तासां प्रतिरूपाणि,[2] एतञ्च मिलित्वा समस्तव्यवस्थासु च यशोरमहलिखितपञ्चविंशत्यङ्काङ्कितव्यवस्थायां द्वात्रिंशदङ्काङ्कितव्यवस्थायां च भर्त्रनुमतिं विनापि स्त्रिया दत्तकत्वेन गृहीतः पुत्रस्त्यक्तुं न शक्यत इति यत्तेन पण्डितेन लिखितं तत्र शास्त्रसम्मतं भवति। यस्मिन् विषये यस्याः स्त्रियाः सामर्थ्यं नास्ति तया कृतः स विषयो निवृत्तो भवितुं न शक्नोत्यर्थात् सिद्धो भवितुं शक्नोतीत्येतद्विधायकशास्त्राभावात्। एवं याज्ञवल्क्यस्य मुनेरिदं वचनं "यदि काचित् स्त्री पत्यनुमतिं विना कस्यचिद् दत्तकपुत्रत्वेन ग्रहणं कृतवती[3] स्यात्तदा सा स्त्री स्वयं तं दत्तकपुत्रं त्यक्तुं न शक्नोति। अनुमत्यभावेन यदि यस्याः पतिस्त्यक्तुमिच्छति तदा स दत्तकपुत्रस्त्यक्तो भवितुं शक्नोति"—इति पञ्चविंशत्यङ्काङ्कितव्यवस्थायां यत्तेन पण्डितेन लिखितं तदतीवनिर्मूलं याज्ञवल्क्यस्य मुनेरन्यस्य कस्यचिद्वा मुनेरेतादृशार्थप्रतिपादकवचनाभावात्।

अथ च पञ्चविंशत्यङ्काङ्कितलीलाधरपण्डितलिखितव्यवस्थायां पूर्वं यत् प्रभुप्रश्नस्योत्तरे पतिपुत्रविहीना[4] स्त्री रीत्यनुसारेण शास्त्राज्ञानुसारेण[5] (च) दत्तकपुत्रं ग्रहीतुं[6] शक्नोति स[7] सिद्धो भवति इति यल्लिखितं तत्र शास्त्राज्ञाया अयमर्थो विवादचन्द्रविवादचिन्तामणिकल्पतरुप्रभृतिग्रन्थेषु लिखितः—स्त्री पत्युरनुमत्या, यदि पतिर्नास्ति तदा ज्ञात्यनुमत्या, दत्तकपुत्रं कर्त्तुं शक्नोति स सिद्धो भवति-इति यत्तेन पण्डितेन लिखितं तदतीवाशुद्धं मिथिलादेशचलितविवादचन्द्रविवादचिन्तामणिकल्पतरुप्रभृतिग्रन्थेष्वपि "न स्त्री पुत्रं दद्यात् प्रतिगृह्णीयाद् वा" इत्यत्र "अनुज्ञानाद्भर्त्तुः" इति स्त्रिया भर्त्रनुमतिं विना दत्तकपुत्रग्रहणाधिकारनिषेधकविशिष्टवचनस्य लिखितत्वात्। पत्युरभावे ज्ञात्य-

---

१. लिखित—व्यव०। २. प्रतिरूप—व्यव०। ३. कृत—व्यव०।
४. विहिना—व्यव०। ५. ०ज्ञानानु०—व्यव०। ६. गृहीतुं—व्यव।
७. सः—व्यव०।

नुमत्या स्त्रिया दत्तकपुत्रो ग्राह्य इत्यस्यालिखितत्वाद् वरं तदन्तर्गतमिथिलादेशचलितविवादचिन्तामणिग्रन्थे दत्तप्रदानिकप्रकरणे "विशेषेण भर्त्तनुमतौ सत्यामपि स्त्रिया दत्तकपुत्रग्रहणे नाधिकारस्तदङ्गव्याहृतिहोमबाधादितिवर्त्तुलार्थः" इति लिखितत्वाच्च। एवं जिलाख्यधर्म्माधिकरणीयपत्रजातान्तर्गतव्यवस्थासु यद्यद्ग्रन्थानां नामानि लिखितानि सन्ति ताः सर्व्वा एव व्यवस्थास्तत्तद्ग्रन्थधृतमुनिवचनानां सम्मता न भवन्ति; यतस्तत्तद्ग्रन्थेषु सर्व्वेष्वन्येषु ग्रन्थजातेष्वपि विशेषेण "न स्त्री पुत्रं दद्यात् प्रतिगृह्णीयाद्वाऽन्यत्रानुज्ञानाद् भर्त्तुः" इति स्त्रिया भर्त्रनुमतिं विना दत्तकपुत्रग्रहणाधिकारनिषेधकवशिष्ठवचनस्य लिखितत्वात्। कस्मिंश्चिदपि वेहारदेशचलितग्रन्थे वेहारदेशीयजिलाख्यावान्तरधर्म्माधिकरणीयव्यवस्थासु वा कस्यचिदपि मुनेरेतादृशं वचनं लिखितं नास्ति यद्वचनानुसारेण स्त्रिया भर्त्रनुमतिं विनापि दत्तकपुत्रग्रहणाधिकारो भवेदिति।

अत्र प्रमाणम्—

न स्त्री पुत्रं दद्यात् प्रतिगृह्णीयाद्वाऽन्यत्रानुज्ञानाद्भर्त्तुः—इति दत्तकमीमांसा(पृ० ७)दत्तकचन्द्रिका(पृ० ३)दत्तकदीधितिदत्तकदर्पण(पृ० १ क, पं० १२)दत्तककौमुदी(पृ० १ क, पं० १२)वीरमित्रोदयव्यवहारमयूखविवादचन्द्रविवादचिन्तामणिकल्पतरुप्रभृतिग्रन्थधृतवशिष्ठवचनम् ॥ १ ॥

अत्र[1] च निमित्तं भर्त्रनुज्ञानं, ततश्च विधवाया भर्त्तभावेनानुज्ञानासम्भवान्निमित्तकप्रतिप्रसवाप्रवृत्त्या प्रापकान्तराभावाच्च नाधिकारः इति सर्व्ववादिसम्प्रतिपन्नमेव—इति दत्तकमीमांसाग्रन्थलिखनम् (पृ० १२-१३) ॥ २ ॥

भर्त्रनुज्ञानेऽपि स्त्रिया न ग्रहणाधिकारः, तदङ्गव्याहृतिहोमबाधादिति वर्त्तुलार्थः। ननु 'अन्यत्रानुज्ञानाद्भर्त्तुः' इत्यविशेषेण श्रवणाद् भर्त्तनुज्ञादानवत् ग्रहणेऽपि स्त्र्यधिकारसिद्धौ तदङ्गविद्याप्रयुक्तिरपि तस्याः कल्पते, इति चेत्,सत्य सहत्वेन तस्या अधिकार इष्टिवत् पृथक्त्वेन बाधसापेक्षविध्यापत्तेः—इति विवादचिन्तामणिग्रन्थलिखनञ्चेति ॥ ३ ॥

---

१ तत्र—दत्तमी०।

शीतज्वरमासस्योनविंशतिदिने घटिकैकाधिकयामद्वये मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

७७—रोवकारि मिस्लि आदालत देओयानि सदर तारिख १८ माह आगस्त शन १८२६ ई मतावक ३ माह भाद्र शन १२३६ बाङ्ला रोज मङ्गलवार ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत रावरट हाल-डन राटरी साहेबेर बैठके ।

सिओयकसमिछर वनाम देविप्रसादपांडे प्रभृति

सायलेर उकिल मुनशी होसेन आलि हाजिर आसिल । पर-गणे येसुधार मौजे पलाए एडिहार अद्धेकेर उपर आमल ओ दखल देयाइया पाओनेर मकर्र्मार रकुम सदर जमा ९०३ टाकार रांख्याय खास आपिल मन्जुरिर प्रार्थनाय ५० टाकार मूल्येर इष्टम्प कागजेर उपर सायेलेर सओयाल, याहा ऐ उकिलेर नामिक उकालतनामा ई १८२७ सालेर माइ मासेर १५ तारिखेर लिखित वारानशेर प्रविनशन कोर्टेर फयशलार नकल सहित, याहा ऐ सनेर अक्तुवर मासेर २९ तारिखे दुइ टाकार मूल्येर फेह्-रस्त द्वाराय दाखिल हइयाछिल, अद्य दृष्ट आसिल। हुकुम हइल ये एइ रोवकारिर नकल एखने आपिलेर सम्पर्किय कागजसकल एइ हुकुमे ए आदालतेर पण्डित वैद्यनाथमिश्रेर हाओला करा जाय-चे ऐ पण्डित ऐ कागजसकलेर ■ दौहित्र मातामहेर दत्त कता सिद्धि हओन सम्बलित कोर्ट आपिलेर पण्डितेर व्यवस्था ये ताहार खोलासा मजमुन कोर्टेर फयसलार लिखा आछे, अनुमोदने ऐ ऐ व्यवस्थार सिद्धता ओ असिद्धता लिखेन, ओ पण्डितेर व्यवस्था दाखिल हओन पर्य्यन्त सैयद रहमत आलिर खास आपिलेर

सओयाल मञ्जुर ओ नामञ्जुर हओनेर चूडान्त हुकुम सादर हओन स्थगित थाके इति ।

श्रीर्ज्जयतितराम् ।

जयावश्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतरावरटहालइनपाटरिसाहेबधर्म्माधिकरणलिखिताङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्योनत्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयागस्तिमासीयाष्टादशदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितैतद्विषादविषयनिक्षिप्तपत्रजातं यत्तदब्दीयदिसम्बरमासीयाष्टाविंशतिदिवसीयप्रश्नाशान्तरानुसारेण तदब्दीयतन्मासीयत्रिंशद्दिने घटिकात्रयाधिकयामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य विविच्य च यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

दौहित्रो मातामहस्य दत्तकः सिद्धो भवतीत्येतदर्थप्रतिपादककोटापीलाख्यधर्म्माधिकरणनियुक्तपण्डितलिखिता व्यवस्था, यस्याः तात्पर्यार्थः कोटापीलाख्ये धर्म्माधिकरणीयजयपत्रे लिखितः, सा व्यवस्था शास्त्रसिद्धा न भवति । *प्रभुसमर्पितपत्रजातेरर्थिप्रत्यर्थिनो[2]र्द्वयोरेव ब्राह्मणजातीयत्वनिश्चयेन ब्राह्मणजातौ दौहित्रो मातामहस्य दत्तको भवितुं न शक्नोतीति शास्त्रे निषेधात्*—इति धाराशुस्त्यादिप्रचलितदत्तकमीमांसादत्तकचन्द्रिकादत्तकदीधितिदत्तकदर्पणदत्तकनिर्णयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

दौहित्रो भागिनेयश्च शूद्रैश्च[3] क्रियते सुतः ।

ब्राह्मणादित्रये नास्ति भागिनेयः सुतः क्वचित् ॥ इति दत्तकमीमांसा- (पृ० ५६)दत्तकचन्द्रिका (पृ० ७)दत्तकदीधितिप्रभृतिग्रन्थधृतशौनकवचनम् ॥ १ ॥

तथा च *भागिनेयपदं दौहित्रस्याप्युपलक्षणमेव*—इति दत्तकमीमांसा- (पृ० ६६–६७)ग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

---

१. प्रभोराज्ञा०—व्यप० । २. प्रत्यर्थिनो०—व्यप० । ३. शूद्राद्य—व्यप० ।

तथापि भागिनेयदौहित्रवर्ज्जं विरुद्धसम्बन्धापरया पुत्रत्वबुद्ध्यनर्ह-भ्रातृपितृव्यमातुलवर्ज्जं च त्रयाणां वर्णानां स्वसमानवर्ण एव–इति दत्तकदीधितिग्रन्थलिखनञ्चेति ॥ २ ॥—

त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयजानवरीमासीयोनविंशतिदिने घटिकात्रयाधिकयामद्वये मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

नं० १८२२

७८—रोबकारि मिसिल आदालत देओयानि सदर तारिख १६ माह सितम्बर सन १८२९ ई मताबक १ माह आश्विन सन १२३६ बाङ्गला रोज बुधवार ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत फटवरट थरक्केन[1] सिली साहेबेर बैठके।

आनन्दनाथराय आप्राप्तव्यवहारेर वल्लिगन भवानीप्रसाद-चौधुरि ओ विश्वनाथ चक्रदार—

आपीलाण्टान—

राणी जगदम्बा— रस्पाण्डण्ट—

आपिलाण्टगणेर उकिल मुनशी होसेन आलि, रस्पाण्डण्टेर उकिल सदासुख पण्डित हाजिर आसिल। ए मकदमा पूर्व्वे एइ मासेर ७ ओ ८ ओ ९ ओ १० ओ १५ तारिखसकले रोबकार ओ प्रविनशान कोटेर कागजसकल १ नम्बर हइते तथाकार फयसाला पर्य्यन्त ए आदालतेर आरजी मजुधात ओ जबाब पडागिया दिवा अवसान प्रयुक्त स्थगित छिल, पुनराय अद्य उपस्थित हइया ए आदालतेर बाकी समस्त कागज एइ शनेर आगस्त मासेर १५ तारिखेर हओया ए आदालतेर हाकिम श्रीयुत मान्तेगिओ हेनरि

---

1. थरलेत—व्यप०।

टरम्वल साहेवेर राय संवलित पडागेल। तत्परे रप्पाडएटेर वकिल चारि टाका मूल्येर फेहरेस्तेर द्वाराय विश्वनाथशर्म्मा चक्रदार ओ भैरवनाथशर्म्मार जवावेर १ किता नकल ओ वाङ्गला अक्षर ओ मजमुएेर एक किता दस्तावेजेर नकल लम्वरे दाखिल करिल, दृष्टे आसिल। यथा चूडन्त हुकुम सादर हओनेर जवाव लओया उचित हइल, अतएव हुकुम हइल ये एइ रोयकारिर नकल एइ मकद्दमा वावत तुइ आदालतेर समुदय कागच एइ हुकुमे ए आदालतेर पण्डितके समर्पण क(र)ा जाय ये ऐ पण्डित समस्त कागजेर दृष्टे ओ अनुमोदने एइ विषयेर सओयालेर जवाव ये यद्यपि विरोधीय ग्रामसकल देवसेवा वावत ओ ताहार उपर सरकारेर खाजाना मकरर आछे, ऐ प्रकारे देवतार सेवाइत व्यक्तिके ऐ सकल ग्राम विक्रय करार क्षमता आछे कि ना, ओ वङ्गदेश चलित शास्त्रानुसारे एमत विक्रय सिद्ध ओ यथार्थ घटे कि ना, एइ रोयकारिर नकल पाओनेर तारिख हइते पञ्च दिवसेर मध्ये लिखिया दाखिल करेन इति।

जवावव्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतकटवर्टयरलेनसिलीसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितैतद्धीयस्तिम्वरमासीयषोडशदिवसलिखितविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितैतद्विवादविषयनिविष्टपत्रजातं यत्तन्मासीयाष्टादशदिने यामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं, तदवलोक्य विविच्य च यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

यद्यपि विवादास्पदीभूताः सर्व्वे ग्रामा देवतानां सराजका भवन्ति, तदा देवतायाः सेवाइतव्यक्तिशब्दवाच्यस्य व्यक्तिविशेषस्य तेषामेव ग्रामाणां विक्रयकरणे क्षमता नास्ति, एवमेतादृशविक्रयो वङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेण यथार्थो भवितुं सिद्धो भवितुञ्च न शक्नोति। प्रभुसमर्पितपत्रजातैर्विवादास्पदीभूताः सर्व्वे ग्रामा एतादृशविक्रयात् पूर्व्वमेतदर्थमेव नियमिताः स्थिताः—यथा एतेषां ग्रामाणां राजग्राह्यकरं राज्ञे दत्त्वा अवशिष्टैस्तद्ग्रामोत्पन्नैर्देवतानां

सेवा भविष्यतीत्यवगमादेतादृशवृत्तान्ते सति देवतायाः सेवाइतराब्दशाब्दस्य तत्र संरक्षणावेक्षणादिकर्तृत्वं विना राजग्राह्यकरस्य राज्ञे समर्पणञ्च विना किञ्चिदपि स्वत्वाभावात् तत्तद्ग्रामाणां दानविक्रयकरणक्षमताया दूरापास्तत्वाद्, अथ च शास्त्रानुसारेणास्वामिकृतविक्रयस्य दानस्य वा राज्ञा परावर्त्तनीयत्वाच्च—इति वङ्गदेशचलितमनुकुल्लूकभट्टकृतमन्वर्थमुक्तावलीदायभागविवादमहार्णवविवादार्णवसेत्वादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था।

अत्र प्रमाणम्—

देवस्वं ब्राह्मणस्वं वा लोभेनोपहिनस्ति यः।

स पापात्मा परे लोके गृध्रोच्छिष्टेन जीवति॥—इति मनुवचनम् (११।२६)॥ १॥

प्रतिमादिदेवतार्थमुत्सृष्टं धनं देवस्वम्—इति मन्वर्थमुक्तावल्यां कुल्लूकभट्टलिखनम् (पृ० ४३०)॥ २॥

अस्वामिना कृतो यस्तु दायो विक्रय एव वा।

अकृतः स तु विज्ञेयो व्यवहारे यथा स्थितिः॥—इति मनुवचनम् (८।१९९)॥ ३॥

अस्वामिविक्रयं दानमाधिञ्च विनिवर्त्तयेत्—इति विवादार्णवसेतु (पृ० १३४)विवादमहार्णवादि(१ विवाद पृ० ११७ ख)ग्रन्थधृतकात्यायन(कात्स्मृ० पृ० ७६)वचनञ्चेति॥ ४॥

सितम्बरमासस्य पञ्चविंशतिदिने मयेयं व्यवस्था दत्तेति।

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

परमात्मने नमः—

महामहिमश्रीयुक्तगवर्नमेण्टसंस्कृतपाठशालास्थ
पण्डितवर्गेषु—

१ मुक्तवली—व्यव०। २ ०देवतातदर्थ०—व्यव०।

७९—कोनो व्यक्ति आपन सकर तालुकेर मध्ये कोन कोन ग्राम देवसेवार्थ देवतार नामे नियमित करिया, किञ्चित्काल देवसेवादि करिया, कनिष्ठ पुत्रके ऐ देवसेवार्थ सकर स्थावर अर्पण पूर्वक देवसेवार्थ अनुमति करिया परलोकगामी हयेन। परे ऐ कनिष्ठ पुत्र बहुकाल देवसेवक रूपे प्रसिद्ध थाकिया, ऐ स्थावरेर करग्रहण राजस्वदान देवसेवादि करिया, ऐ स्थावर देवनाम सम्वलित आपन नामे दस्तखत करिया विक्रय करेन। ऐ विक्रय सिद्ध हय कि ना। इहार व्यवस्था गौडदेश प्रचलित शास्त्रानुसारे लिखिते आज्ञा हय इति।

देवनाम्ना नियमितस्य सकरस्थावरस्य तद्देवसेवकेन देवनामसंवलितस्व[1]-नामाङ्कितपत्रं कृत्वा कृतो विक्रयः सिद्ध एव। किन्त्वियान् विशेषः—विक्रेतुर्यथा करग्रहणराजस्वप्रदानादिसम्पादकं लोकसिद्धं स्वत्वं तत्रासीत् क्रेतुरपि तादृशमेव लौकिकं स्वत्वं तत्र जातं देवस्वत्वस्य विजातीयक्रेतृस्वत्वं प्रत्यबाधकत्वात्, स्वकरोपादानाय राजकृतविक्रये देवस्वत्वस्य क्रेतृस्वत्वाबाधकत्ववत् स्वपितृकृतदानाद् विक्रेतृकनिष्ठपुत्रस्वत्ववद् विक्रयमकृत्वा तस्मिन् मृते तदुत्तराधिकारिस्वत्ववच्च—इति गौडदेशप्रचलितश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकामिताक्षराग्रन्थविदाम्परामर्शः ॥ ० ॥

राज्यान्तराधिकारिणः सकाशान्नृपतिना क्रीतेऽपि राज्यान्तरादौ विक्रेतृस्वत्वसजातीयकरग्रहणोपयोगिस्वत्वमेव तत्रास्य जायते, न तु दायप्रतिगृहीतभूम्यादिवृत्तिस्वत्वसजातीयस्वत्वं तत्रत्यानां तत्र तत्र भूम्यादौ तथाविधस्वत्वसत्त्वेन तद्विरोधात् तादृशस्वत्वोत्पत्त्यसम्भवात् समानजातीययोः स्वत्वयोर्व्विरोधादिति[2]। तथा स्वत्वधारावारणाय सजातीयस्वत्वं प्रतिस्वत्वं विरोधीति सजातीयमितिकरणात् क्रीतप्रतिगृहीतराज्यान्तर्व्वर्तिनि तादृशस्थावरादौ क्रेत्रादेः क्रयाद्यधीनस्वत्वोत्पादे न व्यभिचार इति च दायभागटीकाकृच्छ्रीकृष्णतर्कालङ्कारलिखनम्। अनेन यस्मिन् द्रव्ये यस्य यादृशं स्वत्वं तेन तद्द्रव्यविक्रये क्रेतुस्तस्मिन् द्रव्ये तादृशमेव[3] स्वत्वं जायते इति स्फुटमव-

१. सम्वलित—व्यप०। २. स्वत्वयो—व्यप०। ३. ०मेवास्ये—व्यप०।

गम्यते। उच्यते—लौकिकमेव स्वत्वं लौकिकार्थक्रियासाधनत्वाद् व्रीह्यादिवद्, अपि च प्रत्यन्तवासिनामप्यदृष्टशास्त्रव्यवहाराणां स्वत्वव्यवहारो दृश्यते, क्रयविक्रयादिदर्शनात्। किञ्च नियतोपायकं स्वत्वं लोकसिद्धमेवेति न्यायविदो मन्यन्ते इत्यादि मिताक्षरालिखनम् (पृ० ३९७)। एतेन स्वत्वस्य लौकिकत्वात् (देव)सेवकस्यापि तत्र स्थावरे विजातीयस्वत्वमस्त्येव। अन्यथा उदासीना अपि तत्स्थावरस्य करग्रहणादिकं देवसेवाञ्च कुर्युरिति।

परमात्मने नमः—

श्रीरामचन्द्रशर्म्मणाम्।

श्रीहरिः शरणम्।

नवद्वीपस्थ—

महामहिमश्रीयुक्तमण्डितवर्गेषु[1]—

८०—तत्तद्देवसेवार्थं तत्तद्देवनाम्ना नियमितस्य सकरस्थावरस्य बहुकालकृततत्तद्देवसेवकेन तत्तद्देवतानामसंवलितस्वनामाङ्कितपत्रं कृत्वा कृतो विक्रयः सिद्ध एव। तत्र विक्रेतृनिरूपितकरग्रहणोपयोगिराजस्वदानसम्पादकलौकिकस्वत्वसजातीयक्रेतृस्वत्वोत्पत्तौ बाधकाभावात् जातीयस्वत्वं प्रति स्वसजातीयस्वत्वप्रतिबन्धकतया देवस्वत्वादेर्विजातीयतया तादृशस्वत्वस्यात्य बाधकत्वाद्—इति विदुषाम्परामर्शः ॥ ० ॥—

अत्र प्रमाणम्—

गौडदेशचलितदायभागटीकाकृच्छ्रीकृष्णतर्कालङ्कारभट्टाचार्य्यलिखनम्—राज्यान्तराधिकारिणः सकाशान्नृपतिना[2] क्रीतेऽपि राज्यान्तरादौ विक्रेतृस्वत्वसजातीयकरग्रहणोपयोगि स्वत्वमेव तत्रास्य जायते, न तु दायप्रतिगृहीतभूम्यादिवृत्तिस्वत्वसजातीयस्वत्वं तत्रत्यानां, तत्र तत्र भूम्यादौ तथाविधस्वत्वसत्त्वेन तद्विरोधात् तादृशस्वत्वोत्पत्त्यसम्भवात् समानजातीययोः स्वत्वयोर्विरोधादिति (दाभाटी० पृ०१०), तथा स्वत्व-

१ यथा ७६ अङ्किते व्यवस्थापत्रे तथा इहाप्यासीदित्यनुमीयते।

२ ०स्वजातीय०—व्यप०। ३ सकाशान्नृप०—व्यप०।

धारा(वा)रणाय सजातीयस्वत्वं प्रति स्वत्वं विरोधीति सजातीयमिति करणात्। क्रीतप्रतिगृहीतराज्यान्तर्वर्त्तिनि तादृशस्थावरादौ केत्रादेः क्रयाद्यधीनस्वत्वोत्पादेऽपि न व्यभिचारः (दायभागटी० पृ० ६) इति च ॥०॥

श्रीजगदीशो जयति

श्रीहरिः—	श्रीकालिकाप्रसादशर्म्मणाम्
श्रीरामलोचनशर्म्मणाम्	श्रीहरिः—
श्रीहरिः—	श्रीरघुनाथशर्म्मणाम्
श्रीराममोहनशर्म्मणाम्	श्रीहरिः—
श्रीहरिः शरणम्	श्रीकाशीनाथशर्म्मणाम्
श्रीरामचन्द्रशर्म्मणाम्	श्रीहरिः—
श्रीहरिः—	श्रीभोलानाथशर्म्मणाम्
श्रीरामशर्म्मणाम्	श्रीहरिः—
श्रीहरिः—	श्रीराधानाथशर्म्मणाम्
श्रीकालीप्रसन्नशर्म्मणाम्	श्रीहरिः—
श्रीहरिः—	श्रीहरिश्चन्द्रशर्म्मणाम्
श्रीकालीदासशर्म्मणाम्	

श्रीरामः—

श्रीरामसुन्दरशर्म्मणाम्

विद्यामन्दिरस्थपण्डितवर्गेषु—

८१—कश्चन स्वाधिकृतसकलग्रामान्तर्वर्त्तिकियद्ग्रामान् देवसेवार्थं नियम्य, देवतानाम्ना विख्याप्य, कियत्कालं देवसेवादिकं कृत्वा कनिष्ठपुत्रं तद्देवसेवार्थं तद्ग्रामाधिकारित्वेन संस्थाप्य, लोकान्तरं गतः। अनन्तरं तत्कनिष्ठपुत्रो देवसेवकत्वेन प्रसिद्धिमवलम्ब्य, तद्ग्रामसम्बन्धिकरग्रहण-

नियमितराजस्वप्रदानदेवसेवादिकं बहुकालं कृत्वा, तद्ग्रामान् देवनामसंवलितस्वनामाङ्कितपत्रेण विक्रीतवान्। तत्कृततद्विक्रयः स्वस्वत्वास्पदद्रव्यसम्बन्धितया सिद्ध्यत्येवेति विदुषां परामर्शः—

अत्र प्रमाणम्—

अत्रोच्यते। *"लौकिकमेव स्वत्वं लौकिकार्थक्रियासाधनत्वात् व्रीह्यादिवत्"* इत्युपक्रम्य, *"अपि च प्रत्यन्तवासिनामप्यदृष्टशास्त्रव्यवहाराणां स्वत्वव्यवहारो दृश्यते, क्रयविक्रयादिदर्शनात्। किञ्च नियतोपायकं स्वत्वं लोकसिद्धमेवेतिन्यायविदो मन्यन्ते"* इत्यादि मिताक्षरार्थग्रन्थे (पृ०१९७) *स्वत्वस्य लौकिकत्वेन स्थिरीकृतत्वात्,* लोके देवसेवार्थनियमितसकरस्थावरस्य स्वस्वत्वसंग्रहीतृस्वत्वजनकदानादिदर्शनात्[1] च स्वस्वत्वध्वंसपरस्वत्वोत्पादनरूपदानान्यथानुपपत्त्या, सकरभूमिदेवसेवार्थनियामकदेवसेवकस्यापि तत्र स्वत्वमिति स्थितम्। *स्वत्वस्य च यथेष्टविनियोगप्रयोजकत्वेन द्रव्ये स्वकीयं यादृशं स्वत्वं तादृशस्वत्वजनकदेवसेवककर्तृकविक्रयसिद्धिर्निराबाधेति युक्तिः। तादृशस्थावरस्य करग्रहणराजस्वप्रदानदेवसेवादिप्रयोजकतादृशविकं तृस्वत्वसकं तृस्वत्वोत्पत्तौ*[2] तु "पराजितनृपतिराज्यान्तर्वर्तितत्पुरुषीयक्रमागतस्थावरादौ जयादिना जेतुर्नृपतेः करग्रहणोपयोगिस्वत्वोत्पादे तथा क्रीतप्रतिगृहीतराज्यान्तर्वर्तिनि तादृशस्थावरादौ कर्षकादेः क्रयाद्यधीनस्वत्वोत्पादेऽपि न व्यभिचारः"-इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारलिखनं (पृ० ६) तुल्यस्थानीयत्वेन प्रमाणम्॥०॥

श्रीहरिर्जयति—	श्रीहरिः—
श्रीरामरत्नशर्म्मणाम्	श्रीपार्व्वतीचरणशर्म्मणाम्
श्रीगुरुर्जयति—	श्रीहरिः—
श्रीहरनाथशर्म्मणाम्	श्रीजगन्मोहनशर्म्मणाम्
श्रीहरिः—	श्रीहरिः—
श्रीनाथुरामशर्म्मणाम्	श्रीयोगध्यानमिश्राणाम्

१. ०सनगृहीतृ०—व्यप०। २. ०समर्कतृ०—व्यव०।

श्रीहरिःशरणम्—	श्रीशङ्करोजयति—
श्रीलक्ष्मीनारायणशर्म्मणाम्	श्रीशम्भुचन्द्रशर्म्मणाम्
श्रीहरिः—	श्रीविष्णुर्जयति—
श्रीजयगोपालशर्म्मणाम्	श्रीनिमाइचन्द्रशर्म्मणाम्
श्रीहरिः—	श्रीहरिः—
श्रीहरिप्रसादशर्म्मणाम्	श्रीगंगाधरशर्म्मणाम्

श्रीहरिर्जयति—
श्रीपीताम्बरशर्म्मणाम्

८२—प्रथमप्रश्न—

यद्यपि कोन व्यक्ति जमि सम्पत्त[1] कोन वस्तु ओ एक स्त्री ओ दुइ कन्या राखिया मृत्यु हय। परे ऐ स्त्री ऐ दुइ कन्यार प्रतिपालन ओ आवश्यक खरचेर निमित्ते ऐ जमिर मध्ये किछु विक्रय करिया मृत्यु हय। परे ऐ दुइ कन्यार अवशिष्ट जमि विभाग करिया लइया एक कन्या आपन अंश आपन भग्निके विक्रय करे। आर ऐ भग्निर तिन सन्तान। ताहार मध्ये एक वयप्राप्त, आर दुइ नावालग। एमत स्थले ऐ वेस्त्या आपन नावालग पुत्रद्वेर भरण-पोषण ओ आवश्यक खरचेर जन्य आपन वयप्राप्त ओ नावालग ओ स्वामी सकले एकात्रे थाकिया स्वामि ओ वयप्राप्त पुत्रेर सन्मतिते ऐ दुइ पुत्र नावालग थाकिते उपरेर लिखित वस्तु वन्धक किम्वा विक्रय करिले शास्त्र सम्मत सिद्ध हइते पारे कि ना इति।

द्वितीय प्रश्न—

कोन नावालग व्यक्तिदिगेर पिता ओ माता थाकिते नावालग वेक्तिदेर मालिक शास्त्र सम्मत अन्य केह हइते पारे कि ना।

---

१. सम्पत्त—साधीयान पाठः।

एइ दुइ प्रश्नेर प्रत्युत्तर वचन ओ तस्य भाषा इहार पार्श्वे लिखिवेन इति। शन १८२९ तारिख १० जुन मो शन १२३६ साल चा ता २९ ज्यैष्ठ ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

श्रीर्जयतितराम्

यथावद्व्यवस्था

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं यदङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्योनत्रिंशदधिकाष्टादशशतान्दीयजुलम्बरमासीयद्वितीयदिनसम्बन्धिसोमवासरे सार्द्धघटिकात्रयाधिकयामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि कश्चिद्व्यक्तिविशेषः कांचिद्[1] भूमिमेकां पत्नीं द्वे कन्ये च संत्यज्य मृतः स्यात्, तदनन्तरं सैव मृतस्य पत्नी तयोरेव द्वयोः कन्ययोः[3] प्रतिपालनार्थं स्वकीयावश्यकव्ययार्थं च तस्या भूमेः किञ्चिद्विक्रयं कृत्वा मृता स्यात्, तदनन्तरं ते एव द्वे कन्येऽवशिष्टां भूमिं विभज्य, गृहीत्वा तयोर्मध्ये एका कन्या, प्रभुसमर्पितविचारपत्रावगतो यस्तदीयावश्यकव्ययस्तदर्थं स्वांशं स्वभगिन्या निकटे विक्रीतवती स्यात्, एवं क्रयकर्त्र्यां भगिन्यास्त्रयः सन्तानाः[2], तेषां मध्ये एकः प्राप्तव्यवहारो द्वावप्राप्तव्यवहारौ, एतादृशवृत्तान्ते सति सैव क्रयकर्त्री अप्राप्तव्यवहारेण स्वपुत्रेणाप्राप्तव्यवहाराभ्यां स्वपुत्राभ्यां च स्वपतिना च सहैकान्ने स्थिता सती, स्वपत्यनुमत्या प्राप्तव्यवहारस्वपुत्रानुमत्या च सतोर्द्वयोरप्राप्तव्यवहारयोः स्वपुत्रयोरुपरिलिखितवस्तुनो बन्धकं विक्रयं वा कृतवती स्यात्, तदा स बन्धको विक्रयो वा शास्त्रतः सिद्धो भवितुं शक्नोति। यथा पुत्रपौत्रप्रपौत्रपर्यन्तरहितस्य मृतस्य धने पत्न्या उत्तराधिकारित्वेनाधिकारे जातेऽपि पत्न्या स्वभरणपोषणार्थं स्वकीयावश्यकव्ययार्थं च तद्धने दानाधमनविक्रयाधिकारः तथा पत्न्यभावे दुहितुरुत्तराधिकारित्वेनाधिकारे जातेऽपि

१. कांचिद्—व्यप०। २. सन्तानाः—व्यप०। ३. कन्ययो—व्यप०।

तस्या अप्यावश्यकव्ययार्थं स्वभरणपोषणार्थं च तद्धने दानाधमनविक्रयाधिकारोऽस्त्येव, सत्यां पुत्रवत्यां दुहितरि दौहित्रस्यानधिकारादिति ।

अत्र प्रमाणम्—

स्त्रीणां स्वपतिदायस्तु उपभोगफलः स्मृतः ।
नापहारं स्त्रियः कुर्युः पतिवित्तात् कथञ्चन ॥—इति दायभाग(दाभा० पृ० १७२)दिग्रन्थधृतभारतवचनम् (ममा०–१३।४७।२४) ॥ १ ॥

नापहारं स्त्रियः कुर्युः पतिवित्तात्कथञ्चनेति भारतादपहारशब्दार्थेन यथेष्टदानविक्रयाद्यनधिकारः—इति दायरहस्यग्रन्थलिखनम् ॥२॥

अतएव वर्त्तनाशक्तौ आधानमप्यनुमतम् । तत्राप्यशक्तौ विक्रयणमपि—इति दायभाग(पृ० १७३)ग्रन्थलिखम् ॥ ३ ॥

यद्वा पत्नीत्युपलक्षणं, स्त्रीमात्राधिकारेऽयमर्थो बोद्धव्यः—इति दायभाग(पृ० १८४)ग्रन्थलिखनम् ॥ ४ ॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा—इत्यादि दायभागादि(दाभा० पृ० १५१)ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य (याम्मृ० २।१३५)वचनम् ॥ ५ ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

जीवति पितरि जीवन्त्यां च मातरि अप्राप्तव्यवहाराणां धनस्य मम-पत्रलिखितमालिकशब्दवाच्योऽर्थात् संरक्षणकर्त्ता, अन्यः कश्चिच्छास्त्रतो भवितुं नार्हति, अप्राप्तव्यवहाराणां पित्रपेक्षया मात्रपेक्षया चान्येषां सुहृत्तराभावात्—इति वङ्गदेशचलितदायभागदायरहस्यविवादभङ्गार्णवव्यवहारतत्त्वव्यवहारमातृकादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

अभावे बीजिनो माता तदभावे तु पूर्वजः ।—इति व्यवहारतत्त्वादि(पृ० ६५)ग्रन्थधृतनारद (नामसं०–२।३५)वचनम् ॥ १ ॥

अत्र रेखीयाब्दप्रतिमाद्यत्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयजानयरीमासीयनवमदिनराजधानीनिवासरे यामद्वयानन्तरं मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीउर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

८३—रोबकारि मिसिल आदालत देओयानि सदर तारिख १४ दिसम्बर शन १८२६ इं० मताबक १ माह पौष शन १२१६ बाङ्गला रोज सोमवार ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत मान्तकियू हेनरी टरम्बल साहेवेर बैठके—

कृष्णलोचन प्रभृति ... आपिलाण्ट

तारामणिदास्या प्रभृति ... रेस्पाण्डेण्ट

आपिलाण्टगणेर उकिल सदासुक पण्डित, रेस्पाण्डेण्टगणेर वकिल मुनशी गोलाम चतुल हाजिर आसिल। एइ मकर्द्दमा एइ मासेर ६ तारिखे आमार बैठके रोबकार हइया जिलार आदालतेर, ओ प्रविशन कोटेर फयसलासकल ओ इं० १८२७ सालेर जानेओरि मासेर १० ओ १८ तारिखेर लिखित ए आदालतेर रोबकारिसकल ओ खास आपिलेर दरखास्त, याहा मंजुयात करार देया जाय, ओ ताहार जवाब ओ ए आदालतेर दाखिल हओया अन्य कागजसकल पडागिया स्थकित छिल, अद्य पुनराय रोबकार हइया जिला ओ कोर्ट आदालतेर नालिसि आरजि प्रभृति कागजात पडागेल। ऐ उभयेर पूर्व्वाधिकारि आदित्यराम चारि पुत्र राखिया मरे। प्रथम रामदुलाल ओ राधामोहन ओ गोविन्दप्रसादेर पिता कृष्णप्रसाद; द्वितीय ए मकर्द्दमार आसल मुद्दाआलेहेगण गङ्गाधरनाग ओ गदाधरनागेर पूर्व्वाधिकारि देविप्रसाद; तृतीय मुद्दइगणेर पूर्व्वाधिकारि कालिकाप्रसाद; चतुर्थ शम्भुनाथ; ओ चारि भ्रातागण आपनारदिगेर पूर्व्वाधिकारिर मृत्युर पर पृथक हइया पितृत्यक्त वस्तु कण्टक[१] करिया दखिल हइलेन। ये कालिन कालिकाप्रसाद राधाकान्त नामे एक पुत्र ओ अन्नपूर्णा नामे एक स्त्री, ओ मुद्दइगणेर माता राजेश्वरी नामे एक कन्या राखिया मरे। ताहार परे ऐ राधाकान्तह अप्राप्तव्यवहार समये मरिल। ओ ताहार मृत्युर पर रामदुलाल प्रभृति कालिकाप्रसादेर वच्छि-

१. वण्टक—इति साधीयान्पाठः।

तस्या अप्यावश्यकव्ययार्थं स्वमरणपोषणार्थं च तद्धने दानाधमनविक्रयाधिकारोऽस्त्येव, सत्यां पुत्रवत्यां दुहितरि दौहित्रस्यानधिकारादिति ।

अत्र प्रमाणम्—

स्त्रीणां स्वपतिदायस्तु उपभोगफलः स्मृतः ।
नापहारं स्त्रियः कुर्युः पतिवित्तात् कथञ्चन ॥–इति दायभागा(दाभा० पृ० १७२)दिग्रन्थधृतभारतवचनम् (ममा०–१३।४७।२४) ॥ १ ॥

नापहारं स्त्रियः कुर्युः पतिवित्तात्कथञ्चनेति भारतादपहारशब्दार्थेन यथेष्टदानविक्रयाद्यनधिकारः—इति दायरहस्यग्रन्थलिखनम् ॥२॥

अतएव वर्त्तनाशक्तौ आधानमप्यनुमतम् । तत्राप्यशक्तौ विक्रयणमपि—इति दायभाग(पृ० १७३)ग्रन्थलिखम् ॥ ३ ॥

यद्वा पत्नीत्युपलक्षणं, स्त्रीमात्राधिकारेऽयमर्थो बोद्धव्यः—इति दायभाग(पृ० १८४)ग्रन्थलिखनम् ॥ ४ ॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा—इत्यादि दायभागादि(दाभा० पृ० १५१)ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य (याज्ञ० २।१३५)वचनम् ॥ ५ ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

जीवति पितरि जीवन्त्यां च मातरि अप्राप्तव्यवहाराणां धनस्य प्रश्नपत्रलिखितमालिकाशब्दवाच्योऽर्थात् संरक्षणकर्त्ता, अन्यः कश्चिच्छास्त्रतो भवितुं नार्हति, अप्राप्तव्यवहाराणां पित्रपेक्षया मात्रपेक्षया चान्येषां सुहृत्त्वाभावात्–इति बङ्गदेशचलितदायभागदायरहस्यविवादभङ्गार्णवव्यवहारतत्त्वव्यवहारमातृकादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

अभावे बीजिनो माता तदभावे तु पूर्वजः ।–इति व्यवहारतत्त्वादि(पृ० ६५)ग्रन्थधृतनारद (नारद०–२।३५)वचनम् ॥ १ ॥

अङ्गरेजीयाब्दप्रतिपाद्यत्रिंशदधिकाष्टादशशतान्दीयजानवरीमासीयनवमदिनसम्बन्धिशनिवासरे यामद्वयानन्तरं मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

८३—रोवकरि मिसिल आदालत देओयानि सदर तारिख १४ दिशम्बर शन १८२९ ई० मताबक १ माह पौष शन १२३६ बाङ्गला रोज सोमवार ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत मान्तकियू हेनरी टरम्बल साहेबेर बैठके—

कृष्णलोचन प्रभृति आपिलाण्ट

तारामणिदास्या प्रभृति रष्पाडण्ट

आपिलाण्टगणेर उकिल सदासुक पण्डित, रष्पाडण्टगणेर उकिल मुनशी गोलाम रसुल हाजिर आसिल। एइ मकद्दमा एइ मासेर ९ तारिखे आमार बैठके रोवकार हइया जिलार आदालतेर, ओ प्रविशन कोर्टेर फयसलासकल ओ ई० १८२७ सालेर जानेओरि मासेर १० ओ १८ तारिखेर लिखित ए आदालतेर रोवकारिसकल ओ खास आपिलेर दरखास्त,याहा मजुवात करार देया जाय, ओ ताहार जवाब ओ ए आदालतेर दाखिल हओया अन्य कागजसकल पडागिया स्थकित छिल, अद्य पुनराय रोवकार हइया जिला ओ कोर्ट आदालतेर नालिसि आरजि प्रभृति कागजात पडागेल। ये उभयेर पूर्व्वाधिकारि आदित्यराम चारि पुत्र राखिया मरे। प्रथम रामदुलाल ओ राधामोहन ओ गोविन्दप्रसादेर पिता कृष्णप्रसाद; द्वितीय ए मकद्दमार आसल मुद्दाआलेहेगण गङ्गाधरनाम ओ गदाधरनामेर पूर्व्वाधिकारि देविप्रसाद; तृतीय मुदइगणेर पूर्व्वाधिकारि कालिकाप्रसाद; चतुर्थ शम्भुनाथः ओ चारि भ्रातागण आपनारदिगेर पूर्व्वाधिकारिर मृत्युर पर पृथक हइया पितृत्यक्त वस्तु कण्टक[१] करिया दखिल हइलेन। ये कालिन कालिकाप्रसाद राधाकान्त नामे एक पुत्र ओ अन्नपूर्णा नामे एक स्त्री, ओ मुदइगणेर माता राजेश्वरी नामे एक कन्या राखिया मरे। ताहार परे ऐ राधाकान्तह अप्राप्तव्यवहार समये मरिल। ओ ताहार मृत्युर पर रामदुलाल प्रभृति कालिकाप्रसादेर उच्छि-

१. वण्टक—इति साधीयान्पाठः।

यत ओ ऐ राधाकान्तेर हेवार एजहारे मृत कालिकाप्रसादेर सम-
स्त पैतृक ओ कृत[1] वस्तुसकलेर उपर दखिल हइलेन। तत्कालिन-
प्रथमत गङ्गाधरनाग प्रभृति मृत कालिकाप्रसादेर त्यक्त वस्तुर-
मध्ये तृतीय अंशेर दाविते, ओ ताहार परे मृत व्यक्तिर स्त्री मुश-
म्मात अन्नपूर्णा ओ कन्या मुशाम्मात राजेश्वरि ऐ मृत व्यक्तिर
समुदाय त्यक्त वस्तुते दखल पाओनेर जन्ये आपनाहिगेर सत्वेर
एजहारे आदालते नालिश करिलेन, ओ ई० १८०६ शालेर डिश-
म्वर मासेर ३१ तारिखेर जिलार जज साहेवेर तन्नविजे रामदु-
ला(ल)नाग प्रभृतिर एजहारि हेवा साव्यस्त हओन कारण दुइ
मकद्दमार मुद्दईगणेर दावि डिसमिप हइल, ओ ई० १८१२ सालेर
जुन मासेर ३० तारिखे अपिलेर आदालते गङ्गाधरनाग प्रभृतिर
मकद्दमा सम्बन्धे जिलार फयशला बहाल थकिल, ओ राजेश्वरिर
मकद्दमाय आदालतेर पण्डित हइते व्यवस्था लओन परे एइ
साव्यस्थे, ये कालिकाप्रसादेर मृत्युर पर ताहार त्यक्त (धन) वहार-
पुत्र राधाकान्तेर अर्शे, ओ राधाकान्तेर मृत्युर पर मुद्दइगण हइवे
एक जन मुशाम्माते राजेश्वरिर अप्राप्तव्यवहार पुत्रगण, कृष्णलो-
चन प्रभृतिर स्वत्व हइया जिलार फयशला बद[2] ओ एइ हुकुमे
डिकरि हइल ये राजेश्वरि आपिलाण्ट आपन अप्राप्तव्यवहार
पुत्रगणेर स्वत्वे विरोधीय तालुकेर उपर दखल पाय, ओ मुशाम्मात
अन्नपूर्णा राधाकान्तेर त्यक्त वस्तु हइते भरण-पोषण पाइवेक इति।
ओ ताहार खास आपिल पण्डितगण हइते व्यवस्था लओन परे ए
आदालते नामञ्जुर हइल, ओ ए मकद्दमार नालिशेर एइ मूल ह्यान
हइलन्ये यत्कालिन मुशाम्मातान् अन्नपूर्णा ओ राजेश्वरि कालि-
काप्रसादेर त्यक्त वस्तु दखल पाओनेर दाविते नालिश करिलेन।
तत्कालिन एइ मकद्दमार मुद्दाआलेहगण गङ्गाधरनाग प्रभृति
वाङ्गला १२१३ सालेर २० भाद्र मतावक ई०१८०६ शालेर ४ सेप्ट-
म्बर मासेर लिखित ८४ नम्बरे गृथित गङ्गाधरनाग प्रभृतिर अपि-

---

१. क्रीत—इति साधीयान् पाठः। २. रद्द—इति साधीयान् पाठः।

पति दुर्गाचरण नामे ऐ मुशम्मातान हइते एइ खोलासा मजमुने एक किता एकरार लेखाइयाछे–ये मकद्दमाय[1] ये परिमान खरच हइवेक तोमरा दिवा, श्रो आमरा आदालत हइते डिगरि पाइले कालिकाप्रसादेर त्यक्त हइते आमादिगेर सोल आना स्वत्व हइते ।= आनार कमेर विक्रय कवाला लिखियादिव, श्रो ताहार पर यखन इं० १८१२ सालेर जुन मासेर ३० तारिखे श्रापिल श्रादालत हइते ऐ राजेश्वरिर अप्राप्तव्यवहार पुत्रगण कृष्णलोचन प्रभृतिर स्वत्वे डिकरि हइल एइ मकद्दमार मुद्दइगणेर माता मुशम्मात राजेश्वरि हइते वाङ्गला १२१६ सालेर १४ पौष मतावक इं० १८२२ सालेर दिशम्बर मासेर २७ तारिखेर लिखित ८५ लम्बरे गृथित विरोधीय रकम यावत कवाला, श्रो ऐ तारिखेर लिखित मवलग २५०० टाका निर्क्षन्धे ८६ लम्बरेर रसिद लिखाइया ताहार द्वाराय विरोधीय वस्तुर उपर दखिलकार हइलेन, श्रो श्रापिलायटान, श्रार्थात मुद्दइगण, ऐ छय श्राना रकमेर उपर वखल पाश्रोनेर जन्ये एइ वलिले गङ्गाधरनाग प्रभृतिर नामे नालिस करियाछे ये उहारदिगेर माता मुशम्मात राजेश्वरि शास्त्रानुसारे ताहारदिगेर स्वत्व हस्तान्तर करणेर क्षमता राखित ना, श्रो रेष्पाडण्टान ताहार जवावे जाहेर करे ये उहारदिगेर माता राजेश्वरि नष्ट उद्धार, अर्थात् उहादिगेर स्वत्व स्थिर राखन जन्ये ताहा हइते किछु विक्रय करिलेक; अतएव एमत विक्रय शास्त्रानुसारे सिद्धि थाकिवेक इति । ये हेतुक उपरेर लिखितसकल हइते पष्ट श्राछे ये श्रन्नपूर्णा श्रो राजेश्वरि पत्त हइते कालिकाप्रसादेर त्यक्तेर सम्बन्धे उहादिगेर स्वत्व दृष्ट श्रो केवल श्रादालतेर खरचार जन्ये ८४ लम्बरेर एकरारनामा निदर्शन लिखित हइयाछे, श्रो ऐ मुशम्मातेर नालिसि मकद्दमाय इं० १८१२ सालेर जुन मासेर ३० तारिखेर लिखित प्रविशन कोर्टेर डिकरि श्रापिलाण्टगणेर स्वत्व दृष्ट हइयाछे, ऐ मुशम्मातानेर स्वत्वे हय नाइ श्रो इहाश्रो पष्ट श्राछे ये सरकारेर चलित

१. ये मकद्दमाय ये मकद्दमाय—न्यप० ।

यत ओ ऐ राधाकान्तेर हेवार एनहारे मृत कालिकाप्रसादेर समस्त पैतृक ओ कृत[1] वस्तुसकलेर उपर दखिल हइलेन। तत्कालिन-प्रथमत गङ्गाधरनाग प्रभृति मृत कालिकाप्रसादेर त्यक्त वस्तुर-मध्ये तृतीय अंशेर दाविते, ओ ताहार परे मृत व्यक्तिर स्त्री मुशम्मात अन्नपूर्णा ओ कन्या मुशम्मात राजेश्वरि ऐ मृत व्यक्तिर समुदाय त्यक्त वस्तुते दखल पाओनेर जन्ये आपनाद्दिगेर सत्वेर एजहारे आदालते नालिश करिलेन, ओ इ० १८०६ शालेर दिशम्बर मासेर ३१ तारिखेर जिलार जज साहेबेर तजवीजे रामदुर्ला(ल)नाग प्रभृतिर एजहारि हेवा साब्यस्त हओन कारण दुइ मकद्दमार मुद्दइगणेर दावि डिसमिस हइल ओ इ० १८१२ सालेर जुन मासेर ३० तारिखे अपिलेर आदालते गङ्गाधरनाग प्रभृतिर मकद्दमा सम्बन्धे जिलार फयसाला बहाल थाकिल ओ राजेश्वरिर मकद्दमाय आदालतेर पण्डित हइते व्यवस्था लओन परे एइ साव्यस्थ, ये कालिकाप्रसादेर मृत्युर पर ताहार त्यक्त (धन) उहार पुत्र राधाकान्तके अर्शे, ओ राधाकान्तेर मृत्युर पर मुद्दइगण हइते एक जन मुशम्मात राजेश्वरिर अप्राप्तव्यवहार पुत्रगण, कृष्णलोचन प्रभृतिर स्वत्व हइया जिलार फयशला बद[2] ओ एइ हुकुमे डिकरि हइल ये राजेश्वरि आपिलाण्ट आपन अप्राप्तव्यवहार पुत्रगणेर स्वत्वे विरोधीय तालुकेर उपर दखल पाय, ओ मुशम्मात अन्नपूर्णा राधाकान्तेर त्यक्त वस्तु हइते भरण पोषण पाइवेक इति। ओ ताहार खास आपिल पण्डितगण हइते व्यवस्था लओन परे ए आदालते नामञ्जुर हइल ओ ए मकद्दमार नालिशेर एइ मूल ज्ञान हइल-ये यत्कालिन मुशम्मातान् अन्नपूर्णा ओ राजेश्वरि कालिकाप्रसादेर त्यक्त वस्तु दखल पाओनेर दाविते नालिश करिलेन। तत्कालिन एइ मकद्दमार मुद्दाआलेहगण गङ्गाधरनाग प्रभृति वाङ्गला १२१३ सालेर २० भाद्र मताबेक इ०१८०६ शालेर ४ सेप्तेम्बर मासेर लिखित ८४ लेम्बरे गृहीत गङ्गाधरनाग प्रभृतिर भग्नि-

---

1 कृत इति साधीयान् पाठः। 2 बद-इति साधीयान् पाठः।

पति दुर्गाचरण नामे ऐ मुशम्मातान हइते एइ सोलासा मजमुने एक किता एकरार लेखाइयाछे—ये मकद्दमाय[1] ये परिमाण खरच हइबेक तोमरा दिवा, श्रो आमरा आदालत हइते डिगरि पाइले कालिकाप्रसादेर त्यक्त हइते आमादिगेर सोल आना स्वत्व हइते ।८श्रानार कमेर विक्रय कवाला लिखियादिव, श्रो ताहार पर, यखन इं० १८१२ सालेर जुन मासेर ३० तारिखे आपिल आदालत हइले ऐ राजेश्वरिर अप्राप्तव्यवहार पुत्रगण कृष्णलोचन प्रभृतिर स्वत्वे डिकरि हइल एइ मकद्दमार मुद्दइगणेर माता मुशम्मात राजेश्वरि हइते बाङ्गला १२१६ सालेर १४ पौष मताबक इं० १८२२ सालेर डिशाम्बर मासेर २७ तारिखेर लिखित ८५ लम्बरे गृथित विरोधीय रकम बाबत कवाला, श्रो ऐ तारिखेर लिखित मयलग २५०० टाका निर्व्वन्धे ८६ लम्बरेर रसिद लिखाइया ताहार द्वाराय विरोधीय वस्तुर उपर दखिलकार हइलेन, श्रो आपिलाण्टान्, अर्थात् मुद्दइगण, ऐ छय आना रकमेर उपर दखल पाश्रोनेर जन्ये एइ दलिले गङ्गाधरनाग प्रभृतिर नामे नालिस करियाछे ये उहार-दिगेर माता मुशम्मात राजेश्वरि शास्त्रानुसारे ताहारदिगेर स्वत्व हस्तान्तर करणेर क्षमता राखित ना; श्रो रेष्पाण्डण्टान ताहार जबाबे जाहेर करे ये उहारदिगेर माता राजेश्वरि नष्ट उद्धार, अर्थात् उहा-दिगेर स्वत्व स्थिर राखन जन्ये ताहा हइते किछु विक्रय करिलेक; अतएव एमत विक्रय शास्त्रानुसारे सिद्धि थाकिबेक इति । ये हेतुक उपरेर लिखितसकल हइते स्पष्ट आछे ये अन्नपूर्णा श्रो राजेश्वरिर पक्ष हइते कालिकाप्रसादेर त्यक्तेर सम्बन्धे उहादिगेर स्वत्व दृष्ट श्रो केवल आदालतेर खरचार जन्ये ८४ लम्बरेर एकरारनामा निदर्शन लिखित हइयाछे, श्रो ऐ मुशम्मातेर नालिसि मकद्दमाय इं० १८१२ सालेर जुन मासेर ३० तारिखेर लिखित प्रविशल कोर्टेर डिकरि आपिलाण्टगणेर स्वत्व दृष्ट हइयाछे, ऐ मुशम्मा-तानेर स्वत्वे हय नाइ श्रो इहाश्रो स्पष्ट आछे ये सरकारेर चलित

१. ये मकद्दमाल ये मकद्दमाय—व्यव० ।

आइनसकल अनुसारे ऐ मुसाम्मातानेर मफलसिते नालिस करणेर दयमता छिल, ओ आदालतेर खरचार निमित्तके ओ एवं आपिलाण्टगणेर प्रतिपालनार्थे उहाहिगेर गुजराणेर कोनो हेतु ना थाकन प्रयुक्त ८५ लम्बरेर कवालार लिखित मुल्येर टाका देओन विषय ए मकद्दमार मुद्दाआलेहेगणेर एजहार विसिष्ट रूपे प्रतिपन्न नहे। केनना आपिलाण्टगणेर पिता रामलोचन वर्त्तमान थाकने उहाहिगेर भरण ओ पोषणेर भार ताहार पर उचित छिल। उहाहिगेर माता राजेश्वरिर पर छिलना। अतएव चूडन्त हुकुम सादर हओनेर पूर्व्वे ए आदालतेर पण्डित हइते व्यवस्था लओन उचित बोध हइया हुकुम हइल ये एइ रोवकारिर नकल मकद्दमार कागज सम्वलित ए आदालतेर पण्डितके एइ हुकुमे समर्पन कराजाय ये उपरे जे प्रकार लेखागेल मकद्दमार अवस्थार पर अनुमोदन परे एवं ८४ ओ ८५ लम्बरेर एकरारनामा ओ कवाला दस्तावेजात ओ साक्षिगणेर एजहारसकल द्दष्टे याहा इं० १८२४ सालेर आगस्त मासेर १० तारिखेर हओया कोर्टेर हुकुम मते लओया गियाछे, ओ एइ द्दष्टे ये कोनओ करार विक्रयेर दस्तावेज लिखिन कालिन राजेश्वरिर स्वामी रामलोचन, अर्थात् मुद्दइगणेर पिता, जियवान् छिल, ओ एवं पूर्व्वेर मकद्दमार विरोधीय वस्तु हरण कारक व्यक्तिर हस्त हइते निकालन जन्ये सरकारेर आइन मते पूर्व्वेर नालिश उपस्थित करणार्थे आदालतेर किछु खरचार आविश्यक[1] छिल नाइहार व्यवस्था एक सप्ताह मध्ये लिखेन-ये ऐ विक्रय बङ्गदेश चलित शास्त्रानुसारे सिद्धि बटे कि ना ? इति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

यथावत्व्यवस्था

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतमान्तकीयुहेनरीटरस्थलसाहेवधर्म्माधिक-

१. आवश्यक—इति साधीनान् पाठः।

रण लिखिताङ्करेजीशब्दप्रतिपाद्योनत्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयदिशम्बरमा-सीयचतुर्द्दशदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितैतद्विवा-दविषयनिविष्टपत्रजातान्तर्गतचतुरशीत्यङ्काङ्कितसंवित्पत्रं[1] पञ्चाशीत्यङ्काङ्कित-विक्रयपत्रं, साक्षिणां साक्ष्यपत्रजातं च यत्तदब्दीयतन्मासीयत्रयोविंशतितमे-दिनसम्बन्धिबुधवासरे घटिकैकाधिकयामद्वये मया प्राप्त तदवलोक्य विविच्य च यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

प्रभुसमर्पितविचारपत्रलिखितवृत्तान्ते सति, मृतराधाकान्तस्यक्तधने तत्पितृदौहित्रत्वेनैतद्धर्माधिकरणार्थिनां कृष्णलोचनप्रभृतीनां स्वत्वे, एतद्धर्माधिकरणाज्ञायां जातायामपि तन्मातृराजेश्वर्य्यास्तद्धनस्वामित्वस्य सर्व्वथैव दूरापास्तत्वेन, तत्कृतैतादृशप्रभुकृतप्रश्नपत्रलिखितविक्रयः सिद्धो न भवति, प्रभुसमर्पितचतुरशीत्यङ्काङ्कितसंवित्पत्रे अन्नपूर्णया[2] राजेश्वर्य्यां चेत्येव लिखितं—मदीयैतद्विवादे यावान् व्ययो भविष्यति,स भवता देयः,अस्माभिः षोडशाणकपरिमितविवादास्पदीभूतस्थावरसमुदायात् षडाणकाः स्वस्वत्वत्यागपूर्व्वकं तुभ्यं दत्ताः । अतएवैतादृशनियमलिखनमेवैतद्विक्रयस्य मूलम् । तत्र च शास्त्रानुसारेणान्नपूर्णायाः राजेश्वर्य्या वा तद्धनस्वामित्वस्याजातत्वेन, धर्म्माधिकरणविचारेणापि तथा पर्य्यवसानेन च, तत्कृततत्संवित्पत्रस्य सन्नियमानाक्रान्तत्वाद्,अस्वामिकृतविक्रयस्य शास्त्रानुसारेण परावर्त्तनीयत्वाच्च इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

अत्र प्रमाणम्—

अस्वामिना कृतो यस्तु दायो विक्रय एव वा ।

अकृतः स तु विज्ञेयो व्यवहारे यथा स्थितिः ॥—इति मनु(पृ० २०६) वचनम् ॥ १ ॥

अस्वामिविक्रयं दानमाधिञ्च विनिवर्त्तयेत्—इति विवादभङ्गार्णवादि(१ विवाभ० पृ० ३१७ स)धृतकात्यायन (कास्मृ. पृ० ७६)वचनञ्चेति ॥ २ ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

---

१. संवित्त—व्यप० । २. अन्नपूर्णया—व्यप० ।

अङ्गरेजीयाब्दप्रमिताष्टाविंशदधिकाष्टादशशताब्दीयजानवरीमासीयपञ्चमदिने मङ्गलवासरे घटिकैकाधिकयामद्वयानन्तरं मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

सं० ॥ ई शन १८२७.

८४—रोवकारि कोर्ट आपिल, एलाका मरसिदाबाद, तारिख ९ माहे जानेओरि, शन १८२९ इं, मताबक २७ माहे शन १२३५ बाङ्गला, रोज शुक्रवार काएममोकाम हाकिम श्रीयुत रावर्ट हेनरि नेष्ठवट साहेबेर बैठके ।

वदनचन्द्रसिंह	मताल्के मरसिदाबाद
ओ अप्राप्तव्यवहार	
रामनारायणघोषेर पिता	
जिवनकृष्णघोष	आपिलाण्टान
राधानाथसिंह	रेस्पाण्डण्ट

तालुक कमलनयन बाटी प्रभृतिर हिस्याय दखल पाओन···· मथलग १६९ । ॥ गएडा मकद्दमा ।

एइ मकद्दमार मिछिल भिन्न २ तारिखसकले रोवकार हइया ॥ आदालतेर पण्डित हइते व्यवस्था लओन परे स्थकित[1] छिल, अद्य पुनराय आपिलाण्टेर उकिल रामभानराय, रेस्पाण्डण्टेर उकिल चैतन्यप्रसादरायेर हाजिरिते ए मकद्दमा उपस्थित हइल । यथा आपिलाण्टगणेर उकिल ए आदालतेर पण्डितेर व्यवस्थार पर अमत; ओ उचित मत आमारो विश्वास हइल ना। ओ मकद्दमार व्यवस्था एइ ये छपानाथेर दुइ पत्र, प्रथम मुरलिमजुमदार, द्वितीय

---

१ स्थगित—सम्पा०

भवानीमजुमदार, ओ एक कन्या ओ दौहित्र राखिया मृत्यु हय। ओ मुरलिर अंश ताहार दौहित्र पाइयाछे ओ भवानीमजुमदारेर चारि पुत्र, प्रथम हरगोविन्द, द्वितीय गङ्गाप्रसाद, तृतीय कालीप्रसाद, चतुर्थ रामप्रसाद छिल। ताहार मध्ये गङ्गाप्रसाद निःसन्तान ओ हरगोविन्द नफर नामे आपन एक पुत्र ओ तिन कन्या राखिया पितार समक्षे मरे। तत्परे भवानीमजुमदारेर मृत्युर पर प्रथम कालीप्रसाद, ताहार पर रामप्रसाद निःसन्तान मरे। तदपरे ऐ नफरो निःसन्तान मरे। तत्परे प्रथम रामप्रसादेर स्त्री, ताहार पर हरगोविन्देर स्त्री मरे। ओ हरगोविन्देर दौहित्रगण वर्त्तमान ओ राधानाथ, ये रामप्रसाद ओ हरगोविन्द प्रभृतीर पितामह कृपानाथेर दौहित्र बटे, हरगोविन्देर दौहित्रगणेर नामे त्यक्त वस्तुर दाविदार हइल। अतएव उपरेर लिखित अवस्थाय त्यक्त वस्तु कोन व्यक्तीके अर्शे इहार व्यवस्था शहर आदालतेर पण्डितगण हइते लओन आवश्यक। ए कारण हुकुम हइल ये एइ रोयकारिर नकल इङ्गरेजी चिठीर मध्ये मुरशीनामा ओ सओयाल सहित सदरेर रेजेष्टर शाहेवेर हुजुरे एइ प्रार्थनाय पाठान जाय जे साहेब मौसुफ शहरेर पण्डीतगण हइते ऐ सओयालेर जवाब लइया एइ आदालते पाठान, ओ ए मकद्दमा स्थगित थाके इति।

मदनचन्द्रसिंह ओ गयरह	आपिलाण्टा(न)
राधानाथसिंह	रेष्पाडण्ट

एइ मकद्दमार विवरण एइ ये कृपानाथ आपन दुइ पुत्र, अर्थात् मुरलिमजुमदार ओ भवानी मजुमदार, आर एक कन्या ओ दौहित्र राखिया मृत्यु हय। मुरलिमजुमदारेर हिस्या ताहार दौहित्रे पाइयाछे, आर भवानीमजुमदार मजकुरेर चारि पुत्र, प्रथम हरगोविन्द, द्वितीय गङ्गाप्रसाद, तृतीय कालीप्रसाद, चतुर्थ रामप्रसाद छिल। ओ चारि जणेर मध्ये गङ्गाप्रसाद निःसन्तान, ओ हरगोविन्द नफर नामे एक पुत्र ओ तिन कन्या राखिया आपन पितार सम्मुखे मृत्यु हय। तदपरे ऐ भवानीमजुमदारेर मृत्युर पर प्रथम

कालीप्रसाद, ताहार पर रामप्रसाद निःसन्तान परलोक हय। तदपरे नफरेर मृत्यु हय। ताहार पर प्रथम रामप्रसादेर स्त्री, तदपरे हरगोविन्देर स्त्री मृत्यु हय, ओ हरगोविन्देर दौहित्रेरा वर्त्तमान आछे। कृपानाथेर दौहित्र, अर्थात् रामप्रसाद ओ हरगोविन्द ओ गयरहेर पितामहेर दौहित्र राधानाथ तेय्य वस्तुर दावि हरगोविन्देर दौहित्रद्धिगेर नामे राखे। ए जन्ये शहरेर पण्डितद्धिगेर निकट शास्त्रानुसारे व्यवस्था एइ विषय लओया आवश्यक! ये उपरेर प्रकरणानुसारे एइ वस्तु के पाइते पारे। अतएव कुरसिनामा दृष्टे इहार ओ ए शास्त्रानुसारे लिखेन इति। तारिख ६ जानेओरि। सन १८२९ ई०।

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रमेवं वंशावलीपत्रञ्चावलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

प्रश्नपत्रलिखितप्रकारकवृत्तान्ते सति गङ्गाप्रसादस्य द्वितीयपुत्रस्य निःसन्तानस्य भवानीमजुमदारे पितरि विद्यमाने सति. मृतस्य पितुस्स्वास्पदीभूतधने स्वत्वानुत्पादात्, तदनन्तरं मृतस्य भवानीमजुमदारस्यांशे जीवति पितरि मृतस्य प्रथमपुत्रस्य हरगोविन्दस्य पुत्रो नफरसंज्ञको भवानीमजुमदारस्य तदानीं विद्यमानौ तृतीयचतुर्थौ द्वौ पुत्रावर्थात् कालीप्रसादरामप्रसादौ च एते त्रय एव समानाधिकारिणो जातास्तत्रापि नफरसंज्ञकस्य मरणोत्तरं तत्स्वत्वास्पदीभूततत्पितृयोग्यतृतीयांशे तत्पितुर्हरगोविन्दस्य दौहित्राणामर्थाद् रामनारायणमदनचन्द्रदोलगोविन्दानामधिकारो, यतो नफरसंज्ञके स्वपितृयोग्यतृतीयांशाधिकारिण्यनपत्ये पत्नीमारभ्य पितृपर्य्यन्तानपत्यधनाधिकारिरहिते मृते सति तन्मातुरुत्तराधिकारित्वेनाधिकारे जाते सति तन्मरणोत्तरं तद्धने तदुत्तराधिकारिणामेवाधिकारः, तत्र च तदुत्तराधिकारिणां मध्ये प्रभुसमर्पितवंशावलीपत्रेण नफरसंज्ञकस्य पितुः प्रपौत्रपर्य्यन्तस्य पितृदौहित्रात् पूर्व्वमधिकारिणोऽसत्त्वावगमाद्। अथ च विशिष्टांशद्वये रामप्रसादस्य पितामहकृपानाथदौहित्रस्यार्थाद्राधानाथस्याधिकारो यतो रामप्रसादे भ्रातरि जीवति सति मृतस्य कालीप्रसादस्यांशे भ्रातृत्वेन रामप्रसादस्याधिकारे जाते सति तद्धनं रामप्रसादस्यैव जातम्। अतस्तस्मिन्ननपत्ये मृते सति तत्स्वत्वास्पदीभूत-

यावद्धने अर्थात् भवानीमजुमदारस्यांशस्य त्रिधा विभक्तस्यांशद्वये रामप्रसादस्त्रियाः शास्त्रानुसारेण पतिस्वत्वास्पदीभूतधनाधिकारिण्या नफरसंज्ञके रामप्रसादभ्रातृपुत्रे मृते सत्यपि जीवन्त्यास्तस्या मरणोत्तरं तद्धने रामप्रसादस्य ये उत्तराधिकारिणस्तेषामेवाधिकारः, तत्र च तदुत्तराधिकारिणाम्मध्ये प्रस्तुसमर्पितवंशावलीपत्रेण रामप्रसादस्य पितामहप्रपौत्रपर्य्यन्तस्य पितामहदौहित्रात् पूर्व्वमधिकारिणोऽसत्त्वावगमाच्च—इति वङ्गदेशचलितदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकाविवादभङ्गार्णवविवादार्णवसेत्वादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥ ० ॥—

अत्र प्रमाणम्—

पितुर्य्युपरते पुत्रा विभजेयुर्धनं पितुः ।

अस्वाम्यं हि भवेदेषां निर्दोषे पितरि स्थिते॥—इति दायभाग(पृ० १३) श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीका,(पृ० १३) विवादभङ्गार्णव (२ विवाभ० पृ० ५ क) विवादार्णवसेत्वादिग्रन्थधृतदेवलवचनम् ॥ १ ॥

यथा पैतामहे धने पितुः स्वाम्यं तथैव तस्मिन् मृते तत्पुत्राणामपि, न तत्र सन्निकर्षविप्रकर्षाभ्यां कोऽपि विशेषः—इति दायभाग (पृ० २६) ग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

किन्तु पितुरपि प्रपौत्रपर्य्यन्ताभावे पितृदौहित्रस्याधिकारो बोद्धव्यः—इति दायभाग (पृ० २०८)ग्रन्थलिखनम् ॥ ३ ॥

अपुत्रा शयनं भर्त्तुः पालयन्ती गुरौ स्थिता ।

भुञ्जीतामरणात् क्षान्ता[1] दायादा ऊर्द्ध्वमाप्नुयुः ॥—इति दायभागादि(दाभा पृ० १७१)ग्रन्थधृतकात्यायन (कास्मृ० ९२१)वचनम्[2] ॥४॥

यद्वा पत्नीत्युपलक्षणम् । स्त्रीमात्राधिकारे अयमर्थो बोद्धव्यः—इति दायभाग (पृ० १८४) ग्रन्थलिखनम् ॥ ५ ॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा । तत्सुतः—इत्यादि दायभागादि(पृ० १५१)ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य (यास्मृ० २।१३५)वचनम् ॥ ६ ॥

---

१ क्षन्ता—व्यप० । २ यानम्—व्यप० ।

एवं पितामहप्रपितामहसन्ततेरपि दौहित्रान्तायाः पिण्डप्रत्यासत्तिक्रमेणाधिकारो बोद्धव्यः—इति दायभाग(पृ० २०८)ग्रन्थलिखनम् ॥७॥

तदभावे पुनः पितृदौहित्रः—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीका(पृ० २१८) रूपग्रन्थलिखनम् ॥ ८ ॥

तदभावे पितामहदौहित्रः—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीका (पृ० २१८) रूपग्रन्थलिखनञ्चेति ॥ ९ ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥—

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

प्रश्नः—

८५—यद्यपि कोन स्त्रीलोकेर स्वामी वायुग्रस्त अर्थात् वातुल हय। तत्कालीन ऐ वातुल व्यक्तिर पैतृक वस्तु विक्रयार्थे ऐ व्यक्ति आपन स्त्रीके अनुमति[1] देया, ना देया तुल्य। एमते ऐ स्त्रीलोक आपन श्वशुरेर श्राद्धेर देना परिशोध ओ ऐ वातुल स्वामीर चिकित्सा कारण आपन स्वामीर पैतृक कोन वस्तु ऐ स्वामीर विना अनुमतिते[2] विक्रय करे। ताहा सिद्ध हइते पारे किना। इहार प्रत्युत्तर शास्त्रानुसारे वचन ओ ताहार भाषा एइ प्रश्नेर पार्श्वे लिखिवेन। इति शन १८२९ शाल, तारिख ९ मेई। मोतायक शन १२३६ शाल तारिख २८ वैशाख ॥—

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते। यत्र कस्याश्चित् स्त्रियाः पतिर्वायुग्रस्तस्तत्समये तेनैव वायुग्रस्तेन पत्या स्वपैतृकधनविक्रयार्थं स्वपत्न्यै अनुमतिदानमदानञ्च तुल्यमिति मत्वा सा स्त्री-

---

१. अनुमत देया—व्या०।   २. सम्मीय—व्या०।

श्वशुरस्य आवश्यक[1]श्राद्धार्थमृणपरिशोधनार्थम्[2] एवं तस्यैव वायुग्रस्तस्य पत्युः चिकित्सार्थं तत्रत्वास्पदीभूतस्य तस्यैतृकस्य कस्यचिद्वस्तुनस्तस्यैव पत्युरनुमतिं विना विक्रयं कृतवती स्यात्तदा स विक्रयः सिद्धो भवितुं शक्नोति, यतः शास्त्रानुसारेण प्रेतश्राद्धकरणार्थं चिकित्सार्थं वा येन केनापि सम्बन्धिना दासेन वा कृतं तदुपयुक्तमृणं विक्रयादिकञ्च सिद्धयति—इति वङ्गदेशचलितमनुदायतत्त्वव्यवहारतत्त्वविवादभङ्गार्णवविवादार्णवसेत्वादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

कुटुम्बार्थेऽध्यधीनोऽपि व्यवहारं यमाचरेत् ।
स्वदेशे वा विदेशे वा तं ज्यायान्न विचालयेत् ॥ इति मनु (पृ० ८ । २६७) वचनम् ॥ १ ॥

कुटुम्बार्थमशक्ते तु[3] गृहीत व्याधिते[4]ऽथवा ।
उपप्लवनिमित्तञ्च[5] विद्यादापत्कृतन्तु[6] तत् ॥ २ ॥
कन्यावैवाहिकञ्चैव प्रेतकार्य्येषु यत्कृतम् ।
एतत्सर्व्वं प्रदातव्यं कुटुम्बेन कृतं प्रभोः ॥ इति व्यवहारतत्त्व(पृ० ६५)दायतत्त्व(पृ० २०)विवादभङ्गार्णवादि(१ विवा १६६ ख)ग्रन्थधृतकात्यायन(का० स्मृ० ५४२–५४३)वचनम् ॥ ३ ॥

अत्रेदमवधेयम् । *कुटुम्बभरणादिरूपयादृशयादृशकार्य्ये उपस्थिते दासकृतमृणं प्रभुणा शोधनीयमिति प्रतीयते, तादृशतादृशकार्य्यनिष्पत्त्यर्थं प्रभुधनविक्रयो सिद्धयति । तदतिरिक्त एव स्वाम्यनुमतपदेन बोध्यते—* इति विवादभङ्गार्णवग्रन्थ(१ विवा २२० क)लिखनञ्चेति ॥ ४ ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

१. आवस्यक—व्यव० ।
२. परिसोधन०—व्यव० ।
३. अशक्तेन इति पाठः व्यव० ।
४. व्याधितेन इति पाठ व्यव० ।
५. निमित्ते—दाय० ।
६. कृते–तु—काय० ।

৮৬—রেবকারি আদালত দেওয়ানি জিলা যশর জিলা মজকুরের জজ শ্রীজান বিক্রম্যার্ফটবিষ্ট সাহেবের বেঠকে সন ১৮২৯ শাল ৬ মাই মতাবেক সন ১২৩৬ শাল বাঙ্গলা ২৫ বৈশাখ রোজ বুধবার।—

গঙ্গাগোবিন্দসেন ফরিয়াদি
রামলোচনসাহা আসামি
মকদ্দমা ডিগরি জারি

অদ্য ফরিয়াদির উকিল বৈদ্যনাথ মজুমদার ও মুনশী মাহামুদ, ছাদক ও বৈদ্যনাথ মুনশী ও ওজরদার চিত্রামণির উকিল গোলকচন্দ্র চৌধুরী ও গুরুপ্রসাদ মুনশী হাজির হইলেন। হাল সনের ৭ আপরেল ও ২২ মার্চ্চ তারিখের দাখিল হওয়া ফরিয়াদির দরখাস্ত ও মাহা(জন) মজকুরের ১৩ তারিখের দাখিল হওয়া চিত্রামণির ওজরের দরখাস্ত দৃষ্টি করাগেল। যদ্যপি এ মকদ্দমার ডিগরি জারির কাগজ কলিকাতার প্রবিনসিয়াল কোর্ট আদালতের পাঠান গিয়াছে, কিন্তু এই আদালতের প্রস্তুত কাগজাতের দ্বারায় জানাগেল। এ মকদ্দমার বিবরণঃ—এই যে, আসামি মজকুর ফরিয়াদিকে জামিন[1] দিয়া কোর্ট আপবর্ডেছের সিরিস্তার কর্ত্তার নিকট রাজা শশিভূষণদেবরায় নাবালগের জমিদারি ইজারা লইয়া, তাহার মালগুজারি পরিশোধ না করাতে ফরিয়াদির তালুক নিলাম হইয়া ইজারার বাকি মালগুজারি ৫৬০০ টাকা উসুল হইয়াছে। ফরিয়াদি তাহার নালিশ করিয়া আসামি মজকুরের পর মবলগ মজকুরের ডিগরি পাইয়াছে। সেই ডিগরি জারি করিয়া আসামির কীর্তিনগরের বসতি বাটী ও নীলের কুটী ও গরু ও ঘোড়া নিলাম করিয়া, মবলগে ১০২৬৪৷৷০ টাকা বসুয়া পাইয়াছিল। আসামির পিতা রামজিসাহা বিক্রির বস্তুকে আপনার বলিয়া, নিলাম অসিদ্ধ করিবার[2] দরখাস্ত করিয়া-

[1] জামিন—সাধীযান্ পাঠঃ।
[2] করিবার—ব্যয়•।

छिल। ताहाते सदर देवोयानिर हाकिमेरदिगेर विचारे ऐ वस्तुर निलाम असिद्ध हइया फैरियादिके- नालिष करिवार आज्ञा हइ-याछिल। एमते फरियादि मजकुर नीलेर कुटी ओ वसती वाटीर दावीते दुइ लम्बरे रामलोचनशाहा ओ रामजिशाहा दुइ जनेर नामे एइ आदालते नालिष करिले। ए आदालतेर पूर्व्वकार जज साहेवेर विचारे नीलेर कुटी ओ वसति वाटीर अधिपति ओ कर्त्ता आसामि रामलोचनसाहाके-बोध हइया फरियादिर-दुइ नालिष डिगरि हइयाछिल। परे आसामिर पिता रामजिसाहा साहेब मौछफेर फयशलाते नाराज हइया एइ ओजरे आपित्त करियाछिल ये नीलेर कुटी, वसति वाटी, मजकुर आमार हक, आमार पुत्र रामलोचनसाहार सहित कोनो विषय नाइ। परे इङ्गरेजि शन १८२८ शालेर १७ सेप्तम्बर तारिखे कलिकातार कोर्ट आपिलेर हाकिमेरदिगेर विचारे एइ हेतुक एइ आदालतेर दुइ फयशला असिद्ध हइयाछे। ये कुटि ओ वसति वाटीर प्रति डिगरिर टाकार देन्दार रामलोचनसाहार आधिपत्यता आदालते सुस्पष्ट प्रकाश हइलना। ओ रामजिसाहा आपन नामेर एक पाट्टा ओ मोनसफेर तिन फेता फयशला कुटि मजकुरेर जायगा आपन साव्यस्त कारण दरपेष करिलेक। आर पितृ वर्त्तमाने पितृवस्तु पुत्रेर देनाय विक्रि हइते पारेना। एइ दाखे फरियादि शन १२३५ शालेर फाल्गुण मासे रामलोचनसाहार पिता रामजि साहार मृत्यु हइयाछे, ओ रामलोचन मजकुर आपन पितार तावत विषयेर सत्वाधिकारि हइयाछे वलिया सेइसकल आपन पाओना डिगरिर टाका उसुलेर जन्य ऐसकल विषय क्रोक ओ निलामेर दरख्वास्त करियाछे। ताहाते कोर्टेर हुकुम हइले परे रामलोचन आसामिर स्त्री चिन्तामणि दरख्वास्त गुजराइलेक जे आमार श्वशुर रामजिसाहार येकिछु जोतजमा ओ निष्कर भूमि ओ वसति वाटी समेत् एमारत् ओ नीलेर कुटी ओ तैजसादि ओ अलङ्कार आदि स्थावर ओ अस्थावर आपन स्वकृत ये करि-

याछिलेन ताहा आपन मृत्युर पूर्ब्बे शन १२३१ शालेर १६ माघ तारिखे आमाके दान करिया ऐ तारिख मजकुर दानपत्र लिखिया दियाछेन; आमार स्वामि रामलोचनसाहा आमार स्वशुरेर अबाध्य थिलेन। ताहार देनार जन्य आमार स्वशुरेर दत्त वस्तु आमार हक, ताहा क्रोक विक्रि हइते पारेना। परे तलवानुसारे चित्रामणिर उकिल शन १२३५ शालेर १६ माघ तारिखेर एक केता दानपत्र प्रकाश्य रामजिसाहा दातार लिखित चित्रामणि ग्रहीतार नामे बाङ्गला भाषा श्रो अक्षरेते लिखित एइ अदालतेर रेजष्टर साहेबेर निशानिते दरपेष करिलेक। ताहा दृष्टे फरियादिर उकिल वैद्यनाथ मजुमदारेर स्थाने जिज्ञासा करागेल ये चित्रामणिर नामेर रामजिसाहार दानपत्रेर सत्यताते तोमार मश्रोकेलेर किछु आपत्य आछे कि ना। जवाब दिलेक ये एमत दानपत्र लिखित पडित हश्रोयार सम्भव घटे। किन्तु एमत धारार दस्तावेज लिखिवार कारण केवल आमार मश्रोकेलेर डिगरिर टाका जीर्ण करिवेक। चित्रामणिर उकिलेर स्थाने जिज्ञासा करागेल ये रामलोचनसाहा व्यतिरेक रामजिसाहार आर पुत्र आछे कि ना। जवाब दिलेक ये रामलोचन भिन्न रामजिसाहार आर पुत्र नाइ इति। सजविज हइलो ये चूडन्त हुकुम प्रकाशेर पूर्ब्बे ए मकदृमाते एइ कथा शालो हश्रोया आवश्यक हइल ये चित्रामणिर दाखिल करा दानपत्र शास्त्रानुसारे सिद्ध हइवार योग्य वटे कि ना।

ए विषय शास्त्रज्ञदिगेर निकट तिन कथा प्रश्न करा उचित हइल। प्रथमतो एइ—यद्यपि दानपत्रेर लिखित वस्तु रामजिसाहार स्वोपार्जित हय, आर रामजिसाहा ऐ वस्तुर दान विक्रयेर स्वत्वाधिकारि करिया पुत्र पौत्र वर्त्तमान थाकिते ऐ वस्तु आपन पुत्रवधूके दान करे, एमत सर्व्वस्वान्त दानपत्र यथाशास्त्र ग्राह्येर योग्य कि ना। श्रो द्वितीयतः—यद्यपि सेइ सकल वस्तु रामजि मजकुरार पैतृक हय, तवे एमत दान आपन पुत्रवधूके देया सिद्ध यह कि ना। तृतीयतः—यद्यपि दानेर वस्तुर मध्ये किछु पैतृक, श्रो

किछु रामजिसाहार स्वकृत हय, ताहा हइले एमत दानपत्रेर द्वाराय ताहा हस्तान्तर करा सम्यक प्रकारे सिद्ध, कि असिद्ध, किम्वा कतो सिद्ध,कतो असिद्ध। एइ आदालतेर पण्डित श्रीश्रीराम तर्कालङ्कार विदाय हइया आपन वाटी गियाछेन। ए जन्य हुकुम हइल ये दानपत्र मजकुरेर नकल समेत रोवकारिर नकल सम्बलित ओ ताहार वाङ्गला तरजमा इङ्गरेजि लिपि समभिव्याहारे सदर देओयानि आदालतेर हाकिमेरदिगेर निकट पाठान जाय एवं प्रार्थनाय ये सदर देओयानि आदालतेर हाकिमेरा अनुग्रहपूर्वक कागजात् मजकुरात् ऐ आदालतेर पण्डितेरदिगेर स्थाने दिया हुकुम करिवेन—ये एइ मकर्दमार तावत विषयेर पर दृष्टि करिया प्रश्नसकलेर उत्तर शास्त्रानुसारे लिखेन। लेखा हओनेर परे ताहार उत्तर एइ आदालते अनुग्रह करिया पाठान। आर आदालतेर नाजिरेर नामे परवाना लेखा जाय। नाजिर दोशरा हुकुम प्रकाश हओ। पर्य्यन्त आपन नाएव मफस्वलेर पाठाइया फरियादिर दरखास्तेर निचेर लिखित वस्तु माफिक यावेत क्रोक करिया, एक जन् पेयादा ताहार रक्षार्थे नियुक्त करे, ये क्रोकी वस्तु स्थानान्तर हइते ना पाय। पेयादार वेतन फरियादिर स्थाने लय।

आर एइ मकर्दमार डिगरि जारिर आसल कागजेर नकल ना राखिया क्रोट आपिल आदालते पाठान गियाछे, आर अरियादिर[1] नालिपि मकर्दमार आसल कागज ये ताहाते नीलेर कुटि ओ वसति वाटीते रामलोचनेर स्वत्व आछे—एइसकल कागज दृष्टि करा आवश्यक। ए जन्ये पुनराय हुकुम हइल ये एक मस्त चुम्वक रोवकारि सेइसकल कागज अनुग्रह मते पाठानेर प्रार्थनाय क्रोट आपीले पाठान जाय इति।

प्रभुसमर्पितविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं दानपत्रञ्चावलोक्य यादृशार्थबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

---

१. फरियादिर—साधीयान् पाठः।

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि दानपत्रलिखितं वस्तु रामजीसाहासंज्ञकस्य स्वोपार्जितं भवति एवं रामजीसाहासंज्ञकः स्वपुत्रवधूं तद्वस्तुनो दानविक्रयस्वामिनीं कृत्वा पुत्रे विद्यमाने पौत्रेषु च विद्यमानेषु सर्वं धनं तस्यै दत्तवांश्चेत्तदा तद्दानं प्रभुसमर्पितविचारपत्रदानपत्रोभयलिखितवृत्तान्ते सति शास्त्रानुसारेण छलकृतत्वेन कोपकृतत्वेन च सिद्धं भवितुं न शक्नोति, शास्त्रानुसारेण कोपकृतदानस्य छलकृतदानस्य च राज्ञा परावर्त्यत्वात्। प्रभुसमर्पितविचारपत्रदानपत्रोभयलिखितवृत्तान्ते सति एकमात्रपुत्रस्य पितुर्व्यवहारयोग्ये तस्मिन्नेकस्मिन् पुत्रे विद्यमाने अप्राप्तव्यवहारेषु कतिपयेषु पौत्रेषु विद्यमानेष्वपि तेषामशनाच्छादनोपयुक्तं धनमदत्त्वा स्वपुत्रवध्वै व्यवहारिकेताहृशादेयसर्वस्वदानस्य छलादिकं विना असम्भवात्। अतएव तत्प्रमाणभूतं तद्दानपत्रमपि शास्त्रानुसारेण ग्राह्यं भवितुं न शक्नोतीति॥—

अत्र प्रमाणम्—

योगाधमनविक्रीतं योगदानप्रतिग्रहम्।

यत्र वाप्युपधिं पश्येत्तत्सर्वं विनिवर्तयेत्॥—इति मनुवचनम् (८, १६५)॥१॥

अदत्तन्तु भयक्रोधशोकवेगरुगन्वितैः[1]।

तथोत्कोचपरीहासव्यत्यासछलयोगतः॥—इत्यादि विवादार्णवसेतु (पृ० १५२) विवादभङ्गार्णवादि (१ विवाभ० पृ० ४८५ ख) ग्रन्थधृतनारद (नाम सं० ६।८) वचनम्॥२॥

एवं यत्र धनिकादिप्रतारणार्थं स्वकीयद्रव्यमन्यन्नार्पयति अन्यस्मै दत्तमिति तत्रापि दानासिद्धिः—इत्यादि विवादभङ्गार्णव (२ विवा ४८७ ख) लिखनम्॥३॥

---

[1] °रुगान्वितैः—नामसं०, °रुगन्वितैः—व्यव०।

स्वं कुटुम्बाविरोधेन देयं दारसुतादृते ।
नान्वये सति सर्व्वस्वं यच्चान्यस्मै प्रतिश्रुतम् ॥—इति विवादार्णव-सेतु (पृ० १४८) विवादभङ्गार्णवादि(१ विवा० ४४५ ख)ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य(याज० पृ० २४४)वचनञ्चेति २।१७५ ॥ ४ ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि च तदेव सर्व्वं वस्तु रामजीसाहासंज्ञकस्य पैतृकं भवति तदा स्व-पुत्रवधूमुद्दिश्यैतादृशदानं प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रकारेण छलकृतत्वात् क्रोध-कृतत्वात् पैतामहे स्थावरादौ पुत्रपौत्राद्यनुमतिं विना पितुरेतादृशदाने प्रभु-त्वाभावाच्च सिद्धं भवितुं न शक्नोति ।

अत्र प्रमाणम्—

उपरिलिखितप्रमाणचतुष्टयम् ॥ ४ ॥
मणिमुक्ताप्रवालानां सर्व्वस्यैव पिता प्रभुः ॥
स्थावरस्य तु सर्व्वस्य न पिता न पितामहः॥—इति दायभागादि(पृ० ३३)ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम्[1] ॥ ५ ॥

पितामहश्रुतेस्तद्धनविषयं वचनम् । मणिमुक्ताद्युपादाय पुनः सर्व्वस्येति वचनात्[2] सर्व्वेषां भूम्यादिव्यतिरिक्तानां दानादिषु पितुः प्रभुत्वं न स्थावरनिबन्धद्रव्याणाम्—इति दायभाग (पृ० ३३) ग्रन्थलिखन-ञ्चेति ॥ ६ ॥

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि दानकृतवस्तुषु किञ्चिद्रामजीसाहासंज्ञकस्य पैतृकं किञ्चित् स्वो-पार्जितं भवति तदैतादृशदानपत्रद्वारा हस्तान्तरकरणं सर्व्वस्य वस्तुनस्तदन्त-र्गतस्य किञ्चिद्वस्तुनो वा प्रथमद्वितीयप्रश्नोत्तरलिखितप्रकारेण सिद्धं भवितुं न शक्नोति—इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागविवादभङ्गार्णवविवादार्णवसेत्वादि-ग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥—

---

१ नेदं याज्ञवल्क्यवचनम्, १९९ तमे पृष्ठे मिताक्षरायां चेदं लभ्यते ।
२ सर्व्वस्येत्युपादानात्—दाभा० ।

अत्र प्रमाणान्युपरिलिखितान्येवेति ॥ ६ ॥

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

—०—

सओयाल—

८७—फरियादियान नन्दकुमारगोस्वामी ओ रामचन्द्र-गोस्वामी दिगर असामी वैष्णवानन्दगोस्वामिदिगेरेर नामे हिस्या वावति ५८७ टाकार दाविते १०२९ सन्वरे नालिष करियाछेन। फरियादियान् आपन आरजिते लिखेन ये फरियादियान श्रीश्री-नित्यानन्दजिउठाकुरेर परिवार तावत ६ शीय वैष्णवसकल श्रीश्री-नित्यानन्दजिउठाकुरेर परिवारेर सासित वैष्णव इछोन कालीन माला चन्दन इत्यादि जाहा प्रथा आछे उहारा वैष्णव दियेदेर, आर ऐ महालेर नाम भावकमहाल। अत्र विषये हाकिमेर विना दलिले नित्यानन्द जिउर परिवारे सम्यक भावे साध्य आछे, ओ एइ महाल राजदत्त नय। ये ये स्थाने नित्यानन्दजिउर परिवार-सकल वास करिया आछेन, सेइ २ स्थाने जे जे प्रकारेर हिन्दुलोक ओ वैष्णवलोक वास करेण। ताहादेर मध्ये ये केह नित्यानन्देर उपर देशीय हन तेँहा नित्यानन्देर परिवारेर निकट हाजिर हन इति। आसामि लेखेन जे एइ महाल राजगुरुर शासन। राजदत्त विशयसकलेर एइ महाल राजा हइते राजगुरुके अर्पण आछे, ओ भावक महाल कोन समय हइते आछे, ओ कि प्रकारे नित्या-नन्देर परिवारके अर्शाछे, एवं एइ महालेते किम्बा हाकिमेर द्वाराय कोन प्रकारे किछु सम्पर्क आछे कि ना। यदि भेकाश्रित वैष्णव हइते चाहे से व्यक्तिके नित्यानन्दजिउर परिवार व्यतिरेक अन्य केह सेवक करिते पारेन कि ना। एवं यदि स्यात् तावत् देशीय भावकमहाल नित्यानन्देर परिवारसकलेर अंश हइया थाके, आर नित्यानन्दजिउर परिवारेर मध्ये एक स्थानेर परिवार कोन व्यक्ति

अन्य स्थानेर परिवारेर सेवक हइते चाहिले सेवक हइते पारे कि ना, ओ ऐ परिवारेर भिन्य स्थानवासी ऐ व्यक्तिके सेवक करिते पारेन कि ना, एवं नित्यानन्दजिउर परिवार ये ये स्थाने वास करिया आछेन ऐ जायगाय उहादिग्येर अधिकार कि। ये ये स्थाने नित्यानन्देर पन्थीय वैष्णवसकल आछेन ऐसकल स्थान उहादिग्येर शासन कि, तावतईसकल उहादिग्येर प्रत्यक्ष अंश आछे, अर्थात् नित्यानन्देर परिवार केहो सिंहभूमवासी एवं केहो बराहभूमवासी, इहाते सिंहभूमनिवासी कोन व्यक्ति ऐ बराहभूमनिवासी नित्यानन्देर परिवारेर स्थाने सेवक हइते पारे कि ना। एवं नित्यानन्देर ये परिवार सिंहभूमे वास करिया आछेन, ताहार अधिकार केवल सींहभूम कि बराहभूमों वटे। फलत तावत देशीय वैष्णवसकल नित्यानन्द जिउर तावत परिवारसकलेर साधारण मते अधिकार कि। ये ये स्थाने नित्यानन्देर ये परिवार वास करिया आछेन ताहार सेइ जायगाय अधिकार, तद्व्यतिरिक्त अन्य देशे नाइ। अत्र विशये शास्त्रे किमत विधि आछे ज्ञात हओया आविश्यक। अतएव सदर देओयानि आदालतेर पण्डित एइ सओयालेर जवाव दक्षिण[1] पार्श्वे लेखेन इति। शन १८२९ साल तारिख २५ जुन मतावक शन १२३६ साल १३ आषाढ।

श्रीर्ज्जयतितराम्

यथावव्यवस्था

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं यदेतदब्दीयाषाढस्यमासीयपञ्चविंश तेदिने घटिकात्रयाधिकयामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

यज्जातीयानां यच्छ्रेणीनां वा यस्मिन् विषये विशेषतः शास्त्राज्ञा नास्ति तस्मिन् विषये तज्जातीयानां तच्छ्रेणीनां वा यथा पूर्व्वापरव्यवहारस्तदनुसारेणैव निर्ण्णयो भवितुमर्हति। प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रलिखितविषयसमुदायस्यार्थाद्

1. दक्षिण—व्यव०।

भावकमहालसंज्ञकवस्तुविशेषः कस्मात् समयाद्वर्तते इत्यस्य, एवं येन प्रकारेण श्रीमन्नित्यानन्दस्य परिवारैस्तद्वस्तु प्राप्तमित्यस्यैव तेषु[1] वस्तुषु सरालकरभूस्वामिनो राज्ञश्च वा केनापि प्रकारेण कश्चिदपि सम्बन्धो वर्तते न वेत्यस्य, एवं यदि कश्चिद्भेकाश्रितवैष्णवो भक्तुमिच्छति तदा स श्रीमन्नित्यानन्दपरिवारव्यतिरिक्तेनान्येन केनचित् सेवकः कर्तुं शक्यते न वेत्यस्य, एवं तावद्देशीयभावकमहालसंज्ञकस्य विशेषो यदि श्रीमन्नित्यानन्दस्य परिवाराणामंशोऽभूद्,अथ च श्रीमन्नित्यानन्दपरिवाराणाम्मध्ये एकस्थानस्य कश्चित्परिवारः स्थानान्तरवासिपरिवाराणां सेवको भवितुमिच्छति चेत्तदा सेवको भवितुं (शक्नोति) न वेत्यस्य, एवं तत्परिवारवासस्थानाद्भिन्नस्थाननिवासी कश्चिच्छ्रीमन्नित्यानन्दपरिवारस्तं व्यक्तिविशेषं सेवकं कर्त्तुं शक्नोति न वेत्यस्य, एवं श्रीमन्नित्यानन्दस्य परिवारो यस्मिन् यस्मिन् स्थाने श्रीमन्नित्यानन्दस्य सम्प्रदाया वैष्णवाः सन्ति (तस्मिन्) तस्मिन्नेव स्थाने तेषामधिकारः, किंवा सर्वस्मिन्देशे तेषामंशोऽर्थात् श्रीमन्नित्यानन्दस्य परिवाराः केचित् सिंहभूमिवासिनः केचिच्च वराहभूमिवासिनः, तत्र सिंहभूमिनिवासी कश्चिद्व्यक्तिविशेषो वराहभूमिनिवासिनः श्रीमन्नित्यानन्दपरिवारस्य स्थाने सेवको भवितुं शक्नोति न वेत्यस्य, एवं श्रीमन्नित्यानन्दस्य ये परिवाराः सिंहभूमिनिवासिनस्तेषां केवलं सिंहभूमावधिकारः किं वा वराहभूमावपि, अर्थात् तावद्देशीयवैष्णवेषु श्रीमन्नित्यानन्दस्य परिवाराः वासं कुर्व्वन्ति तस्मिन् स्थान एव तेषामधिकारो नान्यत्रेत्यस्य चेदानीं प्रचलितास्मज्ज्ञातधर्म्मशास्त्रालिखितत्वात् प्रश्नपत्रलिखितश्रीमन्नित्यानन्दस्य परिवाराणाम्मध्ये प्रश्नपत्रलिखितविषयसमुदायेषु पूर्व्वापरं यथा व्यवहारस्तदनुसारेण निर्णयो भवितुमर्हति,इति मनुदायतत्त्व–कल्पतरु–विवादरत्नाकर–व्यवहारमातृकाव्यवहारतत्त्व–वीरमित्रोदयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

जातिजानपदान् धर्म्माञ्छ्रेणीधर्म्मांश्च धर्म्मवित् ।

समीक्ष्य कुलधर्म्मांश्च स्वधर्म्मं प्रतिपालयेत् ॥–इति मनुवचनम् (८।४१॥) ॥ १ ॥

---

१. तस्मिन—न्यस० ।

देशस्य जातेस्संघस्य धर्मो ग्रामस्य यो भृगुः ।
उदितः स्यात् स तेनैव दायभागं प्रकल्पयेत् ॥—इति दायतत्त्व(पृ० ७)कल्पतरुविवादरत्नाकरप्रभृतिग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् (कात्स्मृ० ८८४) ॥ २ ॥

व्यवहारो हि बलवान्धर्मस्तेनावहीयते[1]—इति व्यवहारमातृका(पृ० २८२)व्यवहारतत्त्वादि(पृ० ४)ग्रन्थधृतनारदवचनम् (नास्मृ० पृ०१७) ॥ ३ ॥

केवलं शास्त्रमाश्रित्य न कर्त्तव्यो विनिर्णयः ।
युक्तिहीनविचारेण धर्महानिः प्रजायते ॥–इति व्यवहारमातृका(पृ० २८२)वीरमित्रोदय(पृ० १८)व्यवहारतत्त्वादिग्रन्थधृतबृहस्पतिवचनम् (बृस्मृ० पृ० १६) ॥ ४ ॥

कीनाशाः कारुकाः शिल्पिकुसीदिश्रेणिनर्त्तकाः ।
लिङ्गिनस्तस्कराः कुर्युः स्वेन धर्मेण निर्णयम्[2] ॥—इतिवीरमित्रोदय(वीमि० व्य पृ० ३०)व्यवहारमातृकादि(व्यमा० पृ० २८१)ग्रन्थधृतबृहस्पतिवचनम् (बृस्मृ० पृ० १२) ॥ ५ ॥

युक्तिर्लौकव्यवहारः—इति व्यवहारमातृका (२८२) व्यवहारतत्त्व(पृ० ४) ग्रन्थलिखनञ्चेति[3] ॥ ६ ॥

दिसम्बरमासस्य प्रथमदिने यामद्वयानन्तरं मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीरुर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

१. तेनापवीयते–इति पाठान्तरम् ।
२. °कारुका मल्लाः कुसीदश्रेणिनर्तकाः ।
लिङ्गिनस्तस्कराश्चैव स्वेन धर्मेण निर्णयः ॥ (बृस्मृ ०पाठ०)
३. युक्तिर्न्यायः । स च लोकव्यवहार—इति व्यवहारमातृका—व्यप० ।

सवाल—

८८—यदि दुइ अथवा अधिक भ्राता थाके। एक जन ताहार वयःप्राप्त। एवं अन्यसकल नाबालग। एवं ताहारदिगेर कोन गारडियेन् अर्थात् रक्षक विशेषरूपे मोकरर ना हइया थाके। एवं ताहारदिगेर ज्येष्ठ भ्राता, ये प्राप्तव्यवहार हइयाछे, स्थावर वस्तु हस्तान्तर करे, ये स्थावर वस्तुते ताहार भ्रातारदिगेर अंश आछे। ऐ स्थावर वस्तु विभाग करणे ताहार दिगेरके अंशी बोध करा जाय। एमत हस्तान्तर करण शास्त्रमते नाबालगेर पक्षे सिद्ध हइते पारे कि ना ?

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं यदेतदब्दीयनवम्बरमासीयैकविंशतिदिने मासद्वया-नन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य शास्त्रबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

यदि द्वौ ततोऽधिका वा भ्रातरस्सन्ति, तेषां मध्ये एकः प्राप्तव्यवहारो-ऽन्येऽप्राप्तव्यवहारास्तेषामप्राप्तव्यवहाराणां विशेषतो रक्षकः कश्चिन् नियुक्तो नाभूत्स्यादेवं तेषां ज्येष्ठो भ्राता यः प्राप्तव्यवहारोऽभूत् स यदि एवंभूतं स्थावरं हस्तान्तरं कृतवान् स्यात्, यत्र स्थावरे तद्भ्रातृणामंशोऽस्ति, एवं तत्स्थावरविभागकरणे तेषामप्राप्तव्यवहाराणामंशित्वेन ज्ञानं भवति, एता-दृशवृत्तान्ते सति एतादृशहस्तान्तरकरणं शास्त्रतोऽप्राप्तव्यवहाराणामंशे अ-स्वामिकृतत्वात् सिद्धं भवितुं न शक्नोति। शास्त्रानुसारेणास्वामिकृतविक्रयस्य निवर्त्तनीयत्वात्—इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृत-दायभागटीकाविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था।

अत्र प्रमाणम्—

अस्वामिना कृतो यस्तु दायो विक्रय एव वा।
अकृतस्स तु विज्ञेयो व्यवहारे यथा स्थितिः॥—इति मनुवचनम् (८।१९९)॥ २॥

अस्वामिविक्रयं दानमाधिञ्च विनिवर्त्तयेत्—इति विवादभङ्गार्णवादि-(१ विवाभ० पृ० ३१७ ख)ग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् (कास्मृ० ६१२) ॥ २ ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

विभक्तस्यैवा[1]*विभक्तस्थावरस्यापि स्वामिकृतदानादि सिद्ध्यत्येव, अन्त-पातादिना पश्चादंशपरिचयसम्भवादितिभावः*—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृत-दायभागटीका (पृ० ३५) लिखनम् ॥ ३ ॥

अत्र साधारणद्रव्यस्य समुदायस्यैकेन[2] *विक्रये परांशयोग्येऽसिद्धिः स्वांशयोग्ये तु सिद्धिः*—इत्यादि विवादभङ्गार्णव (१ विवाभ० पृ० ३०५ क) ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥ ४ ॥

दिसम्बरमासस्य द्वादशदिने शनिवासरे यामद्वयानन्तरं मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

प्रथम सओयाल—

८९—यदि कोन हिन्दु जाती एक स्त्री, ओ कएक जन पुत्र वर्त्त-मान थाकिते आपन पैतृक स्थावर वस्तु, याहा आपन पितार मृत्युर पर उत्तराधिकारित्व प्रकारे उहाके अर्शियाछिल, ताहा समुदाय, किम्बा ताहा हइते किञ्चित विक्रय करियाथाके, तवे एमत विक्रय सिद्ध हइवेक कि ना, ओ विक्रयकर्त्ता किम्बा ताहार मृत्युर पर उहार पुत्रगणेर द्वाराय क्रयकर्त्ताके दखल देओयानेर, आज्ञा देओयार क्षमता आदालतेर हाकिमगणेर आछे कि ना ?

द्वितीय सओयाल—

यद्यपि क्रयकर्त्ताके दखल दिया उहाके वेदखल करियाथाके तवे हाकिमगण क्रयकर्त्ताके दखल देओयानेर आज्ञा दिते पारेन कि ना ?

---

[1] विभक्तस्यैव—व्यप० । [2] समुदायस्यैकेन—व्यप० ।

तृतीय सओयाल—

यदि क्रयकर्त्ता दखल ना पाइयाथाके तवे हाकिमगण क्रयकर्त्तार सद्मन्धे दखल देओयार आज्ञा दिते पारेन कि ना ?

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रश्नपत्रलिखितप्रकारकवृत्तान्ते सति प्रश्नपत्रलिखितप्रकारकं समुदायस्थावरं तदन्तर्गतकिञ्चित्स्थावरं वा कुटुम्बभरणपित्रादिश्राद्धाद्यावश्यककर्म्मकरणार्थं पुत्रेषु विद्यमानेष्वपि यदि पित्रा विक्रीतं तदा पुत्राणामनुमतिं विनापि स विक्रयः सिद्धो भवितुं शक्नोति। यद्युपरिलिखितकुटुम्बभरणाद्यावश्यककर्म्मकरणार्थं पित्रा न विक्रीतं किन्तु स्वेच्छया स्वाभिप्रायेण वा विक्रीतं तदा पुत्राणामनुमतिश्चेत् सिद्ध्यति, नोचेन्न सिद्ध्यति। एवञ्च सति तद्विक्रयस्य सिद्धत्वपक्षे विक्रयकर्त्तारं प्रति तन्मरणानन्तरं तत्पुत्रान् प्रति वा क्रयकर्त्तुरपचत्वसम्पादिकाया आज्ञाया दाने क्षमता धर्म्माधिकरणाधिपतीनामस्त्येव, सिद्धेन तद्विक्रयेण विक्रयकर्त्तुः स्वत्वविनाशेन तत्पुत्राणामपि तत्र स्वत्वानुत्पादात् क्रयकर्त्तुः स्वत्वोत्पत्तेश्चेति।

अत्र प्रमाणम्—

मणिमुक्ताप्रवालानां सर्व्वस्यैव पिता प्रभुः।
स्थावरस्य तु सर्व्वस्य न पिता न पितामहः॥ —इति दायभागादिधृत (दाभा॰ पृ॰ ३३) धृतयाज्ञवल्क्यवचनम्[1] ॥ १ ॥

पितामहश्च तेस्तद्धनविषयकं[2] वचनम्। मणिमुक्ताद्युपादाय पुनः सर्व्वस्येति वचनात्[3] सर्व्वेषां भूम्यादिव्यतिरिक्तानां दानादिषु पितुः प्रभुत्वं न स्थावरनिबन्धद्रव्याणाम्—इति दायभाग(पृ॰ ३३)ग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

---

१. वचनमिदं याज्ञवल्क्यस्मृतौ न दृश्यते। २. °दानविषयं—व्यव॰।

३. उपादानात्—दाभा॰।

यदि पुनः सर्व्वस्थावरादिविक्रयमन्तरेण कुटुम्बवर्त्तनमेव न भवति तदा सर्व्वस्यापि विक्रयणादिकमर्थात् सिद्ध्यति—इति दायभाग(पृ० ३३)-ग्रन्थलिखनम् ॥ ३ ॥

विक्रीय पण्यं मूल्येन केतुर्यो[1] *न प्रयच्छति ।*
स्थावरस्य क्षयं[2] *दाप्यो जङ्गमस्य क्रियाफलम् ॥*

इति विवादभङ्गार्णवविवादार्णवसेत्वादि(पृ० १७८) ग्रन्थधृतनारद-(नामसं० ९-१, ४) वचनम् ॥ ४ ॥

मूल्यग्रहणपूर्व्वकस्वत्वनाशकव्यापारस्यैव विक्रयपदार्थत्वाद्—इति विवादभङ्गार्णवलिखनम् ॥ ५ ॥

सप्त वित्तागमा धर्म्या दायो लाभः क्रयो जयः ।
प्रयोगः कर्म्मयोगश्च सत्प्रतिग्रह एव च ॥—इति मनुवचनञ्चेति (१०।११५) ॥ ६ ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदिक्रयकर्त्तुरायत्तत्वं धम्पाद्यायत्तत्वमुत्थापितवान् स्यात्तदा क्रयकर्त्तुरायत्तत्वसम्पादिकामाज्ञां धर्म्माधिकरणाधिपतयो दातुं शक्नुवन्तीति ।

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रमाणान्तर्गतचतुर्थप्रमाणम् ।

यदि क्रयकर्त्ता नायत्तत्वं प्राप्तं तदा धर्म्माधिकरणाधिपतयः क्रयकर्त्तुरायत्तत्वसम्पादिकामाज्ञां दातुं शक्नुवन्ति—इति वङ्गदेशचलितमनुदायभाग-विवादभङ्गार्णवविवादार्णवसेत्वादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

द्वितीयप्रश्नोत्तरलिखितप्रमाणमेवेति—

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

१. यद—नामसं० । २. क्षयं—न्यय० ।

श्रीहरिः शरणम् ।

२६ लम्बर दरखास्त खास आपिल— सन १८२९ साल—

प्रश्नः[1]—

९०-यद्यपि कोन व्यक्ति आपन सुपार्ज्जित[2] ओ पैतृक कोन वस्तु आपन स्वर्गार्थे काहाकेओ दान करे आर ऐ दाता व्यक्ति दानपत्रे एमत सरत राखे ये आपन जीवद्दशा पर्य्यन्त खोरपोष पाइवेक, अतएव ए प्रकार सरतेर दान ये ताहाते केवल दाता व्यक्तिर जीवद्दशा पर्य्यन्त खोरोपोष सरत लेखा थाके-शास्त्र सम्मत सिद्ध वटे कि ना-इहार प्रतिउत्तर एइ प्रश्नेर पार्श्वे, ओ तस्य भाषा लिखिवेन। इति १८२९ साल ता २६ नयम्बर मो० शन १२३६ साल ता० १२ अग्रहायन।

श्रीर्जयतितराम्

जवाबव्यवस्था

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं यदङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यत्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयजानवरीमासीयत्रयमदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे घटिकात्रयाधिकयामद्वये मया प्राप्त तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

यदि कश्चिद् व्यक्तिविशेषः स्वोपार्जितं पैतृकं च कियद्वस्तु स्वस्वर्गार्थं कस्मैचिद्दत्तवान्[3], अथ च तेनैव[4] दात्रा दानपत्रे एतादृशनियमो रक्षितः "स्वजीवनपर्य्यन्तमहं ग्रासाच्छादनं प्राप्नोमि"। अतएव यद्दानपत्रे केवलं दातुर्जीवनपर्य्यन्त ग्रासाच्छादननियमो लिखितस्तद्दानं यदि दात्रा स्वजीवनपर्य्यन्तं ग्रासाच्छादन प्राप्त तदा सिद्ध्यति, नोचेन्न सिद्ध्यति, यतः सोपाधिदानमुपाधिसिद्धौ सिद्धम्, उपाध्यसिद्धावसिद्धं भवति—इति वङ्गदेशचलितदायभागविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था।

---

१ प्रश्न — व्य० । २ सुपार्जित—व्य० स्वोपार्जित-इति साधीयान् पाठः ।

३ दत्तव०—व्य० । ४ स एव दाता—व्य० ।

अत्र प्रमाणम्—

स्वभागान्[1] यदि दद्युस्ते विक्रीणीयुरथापि वा ।
कुर्य्युर्य्यथेष्टं तत्सर्व्वमीशास्ते स्वधनस्य वै ॥—इति दायभागादि-(दाभा० पृ० ३०)ग्रन्थधृतनारद(नामस० १४।४२)वचनम् ॥ १ ॥

सोपाधिदानमुपाध्यसिद्धावसिद्धम्—इति विवादभङ्गार्णव(१ विवाभ० पृ० ३०८ ख) ग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

अत्रेदमवधेयम्—यदि कतिचिदुपाधयः यावज्जीवपर्य्यन्तं पोषणादयः कृताः कतिचिच्चौर्द्ध्वदैहिकक्रिया (कलाप[2])रूपा न कृतास्तत्र का व्यवस्था इति चेद् यावद्व्यापाराकरणेन सम्प्रदानप्रतिज्ञागम्राद्युद्देश्यफलानां किञ्चिदंशे विसंवादाच्च न दानसिद्धिः—इति विवादभङ्गार्णवग्रन्थ(१ विवाभ० पृ० ४६५ क) लिखनञ्चेति ॥ ३ ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयफेब्रुयरीमासीयचतुर्थदिनसम्बन्धिबृहस्पतिवासरे घटिकैकाधिकयामद्वयानन्तरं मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीर्ज्जयतितराम्

८७ नम्बर
स्थास आपिल
शन १८२७
प्रश्नः—

९१—यद्यपि कोन व्यक्ति किछु भुमि आपन कन्यार विवाह

---

१. स्वानशानिति नामसं० पाठः । २. कलाप—इति विश०मूले पाठः ।

कालिन आपन जामाताके दान करिया थाके, आर ऐ कन्यार गर्भे सेओया एक कन्या श्रीमतीकुमारी नामे, पुत्र सन्तान ना हइया थाके; ए प्रकारे ऐ वस्तु यथाशास्त्र श्रीमतीकुमारीके कि ऐ ग्रहीता व्यक्तिर द्वितीय पक्षेर सन्तानद्विगके अर्शे—इहार प्रति उत्तर यथन ओ सत्य ताहा एइ प्रश्नेर पार्श्वे लिखिवेन इति। शान १८२६ तारिख २२ दिशम्बर मोताबाक शन १२३६ तारिख ६ पौष।

श्रीर्ज्जयतितराम्

अत्रावऽयवस्था

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं यदेतदब्दीयफेब्रुवरीमासीयपञ्चमदिनसम्बन्धिशुक्रवासरे घटिकात्रयाधिकयामद्वये मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

यत्र कश्चिद्व्यक्तिविशेषः किञ्चिद्भूमिं स्वकीयकन्याविवाहसमये स्वजामात्रे दत्तवान्, अथ च तस्या गर्भे श्रीमतीकुमारीनाम्नीमेकां कन्यां विना अन्यः कश्चित् पुत्रादिसन्तानो न जातश्चेदत्र तद्दानं यदि "कन्याया इदं भवतु" इत्यभिसन्धिना कृतं तदा तावदेव वस्तु श्रीमतीकुमारीनाम्नी प्राप्तुं शक्नोति, तन्मातुर्यौतुकस्त्रीधनत्वात्, यौतुकस्त्रीधने दुहितुरधिकारस्य निष्प्रत्यूहत्वात्। यदि च तद्दानं तादृशाभिसन्धिं विना कृतमर्थात्, "जामातुरिदं भवतु" इत्यभिसन्धिना कृतं तदा तद्वस्तु जामातुरुत्तराधिकारिणामर्थात्तत्पुत्रपौत्रप्रपौत्रपत्नीदुहित्रादीनामेव भवति। प्रकृते तु प्रभुसमर्पितविचारपत्रलिपितात्पर्य्यलिखितवृत्तान्ततात्पर्य्यार्थेनार्थात् राममण्या औरसपुत्राभावेन शास्त्रानुसारेणाधुना एवोत्तराधिकारिण इत्यनेन विवादास्पदीभूतधनस्य राममणीमुद्दिश्य तत्पितृकृतदानावगमेन तादृशधनं राममण्या यौतुकं स्त्रीधनं भवत्येव, यौतुकस्त्रीधने विद्यमानायां दुहितरि सपत्नीपुत्राणामर्थादधिनामधिकारप्रतिपादकशास्त्राभावाद्—इति वङ्गदेशप्रचलितदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकादायक्रमसंग्रहविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था।

१. विवाहकाले यत्किञ्चिद्वरायोद्दिश्य दीयते ।
कन्यायास्तद्धनं सर्वमविभाज्यं च बन्धुभिः ॥–इति दायभाग(पृ०७५) दायक्रमसंग्रहादि(दाक्रसं० पृ० १३) ग्रन्थधृतव्यासवचनम् ॥ १ ॥

उद्दिश्येति कन्याया इदं भवत्वित्युद्दिश्य वराय यद्दानं न पुनरेतदभिसन्धि विनापीत्यर्थः । अतएव विवाहकाल इति प्रदर्शनार्थम् न पुनरेतदेव प्रयोजकं दात्रभिसन्धिनिमित्तत्वात् स्वत्वस्य–इति दायभाग(पृ० ७५)ग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

अत्र प्रथमं पुत्रस्तदभावे पौत्रस्तदभावे प्रपौत्रः—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभाग(पृ० २१८)लिखनम् ॥ ३ ॥

पत्नी दुहितरश्चैव–इत्यादि दायभाग(पृ०.१५१)श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीका (पृ० १५१)नियमसङ्ग्रहविवादभङ्गार्णवादि (२ विवा० भ० पृ० ११४)ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य(२।१३५) वचनम् ॥ ४ ॥

तत्र यौतुकधने प्रथमं कुमार्या अधिकारस्तदभावे वाग्दत्तायास्तदभावे चोढायाः पुत्रवत्याः सम्भावितपुत्रायाश्च युगपदधिकार इति । तदभावे वन्ध्याविधवयोरपि तुल्यवदधिकार इति च । सर्व्वदुहित्रभावे पुत्रस्याधिकारः—इति च दायक्रमसंग्रह(पृ० २३)ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥५॥०॥०॥०॥

एतदन्दीयमद्दमासीयत्रयोदशदिनसम्बन्धिबृहस्पतिवासरे घटिकैकाधिकयामद्वयानन्तरं मयेयं व्यवस्था दत्ता इति ।

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीर्ज्जयतितराम्

नं० २६५

९२—रोवकारि मिसिल आदालत देवोयानि सदर तारिक २१ माह जानओरि सन १८३० इ० मतावक ९ माह माघ सन

१२३६ बाङ्गला रोज बृहस्पतिवार ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुक्त मान्तेगियु हेनरि टरम्वल साहेबेर बैठके ।

गोपालचन्द्र प्रभृति — आपिलाण्टगण ।
बाबु कोरन्द सिंह — रेस्पाण्डण्ट

आपिलाण्टगणेर वकिल मुनशी होसेन आलि ओ मौलवी न्यामत आलि, रेस्पाण्डण्टेर वकिल मुनशी बाहार बकस ओ मुनशी हयदर आलि ओ मौलवी करमत[१] होसेन हाजिर हइल । ए मकद्दमा गत सनेर दिसम्बर मासेर ३० तारिखेर हुकुमानुसारे एइ मासेर ११तारिखे आमार बैठके रोवकार हइया जिला ओ कोर्टेर आदालतेर फयसलासकल ओ इं १८२७ सालेर मार्च मासेर ६ ओ २७ तारिखेसकलेर लिखित ए आदालतेर बाकि कागजसकल ओ खास आपीलेर दरखास्त, याहा मञ्जुवात करियाछि, ओ ए आदालते दाखिल हओया ताहार जवाब ओ इ० १८२६ सालेर दिसम्बर मासेर ३० तारिखेर रोवकारिर लिखित ए आदालतेर हाकिम श्रीयुक्त उलियम लसटर साहेबेर राय ओ एवं मकद्दमार आवश्यकीय अन्य कागजात पुनराय पढा गेल । यथा उभयेर ओजरसकल ओ यजहारसकलेर दृष्टे ए मकद्दमार सम्बन्धे चूडान्त हुकुम सादर हओनेर पूर्वे निचेर सओयालेर जवावे ए आदालतेर पण्डित हइते व्यवस्था लओन उचित हइल, अतएव हुकुम हइल जे मकद्दमा अद्य स्थाकत थाके, ओ एइ रोवकारिर नकल एइ हुकुमे ए आदालतेर पण्डितके समर्पण कराजाय ये जिला साहावादेर चलित शास्त्रानुसारे निचेर लिखित सओयालेर जवावे एक सप्ताह मध्ये व्यवस्था दाखिल करेन ।

सओयाल—यद्यपि हिन्दु जाति हइते केहो आपन पैतृकस्थावर वस्तुसकल हइते किछु ब्राह्म जाति हइते एक व्यक्तिके दान करे । ओ दान गृहीता ओ ताहार मृत्युर पर ताहार वत्तरा-

[१] करम होसेन—पाठ ।

धिकारिगण दान करा वस्तुर उपर दखिल हइया थाके, ओ ता-हार पर दाता व्यक्तिर पुत्रगणेर मध्ये एक जन आपन पिता वर्त्त-माने ऐ दान सिद्धि न हओयार एजाहारे आदालते नालिस करे। तवे एमत दान शास्त्रानुसारे सिद्धि ओ चलित हइवेक कि ना इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतमान्तकीथूहेनरीटरंबलसाहेबधर्म्माधिकरणलिखितैतद्ब्दीयजान(ओ)रीमासीयैकविंशतिदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत् फेब्रुवरीमासीयतृतीयदिनसम्बन्धिद्युपयासरे घटिकैकाधिकयामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यद्यपि हिन्दुजात्यन्तःपाती कश्चित्स्वपैतृकस्थावरसमुदायात् किञ्चिद्ब्राह्मणजातीयायैकस्मै कस्मैचिद्दत्तवान्, अथ च दानग्रहीता तन्मरणानन्तरं तदुत्तराधिकारिभिस्तद्दानकृतवस्तुनि आयत्तत्वं संप्राप्तम्, तदनन्तरं दातुः पुत्राणां मध्ये एकः कश्चिद् विद्यमाने पितरि स्वपितृकृतदानं सिद्धं न भवतीति वदन् धर्माधिकरणेऽभियोगं कृतवान् स्यात्—तत्र विद्यमाने पितरि प्रश्नपत्रलिखितप्रकारकपुत्रकृताभियोगदृष्ट्या तद्दानं यदि पित्रा स्वेच्छया स्वाभिप्रायेण[1] वा प्रसन्नतया वा कृतम्, तत्र पुत्राणामनुमतिश्चेत् सिद्धं चलितं च भवितुं शक्नोति, नो चेन्न शक्नोति, पैतामहे स्थावरादौ पितापुत्रयोस्तुल्यस्वामित्वेन साधारणतया तद्दानविक्रयादौ पुत्राणामनुमतेरावश्यकत्वात्। यदि च तद्दानं पित्रा भयक्रोधादिषोडशप्रकारान्तर्गतेन केनचित् प्रकारेण कृतम्, ये षोडशप्रकाराः पञ्चमप्रश्ने स्पष्टीकृतास्तत्र पुत्राणामनुमतावननुमतौ वा सिद्धं चलितं च भवितुं नार्हति। यदि च तद्दानं पित्राऽवश्यकर्त्तव्यपित्रादिश्राद्धादिषु यज्ञादिषु वा ब्राह्मणत्वेन धर्मार्थं वा, अर्थात् तत्तद्देशचलितपित्रादिश्राद्धादिदक्षिणा यज्ञादिदक्षिणा वा प्रदत्तं वा

---

[1] स्वाभिप्रायेण—व्यप० ।

कृ(ता)पैण वा पादार्घ्यो वा संकल्पो वा पृत्तिर्वा विष्ण्वादिदेवताप्रीत्यर्थ
मेत्यादिरीत्या कृतं तदा धर्म्मार्थत्वेन सिद्धं चलितं च भवितुमर्हति। धर्म्मार्थ
...... पितुरधिकारः। धर्मार्थ
...... अदत्त्वैव मृतश्चेत्तथापि

राज्ञा तद्धनं तत्पुत्रा दापनीयाः(?)—इति मिताक्षरादिग्रन्थेषु विशेषतो लिखि-
तत्वात्—इति साहायादप्रदेशचलितमिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारमाधवव्य-
वहारकौस्तुभादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था।

अत्र प्रमाणम्—

मणिमुक्ताप्रवालानां सर्व्वस्यैव पिता प्रभुः।
स्थावरस्य तु सर्वस्य न पिता न पितामहः ॥—इति मिताक्षरा-
(पृ० १६६)वीरमित्रोदय(पृ० ५२४)व्यवहारमाधव(पृ० ३३१)व्यव-
हारकौस्तुभादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य[3](पृ० १६६)वचनम् ॥ १ ॥

भूर्या पितामहोपात्ता निबन्धो द्रव्यमेव वा।
तत्र स्यात् सदृशं स्वाम्यं पितुः पुत्रस्य (चैव हि) ॥—इत्युपरिलि-
खितग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य(पृ० २०६, २।१२१)वचनम् ॥ २ ॥

तस्मात् पैतृके पैतामहे च द्रव्ये जन्मनैव स्वत्वं तथापि पितुरावश्य-
केषु धर्म्मकृत्येषु वाचनिकेषु प्रसाददानकुटुम्बभरण(पद्धि)मोक्षादिषु च
स्थावरव्यतिरिक्तद्रव्यविनियोगे स्वातन्त्र्यमिति स्थितम्। स्थावरे तु स्वा-
र्जिते पित्रादिप्राप्ते च पुत्रादिपारतन्त्र्यमेव।—इत्युपरिलिखितग्रन्थ(मिता०
पृ०२००)लिखनम् ॥ ३ ॥

स्थावरं द्विपदं चैव यद्यपि स्वयमर्जितम्।
असम्भूय सुतान् सर्वान् न दानं न च विक्रयः ॥
ये जाता येऽप्यजाताश्च ये च गर्भे व्यवस्थिताः।
वृत्तिं तेऽपि हि काङ्क्षन्ति न दानं न च विक्रयः ॥—इति चोपरि-
लिखितग्रन्थधृत(मिता० पृ० २००)व्यासवचनद्वयम् ॥ ४ ॥

---

१. पादार्घ्यो वा संकल्पो वा—व्यप०। २. विष्ण्वादिदेवताप्रत्यर्थम्—व्यप०।
३. याज्ञवल्क्यस्मृतौ वचनमिदं नोपलभ्यते।

अदत्तं तु भयक्रोधशोकवेगरुगन्वितैः[1] ।
तथोत्कोचपरीहासव्यत्यासच्छलयोगतः ॥
बालमूढास्वतन्त्रार्त्तमत्तोन्मत्तापवर्जितैः[2] ।
कर्त्ता ममेदं[3] कर्मेति प्रतिलाभेच्छया च यद् ॥
अपात्रे पात्रमित्युक्ते कार्ये चाधर्मसंहिते[4] ।
यद्दत्तं स्यादविज्ञानाददत्तमिति तत्स्मृतम् ॥—इति चोपरिलिखितग्रन्थ-
(मिता० पृ० २४५)धृतनारद(नामसं० ६०)वचनम् ॥ ५ ॥

अस्यापवादः ॥
एकोऽपि स्थावरे कुर्याद्दानाधमनविक्रयम् ।
आपत्काले कुटुम्बार्थं धर्म्मार्थे च विशेषतः ॥—इत्युपरिलिखितग्रन्थ-
(मिता० पृ० २००)धृतमुनिवचनम् ॥६॥

स्वस्थेनार्त्तेन वा दत्तं श्रावितं धर्म्मकारणात् ।
अदत्त्वा तु मृते दाप्यस्तत्सुतो नात्र संशयः ॥—इति चोपरिलिखित-
ग्रन्थ(मिता पृ० २४६)धृतकात्यायन(कात्यू० ५६६)वचनं चेति ॥७॥

मार्च्चमासस्य त्रयोदशदिनसम्बन्धिशनिवारे घटिकैकाधिकयामद्वये मये-
यं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीर्ज्जयतितराम्

९३—रोवकारि मिसिल आदालत देओयानी सदर तारिख
११ माह फेवरुओरि शन १८३० इ० मतावक १ माह फाल्गुण

---

1. रुगान्वितैः—नामसं० ।
2. °पवर्जितम्—नामसं०, मिता० ।
3. ममायं—नामसं० ।
4. संहिते—मिता०, नामसं ।
5. प्रकीर्तितम्—व्यव० ।

शन १२३६ बाङ्गला ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुक्त अलियम नश-ष्टर साहेबेर बैठके।

अप्राप्तव्यवहार हरनारायसिंहेर माता मुसम्मात छयोविवि[1] तुह्यस नेजामङ्गिनेर माता मुसम्मात करिमन ओ अप्राप्तव्यवहार कालीचरणेर माता मुसम्मात पद्म ओ मुसम्मात बदासु ओ मुसम्मात उदासी सायेलगण। छयोविबिर उकिलगण मौलवी गोलाम इजदानी ओ मुनसी महम्मद आलि खा ओ मुसम्मातान् करिमन ओ पद्म ओ उदासीर उकिलगण सदासुकपण्डित ओ लाला बस्तिलाल हाजिर आसिल। इं० १८२९ शालेर सितम्बर मासेर २५ तारिखेर हुकुमानुसारे सायेलगणेर सओयालसकल ओ ताहार सम्पर्कीय अन्य कागजात ओ सालिसगणेर फयसला ऐ तारिखेर विस्तिर्ण रोबकारि ए आदालतेर हाकिम श्रीयुत हालहन बावरट. राटरि साहेबेर राय सम्बलित पडागेल। जेहेतुक कागचसकलेर द्वाराय बोध हइते छे ये सायेलगणा, ये आपनादिगके मृत बाबु जगन्नाथसिंहेर स्त्री ओ उत्तराधिकारिणी प्रकाश करितेछे, केह मृत बाबुर स्वजाति ओ केह भिन्न जाति, ओ एवं ताहार मध्ये केह सन्तानवति बटे। अतएव ए मकद्दमार सम्बन्धे चुडन्त हुकुम सादर हओनेर पूर्ब्बे हुकुम हइल ये मकद्दमार कागजात एइ रोबकारिर नकल सहित एइ आदालतेर पण्डितके समर्पण कराजाय—ये ताहार दृष्टे एइ सओयालेर जवाबे ये सायेलगणार मध्ये मृत बाबुर कोन २ स्त्री ओ एवं ताहारदिगेर गर्भे हइबे ये सन्तान हइयाछे शास्त्रानुसारे ऐ मृत व्यक्तिर पुत्र ओ उत्तराधिकारि हय, ओ यद्यपि ऐ सायेलगणार मध्ये केह किम्वा ताहादिगेर पुत्र ऐ मृत व्यक्तिर उत्तराधिकारि हय, तबे अन्य सायेलगणा ओ ताहादिगेर सन्तान या ऐ मृत व्यक्तिर—त्यक्त वस्तु हइते भरण ओ पोषणेर किछु सत्वा राखे कि ना—ये

१. छयोविवि लिखित नेजामद्दिनेर माता मुसम्मात करीमन—इति साधीकान् पाठः।

मृत व्यक्तिर याजिर[1] चलित शास्त्रानुसारे व्यवस्था लिखिया दाखिल करेण इति।

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतअलियमनसाहेबधर्माधिकरणलिखितैतद्ख्रीष्टीयफेब्रवरीमासीयैकादशदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेयं तत्समर्पितैतद्विवादविषयनिविष्टपत्रजातं यन्मार्च्चमासीयचतुर्थदिनसम्बन्धिबृहस्पतिवासरे घटिकैकाधिकयामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य विविच्य च यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

अर्थिनीनां मध्ये यदामूविबीनाम्नी मृतस्य बाबुजगन्नाथसिंहस्य पत्नी भवति, शास्त्रे पत्नीशब्दस्य विवाहसंस्कृतस्त्रीवाचकत्वात्, प्रभुसमर्पितपत्रजातान्तर्गतविखितनेजामद्दीनमातुः करिमननाम्न्या अप्राप्तव्यवहारकालीचरणमातुः पद्दुनाम्न्याश्चोदासीनाम्न्याश्च निवेदनपत्रेणांगरेजीशब्दप्रतिपाद्योनत्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयक्षितम्बरमासीयत्रयोविंशतिदिवसीयनृपाधिकृतकृतजयपत्रेण च यदामूबिबीनाम्न्या मृतस्य बाबुजगन्नाथसिंहविवाहितसजातीयस्त्रीत्वावगमात्। एवं यदामूविबीनाम्न्येवोत्तराधिकारिण्यपि भवति, उत्तराधिकारित्वेनेदानीं तज्जातिव्यव(हारानुसारेण) दत्तकृत्रिमपुत्राणां पुत्रपौत्राणां च मृतव्यक्तेरभावात्। एवं मृतस्य बाबुजगन्नाथसिंहस्य सजातीया विवाहित(स्त्री)सद्दोविबीनाम्नीगर्भोत्पन्नस्याप्राप्तव्यवहारस्य हरनाथसिंहस्य शास्त्रोक्तद्वादशविधपुत्रान्तर्गतपौनर्भवपुत्रत्वेऽपि पौनर्भवपुत्रस्येदानीं[2] व्यवहाराभावात् शास्त्रनिषिद्धत्वाच्चोत्तराधिकारित्वं न सम्भवति। एवं भिन्नजातीयपद्दुनाम्नीगर्भोत्पन्नस्याप्राप्तव्यवहारस्य कालीचरणस्य शास्त्रोक्तद्वादशविधपुत्रानन्तर्गतस्य मृतस्य बाबुजगन्नाथसिंहस्य शास्त्रानुसारेणावरुद्धपुत्रत्वेऽप्यवरोद्धादासीपुत्रतुल्यत्वेऽपि तस्य च क्षत्रियजातीयस्य मृतस्य बाबुजगन्नाथसिंहस्य त्यक्तधने शास्त्रानुसारेणाधिकारित्वं न सम्भवति। एवं चोपरिलिखितप्रकारेण यदामूविबीनाम्न्या मृतस्य बाबु-

---

१. जातिर–इति साधीयान् पाठः। २. पत्रस्य—न्या०।

जगन्नाथसिंहस्य पत्नीत्वे उत्तराधिकारित्वे च सति अन्यासामधिनीनां तासां सन्तानानां[1] च तस्यैव मृतव्यक्तिविशेषस्य त्यक्तधनाद् ग्रा(सा)च्छादनस्य किञ्चित्स्वत्वे अयं विशेषः—या सजातीया विवाहिता[2] सद्योविबीनाम्नी, सा या च भिन्नजातीया पद्दुनाम्नी[3] च यदि मृतस्य बाबुजगन्नाथसिंहस्योत्तराधिकारिणां प्रतिकूला व्यभिचारिणी वा न भवति तदा यावज्जीवं ग्रासाच्छादनभागिनी भवति नान्यथा। अथ च सजातीयविवाहितस्त्रीगर्भोत्पन्नस्याप्राप्तव्यवहारस्य हरनाथसिंहस्योपरिलिखितप्रकारेण पौनर्भवपुत्रस्य मृतव्यक्त्युत्तराधिकारिणामनुकूलत्वे प्रतिकूलत्वेऽपि ग्रोमयथैव यावज्जीवं ग्रासाच्छादनभागित्वम्, भिन्नजातीयपद्दुनाम्नीगर्भोत्पन्नस्याप्राप्तव्यवहारस्य कालीचरणस्य मृतव्यक्त्युत्तराधिकारिणामनुकूलत्वे यावज्जीवं ग्रासाच्छादनभागित्वं नान्यथा, यवनजातीयस्य विद्दिसनेजामद्दीनस्य तन्मातुः करिमननाम्न्याश्च रजकजातीयोदासीनाम्न्याश्च मृतव्यक्तित्यक्तधनाद् ग्रासाच्छादनाधिकारानधिकारविधायकशास्त्राभावाद्—इति मृतस्य बाबुजगन्नाथसिंहस्य क्षत्रियजातीयस्य प्रचलितमनुमिताक्षरावीरमित्रोदयदत्तकमीमांसादत्तकचन्द्रिकादत्तकदीधितिदत्तकनिर्णयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था:—

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी विवाहसंस्कृता—इति मिताक्षरा(पृ॰ २१७)वीरमित्रोदयादि(वीमि॰ ख॰ पृ॰ ६२२)ग्रन्थलिखनम् ॥ १ ॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा—इत्यादि मिताक्षरा(पृ॰ २१६)वीरमित्रोदया(पृ॰ ६२३)दिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य(२।१३५)वचनम् ॥ २ ॥

या पत्या वा परित्यक्ता विधवा वा स्वयेच्छया।
उत्पादयेत्पुनर्भूत्वा स पौनर्भव उच्यते ॥—इति मनु(पृ॰ ३७५)वचनम् ॥ ३ ॥

पौनर्भवस्तु पुत्रोऽक्षतायां क्षतायां वा पुन(र्भ्वां) सवर्णादुत्पन्नः—इति मिताक्षरादि (मि॰ पृ॰ २१६)ग्रन्थलिखनम् ॥ ४ ॥

---

१ सन्तानां॰—स्पष्ट॰ । २ विवाहिता—स्पष्ट॰ ।
३ ॰नाम्नीयाच—स्पष्ट॰ । ४ सजातीया॰—स्पष्ट॰ ।

दत्तौरसेतरेषां तु पुत्रत्वेन परिग्रहः ।
इमान् धर्मान् कलियुगे वर्ज्यानाहुर्मनीषिणः ॥—इति दत्तकमीमांसा-(पृ० ३०)दिग्रन्थधृतशौनकवचनम् ॥ ५ ॥

निर्य्यास्या व्यभिचारिण्यः प्रतिकूलास्तथैव च ॥—इति मिताक्षरा-दिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य (२।१४२) वचनम् ॥ ६ ॥

गर्भव्यास्तत्परे सुताः—इति वीरमित्रोदयादि (वीमित्र० पृ० ६१४)-ग्रन्थधृतवृहस्पति(२०७)वचनम् ॥ ७ ॥

द्विजातिना दास्यामुत्पन्नः पितुरिच्छयाप्यंशं न लभते, नाप्यर्द्धं दूरत एव ; कृत्स्नम् । किन्त्वनुकूलश्चेज्जीवनमात्रं लभते—इति मिताक्षरा-(पृ० २१६)वीरमित्रोदयादि (पृ० ६२३)ग्रन्थलिखनम् ॥ ८ ॥

बन्धूनामेकधर्माणामेकस्यापि यदुच्यते ।
सर्वेषामेव तज्ज्ञेयमेकरूपा हि ते स्मृताः ॥—इति मिताक्षरादिग्रन्थ-धृतौशनसवचनञ्चेति[2] ॥ ९ ॥

एतदब्दीयापरैलमासीयषड्विंशतिदिनसम्बन्धिसोमवासरे घटिकात्रया-धिकयामद्वयानन्तरं मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

९४—रोवकारि मिपिल आदालत देओयानि सदर तारिख २२ माह माइ सन १८३०इं० मोताबक १० माह ज्यैष्ठ सन १२३७ बाङ्गला रोज शनिवार ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत मान्तगिओ, हैनरि टरम्बल साहेबेर बैठके ।

वाबु माधोरवहाय ओ वेनिस्वहाय,	
अप्राप्तव्यवहारगणेर मोक्तार—	आपिलाण्ट ।
वाबु रामचरणलाल—	
मोसम्मात वादामो प्रभृति—	रस्पाण्डण्टान् ।

---

१. इमान्—मनीषिणः—दत्तकमीमांसायां नोपलभ्यते ।
२. मिताक्षरायां औशनसस्मृतौ च नोपलभ्यते ।

আপিলাণ্টের উকিল মুন্সি দাদারবক্স হাজির আইল। রেসপণ্ডেণ্টগণ এ আদালতে এযালাস শমার[1] পৃষ্ঠে রসিদ লিখিয়া, ও স্বয়ং কিম্বা উকিলের দ্বারা হাজির হইল না। অতএব এই মকর্দ্দমা তাহারদিগের অসাদ্যাতে অদ্য আমার বৈঠকে দরকার হইয়া নালিশি আরজি প্রভৃতি প্রবিনশাল কোর্টের কাগজসকল ফয়সালা পর্য্যন্ত ও এ আদালতের আপিলের মৌজুবাত্ পড়াগেল। তত্পরে আপিলাণ্টের উকিল চারি টাকার মূল্যের এক কেতা ফেরেস্তের বরাত[2] ইংরাজী অক্ষর ও এবারতেবই[3]..........কিংবা দস্তাবেজ লম্বরে দাখিল করিল,দৃষ্ট আসিল। জানাগেল জে রেসপাণ্ডেণ্টান্, সাবেক মুদইগণ, মৃত বাবু দ্বারিকাদাসের ত্যক্তের তৃতীয় অংশ ২৫০০০০০ টাকা দেয়াইয়া পাওনের জন্যে এই এজহারে নালিস করিলেক—যে মৃত বাবুর দুই স্ত্রী। প্রথমা স্ত্রীর গর্ভে হইতে, যে যে বাবুর সাক্ষাতে মৃত্যু হয়, দুই কন্যা[4] ও দ্বিতীয়া স্ত্রী, অর্থাত্ মুসম্মাত্ শিবলবহুর গর্ভে হইতে এক কন্যা জন্মে; ও যে বা(বু)র মৃত্যুর (পর) মুসম্মাত্ শিবলবহু আপন জীবদ্দশা পর্য্যন্ত ত্যক্ত ধন ও কুটীসকলের উপরে কাবেজ থাকিয়া দেনা ও লেনা ও কুটীর কর্ম্ম জারি করিয়া মৃত্যু হয়; ও তাহার মৃত্যুর পর তাহার কন্যা মুসম্মাত্ নন্নমন্ ও নন্নমনের পুত্রগণের মাধোসহায় ও বেণিসহায় ত্যক্ত ধন প্রভৃতিতে দখিল হইয়াছে। যে হেতুক শাস্ত্র ও দেশের ব্যবহারমতে মৃত বাবুদ্বারিকাদাসের কন্যাগণের পুত্রগণ ব্যতিত অন্য কেহ উত্তরাধিকারী নহে, ও বাবুদ্বারিকাদাসের প্রথমা স্ত্রীর গর্ভজ কন্যাগণের মধ্যে এক কন্যা আমি[5] মুসম্মাত বাদামুর পুত্র জগন্নাথদাস উত্তরাধিকারী ও হকদার বটে। অতএব নালিশ করিতেছি।

---

১. এজলাসের হুকুমনামার—ইতি সাধীবান্ পাঠঃ।
২. হারাব—ইতি সাধীবান্ পাঠ।
৩. এবারতেবে—ইতি সাধীবান্ পাঠঃ।
৪. কন্যা—ন্যপ০।
৫. কর্ম্মাদিস্যর্থঃ।

ओ जओयावेर खोलासा एइ ये यखन बाबुद्वारिकादास आपन जीवद्दशार मुद्दैयार विवाह दिया, ये देना छिल ताहा दिया, विदाय करियाछेन हिन्दु जातिर व्यवहार ओ शास्त्र मते मुद्दैगणेर किछु स्वत्व ओ हिस्या दावि वाकि (रहि)ल ना, ओ यद्यपि मुद्दैगणेर किछु दावि थाकित तवे ऐ बाबुर जीवद्दशाते अथवा ताहार मृत्युर पर शीतलबहुर उपर, ये १५ वत्सर पर्य्यन्त कावेज ओ दखिल थाकिया, आपन दौहित्रगणके उत्तराधिकारी ओ रासनसीन कराइया ओ तमलिकनामा लिखिया दियाछेन, आपत्ति करित। ओ जवाव मजवाव (ये)—मुसम्मात् शीतलबहु माधोस्वहायके, ये रामचरणलाल, अर्थात् मुसम्मात् नछुमिर पतिर बड पुत्र बटे, रासनसीन् करण असिद्ध, ओ शीतलबहुर मृत्युर पर तमलिकनामा प्रस्तुत हओन ओ मृत बाबुर सकल दौहित्रगण तुल्यांशे स्वत्वाधिकारि थाकन सम्बलित बटे, ओ कोर्टेर हाकिम वारानसेर पाठशालार पण्डितगण हइते व्यवस्था लओन परे मुद्दैगणेर दावि डिगरि करिलेन। यथा आपिलाण्ट एइ आपत्तिसकले ये—ऐ व्यवस्था शास्त्र-बहिर्भूत बटे आपिल करिलेक, ओ प्रकाश करिलेक, ओ प्रकाश करे ये उपरेर लिखित हेतु मते शास्त्रानुसारे विरोधीय वस्तुर उपर माधोस्वहाय ए बेनिस्वहायेर स्वत्वा साव्यस्थ ओ प्रामाण्य बटे।

अतएव एइ आदालतेर, पण्डित हइते नीचेर सओयालेर जओवे व्यवस्था लओन उचित बोध हइया हुकुम हइलो—ये एइ रोवकारिर नकल ६५ लम्बरे मथित आशाल हेवानामा दस्तावेज सम्बलित, एइ आदालतेर पण्डितके अर्पण करा याय—ये वारानस देशेर चलित शास्त्रानुसारे नीचेर सओयालेर जवावे एक सप्ताहेर मध्ये व्यवस्था दाखिल करेन।

सओल—यद्यपि आगरओयाला महाजन जाति हइते केह एक स्त्री ओ ताहार गर्भज एक कन्या ओ प्रथमा स्त्री, ये पतिर साक्षाते मृत्यु हइयाछे, ताहार गर्भेर दुइ कन्या ओ धनादि त्यक्त

वस्तु राखिया मरे, ओ ताहार पर द्वितीया स्त्री आपन जीवद्दशा पर्य्यन्त पतिर त्यक्त वस्तुते दखिलकार थाकिया आपन गर्भज कन्यार पुत्रगणके रासूनसिन् करिया ऐ समुदय वस्तुर तमलिकनामा व उद्दादिग्के लिखिया दियाथाके, तवे केवल द्वितीया स्त्रीर तमलिक मते ताहार कन्यार पुत्रगण मृत व्यक्तिर वस्तुर कर्त्ता हइवेक, किम्बा प्रथमा स्त्रीर, ये पतिर साक्षाते मरियाछे, कन्याद्वयेर पुत्रगणे कर्त्ता हइवेक, ओ मृत व्यक्तिर द्वितीया स्त्रीर आपन गर्भज कन्यार पुत्रगणके आपन पतिर अनुमति व्यतिरासूनसीन करण, ओ स्त्रीलोक आपनार पतिर त्यक्त स्थावर किम्वा अस्थावर, सकल आपन गर्भज कन्यार पुत्रगणके तमलिक करण शास्त्रानुसारे सिद्ध घटे कि ना इति ।

श्रीर्जयतितराम् ।

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतमान्तकिउदेनरिटरम्बलठाहेवधर्म्माधिकरणलिखितैतदब्दीयमाघमासीयद्वाविंशतिदिनसम्बन्धिविचारपत्रान्तर्गतम-प्रतिरूपपत्रमेवं पञ्चपत्यङ्काङ्कितदानपत्रञ्च फाल्गुनमासीयचतुर्द्दशदिनसम्-न्धिचन्द्रवासरे पञ्चघटिकाधिकयामद्वये मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

यद्यपि कश्चिदगरवालामहाजनो व्यक्तिविशेषो द्वितीयविवाहितां पत्नीं तद्गर्भजामेकां कन्यां तथा स्वाग्रे मृतप्रथमपत्नीगर्भजकन्याद्वयं हेमरूप्य-कुप्यादिधनञ्च (सं)स्थाप्य दिवं गतः; तदनन्तरं सैव द्वितीया पत्नी स्वजीवद्दशा-पर्य्यन्तं पतित्यक्तसर्व्ववस्तुन्यायत्तत्वं सम्पाद्य स्वगर्भजकन्याया पुत्रं रासनसीनमर्थाद्दत्तकपुत्रं कृत्वा, अथ च तस्या एव पुत्राय[1] सर्व्ववस्तुनस्तमलिकनामा अर्थात् दानपत्रं लिखित्वा दत्तवती स्यात्, तथापि मृततद्व्यक्तेर्द्वितीयपत्नीकृतदानपत्रानुसारेण तद्गर्भजकन्यापुत्रयोः केवलयोर्मृतव्यक्तेः प्रथमपत्नीगर्भजकन्यापुत्रम(न)पेक्ष्य तस्मिन् सर्व्ववस्तुनि स्वामित्वं न सम्भवति, किन्तु सर्व्वेषामेव मृतव्यक्तेः प्रथमपत्नीगर्भजकन्यापुत्रस्य तथा द्वितीयपत्नी-

---

[1] अत्र च तस्या एव पुत्रायास्तस्यै सर्व्व०—अप० ।

गर्भजकन्यापुत्रयोस्तुल्याधिकारित्वात्, उत्तरोत्तराधिकारिक्रमबोधकशास्त्रे दौहित्रविरोधाश्रवणात् पत्यनुमतिव्यतिरेकेण स्त्रीकृतस्य कन्यापुत्रस्यानर्थीनकरणस्यार्थाद्दत्तककरणस्य, तथा स्वपतित्यक्तस्थावरास्थावरसर्व्ववस्तुनः स्वगर्भजकन्यायाः पुत्रद्वयसम्प्रदानकदानपत्रकरणस्य च शास्त्रासम्मतत्वाच्च—इति, काशीप्रदेशचलितदत्तकमीमांसा-मिताक्षरा-वीरमित्रोदय-कृत्यकल्पतरु-विवादचिन्तामणि-प्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था।

अत्र प्रमाणम्—

दुहित्रभावे दौहित्रो धनभाक्—इति मिताक्षरा(पृ० २२१)वीरमित्रोदय(पृ० ६६१)ग्रन्थलिखनम् ॥ १ ॥

अपुत्रेण सुतः कार्यो यादृक् तादृक् प्रयत्नतः ।
पिण्डोदकक्रियाहेतोर्नामसङ्कीर्त्तनाय च ॥—इति दत्तकमीमांसा-(पृ०५) धृतमनुवचनम्[1] ॥ २ ॥

अपुत्रे(ऐ)ति पुंस्त्वश्रवणात् न स्त्रिया अधिकार इति गम्यते इति ।
अत एव वशिष्ठः—

न स्त्री पुत्रं दद्यात् प्रतिगृह्णीयाद्वा अन्यत्रानुज्ञानाद्भर्त्तुः—इति दत्तकमीमांसा(पृ० ७) विवादचिन्तामणि कल्पतरुप्रभृतिग्रन्थधृतवशिष्ठवचनम् ॥ ३ ॥

अनेन विधवाया भर्त्रनुज्ञानासम्भवादनधिकारो गम्यते—इति तद्ग्रन्थ-(दमी० पृ० ७)लिखनम् ॥ ४ ॥

भारते (१३।४७।२४)*स्त्रीणां स्वपतिदायस्तु उपभोगफलःस्मृतः ।*
नापहारं स्त्रियःकुर्युः पतिवित्तात् कथञ्चन ॥

अपहारमैच्छिकदानविक्रयादिकम् ।—इति विवादचिन्तामणि(पृ० २३८)ग्रन्थलिखनम् ॥ ५ ॥

अपुत्रा शयनं भर्त्तुः पालयन्ती गुरौ स्थिता ।
भुञ्जीतामरणात् क्षान्ता दायादा ऊर्द्ध्वमाप्नुयुः ॥—इति विवादरत्नाकर (पृ० ५११) कृत्यकल्पतरुवीरमित्रोदयादि(वीमि० पृ० ६२७)ग्रन्थधृतकात्यायन(कास्मृ० पृ० ११२)वचनञ्चेति ॥ ६ ॥

---

१. विचि० पुस्तके वचनमिदं न प्राप्तम्। २. वचनमिदं मनुस्मृतौ नोपलभ्यते।

जुनमासीयसप्तदशदिनसम्बन्धिगुरुवासरे घटिकाचतुष्टयाधिकयामद्वये
-दत्तेयं मया व्यवस्था।

श्रीर्जयतितराम्
श्रीहीरानन्दमिश्रेण

९५—रोबकारि मिसिल आदालत देखोनि सदर तारिख २१ माह आगस्त सन १८३० इं० मतावक ६ माह भाद्र सन १२३१ बाङ्गला रोज शनियार ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत आलक सुन्दर दास साहेवेर बैठके।

कन्दर्पसिंह मोफरोल— आपिलाण्ट।

मृत राजामोहनलालखाँर स्त्रीगण राणी सुगन्धलता ओ राणी वङ्गलताप्रभृति— रस्पाण्डण्टान्।

आपिलाण्टेर उकिलगण मुनसि ददारवकस् ओ मौलवि करम होसेन ओ स्वयं आपिलाण्ट ओ रस्पाडण्टगणेर उकिलगण मुनसि होसेनआलि ओ मुनसि गोलामवतुल ओ सदासुकपण्डित हाजिर आसिल। ए मकर्द्दमा एलाका कलिकातार प्रबिनशल कोर्टेर हिंटरण पौंचन मते ए मासेर १४ तारिखे आमार निकट पुनराय उपस्थित हइया ऐ तारिखेर रोबकारिर लिखित कागज-सकल पढागिया स्थगित छिल, अद्य पुनराय रोबकार हइया प्रबिनशल कोर्ट आदालतेर बाकी कागजात् ओ ए आदालते दाखिल हओया कागजसकल पढागेल। ए मकर्द्दमार कागज-सकल ओ मोहनलालखाँ आपिलाण्ट ओ राणी शिरोमणि रस्पा-ण्डण्टेर ९५८ न० मकर्द्दमा ओ रूपचरणमहापात्र मोफरोल आपि-लाण्ट आनन्दलालखाँएर भ्राता मोहनलालखाँ रस्पाडण्टेर ९५८ नं मकर्द्दमा वावत् ए आदालतेर फयशालासकलेर द्वारा आमार साव्यस्त हइल—ये राजा अजित्सिंह ओ राणी शिरोमणिर वंशे

दायभागशास्त्र चलित वटे, ओ ऐ शास्त्र ऐ फयशलास्कलेर अनुसारे राजा अजित्सिंहेर स्त्री राणि शिरोमणिर मृत्युर पर, ये ऐ राजार त्यक्त जमिदारिर उपर उत्तराधिकारि प्रकारे दखिलकार छिल, राजा अजित्सिंहेर मातुलपुत्रगण उहार बलवान उत्तराधिकारि ओ उत्तराधि(कोर)प्रकारे उहार मतरुकार स्वत्वाधिकार घटे। ओ इहा येओ स्पष्ट—ये मोहनलालखाँएर भ्राता आनन्दलालखाँ नामिक राणि शिरोमणिर लिखिया देओया हेवानामा, ताहाते राजा अजितसिंहेर उत्तराधिकारिगणेर अनुमति ना पाओने असिद्ध ओ मिथ्या हइयाछे, ओ रूपचरण आपिलाण्ट ओ मोहनलालखाँ रेस्पाडण्टेर मकर्द्दमाय, ये आपिलाण्ट आपनाके लदमणसिंहेर भ्राता श्यामसिंहेर सन्तान करार दिया विरोधीय जमिदारिर कारण नालिश करियाछिल। दाखिल हओया व्यवस्था द्वाराय याहेर ये राणि शिरोमणिर मृत्युर पर यदि राजा अजित्सिंहेर कोन निकटस्थ उत्तराधिकारि ना थाकित, राजा अजित्सिंहेर मतरुकाते रूपचरणमहापात्रेर उत्तराधिकारि स्वत्व हइत। ओ एइ क्षण कन्दर्पसिंह लदमणसिंहके राजा अजित्सिंहेर आदिपुरुष ओ आपनाके ओ सप्तमपुरुषीय स्वगोत्र बलिया उत्तराधिकारिरूपे विरोधीय वस्तुर दाविदार वटे, ओ आपिलाण्टेर दाखिल करा कुरसिनामा ओ रूपचरणमहापात्र आपिलाण्टेर मकद्दमार आमलि ११८८ शालेर भाद्रमासेर १५ तारिखेर लिखित राणि शिरोमणिर दाखिल करा कुरसिनामा ओ मोहनलालखा आपिलाण्ट राणि शिरोमणि रेस्पाडण्टर मकर्द्दमार दाखिल हओया ऐ राणिर दरखास्तेर नकल द्वाराय जाना याइतेछे ये कन्दर्पसिंह आपिलाण्ट ओ लदमणसिंह आदिपुरुषेर सहित नवम पुरुष ओ अजितसिंह लदमणसिंहेर सहित सप्तम पुरुष वटे। ओ दुइ व्यक्तिर तपसिल एइ ये।

आदि पुरुष लदमणसिंह

तस्य पुत्र पुरुषोत्तम

	प्रतापनारायणमहापात्र
ज्येष्ठ पुत्र संग्राम	द्वितीय तस्य पुत्र सुबुद्धि
तस्य पुत्र रघुनाथ	तस्य पुत्र दुर्योधन
तस्य पुत्र रामसिंह	तस्य पुत्र रसिक
तस्य पुत्र यशोमन्तसिंह	तस्य पुत्र वैष्णवचरण
तस्य पुत्र अजितसिंह	तस्य पुत्र समिर
	तस्य पुत्र कन्दर्पसिंह

ओ विरोधीय वस्तुर दखिलकार राजा मोहनलालखा राजा अजितसिंहेर सकल मातुलपुत्रगणेर लिखिया देय। नादावि द्वाराय आपनाके विरोधीय जमिदारिर स्वत्वाधिकारिर करार देय। अतएव शास्त्र द्वाराय एइ कथार तहकिकात्—ये मातुलपुत्रगणेर लिखिया देओया नादावि सुद्दे, अर्थात् आपिलाण्टर, दाविर निषेधीय हइते पारे किना, आवश्यक बोध हइया, हुकुम हइल ये एइ रोवकारिर नकल रूपचरणमहापात्र आपिलाण्ट मोहनलालखा आपिलाण्ट राणि शिरोमणि रेस्पाण्डेण्ट ओ मोहनलालखा आपिलाण्ट राणि शिरोमणि रेस्पाण्डेण्ट सहित एइ डिष्ट्रिक्टेर मकद्दमार दाखिल हओया व्यवस्थासकल सहित एइ हुकुमे ए आदालतेर पण्डितेर हाओलात करा याय ये ताहार हुकुमे ए आदालतेर पण्डितेर हाओलात करा याय ये ताहार हइते राजा अजितसिंहेर वंशेर चलित दायभागशास्त्रानुसारे नीचेर लिखित सओालेर जवाब सओयाल पाओनेर तारिख हइते चारि दिवसेर मध्ये दाखिल करे।

सओया(ल)—ऐ व्यवस्थासकल ओ ऐ मकद्दमासकलेर बाबत् ए आदालतेर फयशालासकलेर द्वाराय साव्यस्थ आछे ये राजा अजितसिंहेर वंशेर चलित दायभागशास्त्रानुसारे राजा अजितसिंहेर स्त्री राणी शिरोमणिर मृत्युर पर ऐ राजा ओ राणिर त्यक्त विरोधीय वस्तु राजा अजितसिंहेर मातुलपुत्रगणके, ये ताहार बलवान् उत्तराधिकारि बटे, अर्शिबेक, ओ ताहारा ताहार स्वत्वाधिकारि बटे; ओ ताहादिगेर समीदये सगोत्र उत्तराधिकारि हइबेक ना; ओ कागजातेर द्वाराय साव्यस्थ ये ए आदालतेर

पूर्व्व पण्डितगणेर व्यवस्थासकल ओ फयशलासकलेर द्वाराय राणि शिरोमणिर मृत्युर पर मातुलपुत्रगण आपन विरोधीय वस्तुर स्वत्त्वाधिकार थाकनेओ, विरोधीय वस्तुके मोहनलालखाँ-यर दखले छाड़िया दिया, ताहार नादावि लिखिया दियाछे। अतएव जिज्ञासा याय ये नादावि लिखिया देओनिया मातुल-पुत्रगण, ये राणी शिरोमणिर मृत्युर पर राजा अजितसिंहेर बल-वान् उत्तराधिकारी ओ विरोधीय जमिदारिर स्वत्त्वाधिकारि वटे, अजितसिंहेर अतिवृद्धप्रपितामहेर भ्रातार सन्तान, ये स्व-गोत्र वटे, थाकनेओ ऐ सकल वस्तु हइते आपनादिगेर एक्कारे किछु ना राखिया, किम्वा श्राद्ध ओ आपनादिगेर निर्व्वाहार्थे ताहा हइते किछु राखिया, मोहनलालखाके, ये भिन्न व्यक्ति वटे, विरोधीय वस्तुर नादावि लिखिया देओयार क्षमता राखे कि ना, ओ ऐ नादावि आपिलाण्टेर स्वत्वेर ये स्वगोत्र वटे अपचय कारक हइवेक कि ना इति।

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतआलकसुन्दररासराहेवधर्म्माधिकरण-लिखितशराभाष्टेन्दुमिताब्दीयागस्तमासीयैकविंशतिदिवसीयविचारपत्रान्तर्ग-तप्रश्नपत्रमेवमेतद्विवादनिविष्टपत्रजातान्तर्गतात्रत्यपूर्व्वधर्म्माधिकरणलिखित-द्वीन्द्वष्टेन्दुमिताब्दीयजनवरीमासीयद्वाविंशतिदिवसीयविचारपत्रसंवलितव्यव-स्थापत्रद्वयञ्च यदेतदब्दीयागस्तमासीयत्रिंशतिदिनसम्बन्धिशुक्रवासरे न-यमिनयाधिकयामद्वये मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारे-णोत्तरं लिख्यते।

राज्ञिशिरोमण्या मरणोत्तरं राज्ञोऽजितसिंहस्य बलवदुत्तराधिकारिवि-वादास्पदीभूतसराजकरस्थावरस्वत्वाधिकार्य्यनभियोगपत्रलेखकमातुलपुत्रकर्त्तृ-काजितसिंहस्य सगोत्रवृद्धप्रपितामहभ्रातृपुत्रसन्ताने वर्त्तमान एव सति तस्मात् सराजकरस्थावरात् स्वार्थं किञ्चिदप्यरक्षित्वाऽथवा श्राद्धार्थं तथा स्वीयनिर्व्वाहार्थं तस्मादेवसराजकरस्थावरात् किञ्चिद्रक्षित्वोदासीनमोहनलाल-खाँसम्प्रदानकविवादास्पदीभूतवस्त्वनभियोगपत्रदाने यद्यपि तस्मात्सराजकर-

स्थावरात् किञ्चिदप्यर्पयित्वेति[1] कल्पे शास्त्रसिद्धवृत्तिलोपात्मकत्वेन मृतधनिव्यक्तेरजितसिंहस्य श्राद्धार्थमदेयस्याऽर्पणत्वेन तथान्वयसत्त्वप्रयुक्त[2]-निषिद्धसर्वस्वदानत्वेन लोकविरुद्धत्वादिना च सत्यसत्यपि वाऽर्थिन्येतादृश-सराजकरस्थावरविषयकानभियोगपत्रदानस्य शास्त्रानुसारित्वं नास्ति, तथापि राजाऽजितसिंहवंशप्रचलितदायभागानुसारेण तु तैर्ज्ञानानुसारेण स्वेच्छापूर्वक-सम्मत्या दानसिद्धिसाधनबलभीतिविह्वलादिविरहेण[3] पुत्रादिसम्मत्या च स-त्यपि राज्ञोऽजितसिंहस्य सगोत्रे वृद्धप्रपितामहभ्रातृष्पुत्रसन्ताने उदासीन-मोहनलालखाँसम्प्रदानकैतादृशसराजकरस्थावरविषयकमप्यनभियोगपत्रं दातुं शक्यते, राज्ञोऽजितसिंहस्य बलवदुत्तराधिकारिमातुलपुत्राणां राज्ञोऽजि-तसिंहस्य वृद्धप्रपितामहभ्रातृष्पुत्रसन्तानस्यार्थिन उदासीनसदृशत्वेन तस्य तन्मातुलपुत्रकर्तृकानभियोगपत्रदाने प्रतिबन्धकत्वात्, तादृशस्य च वि-वादास्पदीभूतसराजकरस्थावरस्य तेषां तन्मातुलपुत्राणां दायरूपत्वाद्दाय-रूपेण तस्मिन् स्वाच्छन्द्यस्य लोकप्रसिद्धत्वात्। परन्तु एतच्छास्त्रानुसारेण दातुर्दोषो भविष्यति। तस्मात् किञ्चिद्दत्त्वेति कल्पे श्राद्धार्थं तत्सराजकर-स्थावरस्यार्द्धं तथा तस्मादेव स्थावरात् स्वपोष्यवर्गभरणार्द्धं धनं रक्षित्वा तु ज्ञानानुसारेण स्वेच्छापूर्वकसम्मत्या बलभीतिविह्वलादिविरहत्वेन पुत्रादि[4]-सम्मत्या च स्वाच्छन्द्येनोदासीनमोहनलालखाँसम्प्रदानकमनभियोगपत्रं दातुं शक्यते। यदि च किञ्चिदित्यनेन मानवर्द्धनमात्रं रक्षितं तथापि पूर्व्वो-क्तज्ञानानुसारेणेत्यादितद्दानरीत्यान्यसम्प्रदानकमपि तद्दातुं शक्यते; परन्त्वे-तद्वचनस्याप्यरक्षणसमत्वेन दातुर्दोषो भविष्यति। राज्ञोऽजितसिंहस्य बल-वदुत्तराधिकारिमातुलपुत्रकर्तृकाजितसिंहस्य त्यक्तस्वदायरूपसराजकरस्थाव-रविषयकोदासीनमोहनलालखाँसम्प्रदानकानभियोगपत्रदानेनाजितसिंहस्य स-गोत्रवृद्धप्रपितामहभ्रातृष्पुत्रसन्तानस्यार्थिनोऽपचयो नास्ति, तत्पूर्वमुपचया-भावात्तन्मातुलपुत्रसत्त्वे सगोत्रस्य तस्य स्वत्वाभावात्—इति तद्वंशप्रचलित-दायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था।

---

१ ०स्वे सति—व्या० । २ ०प्रय०—व्यय० ।
३ ०सिद्धिसाधन०—व्या० । ४ पुत्रग्रामादि०—व्या० ।

अत्र प्रमाणम्—

ये जाता येऽप्यजाताश्च ये च गर्भे व्यवस्थिताः।

वृत्तिं तेऽपि हि काङ्क्षन्ति वृत्तिलोपो विगर्हितः॥—इति (दाभा० २४)मनुवचनम्[1] ॥ १ ॥

समुत्पन्नाद्धनादर्द्धं[2] तदर्थं[3] स्थापयेत्पृथक्।

मासंपाण्मासिके श्राद्धे वार्षिके च प्रयत्नतः॥—इति दायभाग(पृ० २०६।२१०)धृतबृहस्पति(पृ० २१६)वचनम् ॥ २ ॥

निःक्षेपः पुत्रदारांश्च सर्वस्वश्चान्वये सति।

आपत्स्वपि हि कष्टासु वर्त्तमानेन देहिना॥

अदेयान्याहुराचार्याः—इत्यादि विवादभङ्गार्णव(पृ० १-पृ० ४२१ ए)धृतनारद(नास्मृपृ० १३७)वचनम् ॥ ३ ॥

बलाद्दत्तं बलाद्भुक्तं बलाद् यच्चापि लेखितम्।

सर्वान् बलकृतानर्थानकृतान्मनुरब्रवीत्॥—इति मनु(पृ० १६८)-वचनम् ॥ ४ ॥

स्वग्रामज्ञातिसामन्तदायादानुमतेन च।

हिरण्योदकदानेन षड्भिर्गच्छति मेदिनी।—इति दायतत्त्व(पृ० १७६)धृतमुनिवचनम् ॥ ५ ॥

पूर्वस्वामिसम्बन्धाधीनं तत्स्वाम्योपरमे यत्र (द्रव्ये) स्वत्वं तत्र निरू-ढो दायशब्दः—इति दायभाग(पृ० ५)ग्रन्थलिखनम् ॥ ६ ॥

भरणं पोष्यवर्गस्य प्रशस्तं स्वर्गसाधनम्।

नरकं पीडने तस्य[3] तस्माद् यत्नेन तं भरेत्॥—इति दायभाग(पृ० ३३)ग्रन्थधृतमनुवचनम् (?) ॥ ७ ॥

केवलं शास्त्रमाश्रित्य न कर्त्तव्यो विनिर्णयः।

युक्तिहीनविचारे तु धर्महानिः प्रजायते॥—इति व्यवहारतत्त्व-(पृ० ४)धृतबृहस्पति(पृ० १९)वचनम् ॥ ८ ॥

---

१. व्यासवचनमिति हारीतवचनमिति वा पठनीयम्।—तत्र च चतुर्थे पादे—वृत्तिदान न सिध्यति—इति हारीतपाठः, न दानं न च विक्रयः—इति व्यासपाठः। २. तदर्धं—दाभा०।

३. चास्य—दाभा०।

स्वभागान् यदि दद्युस्ते विक्रीणीयुरथापि वा ।
कुर्य्युर्यथेष्टं तत्सर्वमीशास्ते स्वधनस्य वै ॥—इति दायभाग(पृ० ३५)-धृतनारद(नामसं० पृ० १५७)वचनम् ॥ ६ ॥

व्यासवचनं तु (स्वामित्वेन दुष्टं चपुरुषगोचरविक्रयदानादिना)[1] *कुटुम्बविरोधादधर्मभागिताज्ञापनार्थं निषेधरूपं न तु विक्रयाद्यनिष्पत्त्यर्थम्*—इति तत्करणाद्विध्यतिक्रमो भवति, न तु दानाद्यनिवृत्तिः—इति च दायभाग(पृ० ३४-३५)ग्रन्थलिखनम् ॥ १० ॥

तदभावे मातुलपुत्रपौत्राणां क्रमेणाधिकारः तदभावे चाधस्तनसकुल्यानां धनिभोग्यलेपदातॄणां प्रतिप्रपौत्रप्रभृतिपुरुषत्रयाणां क्रमेणाधिकारः । तदभावे पुनरूर्ध्वतनसकुल्यानां धनिदेयलेपदातॄणां' *वृद्धप्रपितामहादिसन्ततीनामासत्तिक्रमेणाधिकारः*—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकाग्रन्थ(पृ० २१८)लिखनञ्चेति ।

शैतमरमासीयषष्ठदिनस्थवर्त्तिभौमवासरे सार्द्धघटिकद्वयाधिकयामद्वये दत्तेयं मया व्यवस्था ।

श्रीर्ज्जयपतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

९६—सओयाल आदालत देओयानी कमिसनरी आतराफ मुसरफ जिला रङ्गपूर बनामे पण्डितान् सदर देओयानी आदालत सन् १८३० इंरेजी तारिख १० जुन मोताबक १२३७ बाङ्गला तारिख २९ ज्यैष्ठ ।

विष्णुराम	मुद्दइ
	पापड
धीरचन्द्रवडुया जमिदार	मुद्दायाले
परगणे घूण्णी ओ गयरह	दावि १५०० टाका

१. धनिदेयलेपदातॄणां वृद्धप्रपितामह०—स्व० ।

वावत् लञ्जोयावाद
फउरि[1] परगणार उपस्वत्वे

मुद्दे मजकुर आपन मातुल मेघनारायण चोधुरिर विस्तेर पर दखिलकार थाका, आर मुद्दायाले परगणा मजकुरेर कएक मौजा जबरदस्तीते दखल करा एजहारे उपरेर लिखित मयलग मजकुरेर दायाते मुद्दायालेर नामे नालिष करे। तजविज् कालीन जाना-गियाछे—ये शिवनारायण नामे एक व्यक्ति परगणे लञ्जोयावाद फञ्जोरिर जमिदार छिल। ताहार मृत्यु हओयार पर तस्य पुत्र शम्भुनारायण आपन पितृवित्ते दखिलकार हइया निःसन्तान रूपे मृत्यु हय। ए मयुक्त शिवनारायणेर दौहित्र मेघनारायण ऐ स्थावर विस्तेर अधिकारी हइयाछिल। कथक दिवस पर से निःसन्तान मृत्यु हइयाछे। मुद्दे मेघनारायण मजकुरेर भागिनेय हय। से मते सओयाल करा जाइतेछे—ये मेघनारायण निः-सन्तान मृत्यु हओयाते शिवनारायणेर स्थावर वस्तुते, ये ताहार पुत्रे अधिकारी हइया परे मेघनारायणेर हस्तगत हय, शास्त्रा-नुसारे मुद्दे ताहा पाओयार स्वत्ववान् हय कि ना। यदि मुद्दे के ना अर्शे एवं मेघनारायणेर अथवा ताहार पूर्वाधिकारीर उत्तरा-धिकारी केह नाथाके, तवे ऐ स्थावर वस्तु काहाके अर्शिते पारे इति।

प्रभुसमर्पितप्रश्नार्थं यदेतदन्दीयमुलाइमाशोयरशामदिनसम्बन्धिचोन-धारे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

यद्यपि शिवनारायणस्य मृतस्य तस्यकस्वसम्बन्धिस्थावरवस्तुनि शिव-नारायणस्य पुत्रः शम्भुनारायण उत्तराधिकारित्वेनाधिकारं संप्राप्य निःसन्तान एव स्वर्गतः, तदनन्तरं तद्भागिनेयो मेघनारायणस्तदेव वस्तु हस्तगतं (सं)देद निःसन्तानो मृतस्तथापि तन्मरणोत्तरं वङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारे-स्माद्यन्मेघनारायणस्य भागिनेय एव तद्ग्रहणे स्वत्ववान् भवति—यत उप-रिलिखितशास्त्रे मृतव्यक्तेर्भ्रातुष्पौत्रपर्यन्तोत्तराधिकार्य्यभावे तस्यकथने

[1] फउरि—न्या०

पितृदौहित्रस्यार्थान्मृतव्यक्तेर्भागिनेयस्याधिकारोऽभिव्यक्तोऽतः सुतरां मृतव्यक्तेस्तद्व्यतिरिक्तो उत्तराधिकारिसामान्याभावस्य तथा मृतव्यक्तेः पूर्वाधिकारिणोऽर्थाच्छम्भुनारायणस्योत्तराधिकारिसामान्याभावस्य च सद्भावात्-इति वङ्गदेशप्रचलितदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकादायक्रमसंग्रहविवादभङ्गार्णवविवादार्णवसेतुप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

किन्तु पितुरपि प्रपौत्रपर्यन्ताभावे पितृदौहित्राधिकारो बोद्धव्यः—इति दायभाग(पृ० २०८)ग्रन्थलिखनम् ॥ १ ॥

तदभावे पितृदौहित्रः-इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभाग(पृ० २१८) ग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

भ्रातृपौत्रस्याभावे पितृदौहित्रस्याधिकारः, तत्पित्रादित्रयपिण्डदातृत्वात्—इति दायक्रमसंग्रहादि(पृ० ७)ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥ ३ ॥

अगस्तमासीयदशमदिनसम्बन्धिभौमवासरे घटिकैकाधिकयामद्वये दत्तेयं मया व्यवस्था इति—

श्रीश्रीर्जयतितराम्
श्रीहीरानन्दमिश्रेण

सदर देओयानि आदालतेर पण्डितेर प्रति प्रश्नः—

९७—सओयाल :-एक व्यक्ति युगि परामाणिकी मर्य्यादार कउडिर दाबि करे। अतएव एमत् प्रकार मर्यादार कउडि देया ओ लओया शास्त्रसम्मत कि; उहादिगेर जातिर ओ समाजस्थ लोकेरा स्वेच्छाते विभाग हय-इहार प्रत्युत्तर यथाशास्त्र लिखिबा इति।

अत्र कश्चिद्योगी व्यक्तिविशेषः परामाणिकीमर्य्यादासम्बन्धिकपर्द्दिकादानैकद्रव्यविषयकस्वत्वाभियोगं कुर्य्यात्, तत्र यद्यपि विशेषेण युगोपुरुष्य मर्य्यादाद्रव्यस्य दानग्रहणे कुत्रापि शास्त्रे न लिखिते तथापि तत्र यदि तज्जातीये राजा वा केनचित् संविद्विशेषेणार्थात् समूहैः कैश्चिद्वा कृतसङ्केतेन

समूहकार्यचिन्तनादर्थः प्रधानत्वेन व्यवस्थाप्य वृत्तिरुपकल्पिता, अथवैवं तज्जातीयानां पारम्परिकाचारोऽपि वा भवेत्, अथवा तज्जातीयानां तच्छ्रेणीनां वा धर्म्मो भवेत्, तदेतादृशद्रव्यस्य दानादानयोस्तज्जातितच्छ्रेणितत्समूहस्य वा व्यवहारसिद्धत्वात् तद्दानादानयोर्निष्प्रत्यूहमेव शास्त्रसिद्धत्वम्, यतो यच्छ्रेणीनां यज्जातीयानां वा यथापूर्व्वापरव्यवहारस्तदनुसारेण यस्मिन् विषये विशेषतः शास्त्राज्ञा नास्ति तस्मिन् विषये तच्छ्रेणीनां तज्जातीयानां वा यथा पूर्व्वापरव्यवहारस्तदनुसारेणैव निर्णयस्य शास्त्रसम्मतत्वात्— इति यद्वदेशाचलितमनुदायभागव्यवहारतत्त्वव्यवहारमातृकाविवादचिन्तामणिविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

परन्त्वेतद्विवादमूलन्तु दर्शितपरमार्थिके रामकृष्णनयनयोः सहोदरत्वम्, तथा च प्रभुसमर्पितेतद्विवादनिविष्टप्रमाणान्तर्गतार्थिप्रत्यर्थिसम्मतसाक्षिभाषापप्रमाणान्तरचिह्नोऽपि कश्चिदासीत्, अनयोरर्थाद्रामकृष्णनयनयोर्भ्रातेति नावगम्यत इति तु विभावनीयम्—

अत्र प्रमाणम्—

तथा च यस्य कस्यचिद् गणस्य या संवित् सैव प्रतिपाल्या । तेन नापितादीनां प्रामाणिकत्वेन ख्यातस्य वचनातिक्रमे दोषो व्यवहारसिद्धः समनुच्छते—इति विवादभङ्गार्णवग्रन्थलिखनम् ॥ १ ॥

यो धर्म्मः कर्म्म चैवैषामुपस्थानविधिश्च[1] यः ।

यच्चैषां वृत्त्युपादानमनुमन्येत तत्तथा ॥ (नारद० १३।३)

धर्म्मः पारम्परिकाचारः कर्म्म जीवनानुकूलोचितव्यापारः वृत्त्युपादानमुपादीयमाना वृत्तिः—इति (विवाद)रत्नाकरः (पृ० १७९) ।

अनुमन्येत राज्ञा इति शेषः । तथा चैषां पारम्परिकाचारादीन् कोऽप्यन्यथाकर्त्तुं न शक्नुयात् इत्यभिहितम्—इति च तद्ग्रन्थलिखनम् ॥२॥

जातिजानपदान् धर्म्मान् श्रेणीधर्म्मांश्च धर्म्मवित् ।

समीक्ष्य कुलधर्म्मांश्च स्वधर्म्मं प्रतिपादयेत् ॥—इति मनु(पृ० २८१)वचनम् ॥ ३ ॥

---

१ कर्म यच्चैषाम्०—नार० ।

व्यवहारोऽपि बलवान् धर्म्मस्तेनावहीयते—इति व्यवहारमातृका-(पृ० २८२)व्यवहारतत्त्वादि(पृ० ४)ग्रन्थधृतनारद(नामसं० पृ० ८)वचनम् ॥ ४ ॥

केवलं शास्त्रमाश्रित्य न कर्त्तव्यो विनिर्णयः ।
युक्तिहीनविचारेण धर्म्महानिः प्रजायते ॥—इति व्यवहारमातृका-(पृ० २८२)वीरमित्रोदयादि(वीमि० ख-१८)ग्रन्थधृतबृहस्पति(पृ०१६)-वचनम् ॥ ५ ॥

युक्तिर्लोकव्यवहारः—इति व्यवहारमातृका (पृ० २८२)-व्यवहारतत्त्व(पृ० ४)ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥ ६ ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीहीरानन्दमिश्रेण

४२—नं खास आपिल । सन १८२६ शाल ई० सदर देओयानि आदालतेर पण्डितेर प्रति सओयाल ।

९८—यद्यपि कोन व्यक्ति दुइ पुत्र राखिया लोकान्तर हय, आर ऐ दुइ पुत्रेर मध्ये एक जन महाव्याधिग्रस्त ओ अपुत्रक, ओ द्वितीय जन सुस्थशरीर थाके, तबे पितार धने ऐ दुइ पुत्र अधिकारी हय कि ना । आर ऐ महाव्याधिग्रस्त व्यक्ति आपन अंशेर दान विक्रयेर क्षमता राखे कि ना । शास्त्रानुसारे इहार व्यवस्था लिखिबा । सन १८३० शाल, तारिख १० जुन ।

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं यदेतदब्दीयजुलाइमासीयपञ्चदशदिनसम्बन्धिगुरुवासरे घटिकैकाधिकयामद्वये मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यद्यपि कश्चिद्व्यक्तिविशेषः पुत्रद्वयं (स)रक्ष्य स्वर्गलोकमगमत् । एकश्च[1] तयोर्द्वयोः पुत्रयोर्म्मध्ये एको महाव्याधिग्रस्तः, अथ च निःसन्तानो द्वितीयश्च स्वस्थशरीरो भवेत् तथापि पितृत्यक्तधने निरुपाधिकपुत्र एक एवाधिकारी, नहि महाव्याधिग्रस्तशरीरोऽपि, यतः शास्त्रेऽन्धत्वपङ्गुत्वक्लीबत्वा-

---

१० अन्यत्र—ब्यरा० ।

दिनानोपाध्याव्यतनोः भक्ताच्छादनातिरेकेण धनांशाभावप्रतिपादनात् । सिद्धे चांशाभावे सुतयां तद्दानविक्रययोः क्षमताभावः–इति वङ्गदेशाचलित-मनुदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकादायक्रमसंग्रहविवादभङ्गा-र्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

क्लीबोऽथ पतितस्तज्जः पङ्गुरुन्मत्तको जडः ।

अन्धोऽचिकित्स्यरोगाद्या भर्त्तव्याः स्युर्निरंशकाः ॥–इति दायभागादि-(पृ० १०२)ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य(२।१४०)वचनम् ॥ १ ॥

अनंशौ क्लीबपतितौ जात्यन्धबधिरौ तथा ।

उन्मत्तजडमूकाश्च ये च केचिन्निरिन्द्रियाः ॥—इति मनु(९।२०१) वचनम् ॥ २ ॥

मृते पितरि न क्लीबकुष्ठ्युन्मत्तजडान्धकाः ।

पतितः पतितापत्यं लिङ्गी दायांशभागिनः ॥

तेषां पतितवर्ज्जेभ्यो भक्तवस्त्रं प्रदीयते ॥–इति दायभाग (पृ० १०२) विवादभङ्गार्णव(२ विवा० पृ० २११ ख)दायतत्त्वादिग्रन्थ(दात० पृ० १७२)धृतदेवलवचनम् ॥ ३ ॥

अतीतव्यवहारान् ग्रासाच्छादनैर्बिभृयुः ।

अन्धजडक्लीबव्यसनिव्याधितादींश्चाकर्म्मिणः । पतिततज्जातवर्ज्जम्-इति दायभागादि(दाभा० पृ० १०२)ग्रन्थधृतबौधायनवचनञ्चेति ॥४॥

आगस्तमासीयैकविंशतिदिनसम्बन्धिशनिवासरे घटिकत्रयाधिकयामद्वये -दत्तेयं मया व्यवस्था—

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीहीरानन्दमिश्रेण

सदर देवोयानि आदालतेर पण्डितेर प्रति सओयाल— ९९—कालीप्रसादरायघोषाल–आपिलाण्ट–कोर्ट कालिकाता दुर्गाप्रसाद–रस्पाण्डण्ट–मार्ष्टसाहेव—

७—लम्बर। आपिल सन १८२७ साल—

यद्यपि एक व्यक्ति एक स्त्री ओ एक पुत्र ओ एक कन्या राखिया मृत्यु हय, आर ऐ पुत्र आपन माता ओ भगिनीर संमुखे अविवाहित लोकान्तर हय; ताहार पर ऐ कन्यार एक पुत्र जन्मिया आपन मातामही ओ मातार जीवद्दशाय ओ महाव्याधि ओ यक्ष्मा काश ग्रस्त हइया, एक स्त्री ओ दुइ कन्या राखिया, आपन मातार संमुखे मृत्यु हय। अतएव ऐ व्यक्ति ये ताहार लोकान्तर हइले, ताहार पुत्र आपन मातार संमुखे लोकान्त(र) हय, ताहार पितार उत्तराधिकारिरा थाकिते उहार स्थावरास्थावर धन काहाके अर्शे, एवं दौहित्रेर स्त्री ताहा पत्तनि पुत्ते विक्रय करिते पारे कि ना- शास्त्रानुसारे इहार प्रत्युत्तर भाषाय एइ सओयालेर पार्श्वे लिखिवेन। इति। सन १८३० शाल तारिख १५ जुलाइ।

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं यदेतदस्मदीयागस्तमासीयपञ्चमदिनसम्बन्धिगुरुवासरे घटिकाद्वयाधिकयामद्वये मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यद्यपि कश्चिद्व्यक्तिविशेषः एकां पत्नीमेकं पुत्रं कन्याञ्चैकां (सं)रक्ष्यैनं लोकमत्यजत्, अथ च स बालोऽपि मातृभगिन्योरग्रेऽविवाहित एव स्वर्लोकमगमत्, तदनन्तरञ्च तस्याः कन्यायाः पुत्रो भूत्वा स्वमातामहीमात्रोर्जीवद्दशावधिमहाव्याधियक्ष्माकासग्रस्तः[1] सन्नेव स्वमातुरग्रत्वमेकां पत्नीं द्वे च कन्ये (सं)रक्ष्य मृतः स्यात्, तथाप्यविवाहितस्य मृतस्य तस्य मातुर्यत्कान्ते स्थावरास्थावरधने, तस्यां मातरि मृतायां स्वमातामहीवर्त्तमानावधि वा कुष्ठयक्ष्माकासग्रस्तस्य पितृदौहित्रस्याधिकारो नास्ति, शास्त्रेऽचिकित्स्यरोगिणोऽनधिकारबोधनात्, यक्ष्माकासादिरोगेऽचिकित्स्यत्वस्यायुर्व्वेदसिद्धत्वात्, चिकित्सयाप्यनुपशमेन मरणपर्यन्तस्थायित्वाच्च, शास्त्रे कुष्ठिनोऽप्यनधिकारबोधनात्, कुष्ठयक्ष्माकासरोगग्रस्तस्य [illegible] सुतरामनधिकारः। यदन्यतरसत्त्वे अनधिकारस्तत्समुदायसत्त्वेऽनधिकारस्य लोकव्यवहारप्रसिद्ध-

[1] मातामहि॰—व्यप॰।

[2] यक्ष्माकासग्रस्त—व्यप॰।

त्वात् । एवञ्च सति तत्सत्त्वस्याप्यसत्त्वसमत्वाद्दौहित्रान्तपितृसन्तानाभावे पितामहसन्ताना(ना)मेवाधिकारो, न तु भगिन्यादीनाम् इति। मातुलधनेऽधिकारिणस्तु पत्न्याः कीदृशेऽपि पतिमातुलधनस्य विक्रये क्षमता नास्ति, पतिसत्त्वेऽसत्त्वेऽपि वा; स्वसंक्रान्तपतिस्थावरस्यापि स्त्रीकर्तृकविक्रयनिषेधोऽस्ति यतोऽतः सुतरां पत्युर्यद्धनेऽनधिकारः, तस्यास्तद्धने पतिद्वारमन्तरेणाधिकारित्वप्रतिपादकशास्त्राभावेनानधिकारित्वनिश्चयात्, अनधिकारिणो विक्रयासामर्थ्यस्य लोकप्रसिद्धत्वात्—इति बङ्गदेशचलितदायभागविवादभङ्गार्णवदायतत्त्वव्यवहारमातृकादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

क्लीबोऽथ पतितस्तज्जः पङ्गुरुन्मत्तको जडः ।

अन्धोऽचिकित्स्यरोगार्त्तो भर्त्तव्याः स्युर्निरंशकाः ॥—इति दायभागादि(दाभ पृ० १०२)ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य(पृ०२२६)वचनम् ॥१॥

अचिकित्स्यरोगः अत्र तत्समाधेययक्ष्मादिरोगग्रस्तः ।—इति मिताक्षरा(पृ० २२७)ग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

महारार्त्तं महाक्षीणमतीव(च) निपीडितम् ।

शूलगुल्मोदरञ्चैव यत्निमर्णं परिवर्जयेत् ॥—इति आयुर्वेदीयवचनम् ॥३॥

मृते पितरि न क्लीबकुष्ठ्युन्मत्तजडान्धकाः ।

पतितः पतितापत्यं लिङ्गी दायांशभागिनः ॥—इति दायभागादि-(पृ० १०२)ग्रन्थधृतदेवलवचनम् ॥ ४ ॥

किन्तु पितुरपि प्रपौत्रपर्यन्ताभावे पितृदौहित्रस्याधिकारो बोद्धव्यः धनिदौहित्रस्येव एवं पितामहप्रपितामहसन्ततेरपि दौहित्रान्तायाः पिण्डप्रत्यासत्तिक्रमेणाधिकारो बोद्धव्यः—इति दायभाग(पृ० २०८)ग्रन्थलिखनम् ॥ ५ ॥

पत्नी च भर्तृधनं भुञ्जीतैव, परं न नु तस्य दानाधानविक्रयान् कर्तुमर्हति—इति दायभाग(पृ० १७१)ग्रन्थलिखनम् ॥ ६ ॥

अपुत्रा शयनं भर्तुः पालयन्ती गुरौ स्थिता ।

भुञ्जीतामरणात् क्षान्ता दायादा ऊर्ध्वमाप्नुयुः ॥—इति च तद्ग्रन्थ-(दाभा०पृ० १७१)धृतकात्यायन(कास्मृ पृ० ११२)वचनम् ॥ ७ ॥

व्यवहारोऽपि बलवान् धर्मस्तेनावहीयते ।
युक्तिहीनविचारेण धर्महानिः प्रजायते ॥---इति व्यवहारमातृकाधृत

(पृ० २८२) वचनञ्चेति ॥ ८॥

द्विजम्बरमासीयाष्टमदिनसम्बन्धिबुधवासरे घटिकात्रयाधिकयामद्वये दत्तेयं मया व्यवस्था—

श्रीर्जयतितराम्
श्रीहीरानन्दमिश्रेण

१००—रोबकारि कोर्ट आपिल पलाके कलिकाता तारिख ५ माह मार्च्च सन १८३० इं मताबक २३ माह फाल्गुण सन १२३६ बाङ्गला रोज शुक्रवार ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत गेलब यटका मोएटरि माष्टर साहेबेर बैठके ।

मतालके जिलेय शहर
मुपम्मात चित्रादासी   शापला

इंराजी १८२९ सालेर शेतम्बर मासे दाखिल हओया साप-लार सओयाल । ऐ तारिखेर लिखित ए अदालतेर हुकुमानुसारे यजसाहेबेर पाठान कागजात ओ गङ्गागोविन्द तरपसानिर सओयाल ओ अनुमति ओ चन्द्रमुखिदास्यार मजाहेमदारगेर सओयालात ओ इं १८१२ शालेर नबम्बर मासेर १० ओ २४ तारिखेर लिखित ७४८ नम्बरेर मकद्दमा बाबत सदर देओयानि अदालतेर दुइ किता रोयकारि, ये ताहाते रामकुमारन्यायवाचस्पति आपिलाण्ट, कृष्णकिङ्करतर्कभूषण रेस्पाडण्ट छिल, ऐ आदालतेर पण्डितगणेर दुइ किता व्यवस्था ओ इं १८२५ शालेर माइ मासेर २ ओ ३० तारिखेर लिखित सदर अदालतेर २ किता रोवकारिर नकल ये ताहाते सापलार श्वशुर रामजय-साहा सापल छिल ओ सापलार वकिलगण रसिकलालदत्त ओ

शिवनारायणचट्टोपाध्यायेर अद्य दाखिल[1] पण्डितगणेर व्यवस्था सम्वलित अद्य ताहारदिगेर ओ गङ्गागोविन्दसेनेर उकिल रूपचन्द्रसेन ओ मजाहेमदाराणेर उकिल राजनारायणदत्तेर समीचे दृष्टे आसिल। जानागेल येगङ्गागोविन्दसेन म० ६६०० टाकार दाविते ये शाएलार पति रामलोचनसाहार इजारा लभ्य वावत ताहार तालुक निलम हइया उसुल हइयाछिल। ऐ: रामलोचनेर नामे नालिप करिया डिगरि हासिल करिया डिगरि जारिते डिगरिर देइनदारेर जायदाद करारे नीलेर कुटी ओ वास्तु वाटी प्रभृति वस्तुसकल निलाम कराइयाछे। ओ देइनदारेर पिता रामजयसाहार दरखास्त मते ऐ जायदादके आपन जायदाद जाहिर कराइया छिल। सदर देओयानि आदालत हइते ऐ निलाम वद्ध हइया ऐ सेन(?)प्रति नालिसेर अनुमति हय। तत परे ऐ सेनेर नालिष मते रामलोचनसाहा ओ ताहार पिता(र) नामे १ लम्बरे नीचेर कुटिर डिगरि ओ २ लम्बरे वास्तु वाटीर डिगरि जिलार आदालते हासिल हइल। ए आदालते ऐ जायदादसकल रामजयसाहार थाकन हेतुक जिलार दुइ डिगरि वद्ध हइल, ओ एइ क्षणे ऐ रामजयसाहार मृत्युर पर ऐ डिगरिदार रामजयसाहार त्यक्त समुदय वस्तु देइनदारेर स्वत्व करार दिया ताहा विक्रय द्वाराय डिगरि(र) टाका आदाय हओयार जन्ये जिलार आदालते[2] दरखास्त दाखिल करिलेक, ओ ताहार रोयकारिर हुकुम सादर हओनेर परे साएला एइ एजहारे एक किता दरखास्त दाखिल करिलेक ये रामजय मजकुर अनेक दिव(स) हइते आपन पुत्र रामलोचनके आज्ञावाहक ना थाकन प्रयुक्त पुत्रत्व हइते दूर करियाछे। रामलोचन मजकुर पितार वस्तु हइते नैरास हओनेर पर मेहनत ओ मशामत ओ इजारा प्रभृति द्वाराय दिन जापन करित, ओ वाङ्गला १२३५ शालेर १६ वैशा-

---

१ अद्य दाखिल अद्य प०—व्यप०।   २ आदालतेर—व्यप०।

ये रामजय मजकुर आपन वृद्धावस्थार दृष्टे साएलार नावालक पुत्रेर, ये उहार पौत्र बटे, ओ प्रतिपालन ओ तरवियतेर करा आपन स्वकृत समुदय स्थावर ओ अस्थावर वस्तु साएलाके हेवा करियाछे। जिलार यजसाहेब ऐ हेवा सिद्धि कि असिद्धि-ताहा सदर देओयानि आदालतेर पण्डितगण हइते ज्ञात हओनार्थे ऐ आदालते आपन रोयकारि पाठाएन। सदर आदालतेर पण्डितगणेर व्यवस्था पौंछिल। परे ऐ हेवानामाके असिद्ध ज्ञान करिया ऐ जायदाद विक्रयेर हुकुम एइ हेतुते सादर करिलेन-ये रामलोचन-साहा व्यतित मृत रामजयसाहार अन्य सन्तान नाइ। अतएव ताहार स्वत्वार प्रमाण तलव करार आविश्यक हइल ना। ओ रामकुमारन्यायवाचस्पतिर मकद्दमा वावत सदर आदालतेर इनफशालि रोयकारिर नकलेर द्वाराय जानागेल ये ऐ मकद्दमाते ऐ आदालतेर हाकिमगणेर मध्ये हुजुर हइते पण्डितगणेर निकट ए विषयेर सओयाल हइल—ये यद्यपि कोन ब्राह्मण ज्येष्ठ पुत्र विद्यमान राखिया थाकते आपन पैतृक ओ स्वकृत स्थावर ओ अस्थावर समुदय विषय कनिष्ठ पुत्रके दान करे, से दान वङ्गदेशप्रचलित शास्त्रानुसारे सिद्ध बटे कि ना।

ऐ आदालतेर पण्डितगण ताहार जवावे लिखिलेन—ये यद्यपि कोन ब्राह्मणजाति ज्येष्ठपुत्र वर्त्तमान थाकतेओ पैतृक ओ स्वकृत समुदाय स्थावर वस्तु ज्येष्ठ पुत्रके हेवा करे से हेवा सिद्ध बटे। किन्तु ये हेतुक पैतृक स्थावर समुदाय वस्तु दान करण शास्त्रनिषिद्ध बटे, अतएव पैतृक समुदाय वस्तु दान करणे पाप हय—वङ्गदेशप्रचलित शास्त्रानुसारे ए व्यवस्था बटे इति।

सदर आदालतेर पण्डित ए मकद्दमार यवावे लिखेन—ये यद्यपि हेवार लिखित वस्तुसकल रामजयसाहार स्वकृत हय, ओ साहा मजकुर आपन पुत्र ओ पौत्र मौजुद थाकतेओ ताहा समुदाय आपन पुत्रवधूके ताहा दान ओ विक्रय करणेर सम्बन्धे उहार क्षेमता कर्तृत्व नियमे हेवा करिया थाके, एमत व्यवस्थार

अनैक्य हेतुक ये रोवकारिर समुदय वृत्तान्ते श्रो हुजुरेर समर्पित हेवानामा' सठता ओ क्रोधमते हइयाछे, शास्त्रानुसारे सिद्ध हइते पारे ना। केन ना शास्त्रानुसारे हाकिमके उचित ये ये हेवा, सठता ओ क्रोध क्रमे हइछे, अकर्म्मण्य करेन। ओ रोवकारिर विस्तीर्ण मते पिता एक पुत्रके हेवाकरण, ओ आपन अप्राप्तव्यवहार ओ अज्ञान पुत्र ओ अप्राप्तव्यवहार पौत्र थाकनेओ पुत्र ओ पौत्रेर भरण पोषणेर योग्य मिनाह ना दिया हेवार अयोग्य वस्तु हइते आपन पुत्रवधूके हेवाकरण शठता व्यतित हय ना। अतएव एइ दृष्टे ये आदालतेर फयशला ओ सदर देओयानि आदालतेर रोवकारिर नकलेर अनुसारे ए मकर्द्दमाते साव्यस्थ नाइये। रामजयसाहा हेवा करणेर पूर्व्वे आपन पुत्र रामलोचनके त्याग करियाछे, ओ ऐ हेवानामा लिखन कालिन रामजयसाहा ऐ रामलोचनेर सम्बन्धे शठता ओ क्रोध क्रमे सापलाके हेवा करियाछे, वरं ऐ हेवानामाते शापलार अप्राप्तव्यवहार पुत्रेर, ये रामजयेर पौत्र वटे, प्रतिपालनेर उल्लेख लिखा नाइ। ताहाते सापलार सम्बन्धे हेवानामार लिखित समुदय वस्तु विक्रय ओ दानकरार क्षमता नाइ। ओ काहारो पिता विना क्रोधे ओ अपराधे पुत्र त्याग करे ना। ओ रामकुमारन्यायवाचस्पतिर मकर्द्दमार व्यवस्थार नकलेर द्वाराय जाहेर ये वड पुत्र थाकनेओ कनिष्ठ पुत्रके हेवा करा सिद्ध ओ ताहाते ज्येष्ठ पुत्रेर भरण-पोषणेर परिमाणेर किछु मिना लिखा नाइ। किन्तु से मकर्द्दमाते ब्राह्मण जाति शब्द लिखा गियाछे। ओ सापला अन्य पण्डितानेर व्यवस्था एइ कारण दरपेष करिलेक ये रामकुमारन्यायवाचस्पतिर मकर्द्दमार व्यवस्था शास्त्रानुसारे ब्राह्मण ओ हिन्दु अन्य जाति स्वत्वे एक वटे; ये हेतुक रामकुमारन्यायवाचस्पति आपिलाण्ट ओ कृष्णकिङ्करतर्कभूषण रेप्पाण्डण्टेर मकर्द्दमा वावत सदर देओयानि आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था ओ ए मकर्द्दमा वावत व्यवस्था,

१. हेवानामार—स्थप०।

याहा आदालतेर सओयाल मते ऐ पण्डितगण दियाछेन, अनैक्य।
अतएव उभय व्यवस्थार अनैक्यता परिष्कारार्थे, ओ आरो एइ ये
रामकुमारन्यायवाचस्पतिर मकद्दमार ब्राह्मणेर स्वत्वे ये हुकुम
आछे, ताहा समस्त हिन्दु जातिर मकद्दमाते सम्पर्क राखे ना।
हुकुम हइल ये एइ रोयकारिर नकल ओ दुइ व्यवस्थार नकल
सहित इङ्गरेजी चिठीर सम्वलित सदर आदालतेर रेजष्टर साहे-
बेर निकट एइ प्रार्थनाय पाठान जाय—सहेव मौफुका ताहाके-
पण्डितगणेर निकट समर्पण करिया ताहार दृष्टे दुइ व्यवस्थार
अनैक्यतार परिष्कारेर विषय एवं वाचस्पतिर मकद्दमार
व्यवस्थार आज्ञा समस्त हिन्दु जातिर मकद्दमार सम्पर्क राखन,
ना राखन-विषये व्यवस्था दाखिल करेन—ताहा अनुग्रह पूर्व्वक
ए आदालते पाठाएन इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नप्रतिरूपपत्रं सदरदेवानीपदवाच्यधर्म्माधिकरणा-
धिकृतपूर्व्वापरपण्डितव्यवस्थाद्वयञ्च यदेतदब्दीयजुलाइमासीयचतुर्विंशतिदि-
वसीयशनौ घटिकैकाधिकयामद्वये मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो
जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

यद्यपि रामकुमारन्यायवाचस्पतीयविवादसम्बन्धिव्यवस्थायाः श्रीमती-
चित्रादासीयविवादसम्बन्धिव्यवस्थातो ब्राह्मणाब्राह्मणेतरभेदप्रयुक्तभेदो नास्ति
शास्त्रे एतद्विषये जातिविषये जातिविशेषाश्रवणात्, तथापि रामकुमार-
न्यायवाचस्पतीयविवादसम्बन्धिव्यवस्थायाः शास्त्रबहिर्भूतत्वात् श्रीमती-
चित्रादासीयविवादसम्बन्धिव्यवस्थायाश्च शास्त्रसम्मतत्वात्, शास्त्राशास्त्र-
कृतयोस्तु व्यवस्थयोर्भेदोऽस्त्येव। पैतामहे स्थावरास्थावरधने पितुः पुत्रस्य
च तुल्यस्वामित्वेन बहुस्वामिकैकपदार्थस्य परस्परानुमतिव्यतिरेके णैकक-
र्तृकदानविक्रयादौ स्वांशदानादिसिद्धिव्यतिरेकेण परांशदानाद्यसिद्धेः, शास्त्र-
लोकव्यवहारोभयसिद्धत्वात्, पैतामहे स्थावरधने पितुर्विशेषतः स्वच्छन्द-
वृत्तिताया अपि निषेधाच्च, शास्त्रे पुत्राद्यनुमतिव्यतिरेकेण स्वोपार्ज्जितधनं-

स्थावरास्थावरधनदानस्यापि निषेधोऽस्ति, पोष्यवर्गस्यावश्यम्भरणीयत्वात्, तथान्वयस्वत्वप्रयुक्तसर्व्वस्वदानस्य[1] वृत्तिलोपस्य च निषेधात्। एवञ्च सति रामकुमारन्यायवाचस्पतीयविवादनिर्णयव्यवस्थाधृतप्रायश्चित्तबोधकवचनस्य प्रसक्तिस्तु[2] तत्रैव, यत्र केनचिद् दुर्वृत्तपुरुषेण[3] तादृशविधिमुल्लङ्घ्य[4] स्वोपार्जितसर्व्वधनस्य दानं कृतं स्यात्, विहितपोष्यवर्गभरणस्याननुष्ठाना-न्निन्दितस्य चान्वयस्वत्वप्रयुक्तसर्व्वस्वदानस्य वृत्तिलोपस्य च करणात्। न तु पैतामहस्थावरधनदाने तत्र पितुरेकस्य प्रभुत्वाभावात् शास्त्रानुसारात् किञ्चिदपि पुत्रवधूकर्त्तृकोपकाराश्रवणादुत्तराधिकारिकोटावनन्तर्भूतत्वात्, विना निमित्तं स्वभिन्नस्य कस्यापि कुवर्णानिपाकारित्वाच्च तस्याः। तथा च कृते सत्यपि स्वाज्ञोल्लङ्घनकारित्वेन पुत्रत्यागे अप्राप्तव्यवहारत्वेनाविदितगु-णदोषेष्वथ च मुख्योत्तराधिकारिषु, स्वस्यार्याग्रामनीसाहस्य तथार्थग्रस्तस्य[5] स्वपुत्रस्यार्याग्रामलोचनसाहस्य कृतपिण्डपाकर्त्तृषु सत्स्वेवाप्राप्तव्यवहारेषु पौत्रेषु, तेषामदत्त्वा स्वकुटुम्बादन्यमदत्त्वा च पुत्रवधूसम्प्रदानकदानपत्रस्य छलादिव्यतिरेकेणासम्भवात्। अथ च यदप्राप्तव्यवहाराणां तेषां भरणार्थ-मेव तद्दानपत्रं दत्तं स्यात्, अथ च तस्य छलादिकं नाभिमतं स्यात्, तदा पुत्रवधूमर्थात्तन्मातरं मध्यस्थां कृत्वैव पौत्रसम्प्रदानकं कुतो न दत्तम्-एवा-दृशरीत्याप्यदानात् छलादेः स्पष्टतरतया प्रतीतेः छलादिकृतव्यवहारे पराव-र्त्तनीयत्वस्य शास्त्रसिद्धत्वात्—इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागदायक्रमसंग्रह-विवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था॥—

अत्र प्रमाणम्—

भूर्य्या पितामहोपात्ता निबन्धो द्रव्यमेव वा।
तत्र स्यात् सदृशं स्वाम्यं पितुः पुत्रस्य चैव हि॥

इति दायभाग(पृ० २६)ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य (२।१२१)वचनम्॥१॥

स्वभागान्[6] यदि दद्युस्ते विक्रीणीयुरथापि वा।
कुर्य्युर्यथेष्टं तत्सर्व्वमीशास्ते स्वधनस्य वै॥

—इति तद्(दाभा० पृ० ३५)ग्रन्थधृतनारद(नामसं १४।४२)वचनम्।२।

---

१ °धान्वयस्वत्वप्रयुक्तसर्व्वस्व०—व्यव०। २ प्रशक्तिस्तु—व्यव०। ३ पुरुषेता०—व्यव०।
४ °पुरुषेणाङ्कुरा—व्यव०। ५. भरणस्य—व्यव०। ६. °स्वानशान्—नामसं०।

पिता चेत् पुत्रान् विभजेत्तस्य स्वेच्छा स्वयमुपार्त्तेऽर्थे[1]। पैतामहे तु पितापुत्रयोस्तुल्यं स्वामित्वम् ॥ —इति तद्ग्रन्थ(दामा०पृ० ३१) धृतविष्णुवचनम् ॥ ३ ॥

यदि पिता पुत्रान् विभजति तदा स्वोपार्जितेऽर्थे न्यूनाधिकविभागं स्वेच्छया पुत्रेभ्यो दद्यात्। पैतामहे तु नैतत्, यस्मात् तत्र तुल्यं स्वामित्वम्, न पुनः पितुः स्वच्छन्दवृत्तिता—इति तद्(दाम० पृ० ३१)ग्रन्थलिखनम् ॥ ४ ॥

पूर्व्वोक्तगुरुत्वरत्वादिनिमित्तेनापि पितामहधनस्य भूमिनिबन्धद्विपद(न्यतम)स्वरूपस्य न्यूनाधिकदाने पितुर्न प्रभुत्वम्—इति दायक्रमसंग्रह(पृ० ४०)ग्रन्थलिखनम् ॥ ५ ॥

स्थावरं द्विपदञ्चैव यद्यपि स्वयमर्जितम्।
असम्भूय सुतान् सर्व्वान् न दानं न च विक्रयः ॥—इति दायभागादि(दाभा०पृ० ३५)ग्रन्थधृतवचनम् ॥ ६ ॥

भरणं पोष्यवर्गस्य प्रशस्तं स्वर्गसाधनम्।
नरकं पीडने चास्य तस्माद् यत्नेन तं भरेत् ॥ —इति मनु(?)वचनम् ॥ ७ ॥

निःक्षेपैः[2] पुत्रदाराद्यैः सर्व्वस्वञ्चान्वये सति।
आपत्स्वपि हि कष्टासु वर्त्तमानेन देहिना ॥
अदेयान्याहुराचार्य्याः—इत्यादि विवादभङ्गार्णवादि(विभ०पृ० ४२१ ख)-ग्रन्थधृतनारद(नामस० ५।५)वचनम् ॥ ८ ॥

ये जाता येऽप्यजाताश्च ये च गर्भे व्यवस्थिताः।
वृत्तिं तेऽपि हि काङ्क्षन्ति वृत्तिलोपो विगर्हितः ॥
—इति व्यास[3](पक्षो० पृ० १५८७)वचनम् ॥ ९ ॥

विहितस्याननुष्ठानान्निन्दितस्य च सेवनात्।
अनिग्रहाच्चेन्द्रियाणां नरः पतनमृच्छति[4] ॥ इति प्रायश्चित्तविवेक(पृ० १०)धृतयाज्ञवल्क्य(३।२१९)वचनम् ॥१०॥

---

१. ०मुपार्जिते—यास्मृ० ।
२. निक्षेप पुत्रदार च —नामस० ।
३. मनु०—व्या० ।
४. ०मिच्छति—व्या० ।

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ।
तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः शिष्यः सब्रह्मचारिणः ॥
एषामभावे पूर्व्वस्य धनभागुत्तरोत्तरः ।
स्वर्यातस्य ह्यपुत्रस्य सर्व्ववर्णेष्वयं विधिः ॥ —इति दायभागादि(पृ० १५१)ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य(२।१३५)वचनम् ॥११॥

प्रतिपन्नं स्त्रिया देयं पत्या वा सह यत् कृतम् ।
स्वयं कृतं वा यदृणं नान्यत् स्त्री दातुमर्हति ॥
—इति विवादभङ्गार्णवादि(१ विवा०पृ०२०६ क)ग्रन्थधृततद्(याज्ञ० २।४६)वचनम् ॥ १२ ॥

तत्र प्रथमं पुत्रस्तदभावे पौत्रस्तदभावे प्रपौत्रः ।—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीका(पृ० २१८)ग्रन्थलिखनम् ॥१३।

पितरि प्रोषिते प्रेते व्यसनाभिप्लुतेऽपि वा ।
पुत्रपौत्रैर्ऋणं देयं निह्नवे साक्षिभावितम् ॥
इति विवादभङ्गार्णव (पृ०१७८ ख) धृतयाज्ञवल्क्य(२।५०)वचनम् ॥१४॥

योगाधमनविक्रीतं योगदानप्रतिग्रहम् ।
यत्र वाप्युपधिं पश्येत् तत्सर्व्वं विनिवर्त्तयेत् ॥—इति मनु (८।१६५)-वचनञ्चेति ॥ १५ ॥ ० ॥ ० ॥

दिजम्बरमासीयैकत्रिंशद्दिनसम्बन्धिभृगुवासरे घटिक(।)त्रयाधिकयामद्वये दत्तेयं मया व्यवस्था ॥ ० ॥

श्रीर्जयतितराम्
श्रीहीरानन्दमिश्रेण

१०१—प्रभुसमवेतैतद्धर्म्माधिकरणप्राचीनाधिपतिकृतस्य रामकुमारन्यायवाचस्पतीयविवादसम्बन्धिप्रश्नस्यैतद्धर्म्माधिकरणप्राचीनपण्डितद्वयलिखितव्यवस्थापत्रं कलिकाताख्यमहानगरसम्बन्धिकोर्ट्गेलाख्यधर्म्माधिकरणाधिपतिकृतस्य विवादाख्यविवादसम्बन्धिप्रश्नस्यैतद्धर्म्माधिकरणपण्डि-

तस्थानाभिषिक्तहीरानन्दमिश्राख्यपण्डितलिखितव्यवस्थापत्रमन्यदप्यङ्गरेजी-
लिपिसमभिव्याहृतविचारपत्रद्वयं तत्प्रेषितमेवं यशहरजिलाख्यावान्तरधर्म्मा-
धिकरणाधिपतिकृतस्य चित्रादासीयविवादसम्बन्धिप्रश्नस्यास्मल्लिखितव्यव-
स्थापत्रं चावलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेण निवेदनं क्रियते ।

रामकुमारन्यायवाचस्पतीयविवादसम्बन्धिव्यवस्थैतद्धर्म्माधिकरणे अङ्ग-
रेजीशब्दप्रतिपाद्यद्वादशाधिकाष्टादशशताब्दे एतद्धर्म्माधिकरणप्राचीनप-
ण्डिताभ्यां वङ्गदेशचलितशास्त्रव्यवहारोभयावलोकनेनैवोपस्थापिता ।
एतद्धर्म्माधिकरणप्राचीनाधिपतिभिस्तदनुसारेणाज्ञायां दत्तायां सम्यां वङ्ग-
देशे तादृशव्यवहारः शास्त्रतोऽपि दृढीभूतः । अतएव मुद्रायन्त्रालये मुद्रि-
तः । एवञ्च सति वङ्गदेशचलितशास्त्रेऽपि प्रायशो मुनिवचनानां ग्रन्थानां
वा परस्परमनैक्यमस्त्येव । तथापि यन्मतं यस्मिन् देशे पूर्व्वापरप्रचलितं
भवति तस्मिन् देशे तदेव रक्षणीयम्, अन्यथा प्रजाप्रक्षोभः स्यात् । अथ च
वङ्गदेशीयैः सर्व्वैरेव प्राचीनार्व्वाचीनैः ग्रन्थकारैः स्वस्वग्रन्थेषु जीवति पितरि
पुत्राणा पैतृकधने पैतामहधने च किञ्चिदपि स्वत्वं नास्तीति लिखितम् ।
केषुचिद् ग्रन्थेषु विवादभङ्गार्णवप्रभृतिष्वर्व्वाचीनेषु पुत्रे विद्यमाने तदनुमतिं[2]
विना पितुः स्वार्जितस्थावरस्य[1] पैतृकस्थावरस्य वा समुदायस्य दानविक्रयनिषे-
धकान्येतद्धर्म्माधिकरणपण्डितस्थानाभिषिक्तहीरानन्दमिश्राख्यपण्डितलिखि-
तव्यवस्थालिखितवचनानि लिखित्वा इदमपि लिखितं पुत्रानुमतिं विना पितुः
स्वार्जितस्थावरस्य पैतृकस्थावरस्य वा समुदायस्य दानविक्रयकरणं[3] नोचित
भवतीत्येव । तादृशवचनानां तात्पर्य्यार्थः—यदि च पिता तदेव शास्त्रोक्ताज्ञा-
जातमुल्लङ्घ्य[4] स्वोपार्जितस्थावरसमुदायस्य पैतृकसमुदायस्य वा पुत्रानुमतिं
विना दानं विक्रयं वा करोति, तदा तद्दानं विक्रयो वा सिद्ध्यत्येव, किन्तु पितुः
शास्त्रोल्लङ्घनजन्यः प्रत्यवायो भवति । तत्रापि यदि छलादिना क्रोधादिना वा
तादृशदानं विक्रयं वा करोति तदा न सिद्ध्यतीत्यपि लिखितम् । एवञ्च सति
रामकुमारन्यायवाचस्पतीयविवादसम्बन्धिव्यवस्थायाः श्रीमतीचित्रादासीय-
विवादसम्बन्ध्यस्मल्लिखितव्यवस्थातो वास्तवमनैक्यं नास्त्येव । प्रकृते तु

१. सन्—व्यप० ।
२. अनुमतिम्विना—व्यप० ।
३. ०वार्जित—व्यप०
४. शास्त्रोक्ते—व्यप० ।

-यशहरजिलाख्यावान्तरधर्म्माधिकरणाधिपतिकृतांगरेजीशब्दप्रतिपाद्योनविंश-
-दधिकाष्टादशशताब्दीयमैमासीयपञ्चदिवसलिखितविचारपत्रान्तर्गततद्वृत्तान्ते स-
ति, तत्समर्पितदानपत्रलिखितवृत्तान्ते च सति, एकमात्रपुत्रस्य पितुर्व्यवहार-
योग्ये तस्मिन्नेकस्मिन् पुत्रे विद्यमाने अप्राप्तव्यवहारेषु कतिपयेषु पौत्रेषु च
विद्यमानेषु तेषामन्नाच्छादनोपयुक्तमपि धनमवशेष्य पुत्रवधूं दानविक्रयस्व-
-त्वाधिकारिणीं कृत्वा व्यावहारिकैतादृशसर्व्वस्वदानस्य छलादिकं विना असं-
-म्भव(त्वे)न तादृशदानस्य छलादिकृतत्वं क्रोधादिकृत(त्व)ञ्च (अतस्तस्माद्)
-दानासिद्धिप्रमाणीभूता व्यवस्था मया दत्ता । अत्र यद्यपि कलिकाताख्य-
-महानगरसम्बन्धिकोर्टापीलाख्यधर्म्माधिकरणीयविचारपत्रद्वये तद्दानपत्रे
-रामजीशाहसंज्ञकस्याप्राप्तव्यवहाराणां पौत्राणाम यादविन्याश्चित्रादास्याः
पुत्राणां भरणपोषणं लिखितं नास्ति; अतएवार्थिन्याश्चित्रादास्या दानपत्र-
लिखितवस्तुनः समुदायस्य दानविक्रयादिकरणक्षमता नास्तीति लिखित-
मस्ति । परन्तु तद्दानपत्रे दात्रा रामजीशाहसंज्ञकेन लिखितम्—एतस्य
-दानविक्रययोः स्वत्वाधिकारोऽस्त्येव; एतद्विषये मया किंवा मदन्यैः कैश्चि-
दुत्तराधिकारिभिः प्रातीच्छा क्रियते चेत्तर्हि सा प्रातीच्छा न ग्राह्या नैव शुद्धा
भवतीति । अतएव तद्दानपत्रे एतादृशलिखनेनाप्यर्थिन्याश्चित्रादास्यास्त-
द्दानग्रहीत्र्या यदि तद्धने दानविक्रयादिकरणक्षमता न भवति । तर्हि तद्दानपत्रं
तस्याः स्वत्वोत्पत्तेः प्रमाणं कथं भवति । तद्दानपत्रमप्रमाणञ्चेत् कथं तत्
-प्रमाणेन तद्दानसिद्धिरिति । एवञ्च सति यदि जिलाख्यावान्तरधर्म्माधि-
करणाधिपतिकृततद्विचारपत्रलिखितवृत्तान्तेन तद्दानपत्रेण वा छलादेः
-क्रोधादेर्व्वा निश्चयो वास्तवं न भवति तदा चित्रादासीयविवादसम्बन्धिन्य-
-स्मल्लिखितव्यवस्था सुतरां प्रचारणीया नैव भवति, किन्तु रामकुमार-
-न्यायवाचस्पतीयविवादसम्बन्धिनी व्यवस्थैव प्रचारणीया भवति । यदि
च तद्विचारपत्रेण दानपत्रेण वा छलादेः क्रोधादेर्व्वा वास्तवं निश्चयो
भवति तदा चित्रादासीयविवादसम्बन्धिनी अस्मल्लिखितव्यवस्थैव प्रचार-
-णीया भवति । एवञ्च सति एतद्धर्म्माधिकरणनियुक्तपण्डितद्वयसम्मता
-व्यवस्था चैतद्धर्म्माधिकरणनियुक्तैकपण्डितसम्मतव्यवस्थया परिवर्त्तनयोग्या
-न भवतीति । अतएव एतद्धर्म्माधिकरणपण्डितपदाभिषिक्तसदानन्द-

मिथ्याख्य पण्डितलिखितव्यवस्थालिखितेन रामकुमारन्यायवाचस्पतीय-विवादसम्बन्धिव्यवस्थायाः शास्त्रवहिर्भूतत्वादिति । अनेनापि रामकुमार-न्यायवाचस्पतीयविवादसम्बन्धिनी व्यवस्था परावर्त्तनयोग्या भवितुं न शक्नोति—इति वङ्गदेशचलितदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीका-दायतत्त्वव्यवहारतत्त्वव्यवहारमातृकाविवादभङ्गार्णवविवादार्णवसेतुदायक्रमसंग्रहादिग्रन्थानुसारेण निवेदनम्—इति

अत्र प्रमाणानि—प्रभुसमर्पितव्यवस्थात्रयलिखितानि चतुर्विंशति-संख्याकानि ॥ २४ ॥

स्थावरं द्विपदं चैव यद्यपि स्वयमर्ज्जितम् ।
असम्भूय सुतान् सर्व्वान् न दानं नच विक्रयः ॥
इत्येवमादिकम् तदप्येवमेव वर्णनीयम् ।
तथापि कर्त्तव्यपदमवश्यमध्याहार्य्यम् ॥

तेन दानविक्रयकर्त्तव्यतानिषेधात् तत्करणाद्व्यतिक्रमो भवति, न तु दानाद्यनिष्पत्तिः, वचनशतेनापि वस्तुनोऽन्यथाकरणाशक्तेः—इत्यादि दायभाग(पृ० ३५)ग्रन्थलिखनम् ॥ २५ ॥

देशजातिकुलानाञ्च[1] ये धर्म्माः प्राक्प्रवर्त्तिताः[2] ।
तथैव ते पालनीयाः प्रजा प्रक्षुभ्यतेऽन्यथा—इति विवादभङ्गार्णव-ग्रन्थधृतबृहस्पति(पृ० २१)वचनम् ॥ २६ ॥

देशस्य जातेः सङ्घस्य धर्म्मो ग्रामस्य यो भृगुः ।
उदितः स्यात् स तेनैव दायभाग· प्रकल्पयेत् ॥—इति दायतत्त्वादि-(दात० पृ० १६५)ग्रन्थधृतकात्यायन (पृ० १०७)वचनम् ॥ २७ ॥

(लोक) धर्म्मशास्त्र(यो) स्तु विरोधे लोकव्यवहार एवादरणीयः—इत्याह स एव—

धर्म्मशास्त्रविरोधे तु युक्तियुक्तो विधिः स्मृतः ।
व्यवहारो हि बलवान् धर्म्मस्तेनावहीयते ।
हीयते अवगम्यते, हीगतावित्यस्माद्धातोः । अतएव बृहस्पतिः—
केवलं शास्त्रमाश्रित्य न कर्त्तव्यो विनिर्णयः ।
युक्तिहीनविचारे तु धर्म्महानिः प्रजायते ॥

---

१. कुलानाञ्च—बृस्मृ० । २. तत्प्रवर्त्तिता—बृस्मृ० ।

युक्तिर्न्यायः, स च लोकव्यवहारः—इतिव्यवहारमातृका (पृ० २८२) इति व्यवहारतत्त्वादि(व्यत० पृ० ४)ग्रन्थलिखनम् ॥ २८ ॥

पितर्य्युपरते पुत्रा विभजेयुर्धनं पितुः ।

अस्वाम्यं हि भवेदेषां निर्दोषे पितरि स्थिते—इति दायभागादि-(दाभा० पृ० १३)ग्रन्थधृतदेवलवचनम् ॥ २९ ॥

यदि च परस्वत्वोत्पत्तिफलकत्यागरूपं दानमेव करोति तदा उदासीनवत् सिद्धत्वेन स्वार्जिते पैतामहेऽपि स्थावरादौ धने । परन्तु पुत्रानुमति विना पैतामहस्थावरं ददतः पितुर्दुरदृष्टमेव भवतीत्येव तत्त्वम्—इति विवादभङ्गार्णवग्रन्थ(पृ० ४८ क)लिखनम् ॥ ३० ॥

नहि यः पुत्रादिशरीरदाने प्रभुः स स्थावरदाने पुत्राद्यनुमतिं विना न प्रभुरिति वक्तुं युज्यते—इति विवादभङ्गार्णवग्रन्थलिखनम् ॥ ३१ ॥

एवञ्च यः कश्चित् पिता शास्त्रमुल्लङ्घ्य कस्मैचित् पुत्राय अन्यस्मै वा स्वपैतृकं स्वार्जितं वा समस्तमर्द्धं वा स्थावरमन्यस्मै ददाति तत्तु दानं सिद्ध्यत्येव । इदं कामक्रोधच्छलादिविमुक्तत्वे सत्येव । परन्तु शास्त्रोल्लङ्घनजन्यं दुरदृष्टं भवति । इति विवादभङ्गार्णवग्रन्थ(२ विवा० पृ० ६४ ख)लिखनम् ॥ ३२ ॥

द्वैधे बहूनां वचनम्—इत्यादि व्यवहार[२]तत्त्वादि (व्यत० पृ० ३३) ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य (२।७८) वचनञ्चेति ॥ ३३ ॥

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीर्जयतितराम्

सदर नेजामतेर आदालतेर पण्डितेर प्रति प्रश्नः—

(प्रथम) प्रश्नः—

---

२ व्यवहारतत्त्वे गौतमवचनमिति पठितम् । [६, अत्यन्त-२८,४०

एतदद्दीयापरेलेमासीयद्वितीयदिनसम्बन्धिशुक्रवासरे घटिकाद्वयाधिक-यामद्वयानन्तरं मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।

सओयाल—

१०३—शूद्रजातिर मध्ये एक व्यक्ति स्वोपार्ज्जित स्थावरादि धने अधिकार थाकिया परलोक हओयार पर ताहार पुत्र तद्विषये उत्तराधिकारिसत्वे अधिकारि हइया ऐ समस्त वस्तु आपन विमाताके हेबा करिया मृत्यु हइयाछे। ए स्थले ऐ हेबार वस्तु सकल विमातार स्त्रीधन हय कि ना। परे ऐ विमाता केवल आपना पतिर भागिनेय विद्यमाने हेबार स्थावरादि सम्प्रदाय वस्तु स्वजातीय एक जनके हेबा करियाछे। यद्यपि सपत्निर पुत्रेर हेबा अनुसारे ऐ वस्तु विमातार स्त्रीधन हइया थाके, तबे एमत् वस्तु ऐ विमातार दान करा सिद्ध हय कि ना—यथाशास्त्र इहार उत्तर लिखिबा इति।

जिलार जओयाब—

एइ सओयालेर उत्तर निवेदन करितेछि—यथा ऐ पुरुषे विमाताके पैतृक आपन धन हेबा अर्थात् दान करियाछे से दान एवं ऐ स्त्रीलोक ये सपत्निपुत्र हइते लब्ध धन दान करियाछे, से दान कि प्रकार व्यक्त लिखा नाहि मते ऐ हेबा-द्वयेर किरूप शब्द प्रयोग आछे, ताहा ना जानाते ऐ दान सिद्धि हयोया नाहओया दुइ प्रकार निवेदन करि। यथा दान सिद्धि ना हओयार ये २ हेतु आछे, ताहा विने ऐ पुरुष आपन सत्वे त्याग करिया विमाताके ऐ स्थावरादि सकल धन दिया थाके तबे ऐ सपत्निपुत्र देया धन भर्तृदत्त स्थावरातिरिक्त स्त्रीधन हय। एमत् सौदायिक स्त्रीधन दान सिद्धेर ये २ कारण आछे ताहा विने ऐ स्त्रीलोक आपन सत्व त्याग करिया दिया थाके, तबे से दान अर्थात् हेबा सिद्ध हय। आर ऐ पुरुष कि स्त्रीलोक दान सिद्धि नाहयोयार ये २ कारण आछे से कारणे दियाथाके, तबे दान सिद्धि हयना। दान-

असिद्धेर कथक हेतु लिखि। यथा—कामे भये क्रोधे[1] पीडाते भ्रमे शोके रोगे अथवा प्रतिलाभेच्छाते अर्थात् कोन शरते अपात्रके पात्र शङ्काते एवं उन्मादादिते दिया थाके तबे से देया सिद्ध हयना। तार प्रमाण कथक लिखि। यथा—

अदत्तन्तु भयक्रोधकामशोकरुगान्वितैः।
तथोत्कोचपरीहासव्यत्यासच्छलयोगतः॥
प्रतिलाभेच्छया दत्तमपात्रे पात्रशङ्कया॥

इत्यादि नारद-कात्यायन-मुनि प्रभृति लिखित नाना वचनादि। ताहासकल लिखाते अधिक हय। मते किछु लिखिलाम्। ऐसकल हेवाते कि २ शब्द प्रयोग आछे, कि अभिप्राय, ये हओया ताहा ना जानाते सिद्ध हओया नाहओया दुइ मतेरि कारण यथाशास्त्र निवेदन करिलाम्। साहेब कर्त्ता येमत् अभिप्राय निवेदनमेत(त्) इति।

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्र व्यवस्थापत्रद्वयञ्च दानपत्रद्वयञ्च यदेतदब्दीयापरेलमासीयचतुर्विंशतिदिनसम्बन्धिशनिवासरे घटिकैकाधिकयामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य विविच्य च यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

यदि शूद्रजात्यन्तःपाती कश्चिद् व्यक्तिविशेषः स्वोपार्जितस्थावरादिधने आयत्तत्वं सम्पाद्य मृतस्तदनन्तरं तत्पुत्रोऽपि स्वपितृत्यक्तधने उत्तराधिकारित्वेनाधिकारी भूत्वा तदेव सर्वं वस्तु स्वविमात्रे दत्त्वा मृतः, तदा तदेव दत्तं सर्वं वस्तु विमातुः स्त्रीधनं भवितुं न शक्नोति, देवीप्रसादसंज्ञकसपत्नीपुत्रलिखितचित्रासीसंज्ञकविमातृसम्प्रदानकदानपत्रे तेनैव देवीप्रसादेन लिखितं त्वया यथाशक्ति अस्माकं पुत्रपौत्रानुक्रमेण धर्मार्थे *क्रियाकर्मादिषु प्रवर्त्तितव्यास्तान् संरक्ष्य भुज्यताम्*—इति। अत्र चैतादृश-लिखनेन चित्रासीसंज्ञकस्य दानविक्रयानधिकारः। यस्मिन् धने दानविक्रयानधिकारः स्त्रियास्तद्धनं स्त्रीधनं न भवत्येतद्विधायकशास्त्राभावात्। एवं

१. क्रोधे लोभे—पाठ।

तद्दानात् परं सैव विमाता केवलं स्वपतिभागिनेये विद्यमाने सति दानकृत-स्थावरादि सर्वं वस्तु स्वभ्रातीयायैकस्मै कस्मैचिद्दत्तवती स्यात् तत्रोपरिलिखित-प्रकारेण तदेव सर्व्वं वस्तु विमातुः स्त्रीधनं न भवति। अतएव तस्यैव वस्तु-नस्तया विमात्रा कृतदानं सिद्धं भवितुं न शक्नोति अस्वामिकृतत्वात्, अस्वामिकृतदानस्य विक्रयस्य च आधेय परावर्त्तनीयत्वात्—इति वङ्ग-देशाचलितमनुदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकादायक्रमसंग्रहवि-वादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था।

अत्र प्रमाणम्—

अस्वामिना कृतो यस्तु दायो विक्रय एव वा।

अकृतः स तु विज्ञेयो व्यवहारे यथा स्थितिः॥—इति मनु-(पृ० ८।१९९) वचनम्॥ १॥

अस्वामिविक्रयं दानमाधिश्च विनिवर्त्तयेत्—इति विवादभङ्गार्णवादि-(१ जिल्द २१७ ख)ग्रन्थधृतकात्यायन(पृ० ७६)वचनञ्चेति॥२॥

एतद्दन्दीयमैमासीयअष्टाविंशतिदिनसम्बन्धियुक्तवत्सरे षष्टिकैकाधिक-त्रयोमद्दयानन्तरं मयेयं व्यवस्था दत्तेति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१०४—रोवकारि मिसिल आदालत देओयानि सदर सन १८२१ इङ्गरेजि तारिख १५ जानेआरि मताबक सन १२३७ याङ्गला तारिख ३माघ रोज शनिवार ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत मार्न्तकीयू हेनरि टरम्बल साहेबेर बैठके।

काशीनाथदत्त मतफार श्रीकरुणा(मयी) ओ गयरह—

आपिलाएटान्

चन्द्रमाला मतफार स्वामी जयचन्द्रघोष—रस्पाडएट

आपिलाएटदिगेर मध्ये एक जन रामकिशोरदत्तेर उकिल मुंनशी दादारफस ओ यज्ञचन्द्रदत्त, नवाबगेर भाता कालाचाँद-

दत्त मतफार स्त्री मसम्मात कृष्णप्रिया ओ काशीनाथदत्त ओ मसम्मात करुणामयी मतफारदिगेर नाबालग पुत्र भैरवचन्द्र-दत्तेर अछिमदान नारायणघोष उकिल मुनशी गोलाम रसुल हाजिर हइल। आपिलण्टदिगेर मध्ये एक जन रामकिशोरदत्त ओ मसम्मात कृष्णप्रिया ओ गयरह सओयाल ए मकर्दमार तजविज सानि प्रार्थनाय, ताहार सम्पर्के कागजात सहित, आर सन १८३० इङ्गरेजी नबम्बर मासेर २४ तारिखेर हओया ए आदालतेर हाकिम श्रीयुत अलियम नराष्टर साहेबेर हुकुम माफिक मकर्द मार कागज अद्य आमार बैठके उपस्थित हइया नालिसि, आरजि, ओ सन १८२७ इङ्गरेजि जुलाइ मासेर ३ तारिखेर ओ सन १८२८ इङ्गरेजि जानेओरि मासेर १७ तारिखेर लिखित ए मकर्द मार खास आपिल मञ्जुरिर रोयकारिसकल ओ सन १८३० इ० जुलाइ मासेर १९ तारिखेर हओया ए मकर्दमा आखेरि रोयकारि ओ अद्य जरुरि कागचसकल रस्पाउण्टेर उकिल सदाशुरुपण्डितेर समक्षे दृष्टे आशील। ए आदालतेर कायम-मकाम पण्डित हीरानन्दमिश्रेर एजाहार असिद्ध सन्य लित आपिलाण्ट ओजराहेर दृष्टे जे सेइ तुनियादे मकर्दमार तजविज हइयाछे, ए आदालतेर पण्डितेर स्थाने लिखित व्यवस्था लओन उचित बोध हइया हुकुम हइल-ये एइ रोयकारिर नकल आर जाहाङ्गिरनगरेर कोर्टे आपीलेर पण्डितेर आसल व्यवस्था ४४ लम्बर तथाकार नथीर सामिल, ओ ए आदालतेर नथिर सामिल रस्पाउण्टेर दाखिल करा व्यवस्था सहित ए आदालतेर पण्डित वैद्यनाथमिश्रेर हाओयाले करा-जाय, एइ हुकुमे जे उपरेर व्यवस्थासकल वेत्ता हइया सप्ताह मध्ये जवाब लिखेन-ये ऐ व्यवस्था बङ्गदेश चलित शास्त्रानुसारे सिद्धि कि असिद्धि मात्र। पण्डितेर व्यवस्था दाखिल हओयार पर आपिलाण्टेर तजविज सानिर सओयालेर सम्पर्के मनासीब हुकुम प्रकाश पाइवेक इति।

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतमान्यश्रीयूहेनरीटरम्बलसाहेबधर्म्माधिक-रणलिखितैतद्वर्षीयजानवरीमासीयपञ्चदशदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रति-रूपपत्रमेवं तत्समर्पितजाहाङ्गिरनगरसम्बन्धिकोटापोलाख्यधर्म्माधिकरणनि-युक्तपण्डितलिखितव्यवस्थापत्रमेवमेतद्धर्म्माधिकरणप्रत्यर्पितसमुपस्थापितमेत-द्धर्म्माधिकरणीयव्यवस्थापत्रञ्च यत्फेब्रुवरीमासीयसप्तमदिनसम्बन्धिसोमवा-सरे घटिकैकाधिकयामद्वये मया प्राप्तन्तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनु-सारेणोत्तरं लिख्यते ।

उपरिलिखितव्यवस्थापत्रद्वयान्तर्गतजाहाङ्गिरनगरसम्बन्धिकोटापोलाख्य-धर्म्माधिकरणनियुक्तपण्डितलिखितव्यवस्थापत्रोपरिलिखितात् प्रमात् कीर्त्ति-नारायणदत्तस्य मरणोत्तरं तयोर्म्मातुः शास्त्रानुसारेण तत्पुत्रस्याधिकारे जाते सति तन्मरणोत्तरमनुमानादूनविंशतिवर्षोत्तरं विंशतिवर्षोत्तरं वा कीर्त्तिनारा-यणदत्तस्यैको दौहित्र उत्पन्न इति ज्ञातम् । तथा सति कीर्त्तिनारायणदत्तस्याप्राप्त-व्यवहारस्य पुत्रस्य मरणोत्तरं तस्यैवाप्राप्तव्यवहारस्य ये उत्तराधिकारिणस्त एव तद्धनाधिकारिणो भवन्ति । एवञ्च सति वङ्गदेशचलितशास्त्रे एतादृशं किमपि प्रमाणं लिखितं नास्ति यदनुसारेणोपरिलिखितप्रकारेण विवादास्प-दीभूतधनस्वामिनः कीर्त्तिनारायणदत्तपुत्रस्याप्राप्तव्यवहारस्य मरणसमये तत्पु-त्रमारभ्य पितृदौहित्रपर्य्यन्ताभावे तदानीं विद्यमानस्य तत्पितामहस्य तद-भावे तदानीं विद्यमानायास्तत्पितामह्यास्तदभावे तदानीं विद्यमानानां तत्-पि(तृ)व्याणां तदभावे पितृव्यपुत्राणां तदभावे पितृव्यपौत्राणां वा अधो-लिखितप्रमाणैस्तत्क्षणादेवोत्पन्नं स्वत्वं नश्येत । अथवा तन्मरणादूनविंशति-वर्षोत्तरं विंशतिवर्षोत्तरं वोत्पत्स्यमानपितृदौहित्रार्थं तद्धनमस्वामिकमेव तावत्कालपर्य्यन्तं तिष्ठेत् । अथवा तत्पितृदौहित्रोत्पत्तेः प्राक् तद्धनं कोऽपि रक्षेत् । एवं प्रमुमर्पितव्यवस्थापत्रद्वयान्तर्गतैतद्धर्म्माधिकरण-प्रत्यर्पितसमुपस्थापितैतद्धर्म्माधिकरणीयव्यवस्थापत्रे दायभागलिखितं प्रमा-णद्वयं लिखितमस्ति । तयोर्म्मध्ये प्रथमप्रमाणेन मातुलस्य मरणोत्तरं तदीयधने ऊनविंशतिवर्षोत्तरं विंशतिवर्षोत्तरं वोत्पन्नस्य भागिनेयस्य स्वत्व-

-मुत्पद्यते इत्यर्थो न प्रतीयते। वरं मातुलस्य मरणानन्तरं तत्यक्तधने यदि तस्य पुत्रमारभ्य पितुःप्रपौत्रपर्य्यन्तो न स्यात्, पितृदौहित्रस्तु विद्यते, तदा स एवाधिकारी भवतीत्यर्थः प्रतीयते, प्रकृते तु पितृदौहित्रस्य तदानीं विद्यमानत्वाभावात्। यच्च तद्व्यवस्थायां द्वितीयं प्रमाणं लिखितं, तस्य चायमर्थः–ये जाता उत्पन्नाः। येऽप्यजाताः भविष्यद्गर्भसम्बन्धाः। ये च गर्भे व्यवस्थितास्तेऽपि वृत्तिमाकाङ्क्षन्ति वृत्तिलोपस्तेषां विगर्हितो भवति–इत्यनेनापि तादृशभागिनेयस्य मातुलधने स्वत्वमुत्पद्यत इत्यर्थो न प्रतीयते, तद्वचनस्य स्वत्वोत्पत्तिकारणत्वाभावात्। अयच दायभागग्रन्थे(पृ० २५)-तद्वचनं विभागप्रकरणे लिखितम्। यदि पित्रा स्वेच्छया क्रमागतधनस्य विभागो विभागप्रतियोगिनां मातुरजोनिवृत्तिमन्तरा क्रियते तदा विभागोत्तरजातानां वृत्तिलोपापत्तिः,अतएवासौ विभागो न युक्त इति विभागप्रतियोगिनां मातुरजोनिवृत्तिमन्तरा क्रमागतधनस्य विभागनिषेधार्थं तद्वचनं पञ्चमप्रमाणे स्पष्टीकृतं च। तत्रापि वृत्तिलोपो विगर्हित इत्यत्र वृत्तिशब्दस्यार्थो दायभागटीकाकृतश्रीकृष्णतर्कालङ्कारैर्दायभागटीकायां(पृ० २५)मेवं व्याख्यातः–वृत्तिलोपः पितामहधने निरंशकत्वमिति (दा०भा०टी०पृ० २५)। विवादभङ्गार्णवग्रन्थेऽपि तस्यैव वृत्तिशब्दस्य क्रमागतधनमित्यर्थो व्याख्यातः। अतएव मातुलधनं भागिनेयस्य वृत्तिर्न भवति, तस्य क्रमागतत्वाभावात्। किन्तु आकस्मिकमेव तत्प्राप्तिर्भागिनेयस्य। अथ च वृत्तिलोपो विगर्हित इत्यनेन यदि केनचिद् विभागकरणेन दानविक्रयकरणेन वा कस्यचिद् वृत्तिलोपः क्रियते तदासौ अपराधो भवति। प्रकृते तु विभागादिकरणेन वृत्तिलोपः केनापि न कृतः। अथ च वङ्गदेशचलितदायभागादिग्रन्थमते दायग्रहणे विशेषतः स्वत्वकारणं धनस्वामिसम्बन्धो धनस्वाम्योपरमश्च पूर्व्वपूर्व्वसम्बन्धिनामभावश्चेति त्रितयं भवति। अथ च केषाञ्चित् ग्रन्थानां मते जन्मैव पुत्रपौत्रप्रपौत्राणां स्वत्वकारणं भवति। तत्र जन्म द्विविधम्–यस्मिन् काले यस्य गर्भाधानं तदेकविधं यस्मिन् काले गर्भतो निर्गतस्तद्द्वितीयम्। प्रकृते तु कीर्त्तिनारायणपुत्रस्य कीर्त्तिनारायणमरणोत्तरं तद्योग्यांशस्वामिनोऽप्रातव्यवहारस्य मरणसमये तद्भागिनेयस्य गर्भसम्बन्धस्याप्यभावेन तत्सम्बन्धस्य दूरापास्तत्वात् तत्यक्त(ध)ने तत्स्वत्वोत्पत्तिर्भवितुमर्हा-

क्यैव । अथ चोनषोडशवर्षवयस्कानां बालकानामर्थादप्राप्तव्यवहाराणां धनरक्षणे मुनिभिरुपायः कृतः । तस्मादपि क्लिष्टतमे प्रकृतस्थाने अनियमित-कालेनोत्पत्स्यमानानां धनरक्षणे कोऽप्युपायो मुनिभिर्ग्रन्थकारैर्वा न कृतः । तस्मादपि अनुत्पन्नानां स्वत्वं भवितुं न शक्नोति । तस्मात्प्रस्तुतमर्पितव्य-वस्थाद्वयं वङ्गदेशप्रचलितशास्त्रानुसारेण सिद्धं भवितुमर्हतीति न प्रतिभाति— इति वङ्गदेशप्रचलितमनुदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकादाय-तत्त्वदायक्रमसंग्रहविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ।
तत्सुतो गोत्रजो बन्धुःशिष्यः सब्रह्मचारिणः ॥
एषामभावेपूर्वस्य धनभागुत्तरोत्तरः ।
स्वर्यातस्य ह्यपुत्रस्य सर्ववर्णेष्वयं विधिः— इति दायभागादि(दात० पृ० १५१)ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य (२।१३५) वचनम् ॥ १ ॥

तदभावे पुनः पितृदौहित्रः इति । तदभावे पितामहस्तदभावे पितामही, तदभावे पितुः सोदरस्तदभावे पितुर्वैमात्रेयस्तदभावे पितृसोदर-पुत्रपितृवैमात्रेयपुत्रपितृसोदरपौत्रपितृवैमात्रेयपौत्राणां क्रमेणाधिकारः— इति च श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायटीका (पृ० २१८) लिखनम् ॥ २ ॥

दौहित्रान्तपितृसन्तानाभावे पितामहो धनाधिकारी आसन्नत्वात्, तदभावे पितामही— इत्यादि विवादभङ्गार्णव(२ विधा० पृ० ३६४ ख) ग्रन्थलिखनम् ॥ ३ ॥

तदभावे पितामहाधिकारः दौहित्रान्तस्वसन्तानाभावे पितुरधिकार-वत्— इति दायक्रमसंग्रह (पृ० ७)ग्रन्थलिखनम् ॥ ४ ॥

तस्मात् पतितत्वनिस्पृहत्वोपरमैः स्वत्वापगम इत्येकः कालोऽपरश्च सति स्वत्वे तदिच्छातः इति कालद्वयमेव युक्तम् । मातुर्निवृत्तेरजसीतितत् पितामहधनाभिप्रायम् । निवृत्तरजसि पुत्रान्तरसम्भावनाभावात् तदानीमपि पितुरिच्छयैव पुत्राणां विभागः । अनिवृत्ते रजसि क्रमागतधन-विभागे पश्चाज्जातानां वृत्तिलोपापत्तेः । न चासौ युक्तः ।

ये जाता येऽप्यजाताश्च ये च गर्भे व्यवस्थिताः ।
वृत्ति तेऽपि हि काङ्क्षन्ति वृत्तिलोपो विगर्हितः ॥—
इति मनुवचनात्, इति दायभागग्रन्थ(पृ० २४)लिखनम् ॥ ५ ॥

वृत्तिलोपः पितामहधने निरंशकत्वम्[1]—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृत-दायभागटीका(पृ० २५)लिखनम् ॥ ६ ॥

जीमूतवाहनास्तु अनिवृत्ते रजसि क्रमागतधनविभागे पश्चाज्जातानां वृत्तिलोपापत्तेन चासौ युक्तः ।
ये जाता येऽप्यजाताश्च ये च गर्भे व्यवस्थिताः ।
वृत्ति तेऽपि हि काङ्क्षन्ति वृत्तिलोपो विगर्हितः ।
इति मनुवचनादित्याहुः ।
क्रमागतजीवनोपाय एव वृत्तिशब्देनोच्यते —इति *तेषामभिप्रायः* इति विवादभङ्गार्णव(२ विवा० पृ० ७२ क)ग्रन्थलिखनम् ॥ ७ ॥

सप्त वित्तागमा धर्म्या दायो लाभः क्रयो जयः—इत्यादि वचनम् (मनु० पृ० ४२२) ॥ ८ ॥

ततश्च पूर्वस्वामिसम्बन्धाधीनं तत्स्वाम्योपरमे यत्र द्रव्ये स्वत्वं तत्र निरूढो दायशब्दः—इति दायभाग(पृ० ५)ग्रन्थलिखनम् ॥ ९ ॥

तथा च तावदन्यतमसम्बन्धाधीनं सद् यत् पूर्वस्वामिस्वत्वनाश-जन्यं स्वत्वं तद्वति धने निरूढो दायशब्द इत्यर्थः। न तु स्वत्वनाशानन्तरं चेत्स्वत्वोत्पत्तिरिति, तदा तत्क्षणेऽस्वामिकतया निष्पादिवदुदासीनस्या-प्युपादानात् स्वत्वापत्तिरितिचेन्न, तत्र पुत्रादिसत्ताया एव विरोधित्वस्य पुत्राद्यधिकारबोधकशास्त्रसिद्धत्वात्—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभाग-टीका(पृ० ५)लिखनम् ॥ १० ॥

वस्तुतस्तु पितृस्वत्वमेव पुत्रस्वत्वोत्पत्तौ हेतुः । न चैवं पितृस्वत्वे विद्यमानेऽपि तद्धने पुत्रस्वत्वापत्तिः । तत्र पितृस्वत्वनाशकस्यापि सहका-रित्वात् । स्वत्वनाशश्च मरणपातित्यादि । तेषां स्वत्वनाशकत्वेन स्मृति-प्रतिपादितानां मरणत्वपातित्यत्वादिविशेषरूपेणैवाव्यवहितोत्तराधन्त-

१. निरंशित्वम्—दाभाटी० ।

मविरण पुत्रस्वत्वोत्पत्तौ हेतुत्वम्—इत्यादि श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीका(पृ० ५६)लिखनम् ॥ ११ ॥

ततश्च उत्पत्त्यैवार्थं स्वामित्वाल्लभेत इत्याचार्य्या मन्यन्ते—इति मिताक्षरा(पृ० १६६)धृतगौतमवचनम् ॥ १२ ॥

अमूलं समूलत्वे वा यस्मिन् गर्भस्थे पित्रादिर्मृतः तत्परम्-इत्यादि-श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीका(पृ० १४)लिखनम् ॥ १३ ॥

पितृनिधनकालीनं वा जीवनमेव पुत्रस्यार्ज्जनं भविष्यति—इति दायभाग(पृ० १६)ग्रन्थलिखनम् ॥ १४ ॥

पुत्रजीवनमेव स्वत्वहेतुः । तत्र पितृनिधनकालः सहकारीत्यर्थः । इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीका(पृ० १६)लिखनम् ॥ १५ ॥

बालदायादिकं रिक्थं तावद्राजानुपालयेत् ।

यावत् स स्यात् समावृत्तो यावच्चातीतशैशवः ॥—इति मनुवचनमिति (पृ० ८,२७) ॥ १५ ॥

अथचैतद्धर्म्माधिकरणप्रस्थापितसमुपस्थापितैतद्धर्म्माधिकरणीयव्यवस्थालिखितद्वितीयप्रमाणस्य तद्व्यवस्थालिखितपारसिकप्रतिरूपेण यादृशार्थोऽवगम्यते तादृशार्थस्तु कस्मिन्नपि ग्रन्थे न लिखितः । दायभागग्रन्थे तत्प्रमाणस्य यादृशार्थो व्याख्यातः स तु श्रीयुतहेनरीकुलबोकसाहेबाभिधानैतद्धर्म्माधिकरणप्राचीनाधिपतिकृतधर्म्मशास्त्रान्तर्गतवङ्गदेशचलितदायभागप्रतिरूपे इङ्गरेजीलिपिनिर्म्मिते विभागकालद्वयनिरूपणप्रकरणे विंशतिपत्रे एकविंशतिपत्रे च एतद्व्यवस्थायाः पञ्चमप्रमाणेऽपि च स्पष्टीकृतः इति निवेदनमिति ।

एतदब्दीयमार्च्चमासीयनवमदिनधम्मन्धिनुधवासरे षष्टिकैकाधिकयामद्वये दत्तेयं मया व्यवस्था ।

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

———

१०५—रोवकारि मिसिल आदालत देओयानि सदर तारिख १० माहे माइ सन १८३१ इङ्गरेजि मतावक तारिख २९ माहे वैशाख सन १२३८ साल वाङ्गला वुधवार ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत मान्तगोमो हेनरि टरम्बल साहेबेर वैठके।

शीवमलुकसिंह— आपिलाण्ट
रामप्रकाशसिंह— रेस्पाइण्ट

आपिलाण्टेर उकिलगण मौलवि नियामत आलि ओ सदासुख पण्डित रेस्पाइण्टेर उकिल मुनसि होसन आलि हाजिर हइल। आपरेल मासेर २७ ओ २८ ओ हाल मासेर ६ तारिखे ए मकद्दमा आमार वैठके उपस्थित हइया ऐ रोवकारिसकलेर विस्तुंशो कागजसकल पडागिया स्थकित थाकिल। अद्य पुनराय उपस्थित हइया एइ मासेर ६ तारिखे आपिलाण्टेर उकिलगण साक्षिदिगेर एजहारेर नकल समस्त जे दाखिल हइयाछिल ओ आवश्यकीय अनेक कागजात पुनराय पडागेल। वोध हइल जे तालुकजललनिर कर्त्ता उभयेर पूर्व्वपुरुष रामरुचसिंह तिन पुत्र राखिन। एक जन आपिलाण्ट शिवमलुकसिंहेर पिता भुपनारायण सिंह, ओ द्वितीय प्रेमनारायणसिंह जे मुकुन्द नामे एक पुत्र ओ दुइ २ १एक जन वक्तकोङर, द्वितीय मुकुन्दसिंह मजकुरेर माता नियत कोङरके राखिया मरियाछे। आर ऐ रामरुचसिंहेर तृतीय पुत्र हिङ्गलसिंहेर पिता ओ ए मकद्दमार मुद्दालेह रामप्रकाशसिंहेर पितामह देनजितसिंह, आर इहाओ प्रकाशजे ऐ प्रेमनारायन आपन जीवद्दसाते जललनि तालुक हइते आपन तृतीय हिस्या वावत मुकुन्दसिंह पुत्र ओ ममर्म्मात वखतकोङर ओ नियत कोङर आपन स्त्रीगणेर नामे प्रत्येकेर अंशेर विना शङ्काय एक केता हेवानामा लिखियादेय, ओ प्रेमनारायणसिंहेर मृत्युर पर ताहार पुत्र मुकुन्दसिंह अप्राप्तव्यवहार कालिन ओ ताहार पर ताहार स्त्री ममस्मात वखतकोङर ओ ममम्मात नियतकोङरेर मृत्यु पर मृत भुपनारायणसिंहेर पुत्र शीवमलुकसिंह ओ मृत-

देनजीतसिंहेर पुत्र दिङ्गलसिंह वर्त्तमाने आछे। चुडन्त हुकुम हओनेर पूर्व्वे एइ मकद्दमाते ए आदालतेर पण्डित हइते निचेर सओयालसकलेर जवाब व्यवस्था लओन उचित बोध हइया हुकुम हइल जे मसम्मात वखतकोङर ओ नियतकोङर मुद्दइयां बाबु सीउमलुकसिंह ओ देनजितसिंह मुद्दालेहेदिगेर नालिसी मकद्दमाय हिजरि स(न) १२६१ सालेर सहर जमादिअओलेर २५ तारिखेर लेखा, मृत प्रेमनारायणसिंहेर लिखित एक केता हेबानामा ओ १८५४ सम्वत मिति कोओयारा वदि सप्तमी तारिखेर लेखा, सीउमलुकसिंहेर लेखा, एक केता एकरारनामा लम्बर १३ ओ १५ सम्वलित एइ रोयकारिर नकल ए आदालतेर पण्डितेर स्थाने समर्पण कराजाय जे सप्ताह मध्ये ऐ सओयालेर जवाबे व्यवस्था लिखेन।

प्रथम—एइ जे मुकुन्दसिंह पुत्र ओ मसम्मात वखतकोङर ओ नियतकोङर आपन आपन ओगणके ताहारदिगेर प्रत्येकेर अंशेर विना शङ्काय ऐ प्रेमनारायण आपन पैतृक अंश हेबा करण शास्त्रानुसारे सिसि[1] वटे कि ना। ओ मसम्मात मजकुरा ऐ हेबा मते मुकुन्दसिंहेर मृत्युर पर हेबा करा तृतीय हिस्या हइते कि परिमाण्य अंशेर सत्वाधिकारि हइवेक।

द्वितीय—एइ जे मसम्मात मजकुरारा मुकुन्दसिंहेर मृत्युर पर स्थावर वस्तु हइते आपन स्वत्वेर समर्पके[2] ऐ हेबा अनुसारे दान ओ विक्रय ओ अन्य प्रकार हस्तान्तर करणेर क्षमता थाकिवेक कि ना।

तृतीय—एइ जे ऐ मुकुन्दसिंहेर मृत्युर पर ताहार माता नियतकोङर ओ विमाता वखतकोङर ओ ताहार खुडा देन[3]-जीतसिंह से कालिन वर्त्तमान छिल, ओ ऐहार खुडतात भ्राता शीउमलुकसिंह जियदसाय थाकने प्रेमनारायणेर अंशेर स्वत्वाधिकारि के हइवेक।

---

१. सिद्ध वटे। २. सम्पर्के। ३. दलजीतसिंह।

चतुर्थ—एइ जे यद्यपि मृत मुकुन्दसिंहेर त्यक्त अंशेर दखल ओ कायेजेर सत्वाधिकारि ताहार माता भगस्मांता बखतकोंउर ओ नियतकोंउर हइवेक, तवे उहादिगेर मृत्युर पर ऐ प्रेमनारायण सिंहेर दान करा अंशेर सत्वाधिकारि कोण व्यक्ति, भुपनारायण सिंहेर पुत्र शीउमलुकसिंह किम्वा देनजितसिंहेर पुत्र हिङ्गल सिंह अथवा दुइ जनाइ तुल्यांश हइवेक इति ।

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुत-मान्वकीयुहेनरीटरम्बलसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितैतद्धीयमेमासीयैकादशदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूप-पत्रमेयं सत्समर्पितत्रयोदशाङ्काङ्कितमृतप्रेमनारायणसिंहलिखितदानपत्र पञ्चदशाङ्काङ्कितश्रीमनोगसिंहलिखितसंवित(?) पत्रञ्च यत्तन्मासीयैकविंशति-दिनसंबन्धिशनिवासरे यामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि तेनैव प्रेमनारायणसिंहेन स्वपैतृकधनस्य स्वांशो मुकुन्दसिंहनाम्ने स्वपुत्राय वखतकुमरिनाम्न्यै नियतिकुमरिनाम्न्यै च स्वपत्न्यै तेषां त्रयाणां दानग्राहिणां मध्ये प्रत्येकमंशसंख्यामकृत्वैव दत्तः स्यात्तदा तद्दानं शास्त्रानुसारेण सिद्ध्यति, शास्त्रीयावश्यकदानादौ सामान्यतः पुत्राणामनुमतेरनावश्यकत्वेनाग्राह्यरूपाया अप्राप्तव्यवहारपुत्रानुमतेरनावश्यकत्वस्यार्थसिद्धत्वात्, पत्या पत्नीभ्यः स्त्रीधनदानस्यादत्तस्त्रीधनाभ्यस्ताभ्यो वा पुत्रधनांशदानस्य च शास्त्रीयत्वात्, प्रभुसमर्पितत्रयोदशाङ्काङ्कितदानपत्रेण प्रेमनारायणसिंहस्य पैतृकस्वांशस्य भ्रात्रादिभिः साधारण्याभावावगमेनाभ्रात्रादीनां तत्रानुमतेरप्यनपेक्षितत्वात्, भ्रात्रादीनां साधारण्येऽप्यप्रतिषेधरूपायास्तेषामनुमतेरस्तत्वाच्च, पञ्चदशाङ्काङ्कितश्रीमनोगसिंह लिखितसंवित(?)पत्रेण तथा पर्य्यवसानाच्च। एवं तद्दानानुसारेण पूर्व्वं प्रेमनारायणसिंहस्वत्वास्पदीभूतस्वांशस्य तृतीयांशाधिकारिणस्तत्पुत्रस्य मुकुन्दसिंहस्य मरणोत्तरं तन्माता नियतिकुमराख्या अंशद्वयाधिकारिणी, तद्विमाता वखतकुमराख्या च

तत्तृतीयांशरूपैकांशाधिकारिणी भवति। यतो यत्र दानादौ दानमादिश्यांशनियमो न कृतस्तत्र शास्त्रानुसारेण ते दानादिमादिशः समानांशिनो भवन्ति। तत्र मुकुन्दलिखितस्य पुत्रमारभ्य दौहित्रपर्य्यन्तरहितस्य मृतस्य तद्दानानुसारेण साधारणधनांशे तन्मातुर्विंध्यकुमराख्याया अधिकारस्य शास्त्रसिद्धत्वाद् इति ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

अत्र प्रमाणम्—

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनु(८।१५२)वचनम् ॥ १ ॥

अवश्यकर्त्तव्येषु[1] पित्रादिश्राद्धादिषु[2] स्थावरस्य दानाधमनविक्रयमेकोऽपि समर्थः कुर्य्याद्–इति मिताक्षरादिग्रन्थलिखनम् (पृ०२००) ॥ २ ॥

तत्र तद्विधानबलादेवाधिकारो गम्यते—इति मिताक्षरादिग्रन्थलिखनम् (मिता० पृ० २००) ॥ ३ ॥

पितृमातृपतिभ्रातृदत्तमध्यग्न्युपागतम् ।
आधिवेदनिकाद्यञ्च स्त्रीधनं परिकीर्त्तितम् ॥—इति मिताक्षरादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् (याज्ञ० २।१४३) वचनम् ॥ ४ ॥

यदि कुर्य्यात् समानांशान् पत्न्यः कार्य्याः समांशिकाः ।
न दत्तं स्त्रीधनं यासां भर्त्रा वा श्वशुरेण वा ॥—इति मिताक्षरादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् (याज्ञ० २।११५) ॥ ५ ॥

अप्रतिषिद्धं परमतमप्यनुमतं[3] भवति—इति दत्तकचन्द्रिकादिग्रन्थलिखनम् (दत्तच० पृ० १२) ॥ ६ ॥

समं स्यादश्रुतत्वादंशस्य[4]—इति वीरमित्रोदयादिग्रन्थलिखनम् (वी० मि० पृ० ५६५) ॥ ७ ॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः—इत्यादि मिताक्षरादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य(२।१३५)वचनम् ॥ ८ ॥

---

१. °षुच　२. पितृश्राद्धादिषु इति मिता०　३. परमनुमतम्—दत्तच० ।
४. अविशेषश्रवणे सति सम स्यादश्रुतत्वात्—इति वीमि० पाठः

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

मुकुन्दसिंहस्य मरणोत्तरं तन्मातुर्विमातुर्वा प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रकारेण स्वस्वत्वास्पदीभूतान्तर्गतस्थावरधने अदृष्टार्थं दृष्टादृष्टावश्यककार्यार्थं स्वस्वभरणपोषणार्थं वा दानप्रकारेण विक्रयप्रकारेण वा अन्यप्रकारेण वा हस्तान्तरकरणे क्षमता स्यास्यत्येव, अन्यथा न स्यास्यत्येव। यतश्शास्त्रानुसारेण भर्तृदत्तस्थावरे पत्न्या उपरिलिखितादृष्टार्थादिव्यतिरेकेण यथेष्टदानविक्रयादौ नाधिकारः, पुत्रादिदौहित्रान्तरहितस्य मृतस्य पुत्रस्य धने उत्तराधिकारित्वेन मातुरधिकारे जातेऽपि तस्या उपरिलिखितादृष्टार्थादिव्यतिरेकेण तद्धनेऽपि यथेष्टदानविक्रयाद्यनधिकारश्चेति ॥ ०॥

अत्र प्रमाणम्—

भर्त्रा प्रीतेन यद्दत्तं स्त्रियै तस्मिन् मृतेऽपि तत् ।
सा यथाकाममश्नीयाद् दद्याद्वा स्थावरादृते ॥

इति मिताक्षरा(पृ० १६६)वीरमित्रोदयादि(पृ० ६६१)ग्रन्थधृतनारद(नामसं० २।२४)वचनम् ॥ १ ॥

अदृष्टार्थे दाने दृष्टादृष्टावश्यककार्यार्थमाधौ विक्रये चास्त्येव पत्न्याः सकलभर्तृधनविषयोऽधिकारः—इति वीरमित्रोदय(पृ० ६२०)ग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

एकत्र निर्णीतः शास्त्रार्थो बाधकं विनाऽन्यत्रापि प्रवर्त्तते—इति उपरिलिखितग्रन्थलिखितम् ॥ ३ ॥

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि तस्यैव मुकुन्दसिंहस्य मरणोत्तरं तन्माताऽनियतकोमराख्या तद्विमाता बसन्तकोमराख्या च तदानीं जीवन्त्यासीत्, तत्पितृव्ये दलजीतसिंहे पितृव्यपुत्रे श्रीमनोगसिंहे च जीवति सत्यपि प्रेमनारायणसिंहस्य पूर्वस्वत्वास्पदीभूतांशस्य प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रकारेणाधिकारिण्यौ नियतिकुमरिबसन्तकुमर्यावेव[१] भवतः, तयोर्जीवन्त्योः मुकुन्दसिंहपितृव्यस्य पितृव्यपुत्रस्य वा तत्र नाधिकारइति ॥

१ कुमार्यौ व्यव० ।

अत्र प्रमाणानि—प्रथमप्रश्नोत्तरप्रमाणानि सर्वाण्येवेति—

चतुर्थप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्यपि मृतस्य मुकुन्दसिंहस्य त्यक्तधनांशस्य स्वत्वाधिकारिणी तन्माता नियतकुमराख्या प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रकारेण जाता, तदा तन्मरणानन्तरं तत्र मनारायणसिंहकृतदानकृतस्यांशस्यान्तर्गतस्य प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रकारेण मुकुन्दसिंहस्वत्वास्पदीभूतस्य तत्तृतीयांशस्याधिकारी मुकुन्दसिंहस्य पुत्रमारभ्य पितामहपर्यन्तो नास्ति, तत्पितृव्यो भूपनारायणसिंहो दलजीतसिंहो वा कश्चिद् विद्यमानश्चेत्तदा स एव भवति। तौ द्वौ चेद् द्वावेव तुल्यांशिनौ[1] भवतः। पितृव्याणां मध्ये कस्यचिदपि एकस्य तदानीं विद्यमानत्वाभावे तत्पितृव्यपुत्रौ श्रीमनोगसिंहहिङ्गलसिंहाख्यौ द्वावेव तुल्यांशिनौ भवतः। नियतकुमराख्याश्च चखतकुमराख्यायाश्च प्रत्येकं (?) मरणोत्तरं तयोः स्वस्वत्वास्पदीभूततृतीयांशस्याधिकारी। यदि तयोः प्रत्येकं दुहितृदौहित्रीदौहित्रपुत्रपौत्रप्रपौत्रभर्तृसपत्नीपुत्रपौत्रप्रपौत्रदुहितृदौहित्रश्वश्रूश्वशुरपर्यन्तानां स्त्रीधनाधिकारिणां मध्ये कश्चिन्नास्ति तयोः पतिभ्राता भूपनारायणसिंहो दलजीतसिंहो वा कश्चित् तदानीं विद्यमानस्तदा स एवाधिकारी भवति, तौ द्वौ चेद् द्वावेव तुल्याधिकारिणौ भवतः। तयोर्मध्ये एकस्याप्यभावे तयोः पुत्रौ श्रीमनोगसिंहहिङ्गलसिंहाख्यौ द्वावेव तुल्यांशिनौ भवतः—इति पश्चिमदेशप्रचलितमनुमिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारमाधवव्यवहारकौस्तुभदत्तकचन्द्रिकादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा।
तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः—इत्यादि मिताक्षरादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य-(२।१३५) वचनम् ॥ १ ॥

तत्र च *पितृसन्तानाभावे पितामही पितामहः पितृव्यास्तत्पुत्राश्च क्रमेण धनभाजः*—इति मिताक्षराग्रन्थलिखनम् (पृ० २२३) ॥ २ ॥

पूर्वोक्तं स्त्रीधनमप्रजस्यनपत्यायां दुहितृदौहित्रीदौहित्रपुत्रपौत्र-

[1] तुल्यांशिनौ—व्य०।

प्रपौत्ररहितायां स्त्रियामतीतायां बान्धवा भर्त्रादयो वक्ष्यमाणा गृह्णन्ति—इति मिताक्षरायन्यलिखनम् (पृ० २२६)॥ २॥

अप्रजसः स्त्रियाः पूर्वोक्तरूपाया ब्राह्मदैवार्षप्राजापत्येषु चतुर्षु विवाहेषु भार्यात्वं प्राप्ताया अतीतायाः पूर्वोक्तं धनं प्रथमं भर्तुर्भवति, तदभावे तत्प्रत्यासन्नानां सपिण्डानां भवति—इति मिताक्षरादिग्रन्थलिखनञ्चेति (पृ० २२६)।

ज्येष्ठमासीयद्वितीयदिनसम्बन्धिबृहस्पतिवासरे दत्तेयं मया व्यवस्था इति ।

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१०६ रोयकारि मिशिल सदर देओयानि आदालत तारिख १८ माइ सन १८३१ साल इङ्गरेजि मोताबक ६ ज्येष्ठ शन १२३८ साल बाङ्गला रोज बुधवार ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत कटवरट थरटेन शिलि साहेबेर बैठके—

राजा गोविन्दनाथराय	आपिलाण्ट
गोलालचन्द्र ओरफे लालकावाबुगं	रेस्पाडण्ट

आपिलाण्टेर उकिल मुनशि होसेन आलि ओ रेस्पाडण्टगणेर उकिल सक मुनशी गोलाम बतुल ओ सदाशुक पण्डित हाजिर आइलेन। एइ मकद्दमा एइ माहार १०।११।१२।१६।१७ तारिखसकले आमार बैठके रुयकार हइया नालिसि आरजि प्रभृति प्रेविनशेल कोर्टेर कागजसकल फयशला पर्य्यन्त ओ एइ आदालते दाखिलि हओया सओयाल जवाव ओ गयरह् कायजात[1] पडागिया स्थकित छिल, अद्य पुनराय रुवकार हइया गत दिवसेर दाखिल हओया कागजात दृष्टे आसिल। यथा.चूडन्तहुकुम प्रकाश हओनेर पूर्व्वे एइ आदालतेर पण्डितेर स्थाने एइ

१. कागजात।

विशय ज्ञात हओन उचित हइलये अछियतनामा अनुसारे ये तद्द्वाराय मुतिचन्द्रके पुष्य पुत्र विवेचना करणेर क्षमता राखे कि ना। अतएव हुकुम हइल ये एइ रुवकारिर नकल अछियतनामा सम्वलित एइ आदालतेर पण्डितेर स्थाने एइ हुकुमे समर्पण कराजाय ये निचेर लिखित प्रश्नसकलेर उत्तर जेइन शास्त्रानुसारे यद्यपि थाके नतुवा एतद्देशीय चलित शास्त्रानुसारे दुइ सप्ताह मध्ये लिखेन।

प्रथम प्रश्न—एइ ये विरोधिय लाटसकलेर कर्त्ता उत्तमचन्द्र ताहार पुष्य पुत्र विवेचना करण जैन्ये ओ उहार सत्य रक्षणार्थे मुतिचन्द्रके ओछि मकरर करिया अछियतनामा लिखियादिया मृत्यु हइल। ऐ मुतिचन्द्र मजकुरके आपन जीवत दशाय पुष्य पुत्रेर विवेचना करणेर सावकाश ना हइया प्राप्ति हय। अतएव मुतिचन्द्रेर मृत्युर पर उत्तमचन्द्रेर स्त्री मुसम्मात मायाकोडर पुष्य पुत्र विवेचना करणेर क्षमता राखे किना।

द्वितीय प्रश्न—यद्यपि जेइन शास्त्रे थाके तवे ऐ शास्त्रानुसारे स्त्रेष्ठ पुष्य पुत्र हइते पारे किना।

तृतीय प्रश्न—एइ ये जेइन शास्त्र मते कत वतसरेर पुत्र दत्तक हइते पारे, एवं ताहार संख्या कि।

चतुर्थ प्रश्न—एइ ये पुष्य पुत्र राखनेर एवं ताहार सिद्धि हओनेर जैन्ये कि कि नियम घटे इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतदस्मांधिकरणाधिपतिश्रीयुतकटवरटयरलेनसिलीथाहेवधर्म्माधिकरणलिखितैतदब्दीयमेमासीयाष्टादशदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितमसीयतनामाख्यं पत्रं च यदेतदब्दीयजुनमासीयप्रथमदिनसम्बन्धिबुधवासरे सार्द्धघटिकात्रयाधिकयामद्वयानन्तरं *मया प्राप्तं* तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

विवादास्पदीभूतसराजक(र)स्थावरसमुदायस्य स्वामी उत्तमचन्द्रनाहारः स्वकीयपोष्यपुत्र[1]विवेचनाकरणार्थं मतिचन्द्रनाम्नोऽस्मीशन्दप्रतिपाद्यत्वेन नियोगं कृत्वा तस्मै चाक्षीयआमाख्यं पत्रं लिखित्वा दत्त्वा मृतः स्यात्तस्यैव मतिचन्द्रस्य स्वजीवनदशायामुत्तमचन्द्रस्य पोष्यपुत्रविवेचनाकरणस्या[2]-प्रकाशेऽजाते सत्येव मरणेनोत्तमचन्द्रस्य पत्नी मायाकोमराख्या पोष्यपुत्र-विवेचनाकरणक्षमतां रक्षत्येव[3] जैनशास्त्रानुसारेण[4] पतिमरणानन्तरं पुत्र-वत्याः पत्न्याः पतिवत् कार्य्यमात्रकरणे स्वाच्छन्द्येन[5] पुत्रशून्यायाः[6] पत्यनु-मतौ सत्यामसत्यां वा शतीनाम्[7] आज्ञायां सत्यामसत्यां वा स्वयंमेव पोष्य-[8]पुत्रकरणक्षमताया अर्थसिद्धत्वात्। तत्र चोत्तमचन्द्रनाहारेण स्वपितुः पाल-कपुत्राय मतिचन्द्राय स्वकीयपोष्यपुत्रविवेचनाकरणाज्ञायां दत्तायामपि-दैवात् तदकृत्यैव मतिचन्द्रस्य मरणे[9] सत्यपि जैनशास्त्रानुसारेण पत्यनु-मतिमन्तरेणापि पोष्यपुत्रग्रहणाधिकारिण्याः पतिमरणानन्तरं पतिवत् स्वा-च्छन्द्येन, कार्यमात्राधिकारिणश्चोत्तमचन्द्रनाहारस्य पत्न्या मायाकोम-राख्या(या)स्तद्विवेचनाकरणक्षमतायामपि बाधकाभावाच्चेति ॥ ० ॥—

अत्र प्रमाणम्

यस्या स्त्रिया भर्त्ता[10] नास्ति सा यद् भव्यं तत्कारयतु इति गौतमप्रश्नी-यमन्यभूतवर्धमानस्वामिवचनम् ॥ १ ॥

अस्मिन् जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे कुरुजङ्गलदेशः *स्थितः। तस्मिन्* हस्तिनापुरे वज्रजङ्घाख्यो राजाऽभूत्। तस्य *मह* यवतीयतिदेवता वज्रमतीपट्टराज्ञी[11] आसीत्। *तस्मिन्नेव नगरे* कमलकान्ताख्यः कश्चि-देको धनी *स्थित*स्तस्य कमलाश्रीनाम्नी पत्नी बभूव। तस्य श्रेष्ठिनो

१. पोष्यपुत्र—व्यप०। २. पुण्यपुत्र—व्यप०। ३. रक्षत्येन—व्यप।
४. चेन—व्यप०। ५. स्वाच्छन्देन—व्यप०। ६. पुत्रशुन्यायाः—व्यप०।
७. शतीनाम्—व्यप०। ८. पोष्य—व्यप०। ९. मायो—व्यप०।
१०. भत्ता—व्यप० ११. पट्ट०—व्यप०।

-द्वात्रिंशत्कोटिपरिमिता मुद्राः स्थिताः। तासु मध्येऽष्टकोटयो मुद्रा -मृन्मध्ये निखाताः[1] पुनरष्टौ[2] कोटयो मुद्रास्तरणीषु, व्यवहारार्थं स्थापिताः, पुनरष्टौ कोटयो मुद्राः देशान्तरे व्यवहाराय प्रेषिताः, तदनन्तरमष्टौ कोटयो मुद्राः गृहेषु स्थापिताः। एवं त्रिंशत्सहस्रोत्तरद्विलक्षपरिमिता धेनवः स्थिताः। एवं तस्य पञ्चशतपरिमिता अधिकारिणः स्थिताः। तेषु मध्ये एको गाथापतिवंशोद्भवः सुमतिशिरोमणिनामधेयो[3] महा-मतिरासीत्। स तु धनिना कमलाकान्तेन पुत्रवन्मन्यते। स तु कमला-कान्तः किञ्चित्कालानन्तरं ज्वरातुरः सन् परलोकं गतवान्। ततः सप्तवर्षानन्तरं स गाथापतिवंशोद्भवः सुमतिशिरोमणिर्विद्युत्पातेन[4] प्रणष्टः। तदनन्तरं कमलाश्रियाः सहायाभावाद्धनरक्षाप्रमादो जातः। तदैकस्मिन् समये उदासीनतया मनस्ये[5] तद्विवेचितमिति। यदास्मीयं विना संसारादि-रक्षा नो भवितुमर्हति, अत एकः पालकपुत्रो विधेयः। ततस्तस्मिन्नेव समये तदुद्यानपालेनागत्य श्रेष्ठिनीं प्रति निवेदितम्। यदशोकवाटिकायां पञ्चद-शशतर्षिभिर्युक्तश्चतुर्विधबोधशाली(य)धर्मघोष[6]सरितानामाचार्यस्समा-गतः[7]। तस्य दर्शनार्थं हस्तिनापुरवासिभिस्तत्रैव गम्यत इति। तत उद्यानपालाभिहितं निशम्य कमलाश्रिया श्रेष्ठिन्या धनवत्या तदुपदेशं-नार्थं तत्रैवोपस्थितम्। (तत्र च) धर्मपुराणीयकथाविशम्य तमाचार्य-मञ्जलिं बद्ध्वा[8] "भो भगवन्, मम स्वामिनामरक्षा धनरक्षा आत्मनोऽपि रक्षा कथं भवेदिति" पृष्टम्[9]। तदा श्रेष्ठिन्याभिहितं श्रुत्वा आचार्येण वक्तुमारब्धम्[10]। "वर्षं यद्य[11] प्रभृति मासाभ्यन्तरेऽशोकवाटिकायां खलु 'यशोरालये' क्षत्रियजातयो द्वात्रिंशद्वर्षवयस्कवृद्धदेवराजसप्तविंशतिवर्ष-

---

१. निखाता—व्यप०।
२. अष्टौ० व्य० प०।
३. नामधेयो—व्यप०।
४. विद्युत्पातेन—व्यप०।
५. मनसे—व्यप०।
६. चतुर्विधबोधशालीधर्मघोष—व्यप०।
७. ०स्समागतः—व्यप०।
८. पठन्—व्यप०।
९. वर्त्ता—व्यप०।
१०. यद्दव—व्यप०।
११. यशो—व्यप०।

वयस्कद्वितीयहंसराजद्वाविंशतिवर्षवयस्कतृतीयधनराजषोडशवर्षवयस्कच-
तुर्थधर्मराजाख्या एकमातृका महाजना आगमिष्यन्ति । तन्मध्ये
अभिलषितमेकं कश्चित् पुत्रत्वेन स्वीकुर्विति" तदनन्तरमाचार्य्यमुखात्
श्रेष्ठिका तेषां वार्तां श्रुत्वा सुप्रसन्नेव तन्नमस्कृत्य पुनः पृच्छति । "यतः
कि कृत्वा स्वे·········· इति ।" तदभिहितं निशम्याचार्यो वदति स्म ।
"यदग्रे ऋषभदेवस्य नवाङ्गानि पूज्यानि, तदनन्तरं गुरुपुस्तकयोः पञ्-
चोपचारेण, षोडशोपचारेण वा पूजा कार्य्या" इत्युक्तम् । एवं गुरुभक्ति-
र्विधेया, पश्चाद् गुरुमुखान्मङ्गलवाक्यं श्रुत्वा पश्चान्निजकुलदेवीं प्रपूज्य
तदनन्तरं चतुर्विधसंघसान्निध्ये एवं देशाधिपतिसमीपे शुभ गृहीत्वा निज-
ज्ञातीयभोजनाय भक्तिर्विधेया इत्थ ·········दम्पतीर्भोजयित्वा एवं शुभ-
मुहूर्त्तं दृष्ट्वा 'नमो अरिहताणम्' इत्युक्त्वा तं स्वपदे निवेश्य यद्रोलीति-
लकबिन्दुमुक्तादामतृणफुलफलचूर्णानि तस्मै दातव्यानि एवं शङ्ख-
ध्वनिर्भेरी(ध्वनिः) पुनर्नानावाद्यनृत्यादिकं कर्त्तव्यम् । एवं प्रकारेण
पुनः सौभाग्यवतीभिः स्त्रीभिः सहगीतध्वनिः[1] स्वीयस्वीयमुखेन नानाविध-
मङ्गलाचारो विधेयः । एव श्रद्धया निजज्ञातिभ्य एवाथवाऽन्येभ्यो[2]द्रव्य-
मथवा श्रीफलादि दातव्यम् । एवं निर्द्धनश्चेत्तेन[3] पुगी[4]फलमेव दातव्यम् ।
रात्रिजागरणमपि विधेयम् । ताम्बूलादिकमपि प्रत्येकं प्रत्येकं दातव्यम् ।
अधिकं तु आचारादि आकरे द्रष्टव्यम् (?) । अथ किंचिन्मात्रमुक्तम्[5] ।
श्रीवर्द्धमानस्याभिहितं वाक्य श्रुत्वा पुनर्वदति[6] "भगवन् , कदाचि-
दसौ धर्मे न स्थास्यति, यतः स्वे (?) ˝ पुत्रो यदि मम सेवानिरतो न
भवेदेवं कुव्यसनेन धनक्षयं कुर्यात्, तदा मया कि कर्त्तव्यम्" इति ।
तदीयं वाक्यमाचार्य्येण श्रुत्वा पुनरुक्तं "यद्यप्यसौ धर्मे न स्थास्यति तदा
त्याज्यो यथा अहिना दष्टमङ्गं पंचजनैस्त्यज्यते, तथा यः पोष्यपुत्रस्त[7] कथं
न त्यजेत्" इति तदीयाभिहितं श्रुत्वा पुनस्तमाचार्य्यं नमस्कृत्य निजगृह-

---

१. ध्वनिः—व्यप० ।
२. निजज्ञातिभ्यस्तेनाथवा अन्यद्रव्यम—व्यप० ।
३. निर्धनश्चेत्तेन—व्यप०
४. श्चेत्तेन पुंगाफलम्—व्यप० ।
५. किञ्चिन्मात्रेण—व्यप० ।
६. पुनर्वदति—व्यप० ।
७. यो पुष्पपुत्रम्—व्यप० ।

मागत्य तत्राशोकवाटिकायां[1] चत्वारः सेवका नियोजिताः। यदा[2] मासः पूर्णो जातस्तदा आचार्य्यनिर्दिष्टाश्चत्वारो महाजनास्तस्यामशोकवाटिकायामागताः। तेषामागमनं दृष्ट्वा श्रेष्ठिकानियोजिता आगत्य कमलाश्रियं प्रति तेषामागमनवृत्तान्तं विज्ञापितवन्तः। कमलाश्रीरपि तद्वृत्तान्तं[3] श्रुत्वा तांश्चतुरो[4] गृहमानीय आचार्य्याज्ञया पुत्रत्वेन तेषां ज्येष्ठं देवराजाख्यं स्वीकृतवतीति गौतमप्रश्नीयमन्यलिखनम् ॥१॥

श्रीसिंहपुरनगराधिपतेः सिंहसेनस्य सिंहावतीनाम्नी महिष्यासीत्। तया सह सुखेन राज्यं कृतम्। तत्रानन्दपरमानन्ददेवानन्दाः क्षत्रियवंशोद्भवाः दुःखिनस्त्रयो भ्रातरः। तेषु मध्ये आनन्दाभिधान एको भ्राता धेनुं जुगोप। परमानन्दाभिधानो द्वितीयो भ्राता विविधकाष्ठमानीय विक्रयामास। देवानन्दाभिधानस्तृतीयो भ्राता शिशुः स्थितः। तदा सर्वैर्नगरस्थैर्जनैरानन्दस्य गोपाल इति नाम कृतम्, द्वितीयस्य परमानन्दस्य काष्ठजीवीत्यभिधानं कृतम् परन्तु ते त्रयो भ्रातर एकस्मिन्नेव स्थाने स्वकीयं स्वकीयं कार्यं कुर्वन्तः। तत्रैकं यतिं विलोक्य त्रिभिर्भ्रातृभिर्मिलित्वा तं यतिं नत्वा स्थितम्। तदा स यतिस्तान् प्रति धर्ममुपदिष्टवान्। तदा ते मुनिधर्म्मोपदेशं निशम्य प्रीतिरता बभूवुः। पुनः साध्वाननात् परिमितं वाक्यं श्रुत्वा तेनाभ्यस्तं रात्रौ जलं न पातव्यमिति। तत्र कानने पुनश्च धेनुं पालयता तत्रैव निम्नगाकूले श्रीऋषभदेवस्य मृन्मयीं[5] प्रतिमां विधाय[6] तत्रैकं गृहं कारयित्वा तन्मध्ये श्रीभगवतः प्रतिमा स्थापिता। तत्र प्रतिदिनं तेन तदर्चनं कृतम्। तत एकस्मिन् समये ऋषिमुखात् भक्तामरस्य माहात्म्यं शुश्राव। ततः ऋषिरानन्दं भक्तामरं पाठयित्वा जगाम। तदनन्तरमानन्दाख्यः श्रीभगवतोऽग्रे प्रतिदिनं भक्तामरं स्मरतिस्म[7]। तदेकस्मिन् दिने चक्रेश्वरीनाम्नी देवी प्रत्यक्षमागत्य[8]-

---

१. तत्रानेकवाटिकायाम् व्यप०।
२. तदा व्यव०।
३. तद्वृत्तान्तम्० व्य० प०।
४. तांश्चतुरो व्यप०।
५. मृण्मयीं व्यप०।
६. प्रतिमामभिधाय व्यप०।
७. स्मृति रम व्यप०।
८. प्रत्यक्ष प्रागत्य व्यप०।

स्मिन्नगरेऽधिपति (स्त्वं) भविष्यसीति वरं दत्त्वा अन्तर्हिता[1] जाता। ततः किञ्चित्कालानन्तरं तन्नगरस्याधिपतिर्मृतःतस्यात्मजो न स्थितः। तदनन्तरं तस्य महिषी सिंहावती नाम्नीपुत्रशोकातुरा पण्मास[2]…र्द्धदिन पर्य्यन्तं राज्यं कृतवती। तदैकस्मिन् समये वनयात्रार्थं महिषी सखीभिः[3] सह मिलित्वा वनं जगाम। तत्र कानने निम्नगाकूले एकं स्थानं दृष्टवती। सिंहावतीनाम्नी राज्ञी तत्रालये गत्वा श्रीऋषभदेवस्य मृन्मयीं[4] प्रतिमां विलोक्य तस्याः प्रतिमायाः स्तुतिं चकार। पुनस्तस्याम्[5] आनन्दो भक्ता-मरं[5] स्मरति[6]स्म। तत्रैव परमानन्ददेवानन्दौ स्थितौ। तान् त्रीन् भ्रातॄन् विलोक्य मनस्येतद्विवेचितम्-यतो मम पुत्रा[7] न स्थिताः किन्त्वद्य भगवता ऋषभदेवेन त्रयः पुत्रा मह्यं दत्ताः, अद्यैव मदीयं सर्व्वं दुःखं गत-मिति[''] महिषी विचार्य्य आनायितान् तान् पुनः पुनर्विलोक्य पृच्छति स्म "हे वत्साः, युष्माकं किमाख्यास्तद् युष्माभिः प्रकाशनीयाः।" तदा त्रयो भ्रातरोऽञ्जलिं बद्ध्वा, तन्मध्ये आनन्दाभिधेयो ज्येष्ठभ्राता वदति स्म "हे अम्ब, वयं त्रयः सहोदराः, मम आनन्द इत्यभिधानम्, द्वितीयस्य परमानन्द इत्यभिधानम्, तृतीयस्य देवानन्द इत्यभिधानम्। तन्मध्ये ज्येष्ठ आनन्दाभिधानः श्रीऋषभदेवस्याग्रे सिंहवत्या महिष्या पुत्रत्वेन स्वीकृतः। तस्मात् काननात् कश्चिदेको भृत्यः स्वग्रामे प्रेषितः 'त्वया तत्र गत्वा सुमत्यधिकारिणं प्रति वक्तव्यम् भवता-चन्द्रशेखर-कर्णलोचन-रूपसेना-ख्यैरमात्यैः सह पञ्च द्रव्याणि शङ्खादीनि गृहीत्वा तत्र गन्तव्यमिति'। तत्रैव तस्मिन् समये श्रीसिंहकेशरसूरि[8]नामाचार्य्यस्समागतः। तत्रै-वानन्दाख्येन पुत्रेण सह महिषी धर्म्मोपदेशमाकर्ण्य तमाचार्य्यं पृच्छतिस्म "भगवता पोष्यपुत्रेऽस्मत्को वक्तव्यः" तदीयाभिहितं निशम्य यत्नुमारब्धम् "यतो[10]" गोतमप्रश्नीयवत् श्रीमज्जिनेश्वरस्य नवाङ्गीं पूजां कृत्वा पश्चाद्

---

१. भावता—व्यव० । २. षण्मास—व्यव० ।
३. सखिभिः—व्यव० । ४. मृगानयों—व्यव० ।
५. भक्तामरम्—व्यव० । ६. स्मृतिस्म—व्यव० ।
७. न प्रपुत्रान—व्यव० । ८. मात्रा—व्यव० ।
९. °सूरि—व्यव० । १०. यतो—व्यव० ।

गुरुपुस्तकज्ञानोपकरणवस्त्रद्रव्यादिपूजा पञ्चोपचारेण षोडशोपचारेण वा कार्या" इत्युक्तम् "औरस पुत्र जन्मोत्सवसमयोत्सववत् पालकपुत्रोत्सवः कर्त्तव्यः। तदनन्तरं चतुर्विधसिंहसात्त्विके निजकुलदेवी पूजनीया, तदनन्तरं स्वकीयज्ञातिभ्यो भोजनं मिष्टान्ने रससंयुक्तैर्दद्यात्। तदनन्तरं ताम्बूलवस्त्रद्रव्यश्रीफलपूगीफलानि[1] च प्रत्येकं दातव्यानि एतदपेक्षयाधिकपुत्रोत्सवविधिराचारदिनकरे द्रष्टव्यः" । एतत् सिंहकेसरसूरिणाचार्येणोक्तम् तदा पूजाद्रव्यं गृहीत्वा अमात्यैः सह सुमितिराजगाम। पुनः सिंहावती राज्ञी आनन्देन सह श्रीऋषभदेवस्य मृन्मयीं प्रतिमां विधाय षोडशोपचारेण प्रतिमां प्रपूजितवती। तदनन्तरं तस्य स्तुतिसमये श्रीऋषभदेवस्य सकाशात् पुष्पमानन्दस्य[2] शिरसि पपात। तदा आकाशात् "जय जय" इति शब्दो जातः। इत्याश्चर्यम् तदा सुमतिना चन्द्रशेखरकर्णलोचनरूपसेनामात्यैर्मन्त्रिभिः सह प(ञ्च) तद्द्रव्याणि गृहादानीय तस्य आनन्दस्याग्रे स्थापितानि। तदनन्तरं तैः पञ्चद्रव्यैस्तत्तत्कार्याणि तेन कृतानि। तदनन्तरं तस्मात् स्थानात् अमात्यैः सह शङ्खवाद्यभेरीनानाप्रकारादिध्वनिर्गीतादिज्ञातिशोभा(न्वितो[3] दिभिः) सह महामहोत्सवमानीय स्वगृहमागत्य आनन्देन राज्यसिंहासने स्थिता। तस्य परमानन्दो द्वितीयो भ्राता युवराजः कृतः। तस्य देवानन्दस्तृतीयो भ्राता भटपतिः कृतः। किञ्चित् कालानन्तरं तद्देशाधिपतिभिः सह तस्य युद्धमभूत्। पुनस्तान् जित्वा सुखेन राज्यं कृतवान्। इति भक्तामरस्तुतिमन्त्र लिखनम् ॥ १ ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

जैनशास्त्रानुसारेण ज्येष्ठपुत्रः पोष्यपुत्रो भवितुं शक्नोति, जैनशास्त्रे ज्येष्ठपुत्रस्य पोष्यपुत्रताया निषेधाभावात्, तच्छास्त्रे पूर्वेषां तच्छास्त्रानुसारेण व्यवहरतां राज्ञां वणिजां च स्त्रीणां ज्येष्ठपुत्रस्य पोष्यपुत्रकरणस्य लिखितत्वेनेदानीन्तनानामपि जैनशास्त्रानुसारेण व्यवहर्त्रीणां स्त्रीणां तथा व्यवहारस्य भवितुं शक्यत्वाच्चेति---

---

१. पूगीफलानि—व० पु०।

२. प्रतिमानन्दिका—व्यव०।

३. अन्वितः—व्यव०।

अत्र प्रमाणानि उपरिलिखितानि त्रीणि ॥ २ ॥

भो गौतम, अस्माकं मते ज्येष्ठकनिष्ठत्वे दत्तकः शिशुर्ग्राह्यः सर्व्वलक्षणसंयुतः—इति गौतमप्रश्नीयग्रन्थधृतवर्द्धमानस्वामिवचनम् ॥

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

जैनशास्त्रानुसारेण गर्भाधानदिवसमारभ्य द्वात्रिंशद्वर्षपर्य्यन्तवयस्कः पोष्यपुत्रो भवितुं शक्नोति ॥०॥०॥

अत्र प्रमाणम्—

कियद्वायनमितवयस्कः पुत्रो ग्राह्य इति गौतममुनेः प्रश्नः। यदा तदा भगवता वर्द्धमानस्वामिनोक्तम् स गर्भमारभ्य द्वात्रिंशद्वर्षपारमितवयस्कः पुत्रोग्राह्यः—इति गौतमप्रश्नोक्तग्रन्थलिखनम् ॥०॥०॥०॥

चतुर्थप्रश्नस्योत्तरम्—

जैनशास्त्रानुसारेण पोष्यपुत्रग्रहणार्थमेवं तत्सिद्ध्यर्थमेते[1] नियमाः। तथाहि—*ऋषभदेवाख्यस्य तद्देवस्य प्रथमतो नवाङ्गपूजनं तदनन्तरं गुरुपुस्तकयोःपञ्चोपचारेण षोडशोपचारेण वा पूजा कार्य्या एवं गुरुभक्तिर्विधेया, पश्चाद् गुरुमुखात् मङ्गलवाक्यं श्रुत्वा निजगुरुदेवी प्रपूज्य गुरुगुरुपत्नीज्ञातिज्ञातिपत्नीनां चतुर्णामेवं ग्रामाधिपतेर्निवेदनं कृत्वा पुत्रं गृहीत्वा निजज्ञातीनां सपत्नीकानां भोजनं दत्वा शुभमुहूर्त्तं दृष्ट्वा*[2] *म(न्त्र)-पाठपूर्व्वकं स्वस्थाने बालकमुपवेश्य रोलीयतिलकबिन्दुमुक्तबिन्दु तण्डुलचूर्णानि वा तस्मै ललाटे दातव्यानि, एवं शङ्खध्वनिभेरीत्यादनानावाद्यनृत्यगीतादि नानाप्रकारेण सौभाग्यवतीभिः स्त्रीभिः स्वीयस्वीयमुखेन नानाविधमङ्गलाचारो विधेयः। एवं श्रद्धया*[3] *स्वज्ञातिभ्यो वस्त्रद्रव्यताम्बूलश्रीफलपूगीफलानि दातव्यानि*[4]; *निर्धनश्चेत् पूगीफलमेव दातव्यम्, रात्रिजागरणमपि विधेयम्*-इति गौतमप्रश्नीयभक्तामरस्तुति-

---

१. सिद्धर्थम् व्यप० ।
२. दृष्टा व्यप० ।
३. श्रद्धया व्यप० ।
४. दातव्यानि व्यप० ।

सन्तनाथचरित्ररूपसेनचरित्रप्रश्नोत्तरसार्द्धशतकप्रश्नप्रश्नप्रत्तिसिद्धान्तादिजैनशास्त्रानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणानि प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रमाणान्येवेति—

एतदब्दीयजुलाइमासीयाष्टाविंशतिदिनसम्बन्धिबृहस्पतिवासरे[१] यामद्-यानन्तरं मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीदुर्गा

१०७—रुयकारि आदालत देओयानी सदर इ०सन १८२१ शाल तारिख ४ माहे जुन मोतावेक सन १२२८ शाल तारिख २३ ज्यैष्ठ रोज शनिवार एइ आदालतेर हाकिम श्रीयुत कटवरट थरनेल शिली साहेबेर बैठके—

कमलाकान्तराय ओ शम्भुचन्द्रराय बनाम गङ्गाचरणसेन । साएलानेर उकिल मुनशी होशन आलि ओ सदासुकपण्डित, विपक्षेर उकिल मुनशी गोलाम बतुल ओ मुनशी फजर होसेन हाजिर आसिलेन । एइ आदालतेर हाल सनेर २१ आपरेलेर हुकुमानुसारे शाएलानेर खास आपिलेर सओयाल ओ ताहार सम्पर्कीय कागजातसकल अद्य आमार बैठके दरपेश हइया एइ आदालतेर हाकिम रावरट[२] हालडन राटरि साहेबेर ऐ तारिख मजकुरेर रुयकारि ओ आदालत मजकुरेर हाकिम हेनरि शिकिपपिएर साहेबेर हाल सनेर १४ मार्चेर रुयकारि सम्बलित मोलाहेजा हइयाछे एइ मकद्दमार चूडान्त

१. रात्रिन्दि—व्यय० ।

२. राबर्ट—व्यव० ।

हुकुम प्रकाश हइवार पूर्व्वे एइ आदालतेर पण्डितेर द्वाराय ए विषय ज्ञात हओया आवश्यक हइलो—ये जगमोहनरायेर पुत्र महेशचन्द्ररायेर मृत्युर पर महेशचन्द्ररायेर भगिनी श्रीमती ऐ मृत्यु व्यक्तिर त्याज्य वस्तुते ओयारिप मते हिस्या पाइवार सत्व राखे कि, ताहार खुल्यतातगण कमलाकान्तराय ओ शम्भुचन्द्रराय। अतएव हुकुम देया याइतेछे—ये ऐ मुकद्दमार सकल कागजात सम्वलित एइ हुकुमे एइ आदालतेर पण्डितेर स्थाने समर्पण करा जाय—ये कागजसकल दृष्टे करिया निचेर प्रश्नेर उत्तर ओ पाच दिवसेर मध्ये लिखेन।

प्रश्न :—

यदि स्यात् परगणे हावेलि शिलामायादेर ""१० देड आनार मालिक कृष्णकिङ्कररायेर पुत्र लक्ष्मीकान्तराय ओ जगमोहनराय ओ शम्भुचन्द्रराय, एइ चारि भ्राता पैतृक जमिदारिर उपर आपन २ हिस्या मते दखिलकार थाकेन। प्रथमत लक्ष्मीकान्तराय निःसन्तान, ओ ताहार पर जगमोहन आपन पुत्र महेशचन्द्रराय ओ श्रीमती कन्याके राखिया मृत्यु हय। महेशचन्द्रराय आपन पैतृक हिस्यार उपर दखिलकार थाकिया ओ श्रीमती भगिनी ओ कमलाकान्तराय ओ शम्भुचन्द्रराय खुल्यतातगण राखिया निःसन्तान मृत्यु हय, ओ ताहार स्त्री सहगामिनी हय। अतएव महेशचन्द्ररायेर त्यज्य वस्तु ताहार भगिनी श्रीमती, ये एइ क्षण ताहार एक नाबालक पुत्र आछे, अधिकेक, कि ताहार खुडागण शम्भुचन्द्रराय ओ कमलाकान्तरायेके अधिकेक इति।०।

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतकटवरटयरनेलखिलीसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितैतदन्दीयजुनमासीयचतुर्थदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूप-

प्रमेयं तत्समर्पितैतद्विवादविषयनिविष्टपत्रजातं च यदेतद्दन्दीयजुलाइमासीय-नवमदिनसम्बन्धिशनिवासरे सार्द्धघटिकात्रयाधिकयामद्वये मया प्राप्तं तदव-लोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रश्नपत्रलिखितप्रकारकवृत्तान्ते सति महेशचन्द्ररायस्य मरणोत्तरं तत्-स्वत्वास्पदीभूतधने यदि तस्य पुत्रमारभ्य पितुः प्रपौत्रपर्य्यन्तो न स्यात्, पितृदौहित्रो गर्भे व्यवस्थितो भूमिष्ठो वा तन्मरणसमये स्यात्, तदा तस्या-धिकारः। जाते च तस्याधिकारे पुनरुत्पत्स्यमानानां तद्भ्रात्रन्तराणा-महेशचन्द्रस्य पितृदौहित्रान्तराणामप्यधिकारः समान एव भविष्यति। सति च पितृदौहित्रे तत्पितृव्ययोः शम्भुचन्द्ररायकमलाकान्तराययोर्ना-धिकारः। यदि च महेशचन्द्ररायस्य पुत्रमारभ्य पितुः प्रपौत्रपर्य्यन्तरहि-तस्य पितृदौहित्रो गर्भे व्यवस्थितो भूमिष्ठो वा तन्मरणसमये नासीत्, तदा तत्पितृदौहित्राणां स्वत्वान्यथानुपपत्त्या तद्भगिन्याः श्रीमत्यास्तत्पितृ-दौहित्रोत्पत्तिमूलीभूतायास्तत्सम्बन्धमूलीभूतायाश्च स्वपुत्रोत्पत्तेः प्राक्काल-पर्य्यन्तं यथा पुत्रादिपत्नीपर्य्यन्तरहितस्य मृतस्य पितृधने दुहितुरधिकारस्त-था भ्रातृधनेऽप्यधिकारः। सति च महेशचन्द्रस्य पितृदौहित्रे स्वतो महेश-चन्द्रस्य पितुः पार्व्वणश्राद्धपिण्डदातरि स्वतो महेशचन्द्रस्य पितुः पार्व्वण-श्राद्धपिण्डदानानधिकारिण्यास्तद्भगिन्याः श्रीमत्या नाधिकारः। किन्तु तस्याः पुत्रस्यैव पुत्राणां वोपरिलिखितप्रकारेणाधिकारः—इति बङ्गदेशच-लितदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकाविवादभङ्गार्णवादिग्रन्था-नुसारिणी व्यवस्था ॥१०॥

अत्र प्रमाणम्—

पितुरपि प्रपौत्रपर्य्यन्ताभावे पितृदौहित्रस्याधिकारो बोद्धव्यो धनि-दौहित्रस्यैव इति—दायभाग(पृ० २०८)ग्रन्थलिखनम् ॥ १ ॥

इत्याद्या तद्विभागः स्यादायव्ययविशोधिताद्—इति दायभागादि (दाय भा. पृ० १३२)ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य(२।१२२)वचनम् ॥ २ ॥

तदभावे पुनः पितृदौहित्र इति, तदभावे पितामहस्तदभावे पिता-मही, तदभावे पितुः सोदरस्तदभावे पितुर्वैमात्रेयः—इति च श्रीकृष्णतर्का-लङ्कारकृतदायभागटीका(पृ० २१८)लिखनम् ॥३॥

पत्नीदुहितरश्चैव—इत्यादि दायभागादि(दाभा. पृ० १५१)ग्रन्थ-धृतयाज्ञवल्क्य(२।१३५)वचनम् ॥४॥

यद्यपि दुहित्रभावे दौहित्रस्येव भगिन्या एव भागधिकारो युक्तः तथापि तस्याः स्त्रीत्वेन पार्वणपिण्डदत्वाभावाचाधिकारः, दुहितुस्तु दौहित्रात् पूर्वमङ्गादङ्गात् सम्भवति—इत्यादिविशेषवचनादेवाधिकारः इति *भावः*—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीका(पृ० २१०) लिखनम् ॥५॥

एतदब्दीय-श्रगस्त्यमासीयप्रथमदिनसम्बन्धिसोमवासरे घटिकैकाधिक-यामद्वयानन्तरं मयेयं व्यवस्था दत्ता इति।

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

१०८ रोयकारि मिछिल सदर देओयानि आदालत हेनरि शिकशीपियेर साहेब आदालत मजकुरेर हाकिमेर बैठके तारिख ७ शेतम्बर इ० सन १८३१ मोताबाक २३ भाद्र बाङ्गला सन १२३८ साल रोज बुधवार।

आनन्दमयीदेवी छापला

छापलार उकिल मुनशी गोलाम वतुल ओ राधामोहनमिश्रिर उकिल मुनशी होशन आलि ओ श्रीमन्तमिश्रि ओ रामनारायण आचार्य्येर उकिलान् मुनशी दादार बक्शी ओ मौलुवि करम होशन हाजिर आइल। एइ आदालतेर हाकिम माण्टेकु हेनरि टरम्बल साहेबेर शन हालेर १६ आगष्ट तारिखेर हुकुम मोताबक एइ मोकद्दमार शओयाल ओ गयरह कागजात एइ आदालतेर हाकिमान् राबट हालदन राटरि शाहेब ओ आलक सुन्दर रास साहेब ओ माण्टेकु हेनरि टरम्बल साहेबेर सन हालेर ३० जुन ओ १९ जुलाइ ओ १६ आगष्टेर लिखित[१] राय सम्बलित

१. लिलित—व्यप०।

ड्रे श्राइल। तत परे छयेलार उकिल मुनशी गोलाम चतुल
दाएलार तरफ हइते एक केता सओयाल दाखिल करिलेक, पडा-
गेल। यथा ए विषय ये नाबालकेर मृत्युर पर प्रथमतो शास्त्रानु-
जाइ कोन व्यक्तिके ताहार उत्तराधिकारित्व, अर्शिबे, आर कि
प्रकारे मोहुर्मीत आनन्दमयी ओ राधामोहन नाबालकेर उत्तरा-
धिकारि ओ हकदार हइबेक, अनुमोदन करा उचित हइल।
अतएव हुकुम हइल ये—आनन्दमयी ओ राधामोहनमिश्रिर
आइल दुइ दरखास्त, जाहा एइ आदालतेर हाकिमानेर राय ले-
खार पर दाखिल हइयाछे, एइ आदालतेर पण्डितके एइ हुकुमे
समर्पण करा जाय-ये पण्डित मजकुर उपरेर लिखित विशयेर
जओयाब ततक्षणात लिखिया दाखिल करे, एवं मोकर्दमा
मुलतवि थाके इति।

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतहेनरीछिकिस्पीयरसाहेवधर्म्माधिकरण-
लिखितैतद्वर्षीयसितम्बरमासीयसप्तमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नमतिरूप—
पत्रमेवं तत्समर्पितमानन्दमयीदेव्या निवेदनपत्रं राधामोहनमिश्रस्य निवेदन-
पत्रञ्च यत्तन्मासीयसप्तदशदिनसम्बन्धिशनिवासरे पादोनघटिकाचतुष्टया-
धिकयामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारे-
णोत्तरं लिख्यते।

पुत्रमारभ्य पितुः प्रपौत्रपर्य्यन्तरहितस्याप्राप्तव्यवहारस्य[1] मरणोत्तरं
प्रथमतस्तत्पितृदौहित्रस्याधिकारः, यदि च तत्पितृदौहित्रस्तस्यैवाप्राप्तव्यव-
हारस्य मरणसमये गर्भे व्यवस्थितो भूमिष्ठो वा न भविष्यति, तदा तत्पितृ-
दौहित्राणां स्वत्वान्यथानुपपत्त्या तद्भगिन्योरर्थाद्दौहित्र्याद्यविकमयोः तत्पितृ-
दौहित्रोत्पत्तिमूलीभूतयोस्तत्सम्बन्धमूलीभूतयोश्च[2] तत्पितृदौहित्रोत्पत्तेः
प्राक्कालपर्य्यन्तं यथा पुत्रादिपत्नीपर्य्यन्तरहितस्य मृतस्य पितुर्धने दुहितु-

१. ०रहितस्य०—व्य० I २. ०सम्बन्ध०—व्य० I

रधिकारस्तथा भ्रातृधनेऽप्यधिकारः । सत्सु चाप्राप्तव्यवहारस्य पितृदौहित्रेषु स्वतोऽप्राप्तव्यवहारस्य पितुः पार्व्वणश्राद्धपिण्डदातृषु स्वतोऽप्राप्तव्यवहारस्य पितुः पार्व्वणश्राद्धपिण्डदानानधिकारिण्योरप्राप्तव्यवहारस्य भगिन्योरर्थादहिल्याद्रुक्मिण्योर्नाधिकारः; किन्त्वप्राप्तव्यवहारस्य भगिन्योः पुत्राणामेवाधिकारः तत्पितृदौहित्राभावे तत्पितामहस्य, तदभावे तत्पितामह्या अर्थादानन्दमय्यास्तदभावे तत्पितुः सोदरभ्रातुस्तदभावे तत्पितुर्वैमात्रेयभ्रातुस्तदभावे सोदरभ्रातृपुत्रस्य तदभावे तत्पितुर्वैमात्रेयभ्रातृपुत्राणामर्थाद्राधामोहनप्रभृतीनामधिकारः—इति वङ्गदेशचलितदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकाविवादभङ्गार्णवविवादार्णवसेतुदायक्रमसंग्रहादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा । तत्सुतः—इत्याद्युपरिलिखित(दाभा. पृ० १५१)ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य(२।१३५)वचनम् ॥१॥

पितुरपि प्रपौत्रपर्य्यन्ताभावे पितृदौहित्रस्याधिकारो बोद्धव्यो धनिदौहित्रस्येव—इति दायभाग (पृ० २०८) ग्रन्थलिखनम् ॥२॥

यद्यपि दुहित्रभावे दौहित्रस्येव भगिन्या एव भागधिकारो युक्तस्तथापि तस्याः स्त्रीत्वेन पार्व्वणपिण्डदत्वाभावान्नाधिकारः, दुहितुस्तु दौहित्रात् पूर्व्वमप्यदृष्टात् सम्भवति इत्यादिविशेषवचनादेवाधिकार इति भावः—इतिश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीका (पृ० २१०)लिखनम् ॥३॥

तदभावे पुनः पितृदौहित्र इति । तदभावे पितामहस्तदभावे पितामही तदभावे पितुः सोदरस्तदभावे पितुर्वैमात्रेयस्तदभावे पितृसोदरपुत्रपितृवैमात्रेयपुत्रपितृसोदरपौत्रपितृवैमात्रेयपौत्राणां क्रमेणाधिकारः—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकालिखनञ्चेति ॥४॥

एतदब्ददीपसेतम्बरमासीयषड्विंशतिदिनसम्बन्धिसोमवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१०९ रोवकारि मिसिल आदालत देओयानि सदर तारिख २२ माह नवम्बर शन १८३१ इ० मतावक ८ माह अग्रहायण शन १२३८ वाङ्गला रोज मङ्गलवार ए आदालतेर हाकिम श्रीयुत मान्तेगिओ हेनरि टरम्बल साहेबेर बैठके ।

मृत काशीनाथदत्तेर स्त्री करुणामयी प्रभृति—आपीलाण्टान्

चन्द्रमालार पति जयचन्द्र घोष— रेस्पाइण्ट

आपीलाण्टगणेर उकिलगण मुनशि दादार वक्स ओ मुनशी गोलाम यहुस, रेस्पाइण्टेर उकिल सदासुक पण्डित हाजिर आसिल। ए मकद्दमा एइ शनेर माह मासेर २५ तारिखेर हुकुमानुसारे अद्य आमार बैठके उपस्थित हइया एइ मकद्दमा बावत आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था ओ कोर्टेर फयशाला ओ छानि तजथिजेर दरखास्त ओ इ० १८३० शालेर जुलाइ मासेर १४ तारिखेर लिखित ए मकद्दमार इनफशालि रोवकारि ओ कमलाकान्तराय प्रभृति वनाम गङ्गाचरणसेनेर मकद्दमा बावत ए आदालतेर पण्डितेर व्यवस्थार नकल याहा रेस्पाइण्टेर उकिले दुइ टाका मुल्लेर एक किता फेहरेस्त द्वाराय अद्य नम्बरे दाखिल करिलेक दृष्टे आसिल। ताहार पर आदालतेर पण्डितके हुजुरे तलब दिया (जिज्ञा)सा करागेल—ये तोमार दाखिल करा व्यवस्थाय चन्द्रमालार स्वत्वेर उल्लेख केन छुटीयाछे, एइ क्षण तोमार अन्य व्यवस्थार द्वाराय, याहा रेस्पाइण्टेर उकीले अद्य दाखिल करिलेक, जाना याइतेछे ये चन्द्रमाला ओ श्रीमतिर न्याय ये दौहित्रगणेर उत्पत्तिर कारण बटे, गोराचान्देर त्यक्त र स्वत्वाधिकारिणि बटे। ताहार उत्तर निवेदन करिलेन ये हुजुर हइते एइ परिमाण सओयाल हइयाछिल ये शास्त्रानुसारे कोर्टेर पण्डितेर व्यवस्था यथार्थ बटे कि ना, ओ ऐ व्यवस्थाय कोर्टेर पण्डिते चन्द्रमालार पुत्रके स्वत्वाधि(कारि) लिखियाछिल, ओ ततकालिन अर्थात् पूर्वाधिकारिर मृत्युर पर लालमोहनेर, ये ताहार माता अप्राप्त व्यवहारा थिल, जन्म हइयाछिल ना, ओ ये व्यक्तिर उत्पत्ति

ना थाके ताहार स्वत्व कोथा हइते अर्शिवेक। एइ हेतुक ताहाके अयथार्थ लिखियाछिलाम; ओ फलितार्थ गोराचान्देर मृत्युर-पर ताहार अन्य उत्तराधिकारिगण वर्त्तमान ना थाकने गोराचान्देर भग्नि मुसम्मात चन्द्रमाला, ये से गोराचान्देर पितृदौहित्र गणेर उत्पत्तिर कारण बटे, आपन भ्रातार मिलकीयतेर स्वत्वाधिकारिणि हइबेक; एवं ए विशयेर विस्तारित एइ व्यवस्थाय. याहा अत्र रप्पाइएण्टेर उकिले दाखिल करिलेक, लिखा आछे इति। ऐ पण्डितेर एजहार हष्टे उचित हइल ये निचेर सओयाल एइ आदालतेर पण्डितेर पर करा जाय।

सओयाल—यद्यपि पूर्व्वाधिकारि निलकण्ठ तिन पुत्र, प्रथम कृष्णप्रसाद, द्वितीय प्रतापनारायण, तृतीय किर्त्तिनारायणके, राखिया मरे; ओ कृष्णप्रसादह तिन पुत्र रामराजा ओ रामकृष्ण ओ काशीनाथके राखिया मरिलेक; ओ प्रतापनारायण ओ एक पुत्र कालाचादके राखिया मरिल ओ कीर्त्तिनारायणह पुत्र गोराचान्द ओ चन्द्रमाला कन्याके राखिया मरिलेक; ओ ततपरे गोराचान्दह निस्पन्तान मरिलेक। अतएव शास्त्रानुसारे किर्त्तिनारायणेर स्वत्य, याता ताहार पुत्र गोराचन्द्रके अर्शियाछिल, चन्द्रमालाके अर्शे, किम्वा कोन व्यक्तिके। उचित ये ताहार जवाव तिन दिवसेर मध्ये दाखिल करेण इति ॥०॥

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतमान्तकीयूहेनरीटरम्वलसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितैतब्दीयलक्ष्वरमासीयद्वाविंशतिदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नमितिरूपपत्रं यत्तदब्दीयतन्मासीयचतुर्व्विशतिदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे घटिकाचतुष्टयाधिकयामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य याद्दशोबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रश्नपत्रलिखितप्रकारकवृत्तान्ते सति कीर्त्तिनारायणस्य मरणानन्तरमुत्तराधिकारित्वेन प्राप्तपितृधनस्य तत्पुत्रस्य गोराचाँदसंज्ञकस्य मरणोत्तरं तदस्पत्यासदीभूतधने यदि तस्य पुत्रमारभ्य पितुः प्रपौत्रपर्य्यन्तो न स्यात्

तद्भगिन्याश्चन्द्रमालायाः कश्चिदेकोऽपि पुत्रोऽर्थाद्[1] गोराचाँदसंज्ञकस्य पितृदौहित्रो गर्भे व्यवस्थितो भूमिष्ठो वा तन्मरणसमये स्याचदा तस्याधिकारः। जाते तस्याधिकारे पुनरुत्पत्स्यमानानां तद्भ्रात्रन्तराणामर्थाद् गोराचाँदसंज्ञकस्य पितृदौहित्रान्तराणामप्यधिकारः समान एव भविष्यति। सति च पितृदौहित्रे तत्पितृव्यपुत्राणां प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रलिखितानां मध्ये तदानीं विद्यमानानां नाधिकारः। यदि च गोराचाँदसंज्ञकस्य पुत्रमारभ्य पितुः प्रपौत्रपर्य्यन्तरहितस्य पितृदौहित्रो गर्भे व्यवस्थितो भूमिष्ठो वा तन्मरणसमये नासीत्तदा तत्पितृदौहित्राणां स्वत्वान्यथानुपपत्त्या तद्भगिन्याश्चन्द्रमालायास्तत्पितृदौहित्रोत्पत्तिमूलीभूतायास्तत्सम्बन्धमूलीभूतायाश्च स्वपुत्रोत्पत्तेः भावकालपर्य्यन्तं यथा पुत्रादिप्रपौत्रपर्य्यन्तरहितस्य मृतस्य पितुर्धने दुहितुरधिकारः तथा भ्रातृधनेऽप्यधिकारः। सति च गोराचाँदसंज्ञकस्य पितृदौहित्रे स्वतो गोराचाँदसंज्ञकस्य पितुः पार्व्वणश्राद्धपिण्डदातरि स्वतो गोराचाँदसंज्ञकस्य पितुः पार्व्वणश्राद्धपिण्डदानानधिकारिण्यास्तद्भगिन्याश्चन्द्रमालाया नाधिकारः, किन्तु तस्याः पुत्रस्यैव, पुत्राणां चोपरिलिखितप्रकारेणाधिकारः[2]— इति वङ्गदेशप्रचलितदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकाविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

पितुरपि प्रपौत्रपर्य्यन्ताभावे पितृदौहित्रस्याधिकारो बोद्धव्यो धनिदौहित्रस्येव- इति दायभाग(पृ० २०८)ग्रन्थलिखनम् ॥ १ ॥

इत्याद्वा तद्विभागः स्यादायव्ययविशोधितात्— इतिदायभागादि- (दा० भा० १३२)ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य (पृ० २।१२२) वचनम् ॥२॥

तदभावे पुनः पितृदौहित्र इति, तदभावे पितामहस्तदभावे पितामही, तदभावे पितुः सोदरस्तदभावे पितुर्वैमात्रेयस्तदभावे पितृसोदरपुत्रपितृवैमात्रेयपुत्रः—इत्यादि च श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीका(पृ० २१८) लिखनम् ॥३॥

पत्नी दुहितरश्चैव। इत्यादि दायभागादि(दाभा०पृ० १५१)ग्रन्थधृत याज्ञवल्क्य (२।१३५) वचनम् ॥ ४ ॥

---

१. °र्थादेतासां—व्यप०। 　　२. °चोपरि°—व्यप०।

यद्यपि दुहित्रभावे दौहित्रस्येव भगिन्या एव प्रागधिकारो युक्तस्तथापि तस्याः सीत्वेन पार्व्वणपिण्डदत्वाभावाधिकारः, दुहितुस्तु दौहित्रात् पूर्व्वम्-"अङ्गादङ्गात् सम्भवति" इत्यादिविशेषवचनादेवाधिकार इति भावः—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीका (पृ० २१०) लिखनं चेति ॥ ५ ॥

एतदब्दीयलवम्बरमासीयषड्विंशतिदिनसम्बन्धिसोमवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीज्जयपतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

११०—रोबकारि मिछिल शदर देय्रोयानि आदालत मजकुरेर हाकिम हेनरि सिकिसपीयेर साहेबेर बैठके तारिख ५ दिजम्बर इ० शन १८३१ साल मोतावक २१ अग्रहायण बाङ्गला शन १२३८ साल रोज सोमवार—

वलमईनसाहि　　　　　　　　　　आपीलाण्ट
राजा पृथ्वीपतिसाहि ताहार मृत्युर पर खड्गबाहादुरेर अलि ओ माता राजेश्वर कोंडर ओ मोह्मम्मात् मदनकोंडर—
　　　　　　　　　　रेष्पाइण्टान्—

आपीलाण्टेर उकिल सदासुख पण्डित ओ रेष्पाइण्टानेर उकिल मुनशी होशन आलि हाजिर हइल। तारिख १५ ओ २१ ओ २२ ओ २९ माह नवम्बरे एइ मोकद्दमा रोबकारि ओ प्रीविण शीयान क्रोटेर समुदाय कागजात ओ एइ मकद्दमार बाबत एइ आदालतेर दाखिल करा साबेक कागजात पाठ हइया स्थगित छिल, अद्य पुनराय रोबकार हइल। आमार रायेते राजा अरिमर्दनसाहिर राजा पृथ्वीपतिसाहिके पुष्यपुत्र राखनेते इच्छा ये प्रकार उचित साक्षीगणेर साहदेर द्वाराय कबार ओ याककाइ शाबुद पौछिल। एवं इहाओ तहकित हइल ये राजा मजकुर आपन

होस बहाले ओ स्थिर बुद्धिते हेवानामा सकल राजा प्रथ्वीपति साहिर नामे लिखिया दियाछिल। किन्तु एतदभिन्य ओ गोरक्ष पुरेर जाहाते उभय विवादि वसति राखे, ताहार सर्व्वदार वेओयाज[1] मते एवं शास्त्रेर दाडाते ओ समुदाइक शरत शफामते राजा प्रथ्वीपतिसाहिर पुष्यपुत्रता सर्व्वतोभावे साव्यस्थ आसियाछिल। से हेवानामा सकल शास्त्रेर आज्ञानुसारे उचित बटे कि ना? द्वितीयत्व ये ताहार तजविज नितान्त शास्त्रेर दाडाँते एलाका हइतेछे इति। आर अजिमावादेर प्रीयिणशीयान कोर्टेर आदालतेर पण्डितेर एइ मोकर्द्दमार मिछिले दाखिल करा व्यवस्थार द्वाराय प्रकाश हइतेछे—ये राजा प्रथ्वीपतिसाहिर पुष्यपुत्रता उचित बोध हइल, आर शन हालेर २२ शेतम्बर तारिखेर हओया एइ आदालतेर हाकिम माण्टेकु हेनरि टरम्बल साहेबेर रोयकारिर लिखित एइ आदालतेर पण्डितेर जबानि जओयाबेते स्पष्ट बोध हय ना– ये पण्डित मजकुरेर ऐ व्यवस्थाते अन्यता हइयाछे कि ना। आर यदि स्यात् ना हइयाथाके कि जन्य हय नाहि। आर हाकिम मौछफेर रोयकारिर लिखित पण्डित मजकुरेर जओयाबेते बोध हय ये ज्येष्ठ पुत्र पुष्यपुत्र हइते पारे। एइ शरतते ये उभय पुष्यपुत्रदाता ओ त्रिहिस्या(?) एइ विषये स्वीकृत हय–ये पुत्र मजकुर उभय दुइ व्यक्तिर श्राद्धे पिण्डदान करिबेक। किन्तु इहाते सस्पष्ट हयना—ये पुष्यपुत्रतार निर्द्धारितेर पूर्व्वे ये रूप एइ मोकर्द्दमाय प्रकाश आछे, आप्त पितार मृत्युते ऐ प्रकार शरत बहाल थाके कि ना। एइ सकलेर प्रति दृष्टे आमार निकट सन्देह भञ्जनार्थे[2] उचित ये मोकर्द्दमार कागजात एइ आदालतेर पण्डितेर निकट एइ हुकुमे—ये पण्डित मजकुर कोट आ गयरहर व्यवस्था ओ साक्षीगणेर एजहार ओ मिछिलेर कागजात अनुमोदने निचेर लिखित सओयालसकलेर जओयाब तत्क्षणात लिखिया दाखिल करेण पाठान जाय।

---

१ वेमोयाज—व्यप।   २. भञ्जनार्थे—व्यप०।

१. प्रथमतो एइ ये साक्षीगणेर साक्षीर द्वाराय राजा प्रथ्वीपतिसाहिके पुण्यपुत्र देओया ओ लओया उभय उहार माता ओ राजा अरिमर्द्दनसाहि ओ रानी मदनकोंअर ये रूप उचित शास्त्रानुजाइक आयान आशीयाछे कि ना।

२. द्वितीय—पुण्यपुत्रतार दाडासकलेर पूर्व्वे प्रथ्वीपतिसाहिर आपन पीता रणवाहादुरसाहिर मरणेते ताहार सत्यतार किछु दयति हय कि ना। आर यदि ताहाते दयति योध हय, एमत दयति रणवाहादुरसाहिर पदय हइते पूर्व्व समये पुण्यपुत्रतार कछुल करणेर सवाय ये प्रकार मोछन्मात मदनकोंअर एइ मोकद्दमार आपीलेर जओयावे लेखे दुर हइते पारे कि ना।

३तृतीय—ये स्त्रि सहगामिनी हय, सेइ स्त्री सहगामी हओयार पूर्व्वे आपन पुत्र अन्य कोन व्यक्तिके पुण्यपुत्र देओयाते यथाशास्त्र पष्ट रूप निषेध आछे कि ना।

४चतुर्थ—प्रथ्वीपतिसाहिर छय वतसर वयकमे ताहार पुण्यपुत्रतार निषेध कि ना।

५पञ्चम—ज्येष्ठ पुत्र हेतुक तस्य पुण्यपुत्रतार आपत्य जैलागोरकपुरेर प्रचलित दाडा ओ शाच्छादात ये प्रकार राजा उद्योतनारायणसिंह एवं द्वितीय राजासकलेर साक्षीते शाछद पौछित्त दुर हइते पारे कि ना।

६षष्ठ—राजा अरिमर्द्दनसाहिर लिखिया देओया हेवानामा सकल दोरस्त हय कि ना। आर यदि स्यात् दोरस्त हय, तवे राजा प्रथ्वीपतिसाहि पुण्यपुत्रताभिन्य ताहार द्वाराय हेवार विषये हकदार हय कि ना।

७सप्तम—यदि स्यात् पुण्यपुत्रता ओ हेवानामासकल दुइ-ना दोरस्त हय, राजा अरिमर्द्दनसाहिर स्त्री रानी[१] मदन कोंअ-

---

१ ॰रानी॰—व्यय॰

र ८५ लम्बरेर इ० शन १८२६ शालेर २८ मार्च तारिखेर लिखित एइ आदालतेर सावेक हाकिम कोर्टनि इस्मिट साहेबेर रोवकारिते ये प्रकार लेखा, आछे आपन जीवद्दशा पर्य्यन्त उहार स्वामीर विषये कावेज ओ दखिलकारिर हकदार हइते पारे कि ना इति।

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपति श्रीहेनरीक्लिफ्टपोयरसाहेब-धर्म्माधिकरणलिखिताक्षरेणेशब्दप्रतिराद्यैकत्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयदिशम्बरमासीयपञ्चमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितैतद्विवादविषयनिविष्टपत्रजातञ्च यत्तदब्दीयतन्मासीयपञ्चदशादिनसम्बन्धिबृहस्पतिवासरे घटिकैकाधिकयामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

साक्षिणां साक्ष्यद्वारा राज्ञः पृथ्वीपतिसाहिसंज्ञकस्य पुत्रप्रतिनिधित्वेन दानं ग्रहणं चेनद्द्वयं[1] तस्य मातृ राज्ञो अरिमर्द्दनसाहिसंज्ञकस्य चैवं राज्या मदनकोमराख्यायारच यथोचितं भवति तथा शास्त्रानुसारेण ज्ञातमिति।

अत्र प्रमाणम्—

माता पिता वा दद्यातां यमद्भिः पुत्रमापदि।
सदृशं प्रीतिसंयुक्तं स ज्ञेयो दत्त्रिमः सुतः॥—इति मिताक्षरा (पृ० २१३) वीरमित्रोदयादि-(पृ० ६०८)ग्रन्थधृतमनु(९।१६८)वचनम्॥ १॥

पुत्रं प्रतिग्रहीष्यन् बन्धूनाहूय राजनि चावेद्य निवेशनस्य[2] मध्ये व्याहृतिभि[3]र्हुत्वा अदूरबान्धवं बन्धुसन्निकृष्टमेव प्रतिगृह्णीयादित्युपरिलिखित(मिता पृ० २१४)ग्रन्थधृतवशिष्ठवचनम्॥ २॥

---

१ चेत्प्रद्वयन् व्यप०। २ °निवेशनम°मिता०।
३ व्याहृति° व्यप०।

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

पुत्रप्रतिनिधिताया रीतीनां पूर्व्वं पृथ्वीपतिसाहिसंज्ञकस्य जनकपितू रणबहादुरसाहिसंज्ञकस्य मरणात् पृथ्वीपतिसाहिसंज्ञकस्य पुत्रप्रतिनिधितासत्तायाः क्षतिर्यद्यपि सन्देहविषयीभूता भवति तथाप्येतादृशो क्षती रणबहादुरसाहिसंज्ञकस्य सकाशात् पूर्व्वसमये पुत्रप्रतिनिधितायाः स्वीकारेणैतद्विवादे प्रक्षद्धर्म्माधिकरणोत्तरपत्रे राज्ञ्या मदनकोमराख्यया लिखितेन दूरीभवितुं शक्नोति, रणबहादुरसाहिसंज्ञकस्य तादृशस्वीकारेण तथानुमतेरवगमादिति—

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रथमप्रमाणम् ॥ १ ॥

माता भर्त्रनुज्ञया प्रोषिते प्रेते वा भर्त्तरि पित्रा चोभाभ्यां वा सवर्णाय यो[1] *यस्मै दीयते स तस्य दत्तकः पुत्रः*—इति मिताक्षरा (पृ० २१३) ग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

या स्त्री सहगामिनी अनुगामिनी वा भवति सा स्त्री सहमरणात् पूर्व्वमनुमरणात्पूर्व्वं वा स्वकीयपुत्रस्य[2] पुत्रप्रतिनिधिकरणार्थमन्यस्मै ,सम र्पणं कर्त्तु न शक्नोतीति शास्त्रे निषेधो नास्तीति ।—

चतुर्थप्रश्नस्योत्तरम्—

पृथ्वीपतिसाहिसंज्ञकस्य षड्वर्षवयस्कत्वेन पुत्रप्रतिनिधिताया निषेधो नासीत्। तत्रायं विशेषः यदि तत्समये स नोपनीतः, अथ च तज्जनकेन पित्रा जनकपित्रभिप्रायेण तज्जनन्या मात्रा वा "आवयोरयं पुत्रः" इति सम्प्रतिपत्त्या ग्रहीत्रे दत्तः स्यात्तदा पुत्रप्रतिनिध्यन्तर्गतनित्यद्व्यामुष्यायणपुत्रताया अपि निषेधो नासीत्, जनकपुत्रतायास्तत्रास्खलत्वात्। यदि च तादृशसम्प्रतिपत्तिं विनैव दत्तः स्यादथ च चूडान्तैस्संस्कारैर्जनकेन संस्कृतः प्रतिग्रहीत्रा चोपनयनादिभिस्संस्कृतस्तत्रापि तस्य पुत्रप्रतिनिध्यन्तर्गतानित्यद्व्यामुष्यायणपुत्रताया निषेधो नासीत्, तत्रापि जनकपुत्रतायास्तस्मिन् अक्षतत्वात्। किन्तु यदि षड्वर्षवयस्कः पृथ्वीपतिसाहिसंज्ञकस्तदानीमुपनीतः

१. यो इति मिताक्षरायां नास्ति। २. पुत्रस्य—व्यप।

स्यात्तदा दत्तकपुत्रताया निषेध आसीन्नतु कृत्रिमपुत्रतायाः; यतः कृत्रिमपुत्रकरणे ज्येष्ठकनिष्ठयोर्नियमो नास्ति, उपनीतानुपनीतयोरपि नियमो नास्ति, दानस्याप्यावश्यकता नास्ति, केवलं सजातीयत्वपुत्रत्वकरणयोरेव प्रयोजकत्वम् । अयं च जनकपितुः पुत्रत्वं नैव गच्छति । अयञ्च सर्वथैव द्व्यामुष्यायणः जनकपुत्रत्वकरयोर्द्वयोरपि श्राद्धादिकरः । अयमेव कृत्रिमपुत्रः पाटलिपुत्राख्यनगरसम्बन्धिकार्यपीलाख्यधर्माधिकरणनियुक्तपण्डितेन लिखित इति ।

अत्र प्रमाणम्—

तथाहि द्विविधा दत्तकादयो *नित्यवद्द्व्यामुष्यायणा*, *अनित्यवद्द्व्यामुष्यायणा*श्चेति । तत्र *नित्यद्व्यामुष्यायणा* नाम ये जनकप्रतिगृहीतृभ्यामावयोरयं पुत्र इति संप्रतिपन्नाः; अनित्यद्व्यामुष्यायणास्तु ये चूडान्ते(स्वसंस्कारे)र्जनकेन संस्कृताः उपनयनादिभिश्च प्रतिगृहीत्रा, तेषां गोत्रद्वयेनापि संस्कृतत्वाद्द्व्यामुष्यायणत्वं परन्त्वनित्यम्—इतिदत्तकमीमांसादि(पृ० १३०)ग्रन्थलिखनम् ॥१॥

सदृशं यं प्रकुर्व्वीत[1]गुणदोषविचक्षणम् ।

पुत्रं पुत्रगुणैर्युक्तं सविज्ञेयस्तु[2]कृत्रिमः ॥—इति मनु (पृ० ३७४, ९।१७९) वचनम् ॥२॥

स च पुत्रत्वकरस्य *पिण्डप्रदः*, *निजपित्रादीनां* पिण्डप्रदत्वं तस्य तिष्ठत्येव—इतिशुद्धिविवेकग्रन्थ(३१ ■ ६ पं०)लिखनम् ॥३॥

चूडाद्या यदि संस्कारा निजगोत्रेण वै कृताः ।
दत्ताद्यास्तनयास्ते स्युरन्यथा दास उच्यते॥—इतिदत्तकमीमांसा(पृ० ७४) दत्तकचन्द्रिकादि(दत्त० पृ० १६)ग्रन्थधृतकालिकापुराणवचनम् ॥४॥

चूडाद्या इत्यतद्गुणसंविज्ञानबहुव्रीहिणा द्विजातीनामुपनयनलाभः, शूद्रस्य तु *विवाहादिलाभः*—इति दत्तकचन्द्रिका(पृ० २१)ग्रन्थलिखनम् ॥५॥

वस्तुतस्तु यस्य पञ्चदशवर्षपर्यन्तं दैववशाच्चूडादिसंस्कारो न जातस्तस्य यथाविधि गृहणोत्तरसंस्कारा अतिपत्यैरचित्यादिवचनात् प्रायश्चि-

१. द्युपङ्कर्यांचम्—इति मनुपाठः २. विज्ञेयस्तेति मनुपाठः ।

त्तात् महाव्याहृतिहोमं विधाय चूडादिसंस्कारे कृते दत्तफलं सिद्धत्येव। न चोर्ध्वं त्रित्यादिवचनविरोध इति वाच्यम्, तत्रैकदेशपदश्रवणात् सामिकपरत्वात्। पञ्च च पञ्च च पञ्चेत्येकशेषात् पञ्च तेषां पूरणः पञ्चमः पञ्चदश इति यावत्, तस्मादूर्ध्वं न दत्ताद्याः सुता इत्यर्थश्च। एवञ्च पञ्चमवर्षपदं स्वस्वजात्युक्तोपनयनकालोपान्त्यवर्षपरम्। उर्ध्वन्तु पञ्चमाद्वर्षादित्यादिवचनारम्भस्तु ब्राह्मणादीनां षोडशादिवर्षपर्यावर्तनाय—इति शुद्धिचन्द्रिकाग्रन्थलिखनम्॥ ६॥ (?)

पञ्चमप्रश्नस्योत्तरम्—

ज्येष्ठपुत्रत्वेन तस्य पुत्रप्रतिनिधिताया आपत्तिर्गोरखपुरप्रदेशचलितरीत्या राज्ञ उद्योतनारायणसिंहस्यान्येषां राज्ञां क्षत्रियाणां सादृश्येन च यथा निश्चितं तेन दूरीभवितुं शक्नोति, तद्देशचलितरीतिसादृश्यप्रदर्शितवृत्तान्ताभ्यां गोरखपुरप्रदेशे ज्येष्ठपुत्रस्य पुत्रप्रतिनिधीकरणस्य सिद्धत्वेन, तद्देशीयव्यवहारविरुद्धाया ज्येष्ठपुत्रस्य पुत्रप्रतिनिधिताया आपत्तेः शास्त्रानुसारेणापि दूरीकृतत्वस्यार्थसिद्धत्वात् तद्देशीयव्यवहारविरुद्धस्य कस्यचिदपि कर्मणः शास्त्रानुसारेण तस्मिन् देशे कदाचिदपि भवितुमशक्यत्वाच्चेति॥७॥

अत्र प्रमाणम्—

जातिजानपदान् धर्मान्श्रेणीधर्मांश्च धर्मवित्।
समीक्ष्य कुलधर्मांश्च स्वधर्मं प्रतिपालयेत्॥—इति मनुवचनम् (मनु-८।४१)॥१॥

देशजातिकुलानाञ्च ये धर्माः प्राक्प्रवर्तिताः।
तथैव ते पालनीयाः प्रजा प्रक्षुभ्यतेऽन्यथा॥—इति वीरमित्रोदयादिग्रन्थधृतबृहस्पतिवचनम्॥२॥

यस्मिन् देशे य आचारो व्यवहारः कुलस्थितिः।
तथैव परिपाल्योऽसौ यदा वशमुपागतः॥—इति याज्ञवल्क्यवचनम्॥३॥

केवलं शास्त्रमाश्रित्य न कर्त्तव्यो विनिर्णयः ।
युक्तिहीनविचारे तु धर्म्महानिः प्रजायते ॥—इति वीरमित्रोदयादि-ग्रन्थधृतबृहस्पतिवचनम् ॥ ४ ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

षष्ठप्रश्नस्योत्तरम्—

राज्ञा अरिमर्द्दनसाहिसंज्ञकेन लिखितं दानपत्रजातं तत्पत्न्या राज्ञ्या मदनकोमराख्याया यावज्जीवं तत्कुलोपयुक्तग्रासाच्छादनोपयुक्तावश्यकविधवाधर्म्माद्याचरणोपयुक्तातिरिक्तधने सिद्ध्यति, प्रमुसमर्पितपत्रजाते राज्ञोऽरिमर्द्दनसाहिसंज्ञकस्य चतुर्णां भ्रातॄणां मध्ये स्वकुलोचितव्यवहारानुसारेण ज्येष्ठत्वेनावशिष्टानां त्रयाणां भ्रातॄणां पृथक् पृथक् स्वकुलोचितग्रासाच्छादनोपयुक्तातिरिक्तराज्ये असाधारणस्वत्वेनासाधारणस्वत्वास्पदीभूतस्य राज्यस्य भ्रात्रन्तरसाधारण्याभावावगमेन तत्र भ्रात्रादीनामनुमतिं विनापि दानाद्यधिकारित्वेन सिद्धेर्निष्प्रत्यूहत्वात् । एवं तद्दानस्य सिद्धौ सत्यां राजा पृथ्वीपतिसाहिसंज्ञकः पुत्रप्रतिनिधितां विनापि दानानुसारेण दानकृतधनस्याधिकारी भवितुं शक्नोति । तद्दानेन प्रहीतुः स्वत्वोत्पादात्सप्तमप्रश्नस्योत्तरमप्युपरिलिखितोत्तरगानैरेव पर्य्यवसन्नमिति पृथङ् न लिखितम्–इति गोरखपुरप्रदेशप्रचलितमनुमिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारमयूखव्यवहारकौस्तुभदत्तकचन्द्रिकाशुद्धिचन्द्रिकादत्तकदीधितिदत्तकनिर्णयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

कुटुम्बभक्तवसनाद्देयं यदतिरिच्यते–इति वीरमित्रोदयादि (पृ० ३२४) ग्रन्थधृतबृहस्पति (पृ० १३०)वचनम् ॥ १ ॥

विभक्तेषु तूत्तरकाल विभक्ताविभक्तसंशयव्युदासेन व्यवहारसौकर्य्याय सर्वाभ्यनुज्ञा न पुनरेकस्यानीश्वरत्वेन, अतो विभक्तानुमतिव्यतिरेकेणापि व्यवहारः सिद्ध्यत्येव—इति मिताक्षरा (पृ० २००)ग्रन्थलिखनम् ॥[1] २ ॥

स्वस्वत्वनिवृत्तिपूर्व्वकपरस्वत्वापादनं दानम्–इति मिताक्षरादि (सुबोधिनी पृ० ७४१)ग्रन्थलिखनम् ॥ ३ ॥

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनञ्चेति ॥ ४ ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

---

१. मत—पा० ।

अंगरेजीशब्दप्रतिपाद्यद्वात्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयजानवरीमासीयस-समदिनसम्बन्धिशनिवासरे घटिकैकाधिकयामद्वयानन्तरं मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१११—रोवकारि सदर देओयानि आदालत ओयाके तारिख २६ दिजम्बर शन १८३१ साल मोतामेक शन १२३८ सालेर १२ पौष सोमवार श्रीयुत आलक सुन्दर राश साहेव ऐ आदालतेर, हाकिमेर वैठके वदनचन्द्रहालदार ओ गायरह् वनाम रामचाँद-मुखोपाध्याय सायलानेर उकिल मुनशी गोलाम वतुल ओ तरफ-छानिर उकिल सदाशुकपण्डित, हाज़िर अइल। सन १८३१ शालेर १५ शेतम्वर तारिखेर ए आदालतेर हाकिम श्रीयुत कटवरट थरनएल शेली साहेवेर हुकुमानुसारे सायेलानेर खास आपीलेर सओयाल ओ गायरह् ऐ मोतालकेर कागचसकल अद्य आमार वैठके दरपेप हइया हाकिम मोछुफेर तारिख मज-कुरेर रोवकारिर लिखित राय ओ सन १८३१ सालेर २८ शेतम्वर तारिखेर दृष्ट करा तरफछानिर सओयालेर सहित दृष्ट आइल। तरफछानि जेलार मुदाइ जाहेर करे जे राधाकान्तहालदार मोत-ओकफार स्त्री मोछुम्मात सुभद्रादेव्या खासपुर परगनार कालीघाट ग्रामेर मोट सात विघा देवसेवार जमीर मध्ये एक विघा ओ सालियाना पाच दिवस पालार मध्ये एक दिवस पाला कालि-ठाकुरानिर सेवा सहित आपन स्वामीर सर्गार्थे मुदाइके दान-करियाछे। यद्यपि स्यात् जेलार फयछलार लिखित जेला चव्विप परगानार पण्डितेर व्यवस्थार मजमुने प्रकाश आछे—ये देव-सेवार जमी ओ सेवार पाला सेवा सहित अविरा खीर दान

करिवार क्षमता आछे, किन्तु जेलार मुहाम्मालेहोम वदनचन्द्र-हालदार ओ गायरह छाएलान् जाहेर करे ये अवीरा और ठाकुराणीर पाला ओ देवसेवार जमी दान करिवार क्षमता नाइ। ए जन्य हुकुम हादेर हओयेर पूर्व्वे ए आदालतेर पण्डितेर स्थाने व्यवस्था लओया उचित बोध हइया हुकुम हइल ये एइ रोयकारिर नकल ओ राजचन्द्ररायेर मोकद्दमार दाखिल हओया ए आदालतेर सावेक पण्डितेर व्यवस्थार नकल, ये एइ दर-खास्तेर सामिल आछे, एइ हुकुमे ये निचेर लिखित सओयालेर जवाव व्यवस्था मजकुर दृष्ट करिया एक सप्ताह मध्ये दाखिल करेण, ए आदालतेर पण्डितेर हाओला करा जाय।

यद्यपि स्यात् अवीरा स्त्री मोट सात विघा देवसेवार जमीर मध्ये अओजी एक विघा जमी ओ सालियाना पाच दिवस पालार मध्ये एक दिवस पाला सेवा सहित स्वामीर स्वर्गार्थे कोन—वैदिके दान करे, ए प्रकार दान बाङ्गलादेशेर शास्त्रा-नुसारे यथार्थ घटे कि ना इति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतज्जिल्लाधिकरणाधिपतिश्रीयुतअलकसुन्दरासाहेबधर्म्माधिकरणलि-खिताक्षरेर्वीराशब्दप्रतिपाद्यैकस्त्रियादधिकाष्टादशशताब्दीयदिशम्बरमासीयषड्-विंशतिदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्सम्पर्कितराजचन्द्ररा-यसम्बन्धिविवादविषयनिर्विष्टव्यवस्थाप्रतिरूपपत्रञ्च यदेतदब्दीयजानवरीमासी-यसप्तमदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे घटिकैकाधिकयामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥

यदि काचिदवीरा स्त्री सप्तविघाशब्दप्रतिपाद्यदेवसेवासम्पादकभूमिसमु-दायान्तर्गतैकविघाशब्दप्रतिपाद्यभूमिमेवं वार्षिकपञ्चदिवसीयपालाशब्द-प्रतिपाद्यान्तर्गतैकदिवसीयपालाशब्दप्रतिपाद्यञ्च देवसेवासहितं स्वपत्युः स्वर्गार्थं कस्मैचिद्दत्तवती स्यात्तदा तद्दानं यथार्थमेव भवति, देवसेवायाः देव-सेवापालाशब्दप्रतिपाद्यस्य च सेवाइतशब्दवाच्यस्यायत्तत्वेन सेवाइतशब्द-

वाच्यस्य पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्य मृतस्य पत्युर्द्धने जाताधिकारिण्या उपरि-लिखितप्रकारकृतादृशदानकर्त्र्याः पत्न्यास्तादृशदानविषयीभूतदेवसेवायाः देवसेवापालाशब्दप्रतिपाद्यस्य च तत्सम्पादकदेवत्रभूमेः समर्पणं विना अनिष्पाद्यत्वेन तत्समर्पणरूपदानस्याप्यावश्यकत्वेन च यथोत्तराधिकारित्वेन सेवाइतशब्दवाच्यस्य पत्न्यास्तादृशदेवत्रभूमौ स्वत्वम्, अर्थात् तत्संरक्षणावेक्षणादिकर्तृत्वोपयुक्तं कारयितृत्वोपयुक्तं वा तदुत्पन्नोपस्वत्वेन च देवसेवादिकर्तृत्वोपयुक्तं कारयितृत्वोपयुक्तं वा तथैव तया पत्न्या कृतदानेन तादृशं स्वत्वं प्रतिग्रहीतुरपि भवितुं शक्नोतीत्यत्र बाधकाभावाद्—इति यन्न-देशाचलितदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकादायतत्त्वदायक्रमसङ्ग्रहदायरहस्यव्यवस्थार्णवविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव—इत्यादि दायभागादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥ १ ॥

अपुत्रधने पौत्रप्रपौत्राभावे साध्व्याः पत्न्या अधिकारः, तत्रापि भर्तृस्वर्गमुद्दिश्य दाने यथाकथञ्चिच्छरीररक्षार्थं भक्तये चाधिकारः, एतदतिरिक्तयथेष्टाचरणे स्थावरविक्रयादौ च नाधिकारः—इति व्यवस्थार्णवग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

स्वस्वत्वनिवृत्तिपूर्व्वकपरस्वत्वापादनं दानम्—इति विवादभङ्गार्णव-(१ विवा० ३१८ ख)ग्रन्थलिखनम् ॥ ३ ॥

विक्रेतुर्यादृशं स्वत्वं क्रेतुस्तादृशमेव स्वत्वं क्रयाज्जायते—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभाग(पृ० १०)टीकालिखनञ्चेति।

एतदब्दीयजानवरीमासीयैकविंशतिदिनसम्बन्धिशनिवासरे घटिकाद्वयाधिकयामद्वयानन्तरं मयेय व्यवस्था दत्तेति।

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

११२—सदर देओयानि आदालतेर पण्डितेर-प्रति प्रश्न—

भरणार्थं प्राप्त व्यक्तीर मरणानन्तर ताहार उत्तराधिकारिगण बहुकालावधि ऐ वस्तुते भोगवान थाकिले भरणार्थं वस्तुते भरणार्थं प्राप्त व्यक्तीर उत्तराधिकारिगणेर सत्व लोप हय कि ना ? इति—

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रमेवमेतद्विवादविषयनिविष्टपत्रजातं यदङ्गरेजीयाब्दप्रतिपाद्यत्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयजुलाइमासीयैकोनत्रिंशद्दिवसीयशुक्रवासरे घटिकाद्वयाधिकयामद्वये प्राप्तं तदवलोक्य विविच्य च यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यदि कयाचित् कन्यया स्वपितुः सकाशाद्भरणार्थं किञ्चित् स्थावरं धनं प्राप्तम्, तन्मरणोत्तरं तदुत्तराधिकारिभिर्बहुकालावधिकं तदेव वस्तुस्वभोगास्पदीभूतं कृतं स्यात्तत्र यदि तया व्यक्त्या तद्वस्तु केवलं स्वजीवनपर्य्यन्तमेव भरणार्थं प्राप्तं स्यादेवं तन्मरणोत्तरं तदुत्तराधिकारिभिः प्रभुसमर्पितपत्रावगतसम्बन्धेन प्रीत्या वा बहुकालपर्य्यन्तं तद्वस्तु भुक्तं चेदपि तेषां तत्र स्वत्वानुत्पादेन स्वत्वसामान्याभावस्य विद्यमानत्वात् स्वत्वध्वंसो दूरपास्त एव, एतादृशभोगस्य स्वत्वोत्पादकत्वाभावात् स्वत्वोत्पादकस्य[1] दानाद्यागमस्यात्राप्राप्तत्वाच्च, सम्बन्धप्रयुक्तभोगस्य प्रीतिप्रयुक्तभोगस्य वा स्वत्वे प्रमाणत्वाभावाच्च। यदि च तया व्यक्त्या तद्वस्तु[2] पुत्रपौत्रादिक्रमेण भरणार्थं प्राप्तं स्यात्तदा तन्मरणोत्तरं तदुत्तराधिकारिणामपि तादृशभरणार्थप्राप्तिरूपागमेन तादृशभरणोपयुक्तं स्वत्वमुत्पन्नं नष्टं भवितुं न शक्नोति, परं बहुकालावधिकतादृशभोगेन तादृशभरणोपयुक्तस्वत्वोत्पादकस्तादृशभरणार्थप्राप्तिरूपागमो दृढीभूतः—इति बङ्गदेशचलितमनुव्यवहारमातृकाव्यवहारतत्त्वदायतत्त्वविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

सप्त वित्तागमा धर्म्या दायो लाभः *क्रयो जयः।*

प्रयोगः कर्म्मयोगश्च सत्प्रतिग्रह एव च॥ इति मनुवचनम् (पृ० ४२२, १०।११५)॥१॥

---

१ स्वत्वोत्पादकस्य—व्यव. ।   २. स्वत्वाद्वस्तु—व्यव. ।

अस्वामिना तु यद्भुक्तं गृहक्षेत्रापणादिकम्।
सुहृद्बन्धुसकुल्यस्य न तद्भोगेन हीयते॥—इति दायतत्त्वव्यवहारतत्त्वादि(पृ० ५४)ग्रन्थधृतबृहस्पति(पृ० ७५)वचनम् ॥२॥
आगमेन विशुद्धेन भोगो याति प्रमाणताम्।
अविशुद्धागमो भोगः प्रामाण्यं नैव गच्छति॥—इति व्यवहारमातृकादि(पृ० ३४५)ग्रन्थधृतनारद(नास्मृ पृ० ७०)वचनञ्चेति ॥३॥

अत्र भरणार्थं तद्वस्तु तया व्यक्त्या केन प्रकारेण केन नियमेन वा प्राप्तमिति प्रभुसमर्पितपत्रजातैर्ज्ञातुमशक्य एव तत्पत्रजातेषु प्रमाणभूतं दानपत्रादिकं न प्राप्तमत एव व्यवस्थायां प्रकारद्वयं लिखितमिति निवेदनम् ॥

अङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यैकत्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयजानवरीमासीयैकविंशतिदिनसम्बन्धिशुक्रवासरे घटिकैकाधिकयामद्वये मयेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

११३—सदर देओयानिर पण्डितेर पर सओयाल—

जद्यपि एक वेक्ती हिन्दुर दुइ कन्या थाके। ताहाते एक कन्या एक पुत्र आपन गर्भेर राखिया आपन पितार साक्षाते मृत्यु हय। ताहार पर ऐ वेक्ती आपनार द्वितीय कन्यार साक्षाते मृत्यु हय। से मते मृत वेक्तीर तेक्त वस्तु वर्तमान कन्याय अरसे, कि ताहार दौहित्रके, जे ताहार माता पुत्र राखिया आपन पीतार वर्तमाने मृत्यु हइयाछे, ताहाके मृत वेक्तीर तेक्त वस्तुर कीछु अरसे कि ना। जद्यपि अरसे तवे की प्रमाण ?॥

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं यदङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यत्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयदिशम्बरमासीयाष्टमदिनसम्बन्धिबुधवासरे घटिकाद्वयाधिकयामद्वये प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

यद्येकस्य कस्यचित् हिन्दूजातीयस्य दुहितृद्वयमासीत्, तयोर्मध्ये एका दुहिता स्वगर्भोत्पन्नमेकं पुत्रं संरक्ष्य विद्यमाने स्वपितरि मृता, तदनन्तरं स एव व्यक्तिविशेषो परस्यां दुहितरि विद्यमानायां मृतस्तदा तस्यैव व्यक्तिविशेषस्य त्यक्तधनं विद्यमाना दुहिता, या प्रभुसमर्पितविचारपत्रेण पुत्रवत्यवगम्यते, सा प्राप्तुं शक्नोति, तस्यां पुत्रवत्यां दुहितरि विद्यमानायां सत्यां स च दौहित्रो यस्य माता विद्यमाने स्वपितरि मृता प्राप्तुं न शक्नोति, यतः शास्त्रानुसारेण पुत्रवत्या दुहितरि जीवन्त्यां सत्यां कस्यचिदपि दौहित्रस्य विद्यमानमातृकस्य मृतमातृकस्य वा मातामहधने नाधिकारः—इति वङ्गदेशप्रचलितदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकादायतत्त्वदायक्रमसंग्रहविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा—इत्याद्युपरिलिखितमन्थधृतयाज्ञवल्क्य(पृ० २१६।२।१३५)वचनम् ॥ १ ॥

अपुत्रस्य मृतस्य कुमारी ऋक्थं गृह्णीयात्तदभावे चोढा—इत्युपरिलिखितमन्थधृत(दाक० सं० पृ० ३)पराशरवचनम् ॥ २ ॥

कुमार्यभावे चोढायाः पुत्रवत्याः सम्भावितपुत्रा(या)श्च, (भगिन्याः) तुल्योऽधिकारः, तयोरेकतराभावे एकतराधिकारः—इति, स्वपुत्रद्वारेण पार्वणपिण्डदातृतया तयोरुपकाराविशेषाच्च—इति च, सर्वदुहित्रभावे दौहित्रस्याधिकारः—इति च दायक्रमसंग्रह(पृ० ४)ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥ ३ ॥

इहार सम्योयाल पार्पिते छिल, एइ निमित्तो एइ पत्रे लेखा गेल ना।

अङ्गरेजीयाब्दप्रतिपाद्यैकत्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयफेवरवरीमासीयचतुर्थदिनसम्बन्धिशुक्रवासरे घटिकैकाधिकयामद्वये मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

११४ सओयाल—आमार प्रात. इहार कारण ए विसयर जिज्ञासा करा आवश्यक हइल जे जद्यपि एक वेक्ति हिन्दुर दुइ-पुत्र थाके। ताहाते एक पुत्र आपन पितार साक्षाते एक पुत्र जिव-मान राखिया मृत्यु हय। ताहार पर ऐ वेक्ति आपन द्वितीय पुत्र ओ मृत पुत्रेर बालकेर साक्षाते मृत्यु हए। तबे ऐ मृत वेक्तीर तेक्त धन काहाके अर्शे इति।

प्रभुसमर्पितविचारपत्रे यत्प्रश्नान्तरं तदवलोक्य यादृशबोधो जात-स्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥

यदि कस्यचित् हिन्दूजातीयस्य व्यक्तिविशेषस्य पुत्रद्वयमासीत् तयोर्मध्ये एकः एकं पुत्रं संरक्ष्य विद्यमाने पितरि मृतस्तदनन्तरं सोऽपि व्यक्ति-विशेषो द्वितीये पुत्रे विद्यमाने मृतपितृकपौत्रे च विद्यमाने सति मृतस्तदा तस्यैव धनिनो मृतस्य तद्धनस्य सम्यं द्विधा विभक्तस्यैकोंऽशो विद्यमानपुत्र-स्यापरोऽंशो मृतपितृकपौत्रस्य भवति। अत्र विशेषतः शास्त्रानुज्ञाया यथो-लिखितप्रमाणेष्वेव स्पष्टीकृतत्वात्—इति बङ्गदेशचलितदायभागश्रीकृष्ण-तर्कालङ्कारकृतदायभागटीकादायतत्त्वदायक्रमसंग्रहविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानु-सारिणी व्यवस्था ॥

अत्र प्रमाणम्—

अविभक्ते मृते पुत्रे[1] तत्सुतं रिक्थभागिनम् ।
कुर्व्वीत जीवनं येन लब्धं नैव पितामहात् ॥

लभेतांशं स्वपित्र्यन्तु पितृव्यात्तस्य वा सुतात् ।
स एवांशस्तु सर्व्वेषां भ्रातृणां न्यायतो भवेत् ॥

लभेत तत्सुतो वापि निवृत्तिः परतो भवेत्—इति दायतत्त्वविवाद-भङ्गार्णवादिग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् (कास्मृ० पृ० १०२)

यथा पैतामहे धने पितुः स्वाम्यं तथैव तस्मिन् मृते तत्पुत्राणामपि, न तत्र सन्निकर्षविप्रकर्षाभ्यां कोऽपि विशेषः, पार्व्वणविधिना पिण्डदानेन

१. नित्ये प्रेते—इति धर्मकोशस्थः पाठः; अविभक्तेऽनुजे प्रेते, इति कात्यायनस्मृतिपाठः।

द्वयोरपि तदुपकारकत्वाविशेषाद्—इति दायभाग, पृ० २६ ग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

मृतपितृकपौत्रमृतपितृपितामहकप्रपौत्रयोः पुत्रेण सह तुल्याधिकारः, तेषां पार्वणपिण्डदातृत्वेनोपकाराविशेषाद्—इति दायक्रमसंग्रह (पृ० २) ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥३॥

यद्दार सञ्जोयाल पाठाते छिल, एइ निमित्ते एइ पत्रे लेखा गेल ना।

श्रङ्गरेजीशब्दमतिपार्थेकत्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयफेब्रुवरीमासीयचतुर्थदिनसम्बन्धिशुक्रवासरे घटिकैकाधिकयामद्वये मयैव व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

११५ सदर देओयानि आदालतेर पण्डित उपर सओयाल— नं २ खास आपील शन १८३० साल—

मथुरराय ओ लक्षणराय	आपिलायटान
राजुपाइक	रेस्पाण्डण्ट

१ दफा

गुरुप्रसाद नामक एक व्यक्ति अपुत्रक कारण स्त्रि वर्त्तमाना थाकिते ओ आपनार सकल विषय दानपत्रेर लेखार सरत मते अन्य व्यक्तिके दान करिते पारे कि ना, आर दान करिले शास्त्रानुसारे से दान जथार्थ हइते पारे कि ना ?

२ दफा—

दानेर परे गुरुप्रसाद मजकुरेर मृत्यु हइले परे यद्यपि ये व्यक्ति दान पाय से दानपत्रेर लेखार सरत मते गुरुप्रसाद मजकुरेर अग्निकार्य्य ओ श्राद्धादि करिया आर ताहार स्त्रिर अन्न-वस्त्र दिया थाके, तबे दान मजकुरा यथार्थ हइते पारे कि ना ?

३ दफा—

गुरुप्रसाद मजकुरार ऐ प्रकार दान करिले परे सेइ दानेर द्रव्यादि अन्य कोन व्यक्तिके कवालार द्वाराय विक्रय करिते पारे कि ना इति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं यदेतदब्दीयमार्ग्गमासीयोनविंशतिदिनसम्बन्धि-शनिवासरे यामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनु-सारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

कश्चिद् गुरुप्रसादनामा व्यक्तिविशेषो निःसन्तानत्वेन हेतुना विद्यमाना-यामपि पत्न्यां स्वस्वत्वास्पदीभूतसमुदायधनं प्रभुसमर्पितदानपत्रलिखितनि-यमेनान्यस्मै दातुं शक्नोति । अथ च कृते च दाने शास्त्रानुसारेण तद्दानं यथार्थं भवति, शास्त्रानुसारेणैवादृशदानसिद्धौ बाधकाभावादिति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

कुटुम्बभक्तवसनाद्देयं यदतिरिच्यते ।—इति विवादभङ्गार्णवादिग्रन्थ-(१ विभ० ४४८ क)धृतबृहस्पति(पृ० १३७)वचनम् ॥ १ ॥

स्वभागान् यदि दद्युस्ते विक्रीणीयुरथापि वा ।
कुर्य्युर्यथेष्टं तत्सर्व्वमीशास्ते स्वधनस्य वै ।—इति दायभागादिग्रन्थ-धृतनारदवचनम् ॥ २ ॥

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनम् ॥ ३ ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि दानानन्तरं तस्यैव गुरुप्रसादस्य मरणे सति दानग्रहीत्रा दानपत्र-लिखितनियमानुसारेण तस्यैव गुरुप्रसादस्य अन्त्यादि समाप्य दाहादिकार्य्यं श्राद्धादिकार्य्यञ्च कृत्वा अथ च तत्पत्न्या ग्रासाच्छादनादिकं दत्तमभूत्, तदा तद्दानं यथार्थं भवितुं शक्नोति शास्त्रानुसारेण सोपाधिदानस्योपाधि-सिद्धौ सिद्धेर्निष्प्रत्यूहत्वादिति—

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरप्रमाणत्रयम् ॥३॥

सोपाधिदानमुपाध्यसिद्धावसिद्धम्—इति विवादभङ्गार्णवग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्

स एव गुरुप्रसादस्तादृशदानकरणानन्तरं तद्दानकृतद्रव्यादेः अन्यस्मै कस्मैचिद् विक्रयपत्रद्वारा विक्रयं कर्त्तुं न शक्नोति प्राथमिकतादृशदानकरणेन गुरुप्रसादस्य तद्द्रव्ये यावज्जीवं दम्पत्योर्भरणपोषणाद्युपयुक्तस्वत्वातिरिक्तस्वत्वस्याधोदानविक्रयाद्युपयुक्तस्वत्वस्याभावेन प्राथमिकदानानन्तरं तत्कृतविक्रयस्यास्वामिकृतत्वेन, अस्वामिकृतविक्रयस्यासिद्धेर्निष्प्रत्यूहत्वात्—इति बङ्गदेशचलितदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकामनुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—"

अत्र प्रमाणम्

तथा च पूर्वस्वामिस्वत्वनिवृत्तिपरस्वामिस्वत्वोत्पत्तिफलकत्यागत्वेन रूपेण त्यागशक्तस्य दाधातोः—इत्यादि श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृत(पृ० ४) दायभागटीकालिखनम् ॥ १ ॥

अस्वामिना कृतो यस्तु दायो विक्रय एव वा ।
अकृतः स तु विज्ञेयो व्यवहारे यथा स्थितिः ॥—इतिमनु(पृ० ३०३। ८।१९९)वचनम् ॥ १२ ॥

अस्वामिविक्रयं दानमाधिञ्च विनिवर्त्तयेद्—इति विवादभङ्गार्णवादिग्रन्थ(१ विवा० ३१७ ख)धृतकात्यायन(कात्सू० ६१२, पृ० ७६) वचनञ्चेति ॥ ३ ॥

आपरेलमासीयद्वितीयदिनसम्बन्धिशनिवासरे दत्तेयं मया व्यवस्था ॥०॥

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

सदर देओयाणी आदालतेर पण्डितेर प्रति प्रश्नः—

११६—एक व्यक्ति अवीरा स्त्री आपन स्वामीर परकालेर क्रिया कर्म्मेर खरचेर देना परिशोध प्रयुक्त स्वामीर उत्तराधिकारीगण वर्त्तमाने देवत्र भूमि देव सेवा समेत टाकार परिवर्त्त[1] दान करिते पारे कि ना। आर ताहा सिद्ध हय कि ना ? इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रमेतद्विवादविषयनिविष्टपत्रजातं च यदेतदब्दीय-माघ्वमासीयेनविंशतिदिनसम्बन्धिशनिवासरे यामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥ ० ॥

एका काचिदवीरा स्त्री स्वपत्युः पारलौकिककार्यार्थव्ययपरिशोधनार्थं पत्युरुत्तराधिकारिषु विद्यमानेषु देवत्रभूमिं राजतमुद्राविनिमये दातुं न शक्नोति, एवं तद्दानं न सिद्ध्यति, देवत्रभूमौ देवमितानां केषाञ्चिदपि स्वस्वामावेन दानायोग्यत्वात्। देवसेवायाश्च सेवायितशब्दवाच्यस्यायत्तत्वेन सेवायितशब्दवाच्यस्य पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्य मृतस्य पत्युरंशे उत्तराधिकारित्वेन जाताधिकारा पत्नी। यदि राजतमुद्राविनिमये स्वपतियोग्यांशदेवसेवादानमन्तरेण स्वपत्युः पारलौकिककार्यार्थव्ययपरिशोधनं कर्त्तुमशक्ता स्यात्तदा तदर्थं स्वपतियोग्यांशरूपाया देवसेवाया राजतमुद्राविनिमये दानं कर्त्तुं शक्नोति, तद्दानञ्च सिद्ध्यति। तत्र च द्रव्यसाध्यदेवसेवाया द्रव्यं विनाऽनिष्पाद्यत्वेन[2] स्वपतियोग्यांशदेवसेवानिर्वाहकदेवत्रभूमेः संरक्षणावेक्षणादिकर्तृत्वादेः कारयितृत्वादेर्व्वा तदुपलक्षोपलक्षत्वेन च देवसेवाकर्तृत्वादेः कारयितृत्वादेर्व्वोपरिलिखितप्रकारेणोत्तराधिकारित्वेन पत्न्या प्राप्तस्य देवसेवान्यथानुपपत्त्या समर्पणं भवितुमर्हति, यतः सेवायितशब्दवाच्यस्य सन्मरणानन्तरं तदुत्तराधिकारिणो वा देवसेवानिर्व्वाहकदेवत्रभूमेः संरक्षणावेक्षणादिकर्तृत्वादेः कारयितृत्वादेर्वा देवसेवान्यथानुपपत्त्या क्षमतास्त्येव। प्रकृते तु प्रभुसमर्पितपत्रजातान्तर्गतैकत्रिंशत्यङ्काङ्कितदेवसेवार्पण—बैवावेल एग्रोज—संज्ञकपत्रे अस्मत्स्वत्वे त्वं वर्त्तमानो भूत्वा-

१. परिवर्त्ते।
२. विनाऽपिप्पा० व्यय०।

श्रीमत्याः परमेश्वर्य्याः सेवां भूमिसहितां स्वायत्तीकृत्य पुत्रपौत्राद्युत्तराधिकारिक्रमेण तद्भूमेरुपस्वत्वादिकमादाय श्रीमतश्चः परमेश्वर्य्याः सेवां कुरु इति लिखनेन स्वपतियोग्यांशरूपाया देवसेवायास्तत्सेवासम्पादकदेवत्र-भूमिसहिताया राजतमुद्राविनिमये श्रीमत्याः परमेश्वर्य्याः सेवार्थं समर्पणमेव स्पष्टीकृतम्—इति वङ्गदेशप्रचलितमनुकुल्लूकभट्टकृतमन्वर्थमुक्तावलीदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकादायतत्त्वदायक्रमसंग्रहविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥०॥

अत्र प्रमाणम्—

देवस्वं ब्राह्मणस्वं वा लोभेनोपहिनस्ति यः ।
स पापात्मा परे लोके गृध्रोच्छिष्टेन जीवति—इति मनु(११।२६) वचनम् ॥ १ ॥

प्रतिमादिदेवतार्थमुत्सृष्टं धनं देवस्वम्—इति कुल्लूकभट्टकृतमन्वर्थमुक्तावली(पृ० ४२०)ग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

अस्वामिना कृतो यस्तु दायो विक्रय एव वा ।
अकृतः स तु विज्ञेयो व्यवहारे यथा स्थितिः—इति मनुवचनम् ॥३॥

पत्नी दुहितरश्चैव—इत्यादि दायभागादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥४॥

भर्त्तुरौर्द्ध्वदेहिकक्रियाद्यर्थं दानादिकमप्यनुमतम्—इति दायभागदायक्रमसंग्रहग्रन्थलिखनम् ॥ ५ ॥

विक्रेतुर्यादृशं स्वत्वं क्रेतुस्तादृशमेव स्वत्वं कथाञ्जायते—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकालिखनञ्चेति ॥ ६ ॥

एतदब्दीयापरेलमासीयत्रयोविंशतिदिनसम्बन्धिशनिवासरे दत्तेयं मया व्यवस्था ।

श्रीजयपतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीर्जयतितराम्

११७ प्रमुक्तप्रश्नमवगत्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

यद्यप्येकस्यां पत्न्यामेकस्यां दुहितरि च विद्यमानायां विद्यमानयोर्द्वयोः सोदरभ्रात्रोः पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितो राधाकृष्णाख्य एतद्धर्माधिकरणनियुक्त उकिलशब्दवाच्यो मृतः स्यात्तदा तत्त्यक्तधनं यदि सोदरभ्रातृभ्यां साधारणं न भवति तदा तत्पत्नी प्राप्तुं शक्नोति। यदि च तद्धनं सोदरभ्रातृभ्यां साधारणं भवति तदा तद्धने सोदरभ्रात्रोरेवाधिकारः, तत्पत्नी च यावज्जीव तद्धनाद् ग्रासाच्छादनभागिनी भवति—इति पश्चिमदेशचलितमिताक्षरावीरमित्रोदयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥ ० ॥

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा।

तत्सुतः—इत्यादि मिताक्षरावीरमित्रोदयादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥ १ ॥

पत्नी गृह्णीयादित्येतद्वचनजातं विभक्तभ्रातृस्त्रीविषयम्—इति मिताक्षराग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

स्वर्य्याते स्वामिनि स्त्री तु ग्रासाच्छादनभागिनी।

अविभक्ते धनांशे तु प्राप्नोत्यामरणान्तिकम् ॥—इति वीरमित्रोदयादिग्रन्थधृतकात्यायनवचनञ्चेति ॥ ३ ॥

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रस्य

११८—प्रश्नः—

यद्यपि कोनेह मृत व्यक्तिर अवीरा पत्नी आपन उत्तराधिकारि वर्त्तमाने आपन स्वामिर त्यक्त पैतृक अथवा निजेर अर्थात् स्त्री

धनरूप कोनइ बागान आपन मृत स्वामिर विषयान्तर प्राप्त हइया ताहार रक्षार्थ आदालतेर खरचार कारण विक्रय करे तवे सेइ विक्रय शास्त्र सिद्ध हय कि ना ?

प्रश्नः—

यद्यपि उत्तराधिकारिर लिखित दलिलेर द्वारा ऐ अबीरार हवरेर लिखित विषयेर दान विक्रयेर क्षमता बोध हय तवे सेइ विक्रय शास्त्र सिद्ध हय कि ना ? ॥७॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुवमर्पितप्रश्नपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रश्नपत्रलिखितप्रकारकवृत्तान्ते सति तादृशविक्रयः शास्त्रसिद्धो भवति, यतः पुत्रपौत्रप्रपौत्रराहित्येनोपरतस्य पत्युर्धनस्योत्तराधिकारित्वेन पत्नी-संक्रान्तत्वेऽपि तस्याश्च वर्त्तनाद्यशक्तौ तदुपयुक्तस्य तद्धनस्याधाने विक्रयणं (ख) शास्त्रानुमतं भवति। अतएव वर्त्तनादिमूलीभूतस्य तद्धनरक्षणस्याप्यावश्यकत्वेन तद्धनरक्षणार्थं तदुपयुक्तस्य तद्धनस्य शक्तावशक्तौ चामयथैव स्वकीयस्त्रीधनस्य चाधाने विक्रयणं (च) शास्त्रसम्मतं भवतीति निष्प्रत्यूहमेव।

द्वितीयप्रश्नोत्तरमप्यर्थादत्रैव पर्य्यवसन्नमिति पृथङ् न लिखितम्—इति वङ्गदेशचलितदायभागविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥७॥

अत्र प्रमाणम्—

अतएव वर्त्तनाशक्तावाधानमप्यनुमतम्। *तत्राप्यशक्तौ विक्रयण-मपि*—इति दायभागग्रन्थलिखनम् ॥ १ ॥

तथा च भर्त्रा जीवन् यथा यस्य पोषणादिकं यद् यद्वा कर्म्म करोति मृतभर्तृकापि स्वशक्त्यनुसारेण तथैव तस्य पोषणं तच्च कर्म्म कुर्वीत—इति विवादभङ्गार्णवग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

सौदायिके सदा स्त्रीणां स्वातन्त्र्यं परिकीर्त्तितम् ।
विक्रये चैव दाने च यथेष्टं स्थावरेष्वपि ॥—इति दायभागादि-
(पृ० ७६)ग्रन्थधृतकात्यायन(पृ० ११०, ९०६)वचनञ्चेति ॥३॥

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

११९—आदालते देवोयानि जङ्गल महाल सन १८३१ साल ता० १९ मेइ—

सओयाल जओयाव

कोनो कनज ब्राह्मण तिन चारि पुरुष वाङ्गला देसे वास करिया विवाह आदि क्रिया कलाप मिताक्षराशास्त्रानुसारे करिया आसितेछिल, एवं वाङ्गला देसे किछु जमिदारि कालेकटरि खरिदा ओ दोपरा तालुक ओ गयरह सोपार्जित करिया कथोक दिन भोगवान थकिया दस एगार वत्सरेर अधिक हइवेक अवर्त्तमान हइयाछे । ऐ चारि पुत्र आपन पितार मरणान्ते कथोक दिन एक अन्ने थकिया पृथक अन्न हन । किन्तु यदि जमिदारि गयरह एजमालिते थाकिया मालगुजारि ओ सरञ्जामि ओ सेवा ओ सदावर्त्त खरच पत्र वादे वाकि मुनफा चारि भ्राताते समान हिस्या लइया थाके, ओ चारि भ्रातार मद्धे एक भ्राता आपन नाओलद अर्थात् अपिरा एक कविला राखिया अवर्त्तमान हय । तवे शास्त्रमते फौती भ्रातार, अर्थात ये भ्राता मरियाछे, ताहार मतरुका वस्तु, जाहा चिन्हित ना हइया एजमालिते आछे, ऐ सकल वस्तुते धनाधिकारि फौति व्यक्तिर भ्रातारा, कि ताहार कविला हइते पारे ॥

२—सओयाल—

यदि चारि भ्राता वर्त्तमाने जमिदारि गयरह एजमालिते राखिया चारि चारि आना जमिदारिर खजनार टाका आपन

२ हिस्यां प्रजागणेर पास उसुल तहशील करियाथाके, तवे शास्त्रा-नुसारे उपरेर लिखित ओयारिसान मध्ये धनाधिकारि कविला कि भ्रातारा हइते पारे—इहार जओयाव शास्त्रानुसारे लिखिया ए आदालते पाठाइवेन॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुधर्मार्पितप्रश्नपत्रं यदेतद्ब्दीयमेइमासीयाष्टाविंशतिदिनसम्बन्धिरात्रि-निशासरे पादोनघटिकाचतुष्टयाधिकयामद्वये मया प्राप्तन्तदस्थलोक्य यास्या-र्थौपौ जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रश्नपत्रलिखितप्रकारकवृत्तान्ते सति यदि चतुर्भिर्भ्रातृभिः कान्यकुब्ज-ब्राह्मणजातीयैः पुरुषचतुष्टयावधि पञ्चपुरुषावधि वा वङ्गदेशनिवासिभिः पश्चिमदेशचलितमिताक्षरादिग्रन्थानुसारेण स्वकीयविवाहादिक्रियाकलापादि-कर्म्म कुर्व्वद्भिः पृथगन्नैः साधारणपैतृकपैतामहसराजकरस्थावरधनैः साधारणेन राजकरदानराजाश्रयाऽऽवश्यकराजदण्डादिदानदेवसेवादि-सदाव्रतादिकर्म्म कुर्व्वद्भिस्तत्तत्कर्म्म व्ययितावशिष्टजङ्गमधनं विभज्य प्रत्येकं तस्य समानांशो गृहीतः स्यात्तेषां चतुर्णां भ्रातॄणां च मध्ये एकः कश्चित् पत्नीमेकां संस्थाप्य पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितो मृतश्चेत्तदा तदीयविभक्त-पैतृकपैतामहधनांशो तदीयस्वोपार्जितासाधारणधने तत्पत्न्येवाधिकारिणी[1], न तु भ्रातरः। तदीयाविभक्तसाधारणसराजकरस्थावरधनांशे च तद्भ्रातर एवाधिकारिणो न तु तत्पत्नी। यदि च तदीयविभक्तपैतृकपैतामहधनेन स्वोपार्जितासाधारणधनेन वा तत्पत्न्या यावज्जीवं तत्कुलोपयुक्तस्य ग्रासा-च्छादनदेशावश्यकधर्म्मवाधर्म्माचरणस्य वा निर्व्वाहो भवितुं न शक्यते तदा मृतस्य तस्य पत्नी तदीयाविभक्तसाधारणसराजकरस्थावरधनांशादपि यावज्जीवं तत्कुलोपयुक्तस्य ग्रासाच्छादनोपयुक्तधनस्यावश्यकविधवाधर्म्मा-चरणनिर्व्वाहोपयुक्तधनस्य च भागिनी भवतीति॥—

१ राजद वा०—५५० । २

अत्र प्रमाणम् —

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ॥

तत्सुतः—इत्यादि मिताक्षरावीरमित्रोदयादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥१॥

पत्नी गृह्णीयादित्येतद्वचनजातं विभक्तभ्रातृपत्नीविषयम्—इति मिताक्षराग्रन्थलिखनम् ॥२॥

स्वर्याते स्वामिनि स्त्री तु ग्रासाच्छादनभागिनी ।

अविभक्ते धनांशे तु प्राप्नोत्यामरणान्तिकम्॥—इति वीरमित्रोदयादिग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥ ३ ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि विद्यमानैश्चतुर्भिर्भ्रातृभिः सराजकरस्थावरादिधनं साधारणं रक्षित्वा प्रत्येकं तत्सराजकरस्थावरोपस्वत्वस्य राजतमुद्रात्मकस्य स्वस्वांशरूपश्चतु*र्थांशः प्रजानां सन्निधौ गृहीतः स्यात्तेषां चतुर्णां भ्रातृणां च मध्ये मृतस्यैकस्य* पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्य विभक्तपैतृकपैतामहधनांशे स्वोपार्जितासाधारणधने च *तत्पत्न्येवाधिकारिणी, न तु भ्रातरः; अविभक्तसाधारणसराजकरस्थावरधनांशे* च तद्भ्रातर एवाधिकारिणो, न तु तत्पत्नी । यदि च तदीयविभक्तपैतृकपैतामहधनेन स्वोपार्जितासाधारणधनेन वा तत्पत्न्या यावज्जीवं तत्कुलोपयुक्तस्य ग्रासाच्छादनादेरावश्यकविधवाधर्म्माद्याचरणस्य वा निर्व्वाहो भवितुं न शक्यते तदा मृतस्य तस्य पत्नी तदीयाविभक्तसाधारणसराजकरस्थावरधनांशादपि यावज्जीवं तत्कुलोपयुक्तस्य ग्रासाच्छादनोपयुक्तधनस्यावश्यकविधवाधर्म्माद्याचरणोपयुक्तधनस्य च भागिनी भवति—इति पश्चिमदेशप्रचलितमिताक्षरावीरमित्रोदयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥ ० ॥ ॥ ० ॥ ० ॥—

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रमाणत्रयम् ॥ ३ ॥

विभागो नाम द्रव्यसमुदायविषयाणामनेकस्वाम्यानां तदेकदेशेषु विषयतया व्यवस्थापनम्—इति मिताक्षरादिग्रन्थलिखनञ्चेति ॥ ४ ॥

एतदब्दीयजुनमासीयदशमदिनसम्बन्धिशुक्रवासरे दत्तेयं मया व्यवस्थेति ।

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१२०—सओोल आदालत देओोयानी कमिसनरि आतराफ मसरफ जिला रङ्गपुर घनामे पण्डीताने सदर देओोयानि आदालत शन १८३१ इङ्गरेजि तारिख ३१ मार्च्च मोतावेक सन १२३७ शाल वाङ्गला तारिख १९ चैत्र—

रामप्रसादचक्रवर्त्ति	आपीलाण्ट
पेनका ओ पचिवेत्ता	रेस्पाण्डण्ट हय

दावि ३० टाका वावत दास दासीर मूल्य—

एइ मोकद्दमाते एइ विशयेर व्यवस्था लओो आविश्वक हइया सओोल करा जाइतेछे जे जादि कोन दास कि दासी ताहार स्वामीर ताच्छल्य क्रमे अथवा अन्य कोन हेतुते पृथक थाकिया वहु काल पर्य्यन्त आपन उपार्ज्जित धन करणक दिन पात करे, तवे वहु काल परे ऐ स्वामिर कि स्वामिर उत्तराधिकारिर दाओो शास्त्रानुसारे ऐ दास कि दासिर प्रति अर्शिते पारे कि ना इति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रमुसमर्पितप्रश्नपत्रं यदेतदब्दीयापरेलमासीयपर्ड्विंशतिदिनसम्बन्धि-मङ्गलवासरे यामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्त-दनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यदि कश्चिद्दासः काचिद्दासी वा स्वस्वामिनस्ताच्छील्यक्रमेणाथवान्येन हेतुना केनचित् पृथक् स्थित्वा बहुकालपर्य्यन्तं स्वोपार्जितधनेन स्वनिर्व्वाहं कृतवान् कृतवती स्याद्वा, तत्र यदि स एव दासः सा दासी वा शास्त्रोक्त-

पञ्चदशदासान्तर्गतभक्तदासो भक्तदासी वा भवति तदा बहुकालानन्तरं तस्यैव स्वामिनस्तदुत्तराधिकारिणो वा शास्त्रानुसारेण तद्दासम्प्रति दासीम्प्रति वा तत्प्राप्तीच्छा भवितुं न शक्नोति, स्वामिनो भक्तत्यागादेव तयोर्भक्तदासदास्योर्दास्यमुक्तेः, तत्स्वामिनस्तदुत्तराधिकारिणो वा स्वत्वाभावात्। यदि च स एव दासः सा दासी वा शास्त्रोक्तपञ्चदशदासान्तर्गतभक्तदासो भक्तदासी वा न भवति एवं तयोर्दासदास्योः स्वस्वामिनस्ताच्छ्(ी)ल्यक्रमेणान्येन केनचिद्धेतुना वा पृथक् स्थित्वा बहुकालपर्य्यन्तं स्वोपार्जितधनकरणकनिर्व्वाहे सत्यपि बहुकालानन्तरमपि दास्यान्मुक्तिर्भवितुं न शक्नोति। अतएव तत्स्वामिनस्तदुत्तराधिकारिणो वा तयोः प्राप्तीच्छा भवितुं शक्नोत्येव, स्वस्वामिनस्ताच्छील्यक्रमेणान्येन केनचिद्धेतुना वा पृथक् स्थित्वा बहुकालपर्य्यन्तं स्वोपार्जितधनकरणकनिर्व्वाहस्य भक्तदासभक्तदास्यतिरिक्तानां चतुर्दशप्रभेदानां दासदासीनां दासमुक्तिहेतुत्वाभावेन पूर्व्ववत् तत्स्वामिनस्तदुत्तराधिकारिणो वा स्वत्वस्यानपायात्—इति यद्धदेशाचलितनारदस्मृतिविवादभङ्गार्णवविवादार्णवसेतुदायक्रमसंग्रहादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था।

अथ प्रमाणम्—

गृहजातस्तथा क्रीतो लब्धो दायादुपागतः।
अनाकालभृतस्तद्वदाहितः स्वामिना च यः॥

मोक्षितो महतश्चर्णाद् युद्धेप्राप्तः पणेजितः।
तवाहमित्युपगतः प्रव्रज्यावसितः कृतः॥

भक्तदासश्च विज्ञेयस्तथैव वडवाभृतः।
*विक्रेता चात्मनः शास्त्रे दासाः पञ्चदश स्मृताः॥*इत्युपरि लिखितग्रन्थधृतनारदवचनम्(नास्मृ· पृ· ६६)॥ १॥

एतेषां मध्ये तु गृहजातादिचतुर्णामात्मविक्रेतुश्च स्वामिप्रसादं विना न दास्यमोक्षः। अनाकालभृतस्तु दुर्भिक्षे यद्भक्षितं तद्गोयुगसहितं दत्त्वा मुच्येत। भक्तदासो भक्तत्यागात्—इति दायक्रमसंग्रहादि(पृ· ५२।५३)ग्रन्थलिखनञ्चेति॥ २॥

आगष्टमासीयसप्तदशदिनसम्बन्धिबुधवासरे घटिकैकाधिकय.मद्वयानन्तरं दत्तेयं मया व्यवस्था ।

श्रीउर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१२१—सदर देओयानि आदालतेर पण्डितेर प्रति प्रश्न—
सओयाल—

यदि कोन स्त्रीर स्वामि प्रायश्चित्त करे, एवं ताहार बाटीते ब्राह्मणसकले आहारादि करे, ओ आपन सरिकानेर सहित विषयादिर विभाग हइयाथाके, तबे ताहार मरणोत्तर ऐ विषये ताहार स्त्रि अधिकारिणी हय कि ना, एवं ऐ स्त्रिर साक्षिरा उहार स्वामिर प्रायश्चित्त करा एवं जाति पाओया ये प्रकार कहियाछे शास्त्रसम्मत यथार्थ बटे कि ना—मिछिलेर कागजात द्रष्टे यथाशास्त्र व्यवस्था लिखिवा इति । १५ आपरेल ई १८३१ साल ॥

श्रीऊर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रमेव तत्समर्पितैतद्विवादविषयनिविष्टपत्रजातञ्च यदेतदन्दीयमैमासीयैकविंशतितिदिनसम्बन्धिशनिवासरे यामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥

यदि कस्याश्चित् स्त्रियाः स्वामिना प्रायश्चित्तं कृतम्, एवं तद्गृहे ब्राह्मणैराहारादिकमपि कृतम्, अथच तत्स्वामिनः स्वांशिभिः सह धनस्य विभागोऽभूत् तदा तत्स्वामिमरणोत्तरं तत्यक्तधने तस्य पुत्रपौत्रप्रपौत्राभावे तत्पत्न्येवाधिकारिणी भवति । पत्न्यां विद्यमानायामन्येषां नाधिकारः । अथच तस्याः स्त्रियाः साक्षिभिस्तस्याः स्वामिनः प्रायश्चित्तकरणं यथोक्तं जातिप्राप्तिर्वा यथोक्ता तच्छास्त्रानुसारेण यथार्थमेव भवति—इति वङ्गदेशाचलितदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकादायतत्त्वविवादभङ्गार्णवदायक्रमसंग्रहादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥

अत्र प्रमाणम्—

पतितानामपि स्वधनसाध्यप्रायश्चित्तश्रुतेः पातित्येन स्वत्वनाशः प्रायश्चित्तवैमुख्ये बोध्यः—इति दायतत्त्व(पृ० १६२)ग्रन्थलिखनम् ॥१॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा—इत्यादि दायभागादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनञ्चेति ॥ २ ॥

एतदब्दीयसितस्वरमासीयप्रथमदिनसम्बन्धिबृहस्पतिवासरे घटिकैकाधिकयामद्वयानन्तरं मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१२२—नं० २६ सन १८३० इङ्गरेजी

बहमत[१] फएज गञ्जर खोदाओन्द न्यामत श्रीयुत कमिशनर साहेब आदालत देओयानि कमिशनरि आलबाफ मरावक जेला रँपूर दाम एक वानहु ॥

आरजदास्त श्रीमोहनलाल सदर आमिन मतालके आदालत मजकुर गरिब परओर सेलामत। परगने पर्व्वत जोयारेर श्रीयुत राजेन्द्र नारायणचौधुरि जमिदार कुवनारायणचौधुरि[२] मोतफार ≈) आना जमिदारि पाओयार प्रार्थनाते परगना मजकुरेर जमिदारान् श्रीअमृतसिंहचौधुरि ओ शरणसिंहचौधुरि ओ जगदीश्वरीचौधुराणी जओजे अमृतनारायण चौधुरि मोतफार मादरे गौरीनारायणसिंहचौधुरि मोतफार नामे १८२॥~) १२॥ गण्डार दाविते[१] नालिस करे। नथिर कागजात विवेचनाते

१. बहयर मलग बहमत अपि पठितुं शक्यते। २. कुञ्जनारायण इत्यपि पठितुं शक्यते।
१. दारिते—व्यव०।

जानागेल, जे परगणे पर्व्वत जोयारेर सावेक जमिदार कलप-
चन्द्रचौधुरिर ३ पुत्र। ताहार एक पुत्र किशोरिसिंह निःसन्तान
मृत्यु हय, द्वितीय पुत्र फुलसिंहचौधुरिर २ पुत्र। ताहार १
एक पुत्र आजवसिंह निःसन्तान मृत्यु हय, आर १ पुत्र सुलतान-
सिंहचौधुरि। ऐ कलपचन्द्रेर पुत्र दलसिंहचौधुरि ताहार २
पुत्र अवनसिंह ओ किर्त्तिनारायणसिंहचौधुरि। किर्त्तिनारायणेर
२ पक्षे ४ पुत्र। एक पक्षे राजेन्द्रनारायणसिंह ओ सरलसिंह।
ऐ सरलसिंह सुलतानसिंहेर पुष्यपुत्र हइया ॥० आना जमिदारिर
अधिकारि हइयाछे। आर एक पक्षे अर्थात् प्रथम पक्षेर पुत्र
अमृतसिंह ओ कृष्णनारायणसिंहचौधुरि। ऐ अमृतसिंह अवन-
सिंहचौधुरिर पुष्यपुत्र हइया ।० आना जमिदारिर अधिकारि
हइयाछे, बाकि ।० आना, याहा कीर्त्तिनारायणसिंह मोतफार
हक, ताहार मध्ये =) आना राजेन्द्रनारायण ओ =) आना
कृष्णनारायणसिंह अधिकारि हइयाछे। कृष्णनारायण मजकुर
निःसन्तान मृत्यु हय। ताहार माता रुद्रेश्वरी ओ वैमात्रेय भ्राता
राजेन्द्रनारायण ओ सहोदर भ्राता अमृतनारायणसिंह, जे आपन
पितृव्येर पुष्यपुत्र हइयाछे, आर सरलसिंह वैमात्रेय भ्राता, जे
सुलतानसिंहेर पुष्यपुत्र हइयाछे, इहारा सकलि वर्त्तमान आछे।
राजेन्द्रनारायण वैमात्रेय भ्राता विधाय ऐ कृष्णनारायण मोत-
फार =) आनार दाओया राखे। अमृतनारायणसिंह पूर्व्वसहोदर
भ्राता विधाय ऐ कृष्णनारायणेर =) आना अंशे आपन सत्त्व
वर्त्ताय, एवं हेवानामा राखा ओ श्राद्धादि करा जाहेर करे। हेवा
नामा दरपेश करिते पारिलना। अतएव ऐ कृष्णनारायणेर =)
आना अंशे कोन व्यक्ति अधिकारि हय-यथाशास्त्र इहार व्यवस्था
निमित्ते ओ पष्ट जुमार जन्ये एक कुरशीनामा एइ आरजि सह-
कारे पठाइया उमेदोयार जे हजुरेर रोवकारिर द्वाराय कुरशीनामा
सदर देओयानि आदालतेर पण्डितदिगेर निकट पाठाइया
व्यवस्था आनाइया ए आदालते देखाइते मरजि हय।—इह'

-आरज । इति सन १८३१ साल इंरेजी ता० ९ जुन मोतावेक सन १२३८ साल बाङ्गला तारिख २७ ज्यैष्ठ ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं वंशावलीपत्रं च यदेतदब्दीयजुलाइमासीयोनत्रिंशद्दिनसम्बन्धिशुक्रवासरे घटिकाद्वयाधिक्यामद्वयान्तरं मया प्राप्तम् तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।—

प्रश्नपत्रवंशावलीपत्रोभयलिखितवृत्तान्ते सति कृष्णनारायणसिंहस्य मरणोत्तरं तत्त्यक्तारणकद्वयपरिमितांशे यदि तस्य पुत्रपौत्रप्रपौत्रपत्नीदुहितृदौहित्रपितृपर्य्यन्तो न स्यात्तदा तन्मातृ रुद्रेश्वर्य्या एवाधिकारः, तन्मातरि रुद्रेश्वर्य्यां विद्यमानायां तद्वैमात्रेयभ्रातृ राजेन्द्रनारायणसिंहस्य, तत्सहोदरभ्रातुर्मृतनारायणसिंहस्य, अर्थात् स्वपितृव्यस्यायनसिंहस्य दत्तकपुत्रत्वेनेदानीं स्वपितृव्यपुत्रस्य च तद्वैमात्रेयभ्रातुः सवलसिंहस्य[1] अर्थात् स्वप्रपितामहकलपचन्द्रचातुर्द्धरिकपुत्रफुलसिंहचातुर्द्धरिकपुत्रसुलतानसिंहचातुर्द्धरिकस्य दत्तकपुत्रत्वेनेदानीं स्वपितामहप्रपौत्रस्य च नाधिकारः—इति वङ्गदेशचलितदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकादायक्रमसंग्रहविवादभङ्गार्णवविवादार्णवसेतुप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः—इत्याद्युपरिलिखितग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥ १ ॥

एतदब्दीयसेप्टम्बरमासीयसप्तमदिनसम्बन्धिबुधवासरे घटिकैकाधिक्यामद्वयानन्तरं मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

१ सवल.सिंहस्य—व्यप० ।

১২৩—সওয়াল—যদি এক বিধবার কন্যা থাকে, তবে সেই বিধবা আপন স্বামির পৈতৃক ধনের অধিকারিণী হইতে পারে কি না. অথবা সেই কন্যা মাতা বর্ত্তমানে আপন মৃত পিতার পৈতৃক ধনের অধিকারিণী হইতে পারে কি না ইতি ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रस्तुतसमर्पितप्रश्नपत्रं यदेतदब्दीयफाल्गुनमासीयविंशतिदिनसम्बन्धि-शनिवासरे घटिकैकाधिकशतमध्ये मया प्राप्तं तदवलोक्य शास्त्रसंबोधो जात-स्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यदि कस्याश्चिद् विधवायाः स्त्रियाः कन्या तिष्ठति । सा विधवा यदि पत्युः पुत्रपौत्रप्रपौत्राणां मध्ये कश्चिन्नास्ति तदा तादृशस्य पत्युः पैतृकधनस्याधिकारिणी भवितुं शक्नोति । तस्यां विधवायां मातरि विद्यमानायां सा दुहिता मृतस्य स्वपितुः पैतृकधनस्याधिकारिणी भवितुं न शक्नोति, पुत्रपौत्रप्रपौत्र-रहितस्य मृतस्य धने शास्त्रानुसारेण पत्न्याः प्रधानाधिकारित्वात्, पत्न्या अभावे एव दुहितुरधिकाराच्च—इति बङ्गदेशप्रचलितदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकाविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम् —

पत्नी दुहितरश्चैव-इत्याद्युपरिलिखितग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥१॥

अनपत्यधनं पत्न्यभिगामि, तदभावे दुहितृगामि-इत्यादि तत्तद्ग्रन्थधृतविष्णुवचनञ्चेति ॥२॥—

एतदब्दीयदशम्बरमासीयपञ्चमदिनसम्बन्धिसोमवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१२४—प्रश्न—

कोन अपुत्रक स्त्रीलोक, ये ताहार चारि कन्या वर्त्तमाना, ओ ताहार मध्ये एक कन्या निःसन्ताना थाके, यद्यपि आपन स्वामिर परलोक प्राप्त हओनेर परे स्वामिर स्थावर वस्तु पुत्रवति तिन कन्यार मध्ये एक कन्यार स्वामिके, ये सेइ वेक्ति ऐ वस्तु नष्टोद्धार ओ स्त्रीलोकेर सेवा सुश्रुषा एवं पति पालनेर निमित्त आपन अर्थ व्यय ओ परिश्रम करे, ताहारि परिवर्त्ते एक कन्यार सम्मति पूर्व्वक दान करे, एवं तत्परे द्वितीय कन्या ओ दौहित्र सकल ऐ दाने सम्मति लिखन देय—ए रूप दान शास्त्रोक्त सिद्ध हय कि ना इति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रस्तुयमर्पितप्रश्नपत्रं यदेतदब्दीयाग्रस्तिमासीयविंशतिदिनसम्बन्धिशनिवासरे घटिकैकाधिकयामद्वये मया प्राप्तम्, तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तर लिख्यते—

प्रश्नपत्रलिखितप्रकारकवृत्तान्ते सति पतिमरणानन्तरं पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहिता पत्नी यद्युत्तराधिकारित्वेन स्वसंक्रान्तपतिस्थावरधन पुत्रवतीनां तिसृणां दुहितॄणां मध्ये कस्याश्चिदप्येकस्याः पत्ये तत्स्थावरनष्टोद्धर्त्रे च स्वस्वत्वास्पदीभूतद्रव्यव्ययेन तस्याः स्त्रियाः सेवाशुश्रूषाप्रतिपालनादिपरिश्रमकर्त्रे च तादृशद्रव्यव्ययविनिमये स्वानन्तरोत्तराधिकारिणीनां दुहितॄणां दौहित्रनन्तरोत्तराधिकारिणां सर्व्वेषां दौहित्राणां च सम्मत्या दत्तवती स्यात्, तदैतादृशदानं शास्त्रानुसारेण सिद्धं भवति, पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्योपरतस्य पत्युर्धनस्योत्तराधिकारित्वेन पत्नीसंक्रान्तत्वेऽपि तस्याश्च वर्त्तनाद्यशक्तौ तद्धनसम्बन्ध्याधानविक्रयणादेः शास्त्रानुमतत्वेन वर्त्तनादिमूलीभूतस्य तद्धनसम्बन्धिनष्टोद्धारस्याप्यावश्यकत्वेन तादृशनष्टोद्धृतद्रव्यदानस्य तस्याः स्त्रियाः सेवाशुश्रूषाप्रतिपालनानुपयोगिद्रव्यविनिमयत्वेन च तत्सिद्धेः शास्त्रानुमतत्वस्यार्थसिद्धत्वात्, स्वाम्यनुमत्याऽस्वामिकृतदानस्य विक्रयस्य वा शास्त्रानुसारेण सिद्धेर्निष्प्रत्यूहत्वेन स्वानन्तरोत्तराधिकार्य्यनुमत्या स्वानन्तरोत्तराधिकार्य्यनन्तराधिकार्य्यनुमत्या च धनस्वामिपूर्व्वाधिकारिकृतदानस्य शास्त्रानुसारेण

सिद्धैविप्रत्युतस्वार्थसिद्धत्वाच्च—इति वङ्गदेशचलितदायभागश्रीकृष्ण-तर्कालङ्कारकृतदायभागटीकाविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा—इत्याद्युपरिलिखितग्रन्थ-भृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥१॥

अतएव *वर्त्तनाशक्तावाधानमप्यनुमतम्, तत्राप्यशक्तौ विक्रयण-मपि*—इति दायभागग्रन्थलिखनम् ॥२॥

तथा च भर्त्ता जीवन् यथा यस्य पोषणादिकं यद् यद्वा कर्म्म करोति मृतभर्त्तृकापि स्वशक्त्यनुसारेण तथैव तस्य पोषणं तच्च कर्म्म कुर्वीत—इति विवादभङ्गार्णवग्रन्थलिखनम् ॥३॥

तथा च स्वामिनोऽनुमतिसत्त्वे तु अस्वामिकृतविक्रयोऽपि सिद्ध्यति, व्यवहारोपि तथा—इति विवादभङ्गार्णवग्रन्थलिखनञ्चेत ॥४॥

एतदब्द यदिशम्बरमासीयपञ्चमदिनसम्बन्धियोमवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीजर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१२५—सओयाल—आदालते आपिल कलिकाता धनामे पण्डित आदालते देओयानि सदर—

१ प्रथम सओयाल—

राममोहन तेओयारि आपन भ्राता ओ भ्रातुष्पुत्र, सपत्नी ओ ताहार गर्भजात दुइ कन्या ओ एक पुत्र वर्त्तमाने आपन समुदय-विषय उपपत्नीर गर्भजात आपन औरस पुत्रके दान करिया लोकान्तर हइया थाके, तवे शास्त्रानुसारे ऐ दानपत्र सिद्ध हय कि ना, ओ ए विधाने ऐ मृत व्यक्तिर भ्राता ओ भ्रातुष्पुत्र मृत व्यक्तिर धनाधिकारि हय कि ना।

द्वितीय सओयाल—

यदि शास्त्रानुसारे ऐ दानपत्र सिद्ध ना हय, तवे ऐ मृत व्यक्तिर भ्राता ओ भ्रातुष्पुत्र ओ उपपत्नीर गर्भजात औरस पुत्र ओ दुइ-कन्यार मध्ये कोन व्यक्ति मृत व्यक्तिर धनाधिकारि हइते पारे—यथाशास्त्र इहार जओयाव लिखह इति ॥

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं यदेतन्दीयागस्तिमासीयत्रयोदशदिनसम्बन्धियामिवासरे घटिकैकाधिक्यामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्यपि राममोहनत्रिवेदी स्वकीये सहोदरभ्रातरि भ्रातृपुत्रे च विद्यमाने सति स्वोपपत्न्यां च विद्यमानायां तद्गर्भजातयोर्द्वयोः कन्ययोर्विद्यमानयोरेवं तद्गर्भजनिते चैकस्मिन् पुत्रे विद्यमाने सति स्वस्वत्वास्पदीभूतसमुदायधनं स्वकीयोपपत्नीगर्भजाताय स्वकीयौरसपुत्राय दत्त्वा मृतः स्यात्तम यदि तद्धनं भ्राता[1] भ्रा पुत्रेण वा सह साधारणं भवति, एवं तद्दाने साधारण्यप्रतियोगिनोऽर्थात्तद्भ्रातुर्भ्रातृपुत्रस्य वा अनुमतिस्तदा तद्दानं प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रावगतस्य विवाहसंस्कृतपत्नीगर्भजातपुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्य मृतस्य राममोहनत्रिवेदिनः प्रभुसमर्पितविचारपत्रावगतायाः विवाहसंस्कृतायाः पत्न्याः सुगन्धानाम्न्या यावज्जीवं ग्रासाच्छादनोपयुक्तावश्यकतत्कुलोपयुक्तविधवाधर्माचरणोपयुक्तातिरिक्तसमुदायधन एव वङ्गदेशप्रचलितशास्त्रानुसारेण पश्चिमदेशप्रचलितशास्त्रानुसारेण च सिद्धं भवितुं शक्नोति । तेषामनुमत्यभावेऽपि वङ्गदेशप्रचलितशास्त्रानुसारेणोपरिलिखितविवाहसंस्कृतायाः पत्न्याः सुगन्धानाम्न्या उपरिलिखितप्रकारकग्रासाच्छादनाद्युपयुक्तातिरिक्तस्वांशयोग्ये सिद्धं भवितुं शक्नोति स्वेतरांशयोग्ये च सिद्धं भवितुं न शक्नोति । पश्चिमदेशप्रचलितशास्त्रानुसारेण तु साधारण्यप्रतियोगिनो भ्रातु-

---

१. भ्राता–व्यप० ।

भ्रातृपुत्रस्य वा अनुमतिं विना समुदाये स्वांशयोग्येऽपि वा सिद्धं भवितुं न शक्नोति, स्वेतरांशयोग्ये तत्सिद्धिर्दूरापास्तैव, पश्चिमदेशचलितशास्त्रानुसारेण साधारणधने विभागं विना अंशानिर्णयाभावेन स्वांशयोग्येऽप्येकस्य स्वेतरस्यनुमतिमन्तरा दानाद्यनधिकारित्वात्। यदि च तद्दानं मृतस्य राममोहनत्रिवेदिनोऽसाधारणं विभक्तं वा भवति, तदा बङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेण पश्चिमदेशचलितशास्त्रानुसारेण च मृतस्य राममोहनत्रिवेदिनः पत्न्याः सुगन्धानाम्न्या यावज्जीवमुपरिलिखितप्रकारकग्रासाच्छादनाद्युपयुक्तातिरिक्तघनांशे सिद्धं भवितुं शक्नोति। एवञ्च सति तद्दानस्य सिद्धत्वपक्षे मृतव्यक्तेर्भ्राता भ्रातृपुत्रो वा मृतव्यक्तेर्धनाधिकारी न भवति, तद्दानेन मृतस्य तस्य दातुः स्वत्वविच्छेदात्, प्रतिग्रहीतुः स्वत्वोत्पादाच्च। तद्दानस्यासिद्धत्वपक्षे अर्थात्तद्दानस्य भ्रात्रा भ्रातृपुत्रेण वा सह साधारणत्वे पश्चिमदेशचलितशास्त्रानुसारेण तेषामनुमतिं विना तद्दानस्यासिद्धत्वे मृतस्य राममोहनत्रिवेदिनः पत्न्यादीनाम्, अर्थात् सुगन्धानाम्नीप्रभृतीनां द्वितीयप्रश्नोत्तरलिखितप्रकारकग्रासाच्छादनाद्युपयुक्तातिरिक्ताविभक्तसाधारणतदीयांशे मृतव्यक्तेः पुत्रादारभ्य पितृपर्यन्तानाम्मध्ये यदि कश्चिन्नास्ति तदा तत्सहोदरभ्राता भवत्यधिकारी, सहोदरभ्रातरि विद्यमाने भ्रातृपुत्रो नाधिकारी भवतीति॥

अत्र प्रमाणम्—

कुटुम्बभक्तवसनाद्देयं यदतिरिच्यते—इति बङ्गदेशचलितविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थधृतम्, पश्चिमदेशचलितवीरमित्रोदयादिग्रन्थधृतञ्च नारदवचनम् पृ० ६६)॥ १॥

स्वभागान् यदि दद्युस्ते विक्रीणीयुरथापि वा।

कुर्युर्यथेष्टं तत्सर्वमीशास्ते स्वधनस्य वै॥ इति बङ्गदेशचलितदायभागादिग्रन्थधृतनारदवचनम्॥ २॥

साधारणद्रव्यस्य समुदायस्यैकेन विक्रये परांशयोग्येऽसिद्धिः। स्वांशयोग्ये तु सिद्धिः अन्यानुमत्या विक्रये तु तत्सिद्धिः—इति बङ्गदेशचलितविवादभङ्गार्णवग्रन्थ(१ विवा० ३०५ क)लिखनम्॥ ३॥

अविभक्तेषु द्रव्यस्य मध्यगत्वाद् एकस्यानीश्वरत्वात् सर्व्वाम्यनुज्ञाऽवश्यं कार्या, विभक्तेषु तु विभक्तानुमतिव्यतिरेकेणापि व्यवहारः सिद्धस्यैव—इति पश्चिमदेशचलितमिताक्षराग्रन्थलिखनम् ॥ ४ ॥

स्थावरस्य समस्तस्य गोत्रसाधारणस्य च ।

नैकः कुर्य्यात् क्रयं दानं परस्परमतं विना ॥—इति पश्चिमदेशचलितयोरमित्रोदयादिग्रन्थधृतव्यासवचनम् ॥ ५ ॥

स्वस्वत्वनिवृत्तिपूर्व्वकपरस्वत्वापादनं दानम्—इति वङ्गदेशचलितविवादभङ्गार्णवादिपश्चिमदेशचलितमिताक्षरादिग्रन्थलिखनम् ॥ ६ ॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ।

तत्सुतः—इत्यादि पश्चिमदेशचलितमिताक्षरादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥ ॥

पत्नी ,,गृह्णीयादित्येतद्वचनजातं विभक्तभ्रातृस्त्रीविषयम्—इति पश्चिमदेशचलितमिताक्षराग्रन्थलिखनम् ॥ ७ ॥ ० ॥ = ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रकारेण तद्दानस्यासिद्धत्वपक्षे अर्थात् तद्दनस्य भ्राता भ्रातृपुत्रेण वा सह साधारण्ये सति तेषामनुमतिं विना पश्चिमदेशचलितशास्त्रानुसारेण तद्दत्तदानस्यासिद्धत्वपक्षे प्रश्नसमर्पितविचारपत्रलिखितानां मृतस्य राममोहनत्रिवेदिनः पत्न्यादीनां सुगन्धानाम्नीप्रभृतीनां मध्ये धनाधिकारे अयं विशेषः । सुगन्धानाम्नी तत्पत्नी यावज्जीवं तत्कुलोपयुक्तग्रासाच्छादनोपयुक्तावश्यकविधवाधर्माद्याचरणोपयुक्तधनस्याधिकारिणी भवति । मृतस्य तस्योपपत्नी यदि मृतस्य राममोहनत्रिवेदिन उत्तराधिकारिणां प्रतिकूला व्यभिचारिणी वा न भवति तदा सापि स्वकुलोपयुक्तग्रासाच्छादनोपयुक्तावश्यकविधवाधर्म्माद्याचरणोपयुक्तधनस्य च यावज्जीवं भागिनी भवति । एवं तदुपपत्नी गर्भजातौरसपुत्रोऽपि यावज्जीवं ग्रासाच्छादनभागी भवति । एवं तदुपपत्नीगर्भजाते द्वे कन्येऽपि विवाहसंस्कारपर्य्यन्तं ग्रासाच्छादनस्य विवाहोपयुक्तधनस्य च भागिन्यौ भवतः—इति वङ्गदेशचलितदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकाविवादभङ्गार्णवदायक्रम-

संग्रहादिग्रन्थानुसारिणी पश्चिमदेशचलितमिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारमा-यूखव्यवहारकौस्तुभादग्रन्थानुसारिणी च व्यवस्था ॥—

अत्र प्रमाणम्—

स्वर्याते स्वामिनि स्त्री तु ग्रासाच्छादनभागिनी ।
अविभक्ते धनांशे तु प्राप्नोत्यामरणान्तिकम् ॥—इति उपरिलिखित-ग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥ १ ॥

निर्वास्या व्यभिचारिण्यः प्रतिकूलास्तथैव च ।—इति तत्तद्ग्रन्थधृत-याज्ञवल्क्यवचनम् ॥ २ ॥

भरणं चास्य कुर्वीरन् स्त्रीणामाजीवनक्षयात् ।
रक्षन्ति शय्यां भर्तुश्चेदाच्छिन्द्युरितरासु च—इति तत्तद्ग्रन्थधृत-नारदवचनम् ॥ ३ ॥

भर्तव्यास्त्वपरे सुताः ।—इति तत्तद्ग्रन्थधृतबृहस्पतिवचनम् ॥ ४॥

अपरिणीताजातस्य तु प्रतिपिद्धपुत्रत्वेनापकर्षाच्च भागिता, किन्तु ग्रासाच्छादनमात्राईता-इति वङ्गदेशचलितश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभाग टीका(पृ० १४२ लिखनम् ॥५॥

सुताश्चैषाञ्च भर्तव्या यावद्वो भर्तृसात्कृताः । इति तत्तद्ग्रन्थधृत-याज्ञवल्क्यवचनम् ॥६॥

कन्याभ्यश्च पितृद्रव्याद्देयं वैवाहिकं वसु—इति तत्तद्ग्रन्थ धृतदेवल-वचनञ्चेति ॥ ७ ॥

अत्र राममोहननिवेदिनो वंशो वङ्गदेशचलितशास्त्रस्य पश्चिमदेश-चलितशास्त्रस्य वा प्रचार इति अनवगमात् प्रभुसमर्पितविचारपत्रेऽपि वङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेण पश्चिमदेशचलितशास्त्रानुसारेण वा व्यवस्था दातव्येति आज्ञाया आलिखितत्वाच्च वङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेण पश्चिम-देशचलितशास्त्रानुसारेण च व्यवस्था लिखितेति निवेदनम् ॥

एतदब्दीयदिसम्बरमासीयत्रयोदशदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मयेयं व्यव-स्था दत्तेति ॥

श्रीर्जयतितराम्
श्रीरघुनाथमिश्रेण

च अपृथक्क्रयसंविभागपरिग्रहाधिगमप्राप्तमितिव्याख्यानाच्च । मातृस्वत्वा-स्पदीभूतद्रव्यमात्रस्य निश्चितस्त्रीधनत्वेन मातुरूर्ध्वं तदुत्तराधिकारिदुहित्रा-दीनामेवाधिकारः । तत्र यदि अविभक्तैव माता मृता, तथापि तयोरयमंशं तदुत्तराधिकारिण्या दुहित्रा विभज्य ग्रहीतुं शक्यत एव । यथा काचिन्नारी दुहितृद्वयं रक्षित्वा स्वर्लोकमगमत्, तत्स्त्रीधने जाताधिकारयोर्दुहित्रोरवि-भक्तैवैका मृता, अनन्तरं तद्दुहित्रा स्वमातृयोग्यभागं मातृष्वसृतो विभज्य गृह्यत एव । दायभागमते तु तद्धनस्य संक्रान्तधनत्वेन स्त्रीधनत्वाभावात् विभक्ताविभक्तभेदानादरेणैव मातुरस्मरमे दायादा ऊर्ध्वमाप्नुयुः—इति वचनेन पूर्वस्वामिधनाधिकारिणां पुत्रादीनामेवाधिकार इति विशेषः—

प्रश्नपत्रलिखितप्रकारकवृत्तान्ते सति शास्त्रानुसारेण मातुर्भागो नैव भवति; प्रमाणाभावात्, एकपुत्रस्थले पितृधनविभागस्यासंभवाच्च । माता *"पितरि प्रेते पुत्रतुल्यांशहारिणी"*—इति कात्यायनवचनस्य समांशहारिणी माता पुत्राणां स्यान्मृते पतौ—इति नारदवचनस्य च *पितुरूर्ध्वं विभजतां माताप्यंशं समं हरेत्*—इति याज्ञवल्क्य-वचनस्य च मृते पितरि जीवन्त्यां च मातरि, यदि दुर्वृत्ताः पुत्राः पैतृकध-नस्य विभागं कुर्वन्ति तदा मात्रे स्वस्वभागसमभागं दद्युरित्यर्थकतया मिता-क्षरादिग्रन्थेषु व्याख्यातत्वाच्च ।

> तदभावे तु जननी तनयांशसमांशिनी ।
> समांशा मातरस्तेषां तुरीयांशा तु कन्यका ॥

इति बृहस्पतिवचनस्य च विशेषत इति व्याख्यानेन । अर्थात् अस्यार्थः—'पितुरभावे'[1]......पुत्रैर्विभागे[2] क्रियमाणे जननी पुत्रवती, मातरोऽपुत्रा विमातरः एताः सर्वाः पुत्रतुल्यांशभागिन्य इति । अनेन पुत्रैर्विभागे[3] क्रियमाणे एव मातुर्भागाधिकारित्वप्रतिपादकत्वावगमान्नान्यथा । यदि च बहुपुत्रस्थले पुत्राणां विभागोपक्रमं विनापि विभागसंभावनारहिते एकपुत्र-स्थले वा पुत्रेण सह मातुस्तुल्याधिकारित्वं स्यात्तदा मातुः प्रथमाधिकार-

---

१. पितुरभावे—व्यव० । २. पुत्रै[०]—व्यव० ।
३. पुत्रैर्विभागे क्रियमाणे—व्यव० ।

(त्वात्) ……त्वेन पुत्र-पौत्र-प्रपौत्ररहितस्य मृतस्य धने पत्नी-दुहितृ-दौहित्रादीनामधिकारप्रतिपादकस्य *पत्नी दुहितरश्चैव*–इत्यादि याज्ञवल्क्यवचनस्य,

अनपत्यस्य धनं पत्न्यभिगामि तदभावे दुहितृगामि––इत्यादि विष्णुवचनस्य दत्तजलाञ्जलि(त्वा)द्–इति द्वितीयतृतीयप्रश्नयोरुत्तरञ्च……तत्रैव स्पष्टमस्माभिरिति पृथ(ङ् न) लिखितमिति––

पूर्वप्रेषितव्यवस्थापत्रस्योत्तरमस्माभि(रिदम्), पाठशालाध्यापकसन्दर्शनाभिलाषेणेतदनुमोदितादन्यद्दत्त…या। तत्र चत्वारो हेतव उपन्यस्ताः। तान् दृष्ट्वास्माभिर्निवेदितम्। अस्मद्दत्तशास्त्रार्थपत्रं[1] त्वया नादर्शि, यतो भवदुक्तहेतूनामाशङ्काकोटौ प्रविष्टानां समाधानस्य बहुशस्तस्मिन् शास्त्रार्थपत्रे कृतत्वात्। दृष्टं तत्रत्यं चेत्ततः…तादृशोत्तरदाने भवदुक्तहेतुखण्डनस्यापि खण्डनं भवता कृतं स्यात्। अतो बहुप्रकारकशङ्कासमाधानयुक्तं पूर्वलिखितशास्त्रार्थपत्रं पुनरपि प्रेष्यते। तत्रत्यस्य समाधानानां प्रत्येकं खण्डनं कृत्वा भवता उत्तरेण सह प्रेषिष्यते। तदा भवदुत्तरं पण्डितानां मनोरमं[2] स्यात्। तस्मात् सर्वेषां समाधानानां दूषणं विना भवदुत्तरमनुत्तरमिति। यद्यपि शास्त्रार्थपत्रे भवदुक्तचतुर्णां हेतूनां समाधानानि पूर्वमेव कृतानि पण्डितैस्तथापीदानीं पुनरपि समाधानान्तराणि चोच्यन्तेऽस्माभिः॥ मातृभागो नैव भवति प्रमाणाभावादिति प्रथमो हेतुस्त्वया दत्तः स न शोभनः॥०॥

माता तु पितरि प्रेते पुत्रतुल्यांशहारिणी–इति कात्यायनीय–*समांशहारिणी माता पुत्राणां स्यान्मृते पतौ*––इतिनारदीय––*पितुरूर्ध्वं विभजतां माताप्यंशं समं हरेद्*––इति याज्ञवल्कीय––*समांशा मातरस्त्वेषां तुरीयांशास्तु कन्यका*––इति बार्हस्पत्यवचनसाम्यसिद्धप्रमाणानां सत्त्वात्॥ नन्वेवमेभिर्वचनैः पुत्रा यदि विभागं कुर्युस्तदा जननी स्वभागसममेकं भागं दद्युरित्युच्यते, न तु विभागांशकमन्तरा तया भागं ग्रहीतुं शक्यते इति चेन्न। एतादृशार्थकरणे प्रमाणाभावात् केनापि ग्रन्थकारेणालिखितत्वाच्च॥ याज्ञवल्क्यवचःस्थवर्त्तमानार्थक… सप्तम(?)विभागं कुर्वतामित्यर्थकविभजतामितिपद-

1. अस्मा उत्तत्र।
2. मनोरमं––व्यव०।

मेव प्रमाणमिति न वचनीयम् । अनुवादविशेषणत्वेन लडर्थस्य विवक्षितत्वात्, कातीयादिवचनेषु तदभावाच्च ॥ किञ्च हरेदित्यत्र विधौ लिङ् विधिनिमन्त्रणे-इति पाणिनिस्मरणात् । विधित्वं चात्यन्ताप्राप्ते प्रापकत्व''' (म्) ॥ ऊर्ध्वं पितुश्च मातुश्च—इत्यादिमन्वादिवचनैर्जनकमरणोत्तरं पुत्रकर्त्तृकविभागकालः पुत्रकर्त्तृकविभागश्चोभौ विधीयेते । एवञ्च तैरुत्पत्तिविधिभिर्भ्रातृणां परस्परं विभागे सिद्धे मातुर्भागो न प्राप्तः तथान् पूर्वोक्तः मातोप्यंशं समं हरेत् (या स्मृ० २।१२३) इत्यादिना च विधीयते । एवञ्च पतिमरणोत्तरं स्वेच्छया मात्रापि पुत्रसमांशस्वांशो हर्त्तव्य इति विधेः शरीरं निष्पन्नम् । तत्रायं फलितार्थः । यथा पित्रादुपरते तनयादिभिः पृथग्धर्म्मानुष्ठानाय व्यवहारे यथेष्टविनियोगार्हस्वत्वसम्पादनाय जन्मनैव स्वत्वमितिमूलको भागो गृह्यते, तथैव मात्रापि पुत्रैः सह पूर्व्वोक्त '''' तत्सिद्धये '''''विवाहजन्यस्वत्वमितिमूलको भागो ग्राह्य इति ॥ भवदुक्तरीत्या तु पुत्रकर्त्तृकसमशदाने सम्प्रदानीभूतया मात्रा ग्राह्यमितिविधिशरीरे मातोप्यंशं समं हरेत् (याज्ञ० २।१२३) इत्यादिना निष्पन्नं भवेत्तच्च न शोभनम् । ईदृशस्य विधेः स्वपेक्षागादनुत्पत्तेर्महर्षेरीदृशविधौ विवक्षिते विभजन्तः पितुश्चोर्ध्वं दद्युर्मात्रे समांशकम् इति—महर्षिणा पठितव्ये तथा पाठस्य कृतत्वाद्, भवदुक्तवचनार्थे विधित्वाभावापत्तेश्च । पितरि मृते संस्थितायां मातरि यदि पुत्रौ पुत्रौ भागं कुर्य्यातां तदा मात्रे भागं दद्यातामित्यत्र विभजतामित्यत्रस्य भवत्सम्मत-

यदि कुर्यात्समानांशान् पत्न्यः कार्याः समांशिकाः—इति याज्ञवल्क्य वचसि पुत्रविभागकरणे प्रवृत्तस्य पत्न्या अपि विभागायमतेस्तदभिप्रायेण दम्पत्योरित्यभिधानमिति समादधे। एवं

विभिन्नमातृकास्तेषां मातृभागः प्रशस्यते।

इति वचनं पुत्राणां भागग्राहकत्वं मातृद्वारेणैव बोधयति। तस्या भागाभावेतद्द्वारेण तद्ग्राहकाणां तद्ग्रहणानां पतिः स्यादितिमहा···कोपः स्मृतीनाम्। तस्माद् बहुमुनिभिरद्धमित्ते ग्रन्थकृद्भिर्विरोधी[1] कृते प्रमाणसिद्धे मातुर्भागे प्रमाणाभावादितिहेतुर्दुर्मर्षाज्ञानभिज्ञतानाम ग्र(?)हेतुदायकस्य प्रकटयति। इति मातुर्भागे प्रमाणाभावखण्डनम्। यदपि प्रलपितमातु-र्भागो नास्ति एकपुत्रस्थलेऽपि विभागस्यासम्भवाद् इति द्वितीयं कारणम् तदपि न। एकपुत्रस्थलेऽपि विभागसम्भवस्य शास्त्रोक्तत्वात्। तद्यथा यदा एकात्मजः पिता स्वेच्छया स्वोपार्जितधनस्य त्रीन् भागान् कृत्वा द्वावंशौ[2] प्रतिपद्येत *विभजन्नात्मनः पितेत्यादिवचनः*(वचनादित्वा)द्वौ भागौ स्वयं गृह्णाति पुत्रायैकमंशं ददाति तदैकपुत्रस्थले विभागो न्याय्य एव। एता-दृशस्थले मिताक्षरादिमते स्वोपार्जितधने एव पितुरंशद्वयग्रहणमभयति जीमूतवाहनादिमते तु पितामहाद्युपार्जितधने पुत्रोपार्जितधने च पितुरंशद्वय-ग्रहणम्, यतस्तेषां मते *भूर्या पितामहोपात्ता* इत्यादीनि वचनानि(या० स्मृ० २।१२१) पितृकर्तृकन्यूनाधिकविभागनिषेधकानि, न तु पितुरंशद्वय-ग्रहणाभावबोधकानीति विचारान्तरम्। परन्तु सर्वेषां निबन्धकाराणां मते एतादृशस्थले एकपुत्रस्थत्वे भागो जायते; यथात्र जनको भागद्वयमेकस्मात् पुत्राद्धुपादाति तथा पत्यौ मृतेऽप्राप्तस्त्रीधना माता तथाभूतात् पुत्राद् भागं ग्रहीतुं शक्नोत्येव *समांशहारिणी माता*—इत्यादिवचनात्॥

नचैवं द्वावंशौ प्रतिपद्येत विभजन्नात्मनः पिता इत्यादि(ना० स्मृ० पृ० १६२)कमपि वचनमेकपुत्रस्थलातिरिक्तविषयमिति वाच्यम्, शङ्खलिखित-वाक्यविरोधात्। तथा च शङ्खलिखितावाहतुः सह्येकपुत्रः स्याद्वौ भागावात्मनः *कुर्यात्। न चैवं एकस्य पुत्र एकपुत्रः न पुनरेक एव पुत्रो यस्येति बहुव्रीहि-*

---

१. विरोधी व्यप. २. न्शौ व्यप. ३. पितरश०—व्यप.

स्तस्यान्यपदार्थप्रधानत्वेन षष्ठीतत्पुरुषाद् दुर्बलत्वाद्—इति जीमूतवाहनाचार्य्यकृतेनानेनार्थेनैकपुत्रस्थलातिरिक्तविषय[1] एवं शङ्खलिखितौ बोधयतः *पितुर्द्विभागमिति* वाच्यम्। जीमूतवाहनतः प्राचीनानां नवीनानां च ग्रन्थकर्तॄणां मध्ये तु बहुव्रीहेरेव तत्र सिद्धान्तितत्वात्, वीरमित्रोदये दायभागप्रकरणे शङ्खवचनस्थैकपुत्रपदव्याख्यावसरे तत्पुरुषस्वीकारे दोषदानेन जीमूतवाहनोक्तेर्दर्शितत्वात् च ॥

अतएव शुद्धिचिन्तामणौ तीर्थचिन्तामणौ मुण्डनप्रकरणे—मुण्डनं चोपवासश्च सर्वतीर्थेष्वयं विधिः—इत्यत्र दूषणभयाद् बहुव्रीहितः प्रबलभूतौ तत्पुरुषकर्मधारयौ त्यक्त्वा बहुव्रीहिरेवाश्रितो[2] महामहोपाध्यायवाचस्पतिमिश्रैः[3], इति एकपुत्रस्थले भागाभावादिति हेतुखण्डनम्॥ यच्च *माता तु पितरि प्रेते पुत्रः* इति कात्यायनस्य *समांशहारिणी माता* इति नारदीयस्य *पितुरूर्ध्वं विभजतां माता* इति योगीशवचनस्य च *मृते पितरि मातरि जीवन्त्याञ्च यदा दुर्वृत्ताः पुत्राः पैतृकस्य धनस्य विभागं कुर्व्वन्ति तदा मात्रे स्वस्वभागसमं दद्युः* इत्यर्थकतया मिताक्षरादिग्रन्थेषु व्याख्यातत्वादिति मातृभागे[4] तृतीयो हेतुः सोऽपि न, मिताक्षरादिनिबन्धेषु एतादृशस्यार्थस्याप्यलाभात्, भवत्कृतमिताक्षरादिनिबन्धस्याप्रमाणत्वादस्माभिरदृष्टत्वाच्च। अत्रेदं विचारणीयम्। यथा पुत्रादीनां जन्मनैव सामुदायिकं प्रादेशिकं चोत्पन्नमपि स्वत्वम् *ऊर्ध्वं पितुश्च मातुश्च* इत्यादि (मनु० ९।१०४) वचनानुरोधेन पितुरनिच्छया दाक्षिणात्यपाश्चात्यमैथिलसद्ग्रन्थकृन्मते पित्रार्जितधने, जीमूतवाहनाचार्य्यमते पितामहाद्यर्जितधनेऽपि विभागानर्हतां बोधयति। यथा वा पत्यौ[5] *जीवति जायापत्योर्विभागो न विद्यते पाणिग्रहणाद्धि सहत्वम्* इत्यापस्तम्बीयेन *पत्न्यः कार्य्याः समांशिकाः* इति याज्ञवल्कीयेन (या० स्मृ० २।१२५) च पत्या सह भार्य्यया भागो न लभ्यते; तथा अत्र विवाहजन्यं मातुः स्वत्वं पुत्राणामनिच्छया मात्रा पुत्रेभ्यः स्वीयभागो

---

१. विषय–व्यव.। २. रे–व्यव.। ३.°श्रितो व्यव.।
४. मातृभागे–व्यव. ५. °प्यना°–व्यव. ६. °पत्यो–व्यव.

न लभ्य इति न बोधयति, पूर्वस्थलवदत्र संकोचकत्वचनाभावात् ॥ प्रत्युत मातुरग्रे पुत्राणामेवास्वातन्त्र्यम्, ऊर्ध्वं पितुश्च—इत्यादीनि (मनु० ६।१०४) नचापि विदधति । *अतएव तत्तन्निबन्धकारा मातुरग्रे पुत्रकर्तृकविभागो न धर्म्योऽतदनुज्ञया*—इत्याहुः । अतोऽसाधारणं मातुः स्वत्वं पुत्राणां विभागोपक्रमं विना सङ्कोचकपित्राज्ञाभावेन मातुर्भागं बोधयतीति माता पुत्रानिच्छया विभागो ग्राह्य इति । न चैवं *पिता रक्षति बाल्ये हि भर्त्ता रक्षति यौवने, पुत्रास्तु स्थाविरे भावे न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति*—इत्यादि-नारदादि(ना० स्मृ० पृ० १६८)वचनेभ्यो मातुरप्यस्वातन्त्र्यमितिविभागोपक्रमं विना तस्या न भाग इति वाच्यम् ॥ *अकार्य्यकरणादप्येवं*—इत्यर्थस्य महानिबन्धेषु दर्शनात्-*स्त्रीणां स्वपतिदायस्तु*—इत्यादिवचनानुसारेण पृथगदानाद्यस्वातन्त्र्यबोधनात् *मातायंशं समं हरेत्*—इत्यादिवचनानुरोधेन भागग्रहणातिरिक्तस्थले तद्वचनेनास्वातन्त्र्यविधानाच्च ॥३॥ इति तृतीयहेतुखण्डनम् ॥

यच्च तदभावे तु जननी इति बार्हस्पत्यं वचः—अस्यार्थः...... । पितुरभावे पुत्रैर्विभागे क्रियमाणे जननी पुत्रवती मातरोऽपुत्रा विमातर एताः सर्वाः पुत्रतुल्यांशभागिन्य इत्यनेन पुत्रैर्विभागे क्रियमाणे मातुर्भागाधिकारित्वावगमादित्यनूद्य विभागभावनारहिते एकपुत्रस्थले, विभागसम्भावनायुक्ते बहुपुत्रस्थले, पुत्राणां विभागोपक्रममन्तरा तनयैः सह *मातुस्तुल्याधिकारित्व चेन्मातुः प्रथमाधिकारि(णी माता धनिनः) पातित्वेन पत्नी दुहितरश्चैव* इत्यादीनां दत्तजलाञ्जलिता स्यादिति तुरीयहेतुवर्णनम्, तदप्यतितुच्छम् । एतादृशार्थकरणे प्रमाणाभावाद् बार्हस्पत्यवाक्यात्तदलाभात् स्वकपोलक(ल्पि तत्वात्, *तदभावे तु जननी* इत्यस्य-*माता-प्यंशं समम्*—इत्येतत्समानार्थकत्वाद्, उत्तरार्द्धन्तु *पत्न्यः कार्य्याः समांशिकाः* इत्येतत्समानार्थकत्वाच । तदुक्तसिद्धान्तवदस्यापि सिद्धान्तित्वात्) अत्रादलाभादेव श्रीकृष्णतर्कालङ्कारैर्यादि(२)प्युक्तमबाधे...
...न्यताम्यादिविन्यायाचस्यापि अपिमितत्वात् ॥ १ ॥ यथा

१. चवना०-व्य०प० २. ०तन्त्र०—व्यप० । ३. ०युत—व्यप० ।

स्वेभ्योऽंशेभ्यस्तु कन्याभ्यः प्रदद्युर्भ्रातरः पृथक् ।

स्वात्स्वादंशाच्चतुर्भागं पतिताः स्युरदित्सवः,—इति मनु (९।११८)-वचने, *भगिन्यश्च निजादंशाद्दत्वांशं तु तुरीयकम्*—इति याज्ञवल्क्य-(२।१२३)वचने च, प्रदद्युर्दद्येत्यस्य कर्त्तृतया भ्रातृणामन्वयात्तेषामधीन-स्वाम्यो दानं तथा जननीग्राह्ये भागे परतन्त्रविधायकवाक्याभावाद्विभागो-पक्रमं विनापि बहुपुत्रस्थले विभागाभावस्थले एकपुत्रत्वे स्वेच्छया मात्रा भागग्रहणं कार्य्यम् ॥ ० ॥

पत्नी दुहितरश्चैव—इति याज्ञवल्क्य (२।१३५), वचनम्, *अनपत्यस्य धनं पत्न्यभिगामि*—इति विष्णुवचस्तु पुत्रादिदौहित्रान्तरहितस्य मृतस्य यज्ञदत्तस्य धने मिताक्षरादिमते पूर्वं माता समग्रधनाधिकारिणी, जीमूत-वाहनमते पुत्रादिपित्रन्तरहितयज्ञदत्तस्य समग्रधने माताधिकारिणी भवति इत्यर्थं ब्रूते ॥

पितुरूर्ध्वं विभजतां माताप्यंशं समं हरेद्—इत्यादि (या०स्मृ०२।१२३) मातृभागप्रापकवचनानि तु विष्णुमिश्रस्य पुत्रादिसत्त्वेऽपि मात्रा स्वभाग-ग्रहणं कर्त्तव्यमितिघनैकदेशग्रहण......द्धने इति भिन्नविषयस्वव्यवस्था-पनेन *चरितार्थानां वैयर्थ्याभावादचनसाङ्गत्योपपादनमशक्यं कर्त्तुं स्वरा ।* किञ्च भवतामेव विरोधः स यथा देवदत्त. पञ्चभ्यः पुत्रेभ्यो यथाशास्त्रं पञ्चभा-गान् दत्त्वा स्वयं द्व्यंशो प्रतिपद्येत विभजेदात्मनः-इति (ना०स्मृ०भृ०१९२) प्रभृतिशास्त्रानुरोधेन द्व्यंशो प्रतिपद्य विभक्तोऽभवत् । तत्र विभक्तेषु एकः पुत्रादिदौहित्रान्तरहितो मृतः । तद्धने पत्नी दुहितरश्चैव—इति याज्ञवल्कीय-अनपत्यस्य धनं पत्न्यभिगामि—इति वैष्णववचोभ्यां जीमूतवाहनमते पिता समग्रधनाधिकारी, तदन्यमते माता समग्रधनस्वामिनी भवति । यथा वा पितृमरणोत्तरं सर्वे भ्रातरो विभक्तास्तेष्वेकः कश्चन भ्राता पुत्रादिपित्रन्त-रहितो ममार । तद्धने भ्रातॄणामधिकारोऽधिकारिक्रमबोधकेन शास्त्रेण बोधितो भवति । भवन्मते उक्तस्थलयोः पित्रोर्भ्रातुश्च प्रथमाधिकारि(ता)-न्तःपातित्वेन तेषामनधिकारः स्यात् । अस्मन्मते उक्तस्थलयोर्यथायथं पूर्वं पिता अंशद्वयाधिकारी, माता [illegible] एकांशाधिकारिणी, भ्रातरस्तु स्वांशाधिकारिणः; पश्चादेतादृशस्थले पूर्व्वोक्ता मृतस्य समग्रधनाधिकारिणी.

भवन्तीति विषयव्यवस्थापनेन भवदुक्तैरेव दत्तजिलाञ्जलिता यान्ति। तस्माद् धनस्य कृतस्यैकदेशरूपा व्यवस्था त्वया कर्त्तव्या ॥ यच्च केनाप्युक्तम् ॥ *यत्र पतिपुत्रकर्तृको विभागः पत्या पुत्रेण वांशो दीयते, तत्रैव मातुर्भागो-भवति।* अत्र तु पतिना पतिपुत्रेण वा विभाग एव न कृतोऽतोमातुरंश एव नास्ति; कुतो दुहित्रादिभिर्लभ्यव्यमिति। तदसमीचीनम्। पत्या सह भार्य्याया भागग्रहणेऽस्वातन्त्र्येऽपि पत्युरिच्छयैव तथा भागो लब्धव्य इति तावत् सर्वेषां निर्विवादेऽपि पुत्राणां पितुरिव मातुरप्येऽपि स्वातन्त्र्य(?)-भावस्य सर्वदेशीयग्रन्थेषूपलभ्यमानत्वेन मातुर्भागादाने स्वेच्छया दाने च पुत्राणामनधिकार एव। किन्तु मातृनुमत्या पितृधने दुहितृभावे सति जननीधने च पुत्रैर्भागो ग्राह्यः, मात्रा तु स्वेच्छयैव पुत्राणामनिच्छा-सत्त्वेऽपि भागो ग्राह्यः। *अनीशास्ते हि जीवतोः*—इत्यादि मन्वाद्युक्तेः *मातात्पर्यं समं हरेत्*—इत्यादिविधिबोधकप्रत्ययाद् दिदस्मृतेः (?), एवं सम्भावितमातृभागेऽपि दुहितुरधिकारो वेः। एतद्विचारस्तु तृतीयतुरीय-हेतुखण्डने बहुतरं विचारितस्तत एवावधार्य्यः॥

एवंप्रकारकान्ये भवद्दूषणगणे जाते पण्डितानां मातृप्राप्यभाग-विषयिणी अनुकम्पा बहुपुत्रस्थले विभागोपक्रमं विना सकृत्पुत्रस्थले (ष)पि मात्रा प्राप्तम् भागं बोधयन्ती मातुर्भागो नैव भवतीति भवत्सुमाता भगिन्योऽर्थ(भागि)त्वं बोधयति; यतः शास्त्राविद्दस्वार्थस्थापलपन(मूल)ना-प्रहमूलकमेव भवति इत्याप्रदन्त्य(क्त्वा) कृतबुद्धिभिरन्यैः (स्व)त्वपातैः सह त्वयाऽवधार्य्यम्। भवदुत्तरे शब्द(ा)शुद्धयोऽनन्वितपंक्तयश्चास्माभिर्न दूषि-तास्तद्दूषणे प्रयोजनाभावात्। अ(न्यै:)…पाठशालास्थैरपाठशालास्थैश्च सर्व्वैरपि गतागतशास्त्रार्थो दृष्टः, गुणदोषश्चावधारितः। अत्र शास्त्रार्थे सर्व्वेषामनुमतौ भवतामप्यनु(म)तिरेव स्यात्, भूयसा व्यपदेशा इति न्यायाद् इत्यस्माकं प्रतिभाति। किञ्च मूर्खाणामिव पण्डितानामपि च नापण्डितेन भवता न कार्य्या, यतः शास्त्रार्थपत्रं समालोच्य प्रतिवादिकृतशास्त्रार्थ-निराकरणपूर्व्वकं स्वमतं महद्भिर्लिख्यते इति मह(तां सर)णी तथा त्वया

---

१ दा।   २ भवदूषणे—व्यव०।

न कृत इति पण्डितानामग्रे पाण्डित्यप्रयुक्तं गौरवं तन्मतनिराकरणं विना कदापि न भवति। समाधानपूर्व्वपक्षादिकमस्मिन् शास्त्रार्थे बहूनि जातानि, तानि सर्व्वाणि विस्तरभयान्न लिखितानि। भवत्पूर्व्वपक्षाणां समाधानान्येव पण्डितैर्लिखितानि। शास्त्रार्थेनात्र पण्डितानां वर्षशतेनापि पराजयो न भवति इति श्रीमद्भिर्निश्चेयम्। सुहृद्भावेनोच्यते मया यदयं शास्त्रार्थो भवते रोचते तर्हि व्यवस्थायां सम्मतिं कृत्वा पण्डिताना··· (?)मये साहाय्य देया इति सतामरामर्शः शिवम् ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

श्रीचन्द्रनारायणशर्म्मणः—

सम्मतिरत्रार्थे—

अत्रार्थे सम्मतिर्विट्ठलशास्त्रिणाम्।

अत्रार्थे सम्मतिः श्रीकान्तशर्म्मणाम्।

सम्मतिरेतदर्थे काशीनाथशास्त्रिणः।

अत्रार्थे सम्मतिः श्रीयदुनाथशुक्लशर्म्मणाम्।

अत्रार्थे सम्मतिस्सुकुलशर्म्मणाम्।

मदर्थे तदर्थंजाते जातेऽ(च)तुर्वेदहीरानन्दशर्म्मपण्डितस्य।

श्रीकृष्णदेवशर्म्मणां सम्मतिः।

अत्रार्थे सम्मतिः श्रीलज्जाशङ्करशर्म्मणाम्।

सम्मति ·· ··· शर्म्मणाम्।

पूर्व्वप्रेषितापरिलिखितव्यवस्थया पुत्राणां पैतृकधनविभागोपक्रमे मातृभागो निश्चित एव। एवञ्च मति विभागमन्तरा मातृभागाभावप्रतिपादकहेतुखण्डने यो हेतुः—*माता तु पितरि प्रेते पुत्रतुल्यांशहारिणी* इति कात्यायनीय—*समांशहारिणी माता पुत्राणां स्यान्मृते पतौ*—इति नारदीय—*पितुरूर्ध्वं विभजतां माताप्यंशं समं हरेत्*—इति याज्ञवल्कीय-*समांशा मातरस्तेषां तुरीयांशास्तु कन्यकाः*—इति बार्हस्पत्यवचसां प्रसिद्धप्रमाणानां सत्त्वादिति दत्त(:स)वहादूरणा शुक्लतद्वचनपाठपरायणतराणां धर्म्मशास्त्रार्थानभिज्ञानां विदुषां पुरः प्रकाशयति। तेषां चतुर्णामपि वचनानां सति विभागोपक्रम एव मातुः पुत्रभागसमभागप्रतिपादकत्वात्। नचैतादृशार्थेन सम्भवत्येतादृशार्थकरणे प्रमाणाभावात्, केनापि ग्रन्थकारेणालिखितत्वाच्चेति वक्तुं युक्तम्। तेषु प्रथमस्य—*माता तु पितरि प्रेते पुत्रतुल्यांश*-

हारिणी—इति कातीय (वचन)स्य *विभज्यते तदा मातुर्भागमाह* इत्यनेन दायतत्त्वे रघुनन्दनस्मार्त्तभट्टाचार्य्यैरवतारितत्वात्, विवादभङ्गार्णवविवादार्णवसेतुश्रीकृष्णतर्कालङ्कारादिकृतदायभागटीकासु बहुशः समुदितत्वाच; तेषु *समांशहारिणी माता*—इति द्वितीयस्य नारदवचनस्य, *पितरि चोपरते सोदरभ्रातृभिर्विभागे क्रियमाणे मात्रे पुत्रसमांशो दातव्यः*—इत्यर्थकतया जीमूतवाहनभट्टाचार्य्यैर्दायभागे व्याख्यातत्वात्।

अथ तृतीयस्य—*पितुरूर्ध्वं विभजतां माताप्यंशं समं हरेत्* इति याज्ञवल्क्यीयस्य *पितुरूर्ध्वं विभागेऽपि पत्नीनां स्वपुत्रसमांशित्वं दर्शयितुमाह* इत्यनेन मिताक्षरायामेव श्रीविज्ञानेश्वरैरवतारितत्वात्। किञ्च *पितुरूर्ध्वं विभजतां माताप्यंशं समं हरेत्*—इति याज्ञवल्क्यीयवचनस्य, *पितृद्रव्यविभागः स्यात् जीवन्त्यामपि मातरि। न स्वतन्त्रतया स्वाम्यं यस्मान्मातुः पतिं विना*—इति वीरमित्रोदयस्मृतिचन्द्रिकादिनिबन्धधृत-संग्रहकारी येन स्वतन्त्रतया *पितर्य्युपरते* तद्धनस्य विभागं कुर्व्वतां पुत्राणामस्वतन्त्रापि माता पुत्रांशसमांशं हरेत्तु भ्रात्रादिभ्य(त्) (पूर्व्वंस्या) पीत्यर्थस्य सर्व्वसम्मतत्वा(त्)। अजीवद्विभागे मातुरंशक " नामाहेत्यधस्" "कया याज्ञवल्क्यवचोऽवतार्य्य एतच्च स्त्रीधनस्याप्रदाने वेदितव्यमित्याद्य(परि क्या)ख्यात एव। स्मृत्यन्तरे *जनन्यस्वधना पुत्रैर्विभागेऽंशं समं हरेत्*—इति *अस्वधना प्रातिस्विकस्त्रीधनशून्या जननी पुत्रैर्विभागे क्रियमाणे पुत्रांशसममंशं हरेत्*—इत्यर्थः—इति व्यवहारमाधवे माधवापरपर्य्यायश्रीविद्यारण्यपादैर्विशिष्य प्रतिपादनेनैवमेव स्मृतिचन्द्रिकायां श्रीदेवा(नन्द)भट्टैः *तथाहि पतिद्वारागतं स्त्रीधनं नित्यं विभागानर्हमेव*, लोके दम्पत्योर्धने *विभागादर्शनात् जायापत्योर्न विभागो विद्यते*—इति हारीतस्मरणाच्च। एतेनात्र मातुः स्वत्वव्यवस्थापको दायविभागः। किन्तु यावदर्थमेवार्थहरणमिति मन्तव्यम्। अतएव स्मृत्यन्तरे निर्धनमातृविषयमेवांशहरणं न मातृमात्रविषयमिदमिति ज्ञायते, *जनन्यस्वधना पुत्रैर्विभागेऽंशं समं*-*हरेत्*—इतिस्मरणात्, *अस्वधना प्रातिस्विकस्त्रीधनशून्या जननी पुत्रैरजीवद्विभागे क्रियमाणे पुत्रांशसममेवांशं हरेत्*—इत्यर्थः। जननीग्रहणं तत्सपत्न्यादेरुपलक्षणार्थम्। *मातरः पुत्रभागानुसारिभागहारिण्यः*—इति

विप्णुरमरणात् । अस्वधनेति विशेषणोपादानात् स्वधनादेव स्वीयजीव-नस्य स्वानुष्ठेय ·····साध्यस्वकर्मणः सिद्धिसम्भवे जनन्यादीनां ■ भाग-ग्रहणमिति गम्यते । तथा च स्वधने मात्रा तयोः सिद्ध्यसम्भवे जनन्या-दीनां सधनानामपि न समभागहरणम्, किन्तु यथोपयोगं न्यूनभागस्यैव हरणमिति च गम्यते । तथा च विभा······सयोरतिबहुत्वे निर्धना-नामपि जनन्यादीनां न समांशहरणं किन्तु यथास्वोपयोगं समांशन्यूनस्यैवांश-हरणमित्यपि गम्यते । अस्वधनेतिविशेषणोपयोगवशादंशहरणं जनन्या न पुनर्भ्रातृव (त्) (स्व)त्ववशादितिज्ञापनार्थत्वात् । सममिति विशेषण-स्योपयोगवशादसमांशस्य हरणेप्यवैयर्थ्यम् । अल्पविभाज्यवस्तोरधिकपूर-णस्य प्रासस्य निवृत्त्यर्थत्वादिति प्रतिपादनेन भवदभिमतार्थस्य विभागोप-क्रमनन्तरापि मातृभागप्रापकत्वस्य दूरापास्तत्वात् । न च पुत्राणां पितृधन-विभागस्वातन्त्र्ये ऊर्ध्वं पितुश्च मातुश्च समेत्य भ्रातरः समम्—इति मान-धीयेन, पुत्र···बोधकेन विरोध इति वाच्यम् । ऊर्ध्वं पितुः—इति पितृधन-विभागकालः मातुरूर्ध्वम्—इति मातृधनविभागकालः । ततश्चैतदुक्तं भवति पितुरूर्ध्वं मातरि जीवन्त्यामपि पितृधनविभागस्तथा मातुरूर्ध्वं-पितरि जीवत्यपि मातृधनविभागः कार्य्य एव, अन्यतरधनविभागे उभयो-रूर्ध्वकालप्रतीक्षयानुपयोगादिति माधवीयव्याख्यानुपर्य्यालोचनया तथा अतएव पितुरूर्ध्वम्—इति पितृधनविभागकालः मातुरूर्ध्वम्—इति मातृ-धनविभागकालोऽभिहितः इत्यारभ्य, अतश्चानीशास्ते हि जीवतोः-इत्यपि तत्तद्धने व्यवस्थाया अस्वातन्त्र्यप्रतिपादक न स्वत्वप्रतिपादक जन्मना स्वत्व स्य पुत्राणां पितृधने व्यवस्थापनादित्यन्तेन वीरमित्रोदयस्मृतिचन्द्रिकादिनि-बन्धलिखनेन अप्रणारि तद्दोषाप्रतीतेः । युक्तं चैतज्जीवद्विभागोक्तं पितुः स्वा-तन्त्र्यात् । अजीवद्विभागे पुत्राणां स्वातन्त्र्यादित्यादिना विशेषतो वीरमि-त्रादयादावजीवद्विभागे पुत्राणामेव स्वातन्त्र्यप्रतिपादनाच, अस्वातन्त्र्यप्रति-पादकानां च जीवतोरस्वतन्त्रः स्यात्—इत्यादिवचनाना सकलनिबन्धकारैः मृतेऽपि पितरि जीवन्त्यां च मातरि पुत्रकर्तृको यो विभागः (स?) धर्म्य इत्येतत्परत्वव्यवस्थापनात् । अतएवास्मद्दत्तपूर्व्वव्यवस्थायां पुत्रे दुर्वृत्त-विशेषणं सार्थकमि(ति यदुक्तम)त्यावधातव्यम् । न चानुवादविशेष-

स्त्रीभूतस्य'''अर्थस्याविवक्षितत्वेन विभागोपक्रमे मृतेऽपि मातृभागप्रापकत्वसिद्धिरिति वाच्यम्। अविवक्षायां प्रमाणाभावात्। तदनुवादविशेषणत्वकथनेनैव सोऽर्थोऽस्तीति। यदपि पूर्वोक्तवचनद्वयैकरूप्यार्थ (?) तथा (कथ)नमिति तदपि न, तयोरपि सकलनिबन्धकारैरेतद्वचनसमानार्थकत्वेनैवोपपादितत्वात्। किञ्च लडर्थस्याविवक्षितत्वेन विभागोपक्रमानन्तरापि मातृभागप्रापकत्वस्यपितात्पर्य्यविषयत्वे विभजतामिति विशेषणपदस्यैवानर्थक्यापत्तिः। पितुरूर्ध्वं तु पुत्राणां माताप्यंशं समं हरेत्—इत्येतावतैव भवदभिमतार्थस्यावगमात् अध्याहाराभावप्रयुक्तलाघवानुरोधेन तादृशवचनप्रणयनस्यैवोचितत्वाच्च। पितरि मृते सति पुत्रैः क्रियमाणे विभागेऽपि मातुः समांश एव। तथाच योगीश्वरः पितुरूर्ध्वं विभजतां माताप्यंशं समं हरेत्। पितुरूर्ध्वं पितृमरणानन्तरम्॥ अत्रापि न दत्तं स्त्रीधनं यासां भर्त्रा वा श्वशुरेण वा—इति, दातुरूर्ध्वं प्रकल्पयेत्—इति च वचनद्वयं योज्यं समानन्यायत्वात्, प्रतिषेधाभावाच्च। एवमेव विज्ञानेश्वरधारेश्वरादीनां मतम्—इति मदनपारिजातलिखनात्। वीरमित्रोदयादौ तदुपरमविभागेऽपि पुत्रैस्ताः स्वसमांशभागिन्यः कार्य्याः—इत्याहेतियाज्ञवल्क्यवचनस्यावतारितत्वाच्चेति सुबुद्धिचञ्चवश्चिरश्चिन्तयन्तु॥ न च वरेत्—इति विधौ लिङ्विधित्वञ्चात्यन्ताभासप्रापकत्वम् तच्च न घटते इति वाच्यम्। ऊर्ध्वं पितुश्च मातुश्च—इत्यादिमन्वादिवचनैः पितृधने जाताधिकारैः पुत्रैर्विभागे क्रियमाणे मातुरपि तत्समांशभागित्वमित्यपूर्वबोधनेनैव कृतार्थत्वात्, एतेनेहत्यस्य विधेरप्रेरहत्वादनुत्वत्तेरित्यादिविधित्वाभावापत्तेश्चेत्यन्तं तद्वचनाशयमजानद्भिरुक्तमपास्तम्। मातृभागप्रापकस्य समांशा मातरस्तेषां तुरीयांशास्तु कन्यकाः—इत्यवशिष्टस्य तुरीयस्यापि पृथक्कर्तृकविभागप्रकरण एव सर्वैरुक्तत्वात्तस्यापि तदर्थबोधकत्वेन न तानि भवदर्थसाधकानीति सुधीभिराकलनीयम्॥ यदपि प्रलपितं विभक्तेषु सुतो जातः सवर्णायां विभागभाग् इति, भ्रातॄणामथ दम्पत्योः पितुः पुत्रस्य चैव हि। प्रातिभाव्यमृणं साक्ष्यमविभक्ते न तत्स्मृतम्—इति च तदतितुच्छम्। तयोर्विभक्तेष्विऽत्यस्य विभागोत्तरं जायमानस्यासत्यां दुहितरि भागप्रापकत्वात्, तदर्थस्य चाविभाज्यत्वात्। न च तत्र सम्भावितभागम(।)दायैव वचनप्रवृत्तिरिति-

वाच्यम्, वचनात्तदर्थाप्रतीतेः। स्वकपोलकल्पितस्यार्थस्याप्रमाणत्वाच्च। द्वितीयस्य तु *भ्रातृणामथ दम्पत्योः पितुः पुत्रस्य चैव हि*—इति वचनस्य पितृकृतविभागविषयत्वात् पितृकृतविभागे मातृभागो भवति नवेत्यस्याविवाद्यत्वात्? यदपि *विभिन्नमातृकास्तेषां मातृभागः प्रशस्यते*—इति वचनं तदपि वीरमित्रोदये यदपि व्यासबृहस्पतिवचसोरित्यादि कृतमधिकेनेत्यन्तेन ग्रन्थेन। तज्जीवनावधि तदाशाशावदतयास्थेयमिति समर्थितम्। अतस्तत एवाबाधात्थ्यमिति प्रथमहेतोरसमर्थनम्। यदपि एकपुत्रस्थले विभागासम्भवादित्यत्र दोषो ` वर्न तदपि देवानां'''दानं ददायकमेव। पितृकर्तृ(?)कविभागस्याविवाद्यत्वात् पितर्य्युपरते तदभावस्यास्मदभिप्रेतत्वाच्च विवादास्पदभूतस्थलाभिप्रायकमेव लिखमच्चेत्यलमति[1] जल्पनेनेतिविज्ञे, र्यमिति)द्वितीयहेतुसमर्थनम्॥

यदपि तृतीयहेतुखण्डनेऽधिमिताक्षरमेतद्व्याख्यान'''लाभादिति तदपि ग्रन्थार्थो सूत्रकमेव मिताक्षरायां जीवद्विभागे स्वपुत्रसमांशित्व पत्नीनामुक्तम् *यदि कुर्यात् समानशान्*—इत्यादिना *पितुरूर्ध्वं विभागेऽपि पत्नीना स्वपुत्रसमांशित्व दर्शयितुमा*हेत्यवतरणिकया पितुरूर्ध्वं विभजतामित्यवतारितत्वात्। अजीवद्विभागे मातुरंशकल्पनामाहेति याज्ञवल्क्यवचोऽवतार्य्य एतच्चेत्यादिना विशेषमुक्तिस्य *जनन्यस्वधना पुत्रैर्विभागेऽशं समं हरेद्*—इति स्मृत्यन्तरवचनमुपन्यस्य *अस्वधना प्रातिस्विकस्त्रीधनशून्या (?) जननीपुत्रैर्विभागेऽशं नियमाये पुत्रांशसमं हरेदित्यर्थः*। इति माधवीयात्, *जीवत्पितृकविभागे पित्रायया पुत्रांशसमांशभागिन्यः स्वपत्न्यः कार्य्यास्तथा तदुपरमविभागेऽपि पुत्रैस्ताः स्वसमांशभागिन्यः कार्य्याः*—इति वीरमित्रोदयलिखनेन याज्ञवल्क्यः *पितुरूर्ध्वं विभजतां मातापंशं समं हरेत्*, विष्णुः—*मातरः पुत्रभागानुसारिभागहारिण्यः*, स्मृत्यन्तरे—*जनन्यस्वधना पुत्रैर्विभागेऽशं समं हरेत्*, *स्वधना तु यावता स्वधनस्य पुत्रांशसमभागता भवति तावदेव हरेत्*—इत्यर्थः। *अशाधिकधनायास्तु नांश*—इति व्यवहारमयूखे नीलकण्ठभट्टलिखनेन च स्पष्टतया तदवगमाच्च। यत्रेदं विचा-

१. इस्मनाच्चे.दलमनात्जल्पनेनातावदे।

रणीत्वमित्यादिभागग्रहणातिरिक्तस्थले तद्वचनेनास्वातन्त्र्यबोधनाच्चे(त्) तदप्यत्यन्तासङ्गतत्वाद्धेयमेव[1]। पुत्राणां जन्मनैव सामुदायिकस्य प्रादेशिकस्य वा स्वत्वस्य सत्त्वेऽपि जीवति पितरि तदनुमतिमन्तरा पितृधनविभागाभावस्य मैथिलगौडपश्चात्यदाक्षिणात्यमतनिबन्धकृत्सम्मतत्वेऽपि तदुपरमे ऊर्ध्वं पितुश्च मातुश्च—इत्यादिवचनेन परस्परं तेषां तद्धनविभागस्य सर्वसम्मतत्वेऽपि पाणिग्रहणनिबन्धस्य क्षीरनीरवदेकलोलीभावापन्नसहकारिकर्म्मोपयोगिनो मातृस्वत्वस्य सत्त्वेऽपि पत्न्याः भागप्रापकविधिवचनाभावाद् यथा पत्युः सकाशा(त्)… पत्न्या भागो ग्रहीतुं शक्यते, तथा तत्र पत्युर्विनाशमन्तरा सद्ग्रन्थकारकृतव्याख्यानमन्तरापि वा विना विभागोपक्रमं पुत्रेभ्योऽपि तद्ग्रहीतुमशक्यत्वा(त्), अस्वातन्त्र्यस्याऽन्यत्र ग्रन्थकारकृतस्य उपात्तस्य स्वसंकोचकत्वं प्रत्युत सत्यात्। अतएव वीरामित्रोदये पत्न्याःपतिद्रव्ये स्वत्वं क्षीरनीरवदेकलोलीभावापन्नसहकारिकर्मोपयोगिनि…तु भ्रातृणामिव परस्परमतएव तेषां विभागो न जायते इत्युक्तं सङ्गच्छते। न च क्षीरनीरवदेकलोलीभावापन्नस्यैकस्यैव पाणिग्रहणनिबन्धस्य पत्न्याः स्वत्वस्य स्वीकारे पत्युरुपरमे स्वत्वप्रयोजकभूतस्य पत्यभावाभावात् कथमपुत्रायाः कृत्स्नधनाधिकारबोधका अपीवद् विभागे पुत्रां(?)समानाधिकारबोधकाश्च ग्रन्थाः सङ्गच्छन्त इति वाच्यम्। *पत्नी दुहितरश्चैव*—इति *पितुरूर्ध्वं विभजताम्*—इत्यादि याज्ञवल्क्यादिवचनैः पृथगधिकारबोधनेनाऽभावात् मातुः स्वातन्त्र्यमवश्यं पूर्वमेव बहुशःसमुदितत्वात् पुत्रेभ्यो भागग्रहणातिरिक्तस्थलेऽस्वातन्त्र्यमित्यर्थकल्पने प्रमाणाभावाच्च *समांशहारिणी माता*—इत्यादिवचनस्यान्यार्थत्वस्योक्तत्वाच्चेति मातृस्वर्यग्रहणार्थ(?) विच(?)र्षभार्यैरिति तृतीयस्य हेतोः समर्थनम्।

यदपि चतुर्थहेतुखण्डने एतादृशार्थकरणे प्रमाणाभावाद् बार्हस्पत्यवाक्याद्धरादलाभाच्च कपालकल्पितत्वाच्चेति हेतुत्रयं वदतिपः ''महामहोपाध्यायवाचस्पतिमिश्रकृतविवादचिन्तामणावेवैतादृशार्थस्य स्पष्टतरतया प्रतीतेर्भवदुक्तेर्बालोत्कप्रायत्वान्मदुक्तेः सप्रमाणत्वाद् बार्हस्पत्यवाक्याद्धरादलाभादिति अस्योत्तरं नु भवदुक्तपूर्वव्यवस्थायाम्। अस्यार्थः पितुरभावे अर्थात्

[1] °च्चे तन्तदप्यन्तनाप्र० व्यव०।

पुत्त्रैर्विभागे क्रियमाणे जननी पुत्त्रवती मातरोऽपुत्त्रा विमातर एताः सर्व्वाः पुत्त्रतुल्यांशभागिन्यः, एषां भगिनीनां भगिन्यश्चाविवाहिता विवाहार्थं स्वभ्रातृचतुरीयांशभाजो विवाहोचितधनभागिन्यो भवन्तीति मदनरत्न-विवादचन्द्रविवादचिन्तामणिदायक्रमनिबन्धकारैः कृत इति लिखन मेवेत्यलमधिकेन । एतेन स्वकपोलकल्पितत्वादित्यपि प्रत्युक्तमित्यवधा-तव्यम् । यदपि भगिन्या भागे भ्रातृणां स्वातन्त्र्यबोधकमनुयाज्ञवल्क्य-वचनवन्मातृभागे तदभावात्तया स्वेच्छया भागप्रदानं कार्य्यमिति तदप्यत्य-न्ताग्रहग्रस्तत्वाद्धेयमेव । प्रसिद्धप्रमाणानि याज्ञवल्क्यादिवचांसि प्रथम-हेतुव्यवस्थापने लिखिततत्तन्निबन्धकारकृतव्याख्यानानि च युक्तयाभासै-रपलाप्य प्रमाणग्रन्थशून्यत्वोक्त्या तदर्थस्य व्यवस्थापनेनाप्रमाणत्वादिति चतुर्थहेतुसमर्थनम् ॥

अथ भवन्मते विरोधो(द्भा)वनम् । कस्यचित् पुत्त्रिकाकरणानन्तरं औरसपुत्त्रोऽजनि । तदनन्तरं पत्नीं पुत्त्रिकां च त्यक्त्वा स लोकान्तरमग-मत् । तत्पत्न्यपि प(श्चा)दिमं लोकमजहात् । तयोर्निधनानन्तरं पुत्त्रिकापुत्त्र-योर्विभागप्रसक्तावस्मन्मते समस्तत्र विभागः स्यात्—इत्यादिवचनेन कृत्स्नधनस्य सम एव विभागः सकलनिबन्धसिद्धः । भवतां तु सा मातृभागं पूर्व्वं गृहीत्वा पश्चात् पुनरवशिष्टार्द्धं ग्रहीतुमर्हतीति तत्तद्विषयवचनव्याकोपो धर्य्यैवहस्तैरपि दुर्निवार्य्यं इति सहृदयैरवधातव्यम् ॥ यत्तु दत्तजलाञ्जलि-क्षेपणादनमशक्यं कर्त्तुं त्वयेति तदाशयानवबोधतो बोधयति । विद्यमान-मातृकस्याजातपुत्त्रादेर्देवदत्तस्य मरणानन्तरं पत्नी दुहितरश्च – इति याज्ञव-ल्कीय-अपुत्रस्य धनं पत्न्यभिगामि – इति वैष्णववचनाभ्यां पत्न्या अधिकारित्व-बाधनेऽपि अविभक्तससृष्टभ्रातृतो भागाभावाय पूर्वोक्तवचनयोरविभक्तसंसृष्ट-धनान्यविषयत्वमित्यर्थस्य गौडातिरिक्तसकलमुनिवचनव्याख्यातृसम्मतत्वेन सत्यपि मातरि तद्धनस्य अविभक्तससृष्टत्वेन मातृतः पूर्व्वं पत्न्यधिकार-बोधनस्य दत्तजलाञ्जलिता सहस्रास्यैरपि(दु)र्निवारा इति तन्त्रतत्त्वज्ञा विभावयन्तु ॥

१२७—रोवकारी मिछिल सदर देओयानि आदालत ओयाके सन १८३२ सालेर ५ जानेर मोताबके सन १२३८ सालेर

২২ পৌষ বৃহস্পতিবার শ্রীযুত হেনরী সিকিসপীয়র সাহেব হৈ আদালতের হাকিমের বৈঠকে—

মৈরবীদাসী বনামে নবকৃষ্ণাবসু

সাএলার উকিল মুনসী গোলাম আহম্মদ হাজির আইল। পূর্ব্বে সন ১৮৩১ সালের ১ দিজম্বর তারিখে সাএলার খাস আপীলের দরখাস্ত দরপেষ হইয়া জেলার ফৈসলা দিষ্টি করণ জন্যে মুলতবি ছিল, তদনুসারে গত কল্য সাএলার দ্বিতীয় দরখাস্ত ফৈসলা আগৈরহ সম্বলিত উপস্থিত হইয়া সাবিক দরখাস্তের সম্বলিত করিয়া উপস্থিত করণের হুকুম হইয়াছিল। সে প্রযুক্ত অদ্য সাএলার খাস আপীলের দরখাস্ত তৎসমভিব্যাহারি কাগজাত সম্বলিত উপস্থিত ও পাঠ হোইল। হুকুম হইল যে জিলার ফৈসলা ও সাএলার ওকীলের প্রকার দাখিল করা ব্যবস্থা এ বিষয়ের যথার্থ তলবে যে যদপি স্যাৎ উক্ত ফৈসলার লিখিত প্রকরণ সকল সত্য অথবা ফৈসলার লিখিত ব্যবস্থা অথবা সাএলার উকিলের দাখিল করা ব্যবস্থা—এহার কোন ব্যবস্থা যথার্থ এ আদালতের পণ্ডিতের নিকট এই হুকুমে পাঠানো জায় যে পণ্ডিত মজকুর উপরের লিখিত প্রকরণের উত্তর অতি ত্বরায় লিখেন ইতি ॥

শ্রীর্জ্জয়তিতরাম্

এতদ্ধর্ম্মাধিকরণাধিপতিশ্রীযুতহেনরীসিকিসপীয়রসাহেবধর্ম্মাধিকরণ-লিখিনৈতদব্দীয়জানবরীমাসীয়পঞ্চমদিবসীয়বিচারপত্রান্তর্গতপ্রশ্নপ্রতিরূপ-পত্রমেবং তৎসমর্পিতজিলাখ্যাবান্তরধর্ম্মাধিকরণীয়জয়পত্রমেতদ্ধর্ম্মাধিকর-ণার্থিনীনিযুক্তোকীলশব্দবাচ্যেন তদ্দিনে নিবিষ্টং ব্যবস্থাপত্রঞ্চ যতদব্দী-যতন্মাসীয়ৈকবিংশতিদিনসম্বন্ধিবৃহস্পতিবাসরে ঘটিকাদ্বয়াধিকযামদ্বয়ানন্তরং ময়া প্রাপ্তং তদবলোক্য যাদৃগ্বোধো জাতস্তদনুসারেণোত্তরং লিখ্যতে ॥

প্রমুসমর্পিতজয়পত্রলিখিতপ্রকরণানাং মধ্যে এতদ্ধর্ম্মাধিকরণার্থিন্যা উত্তরপত্রলিখিতপ্রকরণানাঁ সত্যত্বে সত্যেতদ্ধর্ম্মাধিকরণার্থিনো নিযুক্তোক

संग्रब्दवाच्यनिविष्टव्यवस्थैव शास्त्रसम्मता भवति । तदुत्तरपत्रलिखितप्रकरणानामसत्त्वे तत्रयपत्रलिखितव्यवस्थैव शास्त्रसम्मता भवतीति ॥

एतदब्दीयफेब्रवरीमासीयचतुर्थदिनसम्बन्धिशनिवासरे मयेयं व्यवस्था लिखिता ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१२८—रोवकारि मिछिल सदर देओयानि आदालत ओयाके तारिख ७ जानेर सन १८३२ साल मोताबेक सन १२३८ सालेर २४ पौष शनिबार श्रीयुत आलक सुन्दर राश साहेब ऐ आदालतेर हाकिमेर बैठके ॥

बदनचन्द्रसिंह बनाम मथुरामोहनपालीत ओ महेशचन्द्रसिंह

साएलेर वकिल मौलवि करम होछेन ओ तरफछानिर उकिल मुनशी गोलाम रसुल हाजिर आइल । सायेलेर सओयाल एक शत पञ्चाश टाका दामेर कागजेर पर दोस्तपुर आगयेरह तालुक विरोधि विषयेर दखल पाइबार मोकर्दमाय मबलगे पाँच हाजार टाका ए विषयेर दामेर तायदादे ओ उकिल मजकुरेर नामेर एक केता ओकालतनामा ओ रामकृष्णवन्द्योपाध्यायेर नामेर एक केता मोख्तारनामा ओ सन १८२८ सालेर २१ जुन तारिखेर हुगलि जेलार देओयानि आदालतेर एक केता फयछलार नकल ओ सन १८३० सालेर १७ आगष्ट तारिखेर लिखित एलाका कलिकातार कोट आपीलेर एक केता फयशलार नकल ओ सन १८२६ सालेर २३ शेतम्बर तारिखेर लिखित कलिकातार कोट आपीलेर एक केता रोवकारिर नकल सहित ये, सन १८३० सालेर १६ दिजम्बर तारिखे दाखिल हइया छिल, अद्य तरफछानिर शन १८३१ सालेर १३ आपरेल तारिखेर दाष्ट कया सओयालेर सहित दृष्टे आइल,

बोध हइल ये पार्व्वतीचरण मोतओफफार तेज्य विषय लाट नारायण पाड़ा उहार चारि पुत्रेर मध्ये अर्थात् वदनचन्द्रसिंह प्राप्तव्यवहार ओ महेशचन्द्रसिंह ओ ईशानचन्द्र ओ हरिशचन्द्र अप्राप्तव्यवहार एकत्तर ओ साधारणे छिल, ओ वदनचन्द्रसिंह मजकुर ये मालिक ओ कारवारेर कर्त्ता एवं भ्रातासकलेर सहित एकान्ने छिल लाट मजकुरेर मोतालकेर मौजे शोलपुर ओगयरह विरोधि विषय द्वितीय भ्रातासकलेर अंश सहित तरफ़ह्रानिर जेमार मुद्दाइ मथुरमोहनपालीतेर निकट बयवलओफार ? प्रकरणे दरपत्तनि तालुक विक्रय करिया जखन बयवलओफार मेयादेर मध्ये पोनेर टाका आदाय करिलेक ना। मुद्दाइ सेइ समय शन १८०६ शालेर ?७ कानुनेर नियम आमले आनिया बयवातं सम्बन्ध हइबार जन्य एइ नालिश दरपेश करिया जेला ओ कोर्ट हइते ईशानचन्द्र ओ हरिशचन्द्रेर अंशेर कर्त्तन बादे वदनचन्द्र ओ महेशचन्द्रेर अंश बयवातेर बाबत डिगरि हाशील करियाछे, ओ महेशचन्द्र जाहेर करे ये बयवलओफा हओनेर समय आमि अप्राप्तव्यवहार छिलाम, आमार पक्ष हइते वदनचन्द्र कओलाते दस्तखत करिया दियाछे ओ वदनचन्द्रेर क्षमता छिल ना ये आमि अप्राप्तव्यवहारेर अंश बयवलओफा अथवा सम्पूर्ण विक्रय करे। एजन्य आमार निकट हुकुम प्रकाश हओनेर पूर्व्वे ए आदालतेर पण्डितेर निकट व्यवस्था लओया उचित बोध हइया हुकुम हइल ये एइ रोबकारिर नकल एइ हुकुमे ये निचेर लिखित सओयालेर जओयाब एइ रोबकारि पाओयार तारिख हइते एक सप्ताह मेयाद मध्ये दाखिल करेण—ए आदालतेर पण्डितेर हाओला करा जाय इति ॥

सओयाल—

यद्यपि स्यात् सहोदर दुइ भ्राता अथवा तिन चारि भ्राता आपनारा एकान्नभुक्त, ओ ताहार मध्ये एक जन प्राप्तव्यवहार, ओ द्वितीय सकल अप्राप्तव्यवहार थाके, ओ प्राप्तव्यवहार भ्राता

मौरूशी साधारण विशयेर मध्ये किछु अप्राप्तव्यवहारसकलेर अंश सहित हस्तान्तर करे, तबे ए प्रकार हस्तान्तर सिद्ध कि ना एवं प्राप्तव्यवहार भ्रातार मौरूशी साधारण विशय अप्राप्तव्यवहार भ्राता सकलेर अंशसहित, ये एकान्ने थाके, कोन प्रकारे हस्तान्तर करणेर क्षमता बाङ्गलादेशेर चलित शास्त्रानुसारे आछे कि ना इति ॥—

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतमलकसुन्दररायमहोदयधर्म्माधिकरणलिखितैतदब्दीयजानवरीमासीयसप्तमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदब्दीयतन्मासीयैकविंशतिदिनसम्बन्धिबृहस्पतिवासरे घटिकाद्वयाधिकयामद्ययानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यद्यपि सहोदरौ द्वौ भ्रातरौ त्रयश्चत्वारो वा भ्रातर एकपाकेन भोक्तारः, तेषां मध्ये एकः प्राप्तव्यवहारोऽन्ये चाप्राप्तव्यवहारा भवन्ति। एवञ्च सति प्राप्तव्यवहारो भ्राता क्रमागतसाधारणधनानाम्मध्ये किञ्चिद्धनमप्राप्तव्यवहाराणां सर्व्वेषामंशसहितं हस्तान्तरं कृतवान् स्यात्, तत्र यदि तादृशहस्तान्तरमधो लिखितहेतुसमुदायान्तर्गतैकस्मिन्नपि हेतौ सति कृतवान् स्यात्तदा स्वांशयोग्ये स्वेतरांशयोग्ये च सिद्ध्यति, तादृशहेतुसमुदायान्तर्गतैकस्मादपि हेतोर्विना तादृशहस्तान्तरकर्त्तुर्भ्रातुरंशे सिद्ध्यति, तदितरांशे न सिद्ध्यति। एवमेकपाकेन भोक्तुः प्राप्तव्यवहारस्य भ्रातुः क्रमागतसाधारणधनस्याप्राप्तव्यवहाराणां सर्व्वेषां भ्रातॄणामंशसहितस्य कुटुम्बभरणाद्यर्थं भगिन्यादिविवाहाद्यर्थं वा भ्रात्रादिविवाहाद्यर्थं वा रोगोपशमनाद्यर्थं वा पित्रादिकृतर्णापाकरणाद्यर्थं वा पित्रादिश्राद्धाद्यावश्यककार्य्यादिसम्पत्त्यर्थं वा हस्तान्तरकरणक्षमतास्त्येव। उपरिलिखितकुटुम्बभरणाद्यावश्यककार्य्यार्थं दासादीनामपि स्वामिधनस्य हस्तान्तरकरणक्षमतायाः शास्त्रीयत्वेन चतुर्णां सोदरभ्रातॄणामेकपाकेन वसतामध्ये प्राप्तव्यवहारस्य ज्येष्ठभ्रातुरप्राप्तव्यवहाराणामवशिष्टानां त्रयाणां भ्रातॄणां शास्त्रानुसारेण पितृवत्प्रतिपालनाद्यावश्यककार्य्यकरणक्षमस्योपरिलिखितकुटुम्बभरणाद्यावश्यककार्य्यकरणार्थं

साधारणक्रमागतधनानाम्मध्ये तत्तत्स्वर्योपयुक्तस्य धनस्य हस्तान्तरकरणञ्च-मतायाः अर्थविरुद्धत्वात्-इति वङ्गदेशाचलितमनुदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकादायतत्त्वव्यवहारतत्त्वव्यवहारमातृकाविवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥

अथ प्रमाणम्—

स्वभागान् यदि दद्युस्ते विक्रीणीयुरथापि वा ।

कुर्य्युर्यथेष्टं तत्सर्व्वमीशास्ते स्वधनस्य वै ॥—इति दायभागादिग्रन्थधृतनारदवचनम् ॥१॥

अत्र साधारणद्रव्यस्य समुदायस्यैकेन विक्रये परांशयोग्ये असिद्धिः, स्वांशयोग्ये तु सिद्धिः अन्यानुमत्या विक्रये तु तत्सिद्धिः—इति विवादभङ्गार्णवग्रन्थलिखनम् ॥२॥

कुटुम्बार्थेऽप्यधीनोऽपि व्यवहारं यमाचरेत् ।

स्वदेशे वा विदेशे वा तं ज्यायान्न विचालयेत् ॥—इत्युपरिलिखितग्रन्थधृतमनुवचनम् ॥३॥

पितृव्यभ्रातृपुत्रस्त्रीदासशिष्यानुजीविभिः ।

यद्गृहीतं कुटुम्बार्थे तद्गृही दातुमर्हति ॥—इति तत्तद्ग्रन्थधृतबृहस्पतिवचनम् ॥४॥

कुटुम्बार्थमशक्ते[1] तु गृहीतं व्याधितेऽथवा ।

उपप्लवनिमित्तञ्च विधादापत्कृतं तु यत् ॥

कन्यार्थैवाहिकञ्चैव प्रेतकार्येषु[2] यत्कृतम् ।

एतत्सर्व्वं प्रदातव्यं कुटुम्बेन कृतं प्रभोः ॥—इत्युपरिलिखितग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥५॥

पितर्य्युपरते पुत्रा ऋणं दद्युर्यथांशतः ।

विभक्ता अविभक्ता वा यो वा तामुद्वहेद्धुरम् ॥—इति विवादभङ्गार्णवादिग्रन्थधृतनारदवचनम् ॥६॥

---

१. कुटुम्बार्थमशक्तेन गृहीतं व्याधितेऽथवा ।
  उपप्लवनिमित्ते च विधादापत्कृते तु तत् ॥—कात्य०

२. प्रेतकार्ये च—कात्य० ।

अत्रेदमवधेयम् । कुटुम्बमरणादिरूपयादृशयादृशकार्य्ये उपस्थिते दासकृतमृण प्रभुणा शोधनीयमिति प्रतीयते तादृशतादृशकार्य्यनिष्पत्त्यर्थं प्रभुधनविक्रयोऽपि सिद्ध्यति । तदतिरिक्तविषय एव स्वाम्यनुमतपदेन बाध्यते—इति विवादभङ्गार्णवग्रन्थलिखनम् ।।७।।

पितेव पालयेत् पुत्रान् ज्येष्ठो भ्रातॄन् यवीयसः ।
पुत्रवच्चापि वर्त्तेरन् ज्येष्ठे भ्रातरि धर्म्मतः ।।—इति मनुवचनम् ।।८।।
एकोऽपि स्थावरे कुर्याद्दानाधमनविक्रयम् ।
आपत्काले कुटुम्बार्थे धर्म्मार्थे च विशेषतः ।।—दायतत्त्वादिग्रन्थधृतमुनिवचनञ्चेति ।।९।।

एतदब्दीयफेब्ररुअरीमासीयैकविंशतिदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।।

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१२९—रोवकारी मिछिल सदर देओयानि आदालत ओयाके तारिख २/ माह जानओयारि ई सन १८३२ साल मोताबक[1] १३ माघ बाङ्गला सन १२३८ साल रोज बुधबार श्रीयुत हेनरि सिकिमपीयर साहेबे आदालत् मजकुरेर हाकिमेर बैठके ।।

बिश्वेश्वरीदेवी बनामे ताराचन्द्रचाटुर्य्या

छापेलार मोक्तार रामकानाइघोष हाजीर हइल । छापेलार सओयाल ई सन १८३१ सालेर ९ माह शेनम्बर तारिखेर । एलाका मुरशीदाबादेर प्रोविन्शीयाल कोर्टेर हाकिम फिलिप इरनिष पाटल साहेबेर फयसला, जाहाते मुद्दाइ ताराचन्द्रचाटुर्य्यार हक्के डिगरि हइयाछे, ताहार नाराजीते एइ मोकद्दमाय माफनिशी आपील मञ्जुरि प्रार्थनाय मोजाहाय मुलुदी ओगयरह रकम दुइ आना

१. मोताबक—व्यव० ।

दुइ कडार दखल पाओयार बाबते २७०१८९१२ टाकार दाइने। मोक्तार मजकुरेर नामे मोक्तारनामा सम्बलित श्रो इं सन १८३१ सालेर ९ सेतम्बरेर लिखित एलाका मुरशीदाबादेर कोटेर फयसलार नकल अनैक्यवा जे एइ माह जानओयारिर १६ तारिखे दाखिल हइयाछेज, पडागेल। यद्यपि स्यात्, एइ मोकर्द्दमार मोफर्निशां सुरत् आपील नामञ्जुरि कि मञ्जुरिर हुकुम द्यादेग हओनेर पूर्व्वे एइ आदालतेर पण्डितेर द्वाराय निचेर लिखित विशय दरिआप्त करा उचित हइल। ए जन्य हुकुम हइल ये तलस महबारि कागजात सओयाल ओगयरह एइ गोबकारिर नकल सम्बलित एइ आदालतेर पण्डितेर निकट एइ हुकुमे पाठान जाय-ये पण्डित मोछप कोटेर फयछलार लिखित सबयसकलेर एवं ताहार लिखित कैफियत् अनुमोदने एइ विशयेर जओयाब तत्क्षणात् लिखेन ये लिखित फयसलार लिखित पण्डितेर व्यवस्था दोरस्त वटे किम्वा मोकद्दमार हालत् अनुमोदने ताहार सत्यताय किछु सन्देह प्रकाश हइते पारे कि ना इति॥

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतहेनरीसिक्रापीयरसाहेबधर्म्माधिकरणलिखितैतद्ब्दीयजानवरीमासीयपञ्चविंश तदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेव तत्समर्पितैतद्विवादविषयनिष्पन्ननिवेदनपत्रादिकञ्च यत्तदब्दीयफेवरवरीमासीयदशमदिनसम्बन्धिशुक्रवासरे घटिकात्रयाधिकयामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते॥

प्रभुसमर्पितजयपत्रलिखितप्रश्नत्रयस्योत्तरे तज्जयपत्रलिखितपण्डितदत्ता व्यवस्था शास्त्रसम्मता भवति। किन्तु देवचन्द्ररायेण स्वजीवनदशायां स्वस्वत्वास्पदीभूतधनमविवाहितायै स्वकन्यायै दासमन्यै दत्तमित्यर्थिन्या निवेदनपत्रे लिखितमस्ति-तत्सत्यं चेत्तदा दासमन्या मरणोत्तरं तद्दानानुसारेण तत्स्वत्वास्पदीभूतमौदायिकस्त्रीधने तद्दुहित्रभावे तत्पुत्रस्य सर्व्वचन्द्रस्य स्वत्वे जाते सति तन्मरणोत्तरं तन्मातामह्यां वेदनत्यां पूर्व्वधनस्वामिनो देवचन्द्रराय्स्य पत्न्यां विद्यमानायामपि तस्य सर्व्वचन्द्रस्य पुत्रपौत्रप्रपौत्राभावे तत्पत्न्या विश्वेश्वरीदेव्या एवाधिकारो यतस्तज्जयपत्रे लिखितमस्ति। प्रत्यर्थिनीविश्वे-

श्वरीदेवीनिर्दिष्टशाद्युपस्थापितमृचान्तेन देवचन्द्ररायस्य मरणोत्तरं तत्कन्याया दासमन्या आयत्तं तत्स्वत्वास्पदीभूतं धनं यद्यपि जातम्, किन्तु दासमन्या मरणोत्तरं देवचन्द्ररायस्य पत्न्या वेदवत्या आयत्तमपि जातमिति। एतादृशलिखनेन देवचन्द्रस्य मरणोत्तरं तस्य पुत्रपौत्रप्रपौत्राभावे तत्स्वत्वास्पदीभूतधने शास्त्रानुसारेण प्रथमतस्तत्पत्न्या वेदवत्या एवाधिकारित्वेन विद्यमानां तां विहाय तत्कन्याया दासमन्या आयत्त तद्धनं कमप्येकं हेतुं विना भवितुं न शक्नोतीति। अतएवास्त्येव कश्चिद्धेतुरित्यवगमात्। एवञ्च सति तत्रपत्रलिखितविशिष्टतदस्त्यत्रयेतद्विवादसम्पर्काद्यैव — इतिवङ्गदेशाचलितमनुदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकादायतत्त्वदायकमसंग्रहविवादार्णवमनुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था॥

अत्रप्रमाणम्—

प्रदान स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनम्॥ १॥

ऊढया कन्यया वापि पत्युः पितृगृहेऽथवा।
भर्तुः सकाशात् पत्नोर्भ्या लभ्यं सौदायिकं स्मृतम्॥—इति दायभागादिग्रन्थधृतकात्यायनवचनम्॥ २॥

विवाहकाले तत्पूर्वापरकाले वा स्त्रिये यद्धनं पित्रा दत्तं तत्र तु धने प्रथमं कुमार्य्याःतदनन्तरमूढायाः पुत्रवतीसम्भावतपुत्रयोस्तदनन्तरं वन्ध्याविधवयोश्चाधिकारः। सर्वदुहित्रभावे पुत्रादेर्य्यौतुकधनवत् क्रमेणाधिकारः—इतिदायक्रमसंग्रहग्रन्थलिखनम्॥ ३॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा—इत्यादि दायभागादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनञ्चेति॥ ४॥

एतदब्दीयमार्च्चमासीयनवमदिनसम्बन्धिशुक्रवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति॥

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

१. °ग्रन्थेति—मरा०।

२७६४पृ—

१३०—रोवकारि मिच्छिल सदर देओयानि आदालत ओयाके तारिख ■ माह् फिवरेल इं सन १८३२ साल मोताबक २६ माह माघ बाङ्गला शन १२३८ साल रोज मङ्गलवार श्रीयुत हेनरि सिकिशपीयेर साहेब आदालत मजकुरेर हाकिमेर बैठके—

दुर्गादत्त   आपिलाण्ट

बुनियादसिंह   रेस्पाण्डण्ट

आपिलाण्टेर उकिल मुनशी होशन आलि ओ सदासुद पण्डित, ओ रेस्पाण्डण्टेर उकिल मुनशी दादारबकस हाजर आइल। इत पूर्व्वे सन हालेर ३०।३१ माह् जानओयारिते एइ मोकद्दमा आमार बैठके रोवकार ओ प्रथम आदालतेर यावत् प्रविनशीयान कोर्टेर साद्यक कागजात तथाकार फयसला पर्य्यन्त ओ एइ आदालतेर दाखिल हओया कागजात गतो शनेर ४ आपवेलेर लिखित रोवकारि पर्य्यन्त पढा हइया, दिवा अवसान प्रयुक्त मुलतवि छिल। अद्य पुनराय दरपेष एइ मोकद्दमार यावत् एइ आदालतेर सकल कागजात ओ एइ आदालतेर तलब करा त्रिपुरसुन्दरिदत्तेर ओ गङ्गाजलिर मोकद्दमाय याजे कागजात पढागेल। तत्परे रेस्पाण्डण्टेर तरफ हइते मिरआकबर आलि एक केता मोख्तारनामा दाखिल करिलेक अनुमोदने आइल। जेलार जजसाहेबेर प्रेरित कागजातेर फिरस्त इहाइ मालुम हय-जे जे समय अवदर्त्त ओ त्रिपुरसुन्दरिदत्तेर कि-नयोर दखिलकारिर तहकीकातेर कर्म्मजेर तजबिजे छिल, रेस्पा-ण्डण्ट आदालतेर तलब मते चारि केता नकल छोनेनामा, जाहा कालेक्टरिते दाखल हइयाछिल, दरपेष करे। एवं ताहार परे जजसाहेब ताहा ओ तहकीकातेर कागजात सम्बलित प्रोविन-शीयान कोर्टे पाठान इति। यद्यपि स्यात् सत्यतार तहकीकातेर पूर्व्वे एइ विषयेर दरियाप्त करा उचित हइल ये यद्यपि स्यात् पूर्व्व उक्त छोनेनामासकल सकलेर सम्मति मते लेखा हइयाथाके

तवे ताहार लिखित शरतसकल शास्त्रेर आ⋯रामते सत्य, ओ आमले आना उचित बटे कि ना। ए जन्य हुकुम हइल ये चारि केता नकल छोनेनामा एइ हुकुमे ये अदालतेर पण्डित ताहार मजमुन अनुमोदने उपरेर विशयेर जओयाब दुइ सप्ताह मध्ये लिखेन-एइ आदालतेर पण्डितेर निकट पाठान जाय-एवं ताहार जओयाब आशा पर्य्यन्त मोकद्दमा मुलतवि थाके इति ॥

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतहेनरीसिकिमरीगरसाहेबधर्म्माधिकरण-लिखितैतदब्दीयफेब्रुवरीमासीयसप्तमदिवसीयचिठिपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूप-पत्रमेकं तत्समर्पितसलिखितप्रतिरूपपत्रचतुष्टयं च मत्तदब्दीयतन्मासीयद्वा-विंशतिदिनमध्यन्त्वबुधवासरे घटिकाद्वयाधिकयामद्वयानन्तरं मया प्राप्तम् तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥

उपरिलिखितसर्त्तपत्राणि यदि सर्व्वैर्भ्रातृभिः समतया लिखितानि स्युस्तदा तत्तल्लिखितनियमाः शास्त्रानुसारेण यथार्थो भवन्ति, एवं तत्तन्नियमानां स्वीकरणमुचितं भवति । यतस्तत्तल्लेखनेषु तत्तल्लेखकैर्भ्रातृभिः सर्व्वैरेव लिखितपूर्व्वकृतविभागोऽतोऽसिद्ध इति । अतएव तत्तत्सर्त्तपत्रलिखित-नियमैर्वास्तवं शास्त्रानुसारेण केषाञ्चिदपि काचिदपि स्वत्वहानिर्भवतीत्यन यगमात्—इति मिथिलादेशचलितमनुविवादचिन्तामणिविवादरत्नाकर-विवादचन्द्रयोःमित्रोदयप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥ ० ॥

अत्र प्रमाणम्—

भ्रातरस्त्वविभक्ता ये सरुच्या तु परस्परम् ।
विभागपत्रं कुर्व्वन्ति भागलेख्यं तदुच्यते॥—इति वीरमित्रोदयादि-ग्रन्थधृतबृहस्पतिवचनम् ॥१॥

पतितस्तत्सुतः क्लीबः पङ्गुरुन्मत्तको जडः ।
अन्धोऽचिकित्स्यरोगार्त्तो भर्त्तव्यास्ते निरंशकाः ॥—इत्युपरिलिखित-ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥२॥

पश्चादप्यौषधादिना दोषनिर्हरणे ऽस्त्येवांशभागिता—इति वीरमित्रोदयग्रन्थलिखनम् ॥३॥

मृते पितरि न क्लीबकुष्ठ्युन्मत्तजडान्धकाः ।

पतितः पतितापत्यं लिङ्गी दायांशभागिनः ॥

तत्पुत्राः पितृदायांशं लभेरन् दोषवर्जिताः—इति विवादचिन्तामणिविवादरत्नाकरादिग्रन्थधृतदेवलवचनम् ॥४॥

औरसाः क्षेत्रजाश्चैषां निर्दोषा भागहारिणः ।

सुताश्चैषां च भर्त्तव्या यावत्तो भर्तृसात्कृताः ॥

अपुत्रा योषितश्चैषां भर्त्तव्याः साधुवृत्तयः ॥—इति तत्तद्ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥५॥

भरणं चास्य कुर्वीरन् स्त्रीणामाजीवनक्षयात्—इति तत्तद्ग्रन्थधृतशङ्खवचनञ्चेति ॥६॥

एतदब्दीयमार्चमासीयद्वाविंशतितिदिनसम्बन्धिबृहस्पतिवासरे घटिकाद्वयाधिकयामद्वयानन्तरं मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१३१—दोयकारी मिछिल सदर देओयानी आदालत श्रोयार्क तारिख १६ माह फिबरेल इं सन १८३२ साल मोताबक ५ फाल्गुण व ङ्गला शन १२३८ साल रोज बृहस्पतिबार श्रीयुत हेनरि सिकिसपीयर साहेब आदालत मजकुरेर वैठके ॥

भैरवीदासी बनामे नवकृष्णबसु

सायेलार वकिल मुनशी गुलाम आहाम्मद ओ तरफसानिर तरफ हइते सदासुखपण्डित एक केता ओकालातनामा दाखिल करिया हाजीर आइल । इत पूर्व्वे गत सनेर १ दिजम्बर तारिखे छापेलार सओयाल दरपेष हइया फयछला अनुमोदनेर जन्य मुलतवि छिल । तदनुजाइ छापेलार दोसरा छओयाल फयछला

सम्बलित अनुमोदने सन हालेर ५ जानेओयारि तारिखे एइ विशयेर जओयाव तलव—ये यद्यपि स्यात् फयछला मजकुरेर लिखित विशयसकल सत्य तवे फयछलार लिखित व्यवस्था अथवा छायेलार उकिलेर दाखिल करा व्यवस्था दोरस्त वटे। एइ आदालतेर पण्डितेर स्थाने (जिज्ञासा) हय। तदनुजाइ पण्डितेर जओयाव दाखिल हओयाते अद्य छायेलार खाप आपीलेर छओयाल तत्समभिव्या[1]-हारि कागजात सम्बलित आमार बैठके रोवकार हइया छायेलार उकिलेर स्थाने जिज्ञाशा करागेल—ये आसल दस्तावेज नेमपत्र जाहा ओछियत नामा छओयाले लिखियाछ, कोन मोकर्द्दमाय कोन आदालते दाखिल हइयाछिल। जओयाव जेलाः—२४ परगणार देओयाणि आदालते मवलग १४८८॥० टाका तालुकातेर हिस्या यावत् ८५६ लम्बरेर मोकर्द्दमाय, जाहाते नवकृष्णवसु मुद्दाइ ओ भैरवीदासी मुद्दालेहेम् छिल, दाखिल छिल इति। यद्यपि स्यात् एइ आदालतेर जओयावे एइ विषय लिखित ये यद्यपि स्यात् फयछलार लिखित छायेलार जओयावेर विषयसकल सत्य-हय, तदनुसारे छाएलार दाखिल करा व्यवस्था शास्त्रानुजाइ दोरस्त वटे। याहाहउक, परे एइ विषय दरियाप्त हयना ये 'फयछलार लिखित छाएलार जओयावेर लिखित कोन विषय दोरस्त ओ सत्य हओन सववे' छाएलार दाखिल करा व्यवस्था दोरस्त। ताहार प्रति दृष्टे हुकुम हइल ये नेमपत्र दस्तावेज मजकुर एइ हुकुमे एइ आदालतेर पण्डित ताहार अनुमोदने उपरेर लिखित विषयेर पत्र[2] ओ सारओयार एक सप्ताह मध्ये लिखेन, एवं ताहा आशा पर्य्यन्त मोकर्द्दमा मुलतवि थाके इति॥

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतदेनरीसिक्सिरीशरसाहेबधर्म्माधिकरण-लिपितैतद्धर्मीयकेनरवरीमाशीयषोडशदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूप-

१ समभिव्या रे—म्रा०। २. पत्रे—म्रा० ।

पत्रमेवं तन्मम पण्डितनियमरत्नस्य यत्तदब्दीयमार्चमासीयसप्तमदिनसम्बन्धिबुधवासरे घटिकाचतुष्टयाधिकयामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशो बोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥

अर्थिपत्रलिखितार्थिन्या उत्तरपत्रलिखितप्रकरणानाम्मध्येऽर्थिन्याः पतिर्यदि द्वे पत्न्यौ[1] भैरवीदासीरत्नमणीदास्यावेवं रत्नमणीदासीगर्भजाताजन्माचिकित्स्यरोगार्त्तमेकं पुत्रं क्षेमचन्द्रनामानं संरक्ष्य मृतः स्यात्, क्षेमचन्द्रोऽपि तादृशरोगग्रस्त एव मृत इत्यस्य आजन्माचिकित्स्यरोगार्त्ते पुत्रे विद्यमाने सत्यर्थिन्या उत्तरपत्रलिखितस्य तत्पतिकृतस्योसीयब्रह्मद्वारभस्य कार्य्यस्य वा एतयोर्द्वयोर्वा सत्यत्वे सत्येतद्धर्माधिकरणार्थिनीनियुक्तोकीलशब्दवाच्यनिविडव्यवस्था शास्त्रसम्मता भवति, शास्त्रानुसारेणाजन्माचिकित्स्यरोगार्त्तपुत्रस्य पितृधनाधिकारित्वाभावेन तादृशपुत्रे विद्यमाने सत्यप्यनधिकारप्रयोजकदोषशून्यपौत्रप्रपौत्राभावे अर्थिनीतत्पत्न्योर्यद्भैरवीदासीरत्नमणीदास्योरेवाधिकारस्तयोर्द्वयोर्मध्ये रत्नमणीदास्या मरणे तत्संक्रान्ततदीयपतिधनांशेऽपि भैरवीदास्या अर्थिन्या एवाधिकारः । अर्थिन्यां विद्यमानायामन्येषां नाधिकारः । पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्य द्विपत्नीकस्य मृतस्य धने तत्पत्न्योः प्रधानाधिकारित्वेन तयोर्मध्ये एकस्याः पत्न्या मरणोत्तरं तत्संक्रान्ततत्पतिधनांशे तत्पत्नु(?)र्ये उत्तराधिकारिणस्ते एवाधिकारिणो भवन्ति, तत्पत्नु ?/उत्तराधिकारिणां मध्ये पुत्रपौत्रप्रपौत्राभावे जीवन्त्यास्तत्पत्न्याः प्रधानाधिकारित्वात्—इति वङ्गदेशप्रचलितदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकादायतत्त्वदायक्रमसंग्रहविवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

पतितस्तत्सुतः क्लीबः पङ्गुरुन्मत्तको जडः ॥
अन्धोऽचिकित्स्यरोगार्त्ता भर्त्तव्यास्ते निरंशकाः ॥ इत्युपरिलिखितग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥ १ ॥

स्वभागान् यदि दद्युस्ते विक्रीणीयुरथापि वा ।

---

१. पति यदि द्वे पत्न्यौ—व्यप० ।

कुर्य्युर्यथेष्टं तत्सर्व्वमीशास्ते स्वधनस्य वै ॥ इति तत्तद्ग्रन्थधृतनार"वचनम् ॥ २ ॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा—इत्यादि तत्तद्ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥ ३ ॥

अपुत्रा शयनं भर्त्तुः पालयन्ती गुरौ स्थिता ।

भुञ्जीतामरणात्क्षान्ता दायादा ऊर्ध्वमाप्नुयुः ॥ इति तत्तद्ग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥ ४ ॥

अतः पत्नी दुहितरश्चैव इत्यादिना ये पूर्व्वपूर्व्वस्याभावे परभूताधिकारिणो निर्दिष्टास्ते यथा पत्न्यधिकारप्रागभावे गृह्णीयुस्तथा भ्राताधिकारायाः पत्न्या अधिकारप्रध्वंसेऽपि भोगावशिष्टं धनं गृह्णीयुः —इति दायभागग्रन्थलिखनञ्चेति ॥ ५ ॥

एतदन्दीयापरेलमासीयाष्टादशदिनवर्षान्धिबुधवत्सरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

१३२ सहर ढाकार देओयानि आदालतेर पण्डित श्रीयुत दिगम्बर तर्कवागीशभट्टाचार्य्य स्थाने प्रश्न एइ नं० १९२-

भोलानाथराय— फैरादी—

मृत रामस्मरण रायेर स्त्री श्रीमतिसावित्रा ओ गोपालकृष्ण ओ मदनमोहनसिंह ओ मृत काशीचन्द्रसिंहेर स्त्री—

आसामीयान् ॥

साविचार बिक्रि १४॥८) क्रान्ति हिस्या जमिदारिर कओयाला असिद्ध करिया ताहा दखल पाओयार मकद्दमा—

हिन्दु एक व्यक्ति वैद्य जाति आपन स्त्री ओ तद्गर्भजात नाबालग पुत्र ओ द्वितीय स्त्रीर पुष्यपुत्र राखिया मृत्यु हय, ओ ऐ

स्त्री ओ पुष्यपुत्र दुइ पुत्र छोलानामा अर्थात विरोध भञ्जनीय पत्र द्वाराय ॥~३॥ क्रान्ति हिस्या ऐ अप्राप्तव्यवहार पुत्रेर सत्त ओ।~६॥~ क्रान्ति हिस्या ऐ पुष्यपुत्रेर सत्त हइया ऐ अप्राप्तव्यवहार पुत्रेर सत्त ताहार मातृ पक्कारे छिलो, ऐ नावालग पुत्रेर मृत्युर पर ऐ अविरा स्त्री सावित्रा अर्थात् नावालगेर माता सेइ दरवस्त ॥~१३॥~ दस आना सोया तेरगण्डा एक क्रान्ति हिस्या ऐ पुष्यपुत्रेर अनुमति व्यतित विशेषकरण विना अन्येर निकट विक्रि करिते पारे कि ना। ओ यदि सेइ दरवस्त मिलकियत विक्रि करिये कारीते थाकिये दिनपात करे, 'ओ पुष्यपुत्र' विक्रि असिद्धेर जन्ये ऐ मिलकियत दखल पाओयार प्रार्थनाय आदालते वादि हय—एमत विशयेते विक्रि असिद्धेर हुकुम आदालत हइते हइले पर ऐ पुष्यपुत्र विमातार जिवमाने विरोधि मिलकिअतेर उपर दखल पाइते पारे कि ना॥

द्वितीय—

यदि ऐ हिस्या विक्रिर पर पुष्यपुत्र ऐ विमातार असङ्गत प्रकरण अर्थात छेनाला कर्म्म हाकिमेर निकट प्रकाश करिया वादि हए ओ ताहा सावुद ना हइया डिपमिष हइले सेइ दत्तकपुत्र पितृमातृवस्तु पाइते पारे कि ना, अर्थात् विमातार प्रति एमत अत्युक्ति दत्तक सत्ते हक पाओयार निषेध हय कि ना। ए सकल विषयेर उत्तर एतद्देशीय चलित दायभाग प्रभृति शास्त्र सम्मत सप्राहेर मद्ये लिखेन। इति सन १२३८ साल, तारिख २८ श्रावण मौं० शन १८३१—१२ आगस्त।

समागतपारम्पर्यकारिसंवलितप्रश्नपत्रावलोकनात् यादृशबोधोजात- स्तदनुसारेण भाषया सुखबोधार्थमुत्तरं लिख्यते॥

प्रथम प्रश्नेर उत्तर—

अप्राप्तव्यवहार ईशानचन्द्रेर जननी सावित्रा आपन पति रामशरणरायेर मृत्युर पर पतिर स्थावर वस्तु दत्तकरूम सपत्नीपुत्र

१. पुत्र पुत्र—व्यव०। २. मायाया—व्यव०।

ভোলানাথর ঘের সহিত উভয়তো যথাশাস্ত্র লিপি দ্বারা তৃতীয়াংশের একাংশ ।~৬।।~ দত্তকপুত্রকে দিয়া আপন অপ্রাপ্তব্যবহার পুত্রের স্বত্বাস্পদীভূত দুই অংশ ।।~১৩।~ নিজাধিকারে অর্থাত আপন এক্তারে রাখিয়া ঐ অপ্রাপ্তব্যবহার পুত্রের মরণানন্তর অবীরা সাবিত্রা যথাশাস্ত্র স্বপুত্রধনে অধিকারিণী হইয়া ঐ বিভক্ত সমস্ত স্থাবর বস্তু বিসিষ্ট কারণ বিনা ঐ দত্তকপুত্রের অনুমতি ব্যতিরেক বিক্রয় করিতে পারে না। যদি ঐ তাবত বস্তু বিক্রয় করিয়া সাবিত্রা কাশীতে থাকিয়া কাল যাপন করিতে থাকে, ঐ দত্তকপুত্র ঐ বিরোধি বিক্রীত বস্তু বিক্রয় অসিদ্ধ হইয়া আপন অধিকার অর্থাত দখল পাওয়ার প্রার্থনায় প্রতিবাদি হয়, ও রাজাজ্ঞা দ্বারা অর্থাৎ আদালতের হুকুম মতে বিক্রয় অসিদ্ধ হয়, তবে বিমাতা সাবিত্রা বর্ত্তমান পর্য্যন্ত ঐ বিরোধি বিভক্ত বস্তুতে সাবিত্রা বিনা দত্তকপুত্র অধিকারি অর্থাত দখল পাইতে পারে কি না ইতি ।।

অত্র প্রমাণম্—

অপুত্রা শয়নং ভর্ত্তুঃ পালয়ন্তী ব্রতে স্থিতা ।
ভুঞ্জীতামরণাৎ ক্ষান্তা দায়াদা ঊর্দ্ধমাপ্নুয়ুঃ ।।—ইতি কাত্যায়নবচনাত্ ।।

স্ত্রীণাং স্বপতিদায়স্তু উপভোগফলঃ স্মৃতঃ ।
নাপহারং স্ত্রিয়ঃ কুর্য্যুঃ পতিদায়াত্ কথঞ্চন ।।—ইত্যাদি বচনম্ ।।

দ্বিতীয়প্রশ্নস্যোত্তরম্—

ঐ অংশ বিক্রয় করণের পরে দত্তকপুত্র বিমাতার উপপতি ব্যভিচারাদি দোষ রাজধানীতে প্রকাশ করিয়া প্রতিবাদি হয়, তাহার প্রমাণ না হওয়াতে রাজবিচারে ঐ দোষ মিথ্যা হইয়া মকদ্দমা ডিস্মিস হয়। এমত মাতৃদ্বেষ্টা দত্তকপুত্র কোনো মতে বিমাতার ধনে অধিকারী হইতে পারে না। যদ্যপি ঔরস পুত্র দ্বেষ্টা হইয়া মাতার যথার্থ ব্যভিচারাদি দোষ কোনো স্থানে প্রকাশ করে তবে সেই পুত্র মাতৃধনের অধিকারী হয় না। দত্তকাদির পাওনের

বিষয় কি। কেন না সাবত শাস্ত্রে লিখিত আছে—যে পিতৃ-মাতৃর যথার্থ দোষ পুত্রে সর্ব্বতো ভাবে গোপন করিবেক। ইহাতে বিদ্বেষ করিয়া যদি পিতৃ-মাতৃর মিথ্যা দোষ, যাহাতে অত্যন্ত অপমান অব্যবহার্য্যত্বাদি দোষ হয়, ইহা রাজদ্বারে প্রকাশ করিলে, সেই পুত্র পিতৃমাতৃধনের অধিকারি কোনো মতে নহে, বিশেষত দায়ভাগের লিখিত ধনগ্রহণ ধনস্বামির ঐহিক পারত্রিক উপকার কর্ম্মের বেতন স্বরূপ তাহা, না করিয়া, তদ্বিপরীত বিদ্বেষাদি করিলে সুতরাং অনধিকারী হয়-ইতি দায়ভাগাদিশাস্ত্রসম্মতা ব্যবস্থা॥

অত্র প্রমাণম্—

পিতৃদ্বিট্ পতিতঃ ষণ্ডো যশ্চ স্যাদৌপপাতিকঃ।
ঔরসা অপি নৈতেঽংশং লভেরন্ ক্ষেত্রজাঃ কুতঃ॥ ইতি ব্যাসবচনম্॥
গোপয়েজ্জন্ম নক্ষত্রং ধনসারং গৃহে মলম্।
প্রভোরপ্যবমানঞ্চ তস্য দুশ্চরিতঞ্চ যত্॥
কোঽর্থঃ পুত্রেণ জাতেন যো ন বিদ্বান্ ন ধার্ম্মিকঃ।—ইত্যাদিবচনম্॥

পুন্নাম্নো নরকাদ্ যস্মাত্ ত্রায়তে ইত্যাদি (বচনেন) পুত্রকর্তৃকতয়া মহাফলশ্রুতেঃ। তত্কর্ম্মবেতনং ধনসম্বন্ধিত্বম্। অতস্তদকুর্ব্বতঃ কুতো বেতনম্—ইতি দায়ভাগঃ।

যান ১৮৩১ সাল ২৫ আষাঢ়॥

শ্রীঈশ্বরো জয়তি
শ্রীদিগম্বরশর্ম্মণঃ

১৩৩—সদর ঢাকার দেয়ানি আদালতের পণ্ডিত শ্রীযুত দিগম্বর তর্কবাগীশ ভট্টাচার্য্য স্থানে প্রশ্ন এই যে— নং ৪৬২

ভোলানাথরায় ফৈরাদী

শাবিত্রা ও গোপালকৃষ্ণসিংহ ও গয়রহ আসামীয়ান—

প্রথম প্রশ্ন—

পূর্ব্বে প্রশ্ন ব্যবস্থাপত্রে এমত বোধ হয় না যে মাতার ব্যভিচা-

রাদি দোষ প্রকাশে পিতৃধন পাইতে পারে না। অতএব লিখা যাইতেছে যে মাতৃ অসঙ্গত প্রকরণ প্রকাশে পিতৃবস্তু পাওয়ার নিষেধ কিনা-এহার ব্যবস্থা শাস্ত্রানুসারে পরন্তু দিবস মিছিলের শময লিখিয়া পাঠাএন ॥

দ্বিতীয়—

পিতৃমাতৃদোষ প্রকাশে যে পিতৃমাতৃধনের অধিকারি নহে, এমত ব্যবস্থা লিখিয়া তাহার নিচে ব্যাসবচন ও দায়ভাগবচন যে লিখা গীয়াছে তাহার অর্থ জথার্থ বাঙ্গলাভাষাতে লিখিয়া পরন্তু দিবস মিছিলের সমষ দাখিল করেণ, গৌন না হয়। ইতি শন ১২৩৮ তারিখ ১২ মাদ্র বাঙ্গলার আঙ্গরেজী শন ১৮৩১—২৭ আগস্ত।

সমাগতপারুষ্যরূপকারিসংবলিতপ্রশ্নপত্রাবলোকনাত্ যাদৃশবোধো জাতস্তদনুসারেণ ভাষয়া সুখবোধার্থমুত্তরং লিখ্যতে ॥

প্রথম প্রশ্নের উত্তর—

মাতৃব্যভিচারাদি দোষ প্রকাশ করিলে পিতৃধন পুত্রে পাওনের বাধা নাই। পূর্ব্ব পত্রে লিখিত মাতৃধন পাইতে পারে না—ইতি।

দ্বিতীয়প্রশ্নের উত্তর—

পিতৃমাতৃদোষপ্রকাশে পিতৃমাতৃধনে অধিকারী নহে। তাহার প্রমাণ যে ব্যাসবচন পিতৃদ্বিট্ ইত্যাদি। তাহার অর্থ—এই পিতৃদ্বেষ্টা জীবদ্দশাতে বাক্য দ্বারা কিম্বা আঘাত দ্বারা অপমান করে এবং মৃত্যু হইলে শ্রাদ্ধাদিতে বৈমুখ হয়, পতিত, অন্যবহার্য্য, ও ষণ্ড, নপুংসক, ঔপপাতিকঃ উপপাতকযুক্তঃ—এরূপ ঔরস পুত্র পিতৃধনে অধিকারী হইতে পারে না, সুতরাং ক্ষেত্রজ দত্তকাদি অধিকারী নহে ॥ দ্বিতীয় বিষ্ণুধর্ম্মোত্তরবচন—গোপয়েজ্জন্ম নক্ষত্র-ইত্যাদির অর্থ—জন্মনক্ষত্র, ধনসার শ্রেষ্ঠধন, গৃহমল গৃহছিদ্র, প্রভু-পিতৃ-মাতৃর অপমান, আর তাহারদিগের দুষ্কর্ম্ম গোপন করিবেক। পিতৃশব্দে ও প্রভুশব্দে পিতা মাতা দুই। ইহার প্রমাণ দায়ভাগাদি অনেক শাস্ত্রে আছে। কোঽর্থঃ পুত্রেণ—ইত্যাদি বচনের

अर्थः—ये पुत्र धार्म्मिक ओ विद्वान् ना हय, से पुत्रे कि प्रयोजन आछे, अर्थात् धनि व्यक्तिर उत्तराधिकारी धनिर द्वेष्टा हइले ताहार धन पाइते पारे ना। इहार प्रमाणः एकत्र निर्णीतः शास्त्रार्थः बाधकं विना अन्यत्रापि कल्प्यते—इति दायभागादिशास्त्रसम्मता व्यवस्था। इति सन १८३१ साल तारिख २९ आगष्ट॥

श्रीईश्वरो जयति
श्रीदिगम्बरशर्म्मणः

नं० ४६२—

१३४—मृत रामस्मरणरायेर पुष्यपुत्र भोलानाथराय-फैरादी ऐ मृतव्यक्तिर स्त्री सावित्रा ओ गोपालकृष्ण सिंह वगयरह—आसामीयान्।

सदर देवोयानि आदालतेर पण्डितदिगेर स्थाने प्रश्न एइ।

एइ आदालतेर प्रश्न ताहा सहर आदालतेर पण्डित श्रीयुत दिगम्बरतर्कवागीशभट्टाचार्य्ये निकट पाठान गियाछिल, ओ भट्टाचार्य्य ये उत्तर ओ वचनेर अर्थ लिखियाछेन, ताहा पाठान जाये। यथाशास्त्र कि ना, एवं वचनेर अर्थ ये पण्डित लिखियाछेन ताहा यथार्थ कि ना, एवं यदि व्यवस्था यथार्थ, ओ वचनेर अर्थ पण्डितेर व्यवस्थार ऐक्य ना हय, तवे ऐ प्रश्नेर यथाशास्त्र व्यवस्था ओ वचनेर यथार्थ अर्थ लिखिया पाठाएन।

यदि एक व्यक्ति वैश्यजाति, आपन वित्त राखिया मृत्यु हय, आ सेइ वित्त प्रथम औरस पुष्यपुत्र ओ वर्त्तमाना द्वितीय स्त्रिर गर्भजात पुत्र मध्ये दुइ अंश, एक अंशमते अंश जात हइया, औरस पुत्रेर दुइ अंश ताहार अप्राप्तव्यवहार निमित्तक ओ पश्चात् ताहार मृत्यु हओयाते आपन मातृ एकारे छिलो, एमत वित्त शास्त्रानुसारे ऐ पुष्यपुत्रेर मातृवित्त, कि पितृवित्त हय, इहार उत्तर लिखिया पाठाएन इति। सन १८३१ तारिख २३ आगस्त मो० बा० शन १२३८ तारिख १४ भाद्र॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं व्यवस्थापनद्वयञ्च यदङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यैक-त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयसितम्बरमासीयोनविंशतिदिनसम्बन्धिसोमवासरे घटिकाद्वयाधिकयामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

जाह्नाङ्गीरनगरसम्बन्धिकोर्टापीलाख्यधर्म्माधिकरणीयप्रश्नयोरुत्तरे सहरजिलाख्यग्रामान्तरधर्म्माधिकरणनियुक्तपण्डितेन दिगम्बरतर्कवागीशभट्टाचार्येण लिखिते यथाशास्त्रे एव । एवं तत्प्रमाणीभूतवचनानामर्था अपि तत्पण्डितलिखिता यथार्था एव । किन्तु यदङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यैक-त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयागस्तमासीयोनत्रिंशद्दिनलिखितप्रथमप्रश्नोत्तरे व्यभिचारादिदोषप्रकाशकरणे सति पितृस्वत्वास्पदीभूतधनप्राप्तेर्योग्यो न भवति पुत्रस्येति यल्लिखितं तत्राय विशेषो मिथ्याभूतमातृव्यभिचारादि-दोषप्रकाशकर्त्तुः पुत्रस्यातीव निन्दितत्वेन मातुश्च पित्रपेक्षया सहस्रगुणाधिक-मान्यत्वेन च पितृदोषप्रकाशं विनैव मातृव्यभिचारादिदोषप्रकाशेनैव पितृदोषप्रकाशकर्त्तुः पुत्रस्याकृतयथाशास्त्रप्रायश्चित्तस्योत्तराधिकारित्वेन कस्यापि धनग्रहणाधिकारित्वस्य योग्यता न भवतीति ॥

अत्र प्रमाणम्—

उपाध्यायाद्दशाचार्य्यं आचार्य्याणां शतं पिता ।
सहस्रन्तु पितुर्म्माता गौरवेणातिरिच्यते ॥
गर्भधारणपोषाभ्यां तेन माता गरीयसी ।—इत्यादि श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकादिग्रन्थलिखितमनुवचनम्[1] ॥१॥

पितृपत्न्यः सर्व्वा मातरस्तद्भ्रातरो मातुलास्तद्भगिन्यो मातृस्वसार-स्तद्दुहितरश्च भगिन्यस्तदपत्यानि भागिनेयान्यन्यथासङ्करकारिणः स्यु-रिति प्रयोगतत्त्वादि(उद्वाहतत्त्व पृ० १२८)ग्रन्थधृतसुमन्तु(?)वचनम् ॥२॥

१. मुनि०—यप० ।

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्येकः कश्चिद् वैद्यजातीयो व्यक्तिविशेषः स्वस्वत्वास्पदीभूतधनं संरक्ष्य मृतः स्यादथ च तदेव धनं तस्य प्रथमपत्नीपोष्यपुत्रवर्त्तमानद्वितीयपत्नीगर्भजपुत्रयोर्मध्ये विभागेन अंशद्वयमौरसपुत्रस्यैकोऽशः पोष्यपुत्रस्येति । तत्रौरसपुत्रस्यांशद्वयं तस्याप्राप्तव्यवहारत्वेन पश्चात्तन्मरणेन च स्वमातुरायत्तं भवति। एतादृशं धनं यद्यपि पोष्यपुत्रस्य पितृधनमभूत्, किन्तु पश्चाद् भ्रातृस्वत्वास्पदीभूतत्वेन भ्रातृधनं तन्मरणात्तन्मातृसंक्रान्तत्वेन च तन्मातृमरणानन्तरं मातृसंक्रान्तं भ्रातृधनं भविष्यतीति ॥

अङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यद्वात्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयफेब्रवरीमासीयप्रथमदिनसम्बन्धिबुधवासरे मयेदमुत्तरं दत्तमिति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१३५—यद्यपि पितृव्य ओ भ्रातुष्पुत्र पैतृक साधारण स्थावर एवं अस्थावर वस्तु वण्टकेर विवाद उपस्थित हइया सालिपेर निकट तावत वस्तु उत्तरकाल अंश करिया लओनेर लिखित पठित हइया थाके, किन्तु तदनुसारे कोन वस्तु चिह्नित एवं नाम पृथक, अर्थात् जमिदारि आदिर नाम खारिज, ना हइया सकर भून्यादीर कर प्रदानेर निमित्त महाल खण्ड विलिमते उभये ओहुल तहसील करिया उभये साधारणे राजकर प्रदान करिया थाके, ठाकुरसेवा ओ बागान ओ बाटीदिगर तावत वस्तु साधारणे राखिया ऐ भ्रातुष्पुत्र आपन पितृव्य एवं स्त्री वर्त्तमाने लोकान्तर हइया थाके, तवे मिताक्षराग्रन्थ मते ऐ मृत व्यक्तिर ऐ सकल वस्तुर उत्तराधिकारि ऐ स्त्री किम्वा ऐ पितृव्य हइवेक इति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नप्रतिरूपपत्रं तत्सम्पर्कीयावशिष्टपत्रचतुष्टयं च यदेतद्वदीयजानवरीमासीयोनविंशतिदिनसम्बन्धिबृहस्पतिवासरे घटिकाद्वयाधिक-

यामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥

यदि कश्चित् स्वपितृव्ये विद्यमाने स्वपत्न्याञ्च विद्यमानायां मृतः स्यात्तदा प्रश्नपत्रलिखितप्रकारस्मृत्यन्ते सति मिताक्षरादिग्रन्थमते तस्यैव मृतस्य स्वत्वधने तस्य पुत्रपौत्रप्रपौत्राभावे तत्पत्न्येवाधिकारिणी भवति। पत्न्याञ्च विद्यमानायां तत्पितृव्योऽधिकारी भवितुं न शक्नोति। प्रश्नपत्रलिखितेन खराजकरस्थावरादेः करप्रदानार्थं पृथक् पृथक् सराजकरस्थावरलपहरस्य निर्देशेन द्वाभ्यां करग्रहणं कृत्वा ताभ्यां द्वाभ्यां साधारण्येन राजकरो दत्तः स्यादित्यनेन विवादास्पदीभूतधनविभागस्य शास्त्रानुसारेण निष्पत्यूहत्वात्। मिताक्षरादिग्रन्थलिखितस्य विभागशब्दार्थस्यैतद् व्यवस्थाया अधोलिखित तृतीयप्रमाणे स्पष्टीकृतत्वाच्चेति मिताक्षरादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः—इत्यादिमिताक्षरादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥१॥

पत्नी गृहीयात्-इत्येतद्वचनजातं *विभक्तभ्रातृस्त्रीविषयम्*—इति मिताक्षराग्रन्थलिखनम् ॥२॥

विभागो नाम द्रव्यसमुदायविषयाणामनेकस्वाम्यानान्तदेकदेशेषु व्यवस्थापनम्—इति मिताक्षराग्रन्थलिखनम् ॥३॥

दानग्रहणपशवन्नगृहक्षेत्रपरिग्रहाः।

विभक्तानां पृथग्ज्ञेयाः पाकधर्मागमव्ययाः ॥—इति वीरमित्रोदयादिग्रन्थधृतनारदवचनम् ॥४॥

साक्षित्वं प्रातिभाव्यं च दानं ग्रहणमेव च।

विभक्ता भ्रातरः कुर्युर्नाविभक्ताः कथञ्चन ॥ इति तत्तद्ग्रन्थधृतनारदवचनम् ॥ ५ ॥

येषामेताः क्रिया लोके प्रवर्त्तन्ते स्वरिक्थतः।

विभक्तानवगच्छेयुर्लेख्यमप्यन्तरेण तान् ॥—इति तत्तद्ग्रन्थधृतनारदवचनञ्चेति ॥ ६ ॥

एतदब्दीयापरेलमासीयद्वादशदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

१३६ । सन १८३२ साल तां २५ फेब्रुयारी—
कोर्टेर पण्डितेर द्वाराय अवगतो हइवेन ये बागचे ब्राह्मण गङ्गाजले सगुण करिते मुक्त हइते पारे किना, आर यदि स्यात् सगुण करे तवे ताहार धर्म्मे हानि हइते पारे किना ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नप्रतिरूपपत्रमवलोक्य यादृशयोधो जातस्तदनुसारेणोत्तर लिख्यते—

वागचीयापनामकब्राह्मणजातीयो गङ्गाजलेन शपथकरणस्य योग्यो न भवति । यदि च तेन गङ्गाजलेन शपथ क्रियते तदा तस्य धर्म्महानि र्भवत्येवेति शास्त्रानुसारिणी व्यवस्थेति—

अत्र प्रमाणम्—

यथा गङ्गोदकं तोयं गोमयं गां तथा द्विजम् ।
असत्यं चापि सत्यं वा स्पृष्ट्वा दिव्यं करोति य ॥
निर्कोटिकुलसंयुक्तो रौरवं नरकं व्रजेत् ।
कर्त्ता कारयिता भद्रे तथैव नरकं व्रजेत् ॥ इति गायत्रीतन्त्रधृत (पृ० ४४)महादेववचनम् ॥ १ ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

१३७ सदर देओयानी आदालतेर पण्डितेर उपर सओयाल—

सओाल—

यद्यपि मृत राजा चित्रसेनेर स्त्री राणी इन्द्रकुमारी अवीरा

आपन ओयारिष अर्थात् आपन स्वामीर भ्रातार पौत्र महाराजा तेजचन्द्र बाहादुरेर वर्त्तमाने सुपरेम कोर्टेर आदालतेर खरचार देना दान अर्थात् दायिक हइया सुपरेम कोर्टेर देना खरचा आदाय-कारण आपन दखली चित्रसेनेर त्यज्य कोन बागान बिक्रय करिया थाके तबे शास्त्रानुसारे ताहा सिद्ध हय किना। एवं यद्यपि मुद्दइ महाराजा तेजचन्द्र बाहादुरेर महर करा लिपिद्वाराय राजा चित्र-सेनेर स्त्री इन्द्रकुमारीर प्रति उपरेर लिखित बागान बिक्रयेर ओ हस्तान्तरकरणेर क्षमता बोध हय, सेमते ओ बागान मजकुरान् बिक्री सिद्ध हय किना इति ॥—

श्रीर्जयतितराम्

प्रस्तुतमर्पितप्रश्नपत्रं यदङ्गरेजीयाब्दप्रतिगतद्वात्रिंशदधिकाष्टादशशतता-ब्दीयमार्च्चमासीयद्वितीयदिनसम्बन्धिशुक्रवासरे घटिकाद्वयाधिकयामद्वया-नन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥

यद्यपि मृतस्य राज्ञश्चित्रसेनस्यावीरया पत्न्या राज्ञ्या इन्द्रकुमार्य्या स्वपतिभ्रातृपौत्रे महाराजतेजश्चन्द्रबाहादुराख्ये स्वानन्तरोत्तराधिकारिणि विद्यमाने सति सुप्रीमकोर्टाख्यधर्म्माधिकरणव्ययग्रस्तया तथा तद्धर्म्माधि-करणव्ययपरिशोधनार्थं राज्ञश्चित्रसेनस्य स्वकः स्वायत्तीभूतः कश्चिदा-रामो विक्रीतः स्यात्तदा शास्त्रानुसारेण तादृशविक्रयः सिद्ध्यति, पुत्र-पौत्र-प्रपौत्ररहितस्य मृतस्य धने उत्तराधिकारित्वेनाधिकारित्वात् पत्न्या आपन्नि-वारणार्थम् आवश्यककार्य्यान्तरार्थं च तत्तत्कार्य्योपयुक्तस्य तद्धनविक्र-यस्य शास्त्रानुसारेणाधिकारित्वात्। एवं यद्यप्यर्थिनो महाराजतेजश्चन्द्र-बहादुरस्य मुद्राङ्कितलिपिद्वारेण राज्ञश्चित्रसेनस्य पत्न्या इन्द्रकुमार्य्या उपरिलिखितारामाणां विक्रयप्रकारेण प्रकारान्तरेण वा हस्तान्तरकरण-क्षमतायाः बोधो भवति, तथापि तेषामारामाणां विक्रयः सिद्ध्यति, उत्तराधि-कारित्वेन प्राप्तानन्तरवर्त्तिनया पत्न्या कृतस्योत्तराधिकारिसम्मत्या प्रश्न-पत्रलिखितप्रकारकार्पणविचारकावश्यककार्य्यपरिशोधनार्थं तदुपयुक्तातिवनवि-क्रयस्य सिद्धेर्निष्प्रत्यूहत्वात्—इति वङ्गदेशचलितदायभागश्रीकृष्णतर्काल-

ङ्कारकृतदायभागटीका-दायक्रमसंग्रह—व्यवहारतत्त्व—नारदस्मृति-विवादार्णव-सेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः— इत्याद्युपरिलिखितग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य-वचनम् ॥ १ ॥

कुटुम्बार्थमशक्ते तु गृहीतं व्याधितेऽथवा ।

उपप्लवनिमित्तं च विद्यादापत्कृतञ्च तत्—इति व्यवहारतत्त्वादि-ग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥ २ ॥

स्त्रीकृतान्यप्रमाणानि कार्य्याण्याहुरनापदि ।

विशेषतो गृहक्षेत्रदानाधमनविक्रयाः ॥ इति

एतान्यपि प्रमाणानि *भर्त्ता यदनुमन्येत* इति च नारदस्मृत्यादि-ग्रन्थधृतनारदवचनम् ॥ ३ ॥

तथा च भर्त्ता जीवन् यथा यस्य पोषणादिकं यद्वा कर्म्म करोति मृतभर्तृकापि स्वशक्त्यनुसारेण तथैव तस्य पोषणं तच्च कर्म्म कुर्वीत । इति विवादभङ्गार्णवग्रन्थलिखनञ्चेति ॥ ४ ॥

अत्रेरेजीशब्दप्रतिपाद्यद्वात्रिंशदधिकाष्टदशशताब्दीयमेइमासीयसप्तदशादि-नसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीजनयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१३८—अशेष शास्त्राध्यापक श्रील श्रीयुक्त सदर देवानी आदालतेर पण्डितजन सकल

सओयाल—

एक व्यक्ति रामकान्त भट्टाचार्य्य नामे छिल । ऐ रामकान्तेर तिन पुत्र रामजय ओ कालीप्रसाद ओ रामसुन्दरभट्टाचार्य्य हइयाछिल । ताहार मध्ये कालीप्रसाद निःसन्तान, आर रामजय

एक कन्या ओ एक स्त्री ऐ आर गर्भे एक पुत्र राखिया आपन पिता ऐ रामकान्तभट्टाचार्य्येर वर्त्तमाने फौत् करे। तदपरे रामजय भट्टाचार्य्येर पुत्र भूमिष्ठ हइले किछु काल गते रामकान्तभट्टाचार्य्य एक पुत्र, अर्थात् ऐ रामसुन्दरभट्टाचार्य ओ एक पौत्र अर्थात् ऐ रामजयेर पुत्रके ओयारिष एवं किछु भूम्यादि राखिया फौत् करे, आर ऐ सकल भूम्यादि रामसुन्दरभट्टाचार्य्य आर ऐ रामजयेर पुत्रेर एजमालि दखले थाके। तस्य परे रामजयेर पुत्र आपन माता ओ भग्नीर सन्मुखेते अष्ट वत्सर वयः क्रमे फौत् करे। उहार फौतेर पर ताहार माता, अर्थात् रामजयेर स्त्री, आपन ऐ एक कन्याके राखिया फौत् करे। ताहार पर रामजयेर कन्यार तिन पुत्र सन्तान हय। ऐ तिन पुत्रेर मध्ये एक पुत्रेर[1] प्राप्त हइयाछे, ए क्षने दुइ पुत्र वर्त्तमान आछे। तदसेत्ताय रामसुन्दरभट्टाचार्य्य आपन॰ पिता, रामकान्तभट्टाचार्य्य, ओ आपन मातार श्राद्धादि करिया एवं स्थावर वस्तुते दखिलकार थाकिया आपन नाबालग दुइ पुत्र आर एक स्त्री अर्थात् ऐ नाबालगेरदिगेर माताके राखिया फौत् करे। एक्षने रामसुन्दरभट्टाचार्य्येर ऐ स्त्री ओ नाबालग दुइ-पुत्र वर्त्तमान आछे एमते रामजयभट्टाचार्य्येर ऐ कन्यार दावि रामजयेर हिस्यार भूम्यादिर प्रति अर्शे किना। यदि स्यात् अर्शाय, तवे ताहार दावि ऐ रामकान्तभट्टाचार्य्येर भूम्यादि वस्तुर प्रति कि आन्दाज अर्शाइते पारे इति। सन १८३२ साल तारिख १९ जानेओरि मताबक सन १२३८ साल तारिख ७ माघ—॥

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं यदङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यद्वात्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयमार्चमासीयद्वितीयदिनसम्बन्धिशुक्रवासरे घटिकाद्वयाधिकयामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥

प्रश्नपत्रलिखितप्रकारकवृत्तान्ते सति रामजयभट्टाचार्यस्य दुहितुरयोगो रामजयभट्टाचार्ययोग्याशभूम्यादिकं प्रति भवत्येव । अतएव रामजय-

१. सम्बन्धि—व्यव॰।

भट्टाचार्यस्य पितृ रामकान्तभट्टाचार्यस्य स्वत्वास्पदीभूतभूम्यादिधनार्द्धांश-परिमितभूम्यादिधनं प्रति तादृशाभियोगोऽयुक्तः, यतो रामकान्तभट्टाचार्यो रामसुन्दरभट्टाचार्यनामानमेकं पुत्रमेकञ्च पौत्रमर्थाज्जीवति पितरि मृतस्य रामजयभट्टाचार्यस्य स्वकीयज्येष्ठपुत्रस्य पुत्रञ्च संरक्ष्य मृतः । अतएव रामकान्तभट्टाचार्यस्य मरणानन्तरं तत्यक्तधने शास्त्रानुसारेण तदानीं विद्यमानयोः पुत्रपौत्रयोरेव तुल्याधिकारः, रामकान्तभट्टाचार्याख्ये पितरि जीवति सति अनपत्यस्य मृतस्य कालीप्रसादभट्टाचार्यस्य तद्[1]द्वितीयपुत्रस्य पैतृकादिधने स्वत्वानुत्पादात् । एवञ्च सति रामकान्तभट्टाचार्यस्य पौत्रो यदि स्वजननीं स्वभगिनीं चैकां संरक्ष्यानपत्य एव मृतः स्यात्तदा तत्यक्तधने अर्थान्मूल पुरुषस्य रामकान्तभट्टाचार्यस्य त्यक्तधनार्द्धांशे तन्मातुरर्थात् रामजयभट्टाचार्यस्य पत्न्या एवाधिकारः तस्याञ्च मृतायां तत्संक्रान्तस्वपुत्रधने तत्पुत्रस्य ये उत्तराधिकारिणस्त एवाधिकारिणो भवन्ति । तत्र रामकान्तभट्टाचार्यपौत्रस्य स्वपुत्रमारभ्य स्वपितुः प्रपौत्रपर्यन्तरहितस्य मृतस्य भगिन्याः कश्चिदेकोऽपि पुत्रस्तन्मातृमरणसमये गर्भे व्यवस्थितो भूमिष्ठो वा यद्यासीत्तदा तस्याधिकारः जाते[2] च तस्याधिकारे पुनरुत्पत्स्यमानानां तद्भ्रात्रन्तराणामर्थाद्रामकान्तभट्टाचार्यपौत्रस्य पितृदौहित्रान्तराणामप्यधिकारः समान एव भविष्यति । सति च रामकान्तभट्टाचार्यपौत्रस्य पितृदौहित्रे तत्पितृव्यपुत्राणामर्थात् राममुन्दरभट्टाचार्यस्य पुत्राणां प्रश्नपत्रलिखितानां नाधिकारः । यदि च रामकान्तभट्टाचार्यपौत्रस्य स्वपुत्रमारभ्य स्वपितुः प्रपौत्रपर्यन्तरहितस्य मृतस्य भगिन्याः कश्चिदेकोऽपि पुत्रस्तन्मातृमरणसमये गर्भे व्यवस्थितो भूमिष्ठो वा नासीत्तदा तत्पितृदौहित्राणां स्वत्वान्यथानुपपत्त्या तद्भगिन्यास्तत्पितृदौहित्रोत्पत्तिमूलो[3]भूतायास्तत्सम्बन्धमूलीभूतायाश्च स्वपुत्रोत्पत्तेः प्राक्कालपर्यन्तं यथा पुत्रादिपत्नीपर्यन्तरहितस्य मृतस्य पितुर्द्धने दुहितुरधिकारस्तथा भ्रातृधनेऽप्यधिकारः । सति च रामकान्तभट्टाचार्यपौत्रस्य पितृदौहित्रे स्वतः तत्पितुः पार्व्वणश्राद्धपिण्डदातरि स्वतस्तत्पितुः पार्व्वणश्राद्धपिण्डदानानधिकारिण्यास्तद्भगिन्या नाधिकारः । किन्तु तस्याः पुत्रस्यैव, पुत्रा-

१. तद्—व्यप० । २. याते—व्यप० । ३. °मूलि०—व्यप० ।

णां चोपरिलिखितप्रकारेणाधिकारः—इति मञ्जदेशचलितदायभागश्रीकृष्ण-तर्कालङ्कारकृतदायभागटीका—दायतत्त्व-दायक्रमसंग्रह विवादभङ्गार्णवादिग्र-न्थानुसारिणी व्यवस्था ॥

अत्र प्रमाणम्—

अविभक्ते मृते पुत्रे[१] तत्सुतमृक्थभागिनम् ।

कुर्वीत जीवनं येन लब्धं नैव पितामहात् ॥

लभेतांशं स्वपित्र्यन्तु पितृव्यात्तस्य वा सुतात्—इति दायतत्त्व-विवादभङ्गार्णवादिग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥१॥

यथा पैतामहे धने पितुः स्वाम्यं तथैव तस्मिन्मृते तत्पुत्राणामपि, न तत्र सन्निकर्षविप्रकर्षाभ्यां कोऽपि विशेषः । पार्वणविधिनापि पिण्डदानेन द्वयोरपि तदुपकारकत्वाविशेषात्—इति दायभागग्रन्थलिखनम् ॥२॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः ॥—इत्यादितत्तद्ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम्॥३॥

पितुरपि प्रपौत्रपर्यन्ताभावे पितृदौहित्रस्याधिकारो बोद्धव्यो धनिदौहि-त्रस्येव—इति दायभागग्रन्थलिखनम् ॥४॥

हरयाद्वा तद्विभागः स्यादायव्ययविशोधितात्—इति तत्तद्ग्रन्थ-धृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥५॥

तदभावे पुनः पितृदौहित्रः इति । तदभावे पितामहस्तदभावे पितामही तदभावे पितुस्सोदरस्तदभावे पितुर्वैमात्रेयस्तदभावे पितृसोदरपुत्रपितृवैमा-त्रेयपुत्रः—इत्यादि च श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकालिखनम् ॥६॥

यद्यपि दुहित्रभावे दौहित्रस्येव भगिन्या एव प्रागधिकारो युक्तस्तथापि तस्याः स्त्रीत्वेन पार्वणपिण्डदत्वाभावान्नाधिकारः । दुहितुस्तु दौहित्राद् पूर्व्वमङ्गादङ्गात् सम्भवति इत्यादिविशेषवचनादेवाधिकारः इति भावः इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकालिखनञ्चेति ॥७॥

---

१. अविभक्तेऽनुजे प्रेते—कात्या० ।

अङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यद्वात्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयमैमासीयचतुर्विंशतिदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्,
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण.

---

१ सदर देवोयानि आदालतेर रुवकारि इङ्गरेजी सन १८३२ साल तारिक २३ माह फेब्रुयारि मोताबक बाङ्गला १२३८ साल १२ माह फाल्गुन रोज बृहस्पतिवार ए आदालतेर हाकिम विचार्ड[1] ओयालपोल साहेबेर बैठके—

महाराजा गोविन्दनाथराय—	आपीलाण्ट—
गुलालचन्द्र ओरफे नानका बाबु प्रभृति—	रेस्पाण्डण्टान—

आपिलेण्टेर उकिल मुनशी हसन आलि ओ रेस्पानडेण्टानेर उकिल मुनशी गोलाम रसुल ओ सदासुख पण्डित हाजिर आइलेन। ए मकद्दमा पूर्व्वे कयेक तारिके कथबटं धरनेल सिली साहेब हाकिमेर समक्षे रुवकार ओ नालिसेर आरजि इत्यादि प्रावेनसियल कोर्टेर कागजात फयसाला पर्य्यन्त ओ ए आदालतेर सओयाल ओ जओयाब पडागिया १८३१ साल १८ माह मे तारिखे कयेक प्रश्नेर प्रत्युत्तर ए आदालतेर पण्डित हइते तलब हइया ओहा दाखिल हओन बादे स्थगित छिल। गतो दिवस आमार बैठके रुवकार ओ नालिसेर आरर्जि इत्यादि कोर्टेर कागजात फयसाला पर्य्यन्त ओ ए आदालते दाखिल हओ‌या गुजिवाते ओ ओहार जबाब पडा गिया दिवावसान प्रयुक्त मुलतवि छिल। अद्य पुनराय ऐ रुवकार हइया ए आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था ओ मुशम्मात माया कोंडरेर सओयाल ओहार उकिल मुनशी दादार

---

१. रिचार्ड वालपोल—इति साधीयान् पाठः।

यथेसर साक्षाते दृष्टी हइया वोध हइल ये विवादीय स्थानेर प्रकृत-कर्त्ता माया कोडरेर स्वामीर उत्तमचन्द्रलाहार[1] मुनिचन्द्रके आपन पोष्य एक पुत्र विवेचना करिया देश्रोन, ओ कोटेर व्यापार, ओ जमिदारीर कर्म्म सकल निर्व्वहन, ओ ऐ जमिदारि वहालि, ओ ताहार दान विक्रय हइते ओ के विमुख राखन कारण, ओसि नियुक्त करिया, ताहार नामे ओसियतनामा लिखिया दिया मृत्यु हय। कियत् कालानन्तर मुनिचन्द्र ओ पुष्यपुत्र विवेचना विना मरे ओ मायाकोडर उत्तमचन्द्रलाहार ओ गोलाल चन्द्र रेप्पाडएटके आपन पोष्यपुत्रताते ग्रहण करे। आपिलाएट ताहार पिता मृत उत्तमचन्द्रेर पिता खडगसिंहेर विनामे लाट इयाकुब-पुरदिगर ऋय लाट खरिद करा उल्लेखे ऐ लाटसकल दखल पाओन दाविते मायाकोडरेर नामे नालिस करिया, डायरादिगर दुइ लाट मुद्दायालेहार स्थाने लइया, मकर्द्दमा सोलहनामानुजाय निष्पत्य कराइलेक, ओ फयशला जारिते दुइ लाटेर उपर दखल ओ कावेज हइल। तत्पर गोलालचन्द्र रेप्पानडएट उत्तमचन्द्रेर पोष्य पुत्रता ओ आपनि उत्तमचन्द्रेर पोष्यपुत्र ओ ताहार स्था-नापन्न थाकने सोलह ओ विक्रय विषये मायाकोडरेर अन्नेमता ऐ जाहाजे इयाकुबपुरदिगर चतुर्द्दश लाट दखल पाओन दाविते आपिलएट ओ लाट नारायणपुरग्रामेर खरिददार गोपीचरण-घडाल मुद्दईर कवुल दावि ओ उभयेर सोलह सम्वलित दरखास्त गुजराइलेन ये प्रविनसियान कोटेर हाकिमेर हजुर हइते ताहादिगेर कवुल दावि ओ सोलहनामा, जाहा आपिलाएट ओ मुराम्मात मायाकोडरेर मध्ये हइल, ताहा नामञ्जूर; ओ अन्यथा हइया मुद्दयेर हक्के डिगरि ओ आपिलाएटके ताहार सावेक नालिश जारिकरण कारण अनुमति हइल इति। यथा कागजात् अनुमोदन ओ मकर्द्दमार समस्त वृत्तान्त दृष्टे रेप्पानडेएटेर पोष्यपुत्रता साक्षीगणेर द्वाराय सावस्थ, ओ ए आदालतेर पण्डितेर व्यव-

१. लालाहार—व्यप०।

स्था हइते ओ अनुभव हइतेछे-ये उत्तमचन्द्रेर स्त्री मायाकोङर स्वामिर अनुमति थाकुक वा ना थाकुक उत्तमचन्द्रेर वंसेर व्यवहार्य्य जयनि शास्त्रानुजाय पोष्यपुत्र राखन ओ तत्परिवर्त्तन क्षमता राखे। ए कारण आमार समीपे गोलालचन्द रेस्पानडेण्टेर पोष्यपुत्रता ओ जयनि शास्त्रप्रमाण। ताहार सिद्धताते कोन सन्देह नाइ। किवल एइ सन्देह हइतेछे ये पोष्यपुत्र थाकिते मुसम्मात मायाकोङर स्वामीर त्यक्त धन स्वामीर असियतनामा लिखित नियमेर अन्यथाय जयनि शास्त्रानुसारे हस्तान्तरेर क्षमता राखे कि ना; ओ ए आदालतेर पण्डितेर व्यवस्थार लिखित एबारते-ये जयनि शास्त्रानुसारे स्वामीर मृत्युपर, यदि मृतव्यक्तिर स्त्री पुत्रवति थाके, तथा च ये प्रकार ताहार स्वामीर क्षमता छिल, तदनुरूप स्त्रीर प्रत्येक विषये क्षमता राखे-यथष्टता ओ बोधे सिद्ध आइसे ना, ये ताहार अभिप्राय कि कि स्वामी आपन जीवतावस्थाय ये प्रकार स्थावर विषय सोले किम्वा बिक्री अथवा दाने हस्तान्तर करण[1] क्षमता राखित सेइमत उहार स्त्री स्वामी मरणान्ते पुत्र सन्तान थाकिते क्षमता राखे। अतएव एइ विषय ए आदालतेर पण्डितेर स्थाने जयनि शास्त्रेर प्रकृतानुमति बोधकरण मनासिब बोध हैया हुकुम हइल ये एइ रुबकारिर नकल व्यवस्था सहित एइ हुकुमे ये व्यवस्थार लिखित एबारतेर[2] अर्थ ओ तात्पर्य्येर विस्तारित, ओ एइ प्रश्नेर प्रत्युत्तर ये मायाकोङर उत्तम चन्द्रेर कायेम मोकाम ओ पोष्यपुत्र गोपालचन्द्र थाकते, ओ उक्त मजमुने उत्तमचन्द्र असियतनामा लिखिया देओने ओ जयनि शास्त्रानुसारे सोलह रुपे दाविर वस्तुर मध्ये घोडा मान्दा ओ डावरा दुइ लाट आपीलाण्ट सावेक मुद्दइके छाडिया देओन क्षमता राखित किना-एक मासेर मध्ये लेखेन—एइ आदालतेर पण्डितेर हाओला करा जाय, ओ ए रुबकारिर द्वितीय नकल व्यवस्थार नकल सहित सहर मुरसिदाबादेर जज साहेबेर निकट एक मास

१. करण इति साधीयान् पाठः। २. वारतेर-इति साधीयान् पाठः।

मेयादे पूसेष्ट सम्वलित एइ हुकुमे पाठान जाय ये ऐ एवारतेर अर्थ ओ ऐ प्रश्नेर[1] प्रत्युत्तर जति अर्थात् जयनि शास्त्रेर पण्डितेर स्थाने, ये उभयेर सहित सम्पर्क ओ प्रयोजन ना राखे, लेखाइया आदालते प्रेरण करेण इति।—

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतरिचार्डओयालपोलसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितैतदब्दीयफेवरवरीमासीयप्रयोविंशतिदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं तत्समर्पितैतद्धर्माधिकरणीयव्यवस्थापत्रं च यदेतदब्दीयापरेलमासीयतृतीयदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे एवं तत्समर्पितमसीयन्नामाख्यपत्रप्रतिरूपपत्रं यत्तन्मासीयचतुर्द्दशदिनसम्बन्धिशनिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥—

प्रभुसमर्पितव्यवस्थालिखितस्य जैनशास्त्रानुसारेण पतिमरणानन्तरं पुत्रवत्या अपि पत्न्याः पतिवत्कार्य्यमात्रकरणे स्वाच्छन्द्येनेति अस्यायमर्थः— पुत्रे विद्यमाने पितुर्यादृशयादृशकार्य्यकरणे, अर्थात् स्थावरस्य दानविक्रयबन्धप्रभृतिकार्य्यकरणे, जैनशास्त्रानुसारेणाधिकारः तथा पतिमरणानन्तरं स्वेच्छाकृतपोष्यपुत्रे[2] विद्यमाने मातुरपि तादृशतादृशकार्य्यकरणे अधिकारः। एवं च सति मायाकोमराख्या प्रत्यर्थिनो गुलालचन्द्रस्य प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रे उत्तमचन्द्रस्य पोष्यपुत्रत्वेन प्रतिनिधित्वेन च मन्यमानस्य विद्यमानतायामपि उत्तमचन्द्रलिखिते प्रभुसमर्पितविचारपत्रलिखितार्थप्रतिपादके वासीयन्नामाख्ये पत्रे सत्यपि जैनशास्त्रानुसारेण बन्धरूपेणाभियोगविषयीभूतानां स्थावरद्रव्याणां मध्ये धोडामान्दा डावरेति च भाषायां दिलाटशब्दप्रतिपाद्यस्थावरस्यैतद्धर्म्माधिकरणस्यावान्तरधर्म्माधिकरणस्य चार्थिने त्यागपूर्वकसमर्पणस्य क्षमतामरदेव। यतः प्रभुसमर्पितासीयन्नामाख्ये पत्रे मतिचन्द्रं प्रत्युत्तमचन्द्रेण लिखितमस्ति—मम नाम रक्षार्थमेकं बालकं स्वमतसिद्धं पोष्यपुत्रं रचिला तं सिद्धिवं कृत्वा

---

[1] प्रश्न इति स्वाधीनान् पाठः।

[2] सेच्छ०—स्वय०।

ज्ञानापन्नं तं वाणिज्ये सराजकस्थावरे चाभिषिक्तं त्वं करिष्यसीति ।
अनेनोत्तमचन्द्रस्य पत्न्या मायाकोमराख्यायाः पोष्यपुत्रग्रहणानुमते
स्तत्पत्युरनवगमात् पुनरप्युत्तमचन्द्रेण मतिचन्द्रं प्रति तस्मिन्नेवाशीयत्रा-
माख्ये पत्रे लिखितमस्ति मम स्त्री यदि वाणिज्ये व्यापारमुत्थापयितुमिच्छति,
अथ च सराजकस्थावरमस्मत्स्वत्वास्पदीभूतं भवदभिप्रायं विना कस्मैचि-
द्ददाति विक्रीणीते वा तन्नास्मत्सम्मतम्, त्वं तत्र प्रतिबन्धकतामास्थाय
दानं विक्रयं वा मा कारयेति । अनेन मतिचन्द्रस्याशीशब्दप्रतिपाद्यस्य
जीवनावस्थायां तदनुमतिमन्तरेणोत्तमचन्द्रस्य पत्न्या मायाकोमराख्या(या)
स्तद्धने दानविक्रयादिक्षमता नास्ति । किन्तूत्तमचन्द्रस्याज्ञानुसारेण
मतिचन्द्रकृतस्योत्तमचन्द्रस्य पोष्यपुत्रस्य विद्यमानतायामपि अशी(यत)-
प्रतिपाद्यस्य मतिचन्द्रस्यानुमतौ सत्यां मायाकोमराख्यायास्तद्धने दानविक्र-
यादिक्षमता अशीयत्रमाख्यपत्रानुसारेणाप्यस्त्येव । अशीशब्दप्रतिपाद्यस्य
मतिचन्द्रस्याशीयत्रामाख्यपत्रलिखितनियमसहितस्य मरणानन्तरं तदनुम-
तेरसम्भावितत्वेन मायाकोमराख्यायास्तद्धने दानविक्रयादिक्षमतायामपि
बाधकाभावः, अशीयत्रामाख्ये पत्रे उत्तमचन्द्रस्याज्ञाजातस्याशीशब्दप्रति-
पाद्यमतिचन्द्रं प्रत्येव लिखितत्वेनान्यं प्रति अलिखितत्वात् । एवं च सत्ये-
तद्विवादे जैनशास्त्रानुसारेण पतिमरणानन्तरं पत्यनुमतिमन्तरेणापि पोष्य-
पुत्रग्रहणाधिकारिण्यास्तत्त्यागकरणक्षमतापन्नायाः पतिमरणानन्तरं पति-
वत् स्वाच्छन्द्येन कार्य्यमात्राधिकारिण्याः पतिमरणानन्तरं पतिकृताशीय-
त्रामाख्यपत्रलिखिताज्ञानुसारेणाकृतपोष्यपुत्रस्य पतिकृतस्याशीशब्दप्रति-
पाद्यस्य मरणेन निस्सन्देहेन पतित्यक्तसमुदायधनस्वामिन्याश्चोत्तम
चन्द्रनाहारस्य पत्न्या मायाकोमराख्यायाः अर्थिनोऽभियोगविषयीभूतधन-
विषयकाभियोगेनाभियुक्ताया मायायां षड्लाटशब्दप्रतिपाद्यान्तर्गतद्विलाट-
शब्दप्रतिपाद्यस्य पतित्यक्तधनानां मध्ये अत्यल्पस्य त्यागपूर्वकसमर्पण-
स्यार्थिना सह विवादनिवारणफलकस्यावशिष्टलाटचतुष्टयशब्दप्रतिपाद्य-
संरक्षणफलकस्य च क्षमताया निष्प्रत्यूहत्वात्—इति गौतमस्मरणीयादिजै-
नशास्त्रानुसारिणी व्यवस्था । अत्र प्रमाणानि अस्मद्दत्तप्राचीनव्यवस्था-
लिखितानि सर्व्वाण्येवेति ।

एतद्वर्षीयजूनमासीयषड्विंशतिदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

२—रोवकारि मिछिल शदर देओयानि आदालत मोकाम कलिकाता आदालत मजकुरेर हाकिम श्रीयुत हेनरि सिकिस पीयेर शाहेबेर बैठके ओयाक्ते तारिख १९ माह आपरेल इं शन १८३२ साल मोवाबक ८ बैशाख बाङ्गला सन १२३९ साल रोज वृहस्पतिवार ।—

राधाचरणवणिक छापेल

" छापेल हाजीर आइल। छापेलेर सओयाल इं सन १८३१ सालेर ९ शेतम्बर तारिखेर लिखित। एलाका जाहागिर नगरेर फोर्ट आपीलेर हाकिम केरिकेरापट् साहेबेर हुकुम। जाहाते छापेलेर दावि डिसमिश हइयाछे। आ ऐ सनेर ७ दिजेम्बर तारिखेर एइ आदालतेर हुकुम जाहा मोफशीलतत् सदर आपीलेर दरखास्त नामञ्जूर हय, ताहार एवं अन्य अन्य मरातबेर नाराज्ञीते छापलेर सओयालेर सामील व्यवस्थाजातेर अनुमोदने ओ आविश्यक मते एइ आदालतेर पण्डीतेर व्यवस्था तलबे साबेक नामञ्जूर हओया सओयालेर हानि तजबिजेर प्रार्थनाय एलाका जाहागिर नगरेर कोर्ट आपिलेर दस्तखत ओ मोहरे बाङ्गला एबारतेर चारि केता नकल व्यवस्था ओ सन १८३१ साल ९ शेतम्बर तारिकेर लिखित कोर्ट मजकुरेर एक केता फयछला सम्बलित, जाहा एइ मासेर १२ तारिखे दखिल हइयाछिल, अनुमोदने आइल। हुकुम हइल ये सन १८३१ सालेर ९ शेतम्बर तारिखेर लिखित कोर्ट मजकुरेर फयछला माय नकल व्यवस्था, ये कोर्टेर फयछला ताहार वुनि-

याद्दे हइयाछे, एइ आदालतेर पण्डितेर निकट एइ हुकुमे पाठान जाय-जे पण्डित मौसुक एइ विशयेर जवाव एक सप्ताह मध्ये लिखेन—ये व्यवस्था मजकुर दोरस्त वटे कि ना इति ।—

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतहेनरीसिकिसपीयरसाहेवधर्म्माधिकरण-लिखितैतदब्दीयापरेलमासीयोनविंशतितमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितजाहाङ्गीरनगरसम्बन्धिकोर्टापीलाख्यधर्माधिकरणीय-जयपत्रं व्यवस्थाप्रतिरूपपत्रसहितञ्च यदेतदब्दीयमैमासीयपञ्चमदिनसम्बन्धिशनिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥

अर्थिनो मातामही यदि स्वसंक्रान्तपतिस्थावरादिधनस्य स्वभरणपोषणार्थं पतिकृतऋणापाकरणार्थं वा पत्युरौर्द्ध्वदैहिकक्रियाद्यावश्यककार्य्यार्थं वा हस्ताक्षरं कृतवती स्यात्तदा प्रभुसमर्पितव्यवस्था शास्त्रसम्मता भवति नोचेदर्थिनोऽप्राप्तव्यवहारतायां हस्तान्तरपत्रे साक्षित्वेन पितृकर्त्तृकतन्नामलिखनेन प्रतिनिधित्वेन पितृकर्त्तृकस्वनामलिखनमात्रेण च शास्त्रसम्मता न भवति, पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्य मृतस्य धने पत्न्या उक्ताधिकारित्वेनाधिकारे जाते सति तस्याश्च वर्त्तनाद्यशक्तावुपरिलिखितावश्यककार्य्यार्थं तत्तत्कार्यो पयुक्तस्य पतिधनस्य हस्तान्तरकरणक्षमतायाः शास्त्रीयत्वात् तदव्यतिरेकेण हस्तान्तरकरणक्षमताया अशास्त्रीयत्वाच्च—इति वङ्गदेशप्रचलितदायभाग-दायतत्त्व दायभागटीका-दायक्रमसंग्रह-विवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥—

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव—इत्यादि दायभागादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य-वचनम् ॥१॥

वर्त्तनाशक्तावाधानमप्यनुमतं तत्राप्यशक्तौ विक्रयणमपि—इति दाय-भागग्रन्थलिखनम् ॥२॥

मर्त्तृकामेन या भर्त्रा उक्ता देयमृणं त्वया ।

अप्रपन्नापि सा दाप्या धनं यद्याश्रितं स्त्रियाः ॥—इति विवादार्णव-सेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥३॥

रिक्थग्राही ऋणं दाप्यः—इति तत्तद्ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥४॥

एवञ्च भर्त्तुरौर्ध्वदैहिकक्रियार्थं दानादिकमप्यनुमतम्—इति दायभाग(पृ० १७२)ग्रन्थलिखनम् ॥५॥

अपुत्रा शयनं भर्त्तुः पालयन्ती गुरौ स्थिता ।

भुञ्जीतामरणात् क्षान्ता दायादा ऊर्द्ध्वमाप्नुयुः ॥—इति दायभाग-दिग्रन्थधृतकात्यायनवचनञ्चेति ॥६॥

एतदब्दीयज्यैष्ठमासीयाष्टाविंशतितमदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

३—रोयकारि मिथिल सदर देओयानि आदालत मो० कलिकाता आदालत मजकुरेर हाकिम श्रीयुत हेनरि सिकिस पीयर साहेबेर बैठके ओयाके तारिक ९ माह माइ इं सन १८३२ साल मोताबक २८ वैशाख बाङ्गला सन १२३९ साल रोज बुधवार ॥

आनन्दमोहनघोष—	आपीलाण्ट
मोहम्माद हरिमिया—	रेप्पाण्डेण्ट

आपिलाण्टेर वकिल सदासुख पण्डित हाजिर आइल । इं सन १८२९ सालेर ८ शेतम्बर तारिखेर लिखित पलाका मुरसिदाबादेर प्राविणसियान कोर्टेर फयसालार नाराजी ओजुहात सम्बलित आपीलाण्टेर सओयाल सन हालेर १९ आपरेल

तारिखेर एइ आदालतेर हुकुम मताबक जाहा कोर्ट मजकुरेर सारटफिकिट माय आपीलाण्टेर सदर आपिलेर सओयाल अनुमोदनानुसारे आपीलाण्टेर खोद किम्वा उकिलेर द्वाराय हाजिर आइशन, ओ ओजुहात दाखिलकरण जन्य आपीलाण्टेर नामे एत्तलानामा जारिर हुकुम आदेर हइयाछिल। उकिल मजकुरेर नामेर एक केता ओकालतनामा ओ एइ आदालतेर तहविलदारेर दस्तखति उकिल मजकुरेर मेहन्यतआनार बावत मवलगे ३२५९ टाकार एक केता रशीद सम्वलित, जाहा ऐ माह माहार २ तारिखे दाखिल हइयाछिल, सन हालेर १९ आपरेलेर अनुमोदन हओया माय शारटफिकिट ओ गयरह दरपेश हइल। तत्परे आपीलाण्टेर उकिल एक केता हेयानामा वाङ्गला एवारतेर २ दुइ टाका किम्मतेर फिरिस्ती सम्वलित दाखिल करिल। दरियाप्त हइल ये आपीलाण्ट एइ मोकर्द्दमार जामिनि खरचा कालीकान्तराय जमिनदारेर नामे कोर्टे दाखिल करियाछे। एवं ताहा तथाकार नाजीरेर तहकीकाते मालवर आसियाछे। ए प्रयुक्त प्रकाय ये आपीलाण्ट आपीलेर सामुदाइक सराएत वजाय आनियाछे, एवं एइ मोकर्द्दमा प्रोविन्सीयाल कोर्टेर प्रथम तजविज हओया सदर आपीलेर जोग्य। एजन्य हुकुम हइल ये एइ मोकर्द्दमार शदर आपील मज्जूर एवं लम्वले दाखिल हय। तत् परे कोर्टेर फयछला ओ मौजेबात ओ आशल हेयानामा पड़ा गेल। हुकुम हइल ये नकल फयछला ओजुहात सम्वलित ओ हेयानामा एइ आदालतेर पण्डितेर निकट एइ हुकुमे पाठान जाय ये पण्डित मौछफ फयछलार लिखित हेयानामा मजकुरेर विषय सकलेर अनुमोदने एइ विशयेर जओयाव लिखेन जे हेयानामा मजकुरेर मोताबक मुद्दइ या रेस्पाण्डण्ट आपन स्वामीर हिस्यार हकदार हय कि, किम्वा नावालगी हालते उहार स्वामीर मातार साक्षात्कार उहार स्वामीर मृत्यु हओन सरचे आपीलाण्टेर ओजुहातेर लिखित ओजरातेर अनुमोदने लोप हइयाछे

किना इति । पण्डितेर सओयाव पौंछार पर इङ्गरेजी सन १८३१ सालेर ९ आइनेर २ दोशरा दफार मोवावक मोनछेव हुकुम छादेर हइवेक इति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतहेनरीसिक्किस्पीयरसाहेवधर्म्माधिकरण-लिखितैतदब्दीयमेमासीयनवमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितं मुरशीदाबादाख्यनगरसम्बन्धिकोटीनीलाख्यधर्म्माधिकरणीयज-यपत्रप्रतिरूपपत्रमुद्गुहातसहकनिवेदनपत्रसहितं दानपत्रञ्च यत्तन्माघीनैकविंश-तितमदिनसम्बन्धिसोमवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तद-नुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥—

प्रभुसमर्पितदानपत्रानुसारेणार्थिनो अर्थादेतद्धर्म्माधिकरणप्रत्यर्थिनी स्वपतियोग्यांशस्याधिकारिणी भवति । मातरि जीवन्त्यामप्राप्तव्यवहारता-वस्थायां चैतद्धर्म्माधिकरणप्रत्यर्थिनी पतिमरणेनैतद्धर्म्माधिकरणाप्युद्गुहात-सहकनिवेदनपत्रलिखितवृत्तान्तदृष्ट्या चार्थिन्याः स्वत्वलोपो भवितु न शक्नोति, यतो दानपत्रे दात्रा स्वपुत्रौ प्रति लिखितमस्ति स्वस्वत्वास्पदीभूत-समुदायधनं पत्रजातसहितं स्वेच्छया स्वाभिप्रायेण प्रसन्नतया स्वाभाविक-बुद्ध्या रोगरहितेन स्वस्वत्वत्यागपूर्व्वकं दानं कृत्वा दानपत्रं लिखित्वा युवाभ्यां मया दत्तम्, युवां सराजकरस्थावरास्थावरात्मकमत्स्वोपार्ज्जित-समुदायधनमायत्तीकृत्य तुल्यांशित्वेन भोगं कुरुताम्, तत्र मया सह ममान्यै-श्चोत्तराधिकारिभिः सह वा किञ्चित् सम्बन्धो नास्तीति । अनेनैव दानस्य सर्व्वतोभावेन शास्त्रानुसारेण निष्पन्नत्वेनैतादृशदानोच्चारणमेव दानग्रही-त्रोरानन्दमोहनघोषश्याममोहनघोषाख्ययोर्दातृपुत्रयोर्दानकृतधने समस्वा-मित्वस्योत्पादेन तयोर्दानग्रहीत्रोर्म्मध्ये श्याममोहनघोषस्य मरणेन तद्यो-ग्यांशे तदुत्तराधिकारिणामेवाधिकारः । तदुत्तराधिकारिणां मध्ये तस्य पुत्रपौत्रप्रपौत्राभावे तत्पत्न्या अर्थादेतद्धर्म्माधिकरणप्रत्यर्थिन्याः प्रधाना-धिकारित्वात् । मृते पितरि जीवन्त्यां च मातर्य्यप्राप्तव्यवहारतावस्थायाञ्च कस्यचिन्मरणेन तदुत्तराधिकारिणा तत्यक्तधने स्वत्वलोपो भवति इत्येत-

द्विधायकशास्त्राभावाच्च। यद्यपि दानपत्रे स्वपुत्रौ प्रति लिखितमस्ति दात्रा युवामप्राप्तव्यवहारौ इदानीं सराजकरस्थावरास्थावरधने आयत्तत्वं सम्पाद्य रक्षणावेक्षणकरणस्य योग्यौ न जातौ, अतः कारणान्मम पत्नी युवयोर्माता श्रीमतीसरस्वतीदासी सराजकरस्थावरास्थावरादिधनस्य रक्षणावेक्षणादिकरणपूर्व्वकं युवयोः प्रतिपालनार्थं मोक्त्यारीशब्दप्रतिपाद्यकार्य्ये नियुक्ता मया। युवयोः प्राप्तव्यवहारतापर्य्यन्तं सराजकरस्थावरे मोक्तारीशब्दप्रतिपाद्यत्वेन सा मम पत्नी स्वनाम निवेश्य राजकरं दत्त्वा तदुपरत्वे जङ्गमधने च मोक्त्यारीशब्दप्रतिपाद्यं कार्य्यं कृत्वा युवयोः प्रतिपालनं संरक्षणावेक्षणादितरवीयतशब्दप्रतिपाद्यं कार्य्यं करिष्यति। युवां प्राप्तव्यवहारत्वेन निष्पन्नौ सराजकरस्थावरसमुदाये स्वस्वनाम निवेश्यैवं जङ्गमधने चायत्तत्वं संपाद्य पुत्रपौत्रादिक्रमेण परमसुखेन भोगं कुरुताम्, दानविक्रययोः स्वत्वाधिकारो युवयोः। मया सह तत्र कश्चित् सम्बन्धो नास्तीति लिखनेन मोक्त्यारीशब्दप्रतिपाद्यकार्य्यनियुक्तत्वेन ज्ञातायामेतद्धर्म्माधिकरणाध्यक्षहस्तसंज्ञकनिवेदनपत्रेण प्रभुसमर्पितजयपत्रलिखितैतद्धर्म्माधिकरणाध्यक्षोत्तरपत्रेण च्चासीशब्दप्रतिपाद्यकार्य्यनियुक्तत्वेन च ज्ञातायां मातरि जीवन्त्या मृतस्याप्राप्तव्यवहारपुत्रस्य तादृशोपरिलिखितप्रकारकदानानुसारेण मृते पितरि जीवतः पुत्रत्वेन चोत्पन्नस्वत्वस्योत्तराधिकारिणां स्वत्वोत्पत्तेरप्रतिबन्धकत्वात्तल्लिखनस्य इति यद्वदेशप्रचलितमनुदायभागशुद्धितत्त्वदायतत्त्वदायभागटीकाविवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा।

तत्सुतः—इत्यादि दायभागादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥१॥

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनम् ॥२॥

वस्तुतस्तु प्रदानं स्वाम्यकारणमिति मनूक्तेर्दानमात्रात् सम्प्रदानस्य तद्विषयज्ञानाभावदशायामपि स्वत्वमुत्पद्यते पितुः स्वत्वोपरमात्तद्धने गर्भस्थस्यैव—इति शुद्धितत्त्वग्रन्थलिखनम् ॥३॥

दाने हि चेतनोद्देशविशिष्टात् त्यागादेव दातृव्यापारात् सम्प्रदानस्य द्रव्ये स्वामित्वम्—इति दायभागग्रन्थलिखनम् ॥४॥

पूर्वस्वामिस्वत्वनिवृत्तिरस्वामिस्वत्वोत्पत्तिफलकत्यागतेन स्वेण त्यागशक्तस्य दायातोः—इत्यादि दायभागटीकालिखनम् ॥५॥

प्रथम पुत्रस्तदभावे पौत्रस्तदभावे प्रपौत्रः—इति दायभागटीका-लिखनञ्चेति ॥६॥

एतदब्दीयतुलाद्यमासीयपञ्चमदिनसम्बन्धिबृहस्पतिवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

३११८ नं—

४—रोवकारि मिसिल आदालते देओयानि सदर मोकाम कलिकाता तारिख २१ जुन सन १८३२ साल मोताबके वाङ्गला ६ आषाढ सन १२३६ साल दिवस वृहस्पतिवार श्रीयुत रिचार्ड ओयालपोल साहेबेर बैठके ॥

पञ्चमलालसिंह ओगयरह	आपीलाण्टान्
शिवरामसिंह	रेस्पाडेण्ट

आपीलाण्टानेर उकिल मुनसि होसन आलि ओ रेस्पाडेण्टर उकिल मुनसि गोलाम वतुल ओ सदासुख पण्डित ओ इन्द्र-कुमारिर उकिल मुनशि बु आलि हाजिर हइल। तवतिव मते एइ मकद्दमा गतो माइ मासेर ३१ तारिखे ओ गतो दिवसे आमार बैठके उपस्थित हइया नालिसेर आरजि प्रभृति प्रविन्-सीयान कोटेर कागच पत्रादि एवं तथाकार फयेसला पर्य्यन्त पडा हइया दिवसावसान प्रयुक्त स्थगित छिल, अद्य पुनराय उपस्थित हइया ए आदालतेर दाखिल हओया अजुहात ओ जओयाव आर इन्द्रकुमारिर दरखास्त प्रभृति कागज पत्र पडागेल। तत्परे रेस्पाडेण्टर उकिलगण सन १८१४ सालेर दिजम्बर मासेर १६ तारिखेर लिखित ए आदालतेर डिगरि

एक केता ओ सन १८१३ सालेर आगष्ट मासेर १४ तारिखेर कालेक्टरिर परओयानार नकल २ टाका दामेर फिरिस्तिर द्वाराय दाखिल करिलेक, पडागेल। ताहार पर उभयेर उकिलदिगके जिज्ञासा गेल ये सन १२१८ साले जयरामसिंहेर मृत्यु हय, तखन ताहार कि वयेस छिल। रेष्पाडेण्टर उकिलगण जओयाव दिल ये उक्त जयरामेर वयेस २५ वत्सर, आर आपिलाण्टगणेर उकिल आर आपिलाण्ट पञ्चमलालसिंह, (ये) हजुरे हाजिर छिल, जओयाव दिलेक ये ४०।४५ वत्सर वयक्रमे मृत्यु हय। पुनुराय उभयेर उकिलदिगके जिज्ञासा गेल जे एक्षणे रेष्पाडेण्टर वयेस कतो वतसर। रेष्पाडेण्टर उकिलगण जओयाव दिलेक ये रेष्पाडेण्टर वयेस एदयने आन्दाजि ४२ वत्सर ओ आपीलाण्ट जओयाव दिल ये प्राय ५० वत्सर हइवेक। पुनराय आपिलाण्टके जिज्ञासा गेल ये जयरामसिंह हइते रेष्पाडेण्ट कतो वत्सरेर छोट हइवेक। जओयाव दिल ये ५।६ वत्सरेर इति। कागज पत्रेर द्वाराय बोध हइल ये रेष्पाडेण्ट विरधीय वस्तु दखल पाओनेर दुइ प्रकार दावि राखे :—प्रथम एइये खोसालसिंहेर सूपार्जित विरधीय वस्तु जयरामसिंहेर नामे लेखाजाय। खोसालसिंह ताहार कर्त्ता ओ दखलिकार छिल। खोसालसिंहेर मृत्युर पर जयरामसिंहेर सहदर भाइ शिवरामसिंह रेष्पाडेण्टर दखले आछे, द्वितीय एइये यद्यपि विरधीय वस्तु जयरामसिंहेर त्यक्त हय, तवे जयरामसिंहेर मृत्युर पर आर ताहार वनिता मानकुआरि, ये ताहार एक कन्या, ऐ मानकुआरिर ओ खोसालसिंहेर सद्याते, ओ जयरामसिंहेर द्वितीय कन्या खोसालसिंहेर साद्याते पुत्र सन्तान ना राखिया मृत्यु हय, शिवरामसिंहके अर्शे। एमते ए मकर्द्दमाय खोसालसिंहेर जयरामसिंह ओ रेष्पाडेण्डके हेवानामा लिखिया देओयार प्रति दृष्टि ना करिया एइ कथा जिज्ञासा करा ए आदालतेर पण्डितेर निकट उचित हइल-ये जयरामसिंहेर त्यक्त

বস্তু মানকুঙারির মৃত্যুর পর রেস্পাণ্ডেণ্ট পিতা খোসালসিংহ ও রেস্পাণ্ডেণ্টকে অথবা দয়াময়ীর কন্যা ইন্দ্রকুঙারিকে, যে আপন মাতা মানকুঙারির সাক্ষাতে মৃত্যু হয়, তাহাকে অর্শিবেক। আর যদি স্যাৎ মসম্মাত মানকুঙারির লিখিয়া দেওয়া হেবানামা আদালতের শাস্ত্রানুসারে তাহা প্রমাণ না হওন প্রযুক্ত গ্রাহ্য হয় না, কিন্তু মৃত দয়াময়ীর স্বামী আপীলাণ্ট পন্নমলালসিংহের ওজর মিটাইবার কারণ, এ-মত হেবানামা যথার্থের বিষয়ে শাস্ত্রের আজ্ঞা মতে জিজ্ঞাসা করা আবশ্যক হইয়া হুকুম হইল যে এই রোবকারির নকল এই হুকুমে যে নিচের লিখিত সওয়ালসকলের জওয়াব রোবকারি সোপর্দ হওনের তারিখ হইতে দুই দিবসের মধ্যে লেখেন-এ আদালতের পণ্ডিতের হাওলা করাজায়।

প্রথম সওয়াল—এইযে বিবাদি ও জমিদারির কর্ত্তা জয়রামসিংহ এক বনিতা মানকুমারী ও দুই কন্যা দয়ামযী ও পার্ব্বতী ও পিতা খোসালসিংহ ও এক ভাই রেস্পাণ্ডেণ্ট শিবরামসিংহ (কে) রাখিয়া মৃত্যু হয়। তৎপরে দয়ামযী এক কন্যা ইন্দ্রকুঙারি নামে রাখিয়া মৃত্যু হয়। ও দয়ামযীর মৃত্যুর পর মানকুঙারি আর মানকুঙারির মৃত্যুর পর পার্ব্বতী নিঃসন্তানা মৃত্যু হয়, ও পার্ব্বতীর পর খোসালসিংহের মৃত্যু হয়। অতএব উক্ত জমিদারি বাঙ্গলা মুলকের চলিত শাস্ত্রানুসারে শিবরামসিংহকে অথবা দয়ামযীর কন্যা ইন্দ্রকুমারি, যে মানকুঙারির-সাক্ষাতে মরিয়াছে, তাহার কন্যা ইন্দ্রকুমারিকে পাঁছে। আর যদি স্যাৎ মসুম্মাত পার্ব্বতী এক কন্যা রাখিয়া মরিয়া থাকে, সে কন্যার ও খোসালসিংহের মৃত্যুর পর মৃত্যু হয়, ইহাতে বিশেষত কিছু প্রভেদ আছে কি না।

২—সওয়াল—এইযে খোসালসিংহের ও শিবরামসিংহের বর্ত্তমানে জয়রামসিংহের ত্যক্ত বস্তুর দান ও হেবার অধিকার মুসম্মাত মানকুঙারিকে আছে কি না ইতি।

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतरिचार्डजोआलपोलसाहेबधर्माधिकरणलिखितैतदब्दीयजूनमासीयैकविंशतितमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यदेतदब्दीयजुलाइमासीयनवमदिनसम्बन्धिसोमवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

विवादास्पदीभूतसराजकरस्थावरस्य स्वामी जयरामसिंहो यदि मानकुमारीनाम्नीं पत्नीमेकां दयामयीपार्व्वतीनाम्न्यौ द्वे कन्ये खोसालसिंहनामानं पितरं भ्रातरं चैकं शिवरामसिंहनामानमेवद्धर्माधिकरणप्रत्यर्थिनं संरक्ष्य मृतः स्यात्, तदनन्तरं दयामयीनाम्नी जयरामसिंहस्य कन्यापीन्द्रकुमारीनाम्नीं कन्यामेकां संरक्ष्य मृता स्यात्, एवं दयामयीमरणानन्तरं मानकुमारी मानकुम(ा)रीमरणानन्तरं निरपत्ताना पार्व्वती मृता स्यात्, एवं पार्व्वतीमरणानन्तरं खोसालसिंहोऽपि मृतः स्यात् तदा जयरामसिंहत्यक्तसराजकरस्थावरे तद्भ्रातुः शिवरामसिंहस्याधिकारः, एवं यदि पार्व्वती एकां कन्यां संरक्ष्य मृता स्यात् सापि कन्या खोसालसिंहस्य मरणानन्तरं मृता स्यात्तदात्र शास्त्रानुशयाः कश्चिद् विशेषो नास्ती(ति)।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा।
तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः–इत्यादि दायभागादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम्॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

खोसालसिंहस्य शिवरामसिंहस्य च विद्यमानतायां जयरामसिंहस्य पत्न्या मानकुमार्य्याः स्वसंक्रान्तपतित्यक्तधनानाम्मध्ये पत्युः स्वर्गार्थं किञ्चिदनस्यापन्निवारणार्थं तदुपयुक्तस्य च दानाधिकारितास्ति, तद्व्यतिरेकेण स्वेच्छया स्वाभिप्रायेण च दानाधिकारिता नास्ति-इति वङ्गदेशचलितदायभागदायतत्त्वदायभागटीकादायनिर्णयदायरहस्यनारदस्मृतिव्यवहारतत्त्वव्यवस्थार्णवविवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था॥

अत्र प्रमाणम्—

अपुत्रधने पौत्रप्रपौत्राभावे साध्व्याः पत्न्या अधिकारस्तत्रापि भर्तृस्वर्गमुद्दिश्य दाने यथाकथञ्चिच्छरीररक्षार्थं महणे चाधिकारः । एतदतिरिक्तयथेष्टाचरणे स्थावरविक्रयादौ च नाधिकारः—इति व्यवस्थार्णवग्रन्थलिखनम् ॥१॥

स्त्रीकृतान्यप्रमाणानि कार्य्याण्याहुरनापदि ।
विशेषतो गृहक्षेत्रदानाधमनविक्रयाः ॥—इति दायरहस्यनारदस्मृत्यादिग्रन्थधृतनारदवचनम् ॥२॥

अपुत्रा शयनं भर्त्तुः पालयन्ती गुरौ स्थिता ।
भुञ्जीतामरणात् क्षान्ता दायादा ऊर्ध्वमाप्नुयुः ॥ इति दायभागादिग्रन्थधृतकात्यायनवचनञ्चेति ॥३॥

एतदन्दीयजुलाइमासीयएतद्दशदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मयेव व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

५—रोवकारि मिसिल आदालते देश्रोयानि सदर मोकाम कलिकाता तारिख १६ जुन सन १८३२ साल मोताबके बाङ्ला तारिख ७ आषाढ १२३९ साल दिवस मङ्गलवार श्रीयुत रिचार्ड ओयालपोल साहेबेर बैठके—

मृत दुर्गादासेर स्त्री मसम्मात ब्रह्ममयिदेव्या साएला—

गतो माइ मासेर १७ तारिखेर लिखित सहर कलिकातार हाओयालि जेलार एक केता रिटरनेर सम्वलित तथाकार रोवकारि एक केता ओ असियतनामा पौछिवाय । अद्य साएलेर दरखास्त ओ ईशानचन्द्र ओ गयरहर दरखास्त ओ हरिप्रियार उकिल सदासुखपण्डित ओ राजचन्द्रेर उकिल मुनसि होसन आलिर हाजिरिते पढागेल । तत्परे राजचन्द्रेर उकिल सादा

कागजे याजे पण्डितेर एक केता व्यवस्था गोजराइल, पडागेल। बोध हइलो ये त्यक्त वस्तुर कर्त्ता गकुलचन्द्रघोसालेर दुइ वनिता छिल। ताहार बड तारिणी, छोट राजेश्वरी। तारिणीर गर्भे दुइ पुत्र, हरिनारायण ओ लक्ष्मीनारायण, ओ एक कन्या आनन्दमयी, आर राजेश्वरीर गर्भे दुइ पुत्र रामनारायण ओ गङ्गानारायण, ओ तीनि कन्या कुञ्जारिदेव्या ओ गङ्गादेव्या ओ दयामयि। मसम्मात तारिणी सन ११८० साले, आर हरिनारायण सन ११९७ साले आपन स्त्री मसम्मात पार्व्वतीके राखिया, ओ लक्ष्मीनारायण सन १२०४ साले आपन स्त्री मसम्मात हेमलताके राखिया, ओ रामनारायण सन १२०१ साले आपन स्त्री मसम्मात हरिप्रियाके राखिया, ओ गङ्गानारायण अप्राप्त वयेसे, ओ अविभाहे, ओ दयामयि निःसन्ताना मृत्यु हइल। हेमलतार दौहित्र नवचन्द्रचाटुर्य्ये लक्ष्मीनारायणेर हिस्यार पर ओ हरिनारायणेर स्त्री पार्व्वतीर मृत्युर पर गोकुलचन्द्रेर दौहित्रगण आनन्दमयीर पुत्र ईशानचन्द्र प्रभृति, ओ गङ्गादेव्यार पुत्र दुर्गादास हरिनारायणेर हिस्यार पर, ओ हरिप्रिया रामनारायणेर हिस्यार पर दखलिकार आछेन। आर गङ्गानारायणेर हिस्या उर्द्ध्वगामि हइया राजेश्वरीर दखले हइल। यद्यपे राजेश्वरी ओ कन्या कुञ्जारिदेव्यार सात्याते रामनारायणेर स्त्री हरिप्रियार सात्याते, ओ गङ्गादेव्यार पुत्र मृत दुर्गादासेर स्त्री ब्रह्ममयी, ये सन्तानादी किछु राखे ना, ताहार सात्याते, ओ आनन्दमयीर पुत्रगण ईशानचन्द्रदिगरेर सात्याते मृत्यु हइयाछे। ये हेतु चूडान्त हुकुम हओनेर पूर्व्वे उत्तराधिकारि प्रकारे उक्त व्यक्तिगणेर सत्वे शास्त्रेर आज्ञा ज्ञात हओन उचित हइल, ए कारण हुकुम हइल ये एइ रोवकारिर नकल एइ हुकुमे ये एइ विषयेर जओयाव, ये उक्त व्यक्तिगणेर मध्ये गङ्गानारायणेर त्यक्त वस्तु, याहा उर्द्ध्वगामि हइया ताहार माता मसम्मात राजेश्व-

रीते अर्शियाछे, उत्तराधिकारि ओ सत्वाधिकारि के वटे, आर " गोकुलचन्द्रेर ओ मसम्मात राजेश्वरिर पार्व्वणेर श्राद्ध ओ पिण्डदान करणे काहार क्षमता आछे, सेमाहेर मध्ये लेखेन—ए आदालतेर पण्डितेर हाओला करा जाय—

श्रीज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतरिचार्डंश्रोआलपोलसाहेबधर्म्माधिकरणलिखितैतदब्दीयजूनमासीयोनविंशतितमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यदेतदब्दीयजुलाइमासीयनवमदिनसम्बन्धिसोमवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

प्रभुसमर्पितविचारपत्रलिखितवृत्तान्ते सति मृतस्य[1] गङ्गानारायणस्य धनस्योत्तराधिकारित्वेन तन्मातृराजेश्वरीसकान्तरस्याधिकारिणस्तद्विचारपत्रलिखितानां मध्ये ईशानचन्द्रप्रभृतयस्तत्पितृदौहित्रा एव भवन्ति । एवं विवादास्पदीभूतधनाधिकारप्रयोजकगोकुलचन्द्रसम्प्रदानकपार्व्वणश्राद्धपिण्डदानाधिकारित्वापीशानचन्द्रप्रभृतीनां तद्दौहित्राणामेवास्ति । राजेश्वर्य्याः पृथक्पार्व्वणश्राद्धपिण्डदानाधिकारिता तद्विचारपत्रलिखितानां मध्ये कस्यापि नास्ति, उत्तराधिकारित्वेन प्राप्तधनायाः स्त्रिया मरणानन्तरं तद्धनोत्तराधिकार्य्यधिकारप्रयोजकस्त्रीसम्प्रदानकपृथक्पार्व्वणश्राद्धपिण्डदानस्याभावात्—इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागदायभागटीकादायतत्त्वदायक्रमसंग्रहदायनिर्णयदायरहस्यशुद्धितत्त्वश्राद्धतत्त्वव्यवस्थार्णवविवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥—

अत्र प्रमाणम्—

पितुरपि प्रपौत्रपर्यन्ताभावे पितृदौहित्रस्याधिकारो बोद्धव्यो धनिदौहित्रस्येव—इति दायभागग्रन्थलिखनम् ॥ १ ॥

त्रयाणामुदकं कार्यं त्रिषु पिण्डः प्रवर्त्तते—इति मनुवचनम् ॥ २ ॥

न योषिद्भ्यः पृथग्दद्यादवसानदिनादृते—इति श्राद्धतत्त्वादिग्रन्थधृतमुनिवचनं चेति ॥ ३ ॥

१—मृतस्य—स्थ० ।

एतद्ब्दीयजुलाईमासीयैकविंशतितमदिनसम्बन्धिशनिवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

प्रश्नपत्र—

६—यद्यपि कोनो व्यक्तिर सन्तान सन्तति ना थाकाय आपन परकालेर निमित्तक अन्तिमकाले दुइ भगिन ओ भागिना थाकिले ओ आपन पैतृक समुदय वस्तु आपन गुरुके वाचनिक दान करे, आर ऐ व्यक्तिर मृत्युर परे ताहार अधिरा स्त्री स्वामीर अनुमतिक्रमे ऐ स्वामीर मृत्युर ११ एगार वत्सर गते दानपत्र लिखिया देय—ए प्रकार दान शास्त्र सम्मत सिद्ध घटे कि ना, आर ऐ मृत व्यक्तिर वस्तुते भगिनरा उत्तराधिकारिणी ओ हकदार हइते पारे कि ना, एइ प्रश्नेर प्रत्युत्तर यथाशास्त्र दानपत्र दृष्ट करिया लिखिवेन—

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं दानपत्रञ्च यदङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यद्वात्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयापरेलमासीयतृतीयदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥—

यदि केनचिद् व्यक्तिविशेषेण सन्तानाभावेन स्वकीयपरकालार्थं स्वावसानसमये विद्यमानयोर्द्वयोर्भगिन्योर्विद्यमाने च भागिनेये स्वपैतृकसमुदायधनं स्वगुरवे वाचा दत्तं स्यादेवं तस्यैव निःसन्तानव्यक्तिविशेषस्य मरणानन्तरं तस्याधीरया पत्न्या स्वपत्यनुमत्यनुसारेण स्वपतिमरणदिवसादारभ्यैकादशसंवत्सरे गते सति दानपत्रं लिखित्वा दत्तं स्यात्तदैतादृशदानं शास्त्रानुसारेण सिद्ध्यति, स्वाम्यनुमत्या अस्वामिकृतस्यापि दानादेः सम्प्रदानादिस्वत्वोत्पत्तिहेतुभूतस्य सिद्धेः शास्त्रीयत्वेन धनस्वामिपत्न्यनुमत्यानपत्यपतिमरणानन्तरं

प्रधानोत्तराधिकार्य्यंवीरापत्नीलिखितदानपत्रप्रमाणस्य पतिकृतधर्मार्थदानस्य सिद्धौ बाधकप्रमाणाभावात्, धर्मार्थदानं यदि केनचित् स्वस्थेनार्त्तेन वा कृतं श्रावितं वा, अदत्त्वैव मृतश्चेत्तथापि तद्दानं तदुत्तराधिकारिणो राज्ञा दापनीया इति विशेषतो लिखितत्त्वाच्च। एवं दानसिद्धौ सत्यां तस्यैव मृतव्यक्तिविशेषस्य भगिन्यस्तद्धने उत्तराधिकारिण्यो भवितुं न शक्नुवन्ति, तद्दानोत्तरक्षणमेव धनिनो दातुस्तद्धने स्वत्वविच्छेदेन सम्प्रदानस्य स्वत्वोत्पादेन च धनिन उत्तराधिकारिणां स्वत्वोत्पत्तेरसम्भवात्—इति यद्भदेशाचलितमनुस्मृतियाज्ञवल्क्यस्मृतिदायभागदायभागटीकादायतत्त्वशुद्धितत्त्वदायक्रमसंग्रहविवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥

अत्र प्रमाणम्—

स्वभागान् यदि दद्युस्ते विक्रीणीयुरथापि वा।

कुर्य्युर्यथेष्टं तत्सर्वमीशास्ते स्वधनस्य वै॥—इति दायभागादिग्रन्थधृतनारदवचनम् ॥१॥

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनम् ॥२॥

स्वस्थेनार्त्तेन वा दत्तं श्रावितं धर्मकारणात्।

अदत्त्वा तु मृते दाप्यस्तत्सुतो नात्र संशयः॥—इति विवादभङ्गार्णवादिग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥३॥

तथा च स्वामिनोऽनुमतिसत्त्वे तु अस्वामिकृतविक्रयोपि सिद्ध्यति व्यवहारस्तथा—इति विवादभङ्गार्णवग्रन्थलिखनम् ॥४॥

प्रमाणं लिखितं भुक्तिः साक्षिणश्चेति कीर्त्तितम्—इति याज्ञवल्क्यस्मृत्यादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥५॥

पत्नी दुहितरश्चैव—इत्यादि दायभागादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥६॥

वस्तुतस्तु प्रदानं स्वाम्यकारणमितिमनूक्तेर्दानमात्रात् सम्प्रदानस्य तद्विषयकज्ञानाभावदशायामपि स्वत्वमुत्पद्यते पितुः स्वत्वोपरमासन्ने गर्भस्थस्येव—इति शुद्धितत्त्वग्रन्थलिखनम् ॥७॥

दाने हि चेतनोद्देशविशिष्टात् त्यागादेव दातृव्यापारात् सम्प्रदानस्य द्रव्ये स्वामित्वम्—इति दायभागग्रन्थलिखनम् ॥८॥

पूर्वस्वामिस्वत्वनिवृत्तिपरस्वामिस्वत्वोत्पत्तिफलकत्यागत्वेन रूपेण त्यागशब्दस्य दाधातोः—इत्यादि दायभागटीकालिखनञ्चेति ॥३॥

एतदब्दीयजुलाइमासीयत्रिंशत्तमदिनसम्बन्धिसोमवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

७—सदर देओयानी आदालतेर पण्डितेर निकट सओयाल। ३ आगस्त १८३२ साल।

१—यद्यपि स्यात् कोन ब्राह्मण जाति उदासीन अर्थात् वैरागी संसारत्यागी हय, विग्रहठाकुर स्थापन करिया थाके, ओ आपन उदासीन अर्थात् संसारत्यागी वैरागी शिष्यगण वर्त्तमान थाकिते, ओ आपन समुदय वस्तु रजपुत जाति एक व्यक्ति, ये स्त्री पुत्र राखे, ओ संसारि हय, ओ ऐ उदासीनेर शिष्य हय, ताहाके हेबा अर्थात् दानकरे। एमत दान शास्त्रानुसारे सिद्ध वटे कि ना।—

२—स्थावरास्थावर वस्तुर विषये खयरात् अर्थात् उदासीन व्यक्तिर दान संसारि कोन नीच जातीर हस्ते शास्त्रानुसारे सिद्ध-वटे कि ना ?—

३—कोन उदासीन वैरागी, अर्थात् संसारत्यागी हइया विग्रह स्थापन करिया आखाडाधारी हइया थाके, ओ उदासीन संसारत्यागी चेला, अर्थात् शिष्यगण थाकनेओ यदि आपन स्थावरास्थावर समस्त विषय रजपूत जाति व्यक्तिके, ये से संसारि ओ स्त्री पुत्र राखे, एवं ऐ उदासीनेर शिष्य हय, एमते ताहाके हेवा अर्थात् दानकरे, तवे ताहा शास्त्रानुसारे सिद्ध वटे कि ना।—

४—यदि कोन व्यक्ति सक्त पीडित हइया सुन्दर ज्ञान चैतन्य

ना थाके एमत समये आपन सम्यक स्थावरास्थावर वस्तु अन्य-कोन व्यक्तिके देवा अर्थात दान करे ताहा शास्त्र सिद्ध वटे कि ना ?—

५—वैरागी उदासीन अर्थात् संसारत्यागी ओ व्रजभूमि निवाशी ओ अवश्य ब्राह्मण जाति हइवेक। ओ आखाडाते विग्रह स्थापन थाके कोन रजपूत, जाति ये से स्त्री पुत्र राखे, एवं संसारि हय, से व्यक्ति हइते शास्त्रानुसारे विग्रहठाकुरेर पूजा सेवा हइते पारे कि ना ?—

६—रजपूतजाति विग्रहठाकुर स्पर्श ओ पूजा करिते पारे कि ना ?—

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुमर्पिताङ्करेजीशब्दप्रतिपाद्यद्वात्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयाश्विन-मासीयतृतीयदिनलिखितप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदब्दीयतन्मासीयचतुर्थदिन-सम्बन्धिशनिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारे-णोत्तरं लिख्यते ॥

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि केनचिद् ब्राह्मणजातीयेनोदासीनेनाथवैराग्यधर्म्माचरणेन संसारत्यागिना देवप्रतिमां संस्थाप्योदासीनेष्वर्थात् संसारत्यागिषु वैरागिषु स्वकीयशिष्येषु विद्यमानेष्वपि स्वस्वत्वास्पदीभूतसमुदायधनं रजपूतजातीयाय-कस्मै कस्मैचित् स्त्रीपुत्रवते संसारिणे स्वकीयशिष्याय च दत्तं स्यात्तदैतादृश-दानं शास्त्रानुसारेण सिद्ध्यतीति—

अत्र प्रमाणम्—

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनम् ॥१॥

स्वभागान् यदि दद्युस्ते विक्रीणीयुरथापि वा ।

कुर्य्युर्य्यथेष्टं तत्सर्वमीशास्ते स्वधनस्य वै—इति दायभागादिग्रन्थ-धृतनारदवचनम् ॥२॥

दाने हि चेतनोद्देशविशिष्टात् त्यागादेव दातृव्यापारात् सम्प्रदानस्य द्रव्ये स्वामित्वम्—इति दायभागग्रन्थलिखनम् ॥३॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

स्थावरास्थावरधनस्वाम्युदासीनव्यक्तिविशेषकर्तृकसंसारिनीचजातिसम्प्रदानकदानं शास्त्रानुसारेण सिद्ध्यति शास्त्रे नीचजातिसम्प्रदानकदानस्य निषेधाभावात्—इति तृतीयप्रश्नस्योत्तरमपि प्रथमप्रश्नोत्तरेणैव पर्य्यवसन्नमिति पृथङ् न लिखितमिति—

अत्र प्रमाणानि प्रथमप्रश्नोत्तरप्रमाणानि त्रीण्येवेति—

चतुर्थप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि केनचिदतिपीडितेन सम्यग्ज्ञानचैतन्याभावदशायां स्वस्वत्वास्पदीभूतसमस्तस्थावरास्थावरधनमन्यस्मै कस्मैचिद्दत्तं स्यात्तत्र तद्दानं यदि धर्मार्थं कृतं स्यात्तदा सिद्ध्यति, तद्व्यतिरेकेण शास्त्रानुसारेण न सिद्ध्यति।

अत्र प्रमाणम्—

स्वस्थेनार्त्तेन वा दत्तं श्रावितं धर्मकारणात् ॥

अदत्त्वा तु मृते दाप्यस्तत्सुतो नात्र संशयः ॥—इति विवादभङ्गार्णवादिग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥१॥

अदत्तं तु भयक्रोधकामशोकरुगन्वितैः—इत्यादि विवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थधृतनारदवचनम् ॥२॥

अदत्तन्तु भयक्रोधकामशोकरुगन्वितैः इत्यत्र भयाद्याः पञ्च प्रकृतिस्थितिविरोधिनो द्रष्टव्याः—इति विवादभङ्गार्णवादिग्रन्थलिखनम् ॥३॥

पञ्चमप्रश्नस्योत्तरम्—

कश्चिद्वङ्गभूमिनिवासी ब्राह्मणजातीयो वैराग्यधर्माचरणेनोदासीनो भवति अर्थात् संसारत्यागी भवति। तस्याखाडासंज्ञकस्थाने देवप्रतिमायाः स्थापनं भवति। केनचित्संसारिणा स्त्रीपुत्रवता रजपूतजातीयेन शास्त्रानुसारेण देवप्रतिमायाः (सेवा पूजा च भवितुं न शक्नोति), ब्राह्मणद्वारा देवप्रतिमायाः पूजा सेवा च भवितुं शक्नोतीति॥

अत्र प्रमाणम्—

ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः शूद्रश्च पृथिवीपते।

स्वधर्मतत्परो विष्णुमाराधयति नान्यथा॥—इति विष्णुपुराणवचनम् ॥१॥

सर्व्ववर्णैस्तु संपूज्याः प्रतिमाः सर्व्वदेवताः—इति वराहपुराण-वचनम् ॥२॥

स्त्रीणामनुपनीतानां शूद्राणां च धनेश्वर ।
स्पर्शने नाधिकारोऽस्ति विष्णोर्वा शङ्करस्य च—इति स्कन्दपुराण-वचनम् ॥३॥

पञ्चप्रश्नस्योत्तरम्—

रजपूतजातीयेन देवप्रतिमास्पर्शः कर्त्तुं न शक्यते । देवप्रतिमापूजा तु स्वयं कर्त्तुं न शक्यते । किन्तु ब्राह्मणद्वारा पूजां कारयितुं[१] शक्यते—इति मन्वादिधर्मशास्त्रानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणानि पञ्चमप्रश्नोत्तरप्रमाणानि ज्ञेयेवेति ।

एतदब्दीयागस्तिमासीयषोडशदिनसम्बन्धिबृहस्पतिवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

३२१८ नं०

८—रोवकारि मिछिल सदर देओयाणि आदालत मोकाम कलिकाता आदालत मजकुरेर हाकिम श्रीयुत हेनरि सिक्सपीयेर साहेवेर वैठके । ओयाक्के तारिख ३० जुलाइ इङ्गरेजी सन १८३२ साल मोताबक वाङ्गला सन १२३९ साल १६ श्रावण रोज सोमवार ।—

पञ्चमलालसिंह ओ गन्धर्व्वलाल	आपीलाण्टान
शिवरामसिंह	रेस्पाडण्ट

आपीलाण्टानेर वकिल मुनशी होसेन आलि ओ रेस्पाडण्टेर वकिलान् मदासुख पण्डित ओ मुनशी गोलाम वतुल, इन्दर-

१ पूजा कर्तुं न—ख्या.

कोञारिर वकिल मुनशी बु आलि हाजिर आइल। एइ मोकद्दमा एइ मासेर २३।२४ तारिखे आमार बैठके दरपेष, आर तारिख मजकुराएर रोवकारिर लिखित मत प्रथम आदालतेर कागजात पडा हइया, मुलतवि छिल, अद्य पुनराय रोवकार आपीलेर मौजेवात ओ ताहार जओयाव एवं तत् समिभ्यारि अन्य २ कागजात एइ आदालतेर दाखिल हओया दुइ मोकद्दमार बावत अर्थात् एइ नम्बर ओ ३२२४ नम्बर, जाहाते एइ मोकद्दमा रेष्पाडएण्ट आपीलाण्ट ओ एइ मोकद्दमार आपीलाएटान् रेष्पा-डएटान् आछे, एइ मासेर १८ तारिखेर रोवकारि लिखित एइ आदालतेर हाकिम श्रीयुत रिचार्ड ओयालपुल साहेबेर राय सम्वलित अनुमोदने आइल। ये हेतुक एइ मोकद्दमार आपी-लाएटानेर ओजरात् निष्पत्येर जन्य आमार निकट एइ आदा-लतेर पण्डितेर पर छओयाल करा उचित हइल, एजन्य हुकुम हइल ये एइ रोवकारिर नकल निचेर तफशीलेर लिखित छओयाल सम्वलित एइ हुकुमे एइ आदालतेर पण्डितेर निकट पाठान जाय ये ऐ पण्डित ताहार विस्तारित जओयाब लिखेन। यद्यपि स्यात् खोसालसिंह परिवर्त्तीय दान, ये मत आपीलाएटान् जाहेर करियाछे, ताहा बाङ्गला सन १२१० साले आपन पुत्रगण जयराम ओ शिवराम दिगेर नामे लिखिया दिया थाके, आर तदनुजाइ जयराम आपन मृत्यु समय बाङ्गला सन १२१८ साल पर्य्यन्त ऐ वार वस्तुर पर दखिलकार थाके, एवं तस्य ओ मानकोञारि ताहार मृत्युर पर ऐ वस्तुते उत्तराधिकारि सुरते दखिलकार हय। एमते मानकोञारिर क्षेमता स्वामीर वस्तु हस्तान्तर करणेर विशये पूर्व्व व्यवस्थाते ये प्रकार लेखा गियाछे ताहार किछु परिवर्त्त ओ सुधरण हइते पारे कि ना इति॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतदर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतहेनरीसिकिसपीयरसाहेवधर्म्माधिकरण-लिखितैतद्न्दीयजुनाइमासीयत्रिशत्तमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूप-

पत्रं यदेतदब्दीयार्गस्तिमासीयत्रयोदशदिनसम्बन्धिसोमवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥—

यद्यपि खोशालसिंहेन वङ्गाख्याख्यदशाधिकद्वादशशताब्दे जयराम-शिवरामाख्यस्वपुत्रद्वयसम्प्रदानकमेतद्धर्माधिकरणार्थिभिर्निर्दिष्टं विनिमय-दानं कृतं स्यात्तदनुसारेण जयरामः स्वजीवनपर्य्यन्तमर्थाद्वङ्गलाख्याष्टादशा-धिकद्वादशशताब्दपर्य्यन्तं दानकृतधने स्वायत्तत्वं सम्पादितवान् स्यादेवं तस्य पत्नी मानकुमारी स्वपतिमरणानन्तरं पतित्यक्तधने उत्तराधिकारित्वेना-यत्तत्व सम्पादितवती स्यात्तदा मानकुमार्य्याः पतित्यक्तधनस्य हस्तान्तर-करणक्षमताविषये पूर्वव्यवस्थायां यथा लिखितमस्ति, तस्य किञ्चिदपि परावर्त्तनमन्यथा च न भविष्यति, यतो मानकुमार्य्याः पतित्यक्तधनस्य हस्ता-न्तरकरणक्षमताविषये पूर्वव्यवस्थायां यथा लिखितं तन्नैतत्प्रश्नलिखितवृत्ता-न्ते सत्यपि शास्त्रानुसारेण कश्चिद्विरोधो नास्ति इति वङ्गदेशप्रचलितदाय-भागदायतत्त्वदायभागटीकादायनिर्णयदायरहस्यनारदस्मृतिव्यवहारतत्त्वव्यव-स्थार्णवविवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था । अत्र प्र-माणान्येतद्विवादविषयनिविष्टाधमदत्तपूर्व्वव्यवस्थालिखितानि सर्वाण्येवेति ॥—

एतदब्दीयार्गस्तिमासीयषड्विंशतितमदिनसम्बन्धि सोमवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।—

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

९—गोवरकारि मिछिल सदर देओयानि आदालत मो० कलिकाता आदालत मजकुरेर हाकिम श्रीयुत हेनरि सिकिस पीयेर साहेबेर बैठके, ओयाक्ते तारिख २७ माह जून इं० सन १८३२ साल, मोताबक बाङ्गला १५ आषाढ सन १२३९ साल रोज बुधवार ॥—

दुर्ज्जनसिंह ओ अर्ज्जुनसिंह— आपीलाण्टान्
राउत गिरिधरसिंह ओ घनस्यामसिंह—
ओ चन्दरसिंह— रेस्पाण्डण्टान्

आपीलाण्टानेर उकिलान मुनशी होसन आलि ओ सदासुख पण्डित हाजिर आइल। जेला कानपुरेर मोतालक उभयेर मौरुशी वाइथ देहार मध्ये मौजे श्राउतपुर ओ गयरह एगारो मौजे हिस्या करिया पाओनेर मोकद्दमार वावते अन्य २ विषय सम्वलित ३५० टाका किम्मतेर दुइ वन्ध कागजे आपीलाण्टानेर सदर आपीलेर छओयाल वत् समिभ्यारि कागजात ओ शारटफिकिट सम्वलित अनुमोधन मते इ० सन १८२२ सालेर ५ जानेर तारिखे आपीलाण्टानेर नामे एतला-नामा जारिर हुकुम ये एइ मोकद्दमार तजविज एलाइचादेर सदर आदालते, चाहे आर यद्यपि स्यात् आदालत मजकुरे तजविज ना चाहे, तिन मास मध्ये मौजेवात दाखिल करण जन्य वेरेलिर क्रोटेर हाकिमानेर नामे छादेर हय। ताहार लओयावे क्रोट मजकुरेर ऐ सनेर ५ आपरेलेर लिखित रिटरण ओ रोवकारि एतलानामा जारि हओन ओ ताहा आपीलाण्टानेर हातोर रशीद लिखिया देओन ओ हाजिर हइया नाराजीर मौजेवात दाखिल करणेर ओयादा सम्वलित माह आपरेल मजकुरेर २६ तारिखे अनुमोधन हइया, तारिख मजकुरेर रोव-कारिर लिखित मत अन्य २ विषय सम्वलित शारटफिकिट ओ गयरह सेरेस्ताय राखनेर हुकुम छादेर हइया, तत्परे एइ मोकद्दमार तजविज एइ आदालते चाहनेर दुर्ज्जनसिंहेर छओयाल दरपेस मते दुर्ज्जन सिंह मजकुरेर गयेरहाजिरि सत्वे उक्त सनेर ३० माइ तारिखे हुकुम हय ये मुलतवि थाके। इ० सन १८३१ सालेर २७ जुनेर लिखित एलाका वेरेलिर प्रोविनसीयाल क्रोटेर फयछला आपीलाण्टानेर नाराजिर मौजेवात ओ उकीलान् मजकुरेर नामेर ओकालतनामा ओ

उकीलान् मजकुरानेर मेहन्यत्‌आनार बावत मवलगे ४०७॥≡) टाकार एइ आदालतेर तहविलदारेर दस्तखति उकिल खरचार रशीद ओ कुडि टाका किम्मतेर फिरिस्ति, फिरिस्तीर लिखित दश केता दस्तावेज सम्वलित यावा[१] एइ माह जुनेर २१ तारिखे दाखिल हइयाछिल, अद्य अनुमोघने आइल। तत परे आपीलाण्टानेर उकिलानेर मध्ये सदासुखपण्डित एइ मोकद्दमार वावतेर कोर्टेर फयछला दुइ टाका किम्मतेर फिरिस्ति सम्वलित अद्य दाखिल करिलेक। ज्ञातो हइया वोध हइल ये एइ मोकद्दमा प्रोविनसीयान् कोर्टेर प्रथम तजविज हओया सदर आपीलेर योग्य, एवं खरचार जामिनदारेर दस्तखतेर एकरार ओ ताहार मातवरिर तहकीकात जेला कानपुरेर जज साहेवेर द्वाराय जेला मजकुरेर नाजीरेर मारफत आमले आसियाछे, एवं उकिलेर मेहन्यतआना एइ आदालतेर तहविले दाखिल हइयाछे। एजन्य प्रकाश ये आपीलाण्टान् सदर आपीलेर शाम्यरू शराएत वजाय आनियाछे। ए प्रयुक्त हुकुम हइल ये आपीलाण्टानेर सदर आपील मञ्जूर एवं लम्वरे दाखिल हय। प्रविनशीयान कोर्टेर फयछलाते प्रकाश, ये जेला ओ कोर्टेर पण्डितगण ये तहारदिगेर स्थाने व्यवस्था तलव हइया पितार जीवद्दशाय पितामहेर स्थावर वस्तुर दाविर पुत्रेर क्षेमतार विशय विभिन्नता वाक्यसकल आछे। एजन्य हुकुम हइल ये कोर्टेर फयछला मौजेवात सम्वलित एइ आदालतेर पण्डितेर निकट एइ हुकुमे पाठान जाय ये ऐ पण्डित जेला कानपुरेर प्रचलित शास्त्रेर आग्रासकलेर अनुमोदने एइ विशयेर लओयाव व्यवस्था ये पितार जीवद्दशाय पितामहेर स्थावर वस्तुर अंश करिया लओनेर हकदार पुत्र हइते पारे कि ना- एक सप्ताह मध्ये दाखिल करेण इति ॥

---

१. यावा—इति सार्वीयान् पाठः।

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतहेनरीथिक्रिस्पीयरसाहेबधर्माधिकरणलिखितैतदब्दीयजुनमासीयपञ्चविंशतितमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितैतद्विवादविषयनिविष्टश्रीजुद्दावर्षञ्जकनिवेदनपत्रं फोटीपीलाख्यधर्म्माधिकरणीयजयपत्रञ्च यदेतदब्दीयजुलाइमासीयसप्तदशदिनसम्बन्धिसोमवासरे[1] मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥—

जीवति पितरि पैतामहस्थावरधनस्यांशं कृत्वा ग्रहणस्याधिकारी पुत्रो भवितुं न शक्नोति, जीवति पितरि पुत्राणां विभागकर्त्तृत्वाभावात् । यदि पिता स्वपैतृकधनस्य विभाग कृत्वा पुत्रेभ्यो ददाति तदा तद्ग्रहणस्याधिकारी पुत्रो भवितुं शक्नोति, जीवति पितरि पितुरेव विभागकर्त्तृत्वात्—इति कानपुरप्रदेशप्रचलितमनुमिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारमाधवव्यवहारकौस्तुभव्यवहारमयूखमिताक्षराटीकादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥

अत्र प्रमाणम्—

ऊर्द्ध्वं पितुश्च मातुश्च समेत्य भ्रातरः समम् ।

भजेरन् पैतृकमृक्थमनीशास्ते हि जीवतोः ॥—इति मनुवचनम् ॥१॥

विभजेरन् सुताः पित्रोरूर्द्ध्वमृक्थमृणं समम्—इति मिताक्षरावीरमित्रोदयादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥२॥

स्वातन्त्र्यार्हे पितरि जीवति तदिच्छ(यै)व विभागमिति तु[2]*पातित्यपारिव्राज्यादिभिस्तदनर्हे पुत्रेच्छ(या)पि । तदुपरमे तु स्वेच्छाया निमित्तत्वमर्थसिद्धमिति कालत्रयमेवानेन प्रकारेण*—इति वीरमित्रोदयादिग्रन्थलिखनम् ॥३॥

भ्रातॄणां जीवतोः *पित्रोः* सहवासो *विधीयते*—इति वीरमित्रोदयादिग्रन्थधृतव्यासवचनम् ॥४॥

जीवति *पितरि* पुत्राणामर्थादानविसर्गाक्षेपेषु न स्वातन्त्र्यम्—इति वीरमित्रोदयादिग्रन्थधृतहारीतवचनम् ॥५॥

---

१. सम्बति—व्यव० । २. तु—व्यव० ।

जीवद्विभागे पितुः स्वातन्त्र्याद् अजीवद्विभागे पुत्राणां स्वातन्त्र्यात्—इति वीरमित्रोदयग्रन्थलिखनञ्चेति ॥६॥

एतदब्दीयाश्विमासीयोनत्रिंशत्तमदिनसम्बन्धिबुधवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१०—रोयकारि मिछिल मोकाम कलिकातार सदर देओयानि आदालतेर हाकिम श्रीयुत आलकसुन्दरराछसाहेवेर घैठके हओार तारिख सन १८३२ सालेर ३ सेतम्वर मोताबेक सन १२३९ सालेर २० भाद्र सोमवार।

महाराजा गोविन्दचन्द्रराय	आपीलाएट
महाराणी कृष्णमणिदेव्या	रेस्पाडेएट

आपीलाएटेर उकिल सदासुकपण्डित हाजिर आइल। आपीलाएटेर अओल एक हाजार टाका मूल्लयेर कागजेर पर सदर आपील मञ्जुरिर प्रार्थनाय डिहिगञ्ज नाटोर ओ गायरह दखल पाइयार मोकद्दमाय मुयलगे आटानब्बे हाजार पाच शत एक टाका आट आना पाँच कडा टाकार तायदादे उकिल मञ्जुर ओ मुनशी होछेन आलीर नामेर एक केता ओकालतनामा सहित ओ ए आदालतेर तहविलदारेर दस्तखते उकिलेर मेहनतआनार बावत एक हाजार टाकार रशीद एक केता ओ ए आदालतेर खरचार जेठा हाओाली सहर कलिकातार मोतालक एदयने काशीपुर निवाशी जगमोहनमल्लिक ओ रामकुमार पालेर नामेर जामिनि एक केता ओ सन हालेर २७ जुलाइ तारिखेर प्रविनशील कोर्ट मुरशीदावादेर फयसलार नकल

एक केता सन हालेर २९ आगष्ट तारिखे दुइ टाका मूल्येर कागजेर फिरिस्तिर द्वाराय दाखिल हइयाछिल, अद्य दरपेष हइया पाठ करागेल। ताहार पर गोविन्दचन्द्ररायेर उकिल सन १२२० सालेर १६ अग्रहायनेर राणी कृष्णमणि रेष्पाण्डण्टेर नामेर महाराजा विश्वनाथराय मोतओफ्फार लिखिया देओ अनुमतिपत्रेर नकल एक केता ये ताहार निचे राणि कृष्णमणिर जओाव जोडा देओा आछे लम्बरे दाखिल करिलेक। दृष्टे आइल। यद्यपि आपीलाण्टेर सदर आपीलेर दरखास्ते हुकुम प्रकाश हओनेर पूर्व्वे ए आदालतेर पण्डितेर स्थाने व्यवस्था लओा उचित बोध हइल, ए कारण हुकुम हइल ये एइ मोकद्दमा लम्बरे दाखिल हइया एइ रोवकारिर नकल ■ आदालतेर फयछला हओा १७४८ लम्बरेर मोकद्दमाय दाखिल हओा अनुमतिपत्र सहित ए आदालतेर पण्डितेर हाओाला करा जाय एइ हुकुमे ये एइ रोवकारि पाओार दिवस हइते तिन दिवसेर मध्ये अनुमतिपत्रेर लिखित सरतसकल ओ मजमुन दृष्टे निम्नेर लिखित छओालसकलेर जओाब दाखिल करे इति।

प्रथम—एइ ये राणि कृष्णमणि आपन स्वामी महाराजा विश्वनाथराय मोतओफ्फार लिखिया देया अनुमतिपत्रानुसारे गोविन्दचन्द्ररायके आपन पुष्यपुत्रत्ते आनिया गोविन्दचन्द्रराय प्राप्तव्यवहारे पहुछाते ओ ताहार राजि व्यतित आपन जीवद्दशा पर्य्यन्त स्वामीर तेज्य विषयेर पर दखिलकार थाकिते पारे कि ना।

द्वितीय—एइ ये ऐ अनुमतिपत्रानुसारे महाराजा गोविन्दचन्द्ररायके पुष्यपुत्र लओार पर राणि कृष्णमणिके एदयतो एइ विषयेर ये कोन हेतु द्वाराय गोविन्दचन्द्ररायके त्याग करिया दोसरा व्यक्तिके पुष्यपुत्र करोर क्षमता आछे किना इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतमलकसुन्दररायसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितैतद्दन्दीयतृतीयदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्सम-र्पितैतद्धर्म्माधिकरणनिष्पन्नाष्टचत्वारिंशदधिकसप्तदशशताद्धाङ्कितविवादविषयनिविष्टानुमतिपत्रञ्च यत्तद्दन्दीयतन्मासीयचतुर्दिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

राज्ञी कृष्णमणी मृतमहाराजविश्वनाथरायाभिधेयस्वपतिलिखितानुमतिपत्रानुसारेण गोविन्दचन्द्ररायाभिधेयं स्वक्रीतदत्तकपुत्रत्वमानीय गोविन्दचन्द्ररायस्य प्राप्तव्यवहारतायामपि तदनुमतिमन्तरेण स्वजीवनपर्य्यन्तं स्वपतित्यक्तधने ग्रायत्तत्वं शास्त्रानुसारेण स्वामित्वेन सम्पादयितु[1] न शक्नोति पतिकृतदत्तकपुत्रग्रहणानुमत्या पतिमरणानन्तरं गृहीतदत्तकपुत्रत्वेन तत्पतित्यक्तसमुदायधने शास्त्रानुसारेण पुत्रत्वेन स्वत्वोत्पादेन राज्याः कृष्णमण्यभिधानायाः पतित्यक्तधने पत्नीत्वेन स्वत्वोत्पत्तेः प्रतिबद्धत्वात् । यद्यप्यनुमतिपत्रे महाराजविश्वनाथरायेण स्वपत्नीं राज्ञीं कृष्णमणीं प्रति लिखितमस्ति "ग्रस्मन्मरणानन्तरं त्वं दत्तकपुत्रं रक्षित्वा सकलविषयस्य कर्त्री भूत्वास्मत्कृते ईश्वरविग्रहाणां सेवां कुरुत्वावशिष्टे ये द्वे मम पत्न्यौ[2] तयोर्जीवनावधि ग्रासाच्छादनं त्वया देयमिति" तथाप्यनेन पदद्वयमत्या पतिमरणानन्तरं गृहीतदत्तकपुत्रस्य शास्त्रानुसारेण पितृत्यक्तसमुदायधनस्वामिनः प्राप्तव्यवहारतायामपि तद्विमत्यापि स्वामित्वेन राज्ञी कृष्णमणी स्वजीवनपर्य्यन्तं पतित्यक्तधने भोक्त्री स्यादयतीत्यनवगमादिति ।—

अत्र प्रमाणम्—

अनपत्यस्य धनं पत्न्यभिगामि, तदभावे दुहितृगामि—इत्यादि दायभागादिग्रन्थधृतविष्णुवचनम् ॥ १ ॥

तत्र प्रथमं पुत्रस्तदभावे पौत्रस्तदभावे प्रपौत्रः इति प्रपौत्रपर्यन्ताभावे पत्नीति च तदभावे दुहिता—इति च दायभागटीकादायकमसंग्रहादिग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

१. सम्पादितु—व्यप०

२. पत्नी—व्यप० ।

सर्व्वे ह्यनौरसास्येते पुत्रा दायहराः स्मृताः—इति दायभागादिग्रन्थ-धृतदेवलवचनञ्चेति ॥ २ ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रमुत्पप्रतिनानुमतिपत्रानुसारेण महाराजगोविन्दचन्द्ररायस्य दत्तक-पुत्रत्वेन ग्रहणानन्तरं राज्याः कृष्णामय्यभिधानाया इदानीं केनचिद्धेतुना गोविन्दचन्द्ररायस्य त्यागं कृत्वा द्वितीयस्य दत्तकपुत्रत्वेन ग्रहणस्य क्षमता नास्ति, शास्त्रानुसारेण गृहीतैकदत्तकपुत्रस्य पितृत्यक्तधनदायधने पुत्रत्वेन स्वत्वोत्पादात् । यद्यप्यनुमतिपत्रे महाराजविश्वनाथरायेण स्वपत्नीं राज्ञीं कृष्णमय्यीं प्रति लिखितमस्ति "अस्मन्मरणानन्तरं त्वमेकस्याधिकस्य वा सत्सन्तानस्य दत्तकपुत्रत्वेन ग्रहणं करिष्यसीति"—अनेन राज्याः कृष्णमय्य-भिधानायाः दत्तकपुत्रैकमरणानन्तरं तस्मिन् विद्यमाने सति तत्त्यागं कृत्वा द्वितीयदत्तकपुत्रग्रहणक्षमताया अनवगमात्—इति यद्गदेशप्रचलितदाय-भागदायतत्त्वदायभागटीकादायक्रमसंग्रहविवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्र-न्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणानि—

प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितानि ज्ञेयेयेति ॥ ३ ॥

एतदब्दीयसिताम्बरमासीयदशमदिनधम्मनिषद्योपवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

११—सर्व्वगुण उपमायोग्य श्रीयुत राजनारायण विद्याभूषण पण्डित आदालते देओनि जेला हुगलि अवगतेषु ॥—

सन १८३२ साल तारिख ७ आपरेल ।—

१३ लम्बरेर कैः कालिदासगङ्गोपाध्याय दीः—

छानि दजविज आः प्रेमचन्द्रचौधारी दीः—

সশ্রোয়াল ধর্ম্মদাসচৌধুরি ও গুরুদাসচৌধুরি-দুই সহোদর একান্ন বর্ত্তিতে থাকিয়া, পৈতৃক স্থাবর বস্তু প্রভৃতি ভোগ করিয়া, তাহার মধ্যে জ্যেষ্ঠ, ঐ ধর্ম্মদাস আপনার দুই পুত্র, বদন চন্দ্র ও প্রেমচন্দ্রচৌধুরি, আর ভ্রাতা ঐ গুরুদাসচৌধুরি ও আপন মাতা সুন্দরিদেব্যার সমিত্তে লোকান্ত হয়। তদন্তরে ঐ গুরুদাস মজকুর আপনার ঐ ভ্রাতষ্পুত্রদিগের সহিত ঐ ব দস্তুরে একান্নবর্ত্তি থাকিয়া কিছু কাল পরে আপনার মাতা আর ঐ দুই ভ্রাতষ্পুত্র ও আপন প্রথম সংসারের বনিতার গর্ভজাত বৈকুণ্ঠনাথ নামে এক পুত্র ও অদত্তা তিন কন্যা ও দ্বিতীয় সংসারের সন্তান সন্ততি বিহিন বনিতা গোবিন্দমণিদেবীকে রাখিয়া লোকান্ত হইলে। ঐ গুরুদাসের পুত্র বৈকুণ্ঠনাথ আপনার জ্যেষ্ঠতাত-পুত্র ঐ বদনচন্দ্র ও প্রেমচন্দ্রচৌধরির সহিত একান্নবর্ত্তি এজমালে থাকিয়া আন্দাজ ৭ বৎসর বয়ক্রমে আপনার পিতামহি ঐ সুন্দরি দেব্যা আর অদত্তা তিন ভগ্নি ও অবীরা বিমাতার সমিত্তে মৃত্যু হয়। পরে ঐ বৈকুণ্ঠনাথের অবিরা বিমাতা ও তিন অদত্তা ভগ্নি ও পিতমহী সুন্দরীদেব্যা ও জ্যেষ্ঠতাতের পুত্র বদনচন্দ্র ও প্রেমচন্দ্র সহিত একান্নযুক্ত থাকিয়া বৈকুণ্ঠনাথের তিন ভগ্নির বিবাহ হইয়া, দুই ভগ্নির পুত্র হইলে ও এক ভগ্নি পুত্রসম্ভাবিতা রাখিয়া, বৈকুণ্ঠনাথের পিতামহীর মৃত্যু হয়। তদন্তরে কিছু কাল বাদে বৈকুণ্ঠনাথের বিমাতা গোবিন্দমণীর মৃত্যু হয়। ঐ বৈকুণ্ঠনাথের দুই ভগিনি, ও তাহার পুত্রগণ ও এক ভগিনি পুত্রসম্ভাবিতা ও বৈকুণ্ঠনাথের জ্যেষ্ঠতাতের পুত্র বদনচন্দ্র ও প্রেমচন্দ্র চৌধুরি বর্ত্তমান আছে। অতএব বঙ্গদেশ চলিত শাস্ত্রানুসারে ঐ গুরুদাসের বস্তুর যোগ্য অংশ গুরুদাস মৃত্যু পরে তাহার পুত্র বৈকুণ্ঠনাথকে পৌঁছিয়া ছিল কি না। যদি পৌঁছিয়া থাকে তবে বৈকুণ্ঠনাথের মৃত্যু হইলে ঐ বস্তু বৈকুণ্ঠনাথের পিতামহীকে পৌঁছিয়া ছিল কি না। যদি পৌঁছিয়া থাকে তবে পিতামহী সুন্দরী দেবী মৃত্যু হইলে উপরের লিখিত ব্যক্তিদিগের মধ্যে কে পাইতে পারে-

इहार व्यवस्था एइ सद्योलेर पासे लिखिया ५ रोज मध्ये पाठाइवेन ॥—

एतत्प्रश्नानुसारेण मृतस्य गुरुदासस्य योग्यांशप्राप्तधने वैकुण्ठनाथोऽधिकार्य्यभूत्। पितामहपर्य्यन्तरहिते तस्मिन् मृते पितामही सुन्दरीदेव्यधिकारिण्यभूत्। तस्यां मृतायां वैकुण्ठनाथस्य पितृभ्रातृपुत्रौ वदनचन्द्रप्रेमचन्द्रौ लब्धुं न शक्नुयाताम्, किन्तु वैकुण्ठनाथस्य पितृदौहित्राः प्राप्तुं शक्नुयुरिति विदुषां परामर्शः ॥—

एइ सद्योयाल अनुसारेते गुरुदास मरिले ताहार योग्यांश वस्तुते वैकुण्ठनाथ अधिकारी हइया छिलो। पितामह पर्य्यन्त रहित सेइ वैकुण्ठनाथ मरिले पितामही सुन्दरीदेवी अधिकारिणी हइयाछिलो। सुन्दरीदेवी मरिले पर वैकुण्ठनाथेर पुत्र वदनचन्द्र ओ प्रेमचन्द्र पाइते पारे ना, किन्तु वैकुण्ठनाथेर पितृदौहित्रेरा पाइते पारे—एइ पण्डितदेर युक्ति ॥—

धर्म्मरत्नदायभागादिषु ग्रन्थेष्वत्र प्रमाणम्

यथा गौतमः—*स्वामी ऋक्थक्रयविक्रयसंविभागपरिग्रहाधिगमेषु*—इत्यादि ॥

यथा मनुः—*ऊर्द्ध्वं पितुश्च मातुश्च समेत्य भ्रातरः समम्।*
भजेरन् पैतृकमृक्थमनीशास्ते हि जीवतोः—इत्यादि ॥

यथा मनुः—*अनपत्यस्य पुत्रस्य माता दायमवाप्नुयात्।*
मातर्य्यपि च वृत्तायां पितुर्माता हरेद्धनम् ॥

यथा याज्ञवल्क्यः—*पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा।*
तत्सुता गोत्रजः—इत्यादि ॥

धर्म्मरत्ने यथा—*दौहित्रोऽपि ह्यमुत्रैनं सन्तारयति पौत्रवत्*—इत्यादि।

सन १८३२ साल ता० २० आपरेल।

श्रीराजनारायणविद्याभूषणपण्डित ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्र व्यवस्थापत्रं विचारपत्रञ्च यदेतदब्दीयसितम्बरमासीयत्रयोदशदिनसम्बन्धिबृहस्पतिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेण निवेदनं क्रियते ॥—

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रलिखितवृत्तान्ते सति तत्प्रश्नोत्तरव्यवस्थायां मृतस्य गुरुदासस्य योग्यांशे तत्पुत्रो वैकुण्ठनाथोऽधिकार्यभूदिति हुगलीजिलास्थधर्म्माधिकरणनियुक्तविद्यमानपण्डितेन यल्लिखितं तत्सत्यमेव, किन्तु पितामहपर्य्यन्तरहिते तस्मिन् मृते तत्पितामही सुन्दरीदेव्यधिकारिण्यभूदिति यल्लिखितं तद्व्यवस्थायां तन्न सत्यम्, वैकुण्ठनाथस्य भगिनीषु[1] विद्यमानासु तासां पुत्रसम्भावनायां सत्यां वैकुण्ठनाथस्य पितामह्याः सुन्दरीदेव्यास्तत्पितृदौहित्रानन्तरमधिकारिणस्तत्पितामहादप्यनन्तरमधिकारित्वात् यास्तथाधिकारस्य[2] अशास्त्रीयत्वात्, एवं वैकुण्ठनाथस्य पितृभ्रातृपुत्रौ मदनचन्द्रप्रेमचन्द्रौ लब्धुं न शक्नुयाताम्, किन्तु वैकुण्ठनाथस्य पितृदौहित्राः प्राप्तुं शक्नुयुरिति यल्लिखितं तद्व्यवस्थायां तत् सत्यमेव। गुरुदासस्य मरणानन्तरं तद्योग्यांशे तत्पुत्रस्य वैकुण्ठनाथस्याधिकारे जाते सति तद्धन वैकुण्ठनाथस्यैव जातम्। अतस्तस्मिन् पुत्रपौत्रप्रपौत्रपत्नीदुहितृदौहित्रपितृमातृभ्रातृभ्रातृपुत्रभ्रातृपौत्रपर्य्यन्तरहिते मृते सति तत्त्यक्तधने विद्यमानेषु वैकुण्ठनाथस्य पितृदौहित्रेषु तत्पितृव्यपुत्राणामधिकारस्याशास्त्रीयत्वात्—इति वङ्गदेशचलितदायभागदायतत्त्वदायभागटीकादायक्रमसंग्रहविवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारेण निवेदनमिति ॥—

एतदब्दीयनवम्बरमासीयचतुर्द्दशदिनसम्बन्धिबुधवासरे मयेदं निवेदनं कृतमिति ॥

श्रीर्ज्जयतिराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१२—रोवकारि मिशिल सदर देवोयानि आदालत मो० कलिकाता ई० सन० १८३२ साल तारिख १३ शेतम्बर मोताबेक

---

१. भगिनीषु—स्या०। २. यास्तवमधिकारस्य—स्या०।

३० भाद्र सन १२३९ साल रोज वृहस्पतिवार ये आदालतेर हाकिम श्रीयुत नाशानापल जान हालहेड साहेबेर बैठके ॥—

अनङ्गमञ्जरि—	आपीलाण्ट
फकिरचन्द्रसरकार—	रेष्पाडण्ट

एइ मोकद्दमा वर्त्तमानमासेर १० तारिखे उभयेर उकिलेर मोका-बिलाय रोयकार हइया याजे २ कागजात सुनानि हइया दिवावसान प्रयुक्त स्थगित छिल, अद्य पुनराय आपीलाण्टेर उकिल मुनशीदादार बक्स ओ रेष्पाडण्टेर उकिल सदासुखपण्डितेर मोकाबिलाय दरपेष हइया जिला आदालतेर ओ एइ आदालतेर कागजात मोनाहेजाय आशील। हुकुम हइल-ये एइ आदालतेर पण्डितेर स्थाने एइ विषयेर व्यवस्था तलब करा जाय-ये यदि कोनो व्यक्ति पोष्यपुत्र लय तवे ऐ पोष्यपुत्र राखन विषये शास्त्रानुसारे आपन स्त्रीर स्वीकार आवश्यक बटे कि ना, ओ पोष्यपुत्र लओनेर विषय कि नियम आचरण आवश्यक। प्रथम—एइ ये सपिण्डक अर्थात् ज्ञातिवर्गके समाचार दिया एकत्र करा आवश्यक॥ द्वितीय—राजाके ज्ञात करा॥ तृतीय-यज्ञ करा॥ ए मकद्दमार भावे बोध हइल ये पोष्यपुत्र लओन कालिन किवल यज्ञ हइयाछे। प्रथम ओ द्वितीय नियम आमले आइसे नाइ। अतएव एइ विशये एइ मत पोष्यपुत्रता सिद्ध हय कि ना इति॥—

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतनाशानापलजानहालहेडसाहेबधर्माधिकरणलिखितैतदन्तर्गतस्वरमासीयत्रयोदशदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदन्दीयतन्मासीयपञ्चदशदिनसम्बन्धिपञ्चशिखाधरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते॥—

यदि कश्चिद् व्यक्तिविशेषः पोष्यपुत्रं गृह्णाति तदा तत्पोष्यपुत्रग्रहणविषये स्वपत्न्याः स्वीकारः शास्त्रानुसारेण वास्तवमावश्यको न भवति, जायापत्योर्मध्ये प्रधानीभूतेन पत्या पोष्यपुत्रग्रहणेनैव पतिपरतन्त्राया जायाया अपि तस्मिन् पोष्यपुत्रत्वेनेच्छेः शास्त्रीयत्वात्, पत्नीस्वीकारं विना पत्युः पोष्यपुत्रग्रहणस्य शास्त्रनिषिद्धत्वाभावाच्च। एवं पोष्यपुत्रग्रहण-

विषये ये त्रयो नियमाः प्रश्नपत्रे आवश्यकत्वेन लिखिताः अर्थात् सपिण्डाह्वान-राजनिवेदन-यज्ञास्तेषाम्मध्ये एतद्विवादे यदि पोष्यपुत्रग्रहणसमये केवल यज्ञभवनमेवावगम्यमानं स्यात्तदा प्रथमद्वितीयनियमयोरर्थात् सपिण्डाह्वान-राजनिवेदनयोरनिष्पन्नत्वेऽप्येतादृशं पोष्यपुत्रत्वं सिद्ध्यति, पोष्यपुत्रग्रहणविषये सपिण्डाह्वान-राजनिवेदनयोः केवल दृढतरसाक्षित्वेनोपयोगित्वेन प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रलिखितेनैतद्विवादे पोष्यपुत्रग्रहणसमये केवलं यज्ञ एव जात इत्यनेन यज्ञकरणपूर्वकपोष्यपुत्रग्रहणस्य निश्चितत्वेन सपिण्डाह्वानराजनिवेदनयोः प्रयोजनस्यार्थसिद्धत्वात्—इति दत्तकमीमांसा-दत्तकचन्द्रिकादत्तकदीधितिदत्तकनिर्णयदत्तकदर्पणविवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—॥

अत्र प्रमाणम्—

अपुत्रेण सुतः कार्यो यादृक् तादृक्[1] प्रयत्नतः ।
पिण्डोदकक्रियाहेतोर्नामसंकीर्तनस्य च ॥—इति दत्तकमीमांसा-दत्तकचन्द्रिकादिग्रन्थधृतमनुवचनम् ॥१॥

भर्तुः प्राधान्यात्तत्परिग्रहेणैव स्त्रिया अपि तस्मिन् पुत्रत्वसिद्धिः भर्तृपरिगृहीतवस्त्वन्तरस्वत्ववत्—इति दत्तकमीमांसाग्रन्थलिखनम् ॥२॥

मधुपर्केण सपूज्य राजानञ्च द्विजान् शुचीन् ।

राजात्र ग्रामस्वामी । बन्धूनाहूय सर्वांस्तु ग्रामस्वामिनमेव चेति वृद्ध[3]-गौतमस्मरणात्—इति दत्तकमीमांसादि (दमी॰ पृ॰ ९६) ग्रन्थलिखनम् ॥३॥

बान्धवाद्याह्वानं दृष्टार्थं राजाह्वानवत्—इति दत्तकमीमांसादि (दमी॰ पृ॰ ९७) ग्रन्थलिखनम् ॥४॥

पुत्रं प्रतिग्रहीष्यन् इत्यादेः स्वबन्धूनाहूय इत्यर्थः । एतेन स्वबन्धुभिर्ज्ञातः पुत्रो दायं ग्रहीष्यति, श्राद्धादिकञ्च करिष्यति, बान्धवाश्च तं न विवादयिष्यन्तीति सूचनार्थम् । राजनिवेदनं चाप्येतदर्थमेव—इति विवाद-भङ्गार्णव(२ विवा॰ १०३ ख)ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥५॥

---

१. पौत्र॰—व्यव॰ । २. तादृक—व्यव॰ ।
३. वृद्धगौतम इति दमी॰ पुस्तके पाठः ।

एतदब्दीयनवम्बरमासीयसप्तदशदिनसम्बन्धिशनिवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

———

१३—रोवकारि मिछिल सदर देओयानी आदालत मोकाम कलिकाता आदालत मजकुरेर हाकिम श्रीयुत हेनरि सिकिस् पीयेर साहेबेर बैठके ओयाक्के तारिख ९ सेतम्बर इ० सन १८३२ साल मोताबक बाङ्गला सन १२३९ साल तारिख २२ भाद्र रोज बुधवार ॥ —

मोछम्मात वेबुधामन— छापला—

छापलार उकिल मुनशी अलिवक्स हाजिर आइल। छायेलार दरखास्त सन हालेर २१ जुलाइ तारिखेर जेला वेहारेर जज साहेबेर हुकुमेर नाराजीते ये आपन भातार वर्त्तमाने उहार स्वामीर अपुत्रक मृत्यु हओन सरवे मोछम्मात मुद्दा मोतओफीर दौहित्रगण राधा ओ गोवर्द्धनेर मोतओफा मजकुरार सहित ओयारिस साबुद हओया ओ छायेलार ओयारिस साब्यद ना हओयार विराये छादेर हइयाछे। शास्त्रानुनाइ मोतओफी मजकुरार सहित आपन ओयारिस शास्त्रादर हुकुम छादेर हओनेर प्रार्थनाय उकिल मजकुरेर नामेर ओकालतनामा ओ लाला सुवंशलाल मोक्तारकारेर नामेर मोक्तारनामा ओ तारिख मजकुरेर जेला मजकुरेर आदालतेर रोवकारिर नकल एक केता ओ इ० सन १८०३ साले १९ अक्तुबरेर लिखित एलाका आजिमाबादेर आपीलेर रोयकारिर नकल एक केता, ओ इ० सन १८१६ सालेर १९ अक्तुबर तारिखेर जेला मजकुरेर डिगरिर नकल सम्वलित जाद्दा सन हालेर २७ अगष्ट तारिखे दाखिल हइयाछिल, अद्य

-अनुमोधने आइल। हुकुम हइल ये एइ रोवकारिर नकल एवं -छओयाल ओ तत्समभिव्यारि कागजात सम्वलित एइ हुकुमे एइ आदालतेर पण्डितेर निकट पाठान जाय ये कागजात अनुमोदन परे एइ विषयेर जओयाव ये जेला वेहारेर जज साहेवेर हुकुम तद्देशीय प्रचलित शास्त्रानुजाइ बटे कि ना लिखेन इति ॥—

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतहेनरीसिङ्किसूवीयरसाहेवधर्म्माधिकरण-लिखितैतदब्दीयसितम्बरमासीयपञ्चमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूप-पत्रमेवं तत्समर्पितैतद्विवादविषयनिविष्टपत्रजातं च यत्तदब्दीयतन्मासीयैक-विंशतितमदिनसम्बन्धिबुधवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥—

वेहारदेशीयजिलाख्यावान्तरधर्म्माधिकरणाधिपतिकृताज्ञा तद्देशप्रच-लितशास्त्रानुसारिणी न जातास्ति। प्रभुसमर्पितपत्रजातैर्विशेषतो ऽङ्गरेजी-शब्दप्रतिपाद्यषोडशाधिकाष्टादशशताब्दीयाक्तुवरमासीयत्रयोदशदिवसीयवे-हारदेशीयजिलाख्यावान्तरधर्म्माधिकरणीयजयपत्रप्रतिरूपपत्रेण तल्लिखितध-र्म्माधिकरणनियुक्तपण्डितसम्बन्धिप्रश्नोत्तराभ्यां विवादास्पदीभूतधनमेतद्ध-र्म्माधिकरणार्थिन्या वेचूधामिन्याः श्वशुरस्य फतेहधामिन आसीत्, तन्म-रणानन्तरं तत्पुत्रेण फकूधामिना अर्थादर्थिन्या वेचूधामिन्याः पत्या पुत्रत्वेन प्राप्तमिति ज्ञातम्। अतस्तद्धनं फतेहधामिनः पुत्रस्य फकूधामिन एव जातम्। अतस्तन्मरणोत्तरं तदुत्तराधिकारिणामेव तत्राधिकारः। तदुत्तराधिका-रिणाम्मध्ये तस्य पुत्रपौत्रप्रपौत्राभावे तत्पत्न्या अर्थिन्या वेचूधामिन्या एव प्रधानाधिकारित्वात्, वेचूधामिन्यामर्थिन्यां विद्यमानायामन्येषान्नाधिकारः, मातरि विद्यमानायामनपत्यस्य कस्यचिन्मरणेन तत्पत्न्याः पुत्रपौत्रप्रपौत्रा-भावे सति प्रधानाधिकारिण्या अधिकारो न भवतीत्येतद्विधायकशास्त्राभा-वात्-इति वेहारदेशप्रचलितमिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारमयूखव्यवहार-माधवव्यवहारकौस्तुभादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः—इत्यादि मिताक्षरावीरमित्रोदयादिग्रन्थ-धृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥ १ ॥

पुत्राः पौत्राश्च दायं गृह्णन्ति तदभावे पत्न्यादयः—इति मिताक्षरा-ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥ २ ॥

एतदब्दीयनवम्बरमासीयैकविंशतितमदिनसम्बन्धिबुधवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

३३२५ नं—

१४—रोवकारि मिछिल सदर देओयानि आदालत मोकाम कोलिकाता आदालत मजकुरेर हाकिम श्रीयुत हेनरि सिकिशं-पियेर साहेबेर बैठके ओयार्के तारिख १० शेतम्बर इ० सन १८३२ साल मोताबक २७ भाद्र सन १२३९ साल बाङ्गला रोज सोमबार ॥

गोसाब्बीचन्द्रकविराज आपीलाण्ट

मोकाम्मीत जयमनि ओ कृष्णमणि मोतओफी—रेस्पाडण्टान

आपीलाण्टेर उकिल मुनसि हयदर आलि ओ रेस्पाडण्टानेर मध्ये जयमनीर उकिल मुनसि गोलाम बतुल हाजिर आइल, एवं इस्तहारनामा जारि हओयाते ओ कृष्णमनीर मोतओफीर तरफेर कोन ओयारिष ए आदालते हाजिर आइल ना। एइ मोकद्दमा सेरेस्तादारेर कैफियत मते आमार बैठके दरपेष हइया प्रथम आदालत जेला बिरभूमेर कागजात ओ द्वितीय आदालत मुर-शिदाबादेर कोर्टेर कागजात एवं ए आदालते दाखिल हओया खास आपीलेर छओयाल जाहा, आपिलाण्ट मोजेबात करार देय,

ও তাহার জওয়াব সেও যায় সাক্ষিদিগের জোবানবন্দি অনুমোধনে আইল। জয়মনীর বকীল মুনসি গোলাম রসুলের প্রতি হুকুম হইল—যে তুমি এই আদালতের দাখিল করা আপন জওয়াবে লিখিয়াছ—যে কৃষ্ণমনী আপন মৃত্যুকালিন মাতবর, মনিষ্যদিগের সাক্ষাতে আপন হিস্যার বস্তুতে বড়াকে হকদার করিয়াছে, এ প্রযুক্ত জিজ্ঞাসা করা যাইতেছে—যে লিখিত পঠিতের দ্বারায় কি অন্য কোন প্রকারে। আরজ করিলেক—যে আমার মোক্কেলের জওয়াবেতে এ বিষয় স্পষ্ট প্রকাশ নাই। যে হেতুক এই মোকর্দ্দমার আপীল শাস্ত্রের বিষয়সকল অধিক তহকিকাতের দৃষ্টে মঞ্জুর হইয়াছে তাহার দৃষ্টে হুকুম হইল জে এই মোকর্দ্দমার কাগজসকল এই আদালতের পণ্ডিতের নিকট এই হেতুতে পাঠান যায় যে উভয়ের দাখিল করা কুরশীনামাসকল ও জেলার আদালতের পণ্ডিতের ব্যবস্থা ও এই আদালতের পণ্ডিতগণের খাস আপীল মঞ্জুর কালিন দাখিলকরা ব্যবস্থা অনুমোধনে নিচের লিখিত ছওয়ালসকলের জওয়াব লিখেন॥

১—প্রথম—এই যে ১৮৯৬ সাল বয়ক্রমের সময় মৃত্যুর এক দিবস পূর্ব্বে ভৈরবের জোবানি কৃত হেবা প্রামাণ্য হয় কি না॥

২—দ্বিতীয়—যদাপি স্যাৎ তাহার প্রামাণ্য না হয়, তবে উভয় বিবাদির মধ্যে কোন ব্যক্তি ভৈরবের উত্তরাধিকারি মতে হক রাখে।

৩—তৃতীয়—যদাপি স্যাৎ খাস আপীল মঞ্জুরির সময়ে এই আদালতের দাখিল হওয়া ব্যবস্থার দ্বারায় প্রকাশ যে সাবেক মুদ্দইআনের মধ্যে এক জন কৃষ্ণমনী পুত্রবতী হওনের বড়খের পীবার হিস্যায় হকদার ছিল। এই ক্ষনে প্রকাশ যে কৃষ্ণমনি ও তাহার স্বামি দুয়েরি মৃত্যু হইয়াছে। এ প্রযুক্ত কৃষ্ণমনী মজকুরার ক্ষেমতা ছিল কি না—যে আপন হিস্যা জয়মনীকে যে প্রকার এই আদালতের জওয়াবে লেখে সমর্পন করে, আর তাহার অন্যথায় মোদ্দমাত মজকুরার ওয়ারিশ কোন ব্যক্তি হইবেক, এবং সেরেস্তাদার

एइ विशयेर कैफियत ये एइ मोकद्दमा इ० सन १८२२ साले मञ्जुर हय, परे कि जन्य मुद्दत दश वत्सर पर्यन्त मुलतवि थाकिल—दाखिल कारण इति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुक्तहेनरीस्मिथ्पीयरसाहेबधर्माधिकरणलिखितैतदब्दीयसितम्बरमासीयदशमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितैतद्विवादविषयनिविष्टपत्रजातमर्थिनिविष्टानि प्रत्यर्थिनिविष्टानि च वंशावलीपत्राण्येवं जिलाख्यावान्तरधर्माधिकरणनियुक्तपण्डितलिखितव्यवस्थापत्रमेतद्धर्माधिकरणनियुक्तपण्डिताभ्यां लिखितमेतद्विवादस्यैतद्धर्माधिकरणविवेचनायोग्यत्वनिश्चयकालिकमर्थाद्भावार्थं खारिज-अपीलमञ्जूरशब्दप्रतिपाद्यकालिकव्यवस्थापत्रं च यदेतदब्दीयाक्तूबरमासीयत्रिंशत्तमदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

पञ्चमासाधिकाष्टादशवर्षवयस्केन[1] भैरवेण स्वमृत्योरेकदिवसपूर्व्वं यद्दानं वाचा कृतं तत् सिद्ध्यति प्रमुखसमर्पितपत्रजातैर्विशेषतो वीरभूमिप्रदेशीयजिलाख्यावान्तरधर्माधिकरणनियुक्तपण्डितसम्बन्धिप्रश्नोत्तराभ्यां प्राप्तव्यवहारेण प्रकृतिस्थेन च भैरवेण स्वस्वत्वास्पदीभूतधनस्य दानं कृतमित्यवगमेनैतादृशदानसिद्धौ बाधकप्रमाणाभावादिति ।

द्वितीयप्रश्नोत्तरमप्यर्थादनेन पर्यवसन्नमिति पृथङ् न लिखितमिति ।

अत्र प्रमाणम्—

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनम् ॥ १ ॥

दाने हि चेतनोद्देशविशिष्टात् त्यागादेव दातृव्यापारात् सम्प्रदानस्य द्रव्ये स्वामित्वम्—इति दायभागग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

अदत्तं तु भयक्रोधकामशोकरुगन्वितैः—इत्यादि विवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थधृतनारदवचनम् ॥ ३ ॥

---

१. पञ्चमासाधिकाष्टादशवर्षवयस्केन—व्य० ।

भयादिरुगन्ताः[1] *पञ्च प्रकृतिस्थितिविरोधिनो द्रष्टव्याः*— इति विवादभङ्गार्णवादिग्रन्थलिखनम् ॥ ४ ॥

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्यप्यर्थिनीनामयॊदेतद्धर्माधिकरणप्रत्यर्थिनीनां मध्ये कृष्णमण्याः पुत्रसम्भावनायां सत्यां पितृव्यकधनस्योत्तराधिकारित्वेनाधिकारे जाते सति कृष्णमण्याः स्वसंक्रान्तपितृव्यकधनस्य जयमणीमुद्दिश्य यथैतद्धर्माधिकरणोत्तरपत्रे जयमण्या लिखित तादृशसमर्पणस्य क्षमता पितृकृतर्णापाकरणाद्यावश्यककार्य्यार्थं तत्तत्कार्य्ये प्रयुक्तस्यासीत्, तद्व्यतिरेकेण स्वेच्छया स्वाभिप्रायेण च नासीत् । यदि च कृष्णमण्या तद्धनं दानानुसारेण प्राप्तं यद् वीरभूमिप्रदेशीयजिलाख्यावान्तरधर्माधिकरणनियुक्तपण्डितसंबन्धितृतीयप्रश्नोत्तराभ्यां कृष्णमणीजयमण्युभयोपस्थापितयवाब-उल-यवाबसंक्षपत्रेण चावगम्यते तदा तद्धनस्य कृष्णमण्याः सौदायिकस्त्रीधनत्वेन तत्रोपरिलिखितपितृकृतर्णापाकरणार्थं तद्विनापि च स्वाच्छन्द्येन समर्पणस्य क्षमता आसीत् । एवञ्च सति कृष्णमण्याः जयमणीमुद्दिश्य तद्धनसमर्पणक्षमताया असत्त्वपक्षे कृष्णमणीमरणानन्तरं तत्संक्रान्ततत्पितृव्यकधनस्य यदि कृष्णमणीमरणोत्तरमेतद्धर्माधिकरणार्थिनो गोपालचन्द्रकविराजस्य पिता वैद्यनाथकविराजो विद्यमान आसीत्, तदा तस्य कृष्णमण्याः पितुर्गङ्गानारायणस्य पितामहदौहित्रत्वेनाधिकारे जाते सति तन्मरणोत्तरं तत्पुत्रो गोपालचन्द्रकविराजोऽधिकारी भवितुमर्हति, यदि च कृष्णमणीमरणात् पूर्वमेव गोपालचन्द्रकविराजस्य पिता वैद्यनाथकविराजो मृतः स्यात्तदा गोपालचन्द्रकविराजस्य कृष्णमणीमरणानन्तरं तत्संक्रान्ततत्पितृव्यकधने अधिकारो भवितुं न शक्नोति, पितामहदौहित्रपुत्रस्य शास्त्रानुसारेणानधिकारात्, वैद्यनाथकविराजकृष्णमण्योर्मध्ये पूर्व्वं वैद्यनाथकविराजस्य मरणं कृष्णमण्या वा मरणं जातमित्यस्य प्रभुसमर्पितपत्रजातैर्ज्ञातुमशक्यत्वात् । एवं प्रभुसमर्पितार्थिप्रत्यर्थिसमुपस्थापितवंशावलीपत्रलिखितानां[2] मध्ये केवलं जयमण्या एव विद्यमानत्वेन, तस्याश्च कृष्णमणीमरणानन्तरं तत्संक्रान्ततत्पितृव्यकधने अधिकारो भवितुं न शक्नोति, भ्रातृदुहितुः

१. भयोदारीतिपाठः विम० । २. स्तुस्थापित—व्यव० ।

पितृव्यधने शास्त्रानुसारेणाधिकारित्वात् । किन्तु कृष्णमणीमरणोत्तरं तत्संक्रान्ततदितरत्यक्तधने शास्त्रानुसारेण ये अधिकारिणोऽधिकारिशृङ्खलायां निविष्टाः तेषां मध्ये कश्चिच्चेद्विद्यमानस्तदा स एवाधिकारी भवितुं शक्नोति । परन्तु स च क इति प्रभुसमर्पितपत्रजातैर्ज्ञातुमशक्य एव इति धङ्गदेशचलितमनुदायभागदायभागटीकादायतत्त्वदायक्रमसंग्रहशुद्धितत्त्वदायरहस्यविवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

अपुत्रा शयनं भर्तुः पालयन्ती गुरौ स्थिता ।
भुञ्जीतामरणात् क्षान्ता दायादा ऊर्द्ध्वमाप्नुयुः ॥—इति दायभागादिग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥१॥

यद्वा पत्नीत्युपलक्षणम्, स्त्रीमात्राधिकारे अयमर्थो बोद्धव्यः—इति दायभागग्रन्थलिखनम् ॥२॥

स्त्रीकृतान्यप्रमाणानि कार्याण्याहुरनापदि ॥
विशेषतो गृहक्षेत्रदानाधमनविक्रयाः ॥—इति नारदस्मृत्यादिग्रन्थधृतनारदवचनम् ॥३॥

ऋक्थग्राही ऋणं दाप्यः—इत्यादि विवादभङ्गार्णवादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥४॥

ऊढया कन्यया वापि पत्युः पितृगृहेऽथवा ।
भर्त्तुः सकाशात् पित्रोर्वा लब्धं सौदायिकं स्मृतम् ॥—इति दायभागादिग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥५॥

सौदायिके सदा स्त्रीणां स्वातन्त्र्यं परिकीर्त्तितम् ।
विक्रये चैव दाने च यथेष्टं स्थावरेष्वपि ॥—इति दायभागादिग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥६॥

एवं पितामहप्रपितामहसन्ततेरपि दौहित्रान्तायाः पिण्डप्रत्यासत्तिक्रमेणाधिकारो बोद्धव्यः—इति दायभागग्रन्थलिखनम् ॥७॥

दौहित्रश्च पिण्डदाता न च तत्पुत्रः—इति दायभागग्रन्थलिखनम् ॥८॥

न दायं निरिन्द्रिया अदायाश्च स्त्रियो मताः—इति श्रुतेः न दायमर्हति *स्त्रीत्यन्वयः, पत्न्यादीनाम्* त्वधिकारो विशेषवचनादविरुद्धः—इति दायभागग्रन्थलिखनञ्चेति ॥६॥

एतदब्दीयदिशम्बरमासीयदशमदिनसम्बन्धिसोमवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१५—मोकाम कलिकातार सदर देओयानि पण्डित प्रति सओयाल ।

यद्यपि मोछलमान जातीय कोनो वेक्ति हिन्दु जातीय कोनो वेक्तिर स्त्रीके बुझाइया ताहार पतिर असम्मतिते मोछलमान धर्म्म आनिबार मानस करे, अथवा हिन्दुजातीय कोन वेक्तिर स्त्री आपनार जातीय धर्म्मत्याग करिया मोछलमानेर धर्म्म स्वीकार करिते इच्छा करे, तबे पतिर नालिस मते हाकिम वेक्तिके मोछ्म्मांत मजकुरा ओ मोछलमान वेक्तिदिगेर प्रार्थना हइते वारण दावा पौंछे कि ना । यद्यपि पौंछे, तबे कि प्रकार, ओ यदि स्यात् ऐ स्त्री मोछलमान हइया थाके, तबे ताहार पतीर जातीर किछु हानि हय कि ना । इति सन १८३२ साल तारिख १० दिसम्बर ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यदेतदब्दीयदिशम्बरमासीयत्रयोदशदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥—

यदि यवनजातीयः कश्चिद्व्यक्तिविशेषो हिन्दूजातीयस्य कस्यचिद् व्यक्तिविशेषस्य स्त्रियं बोधयित्वा तस्याः स्त्रियः पत्युरननुमत्या च यवनजातीयधर्म्मेऽभ्यानेतुमिच्छति, अथवा हिन्दूजातीयस्य कस्यचिद् व्यक्तिविशेषस्य स्त्री स्वजातीयधर्म्मस्य त्यागं कृत्वा यवनजातीयधर्म्मस्य स्वीकारं कर्त्तुमिच्छति

तदा तस्याः स्त्रियाः पत्युस्तद्विषयकाभियोगे सति राज्ञस्तस्याः स्त्रियाः यवन-जातीयस्य तद्व्यक्तिविशेषस्य च तत्तदिच्छाविषयीभूतादारणकरणमुचितं भवति । एवं च सति राज्ञस्तयोरुपयुक्तदण्डादिकरणत्रमवाप्यत्येव । यदि च सा स्त्री यवनजातौ प्रविष्टाऽभूत्तदा तस्याः पतिर्यदि तस्या यवनजातिभवनानन्तरमपि तया सह स्त्रीपुंधर्माचरणादिकार्य्यं कृतवान् स्यात्तदा तत्संसर्ग-जन्यपातकापनोदकयथाशास्त्रप्रायश्चित्ताचरणं विना स्वजातावाचरणीयो व्यवहार्य्यश्च भवितुं शास्त्रानुसारेण न शक्नोतीति, एवं तस्याः स्त्रियाः पत्युः स्वजातेर्हानिर्जाता । यदि च तस्याः स्त्रियाः यवनजातिभवनानन्तरं तत्पति-स्तया सह स्त्रीपुंधर्माचरणादिकार्य्यं न कृतवान् स्यात्तदा तत्पत्युस्तत्-संसर्गाभावेन संसर्गजन्यप्रत्यवायापनोदकप्रायश्चित्तं विनापि स्वजातेः क्वापि हानिर्भवितुं न शक्नोतीति मनुमिताक्षराप्रभृतिधर्मशास्त्रानुसारिणी व्यवस्था ॥—

अत्र प्रमाणम्—

अस्वतन्त्राः स्त्रियः कार्य्याः पुरुषैः स्वैर्दिवानिशम् ।

विषयेषु च संजन्त्यः संस्थाप्या ह्यात्मनो वशे ॥ इति मनु(९।२) वचनम् ॥१॥

दम्पत्योः परस्परधर्मव्यतिक्रमे सति अन्यतरज्ञाने दण्डेनापि स्व-धर्मव्यवस्थापनं राज्ञा कर्तव्यम्—इति मन्वर्थमुक्तावल्या(पृ० ३४५-३४६) कुल्लूकभट्टव्याख्यानम् ॥२॥

यद्यपि स्त्रीपुरुषयोः परस्परमर्थिप्रत्यर्थितया नृपसमक्षं व्यवहारो नि-षिद्धस्तथापि प्रत्यक्षेण कर्णपरम्परया विदिते तयोः परस्पराभिचारे दण्डादिना दम्पती निजधर्ममार्गे राज्ञा स्थापनीयौ—इति मिताक्षरा-(पृ० २८८)ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥३॥

एतदब्दीयदिशम्बरमासीयाष्टादशदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मयेयं व्य-वस्था दत्तेति ॥

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीदुर्गा

१६—रोवकारी मिछिल सदर देओयानी आदालत मोकाम-कलिकाता आदालत मजकुरेर हाकिम श्रीयुत हेनरि सिक्सपीएर साहेबेर बैठके ओयाक्कं तारिख १६ माह् शेतम्बर इ० सन १८३२ साल मोतावरू ५ आश्विन बाङ्गला सन १२३६ रोज बुधवार—

दुर्ज्जनसिंह ओ अर्ज्जनसिंह आपीलाएटान्
बाजत गिरिधरसिंह ओ गयरह— रेप्पाइएटान्

आपीलाएटानेर उकिलान् मुनशी होसेन आलि ओ सदा-सुखपण्डित हाजिर आइल। आपीलाएटानेर छओयाल एइ मासेर ६ तारिखेर अनुमोदन हओया एइ आदालतेर पण्डितेर व्यवस्थार प्रति ओजरात एवं अन्य अन्य विशय सम्वलित सादा कागजेर पर एक केता व्यवस्थार नकल दुइ टाका किम्मतेर एक केता फेरस्त समेत, जाहा एइ मासेर ८ तारिखे दाखिल हइया छिल, अनुमोदने आइल। हुकुम हइल ये आपीलाएटानेर छओयाल एइ रोवकारिर नकल ओ एइ मासेर ६ तारिखेर रोवकारिर नकल सम्वलित ओ एइ मोकद्दमार मोतालक साम्यक कागजात एइ हुकुमे ये पण्डित सावेक व्यवस्था ओ आपीलाएटानेर ओजरात ओ एइ मासेर ६ तारिखेर हओया एइ आदालतेर रोवकारिर प्रति अनुमोदन करिया जओयाब लिखेन-ये तत् दृष्टे सावेक व्यवस्थार किछु तबदिल जरुर आछे कि ना, आर यद्यपि स्यात् ताहा थाके, ताहार सरेओयार कैफियत लिखेन-एइ आदालतेर पण्डितेर अग्रे पाठान जाय इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतहेनरीसिक्सिपीयरसाहेबधर्म्माधिकरण-लिखितैतदब्दीयसितम्बरमासीयोनविंशतितमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्न-

प्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितैतद्विवादविषयनिविष्टपत्रजातमेतद्धर्माधिकरणा- र्थिनां निवेदनपत्रमेतदब्दीयखितम्बरमासीयषष्ठदिवसीयैतद्धर्माधिकरणीयवि- चारपत्रं च यदेतदब्दीयनवम्बरमासीयषष्ठदिनसम्बन्धिसोमवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशो बोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।—

प्रभुसमर्पितोपरिलिखितपत्रजातदृष्ट्या अस्मद्दत्तैतद्विवादविषयनिविष्टपूर्व- व्यवस्थायाः किञ्चिदपि परावर्तनस्यावश्यकता नास्ति, धर्मशास्त्रे केनापि मु- निना ग्रन्थकारेण वा जीवति धनस्वामिनि पितरि तत्स्वत्वास्पदीभूतं धनं यत् स्वपित्रादिमरणानन्तरं उत्तराधिकारित्वेन पित्रा प्राप्तं तद्धनं तत्पुत्रैर्विभज्य ग्रहीतव्यमित्यस्यालिखितत्वात्, कस्मिंश्चिदपि देशे तादृशव्यवहाराभावाच्च । यच्च एतद्धर्माधिकरणार्थिभिः स्वकीयनिवेदनपत्रे अस्मद्दत्तपूर्वव्यवस्थायां पैतामहधनं लिखितं तत्प्रमाणेषु पैतृकं धनं लिखितमिति विरोधो लिखित स्तत् (?) सम्यक्तद्व्यवस्थालिखितानां पञ्चानां प्रमाणानां मध्ये केवलं प्रथमप्रमाणे मनुवचने एव पैतृकं धनमिति लिखितमस्ति । तत्र पैतृकं धन- मित्यस्य पितृस्वत्वास्पदीभूतं धनमित्याशयः । तत्र पितृस्वत्वास्पदीभूतं धनं यद्धनं पित्रा स्वेनैवोपार्जितं तदपि भवति । यद्धनं पित्रा स्वपित्रादिमरणानन्तरं स्वमात्रादिमरणानन्तरं योत्तराधिकारित्वेन प्राप्तं तदपि भवत्येव, पितृस्वत्व- स्य तत्राप्यक्षतत्वात् । यथैतद्धर्माधिकरणार्थिभिर्विवादास्पदीभूतं धनं स्वपैतामहमिति लिखितं तत्रापि तद्धनमर्थिनां पितामहस्य स्वोपार्जितं न भवति, किन्त्वर्थिनामेतद्धर्माधिकरणीयनिवेदनपत्रेणैव विवादास्पदीभूतं धनं तत्पितामहेनाप्युत्तराधिकारित्वेनैव प्राप्तमित्यस्य स्पष्टीकृतत्वेन, अतएव यद्धनमर्थिनां पितामहेनार्थात् कीर्तिसिंहेन मूलभूतधनस्वामिनो विक्रमादित्य- रायात् सप्तमपुरुषेणोत्तराधिकारित्वेन प्राप्तं तद्धनं यद्यर्थिनां पैतामहं भवति तदा तद्धनमर्थिनां पित्रा अर्थाद्गिरिधरसिंहेन मूलभूतधनस्वामिनो विक्रमादित्यरायादष्टमपुरुषेणोत्तराधिकारित्वेन प्राप्तं तद्धनमप्यर्थिनां पैतृक- मपि भवितुं शक्नोत्येव । इतरेषु तद्व्यवस्थालिखितेषु पञ्चसु प्रमाणेषु सामा- न्यतो धनमित्यस्य लिखितत्वेन पितुः स्वोपार्जिते क्रमागते च धनशब्दस्या- विशेषात्–इति कानपुरप्रदेशप्रचलितमनुमिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारमाधव- व्यवहारकौस्तुभव्यवहारमयूखमिताक्षराटीकादिग्रन्थानुसारेणोत्तरमिति ॥

एतदब्दीयदिशाम्बरमासीयोनविंशतितमदिनसम्बन्धिबुधवासरे मयेदमुत्त-
रं दत्तमिति ॥

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीदुर्गा

१७—रोवकारी मिछिल मोकाम कलिकातार सदर देओयानि आदालतेर हाकिम श्रीयुत आलकसुन्दर राम साहेबेर बैठके हओयार तारिख इङ्गरेजी सन १८३२ सालेर ४ डिजम्बर मोताबेक सन १२३९ बाङ्गलार २० अग्रहायन मङ्गलवार—

आनन्दकिशोर गुप्त बनाम श्रीमती क्षेमङ्करीदासी

छायलेर उकिल मुनशी गोलाम रसुल हाजीर आइल। छायलेर हओयाल ३२ टाका मूल्येर इष्टाम्प कागजेर पर ग्रासाच्छादन प्रभृति विशये मुः ५७० पाच शत कुडी टाकार मोकद्दमार खास आपील मञ्जुरेर प्रार्थनाय उकिल मजकुरेर नामेर एक केता ओकालतनामा ओ इं० सन १८३० सालेर २१ अक्तुबर तारिखेर हओया नदिया जेलार आदालतेर एक केता फयसलार नकल ओ इं० सन १८३२ सालेर १५ फिबरेल ओ सन १८२७ सालेर १८ आपरेल तारिखेर हओया कलिकातार कोर्ट आपीलेर दुइ केता फयशलार नकल ओ एक केता वेवस्था सहित, ये सन हालेर ≡ सेप्तम्बर तारिखे दाखिल हइयाछिल, अद्य दृष्टे आइल। येहेतु हुकुम हओनेर पूर्व्व शास्त्रेर विवरेण ज्ञात हओया उचित बोध हइल, एजन्य हुकुम हइल ये एइ रोवकारिर नकल एइ हुकुमे ए आदालतेर पण्डितके अर्पन कराजाय ये निचेर लिखित प्रश्नोत्तर ताहार पाइवार दिवसावधि एक सप्ताह मध्ये दाखिल करेण इति।

प्रश्न —खोशालचन्द्रराय तालुकात प्रभृति ओ करुणामयी वनिता ओ करुणामयीर गर्भजात दुहिता श्रीमति चित्रादासीके उत्तराधिकारिगणके राखिया लोकान्तरगामी हय, तत्परे लिखित श्रीमती करुणामयी स्वामीर तेज्य वस्तुर पर ओ ताहार मृत्युर पर तस्य कन्या श्रीमती चित्रादासी उक्त खोशालचन्द्रेर तेज्य वस्तुर उपर दखिलकार हइलेन। तत्परे उक्त श्रीमती चित्रादासीर दुइ पुत्र अर्थात् भैरवचन्द्रगुप्त ओ आनन्दकिशोरगुप्तेर मध्ये

ज्येष्ठ भैरवचन्द्र गुप्त श्रीमती क्षेमङ्करीदासी वनिता ओ हरसुन्दरी ओ दयामयीप्रभृति चारि कन्याके राखिया आपन माता श्रीमती चित्रादासीर समक्षे लोकान्तर हय, एवं उक्त श्रीमती चित्रादासीर द्वितीय पुत्र आनन्दकिशोर गुप्त उक्त खोशालचन्द्रेर त्यक्त तेज्य वस्तुर उपर दखिलकार हय। अतः पर जिज्ञाशा करा जाइतेछे ये यदि उक्त आनन्दकिशोर आपन ज्येष्ठ भ्राता भैरवचन्द्रेर स्त्री श्रीमती क्षेमङ्करी दासीके, ओ ऐ श्रीमती क्षेमङ्करीदासीर मृत्युर पर ताहार कन्यागण हरसुन्दरी ओ दयामयी प्रभृतिके ताहार दिगेर आवश्यक अनुसारे ग्रासाच्छादन ना देय, तबे बङ्गदेशीय चलित शास्त्रानुसारे लिखित श्रीमती क्षेमङ्करीदासी ओ तत् परलोकान्तर तस्य कन्यागण श्रीमती हरसुन्दरी ओ दयामयी प्रभृति छाएल आनन्दकीशोर गुप्तेर स्थाने ग्रासाच्छादन पाइवार क्षेमता राखे कि ना—

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतश्यामलसुन्दररायसाहेबधर्म्माधिकरणलिखिताङ्गलदेशीयाब्दप्रतिपाद्यद्वात्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयदिसम्बरमासीयचतुर्थदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यच्चतदब्दीयतन्मासीयनवदशदिनसम्बन्धिशनिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रश्नसमर्पितप्रश्नपत्रलिखितवृत्तान्ते सत्यानन्दकिशोरगुप्तो यद्युत्तराधिकारित्वेन प्राप्तपितृधनायां स्वमातरि जीवन्त्यां मातामहधने अनुत्पन्नस्वत्वस्य मृतस्य भैरवचन्द्रस्य स्वकीयज्येष्ठभ्रातुः पत्न्याः श्रीमत्याः क्षेमङ्करीदास्याः; तन्मरणोत्तरं तत्कन्यानां हरसुन्दरीदयामयीप्रभृतीनामावश्यकग्रासाच्छादनं न ददाति तदा सा एव श्रीमतीक्षेमङ्करीदासी ग्रासाच्छादनोपयुक्तपरित्यक्तधनाभावे स्वजीवनपर्य्यन्तमानन्दकिशोरगुप्तस्य स्वकीयदेवरस्य स्थाने ग्रासाच्छादनग्रहणस्य क्षमतां रक्षत्येव, एवं तन्मरणोत्तरं तत्कन्यकानां यदि विवाहो नाभूत्तदा तासां मध्ये अविवाहितास्सर्वा एव

विवाहपर्य्यन्तं ग्रासाच्छादनोपयुक्तस्वपितृत्यक्तधनाभावे सति विवाहपर्य्यन्तं ग्रासाच्छादनग्रहणस्य समतामानन्दकिशोरगुप्तस्य स्थाने रक्षन्त्येव । यदि च भैरवचन्द्रस्य कन्यानां सर्व्वासामेव विवाहो जातः स्यात् तदा तासां विवाहितानां कन्यकानां मध्ये यासां ग्रासाच्छादनं स्वभर्तृकुलात् स्वभर्तृकुलसम्बन्धिधनाद् वा स्वपितृत्यक्तधनाद्वा भवितुं न शक्नोति तदा ता अपि यावज्जीवं स्वकुलोचितग्रासाच्छादनग्रहणस्य समतामानन्दकिशोरगुप्तस्य स्वपितृव्यस्य स्थाने रक्षन्त्येव । याश्च विवाहितानां ग्रासाच्छादनं स्वभर्तृकुलात् स्वभर्तृकुलसम्बन्धिधनाद् वा स्वपितृत्यक्तधनाद् वा भवितुं शक्नोति ताश्च ग्रासाच्छादनग्रहणस्य समतामानन्दकिशोरगुप्तस्य स्थाने न रक्षन्ति, तासामावश्यकग्रासाच्छादनस्य स्वभर्तृकुलादेरुपपत्तेः—इति वङ्गदेशाचलितदायभाग-दायतत्त्वदायभागटीका-दायक्रमसंग्रह-विवादार्णवसेतु-विवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

सुतास्चैषाञ्च भर्त्तव्या यावद्वै भर्त्तृसात्कृताः ।
अपुत्रा योषितश्चैषां भर्त्तव्याः साधुवृत्तयः ॥ इति दायभागादि(दाभा० पृ० १०४)ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य(पृ० २७७ २।१४१)वचनम् ॥१॥

मृते भर्त्तर्य्यपुत्रायाः पतिपक्षः प्रभुः स्त्रियाः ।
विनियोगार्थरक्षासु भरणे च स ईश्वरः ॥
परिक्षीणे पतिकुले निर्म्मनुष्ये निराश्रये ।
तत् सपिण्डेषु चासत्सु पितृपक्षः प्रभुः स्त्रियाः ॥—इति दायभागादि-(दाभा० पृ० १७३)ग्रन्थधृतनारद(नास्मृ० १३।२८-२६)वचनञ्चेति ॥२॥

अङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यत्रयस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयजानवरीमासीयाष्टमदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

४७०२ ल० ।

१८ फेरादि—गोलकमणीदासी सा० वेहाला परगणे वलिया आसामी —पीताम्वरहालदार १स्वच्य वेश्रोया १सा० वेहाला परगणे वलिया, निमचाँद राय, १सा० मोदि परगणे मागुरा ।

मालिके जमीन सावेक रामचन्द्रहालदारेर श्रोयारिस श्रीनाथहालदारभट्टाचार्य । इहार हाल खरिदार हरचन्द्र हालदार सा० वेहाला परगणे वालिया १, दोसरा मालिके जमिन महाराजा नवकृष्णवाहादुरेर ओयारिस लायेक शिवकृष्णवाहादुर ओ कालीकृष्णवाहादुर सा० सहर कलिकातार सवावाजार २ ।

दावि मौरसि जमिर लाखेराजी जमीर ओयारिसिते दखल कायेम हइवार प्रार्थनाय किम्मत सायदाद १५० टाका । एक वेक्ति गङ्गारामराय जाति छत्रि आपन सजातीते विवाह करे । विवाहिता स्त्रीर पर्व्वे एक पुत्र मदनराय । ऐ गङ्गारामराय एककपालिर कन्याके आसना करे । ताहार उदरे एक कन्या हय । ताहार नाम गोलकमणि । ताहाके छत्रिर संगे विवाह देय । गङ्गारामराय लोकान्त हइवाते ऐ मदनराय आपन पितार स्थावर ओ अस्थावर विषय दखलिकार थाकिया सजातिते विवाह करे, एक कन्या हय । तस्य नाम वरदामणि । ऐ मदनराय आपन पैतृक जे किछु तावत आपन कन्या वरदामणिके दान करे, सरत एइ जे पर्य्यन्त वरदामणिर विमाता जीवितमान थाकिवेक ऐ विषयेर ॥=) आना रकम उपसत्व हइते खोरपोष करिवेक, वरदार ।=) आना थाकिवेक, वरदार विमातार लोकान्त हइले सोलो आना उपसत्त्व वरदार थाकिवेक । ऐ वरदार विमाता ऐ प्रकार दखलिकारि थाकिया आपन सपत्नि-पुत्री वरदामनिके सजातीते विवाह दिया फौत करे । वरदामनि आपन विमातार श्राद्ध आदि करिया ऐ दानेर विधायेते दखलिकारि थाकिया किछु काल परे वरदामनि आपन स्वामिके राखिया लोकान्त

हइयाछे। एखन ऐ गोलकमनि आपन पितार गङ्गारामरायेर ओयारिस जानाइया नालिस करे। अतएव धर्मशास्त्र अनुसारे ए विषय काहारे घटीवेक इति—

श्रीऽर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं यदङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यद्वात्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयागस्तिमासीयत्रयोविंशतितमदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

अत्र यद्यपि प्रश्नपत्रे लिखितमस्ति मदनरायस्य कन्या वरदामणी स्वविमातुः श्राद्धादिकं कृत्वा तद्दानकृतधने आयत्त्वं सम्पाद्य किञ्चित् कालानन्तरं स्वपतिं रक्षित्वा मृतेति, परन्तु वरदामण्या विमाता प्रश्नपत्रलिखितानां स्त्रीणां मध्ये का भवतीति प्रश्नपत्रेण ज्ञातुं न शक्यते; तथापि प्रश्नपत्रलिखितवृत्तान्तस्य सत्यत्वञ्चेत् तदा वरदामण्याः यदि कन्यापुत्रदौहित्रपौत्रप्रपौत्रसपत्नीपुत्रपौत्रप्रपौत्रभ्रातृमातृपितृपर्य्यन्तानां मध्ये कश्चिन्नास्ति चेत्तदा तत्पत्युरेवाधिकारः। प्रश्नपत्रलिखितवृत्तान्ते सति विवादास्पदीभूतधनस्य वरदामण्याः कन्यावस्थायां पितृदत्तत्वेन सौदायिकस्त्रीधनत्वात् कन्यावस्थायां पितृदत्तसौदायिकस्त्रीधने च कन्यामारभ्य पितृपर्य्यन्तानामुपरिलिखितानामभावे पत्युरधिकारस्यार्थसिद्धत्वात्—इति वङ्गदेशचलितदायभागदायतत्त्व-दायभागटीका-दायक्रमसंग्रह विवादार्णवसेतु-विवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

ऊढया कन्यया वापि पत्युः पितृगृहेऽथवा।

भर्त्तुः सकाशात् पित्रोर्वा लब्धं सौदायिकं स्मृतम्॥—इति दायभागादि(दाभा० पृ० ७६)धृतकात्यायन(कास्मृ० ६०१। पृ० १०९) वचनम्॥१॥

विवाहकाले तत्पूर्वापरकाले वा स्त्रियै यद्धनं पित्रा दत्तं तत्र [illegible] धने प्रथमं कुमार्य्यास्तदनन्तरमूढायाः पुत्रवतीसम्भावितपुत्रयोस्तदनन्तरं च वन्ध्याविधवयोश्चाधिकारः। सर्व्वदुहित्रभावे पुत्रादेर्यौतुकधनवत् क्रमेणा-

धिकारः—इति दायक्रमसंग्रह(पृ० २३)विवादार्णवसेत्वादि(पृ० ५७) ग्रन्थलिखनम् ॥२॥

तत्र यौतुकधने इति प्रस्तुत्य सर्व्वदुहित्रभावे पुत्रस्याधिकार इति। पुत्राभावे दौहित्रोऽधिकारीति। दौहित्राभावे पौत्रस्तदभावे प्रपौत्र इति। तदभावे सपत्नीपुत्र इति। तदभावे सपत्नीपौत्रस्तदभावे सपत्नीप्रपौत्र इति। एतत्पर्य्यन्ताभावे ब्राह्मदैवार्षगान्धर्वप्राजापत्यारव्यविवाहपञ्चकलब्धयौतुकधने भर्त्तुरधिकारः—इति दायक्रमसंग्रह(पृ० १६।२०)ग्रन्थलिखनम् ॥३॥

बन्धुदत्तं तथा शुल्कमन्वाधेयकमेव च।

अप्रजायामतीतायां बान्धवास्तदवाप्नुयुः॥—इति दायभाग-(पृ० ६२)दायक्रमसंग्रह(-पृ० २०)विवादार्णवसेतु(पृ० ६०)विवादभङ्गार्णवादि(२ विवा० ४१५ क)ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य(, २।१४५)वचनम् ॥४॥

बन्धुदत्तमिति मातापितृभ्यां यद्दत्तम्, अतएव तत्पुत्राश्च भ्रातर[1] एव बान्धवाः तदाह वृद्धकात्यायनः—

पितृभ्याञ्चैव यद्दत्तं दुहितुः स्थावरं धनम्।

अप्रजायामतीतायां भ्रातृगामि तु सर्वदा॥ इति

सर्व्वदापदेन ब्राह्मादिपैशाचान्तविवाहिताया अप्रजाया[2] धनं भ्रातृगाम्येव भवतीति। स्थावरपदात् दण्डापूपन्यायादेवापरस्य धनस्य सिद्धिः। बन्धुदत्तपदेन कन्यादशायां यत् पितृभ्यां दत्तं तदुच्यते--इति दायभाग-(पृ० ६२)ग्रन्थलिखनम् ॥५॥

प्रथमं सोदराणां तदभावे मातुः मातुरभावे पितुः एषां पुनरभावे तद्धन भर्त्तुः—इति दायभाग(पृ० ६५)ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥६॥

अङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यत्रयस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयजानवरीयमासीयचतुर्दशदिनसम्बन्धिसोमवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

1. भ्रातरो बान्धवा—दाभा०। 2. अप्रजसो धन—दाभा०।

३:४१ लं .

१८—रोवकारी मिछिल शदर देओयानि आदालत सो० कलिकाता आदालत मजकुरेर हाकिम श्रीयुत रिचार्ड ओयालपोल साहेबेर वैठके । तारिक ९ माह् जानेर ई सन १८३३ साल मोताबके वाङ्गला २७ माह् पौष १२३९ साल दिवस बुधवार—

मोछम्मौत लक्ष्मीप्रिया आपीलाण्ट

भैरवचन्द्रचौधुरि ओ जयचन्द्रचौधुरि, रेस्पाडेण्टान

आपिलाण्टेर उकिल मलसि होसन आलि ओ हाजिर रेस्पाडेण्टर उकिल सदासुकपण्डित हाजिर आइल, आर द्वितीय रेस्पाडेण्ट जयचन्द्रराय इयानामनामा ओ इस्ताहारनामा जारिते ओ खोद् किम्बा उकिलेर द्वाराय हाजिर नाइ । एइ मकद्दमा गतो नवम्बर मासेर २९ तारिखे आमार वैठके रोवकार हइया नालिसि आरजि प्रभृति कागजात् नों प्रिविन्सियाल कोर्टेर फयछला पर्य्यन्त ओ ए आदालतेर कागज-पत्र पड़ा हइया आपीलाण्टेर उकिलेर उक्त उदाहरण सेरेस्ता हइते बाहिर करनेर हुकुम छादेर हइया मुलतवि छिल, अद्य करुणामयी ओ गयरह् आपीलाण्टान ओ जयचन्द्रघोष ओ गयरह् रेस्पाडेण्टान ३०२६ लम्बरेर मोकद्दमार कागजपत्र आर कमलाकान्त राय ओ गयरह् बनाम गङ्गाचरणसेन खास आपीलेर दरखास्त ओ ताहार सम्पर्कीय कागजपत्रेर सहित आमार वैठके दरपेश हइया एइ दुइ मकद्दमार कोन-कोन कागज विशेषत एइ आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था सकल प्रगाढ दृष्टे दृष्टी करा ओ पड़ा गेल । एवं एइ आदालतेर सन १८२७ सालेर २० ओ २८ नवम्बर तारिखेर लिखित दुइ केता रोवकारि ओ व्यवस्था एइ आदालतेर पण्डितेर कालीप्रसादराय छापलेर मोकद्दमार ओ जे रेस्पाडेण्टर उकिल दुइ २ टाका किम्मतेर फेरस्त तिन केतार द्वाराय दाखिल करिलेक, ताहा पड़ा गेल । तत्परे आपिलाण्टेर उकिलके जिज्ञाशा गेल ये पूर्णिमार पुत्र ब्रजनाथ कोन वतसरे, कि जयदुर्गार वर्त्तमाने, कि ताहार

मृत्युर पर जन्म हय। जओयाव दिलेक ये सन १२२९ साले जय-दुर्गार मृत्यु हय। ताहार मृत्युर पर सन १२३० साले पूर्णिमार पुत्र व्रजनाथेर जन्म हय। योध हइल ये आपीलाण्ट जेला रङ्गपुर ओ दिनाजपुरेर संक्रान्तेर परगणे वयनपुर ओ गणरहर ग्रामसकल दाविर वस्तुर हिस्या चारि आना पाच गण्डार दखल पाओनेर दाविते एइ एलेहारे नालिस करे ये मुद्दाइयार स्वामि कृष्णचन्द्र-चौधुरिर पितामह सदाशिवचौधुरिर दुइ पुत्र; प्रथम मुद्दाइयार स्वामिर पिता रामचन्द्र, द्वितीय रामानन्द, सदाशिवेर मृत्युर पर ताहार जमिदारि ओ गयरह ताहार दुइ पुत्र उभये विभाग पाइया रामचन्द्र ज्येष्ठप्रयुक्त रकम नय आना, आर रकम सात आना रामानन्देर हिस्या निर्द्धारित हय। रामचन्द्र तिन पुत्र कृष्णचन्द्र ओ हरिश्चन्द्र ओ कृष्णानन्दके ओयारिप आर ऐ नय आनार कम त्यक्त वस्तु राखिया मृत्यु हय। आर उभयेर विभागानुसारे मुद्दाइयार स्वामी कृष्णचन्द्रके रकम चारि आना पाच गण्डा आर कृष्णानन्द ओ हरिश्चन्द्रके रकम चारि आना पनरो गण्डा पौछिल। एवं प्रत्येक आपन २ हिस्यार पर दखिलकार हइल। मुद्दाइयार स्वामि कृष्णचन्द्र दुइ स्त्रि, मुद्दाइया ओ जयदुर्गा एवं मुद्दाइयार गर्भजात कन्या पूर्णिमा आर जयदुर्गार गर्भजात नाबा-लक पुत्र कीर्त्तिचन्द्रके राखिया सन १२१२ साले मृत्यु हइले कीर्त्तिचन्द्रेर नाम जारि हइले सन १२२० साले कीर्त्तिचन्द्रेर मृत्यु हय। ताहार पर जयदुर्गार नाम जमिदारिर ताहुते लेखा जाय। किन्तु मुद्दाइया ओ जयदुर्गा दुइ जनेइ एक अवर्के जमिदारिर पर दखिलकार एवं वसुल तहसिलेर कर्म्मकर्त्ता छिल। परे सन १२२९ सालेर पौष माहाते जयदुर्गारो मृत्यु हय। आर शास्त्रा-नुसारे विरधीय जमिदारी मुद्दइयार एवं ताहार दौहित्रेर सत्त्व आछे। भैरवचन्द्र मुद्दाआलेहे जओयाव देय ये शास्त्रानुसारे जयदुर्गार ओ किर्त्तिचन्द्रेर पिण्डाधिकारि एवं वलवर्त्त ओयारिस आमि इति।

व्रजनाथ राखे, कि किष्णचन्द्रेर वैमात्रेय भ्राता हरिश्चन्द्रेर पुत्र भैरवचन्द्र राखे। आर कृष्णचन्द्रेर त्याज्य वस्तु इहारदिगेर मद्धे कोन व्यक्तिके पौंछे—जओयाव दुइ समाह मद्धे लेखेन–एइ आदालतेर पण्डितके हाओला करा जाय—इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतरिचार्ड ओश्वालपोलसाहेबधर्म्माधिकरणलिखितैतदब्दीयजानवरीमासीयनवमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदब्दीयतन्मासीयत्रिंशत्तमदिनसम्बन्धिव्यवसरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रश्नपत्रलिखितवृत्तान्ते सति मृतस्य कृष्णचन्द्रस्य पार्व्वणश्राद्धपिण्डदानादिक्रियाकरणक्षमतो मृतस्य कृष्णचन्द्रस्य दौहित्रोऽर्थात् पूर्णिमापुत्रो व्रजनाथ एव रक्षति, न तु कृष्णचन्द्रस्य वैमात्रेयभ्रातुर्हरिश्चन्द्रस्य पुत्रो भैरवचन्द्रः, एवं कृष्णचन्द्रस्य त्यक्तधनम्, यत्तन्मरणानन्तरं तत्पुत्रेण कीर्तिचन्द्रेण कीर्तिचन्द्रस्य मरणानन्तर तन्मात्रा जयदुर्गया च प्राप्तम्, तद्धने यदि कीर्त्तिचन्द्रस्य मातुर्जयदुर्गाया मरणसमये कीर्तिचन्द्रस्य भगिन्याः पूर्णिमायाः कश्चिदेकोऽपि पुत्रोऽर्थाद् व्रजनाथोऽन्यः कश्चिद् वा गर्भे व्यवस्थितो भूमिष्ठो वा आसीत् तदा तस्याधिकारः। जाते च तस्याधिकारे पुनरुत्तरस्यमानानां तद्भ्रात्रन्तराणामर्थात् कीर्त्तिचन्द्रस्य पितृदौहित्रान्तराणामप्यधिकारः समान एव भविष्यति। कृष्णचन्द्रस्य मरणानन्तर तत्यक्तधनमुत्तराधिकारित्वेन तत्पुत्रेण कीर्त्तिचन्द्रेण प्राप्तम्, अतस्तद्धनं कीर्तिचन्द्रस्यैव जातम्। अतस्तस्मिन्नप्राप्तव्यवहारे अकृतविवाहे च मृते सति तस्य पुत्रमारभ्य पितृपर्य्यन्ताभावेन तत्यक्तधनं तन्मात्रा जयदुर्गया उत्तराधिकारित्वेन प्राप्तमपि जयदुर्गामरणोत्तरं कीर्तिचन्द्रत्यक्तधनं कीर्तिचन्द्रस्य मरणानन्तरं[1] ये कीर्तिचन्द्रस्योत्तराधिकारिणस्तेषामेव भवति, यथा पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्य मृतस्य धने पत्न्या उत्तराधिकारित्वेनाधिकारे जाते सत्यपि पत्न्या मरणोत्तरं पत्न्यनन्तरं पत्युर्ये उत्तराधिकारिणस्तेषामेव तद्धनं भवति, तथा पुत्रमारभ्य

१. मात्रनन्तर—व्यन.।

पितृपर्य्यन्तरहितस्य मृतस्य धने मातुस्तत्राधिकारित्वेनाधिकारे जाते सत्यपि मातुर्म्मरणोत्तरं मातृनन्तरं पुत्रस्य ये उत्तराधिकारिणस्तेषामेव तद्धनं भवति ।

प्रकृते तु कीर्त्तिचन्द्रस्योत्तराधिकारिणां मध्ये कीर्त्तिचन्द्रस्य पुत्रमारभ्य तत्पितुः कृष्णचन्द्रस्य प्रपौत्रपर्य्यन्तानां कीर्त्तिचन्द्रस्य पितृदौहित्रादर्थाद् व्रजनाथात् पूर्व्वं कीर्त्तिचन्द्रस्य त्यक्तधनाधिकारिणां मध्ये इदानीं कश्चिन्ना-स्तीति प्रश्नसमर्पितप्रश्नपत्रेण स्पष्टतरतयाऽवगमेन कीर्त्तिचन्द्रपितृदौहित्रा-धिकारस्य निष्प्रत्यूहत्वात्, सति च कीर्त्तिचन्द्रपितृदौहित्रे कीर्त्तिचन्द्रपितृव्य-पुत्रस्य भैरवचन्द्रस्य नाधिकारः । यदि च कीर्त्तिचन्द्रस्य मातुर्जयदुर्गाया मरणसमये कीर्त्तिचन्द्रस्यैकोऽपि पितृदौहित्रो गर्भे व्यवस्थितो भूमिष्ठो वा नासीत्तदा कीर्त्तिचन्द्रस्य पितृदौहित्राणां स्वत्वान्यथानुपपत्त्या कीर्त्तिचन्द्रस्य भगिन्याः पूर्णिमायास्तत्पितृदौहित्रोत्पत्तिमूलीभूतायास्तत्सम्बन्धमूलीभूतायाश्च स्वपुत्रोत्पत्तेः प्राक्कालपर्य्यन्तं यथा पुत्रादिपत्नीपर्य्यन्तरहितस्य मृतस्य पितुर्द्धने दुहितुरधिकारस्तथा भ्रातृधनेऽप्यधिकारः । सति च कीर्त्तिचन्द्रस्य पितृदौहित्रे स्वतः कीर्त्तिचन्द्रस्य पितुः पार्व्वणश्राद्धपिण्डदातरि स्वतः कीर्त्तिचन्द्रस्य पितुः पार्व्वणश्राद्धपिण्डदानानधिकारिण्याः कीर्त्तिचन्द्रस्य भगिन्याः पूर्णि-माया नाधिकारः, किन्तु तस्याः पुत्रस्यैव, पुत्राणां चोपरिलिखितप्रकारेणा-धिकारः—इति वङ्गदेशप्रचलितमनु-दायभाग-दायतत्त्व-दायभागटीका-दायक्र-मसंग्रह-श्राद्धतत्त्व-शुद्धितत्त्व-विवादार्णवसेतु-विवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

त्रयाणामुदकं कार्य्यं त्रिषु पिण्डः प्रवर्त्तते—इति मनुवचनम् ॥१॥

पितृभ्यः पितामहेभ्यः प्रपितामहेभ्यः मातामहेभ्यः प्रमातामहेभ्यः वृद्धप्रमातामहेभ्यः स्वधोच्यताम्—इति श्राद्धतत्त्वादिग्रन्थ(श्रात० पृ० २४३)धृतगोभिलवचनम् ॥२॥

पितुरपि प्रपौत्रपर्य्यन्ताभावे पितृदौहित्रस्याधिकारो बोद्धव्यो धनि-दौहित्रस्येव—इति दायभागग्रन्थलिखनम् ॥३॥

इत्याद्वा तद्विभागः स्यादायव्ययविशोधितात्—इति दायभागादि-ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥४॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः—इत्यादिदायभागादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य-वचनम् ॥५॥

अपुत्रा शयनं भर्त्तुः पालयन्ती गुरौ स्थिता ।

भुञ्जीतामरणात् क्षान्ता दायादा ऊर्ध्वमाप्नुयुः॥—इति दायभागादि-ग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥६॥

यद्वा पत्नीत्युपलक्षणम्, स्त्रीमात्राधिकारे अयमर्थो बोद्धव्यः—इति दायभागग्रन्थलिखनम् ॥७॥

तदभावे पुनः पितृदौहित्र इति। तदभावे पितामहस्तदभावे पितामही तदभावे पितुः सोदरस्तदभावे पितुर्वैमात्रेयस्तदभावे पितृसोदरपुत्र (स्तदभावे) पितृवैमात्रेयपुत्रः—इत्यादि श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकालिखनम्। ८॥

यद्यपि दुहित्रभावे दौहित्रस्यैव भगिन्या एव भागधिकारो युक्तस्त-थापि तस्याः स्रोतेन पार्व्वणपिण्डदातृत्वाभावाच्चाधिकारः, दुहितुस्तु दौहित्रात् पूर्व्वमहादक्षात् सम्भवतीत्यादिविशेषवचनादेवाधिकार इति-भावः—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकालिखनञ्चेति ॥९।

एतद्दन्दीयफेयरवरीमासीयषोडशदिनसम्बन्धियनिवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

२०—रोवकारि मिछील शदर देवोयानी आदालत मो० कलि-काता आदालत मजकुरेर हाकीम श्रीयुत हेनरी सिकिसपीयेर साहेवेर वैठके। तारिख ३० जानेर इं सन १८३३ साल मोतावेक वाङ्गला सन १२३९साल १९ माघ दिवस वुधवार—

शामरामदासवनाम वेहालचन्द्र मोतश्रोफॉर छि, राधा-चरण नावालगेर माता सुन्दरीदासी—

मोफस्सेप—

छापल हाजीर आइल। छापलेर छओयाल इं० सन १८३१ सालेर २० डिसम्वरेर लिखित. जेला छिलहट्टेर एकटी जज-साहेवेर फयछलार नाराजीर मोजेवातेर न्याय एइ मासेर १७ तारिखेर एइ आदालतेर हुकुम मोतावक जेला मजकुरेर तारिख मजकुरेर फयछला आर सादा कागजेर उपर एक केता व्यवस्था सम्वलित, जाहा एइ मासेर २३ तारिखे दाखिल हइया छिल, अनु-मोधने आइल। यद्यपि स्यात् तारिख मजकुरेर जजसाहेव मौछा-फर फयछलार लेखा आछे जे कांजीयार वस्तु दोकान मजकुर मुर्दाआलेहेर स्वामीर स्वकृत थाकाते मुर्दाइ अर्थात् छापल ताहार हकदार शासामुजाइ हइते पारे ना। ए प्रयुक्त मोफस्सेशी आपील मञ्जुरि अथवा नामञ्जुरिर विषये चुडान्त हुकुम छादेर हओनेर पूर्व्वे हुकुम हइल जे छापलेर छओयाल एइ मोकद्दमार फयछला सम्वलित एइ आदालतेर पण्डितेर निकट पाठान जाय एइ हुकुमे जे जदि स्यात् दुइ भ्राता, एक जन प्राप्तव्यवहार, द्वितीय, अप्राप्तव्यवहार, एकत्र थाके, आर भ्राता प्राप्तव्यवहार आपन सोपार्ज्जित हइते दोकान कारवार जारि करे। ए प्रकारे छोट भ्राता एमत दोकानेर किछु हिस्यार हकदार, एवं कि आन्दाज हइते पारे कि ना—ताहार व्यवस्था एक सप्ताह मध्ये दाखिल करेण—इति व्यवस्था दाखिल हओनेर परे कागजेर सामिल दरपेष हय—

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतहेनरीविकियपोयरसाहेवधर्म्माधिकरण-लिखितैवदन्दीयजानवरीमासीयत्रिंशत्तमदिवसीयविचारपत्रान्ध्रगवंगरनमति-रूपपत्रमेवं तत्समर्पितैतद्धर्म्माधिकरणार्थिनिवेदनपत्रमेतद्द्वितीयद्विदिन-

निर्विष्टजयपत्रञ्च यत्तदब्दीयफेब्रवरीमासीयचतुर्द्दशदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो ऽतस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यदि द्वयोर्भ्रात्रोरेकत्रवासिनोर्म्मध्ये एकः प्राप्तव्यवहारो द्वितीयश्चाप्राप्तव्यवहारो भवति, एवञ्च प्राप्तव्यवहारो भ्राता स्वोपार्जितधनात् हट्टे वाणिज्यव्यापारं करोति, तत्र यदि प्राप्तव्यवहारेण भ्रात्रा तद्वाणिज्यव्यापारमूलीभूतस्वोपार्जितधनं पैतृकादिसाधारणधनानुपघातेनोपार्जितं स्यात्, तद्धनेन कृतो यो वाणिज्यव्यापारस्तत्र व्यापारे कनिष्ठभ्रातुरपि शरीरायासश्चेद्यदेतत्तद्धर्म्माधिकरणाधिनिवेदनपत्रेणैवं प्रभुसमर्पितजयपत्रलिखितेन यद्यप्यर्थी कदाचिद् विवादास्पदीभूतवाणिज्यविषये कर्म्म कृतवान् इत्यर्थिप्रत्यर्थिनोर्द्वयोरेव साक्ष्युपस्थापितवृत्तान्तेन ज्ञातमित्यनेन चावगम्यते तदा तद्वाणिज्यव्यापारोत्पन्नद्रव्यं पञ्चधा विभज्य तत्र भागद्वयं कनिष्ठभ्रातुर्लब्धुमर्हति, साधारणपैतृकादिधनाद्युपघातेन स्वशरीरायासेन च प्राप्तव्यवहारस्य ज्येष्ठभ्रातुस्तद्वाणिज्यव्यापारमूलीभूतस्वोपार्जितधने अंशद्वयाधिकारित्वेन कनिष्ठभ्रातुरेकांशाधिकारित्वात्। अतएवैतादृशसाधारणधनेन कृतो यो वाणिज्यव्यापारस्तद्व्यापारे द्वयोर्भ्रात्रोः शरीरायासवत्त्वेन पञ्चधा विभक्ततद्व्यापारोत्पन्नधने कनिष्ठभ्रातुरंशद्वयाधिकारित्वस्य शास्त्रीयत्वात्। यदि च प्राप्तव्यवहारेण भ्रात्रा तद्वाणिज्यव्यापारमूलीभूतस्वोपार्जितधनं साधारणपैतृकादिधनानुपघातेन नार्जितं स्यात् तदा साधारणपैतृकादिधनाद्युपघातार्जितं धनं ज्येष्ठभ्रातुरेवासाधारणं जातम्। अतस्तद्धनेन कृतो यो वाणिज्यव्यापारस्तत्र व्यापारे यदि भ्रातृत्वेनांशित्वेनार्थात् साधारण्यप्रतियोगित्वेन कनिष्ठभ्रातुः शरीरायासस्तदा तद्वाणिज्यव्यापारोत्पन्नद्रव्ये कनिष्ठभ्रातुस्तृतीयांशाधिकारः, ज्येष्ठभ्रातुरसाधारणधनशरीरायासाभ्यां तद्धनोपार्जकत्वेनांशद्वयाधिकारित्वेनशरीरायाससमानकर्त्तुः कनिष्ठभ्रातुस्तृतीयांशाधिकारित्वस्य शास्त्रीयत्वात्।

यदि च प्राप्तव्यवहारेण भ्राता तद्वाणिज्यव्यापारमूलीभूतस्वोपार्जितधनं साधारणपैतृकादिधनाद्युपघातेन नार्जितं स्यादेव तद्धनेन कृतो यो वाणिज्यव्यापारस्तत्र व्यापारेऽपि भ्रातृत्वेनांशित्वेनार्थात् साधारण्यप्रतियोगित्वेन कनिष्ठभ्रातुः शरीरायासोऽपि नासीत्, यदि चेन् शरीरायासस्तदा

सोऽपि भृत्यत्वेनार्थाद् वेतनग्राहित्वेन, यत्प्रभुसमर्पिततत्त्रपत्रलिखित-सिद्धीदासीप्रत्यर्थिनीनिर्दिष्टोत्तरपत्रलिखिततात्पर्यार्थेनार्थाद् अर्थी तद्वाणिज्यव्यापारे भृत्यत्वेनार्थाद्वेतनं गृहीत्वा गुमास्ताशब्दप्रतिपाद्यत्वेन स्थित इत्यनेनावगम्यते तदा तद्वाणिज्यव्यापारोत्पन्नद्रव्ये कनिष्ठभ्रातुरंशित्वेन किञ्चिदपि ग्रहणाधिकारिता नास्ति, साधारणपैतृकादिधनाद्यनुपघातेन स्वोपार्जितधनस्य ज्येष्ठभ्रातुरसाधारणधनत्वेनासाधारणस्वत्वास्पदीभूतेन तेन धनेन कनिष्ठभ्रातुर्भ्रातृत्वेनांशित्वेनार्थात् साधारणप्रतियोगित्वेन शरीरायासमन्तरेण ज्येष्ठभ्रातृकृततद्वाणिज्यव्यापारोत्पन्नद्रव्ये ज्येष्ठभ्रातुरेवासाधारणस्वत्वेन, तत्र कनिष्ठभ्रातुरसाधारणप्रतियोगिनः किञ्चिदपि स्वस्वाभावात्—इति वङ्गदेशान्तर्गतश्रीहट्टप्रदेशप्रचलितदायभागदायतत्त्वदायभागटीकादायक्रमसंग्रहविवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

साधारणं समाश्रित्य यत्किञ्चिद्वाहनायुधम् ।
शौर्य्यादिनाप्नोति धनं भ्रातरस्तत्र भागिनः ॥

तस्य भागद्वयं देयं शेषास्तु समभागिनः—इति दायभागादिग्रन्थधृत(दाभा० पृ० १०७)व्यासवचनम् ॥ १ ॥

यत्र पुनः साधारणधनमात्रेणैकस्य व्यापारोऽपरस्य धनशरीरायासाभ्यां तत्रैकस्यैको भागोऽपरस्य भागद्वयं न्यायावगतमेव निबद्धम् । एतेन चैतदपि सिद्ध्यति यत् साधारणधनोपघाते सति यस्य यावतोऽशस्य स्वल्पस्य महतो वोपघातस्तस्य तदनुसारेण भागकल्पना कार्या—इति दायभाग(पृ० १०६।११०)ग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

तस्मात्साधारणधनोपघातार्जितं धनं विभजेदिति विधिः—इति दायभाग(पृ० ११५)ग्रन्थलिखनम् ॥ ३ ॥

तस्मादनुपघातार्जितमर्जकस्यैव, नेतरेषामिति सिद्धम्—इति दायभागग्रन्थलिखनम् (पृ० ११२) ॥ ४ ॥

एवं यत्रैकेन शरीरव्यापारमात्रेणापरेण च स्वधनशरीरायासाभ्याम-

र्जितं तत्र शरीरायासमात्रेणार्ज्जकस्यैकांशित्वं धनशरीरायासाभ्यामुर्ज्जकस्य द्व्यंशित्वं न्यायसाम्यात्—इति दायक्रमसंग्रह(पृ० २८)ग्रन्थलिखनम् ॥५॥

विभक्तेनाविभक्तेन वा साधारणधनानुपघातेनापरव्यापारनैरपेक्ष्येण च यदर्जितं तदर्ज्जकस्यैव तदविभाज्यमितरैः—इति दायक्रमसंग्रहग्रन्थ(पृ० २२)लिखनम् ॥ ६ ॥

एतद्ब्दीयमार्चमासीयचतुर्दशदिनसम्बन्धिबृहस्पतिवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्ज्जयतितराम्—
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

३३२५ नं—

२१—रोयकारी मिच्छिल सदर देओयानि आदालत मजकुरेर हाकिम श्रीयुत हेनरि सिकिसपीयर साहेबेर बैठके, तारिख ५ फिब्रेल ई सन १८३३ साल मोताबेक बाङ्गला सन १२३६ साल तारिख २५ माघ दिवस मङ्गलवार—

गोशाञीचन्द्रकविराज आपीलाण्ट
मोद्दर्म्मात जयमनी जीवतमान
ओ कृष्णमणि मोतओफात रेप्पाण्डण्टान

आपीलाण्टेर वकिल मुनशी हयदर आलि ओ रेप्पाण्डण्टानेर मध्ये जीवतमान एक जन मोद्दर्म्मात जयमणिर वकिल मुनशी गोलाम रसुल हाजिर आइल। एवं इस्तहारनामा जारि हओयाते ओ कृष्णमणी मोतओफात रेप्पाण्डण्टेर कोनो ओयारिश ए आदालते हाजीर आइल ना। एइ मोकद्दमा इन पूर्व्वे ई० सन १८३२ सालेर सेप्तम्बर माहार ० तारिखे आमार बैठके रोवकार एवं साम्यक[1] कागजात पडा हइया तारिख मजकुरेर रोवकारिर लिखित मते एइ आदालतेर पण्डितेर स्थाने व्यवस्था

---

१ सम्भलित-इति सावीयान् पाठ.।

तलब हइया आर व्यवस्था पौछिले पर गतो कल्य दरपेप हइया ताहार अनुमोधनान्ते दिवानखान प्रयुक्त मुलतवि छिल, अद्य पुनराय दरपेप हइल। एइ आदालतेर पण्डितेर व्यवस्थार लिखित यओयादेर द्वाराय एइ मोकद्दमार आशल मुर्दाईयान मोछम्मात कृष्णमणी ओ जयमनीके भैरवकविराजेर तरफेर जोवानि हेवार सत्वतार विषये जेलार आदालतेर व्यवस्था वहाल हइते छे। किन्तु जेलार फयछलार द्वाराते, याहा प्रविनशीयान कोर्टेर तजविज कालिन वहाल हइयाछे, प्रकाश हय ना ये कृष्णमणीर हक भैरवेर हेवार वुनियादे किम्वा आपन पिता गङ्गानारायणेर वत्राधिकारिर हकेर वुनियादे डिगरि हइयाछे। ये कारण फयछला मजकुरेते उहार हक दुइ प्रकारेइ जप्त[१] (?) हइयाछे, आर एइ जाये एइ विशय मोकद्दमार तजविजे मातवर हइयाछे ये हेतुक मोछम्मात कृष्णमणीर प्रविनशीयान कोर्टेर फयछलार पर मृत्यु हइयाछे, परे एइ विशयेर तलास आर तजविज उचित ये कृष्णमनीर हिस्यार पर उभय विवादिर मध्ये कोन व्यक्ति हकदार हइते पारे। आर पण्डितेर व्यवस्थार द्वाराते प्रकाश ये यद्यपि स्यात् मोछम्मात कृष्णमणी विवादीय वस्तु हेवार द्वाराय पाइया थाके, वस्तु मजकुरा ताहार स्वीधन हइवेक, आर उहाके क्षेमता आछे ये आपन इतसा मते हस्तान्तर करिते पारे, ये प्रकार जयमनी रेप्पाडण्ट एइ आदालतेर आपीलेर मौजेवातेर अओयावे ताहा उहाके हेवाकरण प्रकाश करियाछे। आर यदि स्यात् विवादीय वस्तु मोछम्मात मजकुराके पितृ वत्राधिकारिर सुरते पौछियाछे, आर आपीलाण्टेर पिता वैद्यनाथेर परे, ये प्रकार मोकद्दमार कागजातेते प्रकाश, मोछम्मात मजकुरार मृत्यु हइयाछे, तवे ए प्रकारे पण्डितेर व्यवस्था मते मोछम्मात कृष्णमणीर हकीयतेर हकदार ना आपीलाण्ट ना रेप्पाडण्ट हइते पारे। यदि गङ्गानारायणेर ओयारिप, ये केहो थाके, उहार हक राखिवेक। एइ सकल विशयेर प्रति

१. जड—व्या०।

दृष्टि हुकुम हइल, ये जयमणीर प्रकाश करा मोद्दम्मांत कृष्णमणीर हेवार विषये ये प्रकार एइ आदालतेर आपीलेर मोजेबातेर यञ्जोयावे लिखियाछे, रेस्पाइण्टेर स्थाने साबुद लइबेर पूर्व्वे एइ आदालतेर पण्डितेर स्थाने जिज्ञासा कराजाय ये यदि स्यात् कोन व्यक्ति मिलकियतेर दावि उत्तराधिकारिर एवं दानेर दुइ बुनियादे दरपेष करे, आर दुइ मतेइ डिगरि हासिल करे, आर तत्परे आपन हकीयत दोशराके हेवा करिया मृत्यु करे–ए प्रकारे एमत हेवा सिद्ध हइते पारे कि ना इति—

श्रीर्ज्जयतितराम

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतहेनरीठिकिसगौयरसाहेबधर्म्माधिकरणलिखितैतदब्दीयफेब्रुयरीमासीयपञ्चमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदब्दीयतन्मासीयषड्विंशतितमदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यदि काचित् स्त्री धनस्य प्राप्तीच्छापूर्व्वकाभियोगमुत्तराधिकारित्वदानाभ्यां करोति, एवमुत्तराधिकारित्वदानाभ्यां द्वाभ्यामेव हेतुभ्यां धर्म्माधिकरणतो जयपत्रं प्राप्नोति, तदनन्तरं धर्म्माधिकरणीयजयपत्रानुसारेण स्वस्वत्वास्पदीभूतधनमन्यस्मै दत्त्वा मृता स्यात्तदैतादृशदानं सिद्ध्यत्येव, उत्तराधिकारित्वदानाभ्यां द्वाभ्यामेव तस्याः स्वत्वस्य तद्धने निश्चितत्वेन द्वयोर्मध्ये दानस्यापि तत्स्वत्वोत्पादकस्य सत्त्वात्। एतद्विवादविषयनिमित्तमद्दत्तप्राचीनव्यवस्थालिखितप्रकारकतद्दानानुसारेण तस्यास्तस्मिन् यौतकीस्त्रीधने स्वेच्छया दानाधिकारस्य निष्प्रत्यूहत्वात्—इति बङ्गदेशचलितोपरिलिखितव्यवस्थाऽखिलग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

तद्व्यवस्थालिखितग्रन्थप्रमाणं पठ्यमानञ्चेति। एतदब्दीयमार्च्चमासीयद्वादशदिनसम्बन्धिसोमवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

२२—रोवकारि मिसिल सदर देओयानी आदालत मोकाम कलिकाता आदालत मजकुरेर हाकिम श्रीयुत रिचार्ड ओयालपोल साहेबेर बैठके। तारिख २० फिब्रेल इं सन १८३३ साल मों वाङ्गला सन १२३९ साल तारिख १० फाल्गुन दिवस बुधवार—

मोछम्मात लक्ष्मीप्रिया आपीलाएट

भैरवचन्द्रचौधुरि ओ गयरह रेष्पाडेण्टान्

आपीलएटेर उकिल मुनसि होसन आलि ओ हाजिर रेष्पाडेण्टर वकिल सदासुखपण्डित हाजिर आइल। आर द्वितीय रेष्पाडेण्ट जयचन्द्रचौधुरि इयानामा ओ इस्ताहारनामा जारि हओयातेओ सयं किम्वा उकिलेर द्वाराय हाजिर नाइ। एइ मकद्दमा गतो जानेर माहार ९ तारिखे आमार बैठके रोवकार एवं एइ मकद्दमार सामयक कागजात आर ३०२६ लम्बरेर मकद्दमार कागजात आर कमलाकान्तराय ओ गयरह बनाम गङ्गाधरसेनेर खास आपिलेर छओयाल ओ तत्तसमिभ्यारि कागजात पडा हइया तारिख मजकुरेर रोवकारि लिखित छओयालेर जओयाव एइ पण्डितेर स्थाने तलव हइया मुलतबि छिल, अद्य एइ आदालतेर पण्डितेर जओयाव दाखिल हओने पुनराय रोवकार आर गतो जानेन माहार २९ तारिखे अनुमोधन हओया भैरवचन्द्र रेष्पाडेण्टर छओयाल अनुमोधने आइल। तत्परे हाजिर रेष्पाडेण्टर उकिल सदासुखपण्डित कोर्ट आपीलेर दाखिल करा रेष्पाडेण्टर छओयालेर नकल एक केता दुइ टाकार किम्मतेर एक केता फिरिस्तिर द्वाराय दाखिल करे, पडागेल। यदि स्यात् एइ आदालतेर पण्डितेर जओयाव हइते प्रकाश आछे ये कृष्णचन्द्रेर पुत्र किर्त्तिचन्द्रेर त्याज्य वस्तु, ये ताहार माता जयदुर्गाते आसिया, जयदुर्गार मृत्युते किर्त्तिचन्द्रेर भग्नी पूर्णिमार पुत्र ब्रजनाथके अर्शे। किन्तु रेष्पाडेण्टर वकिल जाहेर करे जे विवादीय जायेगा जयदुर्गार मृत्यु हओने भैरवचन्द्रेर दखले आइसे। एवं एखन

दृष्टि हुकुम हइल, ये जयमणीर प्रकाश करा मोकद्दमात कृष्णमणीर हेबार विषये ये प्रकार एइ आदालतेर आपीलेर मोजेबातेर यथोयाचे लिखियाछे, रेस्पाण्डेण्टेर स्थाने साबुद तलबेर पूर्व्वे एइ आदालतेर पण्डितेर स्थाने जिज्ञासा कराजाय ये यदि स्यात् कोन व्यक्ति मिलकियतेर दावि उत्तराधिकारिर एवं दानेर दुइ बुनियादे दरपेश करे, आर दुइ मतेइ डिगरि हासिल करे, आर तत्परे आपन हकीयत दोसराके हेबा करिया मृत्यु करे—ए प्रकारे एमत हेबा सिद्ध हइते पारे कि ना इति—

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतहेनरीसिक्किसगीयरसाहेबधर्म्माधिकरणलिखितैतदब्दीयफेब्रुयरीमासीयपञ्चमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदब्दीयतन्मासीयषड्विंशतितमदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

'यदि काचित् स्त्री धनस्य प्राप्तीच्छापूर्व्वकाभियोगमुत्तराधिकारित्वदानाभ्यां करोति, एवमुत्तराधिकारित्वदानाभ्यां द्वाभ्यामेव हेतुभ्यां धर्म्माधिकरणतो जयश्च प्राप्नोति, तदनन्तरं धर्म्माधिकरणीयजयपत्रानुसारेण स्वस्वत्वास्पदीभूतधनमन्यस्मै दत्वा मृता स्यात्तदैतादृशदानं सिद्ध्यत्येव, उत्तराधिकारित्वदानाभ्यां द्वाभ्यामेव तस्याः स्वत्वस्य तद्धने निश्चितत्वेन द्वयोर्मध्ये दानस्यापि स्वत्वस्योत्पादकस्य सत्वात्। एतद्विवादविषयनिर्विचारणद्वयप्राचीनव्यवस्थालिखितप्रकारकृतदानानुसारेण तस्यास्तस्मिन् सौदायिकधने स्वेच्छया दानाधिकारस्य निष्प्रत्यूहत्वात्—इति बङ्गदेशप्रचलितोपरिलिखितव्यवस्थाशिखिनग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

तद्व्यवस्थालिखितग्रन्थप्रमाणं पठप्रमाणञ्चेति। एतदब्दीयमार्च्चमासीयाष्टादशदिनसम्बन्धिसोमवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

२२—रोयकारि मिसिल सदर देओयानी आदालत मोकाम कलिकाता आदालत मजकुरेर हाकिम श्रीयुत रिचार्ड ओयालपोल साहेवेर वैठके। तारिख २० फिवरेल इं सन १८३३ साल मों वाङ्गला सन १२३९ साल तारिख १० फाल्गुन दिवस बुधवार—

मोछम्मीत लक्ष्मीप्रिया   आपीलाण्ट
भैरवचन्द्रचौधुरि ओ गयरह   रेप्पाडेण्टान्

आपीलाण्टेर वकिल मुनसि होसन आलि ओ हाजिर रेप्पाडेण्टर वकिल सदासुखपण्डित हाजिर आइल। आर द्वितीय रेप्पाडेण्ट जयचन्द्रचौधुरि इयानामा ओ इस्ताहारनामा जारि हओयातेओ सयं किम्वा वकिलेर द्वाराय हाजिर नाइ। एइ मकद्दमा गतो जानेर माहार ६ तारिखे आमार वैठके रोवकार एवं एइ मकद्दमार साम्यक कागजात आर ३०२६ सम्वरेर मकद्दमार कागजात आर कमलाकान्तराय ओ गयरह वनाम गङ्गाचरणसेनेर खास आपिलेर छओयाल ओ तत्समिभ्यारि कागजात पड़ा हइया तारिख मजकुरेर रोवकारिर लिखित छओयालेर जओयाव एइ पण्डितेर स्थाने तलव हइया मुलतवि छिल, अद्य एइ आदालतेर पण्डितेर जओयाव दाखिल हओने पुनराय रोवकार आर गतो जानेर माहार २९ तारिखे अनुमोधन हओया भैरवचन्द्र रेप्पाडेण्टर छओयाल अनुमोधने आइल। तत्परे हाजिर रेप्पाडेण्टर वकिल सदासुखपण्डित कोट आपीलेर दाखिल करा रेप्पाडेण्टर छओयालेर नकल एक केता दुइ टाकार किम्मतेर एक केता फिरिस्तिर द्वाराय दाखिल करे, पडागेल। यदि स्यात् एइ आदालतेर पण्डितेर जओयाव हइते प्रकाश आछे ये कृष्णचन्द्रेर पुत्र किर्त्तिचन्द्रेर त्यार्य्य वस्तु, ये वाहार माता जयदुर्गाते आसिया, जयदुर्गार मृत्युते किर्त्तिचन्द्रेर भग्नी पूर्णिमार पुत्र व्रजनाथके अर्शे। किन्तु रेप्पाडेण्टर वकिल जाहेर करे जे विवादीय जायेगा जयदुर्गार मृत्यु हओने भैरवचन्द्रेर दखले आइसे। एवं एखन

पर्य्यन्त ताहार दखले आछे, आर पूर्णिमार पुत्र व्रजनाथेर मृत्यु हइयाछे। आर मोक्षमात पूर्णिमार सेत्री रोगि आछे, शास्त्रानुसारे वैमात्रेय भ्रातार किम्बा ताहार पुत्रेर त्याज्य वस्तुर अधिकारित्व राखे ना। एतदभिन्न मोक्षमात पूर्णिमार विवाह, जाहार सहित निश्चाय्य हइयाछिल परे ताहार सहित ना हइया अन्य व्यक्तिर सहित विवाह हइया पुत्र उत्पत्ति हय, आर ए प्रकार स्त्री एवं पुत्र पाल्वंपेर श्राद्धेर ओ पूर्वपुरुषेर त्याज्य वस्तुर अधिकारि हय ना, आर जखन मुहाइआनेर दायि कोटेर पण्डितेर व्यवस्थार लिखित, ये लक्ष्मीप्रियार विवादीय जायगार अधिकारित्व नाइ, इष्टे डिसमिस हय तखन रेप्पाडेण्टर ओजरेर तत्त्व ओ तदान्त करणेर आविश्यक थाकिल ना। जे प्रकार प्रिविकन्सियान कोटेर फयछला ताहार दृष्टान्त आछे। आर आपीलाण्टेर उकिल जिज्ञासा मते जाहेर करे ये पूर्णिमार पुत्र व्रजनाथेर एइ वयसे मृत्यु हइयाछे, आर एखन पर्य्यन्त ताहार पुत्र हओनेर सम्भावना आछे, आर मोक्षमात मजकुरार विवाह दुइ वार हय नाइ, एवं ताहार सेत्रि रोग नाइ इति। यद्यपि स्यात् मोकद्दमा निष्पत्त्य हओनेर पूर्व्वे विचार अनुसारे उभय विवादीर ओजर निष्पत्त्य करा उचित। ए कारण हुकुम हइल ये एइ रोवकारिर नकल एइ हुकुमे जे निचेर लिखित छओयालेर जओयाव आगतो मिछिले लेखेन एइ आदालतेर पण्डितके समार्पन करा जाय।

१ प्रथम—एइ ये यदि स्यात् पूर्णिमार पुत्र व्रजनाथेर जन्म हइया मृत्यु हइया थाके, तवे किञ्चिचन्द्रेर त्याज्य वस्तु, याहा व्रजनाथके आसियाछिल, ताहा ताहार माताके अर्शे कि ना।

२ द्वितीय—एइ ये पूर्वपुरुषेर वस्तुते उत्तराधिकारि येक्ति सेत्रि रोग जन्य ताहार अधिकारित्वते प्रतिवन्धक हय कि ना। यद्यपि स्यात् उक्त सेत्रिरोग अधिकारित्वर प्रतिवन्धक हय, तवे

व्रजनाथेन[1] त्याज्य वस्तु ताहार मातामहि मोक्षम्मात लक्ष्मी-प्रियाके अर्शिवेक कि ना।

३ तृतीय—एइ ये मोक्षम्मात पूर्णिमार विवाह कोन व्यक्तिर सहित निःधार्य्य हइया पूर्व्व कथवकथनेर बहिर्भूत हइया अन्य-कोन व्यक्तिर सहित विवाह हय आर ताहा हैते ताहार पुत्र सन्तान जन्मिया थाके। ए मते मोक्षम्मात पूर्णिमा किम्वा ताहार पुत्र कीर्त्तिचन्द्रेर त्याज्य वस्तुर अधिकारि हइवेक कि, पूर्णिमार माता लक्ष्मीप्रिया इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतरिचार्डओआलपोलसाहेबधर्म्माधिकरणालिखितैतदब्दीयफेबरवरीमासीयविंशतितमदिवसीयविनारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदब्दीयमार्च्चमासीयषोडशदिनसम्बन्धिशनिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि पूर्णिमापुत्रो व्रजनाथ उत्पन्नो भूत्वा मृतः स्यात् तदा कीर्त्तिचन्द्रस्य त्यक्तधने यदुत्तराधिकारित्वेन व्रजनाथेन प्राप्तम्, तद्धने यदि व्रजनाथस्य पुत्रमारभ्य पितृपर्य्यन्तानां मध्ये कश्चिन्नास्ति तदा तन्मातुरेवाधिकार इति।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा।

तत्सुतः—इत्यादि दायभागादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥१॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्युत्तराधि(कारि)व्यक्तेः श्वेतरोगस्तदा यथाशास्त्रप्रायश्चित्ताचरणं विना पूर्व्वाधिकारित्यक्तधने अधिकारस्य प्रतिरोधो भवत्येव, यथाशास्त्र-प्रायश्चित्ताचरणे सत्यधिकारस्य प्रतिरोधो न भवतीति।

---

१. व्रजनाथेर—इति साधीयान् पाठः।

अत्र प्रमाणम्—

मृते पितरि न क्लीबः कुष्ठ्युन्मत्तजडान्धकाः ।
पतितः पतितापत्यं लिङ्गी दायांशभागिनः ॥—इति दायभागादि-ग्रन्थधृतदेवलवचनम् ॥१॥

कुष्ठी अकृतप्रायश्चित्तः । कृतप्रायश्चित्तस्य पापाभावादंशित्वम्, पापस्यैवानंशितामूलत्वादिति साम्प्रतम्—इति विवादमङ्गार्णवग्रन्थ-(पृ० २१२ क)लिखनम् ॥२॥

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि पूर्णिमाया विवाहः केनचिद् व्यक्तिविशेषेण सह निर्द्धारितोऽपि पूर्व्वकथाग्रहिर्भावेणान्येन केनचित् सह विवाहो जातः स्यादेव तेन पुरुषेण पूर्णिमायाः पुत्रो जनितश्चेत्तदा तस्याः पूर्णिमायाः किंवा[1] तत्पुत्रस्य कीर्त्तिचन्द्रत्यक्तधने एतद्विवादविषयनिविष्टारमहत्तपूर्व्वव्यवस्थालिखितप्रकारेणाऽधिकारो भवत्येव—इति वङ्गदेशचलितोपरिलिखितव्यवस्थालिखितग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

एतदब्दीयमाघमासीयत्र्यविंशतितमदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

२१—रोबकारि मिछिल सदर देओयानि आदालत मोकाम । कलिकाता आदालत मजकुरेर हाकिम श्रीयुत रिचार्ड ओयालपूल साहेबेर बैठके, तारिक २० फिवरेल ई सन १८३३ साल मोतावेक बाङ्गला सन १२३९ साल तारिख १० फाल्गुन दिवस बुधवार—

दुलारसिंह ओ गयरह आपीलाण्टान्
राणी पद्मावती ओ गयरह रेस्पाडण्टान्

---

१. किम्वा—व्यप० ।

आपीलाण्टानेर उकिलान् मुनशी होशन आलि श्रो मुनशी आजराह आलि आर राणी पद्मावती रेस्पाडण्टेर उकिलान् सदासुखपण्डित लाला वस्तिलाल हाजिर आइल श्रो आपीलाण्टानेर उकिल मुनशी दाद्दार वक्स श्रो रेस्पाडण्टेर उकिल मुनसी गोलाम बतुल वेयारामी श्रोजरे हाजिर नाइ। एइ मोक्; ईमा एइ मासेर १४ तारिखे आमार बैठके रोवकार हइया प्रीविनशीयाल क्रोटेर नालिसि आरजि श्रो गयरह कागजात लम्बर पर्य्यन्त पडा हइया मुलतवि छिल, अद्य पुनराय रोवकार हइया प्रीविनशीयाल क्रोटेर बाकि कागजात फयसला पर्य्यन्त एवं एइ आदालतेर कागजात अनुसोधने श्राइल। बोध हइल ये आपीलाण्टान् साबेक मुद्दाइयान परगणे पीयाखालि श्रो गयरह महालते खेराजी श्रो लाखेराजी दखल पाश्रोनेर दाविते एइ एजहारे नालिस करे ये परगणे पीयाखालि श्रो गयरह मुद्दाइश्रानेर पितामह गरिबदासेर हासिल करा, उक्त गरिबदाप ताहाते जिवद्दशा पर्य्यन्त दखलिकार थाकिया पाच पुत्र हरिसिंह श्रो जयसिंह श्रो रनसिंह श्रो भानुसिंह श्रो अचलसिंह मुद्दाइश्रानेर पिताके राखिया मृत्यु हय। हरिसिंह श्रो ताहार मृत्युर पर शुभकरणसिंह तस्य पुत्र आर शुभकरणसिंहेर मृत्यु, ये सन १२१६ सालेर फाल्गुन माहाते हइयाछे, ताहार पर पहुपतसिंह आर पहुपतसिंहेर मृत्युर पर रङ्गलालसिंह भ्रातृगण श्रो पितृव्यदिगेर अनुमति श्रो एतर्फाके पितृ-पितामह त्याज्य वस्तुर पर एवं चकदेनाओरि श्रो गयरहर उपर, याहा ताहार मुनाफा हइते खरिद हय, काबेज श्रो दखलिकार एवं उसुल तहशीलेर कर्म्मकर्त्ता थाकिया, भ्रातृगण श्रो पितृव्यदिगेर एवं मुद्दाइश्रानेर प्रतिपालन करितेछिल। रङ्गलालसिंहेरश्रो सन १२३२ साले निःसन्तान श्रो अविवाहित विणा श्रोछी मोकरार मृत्यु हइल, आर मुद्दाइश्रान व्यतिरेक उहारदिगेर उत्तराधिकारि श्रो पिण्डाधिकारि द्वितीय केह नाइ, एवं शास्त्रानुसारे मृत रङ्गलालसिंहेर श्राद्ध श्रो क्रिया-

কম্মে দুলারসিংহ মুদ্দাইর হস্তেতে হইয়াছে, ইতি। রাণী পদ্মাবতী মুদ্দাআলেহে জওয়াব দেয় যে পরগণে পৌয়াখালি হরিসিংহের হাসীল করা, আর চকদেনাওরি ও গয়রহ মুদ্দাআলেহের স্বামী পহুপতসিংহের পিতা শুভকরণসিংহের খরিদা। মুদ্দাআলেহের স্বামী পুষ্যপুত্র রাখনের বিষয়ে তাহাকে অনুমতি দেয় আর রঙ্গলালসিংহ কর্ত্তাপুত্র রাখনের ভার তাহার প্রতি অর্পন করিয়া এক কেতা ওছীয়তনামা এ বিষয়ের লিখিয়া মৃত্যু হয়। আর পূর্ব্ব পুরুষের শ্রাদ্ধ ও ক্রিয়াকর্ম্মেতে আপনি অশক্ত থাকন প্রযুক্ত স্থাব্য বস্তুর কর্ত্তার উত্তরাধিকারি তাহার স্থাব্য বস্তু হইতে নৈরাস হইতে পারে না। আর অমৃতলাল ও ঘরজোলাল ও কালী-প্রসাদ ও বিশনলাল মুদ্দাআলেহের জওয়াবের মজমুন কবুল করিয়া জওয়াব গুজরায়। আর প্রোবিনসিয়াল কোর্টের তজ-বিজ কালিন মুদ্দাইয়ানের দাবি ডিসমিস হয়। যদি স্যাত্ কাগজাত হইতে প্রকাশ যে মুদ্দাইয়ানের আশল দাবি রঙ্গলালের স্থাব্য বস্তুর বাবত, আর গরিবদাস ও গয়রহের স্থাব্য বস্তুর তল্লিক করার কারণ কিরল (?) পূর্ব্ব পুরুষের পরস্পর মৃত্যুর বিবরণ প্রকাশ জন্য লেখা গিয়াছে। আর আপীলাণ্টানের এজহার এই যে তাহারদিগের বংশে মৈথিলি শাস্ত্র চলন আছে—উচিত বোধ হয়। এবং রেস্পাণ্ডণ্টও তাহাতে অস্বীকার নহে। এ প্রযুক্ত এই মোকদ্দমার এই তজবিজ ও রোবকারে যে রঙ্গলালসিংহ, যে অবিবাহিত ও নিঃসন্তান মৃত্যু হইয়াছে, তাহার স্থাব্য বস্তুর উত্তরাধিকারিত্ব উভয় বিবাদি ও তৃতীয় ব্যক্তির মধ্যে কোন ব্যক্তি মৈথিলি দেশের প্রচলিত শাস্ত্রানুজাইক রাখে। পরে হুকুম হইল যে এই রোবকারির নকল এই হুকুমে যে উভয়ালের যওয়াব যে বিবাদীয় জমীদারী হরিসিংহ হইতে হরিসিংহের পুত্র শুভকরণ-সিংহে আর শুভকরণসিংহের মৃত্যুর পর শুভকরণসিংহের জ্যেষ্ঠ পুত্র পহুপতসিংহে, আর পহুপতসিংহে মৃত্যুর পর শুভকরণসিংহের কনিষ্ঠ পুত্র রঙ্গলালসিংহে বিনা বিভাগে অর্শিল। তৎপরে

रङ्गलाल निःसन्तान ओ अविवाहित मृत्यु हय, राखिल मुद्दाइयान अचलसिंहेर पुत्रगण आर अर्ज्जुनसिंह रणसिंहेर पुत्र आर तुलसीसिंह भानुसिंहेर पुत्र गरिवदासेर पुत्रगण हरिसिंहेर भ्रातृवर्ग आर मोद्दम्मात पद्मावती मुद्दाआलेहे पहुपतसिंहेर स्त्री आर शुभकरणसिंहेर दौहित्र उपेन्द्रलाल ओ दयालाल ओ गिरिधारिलाल ओ प्रेमलाल ओ जनकलालके परे। मैथिलि देशेर प्रचलित शास्त्र अनुजाइक रङ्गलाल मजकुरेर स्थाय्य वस्तु इहारदिगेर कोन व्यक्तिके अर्शिवेक–एक सप्ताह मध्ये वचन दृष्टान्त सम्वलित लिखेन एइ आदालतेर पण्डितके समर्पन कराजाय–इति।—

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतरिचार्डश्रीग्रालपोलसाहेबधर्म्माधिकरणलिखितैतदब्दीयफेब्रवरीमासीयविंशतितमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदब्दीयमार्च्चमासीयषोडशदिनसम्बन्धिशनिवासरे मया प्राप्तं तद्दपलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यदि विवादास्पदीभूतवराबकरस्थावरं (धनं) हरिसिंहस्य मरणानन्तरं तत्पुत्रेण शुभकरणसिंहेन प्राप्तम्, शुभकरणसिंहस्य मरणानन्तरं तज्ज्येष्ठपुत्रेण[1] पुहुपतिसिंहेन प्राप्तम्, तन्मरणानन्तर तद्भ्रात्रा रङ्गलालसिंहेनार्थात् शुभकरणसिंहस्य कनिष्ठपुत्रेणाविभक्तत्वेन प्राप्तम्, तदनन्तरं रङ्गलालसिंहोऽविवाहितो निस्सन्तान एवाचलसिंहस्य पुत्रानर्थिनः एवं रणसिंहस्य पुत्रमर्ज्जुनसिंहं भानुसिंहस्य पुत्रं तुलसीसिंहं चैवं पुहुपतिसिंहस्य पत्नीं पद्मावतीनाम्नीं प्रत्यर्थिनीं चैवं शुभकरणसिंहस्य दौहित्रानुपेन्द्रलालदयालालगिरिधारीलालप्रेमलालजनकलालान्[2] सत्त्वेष मृतः स्यात्तदा रङ्गलालत्यक्तधने रङ्गलालस्य पुत्रमारभ्य तत्प्रपितामहपुत्रपर्य्यन्तानामर्थाद् गरीबदासस्य पुत्रपर्य्यन्तानाम्मध्ये यदि कश्चिदस्ति तदा रङ्गलालप्रपितामहगरीबदासपौत्राणामर्थादर्थिप्रभृतीनां प्रयुक्तप्रश्नलिखितानामधिकारो रङ्गलालभ्रातृपत्नी पद्मावती यावज्जीवं स्वभर्त्तृकुलोपयुक्तग्रासाच्छादनस्यावश्यक-

१. तज्ज्येष्ठ०—व्यप०। २. °जनकलालान—व्यप०।

विधवाधर्माचारशीलयुक्तस्य चाधिकारिणी भवति—इति मिथिलादेशप्रचलितमनुविवादचिन्तामणिविवादरत्नाकरविवादचन्द्रकल्पतरुप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः—इत्यादिविवादचिन्तामण्यादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य वचनम् ॥१॥

बहवो ज्ञातयो यत्र सकुल्या बान्धवास्तथा ।

यस्त्वासन्नतरस्तेषां सोऽनपत्यधनं हरेत् ॥—इति विवादचन्द्रविवादरत्नाकरादि (वि० पृ० ५६६) ग्रन्थधृ बृहस्पति(पृ० २१६)वचनम् ॥२॥

अनन्तरः सपिण्डाद्यस्तस्य तस्य धनं भवेत् ।—इति मनुवचनम् ॥३॥

अनपत्यस्य धनं पत्न्यभिगामि तदभावे दुहितृगामि तदभावे मातृगामि तदभावे पितृगामि तदभावे भ्रातृगामि तदभावे भ्रातृपुत्रगामि तदभावे बन्धुगामि तदभावे सकुल्यगामि—इत्यादि विवादचिन्तामण्यादिग्रन्थधृतविष्णुवचनम् ॥४॥

बन्धुरत्र सपिण्डः सकुल्यः सगोत्रः—इति विवादचिन्तामणि(पृ० २१६)ग्रन्थलिखनम् ॥५॥

सपिण्डता तु पुरुषे सप्तमे विनिवर्तते—इत्यादि विवादचिन्तामण्यादिग्रन्थधृतबृहस्पतिवचनम्[1] ॥६॥

भरणं चास्य कुर्वीरन् स्त्रीणामाजीवनक्षयात्—इति विवादचिन्तामण्यादि(पृ० २५०)ग्रन्थधृतशङ्खवचनञ्चेति ॥७॥

एतदब्दीयापरैलमासीयतृतीयदिनसम्बन्धिबुधवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

१. बृहस्पतु-इति, फो० ।

२४—रोवकारि मिसिल सदर देओयानि आदालत मोकाम कलिकाता आदालत मजकुरेर हाकिम श्रीयुत रिचार्ड ओयाल-पोल साहेबेर बैठके। तारिख २५ आपरेल ई सन १८३३ साल मोताबके बाङ्गला सन १२४० साल तारिख १४ वैशाख दिवस बृहस्पतिवार—

मसम्मात लक्ष्मीप्रिया	आपीलाण्ट
भैरयचन्द्रचौधुरि ओ गयरह	रेस्पाडेण्डान

आपीलाण्टेर उकिल मुनसि होसन आलि ओ हाजिर रेस्पा-डेण्ड भैरवचन्द्रचौधुरिर उकिल सदासुखपण्डित हाजिर आइ-लेन, आर द्वितीय रेस्पाडेण्ड जयचन्द्रचौधुरि इयातामनामा ओ इस्ताहारनामा जारि हेतु आपनि किम्बा उकिलेर द्वाराय ए आदालते हाजिर नाइ। एइ मोकद्दमा भिन्न २ दिवसे आमार बैठके रोयकार हइया एइ आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था ओ कागजात आर उभयेर दाखिल करा दरखास्तादी पडा हइया व्रजनाथेर पिताके दरखास्त दाखिल करण हुकुम हइया मुलतवि छिल, अद्य पुनुराय रोवकार आर व्रजनाथेर पिता गौरमोहनचट्टोपाध्यार दरखास्त ओ व्रजनाथेर माता मोसम्मात पूर्णिमार दरखास्त पडा गेल। यदि स्यात् एइ आदालतेर पण्डितेर पूर्व्वेर ओ एइ क्षनेर व्यवस्थासकलेर द्वाराय प्रकाश आछे ये कीर्तिचन्द्रेर स्याव्य वस्तु व्रजनाथके, आर यदि स्यात् पूर्णिमार पुत्र व्रजनाथेर जन्म हइया मृत्यु हइयाथाके, तवे कीर्त्तिचन्द्रेर स्याव्यं वस्तु, याहा उत्तराधि-कारि हेतुते व्रजनाथके अर्शियाछिल, यदि व्रजनाथेर इस्तक पुत्र नां(?)पिता केह ना थाके, तवे ताहार माताके अर्शे, आर शेत्रि-रोगेर प्रायश्चित्त करणेते सेत्रो रोगी व्यक्ति उत्तराधिकारिर वाधि-त्य(?)पूर्व्वपुरुसेर विशयेते हय ना। किन्तु व्रजनाथेर पिता गौर-मोहनचट्टोपाध्याय वर्त्तमान आछे। आर मोछम्मात पूर्णिमा जाहेर करे ये विवादीय वस्तु आमार पितार स्याव्य वस्तु, ओ ताहार निज पुरुसेर, एवं उक्त मोसम्मात सन्तान हओनेर आ-

२५ आपरेल ई सन १८३३ साल मोताबक बाङ्गला सन १२४० साल तारिख १४ वैशाख दिवस वृहस्पतिवार—

गोपालरयहायेर अलि नओयावराय आपीलाण्ट

मोछम्मात भगवती कोडर ओ गयरह रेस्पाडण्टान्

आपिलाण्टेर उकिल सदासुखपण्डित ओ निलवेक्रमेन एडमेनष्टोन वेलि साहेब, मोछम्मात भगवतीकोडर रेस्पाडण्टेर तरफ हइते आपन नामेर एक केता ओकालतनामा ओ मेहनत-आनार बावत एक केता रसिद २५० टाकार एइ आदालतेर तहविलदारेर दस्तखति सम्बलित दाखिल करिया, ओ जिलुलाल रेस्पाडण्टेर उकिल मुनशी फकिर महम्मद हाजिर आइलेन। एइ मासेर १० तारिखे एइ मोकद्दमा आमार वैठके रोबकार हइया नालिसि आरजि ओ गयरह प्रविनशीयान कोर्टेर कागजात १७४ नम्बर पर्य्यन्त पड़ा हइया दिवावसान प्रयुक्त मुलतवि छिल। अद्य पुनराय रोबकार एवं प्रविनशीयान कोर्टेर बाकी कागजात फयछला पर्य्यन्त ओ एइ आदालतेर कागजात दृष्टे आइल बोध हइल ये आपीलाण्ट सावेक मुद्दाइ विवादीय ग्रामसकलेर दखल पाओनेर दाविते एइ वजहारे नालिश करे ये वायवायान छत्रतुण्डसिंह, ये सन्तानादि राखितो ना, आपन सहोदर भ्राता वाय छत्रतुण्डसिंहेर कन्या मोछम्मात राधामोहनकोडरके छत्रतुण्डसिंहेर अनुमतिमते आपन सन्ताने आनिया प्रतिपालन करिया, छत्रतुण्डसिंह मजकुरके कहिलेक ये आमि राधामोहनकोडरेर विवाह ओ कन्यादान करिवो, कन्या मजकुरेर गर्भे प्रथम ये पुत्र सन्तान हइवेक आमार विषयेर मालिक ओ पिण्डाधिकारि हइवेक। ताहार जओयावे छत्रतुण्डसिंह एकरार करिल आर उहाके अनुमति दिल ये कन्या मजकुरेर विवाह ओ कन्यादान करे; कन्या मजकुरेर प्रथम सन्तान आमार ओ तोमार विषयेर ओ मालामालेर मालिक ओ पिण्डाधिकारि हइवेक। तदनुसारे

कन्यादान करिल। नओयावरायेर पिता पेयारिलालेर अनुमति ओ अभिप्राय मते उपरेर लिखित विषये कन्यार विवाह नओयाव-रायेर सहित देओ याइया पुरोहित ओ गयरहर सन्मुखे कुशो आर गङ्गाजलेर सहित कन्यादान एवं पुत्रिकापुत्रेर वचने संकल्प करिल। ये प्रकार राधामोहनकोङरेर पुत्र गोपालस्यहा-येर जन्म हओनेर पर चूडाकरण ओ कर्णभेद ओ गयरह दाँडा-सकल आमले आनिया मृत्यु हइल। मोद्धम्मात भगवतीकोङर आसामी फैरादिर दावि ओ एजहार अस्वीकार एवं फलतुण्ड-सिंहेर रायव्रजराजसिंहके पुष्यपुत्र ओ कर्त्तापुत्र करण एवं ताहार दस्तावेज तहाके लिखिया देओन आर व्रजराजसिंह मजकुरेर शास्त्रानुसारे फलतुण्ड सिंह मोतओफाँर क्रिया ओ कर्म्म करण सम्वलित जओयाव देय। विचारकालिन मुद्दाइर दावि डिशमिष हय इति॥ यदि स्यात् चूडान्त हुकुम हओनेर पूर्वे शास्त्रेर आज्ञा फलतुण्डसिंहेर गोपालस्यहार पुत्रिकापुत्र ओ व्रजराजसिंह पुष्यपुत्र ओ कर्त्तापुत्र हओनेर विषये बोध करण उचित हइल। एजन्य हुकुम हइल ये एइ रोयकादिर नकल ओ आपीलाण्टेर साक्षीगणेर एजहार ओ व्रजराजसिंहेर कर्त्तापुत्रेर ओ सन्तानेर दस्तावेज सम्वलित एइ हुकुमे एइ आदालतेर पण्डितके समापन करा जाय ये निचेर लिखित छओयाल सकलेर जओयाव पश्चिम देश प्रचलित शास्त्रानुसारे एक सप्ताह मध्ये, यतो शीघ्र हइते पारे, लिखेन।

१—प्रथम—एइ ये एइ क्षणकार समय अर्थात् कलियुगे निःसन्तान व्यक्तिर आपन सहोदर भ्रातार कन्याके सन्तानरूपे लओन यथार्थ हय कि ना।

२—द्वितीय—एइ ये यदि स्यात् आपीलाण्ट ओ तहार साक्षीगणेर एजहार फलतुण्डसिंहेर कन्या राधामोहनकोङरके फलतुण्डसिंह आपन सन्तानरूपे लओनेर विषये ओ कन्यादान ओ पुत्रिकापुत्रेर कथा, उभयत फलतुण्डसिंह ओ फलतुण्डसिंह

ओ नओयावरायेर पिता पेयारिलालेर सहित स्थिर हओने ताहार दाँडासकले आमले आना, याहा मुर्दाआलेहेर अन्य २ साक्षीगण हइते ओ मुद्दाइर साक्षीगणेर एजहारे ऐ विषये सत्यता करे, कलतुण्डसिंहेर पुत्रिकापुत्र गोपालसहाय हइल कि ना।

३—तृतीय—एइ ये यदि स्यात् गोपालसहाय पुत्रिकापुत्र हओने उक्त व्यक्ति कलतुण्डसिंहेर त्याज्य वस्तुर मालिक ओ पिण्डाधिकारि हइवेक कि उहार ओ भगवतीकोडर।

४—चतुर्थ—एइ ये ब्रजराजसिंहके कर्त्ता पुत्र करण ओ सन्तानेते लओन, ये से आपन पितार ज्येष्ठ पुत्र ओ ताहार वयक्रम ३० वत्सरेर अधिक एव कयेक सन्तान आछे, उचित। किम्वा ताहार सत्वेताते उक्त व्यक्तिर पिता मातार अनुमति ओ वयक्रमेर निर्द्धार्य्य एवं आरमवर्गेर ओ हाकिमेर गोचरेर नियम आछे।

५—पञ्चम—एइ ये यद्यपि ब्रजराजसिंह कर्त्तापुत्रेर पर आपन आसल पिता ओ मातार श्राद्ध ओ क्रियाकर्म्म करिया ताहारदिगेर त्याज्य वस्तुर दखलिकार हइया थाके, तवे ताहार कर्त्तापुत्रता यथार्थ ओ वहाल थाकिवेक कि ना।

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतरिचार्डओआलपोलसाहेवधर्म्माधिकरखलिखितैतद्दीयापरेलमासीयाष्टविंशतितमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितार्थिप्रत्यर्थिद्व्युदरपाठितवृत्तान्तपत्राणि ब्रजराजसिंहस्य कृत्रिमपुत्रविषयकप्रश्नः। यदेतद्दीयमैमासीयैकादशदिनसम्बन्धिशनिवारे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

कलियुगे निःसन्तानेन व्यक्तिविशेषेण स्वकीयसहोदरभ्रातृकन्यायाः सन्तानत्वेनार्थात् कन्यात्वेन ग्रहणं धर्म्मशास्त्रानुसारेण न सिद्ध्यति, धर्म्मः

शास्त्रे तादृशविध्यभावात्, अपुत्रेण सुतः कार्य्यो यादृक् तादृक् प्रयत्नतः—
इति विधेरेव धर्म्मशास्त्रीयत्वादिति—

तत्र प्रमाणम्।

अपुत्रेण सुतः कार्य्यो यादृक् तादृक् प्रयत्नतः।

पिण्डोदकक्रियाहेतोर्नामसङ्कीर्त्तनाय च॥ इति दत्तकमीमांसादत्तकचन्द्रिकादिग्रन्थधृतमनुवचनम्[1] ॥१॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्यप्यर्थिनस्तन्निर्दिष्टत्वादुपस्थापितवृत्तान्तेन च सिलमन्तसिंहस्य कन्याया राधामोहनकोमराख्याया कुलमन्तसिंहेन स्वसन्तानरक्षानयनविषये कन्यादानपुत्रिकापुत्रविषये चोभयोः कुलमन्तसिंहसिलमन्तसिंहयो- र्नेनावरायपित्रा प्यारीलालेन सह स्थिरीकरणं तस्य रीतिसमुदायस्य भवनं यत्प्रत्यर्थिनोऽनभ्यासिगणैरर्थिसाक्षिसाहाय्येन च सत्यत्वमाप्नोति तथापि गोपालसहायः कुलमन्तसिंहस्य पुत्रिकापुत्रो न जात एतादृशपुत्रिकापुत्रस्य शास्त्रालिखितत्वात्, औरसदत्तकृत्रिमपुत्रातिरिक्तपुत्राणां कलियुगे विशेषतः शास्त्रनिषिद्धत्वाच्च। एवञ्च सति कुलमन्तसिंहस्य पत्नी भगवती कोमराख्या एव तत्त्यक्तधने अधिकारिणी भवतीति तृतीयप्रश्नस्योत्तरमप्यर्थादेव पर्य्यवसन्नमिति पृथङ् न लिखितमिति।—

अत्र प्रमाणम्—

अनेकधाकृताः पुत्रा ऋषिभिर्य्यैः पुरातनैः।

न शक्यास्तेऽधुना कर्त्तुं शक्तिहीनतया नरैः॥[2] इति दत्तकमीमांसादत्तकचन्द्रिकादिग्रन्थधृतवृहस्पति(पृ० २०७) वचनम्॥१॥

दत्तौरसेतरेषान्तु पुत्रत्वेन परिग्रहः।

इमान् धर्म्मान् कलियुगे वर्ज्यानाहुर्म्मनीषिणः॥ इति दत्तकमीमांसादत्तकचन्द्रिकाव्यवहारमयूखमिताक्षराटीकादिग्रन्थधृतशौनकवचनम् ॥२॥

दत्तौरसेतरेषान्तु पुत्रत्वेन परिग्रह इति च शौनकेन पुत्रान्तरनिषे-

---

१ वचनमिदं मनुस्मृतौ नोपलभ्यते। २ शक्तिहीनैरिदन्तनैरिति वृहस्प० पाठ।

धाद् दत्तौरसावेवाभ्यनुज्ञायेते। दत्तवदं कृत्रिमस्याप्युपलक्षणम्–इति दत्त-कमीमांसा(पृ० ३०)ग्रन्थलिखनम् ॥३॥

पत्नी दुहितरश्चैव–इत्यादि मिताक्षरादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥४॥

चतुर्थप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि ब्रजराजसिंहस्य कृत्रिमपुत्रीकरणमेवं सन्तानार्थे आनयनं यो ब्रजराजसिंहः स्वपितुर्ज्येष्ठपुत्र एवं त्रिंशद्वर्षाधिकवयस्कः, कतिपयसन्ताना अपि तस्य सन्ति, तदा मिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारमाधवव्यवहारकौस्तुभाद्यनेकग्रन्थमते तस्य कृत्रिमपुत्रत्वं न सिद्ध्यति। दत्तकपुत्रग्रहणविषये ये ये नियमाः मिताक्षरादिग्रन्थेषु लिखितास्ते सर्वे नियमाः कृत्रिमपुत्रविषयेऽपि मिताक्षरादिग्रन्थेषु लिखिताश्च। एवमात्मीयवर्गस्य राज्ञश्च विज्ञापनमन्तरा प्रकारान्तरेण तस्य कृत्रिमपुत्रतायाः सत्यत्वनिश्चये सति मनुमते तस्य कृत्रिमपुत्रत्वं सिद्ध्यति। मनुवचने केवलं सजातीयत्वकृत्रिमपुत्रीकरणयोर्द्वयोरेव कृत्रिमपुत्रकरणे प्रयोजकत्वमिति—

अत्र प्रमाणम्—

एवं क्रीतस्वयंदत्तकृत्रिमेष्वपि योज्यं समानन्यायत्वात्—इति मिताक्षरा(पृ० २२४)ग्रन्थलिखनम् ॥१॥

क्रीतस्वयंदत्तकृत्रिमेष्वपि समानन्यायत्वादेकपुत्रज्येष्ठपुत्रयोर्निषेधः–इति वीरमित्रोदय(पृ० ६१०)ग्रन्थलिखनम् ॥२॥

सदृशं यं प्रकुर्वीत गुणदोषविचक्षणम्।
पुत्रं पुत्रगुणैर्युक्तं स विज्ञेयस्तु कृत्रिमः॥ इति मनु(९।१६९) वचनम् ॥३॥

पञ्चमप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्यपि ब्रजराजसिंहः कृत्रिमपुत्रभवनानन्तरं स्वकीयजनकपितुः स्वजनन्या मातुश्च श्राद्धादिक्रियाः कृत्वा तयोस्त्यक्तधने आयत्तत्वं संपादितवान् स्यात्तदा तस्य कृत्रिमपुत्रत्वं मिताक्षरानुपरिलिखितग्रन्थानुसारेण न सिद्ध्यति, मनुशुद्धिविवेकग्रन्थानुसारेण सिद्धमप्रामाण्यं च भवितुं शक्नोति–इति पश्चिमदेशचलितमनुमिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारमयूखव्यवहारमा-

घवव्यवहारकौस्तुभदत्तकमीमांसादत्तकचन्द्रिकाशुद्धिविवेकादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

गोत्ररिक्थे जनयितुर्न्न भजेद्दत्रिमः सुतः।

गोत्ररिक्थानुगः पिण्डो व्यपैति ददतः स्वधा॥ इत्यत्र दत्रिमग्रहणस्य पुत्रप्रतिनिधिप्रदर्शनार्थत्वात्—इति मिताक्षरा(पृ० २१५)ग्रन्थलिखनम् ॥१॥

स च पुत्रत्वकरस्य पिण्डप्रदः। निजपित्रादीनां पिण्डप्रदत्वं तस्य निवृत्तमेव—इति शुद्धिविवेकग्रन्थ (पृ० ३१ ख पं० ६)लिखनञ्चेति ॥२॥

एतदब्दीयफाल्गुनमासीयत्रयोदशदिनसम्बन्धिबृहस्पतिवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

सम्बोत—

२६— एक स्त्रीलोक पतिर मरणान्तर आपन पिता मातार स्थावर अस्थावर किञ्चित् विषय पाइया पित्रालय वास करिया भोगवान्ता थाकिया लोकान्तर हइले ऐ स्त्रीलोकेर पतिर सहोदर भ्रातार पौत्र ओ भर्त्तार भग्नीर पुत्र वर्त्तमान थाकाते ऐ अविरा स्त्रीलोकेर मातृ पितृ संक्रान्त प्राप्त स्थावर अस्थावर विषय ऐ दुइ जनार मध्ये काहाके अर्शिते पारे, यथाशास्त्र सम्बोतेर पार्श्वे शास्त्रेर निदर्शने उत्तर लिखिया पाठाइवा इति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं यदेतदब्दीयफाल्गुनमासीयत्रिदिनसम्बन्धिबृहस्पतिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—यदि काचित् स्त्री पतिमरणानन्तरं स्वपैतृकं मातृकञ्च स्थावरास्थावरकिञ्चिद्धनं

प्राप्य स्वपित्रालये वासं कृत्वा तद्धने भोगवती भूत्वा मृता स्यादत्र विवादा-स्पदीभूतं धनं तया उत्तराधिकारित्वेन प्राप्तमिति प्रश्नपत्रेण स्पष्टतरतया अवगमात्तन्मरणोत्तरं तस्याः स्त्रियाः पत्युः सहोदरभ्रातुः पौत्रस्य वङ्गदेशीयाक्षरलिखितप्रश्नलिखितस्य तस्याः पत्युः सहोदरभ्रातुर्दौहित्रस्य वा पारसीकलिपिलिखितप्रश्नलिखितस्य तस्याः पत्युर्भागिनेयस्य च तत्संक्रान्ततदितरपूर्वस्वत्वधने तत्संक्रान्ततन्मातृपक्षधने च नाधिकारः। यथा पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्य मृतस्य धने पत्न्या उत्तराधिकारित्वेनाधिकारे जाते सत्यपि पत्न्या मरणोत्तरं तद्धनं तत्स्वत्युत्तराधिकारिणामेव भवति तथा पुत्रादिपत्नीपर्यन्तरहितस्य मृतस्य धने दुहितुरुत्तराधिकारित्वेनाधिकारे जाते सत्यपि दुहितुर्म्मरणोत्तर तत्पितुर्ये उत्तराधिकारिणस्तेषामेव तद्धनं भवति, प्रकृते तु तस्याः स्त्रियाः पत्युः सहोदरभ्रातुः पौत्रस्य तस्याः पत्युः सहोदरभ्रातुर्दौहित्रस्य वा तस्याः पत्युर्भागिनेयस्य वा तस्याः पितुर्म्मातुश्चोत्तराधिकारित्वाभावात्—इति वङ्गदेशचलित-दायभागदायतत्त्व-दायभागटीका दायक्रमसंग्रहविवादार्णवसेतु-विवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव—इत्यादि दायभागादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम्॥१॥

अपुत्रा शयनं भर्त्तुः पालयन्ती गुरौ स्थिता।

भुञ्जीतामरणात् क्षान्ता दायादा ऊर्द्ध्वमाप्नुयुः॥—इति दायभागादिग्रन्थधृतकात्यायनवचनम्॥२॥

यद्वा पत्नीत्युपलक्षणं स्त्रीमात्राधिकारे अयमर्थो बोद्धव्यः—इति दायभागग्रन्थलेखनञ्चेति। ३॥

इङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यत्रयस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयजुलाइमासीयप्रथमदिनसंवलितसोमवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति।

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रस्य।

হুগলী—

২৭—রামচন্দ্রসরকার নামে এক ব্যক্তি আপন এক জোত-জমা ও বৈদ্যনাথ নামক এক পুত্র রাখিয়া লোকান্তর হয়। পরে বৈদ্যনাথ ঐ জমায় দখিলকার থাকে। বৈদ্যনাথ মজকুরের দুই স্ত্রী, তারামণি ও রাধামণি। তারামণি মজকুরার গর্ভজাত দুই পুত্র গঙ্গাধর ও রাজকুমার। রাধামণি মজকুরার গর্ভজাত এক পুত্র, আনন্দকুমার[1] এবং এক কন্যা আদরমণি। তাহার মধ্যে আনন্দকুমারের মৃত্যু আপন পিতা বৈদ্যনাথের সমক্ষে হয়। পরে দুই পুত্র, অর্থাৎ গঙ্গাধর ও রাজকুমার ও অদত্তা কন্যা অর্থাৎ আদরমণী ও আপন দুই স্ত্রীকে বর্ত্তমান রাখিয়া বৈদ্যনাথ মজকুর পরলোক প্রাপ্ত হয়। কিয়ৎকালান্তর গঙ্গাধর ও রাজকুমার আপন বৈমাত্রীয় অদত্তা ভগ্নী আদরমণী ও মাতা ও বিমাতাকে বর্ত্তমান রাখিয়া লোকান্তর হয়। পরে তারামণী মজকুরার মৃত্যু হইলে রাধামণী মজকুরা তাহার শ্রাদ্ধ আদি করিয়া আপন গর্ভজাত ঐ অদত্তা কন্যা আদরমণীর বিবাহ দিয়া লোকান্তর হয়। এই ক্ষণে ঐ বৈদ্যনাথ সরকারের পুত্রসম্ভাবিতা কন্যা আদরমণী ও বৈদ্যনাথ মজকুরের পিতৃদৌহিত্র, অর্থাৎ রামচন্দ্রসরকারের কন্যার পুত্র, শ্রী ঈশ্বরচন্দ্রবসু বর্ত্তমান। অতএব শাস্ত্র সম্মত বৈদ্যনাথ মজকুরের পৈতৃক স্থাবরাদি ধনের, অর্থাৎ জোতজমা মজকুরার, স্বত্তাধিকারিণী বৈদ্যনাথের পুত্রসম্ভাবিতা কন্যা শ্রীমতী আদরমণী কিম্বা তাহার পিতৃদৌহিত্র ঈশ্বরচন্দ্রবসু অধিকারি হইবেক-ইহার যথাশাস্ত্র যে ব্যবস্থা হয় লিখিবেন ইতি—

শ্রীর্জ্জয়তিতরাম্

প্রভুসমর্পিতপ্রশ্নপত্রং যদেতদব্দীয়জুনমাসীয়ঘপ্রদিনসম্বন্ধিবৃহস্পতিবাসরে ময়া প্রাপ্তং তদবলোক্য যাদৃশবোধো জাতস্তদনুসারেণোত্তরং লিখ্যতে—

---

১. আনন্দ—ব্যব০।

प्रश्नपत्रलिखितवृत्तान्ते सति मूलभूतधनस्वामिनो रामचन्द्रसरकारस्य मरणानन्तरं तत्त्यक्तधने तत्पुत्रस्य वैद्यनाथस्याधिकारे जाते सति तद्धनं वैद्यनाथस्यैव जातम्। अथतस्मिन् मृते तत्त्यक्तधने तन्मरणोत्तरं विद्यमानयोर्गङ्गाधरराजकुमारयोर्वैद्यनाथपुत्रयोरधिकारे जाते सति तद्धनं तयोरेव जातम्। अतस्तयोर्मरणोत्तरं तयोः पुत्रमारभ्य पितृपर्य्यन्तरहितयोस्त्यक्तधने तयोर्मातुस्तारामण्या अधिकारे जाते सति ताराममण्या मरणोत्तर तत्संक्रान्तस्वपुत्रधनं तत्पुत्रयोर्ये उत्तराधिकारिणस्तेषामेव भवति। तत्र च तत्पुत्रयोरुत्तराधिकारिणां मध्ये तयोः पुत्रमारभ्य पितृप्रपौत्रपर्य्यन्तानाम्मध्ये कश्चिन्नास्तीति प्रश्नपत्रेण स्पष्टतरतयावगमेनेदानीं गङ्गाधरराजकुमारयोः पितृदौहित्राधिकारस्य शास्त्रीयत्वेन गङ्गाधरराजकुमारयोः पितृदौहित्रोत्पत्तिसम्भावनायां सत्यां तत्स्वत्वान्यथानुपपत्त्या तयोर्भगिन्या आदरमण्यास्तयोः पितृदौहित्रोत्पत्तिमूलीभूतयोस्तयोरस्वत्वमूलीभूतायाश्च स्वपुत्रोत्पत्तेः प्राक्कालपर्य्यन्तम् (अधिकारः)। यथा पुत्रादिपत्नीपर्य्यन्तरहितस्य मृतस्य पितुर्द्धने दुहितुरधिकारस्तथा भ्रातृधनेऽपि (भगिन्या) अधिकारः। गङ्गाधरराजकुमारयोः पितृदौहित्रोत्पत्तिसम्भावनायां सत्यां तयोः पितामहदौहित्रस्येश्वरचन्द्रस्य नाधिकारः। सति च गङ्गाधरराजकुमारयोः पितृदौहित्रे स्वतस्तयोः पितुः पार्व्वणश्राद्धपिण्डदातरि स्वतस्तयोः पितुः पार्व्वणश्राद्धपिण्डदानानधिकारिण्यास्तयोर्भगिन्या आदरमण्या नाधिकारः, किन्तु तस्याः पुत्रस्यैव पुत्राणां वा अधिकारः—इति वङ्गदेशप्रचलितदायभाग दायतत्त्वदायभागटीका दायक्रमसंग्रह विवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरो भ्रातरस्तथा—इत्यादि दायभागादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥१॥

पितुरपि प्रपौत्रपर्य्यन्ताभावे पितृदौहित्रस्याधिकारो बोद्धव्यो, धनिदौहित्रस्येव—इति दायभागग्रन्थलिखनम् ॥२॥

यद्यपि दुहित्रभावे दौहित्रस्येव भगिन्या एव भागधिकारो युक्तस्तथापि तस्याः स्त्रीत्वेन पार्व्वणपिण्डदत्वाभावान्नाधिकारः, दुहितुस्त दौहित्रात्

पूर्व्वमप्यादक्षात् सम्भवतीत्यादिविशेषवचनादेवाधिकार इति भावः—इति-श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकालिखनम् ॥३॥

तदभावे पुनः पितृदौहित्र इति। तदभावे पितामहस्तदभावे पितामही तदभावे पितुः सोदरस्तदभावे पितुर्वैमात्रेयः तदभावे पितृसोदरपुत्रपितृ-वैमात्रेयपुत्रपितृसोदरपौत्राणां पितृवैमात्रेयपौत्राणां क्रमेणाधिकारः तदभावे पितामहदौहित्र०—इत्यादि *श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभाग-*टीकालिखनञ्चेति ॥४॥

इङ्गरेजीयचन्द्रप्रतिपाद्यत्रयस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयजुलाइमासीयप्र-थमदिनघस्मन्विधोमवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीर्ज्जयतितराम्

२८ प्रथम प्रश्न :—

यद्यपि कोन व्यक्तिरा दुइ सहोदर, अर्थात् मध्यम ओ कनिष्ठ भ्राता, आपनादेर ज्येष्ठ ओ तृतीय भ्रातार सहित पार्थक्य हइया, आपनारा दुइ सहोदरे एकान्नवर्त्तिते स्थावर अस्थावर वस्तु उपार्जन करिआ, मध्यम भ्राता एक पुत्र राखिया लोकान्त हय। ताहार पर क्रमे एकान्नवर्त्तिते थाकिया ऐ मध्यमेर पुत्र एक स्त्री, ओ कनिष्ठ भ्राता एक पुत्र ओ एक कन्या राखिया मृत्यु हय। एमत् स्थले ऐ कनिष्ठेर पुत्र पीडित जीवनासंशय हइया ऐ समुदय साधारणेर स्थावर अस्थावर वस्तु आपन सम्भाविता पुत्रिनी भग्नीके दान करिते पारे कि ना—यथाशास्त्र एइ प्रश्नेर प्रत्युत्तर लिखिवेन इति—

द्वितीय प्रश्न—

यद्यपि कोन व्यक्ति जीवनासंशय हइया साधारणेर कोन स्थावर अस्थावर वस्तु आपन भग्निके दान करिया ऐ दानपत्रे एमत नियम राखे ये यदि स्यात् आमि ए यात्रा रक्षा पाइ, एइ दानपत्र अकर्म्मण्य हइबेक; अतएव शास्त्रानुसारे एमत नियमित दान सिद्ध घटे कि ना—

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं दानपत्रञ्च यद्वेसदन्दीयमैमासीयषोडशदिनसम्बन्धिबृहस्पतिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्यपि चतुर्णां सोदरभ्रातॄणां मध्ये द्वौ भ्रातरावर्थान्मध्यमकनिष्ठौ स्वकीयज्येष्ठतृतीयभ्रातृभ्यां सह पृथगन्नौ[1], तावेव द्वावेकान्नौ स्थावरास्थावरधनमुपार्ज्जयतः तयोर्म्मध्ये मध्यमो भ्राता एकं पुत्रं संरक्ष्य मृतः स्यात्, तदनन्तरं क्रमेणैकान्ने स्थितस्तस्यैव मध्यमस्य पुत्र एकां पत्नीं संरक्ष्य मृतः, एष कनिष्ठो भ्राता एकं पुत्रं कन्याञ्चैकां रक्षित्वा मृतः स्यात् एवञ्च सति तस्यैव कनिष्ठस्य पुत्रः पीडितो जीवनसंशयमापन्नः सन् तदेव साधारणस्थावरास्थावरसमुदायधनं सम्भावितपुत्रायै स्वभगिन्यै दत्तवान् स्यात्तदा तद्दानं दातुः स्वांशयोग्ये सिद्धं भवितुं शक्नोति, तद्व्यतिरिक्ते सिद्धं भवितुं न शक्नोतीति—

अत्र प्रमाणम्—

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनम् ॥१॥

स्वभागान् यदि दद्युस्ते विक्रीणीयुरथापि वा।
कुर्य्युर्यथेष्टं तत्सर्व्वमीशास्ते स्वधनस्य वै॥ इति दायभागादिग्रन्थधृतनारदवचनम् ॥२॥

विभक्तस्येवाविभक्तस्थावरस्यापि स्वामिकृतदानादि सिध्यत्येव अन्नपातादिना पश्चादंशपरिचयसम्भवादिति भावः—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारदायभागटीकालिखनम् ॥३॥

---

१. पृथक् भ्रो—व्यप० ।

अत्र साधारणद्रव्यस्य समुदायस्यैकेन विक्रये परांशयोग्येऽसिद्धिः स्वांशयोग्ये तु सिद्धिः–इत्यादि विवादभङ्गार्णवग्रन्थ(१. विवा० ३०५ क) लिखनम् ॥४॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्यपि कश्चिद्व्यक्तिविशेषो जीवनसंशयमापन्नस्सन्नसाधारणस्थावरास्थावरवस्तु स्वभागिन्यै दत्त्वा तद्दानपत्रे एवं (तेन, नियमो लिखितः यद्यहमेतद्रोगान्मुक्तो भूत्वा जीवामि तदैतद्दानपत्रमकर्म्मण्यं भविष्यति। अत एवैतादृशं सोपाधिदानं तद्दानकर्त्तृयोग्यांशेऽपि तद्दानकर्त्तुस्तद्रोगविमुक्तत्वेन वर्त्तमानतायां सिद्धं भवितुं न शक्नोति, यतस्तद्दानपत्रे दात्रा लिखितमस्ति यद्यहमेतद्रोगान्मुक्तो भूत्वा जीवामि तदा अस्मद्वर्त्तमानतायामेतद्दानपत्रमकर्म्मण्यं भविष्यति, न तु वा सर्व्वं तथैव जातमिति। एवञ्च सति दातुस्तद्रोगान्मरणे सति तद्दानं दातुः स्वांशयोग्यं सिद्धं भवितुमर्हति। सोपाधिदानमुपाधिसिद्धौ सिद्धं भवति उपाध्यसिद्धावसिद्धं भवति–इति वङ्गदेशप्रचलितमनुदायभागदायतत्त्वदायक्रमसंग्रहविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरप्रमाणानि चत्वारि ॥४॥

सोपाधिदानमुपाध्यसिद्धावसिद्धम्—इति विवादभङ्गार्णवग्रन्थलिखनञ्चेति ॥५॥

इङ्गरेजीशब्दप्रतिशायत्रयस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयतुलाद्माघीयप्रथमदिनसम्बन्धिशुक्रवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति।

श्रीउर्जयपतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

२६—नं० ३१ खास आपील—

ई १८३४ साल—

सदर देओयानि आदालतेर पण्डितेर प्रति प्रश्न—

यद्यपि स्यात् कोन व्यक्तिर दुइ पुत्रेर मध्ये ज्येष्ठ पुत्र एक

कन्या राखिया पिता वर्त्तमाने मरे, आर कनिष्ठ पुत्र पितार मरणोत्तर एक पुत्र राखिया लोकान्तर करे—एमत स्थले ऐ कन्या ओ पुत्रेर मध्ये के धनाधिकारी हवेक—यथाशास्त्र प्रश्नेर उत्तर लिखिबा इति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रमेतद्विवादविषयनिविष्टपत्रजातञ्च यदङ्गरेजीशब्द-प्रतिपाद्यत्रयस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयजुलाइमासीयप्रथमदिनसम्बन्धिनो-ऽवसरे मया प्राप्त, तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यदि कस्यचिद्द्वयोः पुत्रयोर्म्मध्ये ज्येष्ठपुत्रः कन्यामेकां रक्षित्वा जीवति स्वपितरि मृतः स्यादेवं कनिष्ठपुत्रः स्वपितुर्म्मरणोत्तरमेकं पुत्रं रक्षित्वा मृतः स्यात्तत्र यदि पित्रा स्वस्वत्वास्पदीभूतं धनं विभज्य स्वपुत्राभ्यां दत्तं स्याद् यत् प्रभुसमर्पितपत्रान्तर्गतद्वादशाङ्काङ्कितबङ्गलाख्याष्टादशाधिकद्वादशशताब्दीयफाल्गुनमासीयपञ्चदशदिनलिखितएकरारनामाख्यकपत्रेणावगम्यते तदा तद्दानानुसारेण तद्धने द्वयोः पुत्रयोः स्वत्वे जाते सति द्वयोः पुत्रयोर्म्मरणानन्तरं तयोर्ये उत्तराधिकारिणस्तेषामेव तद्धनं भवति। तत्र द्वयोर्म्मध्ये ज्येष्ठपुत्र• पत्नीमेकां कन्यां चैकामेकं पुत्रं च विश्वनाथ-नामानं सत्यज्य जीवति पितरि मृत इति प्रभुसमर्पितपत्रजातेर्ज्ञातम्। एवं च सति तद्दानानुसारेण ज्येष्ठपुत्रयोर्ध्यांशे तत्पुत्रस्य विश्वनाथस्याधिकारे जाते सति तद्धनं विश्वनाथस्यैव जातमतस्तन्मरणानन्तरं तस्यकधने तदुत्तराधिकारिणामेवाधिकारस्तदुत्तराधिकारिणाम्मध्ये तस्य पुत्रमारभ्य पितृपर्य्यन्ताभावेन तन्मातुः करुणाया अधिकारे जाते सति करुणामरणो-त्तरं विश्वनाथस्य पितृ रामलोचननस्करस्य प्रपौत्रपर्य्यन्ताभावेन तत्पितु-र्दौहित्रस्य भागवतमण्डलस्याधिकारः। पितरि मृते पुत्रं रक्षित्वा मृतस्य कनिष्ठपुत्रस्यांशे तत्पुत्रस्याधिकारः। यदि च पित्रा स्वस्वत्वास्पदीभूतधनं विभज्य स्वपुत्राभ्यां न दत्तं स्यात्तदा तद्धने पितुरेव स्वत्वमस्ति। अत एव जीवति पितरि मृतस्य ज्येष्ठपुत्रस्य पैतृकधने स्वत्वानुत्पादाद् जीवति पिता-

मद्दे मृतस्य पौत्रस्य च विश्वनाथस्यानपत्यस्य पैतामहधने स्वत्वानुत्पादाच्च तत्तदुत्तराधिकारिणां तद्धने नाधिकारः। किन्तु पितृमरणोत्तरं मृतस्य कनिष्ठपुत्रस्य पैतृकसमुदायधने स्वत्वोत्पादेन पैतृकसमुदायधनं तस्यैव जातम्। अतस्तन्मरणोत्तरं तदुत्तराधिकारिणामेव तत्राधिकारः। तदुत्तराधिकारिणाम्मध्ये तत्पुत्रस्यैव प्राधान्येनाधिकारः—इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागदायतत्त्वदायभागटीकादायक्रमसंग्रहविवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनम् ॥१॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा—इत्यादि दायभागादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥२॥

पितुरपि प्रपौत्रपर्य्यन्ताभावे पितृदौहित्रस्याधिकारो बोद्धव्यो धनिदौहित्रस्येव—इति दायभागग्रन्थलिखनम् ॥३॥

पितर्य्युपरते पुत्रा विभजेयुर्धनं पितुः।
अस्वाम्यं हि भवेदेषां निर्दोषे पितरि स्थिते॥—इति दायभागादिग्रन्थधृतदेवलवचनम् ॥४॥

तत्र प्रथमं पुत्रस्तदभावे पौत्रस्तदभावे प्रपौत्रः—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकालिखनञ्चेति ॥५॥

अङ्गरेजीशब्दमतिशाघनपत्रिशदधिकाष्टादशशताब्दीयागस्तिनाखीयपक्षनवदिनसम्बन्धिसोमवासरे मयेव व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

३०—मोकाम कलिकातार सदर देओयानी आदालतेर पण्डित हइते सदर ब्रडेर प्रश्न :—

यदि स्यात् जेला सारङ्गवाशो क्षेत्रीयजातो राजा हरकुमारदत्त मौरुशी जमिदारिर पर दखिल काबिज थाकिया दुइ विवाहिता स्त्रीर गर्भजातक दुइ पुत्रके उत्तराधिकारि राखिया लोकान्तर हइल।

পরে তাহার জ্যেষ্ঠ পুত্র রাজা তেজপ্রতাব নামিক কুলাচার মতে সমুদয় অবণ্টক জমিদারির পর সম্ভোগী থাকিয়া আপন মৃত্যুর পূর্ব্বে বৈমাত্রেয় ভ্রাতা থাকিতেও অবণ্টক জমিদারি মজকুর হইতে ২১ মৌজা তিন স্ত্রীর মধ্যে এক স্ত্রী মহারাণী তিলত্তমাদেব্যার নামে দান করিয়া দানপত্রের নিচে এই বিবরণ লেখে যে আমার পরে মহারাণী মৌসুফ সমুদয় দেহাত জমিদারি মজকুর দান করা গ্রামসকল সম্বলিত আপণ একচারে রাখিয়া আপন কবজ তছরূপে আণীবেক, আর সময়ের হাকিমের সরকারে মালগুজারি আদায় করিতে থাকিবেন ইতি। তাহার দুই বৎসর পরে উক্ত রাজা নিঃসন্তান ঐ বৈমাত্রেয় ভ্রাতা রাজা অমরপ্রতাপসেন ও তিন স্ত্রীকে উত্তরাধিকারি রাখিয়া মরিল। ঐ তিন স্ত্রীর মধ্যে দানগ্রহিতা মহারাণী উত্তরাধিকারিত্ব এবং দানপত্র মজকুরের দ্বারায় সমুদয় জমিদারির পর দাবি করিতেছে। ও মৃত রাজার বৈমাত্রেয় ভ্রাতা রাজা অমরপ্রতাপসেন তাহার আপনার একান্নবর্ত্তী এবং অংশী থাকার দাবিতে এই বিবরণে যে পৈতৃক জমীদারী হওন কারণ এবং অবণ্টক ও মৃত রাজার কুষ্ঠব্যামহকালিন দানপত্র লেখা হওনে দান অসিদ্ধ, ও মহারাণীর খোরপোষ ভিন্ন অন্য কোন স্বত্ব না থাকীবাতে উত্তরাধিকারির দাবি করিয়া আপনাকে সমুদয় জমিদারীর স্বত্বাধিকারি ও কর্ত্তা করার দিতেছে। অতএব শাস্ত্রানুসারে ঐ দুই দাবিদার মজকুরানের মধ্যে কোন ব্যক্তি সকল জমীদারী মজকুরের পর দখল পাইবার স্বত্ব রাখে তাহার ব্যবস্থা চলিত শাস্ত্রসম্বলিত রিসমতে লেখেন ইতি—

শ্রীর্জ্জয়নিতরাম্

প্রভুসমর্পিতপ্রশ্নপত্রং যদষ্টেত্রীশস্দপ্রবিশত্যত্রয়স্ত্রিংশদধিকাষ্টাদশশতাব্দীয়সিতম্বরমাসীয়াষ্টাবিংশতিতমদিনশব্দঘিশনিবাসরে ময়া প্রাপ্তং তদবলোক্য যাদৃশবোধো জাতস্তদনুসারেণোত্তরং লিখ্যতে—

यद्यपि सारनदेशीयः क्षत्रियजातीयः कश्चिद्राजा हरकुमारदत्तनामा व्यक्तिविशेषः क्रमागतसराजकरस्थावरादिधने आयत्तत्वं संप्राप्य द्वयोः पत्न्योर्गर्भजातौ द्वौ पुत्रावुत्तराधिकारिणौ संस्थाप्य मृतः स्यात्, तदनन्तरं तस्य ज्येष्ठपुत्रो राजा तेजःप्रतापसेनः स्वकुलोचिताचारानुसारेण समुदायसाधारणसराजकरस्थावरादिधने आयत्तत्वं संपादितवान्, स्याच्चदा तन्मरणानन्तरं तस्य पुत्रपौत्रप्रपौत्राभावेन तत्यक्ताविभक्तसाधारणसराजकरस्थावरादिसमुदायधने तद्वैमात्रेयभ्रातुः राज्ञोऽमरप्रतापस्यैवाधिकारः, साधारणसराजकरस्थावरादिधने अंशग्रन्तरानुमतिमन्तरेणैतस्य स्यांशायोग्येऽपि दानाद्यनधिकारित्वेन साधारणसराजकरस्थावरादिसमुदायधने दानाद्यनधिकारित्वस्यार्थसिद्धत्वात् पश्चिमदेशचलितशास्त्रानुसारेण साधारणप्रतियोगिनि वैमात्रेयभ्रातरि विद्यमाने तत्यक्ताविभक्तधने पत्न्या अनधिकाराच्च। एवं राज्ञस्तेजःप्रतापसेनस्य पत्नीनां यावज्जीवं स्वभर्त्तुः कुलोचितग्रासाच्छादनोपयुक्तधने आवश्यकविषयाधर्म्माद्याचरणोपयुक्तधने चाधिकारः–इति सारनदेशचलितमनुमिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारमाधवव्यवहारमयूखव्यवहारकौस्तुभादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः—इत्यादि मिताक्षराविग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥१॥

पत्नी गृह्णीयादित्येतद्वचनजातं विभक्तभ्रातृस्त्रीविषयम्–इति मिताक्षराग्रन्थलिखनम् ॥२॥

सोदराणामभावे भिन्नोदरा धनभाजः–इति मिताक्षराग्रन्थलिखनम् ॥३॥

तस्मादपुत्रस्य स्वर्यातस्य विभक्तस्यासंसृष्टिनो धनं परिणीता स्त्री संयता सकलमेव गृह्णातीति स्थितम्—इति मिताक्षराग्रन्थ, पृ० २२१) लिखनम् ॥४॥

अविभक्तेषु द्रव्यस्य मध्यगत्वादेकस्यानीश्वरत्वात् सर्वाभ्यनुज्ञाऽवश्यं कार्य्या। विभक्तेषु तु विभक्तानुमतिमन्तरेणापि व्यवहारः सिद्ध्यत्येव— इति मिताक्षराग्रन्थलिखनम् ॥५॥

स्थावरस्य समस्तस्य गोत्रसाधारणस्य च ।
नैकः कुर्यात् क्रयं दानं परस्परमतं विना ॥—इति वीरमित्रोदयग्रन्थधृतव्यासवचनम् ॥६॥

स्वर्याते स्वामिनि स्त्री तु ग्रासाच्छादनभागिनी ।
अविभक्ते धनांशे तु प्राप्नोत्यामरणान्तिकम् ॥—इति वीरमित्रोदयग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥७॥

अङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यत्रयस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयाक्तूवरमासीयनवमदिनसम्बन्धिबुधवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

३१—रोवकारि मिछिज सदर देओयानि आदालत मो० कलिकाता आदालत मजकुरेर हाकिम श्रीयुत हेनरी सिकिसपीयेर साहेबेर बैठके । तारिख २४ जुलाइ ई सन १८३३ मोताबके बाङ्गला १० श्रावण सन १२४० साल दिवस बुधवार—

कृष्णकान्त पोद्दार—छापेल

सन हालेर १७ जुन तारिखेर हओया एइ आदालतेर हाकिम रिचार्ड ओयालपुल साहेबेर हुकुम मोताबक जेला जङ्गल महालेर जज साहेबेर रिटरण[१] सम्वलित ओ ऐ सनेर २१ मार्चेर लिखित तथाकार रोवकारिर सहित एवं छापेलेर छओयालेर नकल, जाहा जज साहेबेर मौछाफर रिटरणेर सामील एइ आदालते पौंछियाछिल, हाकिम रोवकारि ओ राजचन्द्रराय छापेलेर मोकर्द्दमार कागजात सम्वलित अद्य आमार बैठके दरपेष हइल, अनुमोदने आइल । हुकुम हइल जे साबेक व्यवस्था ओ सन हालेर २१ मार्च तारिखेर हओया जेला जङ्गल महालेर जज साहेबेर हालेर रोवकारि एइ आदालते पण्डितेर निकट

१ रिटरण—व्यव० ।

एइ हुकुमे पाठान जाय ये पण्डित मजकुर ऐ सकल अनुमोदन परे एइ विषयेर व्यवस्था ये उपरेर लिखित जेलार जजसाहेवेर रोवकारिर लिखित सुरत देवसेवार खरच ओ सेवाइतेर ओयाजिवि खरच मिनाइ बादे बाकी उपसत्व डिकरिर टाका आदायेर जन्य जाहा सेवाइतेर नामे हइयाछे खरच हइते पारे कि ना—एक सप्ताह मध्ये दाखिल करेण इति ॥

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतहेनरीसिकिमपीयरसाहेवधर्म्माधिकरण-लिखिताङ्गरेजीशब्दप्रतिशब्दमयलिखितदधिकाष्टादशशताब्दीयजुलाइमासीय-चतुर्विंशतितमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेव तदुपमर्पितपूर्व्व-व्यवस्थापत्रमेतदब्दीयमार्च्चमासीयैकविंशतितमदिवसीयजङ्गलमहालजिला-ख्यातान्तरधर्म्माधिकरणाधिपतिकृतविचारपत्रञ्च यदेतदब्दीयागस्तमासीय-द्वादशदिनसम्बन्धिसोमवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्त-दनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

जङ्गलमहालजिलाख्यान्तरधर्म्माधिकरणाधिपतिकृतविचारपत्रलिखि-तवृत्तान्ते सत्यपि देवसेवार्थं व्ययातिरिक्तस्य सेवाइतशब्दवाच्यस्यावश्यकव्य-यातिरिक्तस्य देवत्रभूम्युपस्वत्वस्य व्ययो जयपत्रलिखितरजतमुद्रापरिशोधना-र्थम्, यज्जयपत्रं सेवाइतशब्दवाच्यस्य नाम्ना जातम्, भवितुं न शक्नोति, देवत्रभूमौ तदुपस्वत्वे च देवमात्रस्वत्वेन तदितरस्वत्वाभावात् । यश्च देवत्र-भूम्युपस्वत्वादावश्यकदेवसेवार्थं किञ्चिन्नियोज्यावशिष्टस्य रक्षणार्थं व्यवहारो देवनिवेदनं विनापि पाचिरानाम् स च शास्त्रनिषिद्धत्वेन शास्त्रा-नुसारेण यथार्थो भवितुं न शक्नोति, शास्त्रनिषिद्धव्यवहारस्य शास्त्रानुसारे-णाप्रामाणिकत्वात्, विशेषतश्च लिखशास्त्रानुज्ञायामसत्यामेव लोकव्यवहा-रस्य शास्त्रे प्रमाणत्वेनोपन्यासाच्च, देवत्रविषये विशेषतश्चलितशास्त्रानुज्ञायाः प्राचीनव्यवस्थाया एतद्व्यवस्थायाश्च प्रथमप्रमाणे मनुवचनेन एव स्पष्टी-कृतत्वाच्च—इति वङ्गदेशचलितमनुरायभागदायतत्त्वदायभागटीकादाय-क्रमसंग्रहविवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

देवस्वं ब्राह्मणस्वं वा लोभेनोपहिनस्ति यः ।
स पापात्मा परे लोके गृध्रोच्छिष्टेन जीवति ॥ इति मनुवचनम् ॥१॥

प्रतिमादिदेवतार्थमुत्सृष्टं धनं देवस्वम्—इति मन्वर्थमुक्तावल्यां कुल्लूकभट्टव्याख्यानम् ॥२॥

तस्माच्छास्त्रानुसारेण राजा कार्य्याणि साधयेत् ।
वाक्याभावे तु सर्वेषां देशदृष्टमतं नयेत्—इति स्वर्त्तव्यवचनञ्चेति ॥३॥०॥

इङ्गरेजीशकप्रतिपाद्यत्रयस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयनवम्बरमासीयर-ञ्चविंशतितमदिनसम्बन्धिसोमवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

३२—रोवकारि मिछिल सदर देओयानि आदालत मोकाम कलिकाता आदालत मजकुरेर हाकिम श्रीयुत हेनरि सिक्सि-पीयर साहेबेर बैठके। तारिख २ अक्तुबर ई सन १८३३साल मातावेक बाङ्गला १७आश्विन सन १२४०साल दिवस बुधवार—

कालीकिशोररायचौधुरि   आपेलान्ट

आपेलेर उकिलान मुनशी हुसुन आलि ओ मुनशी सुआलि आर सदासुखपण्डित द्वितीय पक्ष रामबकसेर पक्ष हइते आपन नामेर एक फेता ओकालतनामा भैरवचन्द्रचक्रवर्त्तिर नामेर एक फेता मोकारनामा सम्बलित दाखिल करिया हाजिर आइले। आपेलेर जओयाल कोर्ट मुरशीदाबादेर[1] हाकिम चारल्स उलियम इष्टोएर साहेब ओ कोर्ट जाँहगीरनगरेर हाकिम केरिकेराफट साहेबेर सन हाजेर -६ जुन ओ २२ मार्च्चे तारिखेर लिखित हुकुमेर नाराजिते बाद्दा देनदार जगदीश्वरीर हिस्यार निलामेर विशये

---

१. मुरशीदाबादेर॰—व्यप॰ ।

छादेर हय। छाएलेर माता मोछम्मात मजकुरार जीवद्दशा पर्य्यन्त दखलि कायेमी जमिदारि निलाम नाहओयार प्रार्थनाय छाएलेर उकिलानेर नामेर ओकालतनामा ओ रामजयसारहयालेर नामेर मोक्तारनामा ओ कोर्ट मुरशीदाबाद ओ कोर्ट जाहांगीरनगरेर सन हालेर २६ जुन ओ २२ मार्च्च ओ इङ्गराजी सन १८३१ सालेर १९ मार्च्च तारिखेर लिखित तिन केता रोवकारी ओ इं सन १८२९ सालेर ९ एपरेलेर लिखित जेला मयमनसिंहेर देओयानि आदालतेर फयछलार नकल तिन केता ओ बाङ्गला ए धारतेर छोलेनामार नकल एक केता आर जेलार गुजाराण जगदीश्वरीर दरखास्तेर नकल एक केता ओ इं सन १८१२ सालेर २९ एपरेल ओ इं सन १८२६ सालेर ५ जुलाइ ओ २६ एपरेलेर लिखित एइ आदालतेर नकल तिन केता ओ इं सन १८२९ सालेर ३ दिजेम्बरेर लिखित जेला मजकुरेर देओयानि आदालतेर एक केता रोवकारिर नकल सम्वलित, जाहा अद्य मुनशी होशन आलि उकिल आर द्वितीय पक्ष रामबकसेर पक्षेर एक केता छओयाल, जाहा सदासुखपण्डित दाखिल करिलेक, तिन केता सेओयाय तिन केता नकल फयछला पढ़ागेल। यदि स्यात् मजुद कागजातेर द्वाराय प्रकाश हइतेछे--ये छाएल ओ मोछम्मात नारायणीदेव्या ओ जगदीश्वरीदेव्यार हक्कुक छोलेनामार द्वाराय रफा हइयाछे, आर ऐ छोलेनामा जेलार आदालते मञ्जुर ओ मातवर हइयाछे आर ताहार द्वाराय प्रकाश ये मोछम्मात जगदीश्वरीर मृत्युर पर ताहार हिस्या छाएलके आशीविक। एप्रकारे मोछम्मात मजकुरार देना आदायेर जन्ये ताहार हिस्या विक्रएर उपयुक्त हइवे पारे कि ना--आमार निकट ए विषय शास्त्रेर एलाका राखे। ए जन्ये चूडान्त हुकुम छादेर हओयार पूर्व्वे हुकुम हइल ये छाएलेर छओयाल एवं उद्दार दाखिल करा कागजात ओ द्वितीय पक्षेर छओयाल सम्वलित एइ आदालतेर पण्डितेर अग्रे पाठान जाय--ये पण्डित मजकुर

छोलेनामार लिखित सरतसकलेर अनुबोधने सपरेर लिखित छत्रोयालेर जओयाव एक सप्ताह मध्ये दाखिल करेण इति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतहेनरोसिक्सपीयरसाहेबधर्म्माधिकरण-लिखिताङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यत्रयस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयाक्तूबरमासीय-द्वितीयदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितैतद्विवाद-विषयनिविष्टपत्रजातञ्च यदेतदब्दीयदिशम्बरमासीयद्वितीयदिनसम्बन्धिसोम-वासरे मया प्राप्त तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यदि मूलधनिनो रामकिशोररायाभिधेयस्यैतद्धर्म्माधिकरणार्थिनः पितु-स्त्यक्तधने सन्धिपत्रानुसारेणैतद्धर्म्माधिकरणार्थिनो नारायणीदेव्याश्च जग-दीश्वरीदेव्याश्च स्वत्व निश्चितं स्याद्, एवं तदेव सन्धिपत्रं जिलाख्यावान्तर-धर्म्माधिकरणे सत्य जातं स्याद्, एवं तेनैव सन्धिपत्रेण जगदीश्वरीदेवी-मरणोत्तरं तदायत्तीभूतोंऽश एतद्धर्म्माधिकरणार्थिनो भविष्यतीत्यवगम्यमानं स्यात्, तदा जगदीश्वरीदेवीदेयऋणपरिशोधनार्थं तज्जीवनपर्य्यन्तमुपस्वत्व-भोगार्थं तत्पुत्रस्वत्वास्पदीभूततदायत्तीभूतोंऽशो[1] विक्रययोग्यो भवितुं न शक्नोति सन्धिपत्रतात्पर्य्यार्थधर्म्मशास्त्राभ्यां तथैव पर्य्यवसानात्—इति वङ्ग-देशचलितदायभागदायतत्त्वदायक्रमसंग्रहविवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादि-ग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

सर्व्वे ह्यनौरसस्यैते पुत्रा दायहराः स्मृताः—इति दायभागादि-ग्रन्थधृतदेवलवचनम् ॥ १ ॥

न स्त्री पतिपुत्रकृतं न स्त्रीकृतं पतिपुत्रौ—इति विवादार्णवसेतु(पृ० २६) विवादभङ्गार्णवादिग्रन्थ(१ विवा० २०८ ख)धृतविष्णुवचनञ्चेति ॥२॥०॥०॥०॥

---

१. तदायत्ती०—व्यप० ।

इङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यत्रयस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयदिशम्बरमासीयो-नविंशतितमदिनसम्बन्धिबृहस्पतिवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति —

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

३३—रोवकारि मिछिले सदर देओयानि आदालत मोकाम कलिकाता आदालत मजकुरेर हाकिम श्रीयुतहेनरीसिक्सिपीयेर साहेवेर वैठके। ८ तारिख अक्तुवर इं० १८३३ साल मोतावेक बाङ्गला २३ आश्विन सन १२४० साल दिवस मङ्गलवार—

मोछम्मीत भवानीदेव्या— छापेला—

छापेलार उकिल मुनशी माहाम्मद हानीफ ओ सदासुक-पण्डित ओ द्वितीय पक्षेर उकिल मौलुवि करम होशेन हाजीर आइल। गतो कल्य छापेलेर छओयाल दरपेष हइया गौरेर प्रति मुलतवि छिल, अद्य पुनराय रोवकार हइल। यदि स्यात् एइ मोकद्दमार हुकुम छादेर हओनेर पूर्व्वे एइ विषयेर तहकिक आविश्यक ये मोछम्मीत ब्रह्ममयी ताहार स्वामी गोपीनाथ बन्द्योपाध्याय ओछीनामा मोतावक आपनी ओछी सरवराहकार मकरर करणेर क्षेमता राखे कि ना। ए जन्य हुकुम हइल ये एइ मोकद्दमार कागजात एइ विषयेर जओयाव तलवेर जन्ये एइ आदालतेर पण्डितेर अग्रे पाठान जाय इति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतहेनरीसिक्सिपीयरसाहेवधर्म्माधिकरण-लिखिताङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यत्रयस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयाक्तूवरमासीया-ष्टमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितैतद्विवादविषय-निविष्टपत्रजातञ्च यदेतदब्दीयदिशम्बरमासीयद्वितीयदिनसम्बन्धिसोमवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

ब्रह्ममयी स्वपतिगोपीनाथवन्द्योपाध्यायकृताखीयन्नामाख्यपत्रानुसारेण स्वयं धनरक्षकस्यार्थाद्दखीशब्दप्रतिपाद्यस्य सरवराहकारशब्दवाच्यस्य च नियोगकरणक्षमतां रक्षत्येव, मृते पितरि जीवन्त्यां च मातर्य्यप्राप्तव्यवहाराणां पुत्राणां धनरक्षणोपायकरणे मात्रपेक्षया अन्येषां मुख्यतरत्वाभावात्—इति वङ्गदेशप्रचलितदायभागदायतत्त्वव्यवहारतत्त्वविवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिमन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

अप्राप्तव्यवहाराणां धनं व्ययविवर्जितम् ।

न्यसेयुर्बन्धुमित्रेषु–इत्याद्युपरिलिखितग्रन्थ(दात० पृ० १८) (दाभा० पृ० ६२)धृतकात्यायन(कास्मृ० ८४५, पृ० १०२)वचनम् ॥१॥

रक्ष्यं बालधनमाव्यवहारप्राप्तेः—इत्युपरिलिखितग्रन्थ(दाभा० पृ० ६३)धृतमुनिवचनम् ॥२॥

तयोरपि पिता श्रेयान् बीजप्राधान्यदर्शनात् ।

अभावे बीजिनो माता तदभावे च पूर्व्वजः ॥—इति व्यवहारतत्त्वादि(व्यत० पृ० ६४।६५)ग्रन्थधृतनारद(नास्मृ० पृ० ५८)वचनञ्चेति ॥

अत्र रेखीशब्दप्रतिपाद्यचतुस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयजानवरीमासीयपोडशदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

३४—रोवकारि मिछिल सदर देओानि आदालत मोकाम कलिकाता आदालत मजकुरेर हाकिम हेनरि सिक्सिपीयेर साहेबेर वैठके। इं १८३३ साल ओाके तारिख २१ नवम्बर मोतावक वाङ्गला १२४० साल ७ अग्रहायन रोज वृहस्पतिवार

लोकनाथदत्त—

ओ जगन्नाथदत्त—   वनाम   कुवेर भाण्डारि

साएलानेर वकिल मुनशी हयदर आली हाजिर आइल। सन हालेर ३० जुलाएर हओ। जेला मेमनसिंहेर जज साहेबेर फयशला, जाहा सन १८३२ सालेर २७ आगष्ट तारिखे सदर आमिन आलार फयशलार वरदिदे सादेर हय, ताहार असम्मतिर सायलानेर सओाल एक टाका मूल्येर कागजे उपरेर तारिखेर लिखित[1] जेला मजकुरेर जज साहेबेर ओ सदर आमिन आलार दुइ केता फयसला ओ वकिल मजकुरेर नामेर ओकालतनामा सम्वलित, जाहा सन हालेर ९ आक्तोबर तारिखे दाखिल हइयाछिल, पडागेल। साएलानेर सओालेर खास आपिल ग्राह्य अथवा अग्राह्य विशय हुकुम छादेर हओार पूर्व्वे हुकुम हइल ये सओायाल ओ गयरह काग-जात एइ आदालतेर पण्डितेर निकट पाठाइया हुकुमे देओा जाय—ये कागजात दृष्टे ए विशयेर व्यवस्था यद्यपि ये रूप सदर आमिन आलार फयशलाय मुदइ सायलानेर तरफ हइते प्रमाण हेतु लेखा आछे गुजरिया थाके, दासत्त साव्यस्थ निमित्ते एमत प्रमाण हेतु जथार्थ गण्य जाइबेक कि ना इति।

श्रीदुर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतहेनरीसिक्किसपीयरसाहेबधर्म्माधिकरण-लिखिताङ्गरेजीयाब्दप्रतिपाद्यत्रयस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयनवम्बरमासीयै-कविंशतितमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितैतद्विषा-द्विषयनिविष्टपत्रजातञ्च पश्चादब्दीयदिशम्बरमासीयैकविंशतितमदिनधर्म्मनिष-शनिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

सदर-आमीन-आलासंज्ञकस्य जयपत्रे अर्थिनां पक्षतो यथा हेतुर्दा-सत्वस्थिरीकरणार्थं लिखितः स च दासत्वस्थिरीकरणार्थं याथातथ्येन प्रमाणं

---

१ कागजेर उपर···तारिखेर लिखित···इति साधीयान् पाठः।

भवत्येव, तज्जयपत्रैरेतेषां 'दासादीनां शास्त्रोक्तपञ्चदशदासान्तर्गतदाया-
दुपागतत्वेनावगमात्—इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागदायतत्वदायक्रम-
सग्रहविवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

गृहजातस्तथा क्रीतो लब्धो दायादुपागतः—इत्यादि दायक्रमसंग्रह-
विवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थधृतनारदवचनम् ॥१॥

अङ्गरेजीशब्दमतिपाद्यचतुस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयजानवरीमासी-
यषोडशदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

तरजमा

प्रथम छओाल

३५—यदि स्यात् हिन्दुवर्गेर मध्ये कोनो ब्राह्मण व्यक्ति आपन
निकातन हइते निर्गत हइया अनुद्विप हय ओ ताहार निदर्शन
ना पाओा जाय, तबे ताहार मृत्युर अवधारित कोन पर्य्यन्त
गणना हइवेक, एवं ताहार मृत्युर अवधारित गणनार समय कि
प्रकार व्यवहार तस्य मृते उचित हइवेक, एवं ताहार निज विशय
कोन अवधि मृत व्यक्तिर धन बला जाइवेक, आर ए विशये कत
दिवस नियम अवधारित आछे-ताहार व्यवस्था एतद्देशीय चलित
शास्त्रानुजाइ श्लोक एवं ताहार तरजमार सहित वाङ्गला
भाशाय ।

द्वितीय छओाल

यदि स्यात् हिन्दु वर्ग्णेर मध्ये कोनो ब्राह्मण व्यक्ति आपन
निकातन हइते निर्गत हइया अनुद्दीस हय ओ ताहार निदर्शन
ना पाओा जाय, एवं ताहार निज विशय अन्य कोन व्यक्ति
अतिक्रम आक्रम करिया ग्रहण करे, तबे १२ वत्सर मध्ये

केह उत्ताधिकारित्वभावे ऐ व्यक्तिर निज विशये दाविदार हइते पारे कि ना—ताहार व्यवस्था एतद्देशीय चलित शास्त्रानुसारे श्लोक एवं ताहार तरजमार सहित वाङ्गला भाशाय इति ।

तृतीय छओाल

उपरेर लिखितव्य विशये ऐ अनुद्देशी व्यक्तिर स्त्री वर्त्तमान थाकिते ताहार अन्य कोन सरिक व्यक्ति ऐ अनुद्देश व्यक्तिर स्त्रीके अथिरा स्त्रीलोक एवं एक-अन्न-भुक्त ओ गृहवाशी ओ निज प्रतिपाल्य कहिया उत्ताधिकारित्त भावे ताहार विशयेर पर दावि-दार हइते पारे कि ना—ताहार व्यवस्था श्लोक वचन द्वाराय तरजमा सम्वलित वाङ्गला भाशाय—

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं यदङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यत्रयस्त्रिंशदधिकाशादश-शताब्दीयनवम्बरमासीयोनत्रिंशत्तमदिनसम्बन्धिशुक्रवासरे मया प्राप्तं तदव-लोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यदि हिन्दुजातीयानाम्मध्ये कश्चिद् ब्राह्मणः स्वकीयनिकेतनान्निर्गत्यानु-द्दिष्टः स्यात्, तथैव निर्गतस्य वार्त्ता न प्राप्यते चेत् तदा तस्य मरणावधारणं प्रस्थानदिनमारभ्य द्वादशसंवत्सरानन्तरं भविष्यति, एवं तस्य मृत्योरवधार-णसमये चायं व्यवहारः कर्त्तुमुचितो भविष्यति-शास्त्रानुसारेणाधिकारिणा पर्णनरं दग्ध्वा त्र्यहाशौचं विधाय आद्यश्राद्धादिकं कर्त्तव्यम् । एवं तत्स्वत्वा-स्पदीभूतधनं तन्मरणावधारणानन्तरक्षणमारभ्यैव तत्यक्त धनमिदमिति व्यवहर्त्तव्यमिति । एवमेतद्विषये गमनदिनमारभ्य दशवर्षसमासिसमय एवावधारित इति ।

अत्र प्रमाणम्—

गतस्य न भवेद्वार्त्ता यावद् द्वादशवार्षिकी ।

प्रेतावधारणं तस्य कर्त्तव्यं सुतवान्धवैः ॥—इति शुद्धितत्त्वादि-(शुत॰ पृ॰ २५६)ग्रन्थधृतनारदवचनम् ॥१॥

एवं पर्णनरं दग्ध्वा त्रिरात्रमशुचिर्भवेत्—इति तत्तद्ग्रन्थधृतादिपुराण-(शुत॰ पृ॰ ३१०)वचनञ्चेति ॥२॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि कश्चिद्ब्राह्मणजातीयो व्यक्तिविशेषः स्वनिकेतनान्निर्गत्यानुद्दिष्टः स्यात्तस्य वार्ता न प्राप्यते चेत्, एवं तत्स्वत्वास्पदीभूतधने उदासीनैर्बलाद् गृह्यमाणे[1] सति शास्त्रानुसारेणोत्तराधिकारिणः पत्न्यादयः मुद्दतमत्वेन प्रोषितधनरक्षाकरणाय[2] एव तत्र विषये तन्मरणावधारणानन्तरं स्वत्वमूलको(ऽधिकारोऽ)व्याहतो न भविष्यति[3] इति स्वाधिकाराय च द्वादशवर्षमध्येऽपि तत्राधिकर्तुमभियोक्तुमर्हन्तीति ।

अत्र प्रमाणम्—

अप्राप्तव्यवहाराणां धनं व्ययविवर्जितम् ।

न्यसेयुर्बन्धुमित्रेषु प्रोषितानां तथैव च ॥—इति दायभागादिग्रन्यधृतकात्यायनवचनम् ॥१॥

पत्नी दुहितरश्चैव–इत्यादि तत्तद्ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनञ्चेति ॥२॥

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रपौत्रपर्य्यन्तरहितस्यानुद्दिष्टस्य पत्न्यां वर्तमानायामश्यन्तरेण केनचित् कथञ्चिदप्यनुद्दिष्टधनेऽधिकर्तुं न शक्यते—इति च वङ्गदेशचलितदायभागादिग्रन्थसम्मता व्यवस्थेति ।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा—इत्यादि दायभागादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनञ्चेति ॥१॥

अङ्गरेजीशब्दमनिपायचतुस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयजानवरीमासीयसप्तविंशतितमदिनसम्बन्धीयसोमवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

१. गृह्यमाने—व्यप० । २. प्रोषितधनरक्षाकारा०—व्यप० ।
३. स्वत्वमूलक व्याहत भविष्यति—व्यप० ।

प्रथम लेखार भाषा—

हुजुरेर सुपुर्द करा सओयाल, जाहा इंरेजी सन १८३३ साले २९ नवम्बर मासे शुक्रवारे आमि पाइयाछिलाम, ताहार दृष्टे येमत बोध हइल तदनुसारे उत्तर लिखितेछि।

प्रथम प्रश्नोत्तरेर भाषा—

यदि हिन्दु जातिर मध्ये कोनो ब्राह्मण वाटी हइते प्रस्थान करिया अनुद्देश हइया थाकेन, ताहार कोनो समाचार ना पाओया जाय, त तबे ताहार मरण निश्चय १२ वत्सरेर पर हइवेक, आर ताहार मरण निश्चय हइले एइ प्रकार व्यवहार उचित हइवेक ये शास्त्रानुसारे ये अधिकारी हइवेक से पर्णनर अर्थात पत्रेर निर्म्मित नराकार दाह करिया ३ दिवस अशौच ग्रहण करिया आद्य श्राद्ध प्रभृति कर्म्म करिवेक, आर ऐ अनुद्देश व्यक्तिर धन ताहार मरण निश्चय यतन हइवेक, ताहार पर सेइ अवधि ऐ धनके मृत व्यक्तिर त्यक्त धन बलिया व्यवहार हइवेक, आर ए विषये गमन दिन अवधि १२ वत्सर पर्य्यन्त नियम आछे।

इहार प्रथम प्रमाण—

शुद्धितत्त्वप्रभृति ग्रन्थ धृतनारदमुनिवचनेर भाषा—

वाटी हइते प्रस्थान करिले ऐ व्यक्तिर १२ वत्सर पर्यन्त यदि कोन समाचार ना पाओया जाय तबे ताहार पुत्र ओ ज्ञातिरा मरण निश्चय बोध करिवेक इति—

ओ द्वितीय प्रमाण—

शुद्धितत्त्वादि ग्रन्थ धृतआदिपुराणवचनेर भाषा—

ऐ प्रकार पर्णनर अर्थात् पत्रेर निर्म्मित नराकार दाह करिया त्रिरात्र अशौच व्यवहार करिवेक इति—

द्वितीय प्रश्नोत्तरेर भाषा—

यदि कोन ब्राह्मण व्यक्ति आपन वाटी हइते गमन करिया अनुद्देश हइया थाकेन, ताहार कोन समाचार ना पाओया जाय,

আর তাহার ধন অন্য কোন ব্যক্তি আক্রমন করিয়া গ্রহণ করে, তবে শাস্ত্রানুসারে তাহার ওয়ারিশ, যে পত্নী প্রভৃতি তাহারা ঐ প্রবাসি ব্যক্তির অতি অন্তরঙ্গ—এ প্রযুক্ত ঐ প্রবাসি ব্যক্তির ধনরক্ষার এক্তিয়ার করণ জন্য আর ঐ বিষয়ে প্রবাসি ব্যক্তির মরণ নিশ্চয় হইলে, ঐ পত্নী প্রভৃতির মাবি হকীয়তের কো.. লোকসান না হইবার কারন ১২ বৎসরের মধ্যে ঐ পত্নী প্রভৃ.. ওয়ারিশ লোক ঐ বস্তু সে আপন অধিকার করিবার নিমিত্ত দাবী করিতে পারে ইতি—

ইহার প্রথম প্রমাণ—

দায়ভাগাদি গ্রন্থ ধৃত কাত্যায়নমুনি বচনের ভাষা—

নাবালগের ধন অযথার্থে ব্যয় না করিয়া নাবালগের অন্তরঙ্গ লোকের স্থানে গচ্ছিত রহিবেক, আর প্রবাসি ব্যক্তির ধনও ঐ প্রকারে রক্ষা করিবেক-ইতি ॥

দ্বিতীয় প্রমাণ—

দায়ভাগাদি গ্রন্থ ধৃত যাজ্ঞবল্ক্যমুনি বচনের ভাষা—

পুত্র ও পৌত্র ও প্রপৌত্র না থাকিলে মৃত ব্যক্তির ধন প্রথমে পত্নী পায়, পরে দুহিতা পায়, তৎপরে দৌহিত্র পায় ইত্যাদি।

তৃতীয় প্রশ্নোত্তরের ভাষা—

অনুদ্দেশ ব্যক্তির পুত্র পৌত্র প্রপৌত্র না থাকিলে পত্নী থাকিতে অন্য শরীকে কোন ক্রমে অনুদ্দেশ ব্যক্তির ধনে অধিকার করিতে পারে না। এই সকল ব্যবস্থা বাঙ্গলার চলিত দায়ভাগাদি-গ্রন্থানুসারিণী।

ইহার প্রমাণ—

দায়ভাগাদি গ্রন্থ ধৃত যাজ্ঞবল্ক্যমুনি বচনের ভাষা—

পুত্র ও পৌত্র ও প্রপৌত্র না থাকিলে মৃত ব্যক্তির ধন প্রথমে পত্নী পায়, পরে দুহিতা পায়, তৎপরে দৌহিত্র পায়, তৎপরে পিতা, তৎপরে মাতা, তৎপরে ভ্রাতা পায়—ইত্যাদি ॥

अङ्गरेजी सन् १९३४ साल तारिख सातइसा माह जानवरी रोज सोमवार एइ व्यवस्था आमी दाखिल करिलाम इति।

३६—रामदास शर्मा मुफलेह्र मुद्दाइ
राधाचरण शर्म्मा ओ गयरह मुद्दाआलेहे
सओालेर फर्द शदर देओानी आदालतेर पण्डितेर निकट—
सओालेर तफसि—

प्रथम सओाल—

यदि नान्दिमुखेर श्राद्ध स्वामी ओ स्त्रोर पक्षे हइते ना हइया थाके तबे एइ प्रकार विवाह सत्य हइते पारे कि ना—इति।

द्वितीय सओाल—

भ्राता ना थाकाते ओ ज्ञाति सपिण्ड थाकिते यदि नान्दिमुख ना हइयाथाके तबे विवाह सत्य हइते पारे कि ना—इति।

तृतीय सओाल—

एइ सरते—ये एक व्यक्ति, थाद्विजाति ब्राह्मण, आपन कन्यार विवाह कोन व्यक्तिर सहित स्थिर करिया, वाक्दान करिया ताहार मृत्यु हय। परे ऐ कन्यार विवाह अन्य व्यक्तिर सहित हइते पारे कि ना। आर यदि एक व्यक्ति, ये ताहार सहित विवाहेर कथोपकथन छिलो ना, विवाह करे—ताहा सत्य हइते पारे कि ना—इति।

चतुर्थ सओाल—

ऐ कन्यार विवाहेर समय ऐ कन्यार सपिण्डन ज्ञाति थाकिते सम्प्रदानेर क्रिया पुरोहित करिते पारे कि ना—यदि करिया थाके प्रामाण्य हइते पारे कि ना इति।

सप्तम* सओाल—

यदि एक व्यक्ति एक जन स्त्रीलोकके, ये ऐ स्त्रीलोक ताहार खुडार भग्नीर कन्या हय, एवं ऐ दुइ जने ज्ञातत्त खुडततो भ्राता

* पञ्चम—इति हरीधवान् पाठः।

৭৮ পুরুস তফাত হইয়া থাকে, বিবাহের কথা কহে, এবং কন্যার মাতার সপিণ্ড করণের দিবস বিবাহ হইয়া থাকে, তবে এ প্রকার বিবাহ সত্য বটে কি না ইতি।

ষষ্ঠ সওয়াল—

যদি এক ব্যক্তি এক স্ত্রী জয়কালী নামক ও এক পুত্র, দ্বিতীয় স্ত্রীর গর্ভজাত রাখিয়া ফৌত করে; পরে ঐ পুত্র আপন পিতার ত্যেজ্য বস্তুর পর দখিলকার হইয়া এক অবিবাহিতা কন্যা রাখিয়া ফৌত করে, পরে ঐ কন্যা আপন পিতার তেজ্য বস্তুর পর দখিলকার হয়; পরে এক ব্যক্তি কহে—যে আমী সন ১২২৭ সালে ঐ কন্যাকে বিবাহ করিয়া ছি, ও দ্বিতীয় ব্যক্তি কহে—জে আমী ঐ কন্যাকে সন ১২২৯ সালে ওহার পিতার বাক-দানানুসারে বিবাহ করিয়াছি, এবং আমার এক পুত্র ঐ কন্যার গর্ভে জন্মিয়াছিল, তাহাতে এ কন্যার মৃত্যু হয়, এবং তাহার শ্রাদ্ধের দিবস ঐ পুত্র আপন পিতা অর্থাৎ ঐ দ্বিতীয় ব্যক্তীর সমীপে মৃত্যু হয়, এ বিষয়ে যদি মোতঅফফাত মজকুরার বিবাহ করা সত্য হয় তবে জয়কালী মজকুরা উত্তরাধিকারিণী হয়, কি না। যদি বিবাহ সত্য না হয়। তবে কি আন্দাজ ওহাকে অর্শে ইতি।

সপ্তম সওয়াল—

যদি একজন স্ত্রী আপন স্বামী ও নাবালগ পুত্র রাখিয়া মৃত্যু হয়, ও মোতঅফফা মজকুরের পিতামহের এক স্ত্রী বর্তমান থাকে, পরে ঐ নাবালগ পুত্রের আপন পিতা মোৎঅফাত মজকুরার স্বামীর সমীপে মৃত্যু হয়, তবে এই দুই জনা, অর্থাত মোত-অফফাত মজকুরার স্বামী ও পিতামহের থাকেন, ইহার কোন ব্যক্তি ওয়ারিশ হইবেক ইতি।

শ্রীর্জ্জয়তিতরাম্

প্রভুবমর্পিতপ্রশ্নপত্রং যদঙ্গরেজীয়াব্দপ্রমিবাযত্রয়স্ত্রিংশদধিকাষ্টাদশশ-

ताब्दीयतुलाद्दमासीयपञ्चदशदिनसम्बन्धिसोमवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

यस्य कन्यायाश्च पञ्चतो विवाहकर्माङ्गीभूतनान्दीमुखश्राद्धं यदि न जातं स्यात्तथापि विवाहः सिद्धो भवितुं शक्नोति, अङ्गभूतकर्मणोऽकरणेऽपि प्रधानसिद्धेः शास्त्रीयत्वादिति।

अत्र प्रमाणम्—

प्रधानस्याक्रिया यत्र साङ्गं तत्क्रियते पुनः।

तदङ्गस्याक्रियायान्तु नावृत्तिर्न च तत्क्रिया॥—इति तिथितत्त्वादि-(तित० पृ० ११)ग्रन्थधृतछन्दोगपरिशिष्टवचनम्।

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि भ्रातृसत्त्वे सपिण्डसत्त्वेऽपि नान्दीमुखश्राद्धं न जातं स्यात् तथापि विवाहः सिद्धो भवितुं शक्नोतीति।

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरप्रमाणमेवेति।

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि कश्चित् श्रोत्रियब्राह्मणजातीयो व्यक्तिविशेषः स्वकीयकन्याविवाह-कथोपकथनं केनचित्सह स्थिरीकृत्य वाग्दानं कृत्वा मृतः स्यात्, पश्चात्तस्याः कन्याया विवाहोऽन्येन केनचित्सह कलौ भवितुं न शक्नोति, एवं येन सह विवाहकथोपकथनं न स्थितं स यस्मै वाग्दत्ता कन्या तस्मिन् विद्यमाने सति यदि विवाहं करोति तदा स विवाहः शास्त्रानुसारेण कलौ न सिद्ध्यतीति।

अत्र प्रमाणम्—

दत्तायाश्चैव कन्यायाः पुनर्दानं परस्य च—इति कलिवर्ज्यप्रकरणे उद्वाहतत्त्वादि(पृ० ११२)ग्रन्थधृतमुनिवचनम्॥

चतुर्थप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि तस्याः कन्याया विवाहसमये तस्याः सपिण्डसत्त्वे सम्प्रदान-क्रियाकरणे कन्यादानाधिकारिणोऽनुमतिस्तदा पुरोहितेनापि सम्प्रदानक्रिया

कर्तुं शक्यते, नान्यथा । यदि च पुरोहितेन कन्यासम्प्रदानं कृतं स्यात्तत्र कन्यादानाधिकारिणोऽनुमतिश्चेत्तदा प्रमाणं भवति नोचेन्न भवतीति ।

अत्र प्रमाणम्—

पिता पितामहो भ्राता सकुल्यो जननी तथा ।

कन्याप्रदः पूर्वनाशे प्रकृतिस्थ परः परः ॥—इत्युद्वाहतत्त्व(पृ० १२६) धृतमुनिवचनम् ॥१॥

स्वामिनोऽनुमतिसत्त्वे तु अस्वामिकृतविक्रयोऽपि सिद्ध्यति, व्यवहारोऽपि तथा—इति विवादभङ्गार्णवादि(म)न्य(१ विवा ३०३)लिखनम् ।

पञ्चमप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि उत्तमपुरुषबहिर्भूतपितृव्यसम्बन्धसम्बन्धभगिनीकन्यया सह विवाहकथोपकथन कृतम्, एवं कन्यामातृसपिण्डीकरणदिने विवाहो जातः स्यात्तदा तादृशविवाहः सिद्ध्यति । तत्र तस्याः कन्यायाः मातुः पतिविहीनायाः सपिण्डीकरणं वस्तुतः शास्त्रतो यद्यपि नायाति, तथापि प्रश्नपत्रे लिखितमस्तीति कृत्वा मयोत्तरं लिखितमिति ।

अत्र प्रमाणम्—

मातृतः पञ्चमीं त्यक्त्वा पितृतः सप्तमीं त्यजेत्—इत्युद्वाहतत्त्वादि(पृ० १०६)धृतमुनिवचनम् ॥१॥

पतिपुत्रविहीनायाः स्त्रिया नास्ति सपिण्डनम्—इति यत्तग्रन्थधृतमुनिवचनम् ॥२॥

षष्ठप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्येकः कश्चिद् व्यक्तिविशेषो जयकालीनाम्नीपत्नीमेका पत्न्यन्तरगर्भजातमेकं पुत्रञ्च त्यक्त्वा मृतः स्यात्तदनन्तरं स एव पुत्रः स्वपितृव्य (?) त्यक्तधने आयत्तत्वं सम्पाद्याविवाहितां कन्यामेकां विहाय मृतः स्यात्तदनन्तरं सा कन्यापि स्वपितृत्यक्तधने आयत्तत्वं सम्पादितवती स्यात्, तदनन्तरं कश्चिद् वदति "वङ्गालाख्यसप्तविंशत्यधिकद्वादशशताब्दे मयेयं विवाहिता" इति, द्वितीयः कश्चिद् वदति वङ्गालाख्योनत्रिंशदधिकद्वादशशताब्दे तत्कन्यापितृकृतवाग्दानानुसारेण मयेयं विवाहितेति, एवं तस्याः गर्भे मया एकः

पुत्रः जनित इति च, ततः सा मृता, एवं तस्याः श्राद्धदिने सोपि पुत्रः स्वपितुः समक्षं मृतः स्यादेवंविधविषये मृतायास्तस्याः विवाहस्य सत्यतायामसत्यतायां वोभयथैव जयकाली उत्तराधिकारिणी भवितुं न शक्नोति, सपत्नी पुत्रदौहित्रत्यक्तधने मातामहविमातुः, सपत्नीपुत्रत्यक्तधने विमातुश्चेदानीं वङ्गदेशप्रचलितशास्त्रानुसारेणाधिकाराभावात् । किन्तु मूलभूतधनस्वामिपत्नीत्वेन यावज्जीवं स्वभर्तृकुलोचितग्रासाच्छादनस्यावश्यकविधवाधर्माचरणोपयुक्तधनस्य चाधिकारिणी भवतीति ।

अत्र प्रमाणम्—

सर्वेषामपि तु न्याय्यं दातुं शक्त्या मनीषिणा ।

ग्रासाच्छादनमत्यन्तं पतितो ह्यददद्भवेत् ॥—इति मनु(९।२०२)-वचनम् ॥१॥

सप्तमप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्येका काचित् स्त्री स्वपतिमप्राप्तव्यवहारं पुत्रञ्च संरक्ष्य मृता स्यादेवं तस्याः स्त्रियाः पितामहस्यैका पत्नी च वर्तमाना स्यात्, पश्चात्सोपि अप्राप्तव्यवहारः पुत्रः स्वपितुः समक्षं मृतः स्यात्, तदा पतिपितामहपत्न्योर्वर्तमानयोर्मध्ये पतिरेवाधिकारी भवति । तस्याः स्त्रिया[1] मरणानन्तरं विवादास्पदीभूततद्धनेऽप्राप्तव्यवहारपुत्रस्यैवस्वत्वेनोत्तराधिकारित्वेन जातत्वेन तद्धनं तस्यैवाप्राप्तव्यवहारस्य जातम् । अतस्तन्मरणोत्तरं तस्यैवा(प्राप्तव्यवहारस्य ये उत्तराधिकारिणस्तेषामेव भवति, तस्याप्राप्तव्यवहारस्योत्तराधिकारिणां मध्ये तत्पुत्रमारभ्य दौहित्रपर्य्यन्ताभावेन तत्पितुरेवाधिकारस्य शास्त्रसिद्धत्वात् । जयकाल्याश्च धनिनोऽप्राप्तव्यवहारस्य मातामहविमातुः सपत्नीपुत्रदौहित्रस्य तस्यैवाप्राप्तव्यवहारस्य त्यक्तधनेऽधिकाराभावात्—इति वङ्गदेशप्रचलितमनुदायभागदायतत्त्वदायभागटीका-उद्वाहतत्त्वादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा—इत्यादि तत्तद्ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥१॥

१. स्त्रीया म०—ऽपपु० ।

अङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यचतुस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयफेवरवरीमासीयदशमदिनसम्बन्धिसोमवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

३७—रुयकारि मेछेल सदर देवोनी आदालते मोकाम कलिकाता आदालते मजकुरेर हाकिम हेनरि सिकिसपीयेर छाहेबेर बैठके। सन १८३३ इं २८ माहे नवम्बर मोताबेक सन १२४० बाङ्गला १४ माहे अग्रहायन दिवस वृहस्पतिवार—

रतनचन्द्र ओ किरतचन्द्र छापेलान्

छायेलानेर वकिल लालाबस्तिलाल हाजिर आसिलेक। छापलानेर छओाल सन हालेर २४ जुलाइर हओो क्रोट आजिमाबादेर हाकिम जेमछ हारिङ्गटीन छाहेवेर हुकुमेर नाराजिते जाहा सामछ कटवरट छाहेवेर अभिप्रायेर ऐक्यताय कोन व्यक्तिर अंशेर विना नामकरणे जायदाद निलामेर बावन छादर हय। हुकुम मजकुरेर तरदिद ओ० छापलानेर दाखिल करा आमानत टाका। फेरत हओोनेर प्रार्थनाय सन १८२९ इं० ११ शेतम्बरेर लिखित हुकुम गोपालचन्द्र ओ प्यारिलालेर एक किता छओोल आर २६ जुलाइर मस्तवार लिखित क्रोट मजकुरेर हाकिमेर रुयकारिर नकल एक किता सम्वलित, जाहा एइ मासेर १५ तारिखे दाखिल हइया छिल, पडागेल। प्रकाश हइतेछे ये आदालतेर कायदा ओ जाबेता ओ प्रकार नहे ये एजमालिर डिगरिर हालते रशदि अंश सुरतेर कएक व्यक्ति मुदाआलेहेमेर पर डिगरि जारी आमले आइशे। अतएव ए विषय सपरेर लिखित प्रेवनशीयाल क्रोटेर हुकुम जाबेता ओ दस्तुरेर अन्यथा नहिवेक। किन्तु जखन एजमालि डिगरि जारि जन्ये हुकुम हइल, उचित

छिल जे डिगरिर टाका जे अन्दाज अंश किरतनचन्द्र अथवा गोपालचन्द्र, अथवा किरवचन्द्र हइते दाखिल हइया थाके ताहा फेरत दिया अंशेर विना निर्द्दिष्टे ते सुमुदय पैतृक विपयेर निलामेर हुकुम छादर करेण। किन्तु चुडन्त हुकुमे छादरेर पूर्व्वे हुकुम हइल जे एइ विशयेर व्यवस्था एइ आदालतेर पण्डित हइते तलव हय ये पैतृक कर्ज्जेर वावत डिगरिर जारि हालते यद्यपि सन्तानेरा पितार लोकान्तरे पैतृक त्यज्य वस्तुर पर अंश स्तरते दखिलकार हइया थाकेन तवे डिगरिर टाका सन्तानदिगेर अंश हइते लओया जाइवेक, कि अंशेर विना निर्णय पितार त्यज्य वस्तु हइते उसुल हइवेक। आर छेरेस्तादार, यदि स्यात्, एइ मकर्द्दमार प्रमान एइ आदालतेर सेरेस्ताय थाके गुजरायेन। इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतहेनरीशिक्फ्रियनीयरसाहेबधर्म्माधिकरणलिखिताङ्गरेजीयाब्दप्रतिपाद्यत्रयस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयनवम्बरमासीयाष्टाविंशतितमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रतिरूपपत्रं यत्तदब्दीयदिसम्बरमासीयाष्टाविंशतितमदिनसम्बन्धिशनिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

यदि पैतृकर्णपरिशोधनार्थं धर्म्माधिकरणतो जयपत्रे प्रकाशिते सति पुत्राः स्वपितुर्मरणोत्तरं तत्त्यक्तधने अंशित्वेन आयत्तत्वं सम्पादितवन्तः स्युस्तदा जयपत्रविषयीभूतपैतृकऋणं पुत्राः स्वस्वांशानुसारेण स्वस्वांशत एव दद्युः, यतः पितुपरमानन्तरं तत्त्यक्तधने पुत्राणां यथा अधिकारस्तथैव पैतृकर्णपरिशोधनेप्यधिकारः। अतएव पितृमरणोत्तरमंशानुसारेण गृहीतपैतृकधनानां पुत्राणामंशानुसारेणैव पैतृकर्णपरिशोधनाधिकारस्य शास्त्रानुसारेण न्याय्यत्वात्—इति पाटलिपुत्रप्रभृतिदेशचलितमिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारमयूखव्यवहारमाधवव्यवहारकौस्तुभादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था।

अत्र प्रमाणम्—

रिक्थग्राह[1] ऋणं दाप्यः–इति उपरिलिखितग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य-वचनम् ॥१॥

पितर्य्युपरते पुत्रा ऋणं दद्यु र्यथांशतः।
विभक्ता अविभक्ता वा यो वा तामुद्वहेद्धुरम् ॥—इत्युपरिलिखित-ग्रन्थधृतनारदवचनम् ॥२॥

विभजेरन्सुताः पित्रोरूर्द्ध्वं रिक्थमृणं समम्–इति तत्तद्ग्रन्थधृतया-ज्ञवल्क्यवचनमिति ॥३॥

अङ्करेखीशब्दप्रतिपाद्यचतुस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयफिबरवरीमासी-याष्टाविंशतितमदिनसम्बन्धिशुक्रवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

नं० १४५५

१८—रूयकारि मिछिल आदालते सदर देओयानि मोकाम कलिकाता आदालत मजकुरार हाकिम हेनरि सिक्स्पीयर छाहेबेर बैठके। सन १८३३ ई इङ्गो तारिख २६ नवम्बर मोताबेक सन १२४० बाङ्गला १२ अग्रहायन दिवस मङ्गलवार—

राजा पटनीमन ओ राय धनशीधन　　　　आपिलाण्टान्।
राय मनोहरलाल स्वयं ओ अलि स्वरूप
जानिबे आनन्दिलाल ओ हरजयलाल ओ
मुकुन्दलाल ओ हरवनशीलाल नाबालगान् रेष्पाण्डण्टान्।

आपिलाण्टानेर वकिलान मुनशी होछन आलि ओ मुनशी दादार बखश ओ रेष्पाण्डण्टानेर वकिलान् मुनशी अलिउल्ला ओ मुनशी गोलाम आहमद हाजिर आसिलेक ओ रेष्पाण्ड-ण्टानेर तृतीय वकिल सदासुखपण्डित पिण्टित विधाय हाजिर

---

1. ऋक्थग्राह—पाठ०।

नाइ। एइ मकद्दमा गत कल्य आमार वैठके उपस्थित आर गत कल्येर रुवकारिर लिखित उजुहाते अनेक कागजात पड़ा हइया दिया अवसान जन्ये मलतवि रहिल। अद्य पुनराय उपस्थित। ओ उभय विवादिर विवाद वावत एइ आदालतेर मतफरकार रूवकारिसकल ओ एइ आदालत ओ कोर्टेर मिछिलेर गाँथा उभयेर दस्तावेज पड़ा गेल। यद्यपि चुडन्त हुकुम हओयार पूर्व्वे कयेक विषयेर जिज्ञासा एइ आदालतेर पण्डित हइते आवश्यक बोध हइल, अतएव हुकुम हइल ये ऐ रूवकारिर नकल सम्वलित एइ आदालतेर ओ कोर्टेर सकल कागजात एक सप्ताह मियादे ऐ पण्डितेर निकट पाठान जाय ये वारानशीर पाठशालार व्यवस्था ओ सुप्रीम कोर्ट ओ अन्य अन्य पण्डितेर दस्तखति व्यवस्था दृष्टान्तरे एइ विषयेर जओयाव लेखेन। जे ओजएम वेवाडिन छाहेव हाकिमेर हुजुरेर वावत ऐ पण्डितेर जोवानि जओयाव-सकलेर सुधरान अथवा वदलानु हेतु, जहार जेकेर ऐ हाकिमेर रूवकारिते लिखित आछे, किछु आवश्यक हय कि ना। आर यद्यपि ऐ पण्डितेर पूर्व्वेर राय वर्त्तमान थाके, तवे लेखेन ये उपरेर व्यवस्थाहाय मजकुरेर लिखित वचनसकल कोन विचारे अशुद्ध गणा जाइतेछे, आर आपन व्यवस्थार वुनयाद ओ कोन वचनसकलेर पर भवतनी आछे, सरेओयार लेखेन। ओ यद्यपि आपिलाण्टानेर उकिल रेछपाडण्टानेर दाखिल करा व्यवस्था वावते मकर्द्दमा नेहालसिंह आपिलाण्ट ओ वेस् रेछपाडण्टेर पक्षे विशेषत एइ विषयेर पर ओजरदार आछे ये ऐ मकद्दमार उभय विवादीय ब्राह्मण जाति छिलेन, आर ऐ मकद्दमार उभय आगरओाला वैश्य जाति हयेन। अतएव उचित ये ऐ पण्डित ताहार पर दृष्ट करिया ऐ विषयेर जओयाव, जे आगरओाला जातिर मर्य्यादा निमित्ते व्यवस्था मजकुरेर किछु तफात आविश्यक आइसे, कि ना लेखेन। आर कोर्टेर मिछिलेर ६४ लम्वरेर दाखिल करा एइ आदालतेर सावेक पण्डित-

सकलेर व्यवस्था, जाहा मतफरकार मुकद्दमार विचारे एइ आदालते लओया गीयाछे, ऐ पण्डित ताहार पर ओ गौर ओ ताम्बुल करिया जओयाव लेखेन—ये तदनुसारे ओ तदान्तर ये सकल तहकीकात आमले आशीयाछे, तद्दृष्टे व्यवहार किछु तबदिल हेतु आवश्यक हइवेक, कि ना। ओ यदि स्यात् आवश्यक हय ताहार जेकेर लेखेन इति॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतहेनरीसिङ्किसगीयरसाहेबधर्म्माधिकरणलिखिताङ्करेजीशब्दप्रतिपाद्यत्रयस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयनवम्बरमासीयषड्विंशतितमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्प्रमपितैतद्विषादविपर्यनिविष्टपत्रजातञ्च यत्तदब्दीयडिसम्बरमासीयाष्टाविंशतितमदिनसम्बन्धिशनिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

वाराणस्यधिकरणकपाठशालास्थपण्डितलिखितव्यवस्थापत्रस्य सुप्रीमकोर्टाख्यधर्म्माधिकरणनियुक्तपण्डिततदितरपण्डितसम्मतव्यवस्थापत्रस्य चावलोकनेन श्रीयुक्तोलियमवेराडोनसाहेबाभिधानैतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिकृतास्मत्सम्बन्धिप्रश्नस्याऽस्मद्दत्तयाचनिकोत्तरस्य परावर्त्तनस्य शुद्धकरणस्य चावश्यकता काचिदपि नास्ति। तथाहि श्रीयुक्तोलियमवेराडोनसाहेबाभिधानैस्तद्धर्म्माधिकरणाधिपतिकृतास्मत्संबन्धिप्रश्नस्त्वायमेव। यद्यपि हिन्दूजातीयः कश्चित् पत्नीमेकां पञ्च दौहित्रान्, येषां दौहित्राणां माता विद्यमाने स्वपितरि मृता स्यात्, द्वौ भ्रातुष्पुत्रौ च संत्यज्य मृतः स्याद्, एवं क्रमागतधनं भ्रातुर्द्वयोर्म्मध्ये विभक्तं स्यात्तदा तस्य मृतस्य त्यक्तांशः कस्य भवतीत्येकः। तदुत्तरं मया दत्त 'तत्पत्नी प्राप्नुयात्।' पुनः प्रश्नान्तरम्—तत्पत्नीमरणोत्तरं कस्य भवतीति। तदुत्तरं मया दत्तम्—'दुहिता यदि नास्ति तदा दौहित्राः प्राप्नुयुः' इति। अत एतैतयोर्द्वयोः प्रश्नयोर्म्मध्ये प्रथमप्रश्नस्य यदुत्तरं मया दत्त तदेवोत्तर तत्प्रश्नविषये वाराणस्यधिकरणकपाठशालास्थपण्डितैः सुप्रीमकोर्टाख्यधर्म्माधिकरणनियुक्तपण्डितैरन्यैरपि पण्डितैर्लि-

खितम् । तत्र कश्चिद्विशेषो नास्ति, तद्व्यवस्थाद्वयोर्मध्ये विभक्तकृत्स्न पतिधने[1] ॥ पूर्वं पत्न्या एवाधिकारः, इत्यस्य लिखितत्वात् ।

द्वितीयः प्रश्नो यस्तदधिपतिना मां प्रति कृतस्स च प्रश्नो वाराणस्य-धिकरणकपाठशालास्थपण्डितान् प्रति सुप्रीमकोर्टस्थधर्माधिकरणनि-युक्तपण्डितान् प्रति तदितरपण्डितान् प्रति वा तत्प्रश्नकर्तृभिर्यद्यपि न कृतस्तथापि तैः पण्डितैरेकानुपूर्व्यकसंस्कृतव्यवस्थाद्वयोरधोभागे कात्यायन-मुनिवचनं वीरमित्रोदयग्रन्थलिखिततद्वचनव्याख्यानञ्च प्रमाणं लिखित्वा यल्लिखितं यत्तत्परस्वीकृतप्रतिरूपैर्यैक्यं नालम्बते । तस्यायं पर्यवसितार्थः । यद्विभक्तं पतिधनं पतिमरणोत्तरं पुत्रपौत्रप्रपौत्राभावे सत्युत्तराधिका-रित्वेन पत्न्या प्राप्तं स्यात्, पत्नीमरणोत्तरं तद्धनं पतिभ्रातृपुत्रदौहित्रयोः समवाये पतिभ्रातृपुत्रा एव प्राप्नुयुर्न्न दौहित्रा इति । तत्र वीरमित्रोदय-ग्रन्थलिखितस्य कात्यायनवचनस्य तद्वचनव्याख्यानस्य चायमेवाभिप्रायः । यदि विभक्तं पतिधनं पुत्रपौत्रप्रपौत्राभावे सत्युत्तराधिकारित्वेन पत्न्या प्राप्तं स्यात्तदा पत्नीमरणोत्तरं तत्संक्रान्तपतिधनं पत्युर्ये उत्तराधिकारिणस्त एव गृह्णीयुः, न तु पत्न्युत्तराधिकारिण इति । तत्र च पत्युत्तराधिकारिणां मध्ये "पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा तत्सुतः"—इत्यादि याज्ञवल्क्यादि-वचनोक्तपत्युत्तराधिकारिणां दुहित्रादीनामेवाधिकारः । तत्रापि प्रथमं दुहि-तुस्तदभावे दौहित्रस्य तदभावे मातुस्तदभावे पितुस्तदभावे भ्रातॄणां तदभावे भ्रातृपुत्राणां तदभावे गोत्रजादीनां पाठक्रमेणाधिकारः । तत्र च पत्नी-मरणोत्तरं विद्यमानायां दुहितरि विद्यमानेषु दौहित्रेषु विद्यमानायां मातरि विद्यमाने च पितरि विद्यमानेषु च भ्रातृषु पतिभ्रातृपुत्रात् पूर्वं पत्युत्तरा-धिकारिषु एतान् विहाय पतिभ्रातृपुत्राणामधिकारो भवति — एतद्विधायकः पश्चिमदेशचलितधर्मशास्त्रान्तर्गतस्य कस्यापि ग्रन्थस्याभिप्रायो नास्ति । अतएव तत्तद्व्यवस्थालिखितपण्डितानां मतं पश्चिमदेशचलितशास्त्रबहिर्भू-तमेव, तत्तत्पण्डितैः स्वस्वव्यवस्थालिखितवचनानां वीरमित्रोदयादिग्रन्थानां चाशयानबुध्यैव लिखितत्वात् । अतएव वीरमित्रोदयादिग्रन्थलिखित-

1. कृत्स्न—पा॰ ।

कात्यायनवचनं तद्व्याख्यानञ्च यत्तत्तत्पण्डितलिखितव्यवस्थामूलभूतप्रमाणमस्ति तदेतद्व्यवस्थाया अधोभागे प्रमाणत्वेन, एवं सर्व्वत्रैव वीरमित्रोदयादिग्रन्थे यत्रतत्र पुत्रपौत्रप्रपौत्राभावे सत्युत्तराधिकारित्वेन पत्न्या प्राप्त तद्धने पत्नीमरणोत्तरं प्रथमं दुहितुस्तदभावे दौहित्राणामधिकारस्य बहुशो लिखितत्वात्, तद्विषयकवीरमित्रोदयादिग्रन्थलिखितप्रमाणान्यप्येतद्व्यवस्थाया अधोभागे प्रमाणत्वेन मया लिखितानि सन्ति। तैरेवैतत्सर्व्वं स्पष्टमिति।

पृथक्च सति अस्मद्दत्तश्रीयुक्तोलियमवेराडोन साहेबाभिधानैतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिसमीपे वाचनिकोत्तरस्य प्रमाणान्यप्येतद्व्यवस्थाया अधोभागे लिखितानि सन्त्येवेति। एवं थानसिंहनाम्नोऽर्थिनः जितुनाम्न्याः प्रत्यर्थिन्या विवादसम्बन्धिन्या व्यवस्थाया अगरवालाख्यवैश्यजातीयस्य मर्य्यादार्थमेतद्विषये कस्यचिद्विशेषस्यावश्यकता नास्ति। याज्ञवल्कीयापुत्रधनाधिकारप्रकरणीयवचने सर्व्ववर्णेष्वयं विधिः' इति। अस्य विशेषतो लिखितत्वात्। एवं कोटापीलाख्यधर्म्माधिकरणनिविष्टपत्रजातान्तर्गतचतुःपञ्चाङ्कितव्यवस्था चैतद्धर्म्माधिकरणे विवादास्पदीभूतधनजाते व्यायत्तत्वसम्पादकाज्ञाभवनकाले गृहीता, तदनुसारेण तदनन्तर यद्यदनुसन्धानं धर्म्माधिकरणतो जातं तद्दृष्ट्वापि श्रीयुक्तोलियमवेराडोनसाहेबाभिधानैस्तद्धर्म्माधिकरणाधिपतिस्थितास्मत्सम्बन्धिप्रश्नस्यास्मद्दत्तवाचनिकोत्तरव्यवस्थायाः कापि परावर्तनस्यावश्यकता नास्ति, तद्व्यवस्थायामपि पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्य मृतस्य विभक्तधने प्रथमं पत्न्यास्तदभावे दुहितुस्तदभावे दौहित्राणामधिकारस्य स्पष्टीकृतत्वात्—इति पश्चिमदेशान्तर्गतागराप्रदेशचलितमिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारमाधवव्यवहारमयूखव्यवहारकौस्तुभादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

तत्र प्रमाणम्—

अपुत्रा शयनं भर्तुः पालयन्ती गुरौ स्थिता।

भुञ्जीतामरणात् क्षान्ता दायादा ऊर्द्ध्वमाप्नुयुः॥—इति वीरमित्रोदयादिग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥१॥

अयञ्च वचनार्थः–दायादा इत्यत्र कस्येत्यपेक्षायां शयनान्वितभर्तुरित्येवोपस्थितत्वादनुपज्यते–इति वीरमित्रोदयग्रन्थलिखनम् ॥२॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ।
तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः शिष्यः सब्रह्मचारिणः ॥
एषामभावे पूर्व्वस्य धनभागुत्तरोत्तरः ।
स्वर्य्यातस्य ह्यपुत्रस्य सर्व्ववर्णेष्वयं विधिः ॥–इति मिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारमाधवव्यवहारमयूखव्यवहारकौस्तुभादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥३॥

पत्नी गृह्णीयादित्येतद्वचनजातं विभक्तभ्रातृस्त्रीविषयम्—इति मिताक्षराग्रन्थलिखनम् ॥४॥

तस्माद्विभक्ता संसृष्ट्यन्यपुत्रे स्वर्याते पत्नी धनं प्रथमं गृह्णात्ययमर्थः सिद्धो भवति—इति मिताक्षराग्रन्थलिखनम् ॥५॥

तस्मादपुत्रस्य स्वर्यातस्य विभक्तस्यासंसृष्टिनो धनं परिणीता स्त्री संयता सकलमेव गृह्णातीति स्थितं, तदभावे दुहितरः–इति मिताक्षराग्रन्थलिखनम् ॥६॥

दुहित्रभावे दौहित्रो धनभाक्–इति मिताक्षरावीरमित्रोदयादिग्रन्थलिखनम् ॥७॥

पत्न्यभावे दुहितरोऽपुत्रविभक्तासंसृष्टधनभाजः–इति वीरमित्रोदयग्रन्थलिखनम् ॥८॥

यथा पितृधने स्वाम्यं तस्याः सत्स्वपि बन्धुषु ।
तथैव तत्सुतोऽपीष्टे मातृमातामहे धने ॥–इति वीरमित्रोदयग्रन्थधृतबृहस्पतिवचनञ्चेति ॥९॥

अङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यचतुस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयफिवरवरीमासीयाष्टाविंशतितमदिनसम्बन्धिशुक्रवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१३४ लम्बर आपील—

इ० १८३१ साल

३९—सदर देओयानि आदालतेर पण्डितेर प्रति प्रश्नः—यद्यपि स्यात् एक व्यक्ति अपुत्रक एक विधवा कन्या आर ऐ कन्यार एक पुत्र एवं एक कन्या ऐ व्यक्तिर वर्त्तमाने मरे। ताहार एक पुत्र आर सहोदर भ्रातार एक पुत्र राखिया लोकान्तर करे। आर ऐ व्यक्तिर मरणान्ते ऐ वर्त्तमाना कन्यार पुत्रेर मृत्यु हय—एमत स्थले ऐ व्यक्तिर स्थावरादिधने काहार अधिकार हय। आर पूर्व्वोक्त कन्या ओ दौहित्रगण वर्त्तमान थाकिते ऐ व्यक्ति उदरामय ओ ज्वररोगावस्थाय आपन स्थावरादि धन सहोदर भ्रातार पुत्रके दान करिया ऐ दानपत्रे दौहित्रगणेर मोशाहेरा निर्णय करिया ऐ दानेर वस्तुर उपस्वत्व हइते दिवार विषये दानगृहीता व्यक्तिर प्रति अनुमति लिखिया देय, तवे एमत दान शास्त्रानुसारे सिद्ध वटे, कि ना—इहार यथाशास्त्र प्रत्युत्तर लिखिवा—इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रमेतद्विवादविषयनिविष्टपद्यातञ्च यदङ्करैशीयाब्दप्रतिपाद्यत्रयस्त्रिंशदधिकाष्टादशशतात्मकीयनवम्बरमासीयोनत्रिंशत्तमदिनसम्बन्धिशुक्रवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यदि पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितः कश्चिद्व्यक्तिविशेष एकां विधवां दुहितरं तत्पुत्रञ्चैकं स्वजीवनावस्थायां मृताया एकस्या दुहितुरेकं पुत्रं सहोदरभ्रातृपुत्रञ्चैकं संरक्ष्य मृतः स्यात् तन्मरणानन्तरञ्च विद्यमानायास्तत्कन्यायाः पुत्रस्य मरणं जातं चेदपि धनिनो मृतस्य त्यक्तधने तन्मरणकालीनविद्यमानपुत्रयोः सम्प्रति च वर्त्तमानाया दुहितुरेवाधिकारः। यतः पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्य मृतस्य त्यक्तधने प्रथमं पत्न्यास्तदभावे दुहितुरधिकारः, दुहितृष्वपि प्रथमं कुमार्य्यास्तदभावे चोढायाः पुत्रवत्याः सम्भावित-

पुत्रायाश्चाधिकारः अत एव पितृमरणोत्तरं या कन्या पुत्रवती विधवा तस्या अधिकारस्य धनिनो मृतस्य पुत्रमारभ्य कुमारीपर्य्यन्तरहितस्य त्यक्तधने निष्प्रत्यूहतया जातत्वेन लब्धाधिकारायां तस्यां विद्यमानायां तत्पुत्रस्य मरणेऽपि धनिनो मृतस्य त्यक्तधने तस्य अधिकारो नैव विनश्यति। अतस्तस्यां विद्यमानायां तत्संक्रान्तपितृधने तत्पितृदौहित्रस्यापि तद्भगिनी-पुत्रस्य विद्यमानस्य तत्पितृभ्रातृपुत्रस्य च नाधिकारः। एवं पूर्व्वोक्तकन्या-दौहित्रायां विद्यमानतायामुदरामयज्वररोगावस्थायां स्वस्वत्वास्पदीभूतस्थाव-रादिधनस्य भ्रातृपुत्रसम्प्रदानकं यद्दानं तेन कृतं तद्दानपत्रे दानविषयीभूत-स्थावरादिधनोपस्वत्वात् स्वदौहित्राणां ग्रासाच्छादनदानार्थमनुमतिदानप्रदी-तारं स्वभ्रातृपुत्रं प्रति लिखिता स्याच्चदान(?)मेतद्विवादविषयनिविष्टप्रमुखमर्पित-पत्रजाततात्पर्य्यार्थविवेचनया धर्म्मशास्त्रानुसारेण न सिद्ध्यति। कथञ्चिद्दानं जातं चेदपि दातृत्वेन मन्यमानस्य रोगार्त्तावस्थायामेतद्दानस्य जातत्वेनै-तादृशदानसिद्धेः शास्त्रीयत्वाभावात्—इति बङ्गदेशप्रचलितमनुदायभागदाय-तत्त्वदायभागटीकादायक्रमसंग्रहविवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसा-रिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः—इत्यादि दायभागादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य-वचनम्॥

अपुत्रस्य मृतस्य कुमारी रिक्थं गृह्णीयात्तदभावे चोढा—इति दायभागादिग्रन्थधृतपराशरवचनम्॥

पुत्रवती सम्भावितपुत्रा चाधिकारिणी—इति दायभागग्रन्थ-लिखनम्॥ ३॥

कुमार्य्यभावे चोढायाः पुत्रवत्याः सम्भावितपुत्रायाश्च तुल्योऽधिका-रस्तयोरेकतराभावे एकतराधिकारः—इति दायक्रमसंग्रहग्रन्थलिखनम्॥ ४॥

---

१. आत्म—व्यप० ।

अदत्तन्तु भयक्रोधकामशोकरुगन्वितैः—इत्यादि विवादार्णवसेतु विवादभङ्गार्णवादिग्रन्थधृतनारदवचनम् ॥ ५ ॥

तत्र भयादिरुगन्वितान्ताः[1] पञ्चप्रकृतिस्थितिविरोधिनो द्रष्टव्याः— इति विवादार्णवसेतु(पृ० १५३)विवादभङ्गार्णवग्रन्थ(१ विवा०४८६ख) लिखनञ्चेति ॥ ६ ॥

अङ्गरेजीयाब्दप्रतिपाद्यचतुस्त्रिंशदधिकाष्टादशशततमाब्दीयमैमासीयनवम-दिनसम्बन्धिशुक्रवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

४० रोयकारि मिछिल आदालते देओयानि सदर मोकाम कलिकात्ता इङ्गरेजी सन १८३४साल तारिख ६ माह माइ मोताबक वाङ्गला सन १२४१साल तारिख २५ माह वैशाख रोज मङ्गलवार आदालत मजकुरेर हाकिम श्रीयुत राबर्ट हालडन राटरि साहेबेर वैठके—

रामगोपालदेओ बनाम गकुलचन्द्रतहविलदार
ओ कृष्णगोविन्दतन्तर
ओ जुगलकिशोरतन्तर
ओ हरेकृष्णतन्तर
ओ राजकिशोरतन्तर

छापल हाजीर हइल। छापलेर सओोल एक टाका मुल्येर इष्टाम्प कागजेर पर दासत्वेर मकर्दमाय दासत्व ओ कार्य्येर खेसारत बावत मवलगे १५ टाकार परिमाणे खास आपिल माहा हओनेर प्रार्थनाय एक केवा जेला मयमनसिंहेर काजी

[1] १. भोधादिरुगन्वा इति विवादार्णवसेतुपाठ।

सदर आमिनेर फयसलार नकल इं सन १८२८ सालेर ३०माह् दिजम्बरेर लिखित ओ एक केता जेला मजकुरेर जजसाहेबेर फयसलार नकल इं सन १८३३ सालेर १७ दिजम्बरेर लिखित सम्वलित, जाहा सन ३४ सालेर १३माह् मार्च्च तारिखे दाखिल हइयाछिल, अद्य उपस्थित ओ दृष्ट हइल। जे हेतुक ए मकर्द्दमार उभये हिन्दुजाति हयेन, अतएव ए मकर्द्दमार फयसलासकलेर यथार्थ ओ अयथार्थेर प्रति व्यवस्था लओन उचित बोध हइया हुकुम हइल जे समुदय कागजात ए आदालतेर पण्डितके समर्पण करा जाय। उचित ये पण्डित कागजात अनुमोदन ओ दृष्ट पूर्ब्बक ए बिशयेर व्यवस्था ये ए मकर्द्दमार फयसला-सकल वाङ्गला देश चलित शास्त्रमते यथार्थ बटे, कि ना—लिखिया महकमेर बन्देर पूर्व्वे दाखिल करेण इति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतरावर्टहालडनराटरीसाहेबधर्म्माधिकरणलिखितैतद्देशीयमेहमाणीयषष्ठदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितैतद्विवादविषयनिविष्टपत्रजातं च यदेतद्देशीयमेहमाणीयसप्तमदिनसम्बन्धिबुधवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

एतद्विवादविषयनिविष्टप्रथमनसिह्जिलाख्यावान्तरधर्म्माधिकरणनियुक्तसदरआमीनपदाभिषिक्तकाजीशब्दप्रतिपाद्यकृताङ्करेजीशकप्रतिपाद्याष्टाविंशत्यधिकाष्टादशशताब्दीयदिशम्बरमासीयत्रिंशत्तमदिवसीयजयपत्रं बङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेण यथार्थमेव भवति—इति बङ्गदेशचलितदायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

यत्रापि चेत्रं दासीगवादिकं बहुसाधारणं तत्रापि तत्तत्कालविशेषे वहनदोहनफलेन स्वत्वं व्यज्यते। तदाह बृहस्पतिः—

"एकां स्त्रीं कारयेत् कर्म्म यथांशेन गृहे गृहे" इति युक्त्या विभजनीयम्, तदन्यथानर्थकं भवेत्—इति च दायभाग(पृ० ६)मत्र-लिखनम् ॥१॥

श्रङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यचतुस्त्रिंशदधिकाष्टादशशतान्दीयमेइमासीयअष्ट-विंशतितमदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(४१)—मोकाम कलिकातार सदर देश्रोनि आदालतेर इंरेजि सन १८३४ सालेर १८ जानेर मोतावक बाङ्गला सन १२४० सालेर ६ माघ शनिवार तारिखेर श्रीयुत श्रोलीयम ब्राङ्किन साहेब ऐ आदालतेर हाकिमेर बैठकेर रोबकारि—

७५ नः—

सन १८३२ साल

राधानाथचौधुरि आपीलाण्ट

श्रीमति कृष्णरमनिदास्या, कृष्णनाथ मोतश्रोफार कन्या ओ परानचन्द्रनेउगी ओ राधाचन्द्रनेउगी नाबालगदिगेर माता—

रेस्पाण्डण्ट

आपीलाण्टेर उकिल सदासुखपण्डित हाजिर आइल। एइ मोकद्दमा कल्य ओ अद्य आमार बैठके रोबकार हइया जेलार तावत कागज ओ कोट आपिलेर कागजसकल ओ ए आदालतेर कागजसकल पाठ करा गेल। चुडन्त हुकुम प्रकाश हओनेर पूर्व्वे निचेर लिखित प्रश्नसकलेर प्रत्युत्तर ए आदालतेर पण्डितेर स्थाने लओ्रा उचित बोध हइया हुकुम हइल जे एइ रोबकारिर नकल मोकद्दमार कागज समेत ए आदालतेर पण्डितके एइ हुकुमे समर्पन करा जाय ये निचेर लिखित प्रश्नसकलेर प्रत्युत्तर एइ हुकुम प्राप्तेर दिवसावधि तिन सप्ताह मध्ये दाखिल करेन।

प्रथम प्रश्न–कोन व्यक्ति हिन्दुर एक पुत्र तिन कन्या ओ एक सहोदर भ्राता ओ पैतृक वस्तु राखिया मृत्यु हय। ताहार पर ऐ मृत व्यक्तिर पुत्र अविवाहित समय उहार तिन सहोदरा भग्नी, ताहार मध्ये एक जनार दुइ पुत्र, ओ स्वामि आछे, आर दुइ जना पुत्रसन्तान राखे ना, वर्त्तमान थाकितेओ पैतृक विषय आपन पितृसहोदरके हेवा करे। तवे ए प्रकार पैतृक विषयेर हेवादातार पितार दौहित्रगण थाकितेओ वाङ्गलादेशीय चलितशास्त्रानुसारे सिद्ध ओ यथार्थ बटे कि ना इति—

द्वितीय प्रश्न—यद्यपि स्यात् वाङ्गलादेशीय चलितशास्त्रानुसारे एइ हेवानामा सिद्ध बोध हय, तवे साक्षीदिगेर जवानवन्दि प्रभृति मोकद्दमार कागजसकलेर द्वाराय कोन एक द्वितीय हेतु ये हेवानामा अयथार्थेर विषये पाओ्या जाय–ताहा विस्तारित लेखेन इति—

श्रीऊर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतओलियमवेराडिनसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितैतदब्दीयजानवरीमासीयाष्टादशदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपद्वयमेवं तत्समर्पितैतद्विवादविषयनिविष्टपत्रजातं च यदेतदब्दीयजानवरीमासीयद्वाविंशतितमदिनसम्बन्धिबुधवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि हिन्दुजातीयः कश्चिद्व्यक्तिविशेषः पुत्रमेकं कन्यात्रयं सहोदरभ्रातरं चैकं पैतृकं धनं च संस्थाप्य मृतः स्यात्तदनन्तरं तस्य पुत्रोऽप्यविवाहित एव पुत्रद्वयवत्या एकस्याः सधवाया भगिन्या अपरयोः पुत्ररहितयोर्द्वयोर्भगिन्योश्च विद्यमानतायामपि स्वपैतृकधनस्य दानं स्वपितृव्यमुद्दिश्य कृतवान् स्याच्चदोपरिलिखितानां भगिन्यादीनां मध्ये ये केचित्तद्धनमात्रोपजीविनस्तेषां यावज्जीवं स्वपितृकुलोचितग्रासाच्छादनोपयुक्तादावश्यकधर्म्माद्याचरणोपयुक्ताच्च धनादवशिष्टं धनं तद्विषये तद्दानं सिद्धं भवतीति—

अत्र प्रमाणम्—

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनम् ॥१॥

कुटुम्बभक्तवसनाद्देयं यदतिरिच्यते—इति विवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थधृतवृहस्पतिवचनम् ॥२॥

स्वभागान् यदि दद्युस्ते विक्रीणीयुरथापि वा ।
कुर्य्युर्य्यथेष्टं तत्सर्वमीशास्ते स्वधन(स्य)वै ॥—इति दायभागादिग्रन्थधृतनारदवचनञ्चेति—

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

(प)तद्विवादविषयनिर्दिष्टपत्रजातैस्तद्दानस्यायथार्थताबोधकः कश्चिद्धेतुरद्यापि न प्राप्तः। यद्यप्यर्थिप्रत्यर्थिनोः प्रश्नोत्तराभ्यां दानसमये दातुराश्चयद्रोगग्रस्तताऽवगम्यते, परन्तु तत्पत्रजातैर्दातुःपितृपरमसमये दातुस्तद्रोगग्रस्तताया अनवगमेन दातुः स्वपितृपरमानन्तरं तत्त्यक्तधने स्वस्वोत्पत्तेर्निश्चितत्वेन केषाञ्चित् तत्पत्रजातैर्दानसमयात् पूर्व्वं प्रायश्चित्तकरणस्याप्यवगमेन तद्दानसमयात्पूर्व्वं कृतप्रायश्चित्तस्य स्वपितृपरमसमये अज्ञाततद्रोगस्य पितृत्यक्तधने जातस्वत्वस्य तद्रोगग्रस्ततायास्तत्कृतदानस्याप्रामाण्यसम्पादकत्वाभावात्—इति वङ्गदेशप्रचलितमनुदायभागदायतत्त्वदायभागटीकादायक्रमसंग्रहविवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था-

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रमाणत्रयम् ॥३॥

पतितानामपि स्वधनसाध्यप्रायश्चित्तश्रुतेः पातित्येन स्वत्वनाशः प्रायश्चित्तैर्मुक्त्ये योग्यः—इति दायतत्त्व(पृ० १६१)दायभागटीका(पृ० १६)विवादभङ्गार्णवादि(२ विवा १४ ख १५ क)ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥४॥

अङ्करे श्रीशब्दप्रतिपाद्यचतुस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयजूनमान(?)मासीयद्वादशदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

प्रकारे अक्यता राखे। एइ जे शास्त्रानुसारे जे हेतुते हिस्यादार आपन हिस्या ना पाय। यद्यपि हिस्यादारसे हेतु हइते सुष्य थाके, ओ द्वितीय अंशीयरा ताहार अंश जवरदस्ती मते ना देय। हाकिम विचार कालिन ताहार हिस्या देओान, ओ यदि ऐ व्यक्ति आपन हिस्या अन्य काहार नामे लिखिया दिया मृत्यु हइया थाके, हाकिम सेस विरोध निवारण कारण दस्तावेज मत आमले आनेन, ओ आपन हिस्या ऐ व्यक्ति जाहाके दियाछे, ताहाके देन। कारण एइ—यद्यपि केह कोन दस्तावेज लिखे आर दस्तावेज मत आमले ना आनिया थाके, किम्वा अन्य केह दस्तावेजेर मजमुने विरोधीय हय, हाकिम ओहार दास्तावेज मत आमले आनान, ओ विरोधीय व्यक्ति हइते जरिमाना लयन। यदि स्यात् स्वयं हाकिम ओहार दस्तावेज मत अवलम्बन ना करेण, तवे हाकिम आपन खाजना हइते दस्तावेजेर लिखित मत आमले आनेन। ओ ए आदालते जे एइ आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था ए आदालतेर छओोलेर जओोवे दाखिल हइल ताहार खोलासा। एइ जे ए प्रकार अवरुद्ध विशयेर तमलिक ओ हेवा ए मतुकेर दस्तुर मत मिताक्षरा ओ गयरह पुस्तक अनुसारे सिद्ध हइते पारे ना। ए प्रयुक्त जे पाटसालार पण्डितदिगेर दुइ व्यवस्था ओ ए आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था अनक्य हओोने सर्व्वे प्रकारे प्रत्यय हय ना। ए विशयेर सन्देह दुर करणार्थे कलिकातार सदर देओानि आदालतेर पण्डितेर निकट हइते ज्ञात हओा आवश्यक आछे जे एइ मोकद्दमार आसल दावीदार माधोजी, जेसफल तदविर हिस्या तकसिमेर कारण ओ हक ओसुलेर कारण, जाहा चाइ ताहा आमले आनियाछे, अर्थात् आपन वर्त्तमाने ए नालिस आदालते उत्थापन करियाछिल, ए कारण ए मोकद्दमा उत्थापन हओोनेते माधोजि आसल दाविदार तरफ हइते जे आपन हिस्या पाओोनेर कारण ओ ताहार हिष्यार, जाहा हस्तान्तर हइया थाके, ताहा यथार्थ आछे–कि ना। ए कारण हुकुम हइल जे मोक-

द्मा मलतवि रहे, आर आसल तिन किता व्यवस्था आर तम-
लिकनामार नकल राखिया आसल तमलिकनामा एइ रुबकारिर
नकलेर सम्वलित एइ आदालतेर रेजेष्टर साहेबेर इराजि चिठी
द्वाराय कलिकातार सदर देओानि आदालतेर रेजेष्टर साहेबेर
नामे सेखानकार पण्डितेर निकट व्यवस्था लओनेर कारण उक्त
आदालते पाठानो जाय। एइ प्रार्थना जे रेजेष्टर साहेब से आदा-
लतेर हाकिमदिगेर ज्ञातसारे तिन केता व्यवस्था आर तमलिक-
नामा आर एइ रुबकार सेखानकार पण्डितके समार्पन करिया
वानारस देसेर प्रचलित पुस्तकसकल अनुसारे इहार जवाब
सप्ताहेर मध्ये उक्त पण्डितेर निकट हइते लइया, आर एइ मक-
द्दमार तत तुल्य दृष्टान्त वानारस देशेर इहार पूर्ब्बे यदि कोन
मकद्दमा सेखाने निष्पत्य हइयाथाके. तवे ऐ मकद्दमार फयसलार
नकल ए आदालते पाठान आर तपरेर लिखित विषयेर तत्तं-तदन्त
हओनेर परे ओजितेर विषये किम्वा रघुनाथराओ मोतीफा
रेष्गाएटेर फेराक्तेर विषये उचित हुकुम प्रकाश हइवेक इति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रस्तुतमर्पितविचारपत्र तमलिकनामाख्य पत्र व्यवस्थापत्रत्रयं च यद-
ङ्करेजीशब्दमतिमाघचतुर्द्दिशदधिकाष्टदशशताब्दीयखानवरीमासीयचतुर्वि-
श तितमदिनसम्बन्धिशुक्रवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जात
स्तदनुसारेणोत्तर लिख्यते—

मूलभूतैतद्विवादाभियोक्ता माधवजीनामक कश्चित्पुरुषविशेषो यद-
दनुसन्धान स्वकीयभागस्य विभज्य प्रदानार्थं स्वकीयांशाधारणस्वत्वसम्पाद
नार्यमुचित भवति तथा कृतवानर्थात् स्वस्य वर्त्तमानतया धर्म्माधिकरणे
अयमभियोगस्तेनैवोत्थापित स्यात्, अतएवैतद्विवादस्योत्थापने सति अकृ-
तैतद्विवादनिर्णयस्यर्थाद्धर्म्माधिकरणतोऽस्यैतद्विवादपरिच्छेदस्य मूलभू
तैतद्विवादाभियोक्तुर्माधवजीनाम्न सकाशात् स्वकीयांशस्य धर्म्माधिकरणतो
विभक्तस्य मापणार्थं तदीयांशो यो हस्तान्तर गतः स्यात्तदहस्ता-उद्धारण

तत्वात् विभक्तधनदानसिद्धेर्मिताक्षरादिग्रन्थानुसारेण निष्प्रत्यूहत्वाच्च । एवं स्वस्वत्वनिवृत्तिः परस्वत्वापादनं[1] च दानं च परो यदि स्वीकरोति तदा सम्पद्यते, नान्यथा इत्यादि मिताक्षराग्रन्थे(पृ० १४१)वीरमित्रोदयग्रन्थे च भोगप्रकरणे स्पष्टतरतया लिखितमस्ति। तत्र दानस्योभयदलयोः स्वस्वत्वनिवृत्तिरूपप्रथमदलस्यैतावता दातृव्यापारेण निष्पन्नत्वेऽपि सम्प्रदान स्वत्वोत्पत्तिरूपस्य द्वितीयदलस्य धर्म्माधिकरणतो विभक्ते दातुरंशे सम्प्रदान भूतव्यक्तिविशेषस्यायत्तत्वं विना अनिष्पाद्यत्वेन धर्म्माधिकरणतो विभक्ते स्वांशे सम्प्रदानायत्तीभवनात्मकस्य सम्प्रदानस्वत्वोत्पत्तिरूपद्वितीयदलहेतुभूतस्य बहुकालसाध्यस्य राजाधीनतया दुष्करत्वेन मन्यमानस्य च कस्यचिद् व्यक्तिविशेषस्याशीशब्दप्रतिपाद्यत्वेन नियोगकरणं विना अनिष्पाद्यत्वेन मन्यमानस्य च दात्रा स्वकर्त्तव्यस्य स्वदत्तस्वांशे सम्प्रदानायत्तीभवनरूपस्य सम्प्रदानस्वत्वोत्पत्तिहेतुभूतस्य सम्पादनार्थं सम्प्रदानभूतव्यक्तिविशेषस्याशीशब्दप्रतिपाद्यत्वेन नियोगकरणस्यापि शास्त्रीयत्वात्, अतोऽविभक्तेऽपि स्वांशे अशीशब्दप्रतिपाद्यस्य नियोगकरणे शास्त्रविरोधो नास्ति । अथ च वीरमित्रोदयग्रन्थे यदि येनचित् स्वस्वत्वास्पदीभूतधनस्य दानं कृत्वा सम्प्रदानस्यायत्तत्वमनुपाद्यैव मृतः स्यात्तथापि राज्ञा प्रतिग्रहीतुरायत्तत्वं दानसम्पादकं सम्पाद्यमित्यस्यापि विशेषतो लिखितत्वाच्च। एवं लक्ष्मीकान्तस्य कृत्रिम पुत्रत्वपक्षे दानादिकं विनापि विवादास्पदीभूतधने तस्य स्वामित्वमव्याहतमेव पुत्रत्वात्— इति धाराश्रीप्रभृतिदेशचलितमनुमिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारमाधवव्यवहारमयूखव्यवहारकौस्तुभव्यवहारचिन्तामणिविवादचिन्तामणिविवादरत्नाकरविवादचन्द्रकल्पतरुपारिजातादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति—

अत्र प्रमाणम्—

कुटुम्बभक्तवसनाद्देयं यदतिरिच्यते—इति वीरमित्रोदयादिग्रन्थधृतबृहस्पतिवचनम् ॥१॥

कन्याभ्यश्च पितृद्रव्याद्देयं वैवाहिकं वसु—इति तत्तद्ग्रन्थधृतदेवलवचनम् ॥२॥

---

१. परस्वत्वादानं च परस्वत्वापादनं च—व्य० ।

यत्र नो। बलम्पूर्णता। नारदः। 'विद्यमानेऽपि लिखिते जीवत्स्वपि हि साक्षिषु। विशेषतः स्थावराणां यन्न भुक्तं न तत्स्थिरम्'॥ दानविक्रयादेरुपभोगनिरपेक्षस्यैव स्वत्वोत्पादकत्वात्। किमिति। भोगलवोऽप्यवश्यं तत्रापेक्ष्यत इत्याशङ्कायामुपपत्तिरुक्ता विज्ञानेश्वराचार्यैः। दानादेः परस्वत्वापादनत्वात्[1] परकर्त्तृकस्वीकारापेक्षाऽवश्यं भावनीया[2]। स्वीकारश्च त्रिविधो मानसो वाचिकः कायिकः। ममेदमित्यध्यवसायो मानसः। ममेदमित्याद्यभिलापो वाचिकः। उपादानाभिमर्शनादिरूपेणानेकप्रकारकः[3] कायिकः। तत्र मानसं विना स्वत्वासम्भवात्स तावदावश्यक एव[4]। दानविशेषपुरस्कारेण शब्दप्रयोगविशेषनियमपादर्शनादिचेष्टाविशेषनियमाच्च वाचिककायिकावप्यावश्यकावित्यवसीयते। तत्र हिरण्यरत्नादौ दातृकर्तृकजलत्यागादनन्तरमेव प्रतिग्रहीतुरुपादानादिसम्भवात् त्रिविधोऽपि व्यापारः सम्पद्यते। क्षेत्रादौ तु फलोपभोग विना कायिकस्वीकारासम्भवादल्पेनाप्युपभोगेनावश्यं भवितव्यमन्यथा दानक्रयादेः सम्पूर्णता न भवत्युत्तरकालिकव्यापाराभावात्। तेन तत्सहितादागमान्तराद्धिकल आगमो दुर्बलो भवति। एतच्च द्वयोरागमयोः पूर्वापरभावानवगमे। तदवगमे तु स्वल्पभोगविकलोऽपि प्राक्तन एवागमो बलवान्, पूर्वेण दानादिना स्वत्वापगमे दानाद्यनन्तरासम्भवात्। न चैवं तस्य क्षेत्रादेर्मध्यगतत्वापत्तिः। पूर्वस्वाम्यपगमादुत्तरस्वाम्यानुत्पत्तेश्चेति वाच्यम्, प्रतिश्रुतन्यायेनावेक्षणीयस्वत्वस्यसत्त्वात् पूर्वस्वाम्यसत्त्वेऽपि राज्ञैव प्रतिग्रहीत्रादेः कायिकस्वीकारस्यानिःप्रतिपन्नस्य सम्पादनीयत्वात्—इति वीरमित्रोदय(पृ० २०७।२०८)ग्रन्थलिखनम् ॥८॥

याज्ञवल्क्यः। 'आगमेऽपि बलं नैव भुक्तिः स्तोकापि यत्र नो'। आगमे विद्यमानेऽपि भोगविरहात् तावत्काल स्वत्वार्थंरतिधीन भवतीत्यर्थः – इति व्यवहारचिन्तामणिग्रन्थलिखनम् ॥९॥

---

१. °पादान०—व्यप० ।   २. भावनीय —व्यप० ।

३. उपादानादिभिमर्शन०—व्यप० ।   ४. स त्वावश्यक एव०—विमि० ।

५. पूर्वस्वाम्यपगमाद्०—वीमि० ।

याज्ञवल्क्यः । 'आगमेऽपि बलं नैव भुक्तिः स्तोकापि यत्र नो' । आगमे विद्यमानेऽपि भुक्तिविरहात् तावत्कालं स्वत्वं न सिद्ध्यतीत्यर्थः । अत्र यत्रान्यमुद्दिश्य केनचित् किञ्चिद्दत्तं तत्रोद्देश्यस्य स्वीकारव्यञ्जकभोगाभावात् स्वत्वं न निश्चीयत इति न्याय एव मूलम्—इति च व्यवहारचिन्तामणिग्रन्थलिखनम् ॥१०॥

अतस्तत्र जलप्रक्षेपरूपः पात्रोद्देश्यक उत्सर्ग एव ददाति नाविवक्षितः । दानत्वनिष्पत्तिस्तु तस्य सम्प्रदानकर्तृकस्वीकारे सत्येवेति परमार्थः–इति वीरमित्रोदय(पृ० २४३)ग्रन्थलिखनम् ॥११॥

न्यायाधिगमे तर्कोऽभ्युपायस्तेनाभ्यूह्य यथास्थानं गमयेत् । तस्माद्राजाचार्यावनिन्द्यौ—इति मिताक्षरा(पृ० १२०।१२१)ग्रन्थधृतगौतमवचनम् ॥१२॥

यथा नयत्यसृक्पातैर्मृगस्य मृगयुः पदम् ।
नयेत्तथानुमानेन धर्म्मस्य नृपतिः पदम् ॥ इति मनु(८।४४) वचनम् ॥१३॥

यः स्वामिना नियुक्तस्तु दानायव्ययपालने ।
कुसीदकृषिवाणिज्ये निसृष्टार्थस्तु सः स्मृतः ॥
प्रमाणं तत्कृतं सर्वं लाभालाभव्ययोदयम् ।
स्वदेशे वा विदेशे वा स्वामी तन्न विसंवदेत् ॥ इति वीरमित्रोदय–व्यवहारचिन्तामणिविवादचन्द्र(पृ० १५०)विवादरत्नाकरकल्पतरुप्रभृतिग्रन्थधृतबृहस्पति(बृस्मृ० ८।२८।पृ० ६८)वचनम् ॥१४॥

निसृष्टार्थस्तु यो यस्मिंस्तस्मिन्नर्थे प्रभुस्तु सः ।
तद्भर्त्ता तत्कृतं कार्य्यं नान्यथा कर्त्तुमर्हति ॥ इति वीरमित्रोदयव्यवहारचिन्तामणिकल्पतरुप्रभृतिग्रन्थधृतकात्यायन(कास्मृ० ४७०।पृ० ५६) वचनम् ॥१५॥

पितृधनहारित्वं तु पूर्व्वस्य पूर्वस्याभावे सर्वेषामविशिष्टम् ।
न भ्रातरो न पितरः पुत्रा रिक्थहराः पितुः । इत्यौरसव्यतिरिक्तानां[1]

---

१. १इत्यौरसव्यतिरिक्तानां—ख्पा० ।

पुत्रप्रतिनिधीनां सर्वेषां रिक्थहारित्वाप्रतिपादनपरत्वात्-औरसस्य तु, एक एवौरसः पुत्रः पित्र्यस्य वसुनः प्रभुः-इत्यनेनैव रिक्थभाक्त्व-स्योक्तत्वात्—इति मिताचरा, पृः २१५)दिगन्वलिखनदृष्टेति ॥१६॥

अङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यचतुस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयतुलादमाणीय-द्वादशदिनसम्बन्धिशनिवासरे मदेय व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्जयतितराम्
श्रीविश्वनाथमिश्रेण

---

(४३)—रोवकारि मिछिल आदालत देओयानि सदर मोकाम कलिकाता तारिख ३ माह जुन सन १८३४ इङ्गरेजी मताबक २२ माह ज्यैष्ठ सन १२४१ बाङ्गला रोज मङ्गलवार आदालत मजकुरार हाकिम श्रीयुत रावरट हालडन राटरि साहेबेर बैठके—

रामगोपालदेओ बनाम गोकुलचन्द्र तहबिलदार ओ गैरह। छापल हाजिर हइल। गत मासेर ६ तारिखेर हुकुम मते ए आदालतेर पण्डित ये व्यवस्था दाखिल करिलेन ताहा तारिख मजकुरेर दष्टी हओ छापलेर खास आपीलेर सओयाल एवं तत्सम्बन्धीय अन्य कागजातेर सहित पढ़ागिया बोध हइल ये पण्डितेर लिखित व्यवस्था तारीख मजकुरेर रोयकारिर लिखत सओयाल मताबक नहे। कारण एइ ये सओालेर मर्म्म एइ—मद्दयान अर्थात् वरफलानी ये गोपालभाण्डारि ओ गयरह उहारदिगेर पूर्व्वपुरुषेर दास-दासी छिल, आद्य पर्य्यन्त हइते सेवा ओ कार्य्ये नियुक्त ओ प्रवृत्त छिल। एक्षणे उहारा सेवा ओ कार्य्य हइते गरहाजीर हइयाछे—नालिस करे। सदर आमीन ओ जज साहेब आपनारदिगेर फयसलार विस्तारित विवरणसकलेर

द्वाराय छाएल ओ गयरहेर पूर्व्व पुरुस मसर्म्मा हाडो फारिक्-खानिर खरिदा गोलाम, साव्यस्थानुसारे उहारदिगेर दावि, एइ हुकुमे ये छाएल ओ गयरह दासत्वेर सेवा ओ कार्य्य करे हिगरि करिलेन। ये हेतुक प्रकाश्य वोध हइतेछे ये किवल हाडो मजकुर दासत्वताय खरिद हइयाछिल ना, ताहार पुत्र-पौत्रादी इहाते छाएल ओ गयरहेर दासत्व सिद्ध हओन विषये ये ऐ फयसलासकल हइयाछे, एमत फयसलासकल शास्त्र-सम्मत यथार्थ वटे कि ना। अतएव हुकुम हइल ये पुनराय कागज-सकल पण्डितेर हाओाला करा जाय। उचित ये पण्डित उपरेर लिखित विवरणे ज्ञात हओनानन्तर ताहार जओाव दुइ रोजेर मध्ये दाखिल करेण इति ॥०॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतरावर्टहालडनराटरीसाहेबधर्म्माधिकरणलिखितैतदब्दीयजुनमासीयतृतीयदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितैतद्विवादविषयनिविष्टपत्रजातं च यदेतदब्दीयजुनमासीयद्वादशदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥

एतत्प्रश्नपत्रलिखितवृत्तान्ते सति हाडोनाम्नः क्रयपत्रे केवलहाडोसंज्ञको दासत्वेन क्रीतो न तु तस्य पुत्रपौत्रादिरिति नियमो यदि लिखितः स्यात्तदा दासत्वेन हाडोमात्रस्य क्रयेण तत्पुत्रपौत्रादीनां शास्त्रोक्तपञ्चदशदासानन्तर्गतत्वेनाशास्त्रीयबलात्कारकृतदासभावान्तर्गतत्वेन च तेषां दास्यविषये जातं यज्जयपत्रजातं तच्छास्त्रसिद्धं न भविष्यति, अशास्त्रीयबलात्कारकृतदासमोचनस्य शास्त्रानुसारेण कर्त्तुमुचितत्वात्। यदि च तस्मिन् क्रयपत्रे केवलहाडोसंज्ञको दासत्वेन क्रीतो न तु तस्य पुत्रपौत्रादिरिति नियमो न लिखितः स्यात्तदा दासत्वेन हाडोसंज्ञकस्य क्रयेण तत्पुत्रपौत्रादीनामपि शास्त्रोक्तपञ्चदशदासान्तर्गतत्वेन तेषां दास्यविषये जातं यज्जयपत्रजातं तच्छास्त्रसम्मतं भविष्यत्येव, क्रीतद्रव्यमात्रोत्पन्नद्रव्यजातमात्र एव क्रयकर्त्तुः स्वत्वस्य शास्त्र-

व्यवहारोभयसिद्धत्वात्-इति वङ्गदेशचलितमनुदायतत्त्वदायभागटीकादाय क्रमसंग्रहविवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥

अत्र प्रमाणम्—

गृहजातस्तथा क्रीतो लब्धो दायादुपागतः ।
अनाकालभृतस्तद्वदाहितः स्वामिना च यः ॥
मोक्षितो महतश्चर्णाद् युद्धे प्राप्तः पणे जितः ।
तवाहमित्युपगतः प्रव्रज्यावसितः कृतः ॥
भक्तदासश्च विज्ञेयस्तथैव वडवाभृतः ।
विक्रेता चात्मनः शास्त्रे दासाः पञ्चदश स्मृताः ॥—इति दायक्रमसंग्रहविवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थधृतनारदवचनम् ॥१॥

चौरापहृतविक्रीता ये च दासीकृता बलात् ।
राज्ञा मोचयितव्यास्ते दासत्वं तेषु नेष्यते ॥—इति विवादार्णवसेतु(पृ० १६३)विवादभङ्गार्णवादिग्रन्थधृतनारद(नाय० पृ०६८)वचनञ्चेति ॥२॥

अङ्करेजीशाब्दप्रतिपाद्यचतुस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयजुलाइमासीयपञ्चविंशतितमदिनशम्बन्धिशुक्रवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

———

(४४)—रोवकारि मिञ्जिल आदालत देवोआनि सदर मोकाम कलिकाता अदालत मजकुरार कायम मोकाम हाकिम श्रीयुत वागस फिमल रावटसन साहेबेर बैठके। ओ।फे तारिख ४ माह जुन सन १८३४ साल ई मोतवेक २३ ज्यैष्ठ सन १२४१ बाङ्गला दिवस बुधवार—

मुसम्मात विश्वेश्वरिदेव्या मफलछा — आपिलाण्ट
ताराचान्दचट्टोपाध्याय ओ गयरह — रेष्पाडण्टान

आपीलाण्टेर वकिल मुनसी हयदर आली ओ रेष्पाडण्टानेर मध्ये ताराचान्दचट्टोपाध्याय हाजिर आइल। ■ मोकद्दमा

सिरस्तादारेर कैफियत सम्वलित गत मेइ मासेर ३० तारिखे आमार वैठके रोवकार हइया आपीलाण्टेर उकिलेर स्थाने आपीलेर सओोलेर नकल तलव हइया स्थगित छिल, अद्य आपीलेर सओोलेर नकल दाखिल कराते पुनराय रोवकार हइल, ओ फयसला ओ आपीलेर छओोवाल ओ ए आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था ओ सदर आपीलेर मञ्जुरिर सरव सम्वलित रोवकारि दृष्टे आइल। जे हेतुक चुडान्त हुकुम सादर हओोर पूर्व्वे आदालतेर पण्डितेर निकट व्यवस्था तलव करा मोकद्दमार विस्तारित[1] सहित उचित बोध हइल, अतएव हुकुम हइल ये एइ रोवकारिर नकल एइ हुकुमे जे निचेर लिखित समुदाय सओोलेर जओोव बाङ्गला मुलुकेर चलित शास्त्रानुसारे ओहार वचन प्रमाण सहित आगत बुधवार दिवसे दाखिल करेण—ए आदालतेर पण्डितेर हाओोला कराजाय।

प्रथम सओोल —

सरूपचन्द्र विरक्तवैरागी वैष्णि एक पुत्र दिपचन्द्र ओ पद्ममणी ओ दुर्गामणी दुइ कन्या राखिया मृत्यु हय। ओहार समुदाय तेर्ज्य वस्तु ओहार पुत्र दिपचन्द्रके पौछिल। ओ दिपचन्द्र आपन जीवदशा पर्य्यन्त अन्येर अंश वेसेरेक दखिलकार थाकिया सन १२०४ साले तस्य स्त्री वेदवति ओ तस्य कन्या दासमनीके राखिया मृत्यु हय। वेदवति ताहार तेर्ज्य विषये दखिलकार हइया अुख्म्मोत दासमनिर विवाह देय, जे दासमनीर पुत्र सर्व्वचन्द्र जन्मे। १२०९ साले दासमनी आपन मातामही वेदवति ओ सर्व्वचन्द्र पुत्र, ओ सन १२२४ साले सर्व्वचन्द्र आपन मातामही वेदवति ओ आपन स्त्री विश्वेश्वरिर सम्मुखे मृत्यु हय। तत्परे सन १२२८ साले मुख्म्मोत वेदवति मृत्यु हय। अतएव दिपचन्द्रेर तेर्ज्य वस्तु दिपचन्द्रेर दौहित्र

[1] विस्तारित—स्पष्ट०।

स्वरूपचन्द्रेर स्त्रीके असिवेक, कि दीपचन्द्रेर भग्निर सन्तानदिगेके इति—

द्वितीय सओोल—

यद्यपि दासमनि दिपचन्द्रेर वर्त्तमाने किम्वा ताहार मृत्युर पर दिपचन्द्रेर स्त्री वेदवति वर्त्तमाने जमिदारिर मजकुरार उपर दखल पाइया थाके, ऐ प्रयुक्त ओ दखल ना पाओा प्रयुक्त ये प्रकार प्रथम सओोल लेखा गेल ओहार तेर्य्य वस्तुते दिपचन्द्रेर दौहित्रेर स्त्री विश्वेश्वरि सत्वाधिकारि हओोने ओ ना हओोने किम्वा दिपचन्द्रेर भग्निर सन्तानेरा सत्वाधिकारि हओोने ओ ना हओोने शास्त्र अनुसारे व्यतिक्रम आछे कि ना इति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिस्थानाभिषिक्त श्रीयुतवामर्यक मिलरावटसन् साहेबधर्म्माधिकरणलिखितैतदन्दीयजुनमासीयचतुर्थदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नपत्रप्रतिरूपपत्र यदेतदन्दीयजुनमासीयद्वादशदिनसम्बन्धिबृहस्पतिवासरे मया प्राप्त तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तर लिख्यते ॥—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रथमप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति दीपचन्द्रस्याभावे यदि तस्य पुत्रमारभ्य तत्पितु स्वरूपचन्द्रस्य प्रपौत्रपर्य्यन्तानां मध्ये कश्चिन्नास्ति तदा दीपचन्द्रस्य पितु स्वरूपचन्द्रस्य दौहित्राणामर्थात् दीपचन्द्रभगिनीपुत्राणामेवाधिकार इति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

पितुरपि प्रपौत्रपर्य्यन्ताभावे पितृदौहित्रस्याधिकारो बोद्धव्यो धनिदौहित्रस्येव—इति दायभागधृतवचनम् ॥१॥०॥०॥०॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि दासमनी दीपचन्द्रे स्वपतौ विद्यमाने मृते वा दीपचन्द्रपत्न्या वेदवत्या विद्यमानाया ज्ञमीन्दारस्याधिकारे मजकूरे आयत्तत्त्व सम्पादितवती

स्याच्च तस्या आयत्तत्वं यदि तन्निनृकृतदानानुसारेणाभूत्तदा तद्धनस्य दासमन्याः पितृदत्तसौदायिकस्त्रीधनत्वेन दासमन्याः मरणोत्तरं तत्यक्तपितृदत्तसौदायिकस्त्रीधने तद्दुहितृभावे तत्पुत्रस्य सर्व्वचन्द्रस्य अधिकारे जाते सति तन्मरणोत्तरं तत्यक्तधने सर्वचन्द्रस्य पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्य पत्न्या विश्वेश्वरीदेव्या एवाधिकारः। सर्व्वचन्द्रपत्न्यां विश्वेश्वरीदेव्यां विद्यमानायां सर्वचन्द्रप्रमातामहस्वरूपचन्द्रदौहित्राणां नाधिकारः। एवञ्च सति विश्वेश्वरीदेव्या दीपचन्द्रदौहित्रपत्न्यास्तद्धनाधिकारित्वे दीपचन्द्रभागिनीपुत्राणां चानधिकारित्वे दीपचन्द्रत्यक्तधने अयमेव व्यतिक्रमो जातः। दीपचन्द्रस्य धनं तत्कृतस्वकुलोद्देश्यकदानानुसारेण तत्कन्यास्तत्यास्तद्धने तन्मरणोत्तरं तस्यास्त्यक्त धनमिति। तत्र च धने तत्पुत्रस्य सर्व्वचन्द्रस्याधिकारित्वेन तन्मरणोत्तर तदेव धनं सर्व्वचन्द्रत्यक्तमिति च। यदि च सराजकरस्थावरात्मकतद्धने दासमन्या आयत्तत्वमुपरिलिखिततत्पितृकृतदानानुसारेण नाभूदथवा प्रथमप्रश्नलिखितरीत्या आयत्तत्वमेव नाभूत्तदा प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रकारेण दीपचन्द्रभागिनीपुत्राणामधिकारित्वे दीपचन्द्रदौहित्रपत्न्या विश्वेश्वरीदेव्या अनधिकारित्वे च दीपचन्द्रत्यक्तधने कश्चिद् व्यतिक्रमो नास्ति—इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागदायतत्त्वव्यवहारतत्त्वव्यवहारमातृकादायभागटीकादायक्रमसंग्रहविवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥—

अत्र प्रमाणम् —

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनम् ॥१॥

ऊढया कन्यया वापि पत्युः पितृगृहेऽथवा।
भर्त्तुः सकाशात् पित्रोर्वा लब्धं सौदायिकं स्मृतम् ॥—इति दायभागादिग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥२॥

विवाहकाले तत्पूर्व्वापरकाले वा स्त्रियै यद्धनं पित्रा दत्तं तत्र तु धने प्रथमं कुमार्य्यास्तदनन्तरमूढायाः पुत्रवतीसम्भावितपुत्रयोस्तदनन्तरं वन्ध्याविधवयोश्चाधिकारः। सर्व्वदुहित्रभावे पुत्रादेर्यौतुकधनवत् क्रमेणाधिकारः—इति दायक्रमग्रन्थलिखनम् ॥३॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा—इत्यादि दायभागादिग्रन्थ-धृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥४॥

प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रमाणञ्चेति ॥५॥०॥०॥०॥

अङ्करेबीशब्दप्रतिपाद्यचतुस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयग्रगस्यमासीयै-काद्शदिनसम्बन्धिसोमवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीउर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(४५)—इ सन १८३४ सालेर ७ एपरेल दिवस स(ो)मवार धइ आदालत अर्थात जेला तिरहुतेर देवोानि आदालतेर रोयकारि द्वाराय मोकाम कलिकातार सदर देवोानि आदालते पण्डितेर पर सओाल—

हनुमानदत्तराय ओ भोलादत्तराय ओ गणेशदत्तराय
मुद्दइयान

मृत चण्डीदत्तेर वनीता मुछम्मात छोलछनचौधुरायन ओ परमेश्वरदिदत्त
मुद्दाहालेहेम

मोकद्दमा कालेक्टरि सेरेस्ताय नाम लिखा ओ जेला तिहोतेर आदालतेर मोतालके देहा निजामत इादि परगनार मौजे वछुल-पुर ओ गयरहते दखल पाओार प्रार्थनाय मवलगे ८७३५ शुगुन मालगुजारि देहा निजामतेर तायदादे ॥

प्रथम प्रश्नः—

चौधुरि देवदत्तराय जाति ब्राह्मण। पहार चारि पुत्र। प्रथम विरसिंहराय, ताहार पुत्र चण्डीदत्तराय नामे छिल। ताहार वनिता मछम्मात छोलछन, ओ विरसिंहेर कन्या मुछम्मात चान्द्रावति चण्डीदत्तेर सहोदरा भग्नि छिल, ओ चन्द्रावति मजकुरार पुत्र

परमेश्वरिदत्त आछे, ओ देवदत्त मजकुरेर द्वितीय पुत्र सिवसिंह, तस्य पुत्र आनकट्टीराय तस्य पुत्र सदाशिवराय तस्य पुत्र कृष्णदत्तराय मुद्दइ वर्त्तमान, ओ देवदत्तराय मजकुरेर तृतीय पुत्र हरदिसिंहराय, तस्य दुइ पुत्र भैरवदत्त ओ हनुमानदत्तराय मुद्दइ वर्त्तमान आछे; ओ भैरवदत्तेर एक पुत्र सम्भुदत्तराय, तस्य पुत्र भोलानाथराय मुद्दइ वर्त्तमान आछे; ओ देवदत्त मजकुरेर चतुर्थ पुत्र जयकृष्णराय निसन्तान मृत्यु हय। अतएव जिज्ञाशा कराजाय ये चण्डीदत्त मजकुर ब्राह्मन जाति आपन भग्निर सन्तान परमेश्वरिदत्तके कर्त्तापुत्र करियाछे, शास्त्रानुसारे सिद्ध बटे कि ना॥

द्वितीय प्रश्न :—

यद्यपि कर्त्तापुत्र असिद्ध हय, तबे हेबानामार लिखित धन ओ परमेश्वरिदत्तेर नामे एकरारनामा शास्त्र मत सिद्ध हइबेक कि, ना, ओ एइ सओोलेर सम्बलीत हेबानामा ओ एकरारनामा ओ कुरशीनामा दृष्टि करिया मैथिलि शास्त्रानुसारे प्रति उत्तर लिखेन इति॥

श्रीर्जयतितराम्

प्रमुसमर्पितप्रश्नपत्रे तत्संवलितं दानपत्रं संवित्पत्रं वंशावलीपत्रं च यदङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यचतुस्त्रिंशदधिकाष्टादशशतान्दीयापरेलमासीयद्वाविंशतितमदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते॥

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रथमप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति अर्थात् पितामहपौत्रादौ विद्यमाने सति पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितब्राह्मणजातीयचण्डीदत्तमैथिलेन सोदरभगिनीपुत्रः परमेश्वरीदत्तः कृत्रिमपुत्रः कृतश्चेत् स कृत्रिमपुत्रो मिथिलादेशीयशास्त्रानुसारेण सिद्ध्यति। यद्यपि दत्तकमीमांसाग्रन्थे ब्राह्मणाना भागिनेयस्य पुत्रता-

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा—इत्यादि दायभागादिग्रन्थ-धृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥४॥

प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रमाणञ्चेति ॥५॥०॥०॥०॥

अङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यचतुस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयअगस्त्यमासीयै-कादशदिनसम्बन्धिसोमवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(४५)—इ सन १८३४ सालेर ७ एपरेल दिवस स(ो)मवार एइ आदालत अर्थात जेला तिरहुतेर देओआनि आदालतेर रोवकारि द्वाराय मोकाम कलिकातार सदर देओआनि आदालते पण्डितेर पर सओआल—

हनुमानदत्तराय ओ भोलादत्तराय ओ गणेशदत्तराय
मुद्दइयान

मृत चण्डीदत्तेर वनीता मुसम्मात छोलछनचौधुरायन
ओ परमेश्वरिदत्त मुद्दाहालेहेम

मोकद्दमा कालेकृरि सेरेस्ताय नाम लिखा ओ जेला तिहोतेर आदालतेर मोताल्लके देहा निजामत हादि परगनार मौजे बछुल-पुर ओ गयरहते दखल पाओयार प्रार्थनाय मवलगे ८७३५ तृगुन मालगुजारि देहा निजामतेर वावदादे ॥

प्रथम प्रश्नः—

चौधुरि देवदत्तराय जाति ब्राह्मण। एहार चारि पुत्र। प्रथम विरसिंहराय, ताहार पुत्र चण्डीदत्तराय नामे छिल। ताहार वनिता मुसम्मात छोलछन, ओ विरसिंहेर कन्या मुसम्मात चान्द्रावति —चण्डीदत्तेर सहोदरा भग्नि छिल, ओ चन्द्रावति मजकुरार पुत्र

परमेश्वरिदत्त आछे, ओ देवदत्त मजकुरेर द्वितीय पुत्र सिवसिंह, तस्य पुत्र आनकट्टीराय तस्य पुत्र सदाशिवराय तस्य पुत्र कृष्णदत्तराय मुदइ वर्त्तमान, ओ देवदत्तराय मजकुरेर तृतीय पुत्र हरदिसिंहराय, तस्य दुइ पुत्र भैरवदत्त ओ हनुमानदत्तराय मुदइ वर्त्तमान आछे; ओ भैरवदत्तेर एक पुत्र सम्भुदत्तराय, तस्य पुत्र भोलानाथराय मुदइ वर्त्तमान आछे; ओ देवदत्त मजकुरेर चतुर्थ पुत्र जयकृष्णराय निसन्तान मृत्यु हय। अतएव जिज्ञाशा कराजाय ये चण्डीदत्त मजकुर ब्राह्मन जाति आपन भग्निर सन्तान परमेश्वरिदत्तके कर्त्तापुत्र करियाछे, शास्त्रानुसारे सिद्ध बटे कि ना॥

द्वितीय प्रश्न :—

यद्यपि कर्त्तापुत्र असिद्ध हय, तवे हेवानामार लिखित धन ओ परमेश्वरिदत्तेर नामे एकरारनामा शास्त्र मत सिद्ध हइवेक कि, ना, ओ एइ सओयालेर सम्वलीत हेवानामा ओ एकरारनामा ओ कुरशीनामा दृष्टि करिया मैथिलि शास्त्रानुसारे प्रति उत्तर लिखेन इति॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं तत्सवलितं दानपत्रं संविदापत्रं वंशावलीपत्रं च यदङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यचतुस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयापरेलमासीयद्वाविंशतितमदिनवत्यब्धिमङ्गलवासरे मया प्राप्तं तदवलोकन यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते॥

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रथमप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति अर्थात् पितामहपौत्रादौ वियमाने सति पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितब्राह्मणजातीयचण्डीदत्तमैथिलेन सोदरभगिनीपुत्रः परमेश्वरीदत्तः कृत्रिमपुत्रः कृतश्चेत् स कृत्रिमपुत्रो मिथिलादेशीयशास्त्रानुसारेण सिद्ध्यति। यद्यपि दत्तकमीमांसाग्रन्थे ब्राह्मणानां भागिनेयस्य पुत्रता-

निषेधकं वचनं लिखितमस्ति, परन्तु तद्वचनं वास्तवं दत्तकपुत्रविषयकमेव, न तु कृत्रिमपुत्रविषयम्, अथ च सर्व्वस्मृतिप्रधानमनुस्मृतौ कृत्रिमपुत्रताविषये मनुवचनोक्तसजातीयत्वादेरेवाप्रयोजकता दृष्ट्वा सर्व्वैरेव प्राचीनार्व्वाचीनैर्मैथिलनिबन्धकारैः स्वस्वग्रन्थेषु सजातीयः कश्चित् कृत्रिमपुत्रः कर्त्तव्य इत्येव लिखितः, भागिनेयः कृत्रिमपुत्रो न कर्त्तव्य इति निषेधकः केनापि न लिखितः, वरं मैथिलैर्महामहोपाध्यायधर्म्मशास्त्राध्यापककेशवमिश्रैर्यत्र पितेव भ्रात्रादिर्वा कृत्रिमपुत्रः कृतस्तत्रापि पितृत्वेनैव निर्देशो न पुत्रत्वेन भ्रातृत्वेन—इति द्वैतपरिशिष्टग्रन्थे लिखितमस्ति। एवञ्च सति पित्रपेक्षया भ्रात्रपेक्षया च भागिनेयस्य दत्तकमीमांसाग्रन्थलिखितपुत्रतानिषेधप्रयोजकविरुद्धसम्बन्धस्याधिक्यं नास्ति। एवं दत्तकपुत्रस्य स्वजनकपित्रादीनां पिण्डदातृत्वं निषिद्धमिति सर्वेषां निबन्धकाराणां सम्मतम्। मैथिलग्रन्थकाराणां मते कृत्रिमपुत्रस्य स्वजनकपित्रादीनां पिण्डदातृत्वमप्यस्त्येव—इति शुद्धिविवेके रुद्रधरोपाध्यायैर्मैथिलैर्लिखितमस्ति। अतो मैथिलग्रन्थकाराणां मते दत्तकपुत्रकृत्रिमपुत्रयोर्विषयमात्र एव महान् भेदोऽस्ति। अतएव मिथिलादेशे सजातीयः कश्चित्[1] कृत्रिमपुत्रः क्रियते, तत्रापि पितामहपौत्राद्यपेक्षया स्नेहातिशयात् पुत्रगुणाधिक्यदर्शनाच्च प्रायशो मैथिलैः प्राचीनार्व्वाचीनैर्विशेषतो भागिनेयः कृत्रिमपुत्रः क्रियते इति सर्व्वदैव तद्देशव्यवहारः। एवञ्च सति मनुस्मृतिधर्म्मतायां मिथिलादेशीयग्रन्थानुसारेण तद्देशव्यवहृततायाञ्चाधाराणां भागिनेयस्य कृत्रिमपुत्रतायां मैथिलनिबन्धकारप्रणीतदत्तकमीमांसाग्रन्थलिखितवचनबाध्यता[2] नास्ति, यतस्तद्देशाचारजात्याचारकुलाचारादिसिद्धस्य कस्यचिदपि कर्म्मणो बाधस्तदन्यदेशीयग्रन्थानुसारेण तदितरजातिप्रचलितग्रन्थानुसारेण तदन्यकुलप्रचलितग्रन्थानुसारेण वा भवितुं न शक्नोति, देशाचारजात्याचारकुलाचारादीनां मन्वादिधर्म्मशास्त्रे प्रबलप्रमाणत्वेनोपन्यासात्। यत्र विषयविशेषे स्वदेशीयपरदेशीयग्रन्थयोर्विरोधस्तत्र विषये स्वदेशीयग्रन्थस्यैव प्राबल्येन प्रचरस्य भवितुं युक्तत्वाच्चेति ॥—

१. कश्चित्—प्र०।   २. निबन्धकारप्र०—प्र०।

अत्र प्रमाणम्—

सदृशं यं प्रकुर्व्वीत गुणदोषविचक्षणम् ।
पुत्रं पुत्रगुणैर्युक्तं स विज्ञेयस्तु कृत्रिमः ॥ इति मनुवचनम् ॥१॥

अपुत्रेण सुतः कार्य्यो यादृक् तादृक् प्रयत्नतः ।
पिण्डोदकक्रियाहेतोर्नामसंकीर्त्तनस्य च ॥ इति कल्पतरुविवादरत्नाकरप्रभृतिग्रन्थधृतवृहस्पतिवचनम् ॥२॥

सद्भिराचरितं यत् स्याद्धार्म्मिकैश्च द्विजातिभिः ।
तद्देशकुलजातीनामविरुद्धं प्रकल्पयेत् ॥ इति मनु(८।४६)-वचनम् ॥३॥

जातिजानपदान्[1] *धर्म्मान् श्रेणीधर्म्मांश्च धर्म्मवित् ।*
समीक्ष्य कुलधर्म्मांश्च स्वधर्म्मं प्रतिपालयेत् ॥—इति मनु-वचनम् ॥४॥

देशजातिकुलानाञ्च ये धर्म्माः प्राक् प्रवर्त्तिताः ।
तथैव ते पालनीयाः प्रजाः प्रक्षुभ्यतेऽन्यथा ॥—इति वृहस्पति-वचनम् ॥५॥

यस्मिन् देशे य आचारो व्यवहारः कुलस्थितिः ।
तथैव परिपाल्योऽसौ यदा वशमुपागतः ॥—इति याज्ञवल्क्य-वचनम् ॥६॥

मन्वर्थविपरीता या सा स्मृतिर्न प्रशस्यते ।
वेदार्थोपनिबन्धृत्वात् प्राधान्यं हि मनोः स्मृतम् ॥—इति वृहस्पति-(पृ० २३३)वचनम् ॥७॥

यत्र पितैव भ्रात्रादिर्वा कृत्रिमपुत्रः कृतस्तत्रापि पितृत्वेनैव निर्द्देशो न तु पुत्रत्वेन भ्रातृत्वेन । इति द्वैतपरिशिष्टग्रन्थलिखनम् ॥८॥

स च पुत्रत्वकरणस्य पिण्डप्रदः निजपित्रादीनां पिण्डप्रदत्वं तस्य तिष्ठत्येव — इति शुद्धिविवेकग्रन्थलिखनम् ॥९॥

---

१. जातिजानूल्दान्—व्यप० ।

केवलं शास्त्रमाश्रित्य न कर्त्तव्यो विनिर्णयः ।
युक्तिहीनविचारेण धर्म्महानिः प्रजायते ॥—इति विवादचिन्तामण्यादिग्रन्थधृतबृहस्पतिवचनम् ॥१०॥,

स्मृत्योर्विरोधे न्यायस्तु बलवान् व्यवहारतः ।—इति याज्ञवल्क्यवचनम् ॥११॥,

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितरीत्या मिथिलादेशीयशास्त्रानुसारेण कृत्रिमपुत्रतायाः सिद्धौ सत्यां द्वितीयप्रश्नलिखितरीत्या कृत्रिमपुत्रतायामसिद्धत्वेनावगम्यमानायामप्युभयथैव परमेश्वरीदत्तोद्देश्यकदानपत्रं सवितपत्रं च चण्डीदत्तस्य गृहावशिष्टे तत्पत्न्याश्च यावज्जीवं स्वपितृकुलोचितग्रासाच्छादनोपयुक्तावावश्यकविषयधर्म्मोद्याचरणोपयुक्ताच्च धनादवशिष्टे चण्डीदत्तनाम्नः कन्यकास्येत् कुमार्य्यास्तासां विवाहोपयुक्तव्ययाच्च स्वपितृकुलोचितग्रासाच्छादनोपयुक्ताच्च धनादवशिष्टे अन्येषां तद्धनमात्रोपजीविनामपि यावज्जीवं चण्डीदत्तनाम्नो जीवनावस्थासदृशग्रासाच्छादनोपयुक्तादावश्यकधर्म्मोद्याचरणोपयुक्ताच्च धनादवशिष्टे च सवितपत्रलिखितत्रिमुलाख्यघट्टसम्बन्धिशिवालयमन्दिरयोर्दृढीकरणपरिष्कारोपयुक्ताच्च धनादवशिष्टे मठिनिग्रामान्तर्गततडागोत्सर्गोपयुक्ताच्च धनादवशिष्टे च धने सिद्धयति । दानपत्रसवितपत्राभ्यां विवादास्पदीभूतधने चण्डीदत्तनाम्नः पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्य केनचित् सह साधारण्यस्यानवगमेन तयोः पत्रयोर्विवेचनया शास्त्रानुसारेण देवद्रव्यस्य तस्मै कृत्रिमपुत्राय स्वशिष्यत्वेन भागिनेयत्वेन च प्रीतिपूर्व्वकदानस्यावगमेन नैतादृशदानसिद्धौ बाधकसामान्याभावात्—इति मिथिलादेशचलितमनुस्मृतियाज्ञवल्क्यस्मृतिबृहस्पतिस्मृतिविवादचिन्तामणिविवादरत्नाकरविवादचन्द्रकल्पतरुपारिजातद्वैतनिर्णयद्वैतपरिशिष्टशुद्धिविवेकशुद्धिचिन्तामणिस्मृतिसारप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥

अत्र प्रमाणम्—

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनम् ॥१॥

कुटुम्बभक्तवसनाद्देयं यदतिरिच्यते—इति विवादचिन्तामण्यादिग्रन्थधृतबृहस्पतिवचनम् ॥२॥

सर्व्वस्वं गृहवर्ज्जन्तु कुटुम्बभरणाधिकम् ।
यद्द्रव्यं तत् स्वकं देयमदेयं स्यादतोऽन्यथा—इति तत्तद्ग्रन्थधृतकात्यायन(६४० । पृ० ७६)वचनम् ॥३॥

भृतिस्तुष्टया पण्यमूल्यं स्त्रीशुल्कमुपकारिणे ।
श्रद्धानुग्रहसंप्रीत्या दत्तमष्टविधं स्मृतम् ॥—इति तत्तद्ग्रन्थधृतबृहस्पति(पृ० १३८)वचनम् ॥४॥

कन्याभ्यश्च पितृद्रव्याद्देयं वैवाहिकं वसु । इति तत्तद्ग्रन्थधृतदेवलवचनम् ॥५॥

अनूढानान्तु कन्यानां वित्तानुरूपेण संस्कारं कुर्य्युः—इति तत्तद्ग्रन्थ(विचि० पृ० २१०)धृतविष्णुवचनञ्चेति ॥६॥

इशवीशब्दप्रतिपाद्यनिगमगुणगजेन्दुमिताब्दीयसितस्वरमाधीयप्रथमदिनघस्वन्धिचन्द्रवासरे मया विचारपत्रप्रश्नपत्रदानपत्रसंवित्तत्रयंद्यावलीपत्रैः सहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

प्रश्न :—

(४६)—यद्यपि कोन व्यक्तिर दुइ सन्तान थाके, आर ज्येष्ठ सन्तान आपन पिता वर्त्तमाने ऐ पिता ओ भ्रातार एकान्नवर्तिते· कोन स्थावर वस्तु आपन परिश्रम ओ क्षमतार द्वाराय उपार्ज्जन करे, आर पितार जीवद्दशा पर्य्यन्त ऐ वस्तुर उपस्वत्त्व साधारणेर खरचे आसियाथाके, एमत स्थले पितार लोकान्तरे ऐ वस्तु उभये दुइ भ्राताय अंश हइते पारे कि सोपार्जित सरवे ऐ ज्येष्ठ भ्राता समुदय ऐ वस्तु पाइवेक, आर यद्यपि कनिष्ठ भ्राता ऐ वस्तुर अंशेर हकदार हय, तवे कि आन्दाज पाइवेक—एइ प्रश्नेर प्रत्युत्तर यथाशास्त्रे लिखिवेन इति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं यदीयवीयब्दप्रतिपादनिगमगुणगजेन्दुमितान्दीय जानवरीमासायउसमादिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥

कस्यचिद् व्यक्तिविशेषस्य द्वयोः पुत्रयोर्म्मध्ये ज्येष्ठपुत्रेण जीवति पितरि तेन सह भ्रात्रा च सहाविभक्तावस्थायामेव किञ्चित् स्थावरं धनं स्वशक्त्या स्वायासेन चोपार्जितं स्यात्, अथ च पितुर्जीवनदशापर्य्यन्तं तदुपस्वत्वं साधारण्येन भुक्तं स्यात्तत्र साधारणद्रव्यापघातेन तद्धनमर्जितं चेत्तदा पितुर्न्निधनानन्तरं तद्द्रव्यं द्विधा विभज्य भागद्वयमुपार्जकस्य ज्येष्ठस्यैको भागः कनिष्ठस्य, ज्येष्ठस्य तद्धनं विद्याधनं चेत्, अथ च कनिष्ठोऽपि तत्समविद्यस्तदा कनिष्ठो वा भवतु, तदापि ज्येष्ठोपार्जितविद्याधने तादृशस्य कनिष्ठस्यापरविद्याधनप्रकारेण तुल्यांशाधिकारः, यदि च तद्धनं साधारण-द्रव्यानुपघातेन ज्येष्ठेन अर्जितमभूत्तदा तत्र धने स्वोपार्जितत्वमात्रेणो-पार्ज्जकस्य ज्येष्ठमात्रस्यैवाधिकारो न त्वेकान्नवर्त्तितया कनिष्ठभ्रातुः स्वामित्वे नाधिकारः। किन्तु भ्रातृस्नेहेन पौरुषबुद्ध्या वा यदि ज्येष्ठो भ्राता कनिष्ठ-भ्रात्रे किञ्चिद्दाति तदा तदनुसारेणोपार्ज्जकज्येष्ठदत्तपरिमितधने कनिष्ठस्या-धिकार—इति बङ्गदेशप्रचलितमनुदायभागदायतत्त्वदायभागटीकादायक्रम-सङ्ग्रहविवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥

इयवीयब्दप्रतिपादनिगमगुणगजेन्दुमितान्दीयसितम्बरमासीयगजेन्दु-मितादनसम्बन्धिगुरुवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(४७)—प्रश्न —

शूद्रादिर्दत्तकपुत्रग्रहणकालीन तन्निमित्त शास्त्रसम्मत किं किं कर्म्म कर्त्तव्यं रचित, आर यदि स्यात् ग्रहणकालीन तादृश

कर्त्तव्य कर्म्म सकल हइयाथाके, एवं तस्य पर दत्तक पुत्र ग्रहीतार मृत्यु हइले कोनो ज्ञाति द्वारा ऐ दत्तक पुत्रेर चूडाकरण इत्यादि हइले ऐ दत्तक पुत्र सिद्ध हइया ऐ ग्रहीतार स्वत्वे स्वत्वाधिकारि हइते पारे कि ना इति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं यदङ्करेजीयब्दप्रतिपाद्यचतुस्त्रिंशदधिकाष्टादश-शताब्दीयापरेलमासीयपञ्चदशदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

शूद्रादीनां दत्तकपुत्रग्रहणसमये एतानि कर्म्माणि शास्त्रतः कर्त्तुमुचितानि भवन्ति। प्रथमतः पुत्रदानं तत्पितृकृतम्, तत्पित्रनुज्ञया तन्मातृकृतं वा, तदनन्तरं व्याहृतिहोमादिकं विधाय ग्रहणं ग्रहीतृकर्त्तृकम्, तदनुज्ञया तत्सन्नीकर्त्तृकं वेति। यद्यपि दत्तकपुत्रग्रहणसमये पुत्रग्रहणाङ्गभूतानि सर्व्वाण्येव कर्म्माणि जातानि स्युः, तस्मात् परं दत्तकपुत्रग्रहीतुर्म्मरणं जातं चेद्, अपि केनचित् तज्ज्ञातिना तस्यैव दत्तकपुत्रस्य चूडाकरणादिसंस्कारा ग्रहीतृगोत्रेणार्थात्ग्रहीतृपुरुषस्य नामगोत्रे समुच्चार्य्य जाताश्चेत्, तदा स एव दत्तकः पुत्रो ग्रहीतुः पुत्रो भूत्वा ग्रहीतृत्यक्तधने स्वत्वाधिकारी भवत्येव-इति वङ्गदेशप्रचलितमनुवचनभागदायतत्त्वदायभागटीकादायक्रमसंग्रहविवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवदत्तकमीमांसादत्तकचन्द्रिकादत्तकदीधितिदत्तकनिर्णयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

माता पिता वा दद्यातां यमद्भिः पुत्रमापदि।
सदृशं प्रीतिसंयुक्तं स ज्ञेयो दत्त्रिमः सुतः - इति मनुवचनम् ॥१॥

नत्वेवैकं पुत्रं दद्यात् प्रतिगृह्णीयाद्वान्यत्रानुज्ञानाद्भर्त्तुः। पुत्रं प्रतिग्रहीष्यन् बन्धूनाहूय राजनि चावेद्य निवेशनस्य मध्ये व्याहृतिभिर्हुत्वा अदूरवान्धवं बन्धुसन्निकृष्टमेव प्रतिगृह्णीयाद्—इति दत्तकमीमांसादि-(पृ० १०१।१०२)ग्रन्थधृतवशिष्ठवचनानि ॥२॥

राजात्र ग्रामस्वामी। बन्धूनाहूय सर्व्वास्तु ग्रामस्वामिनमेवेति वृद्ध-गौतमस्मरणात्—इति दत्तकमीमांसा(पृ० ६६ ,ग्रन्थलिखनम् ॥३॥

बन्धूनात्मपितृमातृबन्धून् ज्ञातीन् सपिण्डान्। बान्धवाद्याह्वानं दृष्टार्थं राजाह्वानवत्—इति दत्तकमीमांसा(पृ० ६७)ग्रन्थलिखनम् ॥४॥

चूडाद्या यदि संस्कारा निजगोत्रेण वै कृताः।

दत्ताद्यास्तनयास्ते स्युरन्यथा दास उच्यते॥—इति दत्तकमीमांसादि-(पृ० ७४)ग्रन्थधृतकालिकापुराणवचनम् ॥५॥

दत्ताद्या अपि तनया निजगोत्रेण संस्कृताः।

आयान्ति पुत्रतां सम्यगन्यबीजसमुद्भवा ॥—इति दत्तकग्रन्थधृत-(पृ० ७४)कालिकापुराणवचनम् ॥६॥

तस्मादेषां पञ्चानां पुत्राणां शौनकवशिष्ठान्यतमविधिपरिग्रहेणैव पुत्रत्वं नान्यथा—इति दत्तकमीमांसा(पृ० १०६) ग्रन्थलिखनम् ॥७॥

तस्माद्दत्तकादिषु संस्कारनिमित्तमेव पुत्रत्वमिति सिद्धम्। दानग्रहणहोमाद्यन्यतमाभावे पुत्रत्वाभाव एव—इति दत्तकमीमांसा(पृ० १११ ग्रन्थ-लिखनम् ॥ ८ ॥

सर्व्वे ह्यनौरसस्यैते पुत्रा दायहराः स्मृताः—इति दायभागादिग्रन्थधृतदेवलवचनञ्चेति ॥ ९ ॥

इत्यर्थीसम्बन्धमतिवाद्यनिगमगुणगजेन्दुमिताब्दीयवैशाखमासीयगजेन्दुमितदिनसम्बन्धिगुरुवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

व्यवस्थार तरजमा वाङ्गला भाषाय—

हुजुरेर समर्पित करा सवाल, जाहा अङ्गरेजी सन १८३४ साले अपरैल मासेर १९ तारिखे दिवस मङ्गलवारे आमि पाइयाछिलाम, ताहार दृष्टे ये मत बोध हइल तदनुसारे उत्तर लिखितेछि—

प्रश्नोत्तरेर भाषा—

शूद्रादिर दत्तक पुत्र ग्रहणकालीन शास्त्रानुसारे एइ सकल कर्म्म कर्त्तव्य उचित। प्रथमतः जनक पिता किम्वा तदनुमतिक्रमे जननी माता पुत्र दान करिवेक। ताहार पर ग्रहीता व्यक्ति किम्वा तदनुमतिक्रमे ताहार पत्नी व्याहृतिहोम प्रभृति शास्त्रानुसारे करिया पुत्र ग्रहण करिवेक। आर यद्यपि दत्तक पुत्र ग्रहणकालीन पुत्र-ग्रहणेर अङ्ग ये सकल कर्म्म ताहा हइया थाके, ताहार पर दत्तक पुत्र ग्रहीता व्यक्तिर मृत्यु हयोयाते ताहार कोन झातिर द्वाराय ऐ दत्तक पुत्रेर चूडाकरण प्रभृति संस्कार ग्रहीता पितार नाम गोत्र उल्लेख करिया हइयाथाके, तवे ऐ दत्तक पुत्र सिद्ध हइया ग्रहीतार त्यक्त धने स्वत्वाधिकारी हइवेक। एइ व्यवस्था वङ्गदेश चलित मनु ओ दायभाग ओ दायतत्व ओ दायभागटीका ओ दायक्रमसंग्रह ओ विवादार्णवसेतु ओ विवादभङ्गार्णव ओ दत्तक-मीमांसा ओ दत्तकचन्द्रिका ओ दत्तकदीधिति ओ दत्तकनिर्णय ओ गयरह ग्रन्थ सम्मत वटे इति।

प्रथम प्रमाण मनुवचन। ताहार भाषा—माता किम्वा पिता किम्वा उभये ग्रहीता व्यक्तिर पुत्र ना थाका प्रयुक्त प्रीति पूर्व्वक आपन पुत्रके सजातीय ग्रहीता व्यक्तिके दान करे, ऐ पुत्र ग्रहीता व्यक्तिर दत्तक पुत्र जाना जाइवेक। इति ॥ १ ॥

द्वितीय प्रमाण वशिष्ठ मुनिर वचन सकल, दत्तकमीमांसा प्रभृति ग्रन्थेर लिखित। ताहार भाषा—ये व्यक्तिर केवल एक पुत्र थाकिवेक से व्यक्ति ऐ पुत्रके काहाकेओ दिवेक ना। एवं ग्रहीता व्यक्ति ओ ग्रहण करिवेक ना। कारण एइ ये ऐ पुत्र ऐ जनकेर पूर्व्व पुरुषेर सन्तानेर निमित्त थाकिवेक। एवं स्त्रीलोक पतिर अनुमति व्यतिरेक पुत्र दिवेक ना, ओ लइवेक ना। एवं पुत्रग्रहण ये करिवेक से वन्धुलोकेर आह्वान एवं राजार निकट निवेदन ओ व्याहृति होम प्रभृति करिया वन्धुलोकेर साक्षात् ग्रहण करिवेक इति ॥ २ ॥

তৃতীয় প্রমাণ—দত্তকমীমাংসা গ্রন্থ লিখিত। তাহার ভাষা—দ্বিতীয় প্রমাণে বশিষ্ঠ মুনির বচন। তাহাতে লেখা আছে যে রাজার নিকট নিবেদন করিয়া পুত্র গ্রহণ করিবেক। এ স্থলে রাজা শব্দে গ্রামস্বামী, অর্থাৎ জমিদার, জানা যাইবেক। কারণ এই যে বৃদ্ধ গৌতম মুনি কহিয়াছেন যে বন্ধুসকলের এবং গ্রামস্বামী অর্থাৎ জমিদারের আহ্বান করিবেক। অর্থাৎ ইহার-দিগকে জ্ঞাত করাইবেক ইতি ॥ ৩ ॥

চতুর্থ প্রমাণ দত্তকমীমাংসা গ্রন্থলিখিত। তাহার ভাষা—বন্ধুলোক ও জ্ঞাতিলোকের আহ্বান যত্নপূর্বক করিবেক। এ স্থলে বন্ধু শব্দে আত্মবন্ধু ও পিতৃবন্ধু ও মাতৃবন্ধু ও জ্ঞাতিশব্দে সপিণ্ড জানা যাইবেক; ও বন্ধু ও সপিণ্ডের আহ্বানের প্রয়োজন এই যে ইহারদিগের জ্ঞাতসারে যে দত্তক পুত্র গ্রহণ করিবেক সে দত্তক পুত্র লোকেতে প্রকাশ হইবেক। যেমন রাজ নিবেদনের প্রয়োজন অর্থাৎ ইহারদিগের জ্ঞাতসারে গ্রহীত দত্তক পুত্রকে কেহ মিথ্যা করিতে পারিবেক না ॥ ৪ ॥

পঞ্চম প্রমাণ-দত্তকমীমাংসা প্রভৃতি গ্রন্থ ধৃত কালিকাপুরাণ-বচন। তাহার ভাষা—বালকের চূড়াকরণ প্রভৃতি সংস্কার যদি গ্রহীতার নাম গোত্র উল্লেখ করিয়া হইয়া থাকে তবে দত্তক প্রভৃতি পুত্রেরা গ্রহীতার পুত্র হয়েন। ন তু বা দাস বলা যাইবেক ইতি ॥ ৫ ॥

ষষ্ঠ প্রমাণ—ঐ সকল গ্রন্থ ধৃত কালিকাপুরাণবচন। তাহার ভাষা—দত্তক প্রভৃতি পুত্র যদি গ্রহীতার নাম গোত্র উল্লেখ করিয়া সংস্কৃত হইয়া থাকেন তবে ঐ পুত্রেরা অন্যের ঔরস জাত হইলেও গ্রহীতা ব্যক্তির পুত্রতা সম্যক্ প্রকারে প্রাপ্ত হয়েন ইতি ॥ ৬ ॥

সপ্তম প্রমাণ—দত্তকমীমাংসা গ্রন্থ লিখিত। তাহার ভাষা—দত্তক প্রভৃতি পাঁচ প্রকার পুত্রের প্রতি শৌনকমুনির কথিত কিম্বা

वशिष्टमुनिर कथित ये प्रकार पुत्र ग्रहणेर विधान आछे ताहार मध्ये कोनो एक प्रकार विधान करिले ग्रहीतार पुत्रता सिद्ध हय। न तु ता हय ना इति ॥ ७॥

अष्टम प्रमाण—दत्तकमीमांसा ग्रन्थ लिखित। ताहार भाषा—ये हेतुक दत्तक प्रभृति पुत्रेर संस्कार करावेइ पुत्रता हय—एइ कथा स्थिर। अतएव दान किम्बा ग्रहण किम्बा व्याहृति होम प्रभृति, ये विधान नियमित आछे, ताहार मध्ये यदि कोनो एक कर्म्म ना हय तवे उहार पुत्रता सिद्ध हय ना इति ॥ ८॥

नवम प्रमाण—दायभाग प्रभृति ग्रन्थ धृत देवलमुनिवचन। ताहार भाषा—ये व्यक्तिर औरस पुत्र ना थाके, ताहार दत्तक प्रभृति पुत्रेरा धनाधिकारि हयेन इति ॥ ९॥

अङ्गरेजी सन १८३४ साले। सेतम्बरमासेर १८ तारिके दिवस बृहस्पतिवारे एइ व्यवस्था दाखिल करा गेल ॥—

---

(४८)—नं० ६ आपिल सन १८३४ साल—

ख्वकारि आदालते देओानि मों० वाजपुर परगने खोरद नागपुरेर एजेण्ट गवरनर[1] जानेरेल शाहेब बाहादुरेर मोहकमा कापतान वामश डिनगेष एजेण्ट साहेबेर बैठके सन १८३४ शालेर २९ मार्च्च मोतावक सन १२४० साल १७ चैत्र मवोफके सन १२४१ सालेर ५ चैत्र दिवस शनिवार—

चेतरामतेओारि—	आपिलाण्ट
सावेक मुद्दइ—	
आरानाथतेओारि—	रेष्पाडण्ट
सावेक मुद्दाआलेहे	

मोकद्दमा मौजे खटका ओ मौजे देशाउत परगने खोफरा; माधने परगने खोरदनागपुरेर मोळम्मात सुमित्रातेओारिनेर

१. गवर्नरजानेरेल—व्य०।

अर्द्धेक हिस्याय दखल पाइवार बाबद एशिष्टेण्ट कमिशनर साहेबेर फयशलार नाराजी ॥—

इहार पूर्व्वे शन हालेर २८ फिब्रेल ओ एइ मासेर १४ ओ २१ ओ २५ तारिखे एइ मोकद्दमा हजुरे रुबकार हइया मुलतबि छिल। अद्य एइ मोकद्दमा पुनराय उभयेर मोकाबिलाय रुबकार हइल। गोविन्दनारायणतेओयारि उभये सरिकानेर १ जना हजुरे हाजीर हइल। मिछिलेर समुदय कागचात ओ उभयेर कुर्शी-नामा मोलाहेजा हइया एइ बोध हय जे वासुदेवतेओयारि उभयेर मुरस छिलेन। ताहार दुइ पुत्र। ज्येष्ठ जगतमन तेओयारि, कनिष्ठ कृष्णमन तेओयारि। वासुदेवतेओयारिर सन्तान हइते आपिलाण्ट चेतरामतेओयारि अष्टम पुरुष ओ रेस्पाण्डेण्ट आशानाथतेओयारि ओ गोविन्दनारायणतेओयारि सप्त पुरुष छिल, आर कृष्णमनतेओयारि सन्तान हइते गोदलरामतेओयारि पञ्चम पुरुस[1] थाकिया, एक कन्या ओ सुमित्रातेओयारिनि आपन स्त्रीके राखिया अपुत्रक मृत्यु हय। ओ ताहार कन्या सुमित्रा वर्त्तमाने आपन एक पुत्र सन्तान राखिया मृत्यु हय। ओ ताहार कन्यार सन्तान आपन वनिताके राखिया मृत्यु हय। आर जगतमनतेओयारि ओ कृष्णमनतेओयारि उभये पितार स्थावर अस्थावर सकल विसय अर्द्धार्द्ध अंश करिया लइया दखिलकार थाकिया मृत्यु हइले। ताहारदिगेर उत्तराधिकारिरा पैतृक त्यक्त धने आपन २ हिस्या मतो दखिलकार थाकिया, इहार मध्ये आपिलाण्ट चेतरामतेओयारि रेस्पाण्डेण्ट आशानाथतेओयारि ओ गयरह गोदलरामतेओयारि मजकुरेर वनिता सुमित्राके ताहार स्वामिर ओ स्वामिर भ्रातार हिस्यार विषय मौजे खटगा ओ मौजे देसउतेर अर्द्धेक हइते बेदखल करिले। मोछम्मात मजकुरार नालिस मते सन १८१८ सालेर ६ जुन तारिखे जेला रामगडा हइते मौजे खटगा ओ मौजे देसउत ग्रामेर चारि आना रकम अर्थात अर्द्धेक ४ मोछम्मात

[1] पुरुष—व्यय०।

सुमित्रार स्वामिर, अर्द्धेक, ओ स्वामिर आवार अर्द्धेक विषये दखल पाइया दखिलकार छिल। परे सुमित्रा मजकुरा आपन दखलि ऐ दुइ मौजार समुदय हिस्या मोबलगे ७११ टाका पने रेप्पाडएट आशानाथतेओोरिर निकट विक्रय करिया कोवाला ओ पनेर टाकार रसीद सन १८२१ सालेर २३ आपरेल मोताबक फसलि सन १२२८ सालेर ९ वैशाख तारिखे लिखिया दिया सन १८२१ सालेर २८ आपरेल तारिखे आपन स्वेच्छापूर्वक मौं शहरघाटीर काजिर मोहर ओ सन १८३१ सालेर ३० आपरेल तारिखे रेजष्टरि कराइया देय। तद्वधि आशानाथ-तेओोरि बिक्रीत विषयेर पर दखलिकार आछे। सुमित्रातेओोरिनि फसलि सन १२४० सालेर भाद्र माहाते फौत करे। ताहाते चेतरामतेओोरि सुमित्रार स्वामिर सगोत्र प्रयुक्त ओ अपुत्रक फौत करणे आपनाके ताहार हिस्यार हिस्यादार करार दिया एइ नालिष करियार खोरद नागपुरेर परगना इरेर एशिष्टण्ट कमिसनर साहेवेर सुमित्रार दखलि विषय आशा-नाथतेओोरिर निकट विक्रय एव ताहाते ताहार दखिलकार थाकार शाब्दते सन १८३३ सालेर २८ मे तारिखे मोकद्दमा डिसमिष करियाछेन। आपिलाण्ट ऐ फयसलाय नाराज हइया सन १८३३ सालेर ११ सेतम्बर तारिखे परगना हावेर खोरद नागपुर ओ गयरहेर कमिसनरि मोहकमाय आपिलेर दरखास्त करे। परे कमिसनरि वरखास्त हइया आमार मोता-लुक हओोर उभयेर मोकद्दमा एइ आदालते मोन्तजम हय इति। रेप्पाडएट आशानाथतेओोरि जाहेर करे ये सुमित्रार स्वामिर हिस्या छिल ओ से विना आखेज ओ आपत्य आपन स्वामिर विशयेर पर दखिलकार थाकिया आपन सेच्छा पूर्वक मौजे खटगा ओ मौजे देशओत ग्रामेर अर्द्धेक मोबलगे ७११ टाका पने आमार निकट विक्रय करिया, कोवालाय काजिर मोहर ओ रेजष्ट साहेवेर रेजष्टरि कराइया लिखियादेय। तद्वधि आमि

रेस्पाडराट आमार दखले आछे। आर सुमित्रा आपन दखलि जमिर मध्ये एक नहरि जमि खारिटाम्भ ओ पाचि दुइ गाछ, काठाल १ ओ कदम्ब १ कयाल घरके दान करे। आपिलाराट ताहाते मोजाहेम हय ना इति। यदि स्यात् रेस्पाडराट आशानाथतेओरि जाहेर करितेछे जे सुमित्रातेओरिनेर विक्रयानुसारे विक्रित विशयेर पर दखिलकार आछे। आपिलाराट चेतरामेर सहित ताहार एलाका नाइ, ओ ताहार खरिद लाइदेष करिया कोबाला ओ पनेर टाकार रशीद पेष करे। किन्तु प्रकाश हइते छे जे सुमित्रा वेओा ओ अचिरा थाकिया स्वामिर पैतृक विषय आशानाथ तेओरिर निकटे विक्रय करे। मिताक्षरा ओ दाय भागेर तरजमार केताव मोलाहेजाय प्रकाश हइतेछे जे वेओा ओ अचिरा स्त्रिके स्वामिर पैतृक विषय दान विक्रयेर क्षमता कदापि नाइ। ए कारण हिन्दुदिगेर शास्त्रानुसारे ओ देशाचार मते सुमित्रा वेओा अचिरा रेस्पाडराट आशानाथ तेओरिर निकटे स्वामिर पैतृक विषय विक्रय करा ओ आशानाथ मज-कुरेर ताहा खरिद करा ओ कोवाला माफिक एसिष्टराट कमि-सनर साहेवेर हुकुमानुसारे ताहाते दखिलकार थाका सम्य(क) प्रकारे अयोग्य ओ आदालतेर माहेर योग्य नहे। एव शास्त्र द्वारा ओ देशाचार मते बोध हय ये मृत गोदलरामेर त्यज्य वस्तुर पर ताहार सगोत्र दखल पाइवार सत्व राखे किन्तु तरजमाय बहि दृष्टे अवगति हय जे पितार सप्तम पुरुष पर्य्यन्त सपिण्ड ओ हिस्याय हकदार। आर उभयेर कुरछिनामा हइते प्रकाश आछे जे वासुदेवतेओारि उभयेर मुवा। ताहार दुइ सन्तान। ज्येष्ठ जगतमनतेयारि उभयेर परना ओ कनिष्ठ कृष्णमनतेओारि। सुमित्रातेओारिनेर स्वामि गोदलरामतेओारिर परना छिल। दुइ भ्रातार आपन पितार विषय अर्द्धेक अर्द्धेक रकम अंश करिया लइया दखिलकार थाकिया मृत्यु हय, ताहार-दिगेर ओयारिशान[1] आपनारदिगेर पैतृक हिस्या माफिक

१. ओयारिशान—सम०।

दखिलकार आछे, आर आपिलाण्ट चेतराम वासुदेवतेओरि हइते अष्टम पुरुष ; ओ जगतमनतेओरि हइते सप्तम पुरुषेर तफात, एवं वासुदेव हइते आशानाथ षष्ठम पुरुष, ओ जगतमन हइते पञ्चम पुरुषेर तफात, आर सुमित्रार स्वामि गोदलराम वासुदेव हइते पञ्चम पुरुष ओ कृष्णमनतेओरि हइते चतुर्थ पुरुष तफात आछे, ओ गोविन्द नारायणतेओरि आशानाथते-ओरिर न्याय वासुदेव मजकुर हइते षष्टम पुरुष एवं जगतमन हइते पञ्चम पुरुषेर तफात। अतएव वरजमार केताव दृष्टे सपिण्डक अर्थात सप्तम पुरुष अष्टम पुरुषेर नाओयारिशी विषयेर हिस्याय कोनो स्वत्व राखे कि ना-सन्देह जन्मिल। एवं एतद्देशे एइ मोकद्दमार न्याय जे अष्टम पुरुषेर केह सगोत्र नाओयारिशि विराये दखल पाइयाछे कि ना तर्त्त करा गेल। ताहाते केह कहिते ओ कोनो लिखित पठित पेष करिते पारिवेक ना। अतएव ए विशयेर व्यवस्था ज्ञातो हओ। आविस्यक मते हुकुम हइल जे एइ रोवकारिर नकल ओ उभयेर कुरछिनामा इङ्गरेजी ओ फारशी ए बावते इङ्गरेजी चिठी द्वारा सदर दओानि आदालतेर हाकिमानेर निकट एइ प्रार्थनाय प्रेरित हय जे साहेबान मौसुफिल मिताक्षरा हइते एइ विशयेर व्यवस्था जे गोदलराम-तेओरि अपुत्रकेर विषये के २ हिस्यार हक राखे—आदालतेर पण्डितेर स्थाने तलव करिया अनुग्रह पूर्वक असल व्यवस्था मोलाहेजार कारण पाठान जे मोकद्दमा फयसल हय, आर व्यवस्था पौंछ पर्य्यन्त ए मोकद्दमा मुलतवि थाके इति—

प्रभुसमर्पितविचारपत्रं वंशावलीपत्रं च यदीशवीशब्दप्रतिपाद्यनिगम-गुणगजेन्दुमिताब्दीयापरैलमासीयपञ्चदशदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्राप्तं तदर्थलोभ्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

गोदलरामत्रिवेदित्यक्तधनं यत् पुत्रपौत्रप्रपौत्राभावे सति तत्पत्न्या सुमित्रा-देव्या उत्तराधिकारित्वेन प्राप्तं तत्र धने यदि गोदलरामत्रिवेदिदौहित्रस्तत्पत्नी-सुमित्रादेवीमरणोत्तरं विद्यमान आसीत्तदा तस्याधिकारस्तस्मिन् पुत्रपौत्र-

प्रपौत्ररहिते मृते सति तत्पत्न्या एव तद्धनाधिकार । यदि च गोदलराम त्रिवेदिदौहित्र स्वमातामह्या विद्यमानायामेव मृत स्यात्तदा तद्दौहित्रस्य तद्धने ■ वानुत्पादेन तत्पत्न्या अपि तद्धने नाधिकार, किन्तु प्रभुसमर्पित विचारपत्रव्यवस्थावलीपत्रोभयलिखितवृत्तान्ते सति गोदलरामत्रिवेदिवृद्ध प्रपितामहवासुदेवत्रिवेदिनोऽतिवृद्धप्रपौत्रयोराधानाथत्रिवेदिगोविन्दनारायण त्रिवेदिनोरेव सन्निकृष्टसपिण्डत्वेन समानाधिकार, आधानाथत्रिवेदि गोविन्दनारायणत्रिवेदिनो पूर्व्वं गोदलरामत्रिवेदित्यक्त धने ये उत्तराधिकारिणस्तेषां मध्ये कश्चिदिदानीं विद्यमानोऽस्ति न वेत्यस्य प्रभुसमर्पितविचार पत्रव्यवस्थावलीपत्राभ्यां स्पष्टतरतयाऽनवगमाद्, आधानाथत्रिवेदिगोविन्द नारायणत्रिवेदिनोर्विद्यमानयोर्वासुदेवत्रिवेदिवृद्धातिवृद्धप्रपौत्रस्य कमलनाथ त्रिवेदिनो वासुदेवत्रिवेदिवृद्धातिवृद्धप्रपौत्राणां कलहारामत्रिवेदिहीरारामत्रि वेदिभवनरामत्रिवेदिचेतरामत्रिवेदिनां वासुदेवत्रिवेदिवृद्धातिवृद्धप्रपौत्रप्रपौत्रस्य बचूरामत्रिवेदिनश्च नाधिकार, सन्निकृष्टासन्निकृष्टसपिण्डयोस्समानोदकानां च विद्यमानतायां सन्निकृष्टसपिण्डस्यैवाधिकारस्य मनुमिताक्षरादि प्रसिद्धमतत्वात्—इति मनुमिताक्षरादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥

इत्यादीशब्दप्रतिपाद्यनिगमगुणगणे दुमिताब्दीयश्रितस्वरमासीयमुनि नेत्रमितदिनकर्म्मा घननिवासरे मया विचारपत्रव्यवस्थावलीपत्राभ्यां सादृतेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

———

(४९)—मो० कलिकातार सदरदेओयानि आदालतेर श्रीयुत ओलियमब्राडिन साहेब ऐ आदालतेर हाकिमेर बैठकेर सन १८३४ सालेर तारिख १२ माह जुन मोताबेक सन १२४१ सालेर ३१ ज्यैष्ठ वृहस्पतिवारेर दिवसेर रोवकारि—

काशीच द्रमुस्तौफि छापल

छापलेर उकिल मुनशी शिवनारायण चट्टोपाध्याय हाजिर

आइल। छापनेर छयाल एइ जे श्रीमति कमलकुमारी छापलेर अप्राप्तवय कन्यार स्वामिर वाटीते ताहार सासुडि पदुकमलदासीर निकटे जाइवार विषयेर सन १२३४ सालेर ३ मे तारिखेर जेला हुगलिर जज साहेवेर हुकुमेर नाराजिते एवं श्रीमतीकमल कुमारी मजकुरार ऐ पदुकमलदासीर वाटीते जओार हित इओनेर प्रार्थनाय ओ अन्य २ विशयसकलेर सहित उकिल मजकुरेर नामेर एक केता ओकालतनामा ओ सन १८३४ सालेर ३मे तारिखेर जेला हुगलिर आदालतेर रोवकारिर नकल १ केता ओ सन १२३२ सालेर १७ मे तारिखेर लिखित जेला मजकुरेर केलकट्टरि फायारिर रोवकारिर नकल १ केता एइ मासेर ५ तारिखे दाखिल हइयाछिल, अद्य दृष्टे आइल। वोध हइल जे लाट कृष्णराम वाटी ओ गयरहेर तालुकदार रमेशचन्द्रदत्त छापलेर अप्राप्तवय कन्या श्रीमतीकमलकुमारिके विवाह करिया आठ मास जीवदशाय थाकिया श्रीमतिमजकुराके पुष्य पुत्र लओनेर अनुमति दिया उहाके उत्तराधिकारिणी ओ केशमत लाट कृष्णराम वाटी ओ गयरह अनेक तालुक ओ ज़मीसकल ओ स्थावर ओ अस्थावर स्वनामी विनामी विशयसकल राखियो मृत्यु हय, ओ उहार मृत्युर पर श्रीमतीपदुकमलदासी मृत रमेशचन्द्रेर माता मृत मजकुरेर त्यक्त अनेक जायदाद हस्तान्तर एवं कोनो जायदादे आपन नाम जारि करिया छापलेर कन्याके आपन आयत्तते आनिवार मानसे हुगली जेलार आदालतेर एक केता दरखास्त गुजराय, ओ जेलार जज साहेव व्यवस्था लइया छापलेर अप्राप्तवय कन्या श्रीमतीकमलकुमारीदासीके उहार सासुडिर वाटीते पाठाइवार हुकुम प्रकाश करेण छापल ताहार असम्मतिते ए आदालते रुजु हय इति। जखन छापलेर उकिल प्रकाश करे जे श्रीमती पदुकमलदासी अप्राप्तवय श्रीमतीकमलकुमारीर ओछिर हेतुते मृत रमेशचन्द्रेर तावत त्यक्त विशये दखलिकार आछे। एवं छापलेर छओोले प्रकाश आछे

ये मृत रमेशचन्द्रदत्तेर अप्राप्तवय स्त्री श्रीमतीकमलकुमारी उहार सासुडिर सहित शत्रुता थाकार दरुन आपन स्वामीर बाटीते जाइते असम्भव आछे। ए जन्य ए आदालतेर पण्डितेर प्रति नीचेर लिखित प्रश्न करा उचित बोध हइया हुकुम हइल जे एइ रोवकारिर नकल एइ हुकुमे जे रोवकारिर नकल पाओार जारिख हइते एक सप्ताह मध्ये निचेर लिखित प्रश्नेर उत्तर लेखेन, ए आदालतेर पण्डितके अर्पन करा जाय इति।

प्रश्न :—

यद्यपि स्यात् एक व्यक्तिर अप्राप्तवय विधवा कन्या से ताहार स्वामी वर्त्तमान थाकिते कखन आपन स्वामीर बाटीते ना गिया थाके ओ उहार स्वामी उहाके पुष्यपुत्र लइबार अनुमति प्राप्तवय हइले पर थाके ओ आपन स्वामीर बाटीते ना जाओने ओ आपन सासुडि उहार जानत उहार शत्रु हय ताहार निकट वास करणे सम्मत ना हय, तवे वाङ्गलादेशीय चलित शास्त्रानुसारे श्रीमती मजकुरार आपन स्वामीर बाटीते जाओा उचित बटे कि ना इति —

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतश्रीलियमवेराबीनसाहेबधर्म्माधिकरण-लिखितेश्वरीशब्दमतिपाद्यनिगमगुणगजेन्दुमिताब्दीयजुनमासायद्वादशदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यदेतदब्दीयजुलाइमासीयैकविंशतितमदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥—

प्रश्नलिखितवृत्तान्ते सत्यप्राप्तव्यवहारायाः अवीरायाः पतिकुलानुप[१]-र्य्यवायश्रीमर्य्यादाधर्म्मादीनां संरक्षणं पतिपक्षीयेण देवरादिना भवितुं शक्यते चेत्तदा तस्याः पतिगृहगमनमेवोचितं भवति, पतिपुत्रवर्ज्जिताया-स्त्रियाः संरक्षणादौ शास्त्रानुसारेण पतिपक्षीयपुरुषस्यैव प्रभुत्वात्। यदि च तस्याः पतिकुले तद्देवरादिः कश्चित् पुरुषस्तत्संरक्षणादिकर्त्ता न विद्यते विद्यते वा तेन तत्संरक्षणादि भवितुं न शक्यते चेत्तदा तस्याश्चावीराया

१ पातकुलानुपर्य्यवीरा—पा० ।

मर्य्यादाधर्म्मादीनां स्वपतिकुलोचितं संरक्षणं पितृपक्षीयेणाथात् पित्रा भ्रात्रादिना वा भवितुं शक्यते। तदैवादर्शं पित्रादिकमपहाय स्वपतिगृहगमनं नावश्यकं भवति, पतिपुत्रविहीनायाः स्त्रियाः संरक्षणादौ पतिपक्षीयपुरुषाभावे पितृपक्षीयपुरुषस्यैव प्रभुत्वात्—इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति।

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यनिगमगुणगजेन्दुमिताब्दीयनवम्बरमासीयैकादशदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(५०)—कलिकातार सदर देश्रोयानि श्रादालतेर पण्डितेर प्रति प्रश्न :—

स्वरूपरामसेन जाति कायस्थ मृत्यु हइयाछे। श्रापन भगिनीर कन्या सश्रोयाय श्रन्य केह श्रोयारिप नाइ, एवं ऐ भगिनीर कन्यार एक पुत्र आछे। ए प्रकारे मृत स्वरूपरामसेनेर त्यक्त धन ताहार भगिनीर कन्या पाइते पारे कि ना इति॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुवरार्पितविचारपत्रं प्रश्नपत्रञ्च यदीशवीशब्दप्रतिपाद्यनिगमगुणगजेन्दुमिताब्दीयजुलाइमासीयवेदेन्दुमितदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते॥—

यदि मृतस्य कायस्थजातीयस्य स्वरूपरामसेनस्य भगिनी पुत्र्यर्थिनी पुत्रवती स्यात्तदन्यः कश्चिदुत्तराधिकारी नास्ति तदा मृतस्य स्वरूपरामसेनस्य त्यक्तधने तस्या अर्थिन्या यद्यप्यधिकारो न भवति, किन्तु प्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति धर्म्मशास्त्रार्थविवेचनया फलतस्तत्पुत्रस्याधिकारो भवितुं शक्नोति—इति मनुदायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति॥—

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यनिगमगुणगजेन्दुमिताब्दीयदिशम्बरमासीयद्वितीय-

दिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया विचारपत्रप्रश्नपत्राभ्यां सहितेय व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

सवाल—

(५१)—यद्यपि कोनो व्यक्ति कोनो स्त्रीके विवाह करिया ऐ स्त्रीलोकेर सन्तान हइवार आसा व्यतीत हइले अन्य स्त्रीके सन्तान हइवार प्रार्थनाय विवाह करे, आर ऐ स्त्रीलोकेर वयस पन्द्रह वतसर हय, सेइ समय आसल स्थावरास्थावर समस्त धन, कि स्वोपार्ज्जित हय किम्बा ताहार पैतृक हय, आपनार भगिनीर पुत्रदिगेके दान करे, आर ऐ दानेर तीनि चारि वतसर पर सेइ द्वितीय स्त्रीर पुत्र सन्तान उत्पन्न हइया थाके, ए प्रकारे दानेर पर पुत्र हओयाते ऐ दान असिद्ध हइते पारे कि ना। आगत सोमवार दिवस पर्य्यन्त एहार जवाव लिखेन, ओ आसल हेबानामा ए आदालतेर पण्डितेर निकट देवा जाय। इति सन १८३४ माल तारिख ११ डिजम्बर इति ॥—

श्रीर्जयतितराम्

प्रस्तुतप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति दानपत्रविवेचनया धर्म्मशास्त्रानुसारेणैतादृशदानं न सिद्ध्यति—इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥—

ईशवीयाब्दमविपाशनिगमगुणगजेन्दुमिताब्दीयदिशम्बरमासीयपञ्चदशदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया दानपत्रप्रश्नपत्राभ्यां सहितेय व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(५२) सवाल पहिला—

कलकतेके सदर दीवानी अदालतके पण्डितसे सवालोका वन्द लिखा, ६ दिसम्वर सन १८३४ ईशवी।

अगर कोइ करजके रू(प)से इया दुसरे तओरसे देन्दार किसिका होवे, अओर सुदके वावद कुछ कओल करार नहि हुआ होवये - इस सुरतमे शास्त्रके मताविक किस तओरसे अओर किस अन्दाजसे उसका सुद मोकरर होये ॥—

सवाल दुसरा—

सुदके सुदके मकदमेमे शास्त्रके मताविक किस अन्दाजसे मकरर हये, इयाने जो रुपयाके सुदके वावत असल देनके सेओयाय देन्दारके तै लाजिम होता हय, तो शास्त्रमे कुछ हद उसका मकरर हये इया नहि। अगर हय तो अन्दाज उसका केतना हये।

प्रथम सओयालेर वाङ्गला भाषा—

कलिकातार सदर देओयानि आदालतेर पण्डितेर प्रति सओयालसकल लेखा गेल। ६ दिशम्वर सन १८३४ ईशवी।

यदि कोनो व्यक्ति काहारो टाका कर्ज्जरूपे किम्वा अन्य प्रकारे धारे, आर सुदेर विषय कोनो करार किम्वा निर्द्धार्य्य ना हइया थाके। ए प्रकारे शास्त्रानुसारे कि प्रकारे ओ कि परिमान सुद ए टाकार मकरर करा जाइवेक इति ॥—

द्वितीय सओयालेर वाङ्गला भाषा—

सुदेर सुदेर विषये—शास्त्रानुसारे कि परिमाण नियम आछे, अर्थात् ये टाका सुदेर वावत आशल टाका आदायेर सेओयाय देन्दारके दिते हय, शास्त्रे ओहार अवधि किछु नियमित आछे कि ना। यदि थाके, तवे कि परिमाण इति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीमत्प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि कश्चिदृणरूपेण प्रकारान्तरेण वा कस्यचिद्रजतसुवर्णादिधनं धारयति, एवं द्वयोरुत्तमर्णाधमर्णयोर्वृद्धिसंख्याया काचित् संविन्नैव जाता स्यात्, तत्र यद्यधमर्णादुत्तमर्णेनैन्धकद्रव्यं लग्नकं वा अगृहीत्वैव तस्मै स्वधनं दत्तं स्यात्तदा ब्राह्मणादधमर्णात् द्विकशतपर्य्यन्तं क्षत्रियादधमर्णात् त्रिकशतपर्य्यन्तं वैश्यादधमर्णाच्चतुष्कशतपर्य्यन्तं शूद्रादधमर्णात् पञ्चकशतपर्य्यन्तं मासि मासि वृद्धिर्ग्राह्या। किन्त्वेतावान् विशेषः यद्धनं वृद्धिसंविद्व्यतिरेकेण गृहीत्वा अधमर्णो देशान्तरं गतः तद्धनस्य संवत्सरादूर्द्ध्वमुपरिलिखिता वर्णक्रमेण वृद्धिर्भवति। यत्राधमर्ण उद्धारं गृहीत्वा उत्तमर्णेन याचितोऽपि याचितकमदत्त्वा देशान्तरं गतस्तत्र मासत्रयानन्तरं सैवोपरिलिखिता वर्णक्रमेण वृद्धिर्भवति। यत्राधमर्णो याचितकमादाय स्वदेशस्थित एव, याचितोऽपि याचितकं न ददाति, तत्र याचनकालमारभ्य सैवोपरिलिखिता वर्णक्रमेण वृद्धिर्भवति। यत्राधमर्णो नीत्वा धनं गृह्णाति तत्र षण्मासानन्तरं सैवोपरिलिखिता वर्णक्रमेण वृद्धिर्भवति। तत्राय तात्पर्यार्थः—बन्धकलग्नकरहितेऽपि यत्र वर्णानां ब्राह्मणादीनां द्विकं त्रिकं चतुष्कं पञ्चकं वा शतं प्रति मासि मासि वृद्धिस्तत्रापि देशाचारसमयाचारयोर्द्धनिकाधमर्णिकयोः शिष्टताशुष्टतासधनतानिर्धनताना दृदेश्च विवेचनया यथासम्भवं न्यूनतया वृद्धिश्चेत् सापि शास्त्रीया भवति। किन्तु ब्राह्मणादधमर्णात् मासि मासि द्विकशतात् क्षत्रियादधमर्णात् मासि मासि त्रिकशतात् वैश्यादधमर्णात् मासि मासि चतुष्कशतात् शूद्रादधमर्णात् मासि मासि पञ्चकशतादधिका वृद्धिः कदाचिदपि शास्त्रानुसारेण भवितु नैव शक्नोतीति॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

मूलधनस्य या वृद्धिस्तस्या वृद्धिरुत्तमर्णाधमर्णयोः संविदं विना नैव भवतीति शास्त्रे निषेधः। परन्तु यत्राधमर्णो वृद्धिरूपं धनं दातुमशक्तो भूत्वा वृद्धिरूपधनस्य वृद्धिं दातुमङ्गीकरोति तदा वृद्धेरपि वृद्धिः शास्त्रानुसारेण भवितु शक्नोति। तत्र यथा धनिकाधमर्णिकयोः प्रतिज्ञा वृद्धिसंख्याया सैव प्रतिज्ञा वृद्धिसंख्यानियामिका संख्यायाममतिज्ञातायां प्रथम-

प्रश्नोत्तरलिखिता वर्णक्रमेण वृद्धिर्भवति—इति मन्वादिधर्म्मशास्त्रानुसारिणी व्यवस्थेति—

ईशवीयाब्दमतिपाद्यनिगमगुणगजेन्दुमिताब्दीयदिशम्बरमासीयत्रयोविंशतितमदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्रश्नपत्रसहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(५३)—रोयकारि मिछिल सदर देओयानि आदालत मोकाम कलिकाता आदालत मजकुरेर कायेम मेकाम हाकिम कृष्णाफर ओएव इसमित साहेबेर बैठके। इं सन १८१५ सालेर ५जानेर मोतावेक बाङ्गला सन १२४१ सालेर २२पौष दिवस सोमवार ॥—

राधाचरणवणिक आपीलाण्ट
लक्ष्मीसद्दार ओ गयेरह रेष्पाउण्डान्

आपीलाण्टेर उकिल सदासुखपण्डित ओ रेष्पाउण्डानेर उकिल मुनशी हयदर आलि एनियन वेञ्चमेन एडमेनेष्टीन वेली हाजीर आइलेन। इहार पूर्व्वे गतो २९ ओ ३०दिशम्बर तारिख सकले एइ मकर्द्दमा उत्थापन हइया तारिखसकलेर रोयकारिर लिखित हेतु मते मुलतवि अर्थात् स्थापित रहियाछिल। अद्य पुनराय उत्थापन हइया मुद्दइ अर्थात् वादीर इसादीर जवानवन्दि ओ प्रतिवादिदिगेर इसादीसकलेर एजाहार पडा हइल। मोकद्दमार सामुदाइक हेतुसकले बोध हइया ए आदालतेर पण्डितेर स्थाने कयेक विषय जिज्ञास्य आविश्यक मते हुकुम हइल ये रोयकारिर नकल एइ हुकुमे ये निचेर लिखित प्रश्नसकलेर प्रतिउत्तर शीघ्र लिखेन—एइ आदालतेर पण्डितेर निकट पाठान जाय इति ॥—

प्रश्न :—

पूर्व्व पुरुष लक्ष्मणवणिक राजुवनिक ओ जगमोहनवनिक

ओ रामकृष्णवनिक तिन पुत्रके राखिया मृत्यु हय। परन्तु राजुवनिक आपन वनिता श्रीमतीजगमोहिणीके राखिया अपुत्रक मृत्यु हय। बाङ्गला सन १९२६ साले जगमोहिणी मजकुर परलोक गतो हय, एवं जगमोहन अपुत्रक आपन स्त्री गङ्गामणीके राखिया सन १२२६ सालेर पूर्व्वे मृत्यु हय। बाङ्गला सन १२२६ साले ओ रामकृष्ण एक पुत्र गोपीकृष्ण ओ तारामणी स्त्रीके राखिया मृत्यु हय। ओ तारामणिओ सन १२२६ सालेर पूर्व्वे परलोक गत हय, ओ श्रीमतीमाङ्गलीर सहित गोपीकृष्णेर विवाह हय। ताहाते राममनी नाम्नी एक कन्या उत्पत्ति हय। ए ताहार एक पुत्र अर्थात् मुद्दई ओ रामकृष्णेर पुत्र गोपीकृष्ण बाङ्गला १२२८ साले परलोक गत हय। ए ताहार वनिता श्रीमतीमाङ्गलीर सन १२३७ साले मृत्यु हय, ओ ताहार कन्या राममनीर सन १२२६ सालेर पूर्व्वे मृत्यु हय। एवम्भूत व्यापारे बाङ्गला-देशेर चलित शास्त्रानुसारे राधाचरण वनिकेर मातामह गोपीकृष्णवनिक ओ गोपीकृष्णेर पितृव्य रामकृष्ण भ्राता राजुवनिकेर स्त्री जगमोहिनीर त्यक्त विषये के हकदार हइवे पारे, ओ सन्तति मजकुरार कोन नैकट्य कि भिन्न ओयारिस ना थाके विधाये ताहार त्यक्त वस्तु राधाचरण वनिकके अर्शे कि ना इति।

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिस्थानाभिषिक्तश्रीयुतकृष्णफिरओएवइसमिट्‌सा-हेवधर्म्माधिकरणलिखितेशयोशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयवानवरी-मासीयपञ्चमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्र यत्तद्ब्दीयतन्मासीय-नवमदिनसम्बन्धिशुक्रवासरे मया प्राप्त तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्त-दनुसारेणोत्तर लिख्यते—

प्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति राजुवणिक्त्यक्तधनं यत् पुत्रपौत्रप्रपौत्राभावे सति तत्पत्न्या जगमोहिन्या उत्तराधिकारित्वेन प्राप्त तन्मरणोत्तरं तत्र धने राजुवणिग्भ्रातृपुत्रदौहित्रस्य राधाचरणवणिजो धर्म्मशास्त्रानुसारे-

णाधिकारो भवितुमर्हति । अत्र यद्यपि दायभागटीकादिग्रन्थलिखितापुत्रधनाधिकारिशृङ्खलायां भ्रातृपुत्रदौहित्रस्य नामोल्लेखो विशेषतो नास्ति, किन्त्वेतत्प्रश्नलिखितावस्थायां मनुस्मृतिसम्मतो भ्रातृपुत्रदौहित्राधिकारो दायभागादिग्रन्थाभिप्रेतो भवत्येव, धनिभ्रातृपुत्रदौहित्रस्यापि धनिभोग्यधनिदेयधनिपितृपार्व्वणश्राद्धपिण्डदातृत्वेन धनिपारलौकिकोपकारकत्वात्, परम्परया धनिसपिण्डत्वाच्च—इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

त्रयाणामुदकं कार्यं त्रिषु पिण्डः प्रवर्त्तते ।
चतुर्थः सम्प्रदातैषाम्—इत्यादि मनु(९।१८६)वचनम् ॥१॥

अनन्तरः सपिण्डाद्यस्तस्य तस्य धनं भवेद्—इति च मनुवचनम् ॥२॥

तस्माद् यथा यथा मृतधनस्य तदुपयुक्तत्वं भवति तथा तथाधिकारक्रमोऽनुसरणीयः—इति दायभाग(पृ० २१५)ग्रन्थलिखनम् ॥३॥

एवञ्च सर्वत्रोक्तरीत्या मृतधनस्य मृतार्थत्वमनुसन्धेयमुक्तक्रमेण—इति दायभाग(पृ० २१५)ग्रन्थलिखनम् ॥४॥

प्रतिसम्बन्धिनां चाधिकारार्थं वचनकल्पनागौरवात् तदर्ज्जितधनस्य च तदुपकारतारतम्येन तादर्थ्यसम्पादनस्य न्याय्यत्वात्, उपकारकत्वेनैव धनसम्बन्धो न्यायप्राप्तो मन्वादीनामभिमत इति निरवद्यविद्याद्योतेन द्योतितोऽयमर्थो विद्वद्भिरादरणीयः—इति दायभाग(पृ० २१५ २१६) ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥५॥—

ईशवीशब्दप्रतिपात्रेषुगुणगजेन्दुमिताब्दीय वानवरीमासीयरसेन्दुमिततदिनसम्बन्धिशुक्रवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

———

यदि पञ्चवर्षाभ्यन्तरे पुत्रं गृहीत्वानन्तरं पिता मृतः चूडादिकन्तु न कृत तत्र तस्य पुत्रत्व सिद्धयति, तथा न चाङ्गबाधे प्रधानस्य बाधः— इति विवादभङ्गार्णव.(२ विवा पृ० १७६ ख)॥३॥

कात्यायन.[1]-स्वस्वेनार्चेन वा दत्तम्-इत्यादि(कात्यू० ५६६)॥४॥

पुत्रेष्टिमिति वर्णत्रयस्याधिकारापत्तेर्न पुत्रेष्टिपूर्व्वकचूडादिभिः पुत्रत्वं सम्पाद्यम् । शूद्रेण तदपि संस्कारमात्रादेवेति[2] सम्यमनवद्यम् ।

ब्रह्मवर्च्चसकामस्य कार्य्यं विप्रस्य पञ्चमे, इति वचनेन तत्कामस्य पञ्चवर्षस्यैव उपनयनमुख्यकालत्वेन मूलत्वात् तथा । शूद्रस्य तु विवाहादिलाभ. —इति दत्तकचन्द्रिका(पृ० २१।२२)॥५॥

अत्रि —अपुत्रेण सुतः कार्य्यो यादृक् तादृक् प्रयत्नतः ।
पिण्डोदकक्रियाहेतोर्नामसङ्कीर्त्तनाय च ॥—इति ॥६॥

मनु —न भ्रातरो न पितरः पुत्रा दायहराः पितुः ।
तथा पिण्डदोऽशहरश्चेषा पूर्व्वाभावे परः परः ॥—इति ॥७॥

देवल —सर्व्वे ह्यनौरसस्येते पुत्रा दायहराः स्मृताः ॥ दायहराः पूर्णांशहरा —इति दायतत्त्वम् ॥८॥

मनु--उपपन्नो गुणैः सर्व्वैः पुत्रो यस्य तु दत्त्रिम. ।
स हरेतैव तद्रिक्थं सम्प्राप्तोऽप्यन्यगोत्रतः ॥—इति(९।१४१)

औरसाभावे सम्वरिक्थग्रहणमुक्तवान्, तद्युक्तमौरसे सत्यर्द्धं ग्रहणम्—इति दत्तकमीमांसा (पृ० १०६)चेति ॥९॥

शकाब्दा १७१४ ॥ संवत् १८८९ चैत्रस्य नवमदिवसीय-व्यवस्था ॥०॥०॥०॥—

श्रीलक्ष्मीनारायणपण्डितस्य

मोकाम कलिकातार सदर देओानी आदालतेर इङ्गरेजी सन १८३४ सालेर २ दिसम्बर मोताबेक बाङ्गला सन

---

[1] नारद —व्यप० । [2] संस्कारमात्रादेव—व्यप० ।

१२४१ सालेर १८ अग्रहायण मङ्गलवार दिवसेर ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुतउलियमवेराडिन साहेवेर यैठकेर रोवकारि—

वल्लवीकान्तचौधुरी वनाम कृष्णप्रियाचौधुराणी ओ नवकान्त चौधुरी।

छाएलेर उकिल मुनशी आव्वास आलि हाजिर आइल। ३२ टाका दामेर इष्टम्प कागजे छाएलेर छओाल गगरा परगनार तरफ मथुरापुरेर २॥ आडाइ मौआर दखल पाइवार, मोकर्दमार मः ३१७ टाकार दावितें खास आपिल मञ्जुरिर प्रार्थनाय उकिल मजकुरार नामेर एक केता ओकालतनामा ओ गौरनारायण-शर्म्मार नामेर एक केता मोक्तारनामा ओ सन हालेर ३० जुलाइ तारिखेर जेला पूरनिया जज साहेवेर एक केता फयछलार नकल ओ सन १८२३ सालेर ६ आपरेल तारिखेर जेला मजकुरेर सदर आमिन आलार एक केता फयछलार नकल ओ सन १८३३ सालेर २२ मार्च्च तारिखेर व्यवस्थार नकल एक केता ओ दोशरा तिन केता व्यवस्थार सहित गतो ५ नवम्वर गुजराइयाछिल, अद्य दृष्टे आइल। कोन हुकुम प्रकाश हओनेर पूर्व्वे शास्त्रेर प्रकरण ज्ञात हओ। उचित वोध हइल। ए कारण हुकुम हइल जे एइ रोवकारिर नकल ओ छाएलेर दाखिल करा सन १८३३ सालेर २२ मार्च्च तारिखर नकल व्यवस्था एइ हुकुमे ये व्यवस्था मजकुर दिष्ट करिया लेखेन ये व्यवस्था मजकुर वाङ्गलादेशीय चलित शास्त्रानुसारे हइयाछे कि ना, यदि ना हइयाथाके, ऐ व्यवस्था मजकुरेर लिखित प्रश्नेर जवाव वाङ्गलादेशीय चलित शास्त्रानुसारे एइ रोवकारिर प्राप्तेर दिवस हइते एक सप्ताह मध्ये दाखिल करेण—एइ आदालतेर पण्डितेर हाओाला करा जाय इति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतओलियमवेराडिनसाहेवधर्म्माधिकरण-

लिखितेशवीशब्दप्रतिपाद्यनिगमगुणगजेन्दुमिताब्दीयदिशम्बरमासीयद्वितीयदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यदीशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयजानवरीमासीयपञ्चमदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रभुसमर्पितव्यवस्था बङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेण जातास्ति। तद्व्यवस्थोपरिलिखितप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सत्येतादृशी व्यवस्था बङ्गदेशचलितशास्त्रबहिर्भूतास्ति इत्यस्यानवगमादिति ॥—

ईशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयजिवरवरीमासीयसप्तमदिनसम्बन्धिशनिवासरे मयेदमुत्तरं दत्तमिति ॥—

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(५५)—रुयकारि मिछिल आदालते देओयानि सदर मोकाम कलिकाता वनेसस्त रावरट[1] हालडन राटरि साहेब हाकिम आदालत मजकुरा इं सन १८३५ साल तारिख १९ जानवरि मो० सन १२४१ साल ७ माघ सोमवार—

कमलाकान्तरायेर 'स्त्री' रामदुर्गा ओ सम्भुचन्द्र बनाम गङ्गाचरणसेन।

सायलानेर उकिल मुनशी होसन आलि ओ मे मारङ्ग आगस्तरकुलाल साहेब ओ फरिकसानिर उकिल श्रीरामराय ओ तारकचन्द्रराय हाजिर हइल। एइ माहार १४ तारिखेर हुकुमानुसारे सायलानेर उकिल श्रीमतीर पुत्र नृसिंहसेन अन्ध थाकनेर ओजर उह्दादेर तरफ हइते पूर्व्वे उपस्थित हओनेर विरायें एइ आदालतेर साबेक हाकिम मे कटबरट थरनेल सिजि साहेवेर वैठकेर रुवकारि निसान देओ्या दृष्टी करा गेल। तत् द्वाराय बोध हइल जे प्रकृत सायलानेर तरफ हइते श्रीमतीर पुत्र अन्ध

1. रावर्ट—व्या०।

থাকনের ওজর পূর্ব্বে উপস্থিত হইয়াছিল। প্রকাশ হইল যে কৃষ্ণকিঙ্কররায়ের চারি পুত্র। জ্যেষ্ঠ লক্ষ্মীকান্তরায়, দ্বিতীয় কমলাকান্তরায়, তৃতীয় জগমোহনরায়, চতুর্থ সম্ভুচন্দ্ররায়। পিতার মরণের পর চারি পুত্র পিতার ত্যজ্য বস্তুতে ভোগি ও অধিকারি ছিল তাহাদের মধ্যে প্রথম লক্ষ্মীকান্তরায়ের নিঃসন্তান মৃত্যু হয়, পরে জগমোহনরায় মহেশচন্দ্ররায় নামে এক পুত্র ও শ্রীমতী নামে এক কন্যা রাখিয়া ফৌত করে। ও ঐ মহেশচন্দ্ররায়ের ফৌতের পর তাহার ভগ্নি শ্রীমতীর গর্ভে হইতে এক অন্ধ পুত্র হয়, আর সায়েলানের তরফ হইতে শ্রীমতীর পুত্র অন্ধ থাকনের ওজর ইহার পূর্ব্বে উপস্থিত হইয়াছিল, তথা চ পণ্ডিতের পর এ বিশয়ের কোন প্রশ্ন হয় নাই-যে সাস্ত্রানুসারে জন্মঅন্ধ ব্যক্তি পৈতৃক ধনাধিকারি হইতে পারে কি না। এ প্রযুক্ত ও যে হেতুক বোধ হইল যে এই আদালতের পণ্ডিতের তরফ হইতে এই মকর্দমার পূর্ব্বে যে ব্যবস্থা দাখিল হইয়াছিল তাহাতে এই প্রশ্ন করা যায়-যে মহেশচন্দ্ররায় আপন পিতৃঅংশে অংশভোগি থাকিয়া আপন ভগ্নি শ্রীমতী ও কমলাকান্তরায় ও সম্ভুচন্দ্ররায় পিতৃব্যদিগে রাখিয়া নিঃসন্তান মৃত্যু হইয়াছে, আর তাহার স্ত্রী তাহার মৃত কায়ার সহিত সতি হইয়াছে। এমতে মহেশ চন্দ্ররায়ের ত্যজ্য বস্তু তাহার ভগ্নি শ্রীমতী, যাহার পক্ষয়ে পুত্র নাবালগ আছে তাহাকে অর্শে, কি তাহার পিতৃব্য কমলাকান্তরায় ও সম্ভুচন্দ্ররায়কে অর্শে। এই প্রশ্নের উত্তর এই চুম্বকে লেখা যায় যে মহেশচন্দ্রের ভগ্নি শ্রীমতী ও তাহার সন্তানকে অর্শে, কমলাকান্তরায় ও ও শম্ভুচন্দ্ররায়পিতৃব্যরা অধিকারী হইবেক না ইতি। আর ৺ কাশীনাথের স্ত্রী করুণাময়ী দিগর আপিলাণ্টয়ান ও ৺ চন্দ্রমালার স্বামী জয়চন্দ্রঘোর রেস্পাণ্ডণ্টের ৩২৬ লম্বরের মকর্দমার ব্যবস্থায় ইহার বিপরীত লেখা যায় যে বিরোধীয় বস্তুর কর্ত্তার অর্থাৎ কীর্ত্তিনারায়নের অপ্রাপ্তব্যবহার পুত্রের মরণের

समय यदि ताहार पुत्र ना थाके, तवे ताहार पौतार दौहित्र यदि पितामह वर्त्तमान थाके, तवे पितामह, तदभावे पितामही, तदभावे पितृव्य, तदभावे पितृव्यपुत्र, तदभावे भ्रातृपौत्रगणके अर्शे। एकारण हुकुम हइल ये एइ रुवकारिर नकल पण्डितके अर्पन करा जाय जे पण्डित बाङ्गलादेशेर चलित शास्त्रानुसारे एइ विषयेर व्यवस्था जे यदि श्रीमतीर गर्भजात सन्तान मातृगर्भ हइते अन्ध ओ चक्षुरहित एवं ए पर्य्यन्त से अन्धावस्थाते थाके, एमते महेशचन्द्रेर त्यज्य धनेर धनाधिकारि से पुत्र हय कि ना। यदि ना हय, तवे कोन व्यक्ति ताहार अधिकारि हइवेक, ओ इहार जवाव जे एइ मकर्द्दमा, ओ उपरेर लिखित जन्यरेर मकर्द्दमा एक प्रकार ओ ऐक्यभाव तथा च बङ्गदेशेर चलित एकशास्त्रानुजाइ, एकेर व्यवस्था अन्येर विपरीत कि कारण दाखिल हइल; एइ रुवकारिर प्राप्तेर पर पाँच दिवस मध्ये दाखिल करेण; ताहा दाखिल, ओ मोलाहजा हइले जे उचित हय हुकुम सादेर हइवेक इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतयवरटहालवनराटरीसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितैशवीशब्दप्रतिपाद्येयुगयुगनगेन्दुमिताब्दीयजानवरीमासीयाङ्केन्दुमितदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यच्चदब्दीयफेनरवरीमासीयरसमितदिनसम्बन्धिशुक्रवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यदि श्रीमतीगर्भजातः पुत्रो जन्मान्धोऽर्थाद् गर्भत एव चक्षुरहितः एतत्कालपर्य्यन्तमन्धावस्थायामेवास्ति तदा महेशचन्द्रस्य धने स अन्धावस्थायामधिकारी न भवति। एवञ्च सति श्रीमतीपुत्रान्तरस्य महेशचन्द्रत्यक्तधनाधिकारिण उत्पत्तेः प्राक्कालपर्य्यन्तं[1] पूर्व्वं लिखितैतद्विवादविषयनिविष्टास्मद्व्यवस्थालिखितरीत्या श्रीमत्येवाधिकारिणी भवति। तत्पश्च

१. प्राक्काल० —न्त०।

धनाधिकारिपुत्रस्य पुत्राणां वोऽच्चौ तस्याः पुत्रस्य पुत्राणां योपरिलिखित-व्यवस्थालिखितरीत्या अधिकारः। महेशचन्द्रत्यक्तधने सम्भावितपुत्रत्वेन पूर्वलिखितैतद्विवादविषयनिविशास्मद्दत्तव्यवस्थानुसारेण जाताधिकारायाः श्रीमत्या क्षीदन्त्या स्वल्पध्वंसस्य तद्गर्भजातपुत्रस्य महेशचन्द्रत्यक्तधनाधिकारिणः स्वल्पोत्पत्तेरेव जनकत्वाद्—इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागतट्टीकादायक्रमसंग्रहदायतत्त्वविवादार्णवसेतुविवादमङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था॥

अत्र प्रमाणम्—

अनंशौ क्लीबपतितौ जात्यन्धबधिरौ तथा ॥—इत्यादि दायभागादि-(पृ० १०१)ग्रन्थधृतमनु(६।२०१)वचनम् ॥१॥

पतितस्तत्सुतः क्लीबः पङ्गुरुन्मत्तको जडः।

अन्धोऽचिकित्स्यरोगार्त्तो भर्त्तव्यास्ते निरंशकाः ॥—इति दायभागादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥२॥

पूर्वलिखितैतद्विवादविषयनिविशास्मद्दत्तव्यवस्थालिखितानि पञ्चप्रमाणानीति ॥५॥०॥

एवञ्च काशीनाथदत्तपत्नीकरुणामयीप्रभृत्यर्थिनीनां चन्द्रमालापतिजयचन्द्रघोषप्रत्यर्थिनीरस्तस्ताप्रगुणमिताङ्काङ्कितविवादविषयनिविशास्मद्दत्तव्यवस्थया सहैतद्विवादविषयनिविशास्मद्दत्तव्यवस्थाया विरोधशङ्कापरीहारः। इशवीशब्दप्रतिपाद्येन्दुगुणगजेन्दुमिताब्दीयनवम्वरमासीयद्वाविंशतितमदिवसीयश्रीयुतमान्तकीयूहेनरीटरस्वत्त्वसाहेवाभिधानैतद्धर्माधिकरणप्राचीनाधिपतिकृतोपरिलिखितरसपत्ताभ्रगुणमिताङ्काङ्कितविवादसम्बन्धिविचारपत्रतदधोलिखितास्मद्दत्तव्यवस्थाभ्यामेव स्पष्टम इति ज्ञात्वा पुनर्न लिखित इति निवेदनम् ॥०॥०॥०॥—

ईशवीशब्दप्रतिपाद्येगुणगजेन्दुमिताब्दीयफेब्रुयरीमासीयविंशतितमदिनसम्बन्धिशुक्रवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(५६) न ३५८१ सदर—

हुवकारि आदालते देश्रोयानि सदर मोकाम कलिकाता वैयटक श्रीयुत जारजइष्टाकोएल साहेब कायेम मोकाम हाकिम। एइ आदालतेर सन १८३५ साल तारिख १८ फिब्रेश्रायारि मोताबेक सन १२४१ साल ता० ८ फाल्गुन बुधवार—

कानाइलाल मफलल्ल आपीलाएट

गोरा श्रो दस्तु श्रो गयरह रेप्पाउण्टान्

आपीलण्टेर उकिलान् मुनशी दादार बक्स श्रो सदासुरूपविडत हाजीर आर्शालेन। रेप्पाउण्टान् एयालामनामा जारि हओवाते श्रो ताहार रसीद लिखिया देश्रोते ए पर्य्यन्त खोद किम्वा उकिलेर द्वाराय हाजीर हइल नाइ। एइ मोकद्दमा श्रीयुत तामस पेमल रावरटसेन साहेब कायेम मोकाम हाकीमेर सन १८३४ सालेर १६ माह जुलाइ तारिखेर हुकुमानुसारे आमार वैठके हवकार श्रो प्रविनसल कोर्टेर नथीर सम्बलित आरजी प्रभृति कागजात ३५ लम्बर पर्य्यन्त पडागिया आपीलण्टेर उकिलदिगेर सम्मति क्रमे एइ मोकद्दमार गतिक एइ प्रकार स्थीर हइल, जे विरोधीय वस्तु जानकीरामेर स्वो पार्जित वटे, श्रो जानकीराम श्रो शीताराम, दुइ सहोदर भ्राता श्रो जानकीरामेर स्त्री वदनेर गर्भजात सन्तराम श्रो साधुराम, दुइ सन्तान, श्रो ऐ दुइ सन्तान आपन पिता अर्थात् जानकीरामेर सन्मुखे श्रीमत्या गोरा श्रो श्रीमत्या दस्तु दुइ भार्य्या निःसन्तान वर्त्तमाना राखिया परलोक हय। श्रो शीतारामेर एक पुत्र अर्थात् कानाइलाल फरियादी एक्षणकार आपीलाण्ट वर्त्तमान आछे। श्रो जानकीराम मजकुर आपन तावत विषयेर वस्तलिकनामा आपन स्त्री श्रीमती वदनके लिखिया दिवाते श्रीमत्या मजकुरा ऐ प्राप्त वस्तुर उपर आपन जीवद्दशा पर्य्यन्त भोगवाना थाकिया मृत्यु हइयाछे। ए हयने एइ मोकद्दमा चूडन्त हुकुम देश्रोनेर पूर्व्वे ए विषय ए आदालतेर

पण्डितेर निकट जाना आवश्यक जे श्रीमत्यावदन मजकुरार मृत्युर पर शास्त्र प्रमाण उहार त्याज्य वस्तुर ओयारिस ओ स्वत्वाधिकारि श्रीमत्या गोरा ओ दुखु उहार पुत्रवधूगण हइवेक, कि शीतारामेर पुत्र कानाइलाल हइवेक। अतएव हुकुम हइल जे एइ रुवकारिर नकल एइ हुकुमे जे उपरकार लिखित सओयालेर जओयाब पश्चिम देशीय चलित शास्त्र प्रमाण एइ रुवकारिर नकल पाइबार पर एक दीवसेर मध्ये लिखिया पाठान एइ आदालतेर पण्डितेर निकट देओया जाय इति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिस्थानाभिषिक्तश्रीयुतजार्ज्जहूवाकोपलसाहेव-धर्म्माधिकरणलिखितेशवीशब्दप्रतिपाद्येयुगुणगजेन्दुमिताब्दीयफेवरवरीमासीयाष्टेन्दुमितादिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदब्दीयतन्मासीयाङ्केन्दुमितदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मया प्राप्तम्, तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति विवादास्पदीभूतधनात् श्रीमत्या वदननाम्न्याः पुत्रवध्वोर्यावज्जीवं पतिकुलोचितग्रासाच्छादनोपयुक्तावश्यकविधवाधर्म्माचारणोपयुक्तधनं विहायावशिष्टधने तत्पतिभ्रातृपुत्रस्याधिकारः—इति पश्चिमदेशचलितमनुमिताक्षरावीरमित्रोदयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्येयुगुणगजेन्दुमिताब्दीयफेवरवरीमासीयेन्दुपक्षमितदिनसम्बन्धिशनिवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति —

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(५७)—नं० २७१ सन १८३३ साल—

मो० कलिकातार सदर देओयानि आदालतेर हाकिम श्रीयुत ओलियम ब्राडिन साहेबेर बैठकेर सन १८३५ सालेर १७ फिब-

রেল মোতাবিক বাঙ্গলা সন ১২৪১ সালের ৩ ফাল্গুন মঙ্গলবার দিবসের রোবকারি—

বিমলাময়ীদেব্যা আপিলাণ্ট

শ্রীমতী অন্নপূর্ণা ও দিনাজপুরের কালেক্টর সাহেব রেস্পা-ণ্ডেণ্টান্ আপালাণ্টের উকিল মৌলবি করম হোসেন হাজীর আছেন। সন ১৮৩৪ সালের ১৩ ডিসেম্বরের লিখিত সদর বোর্ডের সাহেবলোকের এক কেতা চিঠী প্রেরিত পর ও আনার নকল সম্বলিত নঃ প্রাপ্ত ও অদ্য হুজুরে দরপেশ হইয়া মোকদ্দমার অনেক কাগজসকলের সহিত দৃষ্ট আইল। লিখিত কাগজসকল হইতে বোধ হইতেছে যে গৌরীশঙ্কররায় ও শম্ভুচন্দ্ররায় ও ঈশানচন্দ্ররায় তিন জন সহোদর ভ্রাতা ছিলেন। ও সরকারের দানানুসারে মোসাহেরা এক ৭ ব্যক্তির মুবলগে ২৮৩ টাকা হি০ মোট মুঃ ৮৫৫ টাকা মাসীয়ানা সরকার হইতে মাকরর ছিল, ও এ ক্ষণে শম্ভুচন্দ্রের মোসাহেরার জন্য বিরোধ উপস্থিত আছে। এ জন্য হুকুম মকারা হওনের পূর্ব্বে শাস্ত্রের দ্বারা শম্ভুচন্দ্রের মোসাহেরার পক্ষে জ্ঞাত হওন উচিত বোধ হইয়া হুকুম হইল যে এই রোবকারির নকল ও হুকুমে যে নিচের লিখিত প্রশ্নোত্তর নকল রোবকারি প্রাপ্তের দিবসাবধি পাঁচ দিবসের মধ্যে লেখেন—এ আদালতের পণ্ডিতকে অর্পন করা যায়।

প্রশ্ন :—গৌরীশঙ্কররায় ও শম্ভুচন্দ্ররায় ও ঈশানচন্দ্ররায় তিন সহোদর ভ্রাতা ছিলেন। তাহাদিগের মধ্যে গৌরীশঙ্কর আপন পত্নী রুদ্রাণীকে রাখিয়া ও ঈশানচন্দ্র আপন স্ত্রী গৌরমনিকে রাখিয়া ও শম্ভুচন্দ্র আপন বনিতা মন্দোদরি ও আনন্দচন্দ্র ও নারায়ণচন্দ্র ও রামধন পুত্রগণ ও বিমলাময়ীদেব্যা ও অন্নপূর্ণাদেব্যা কন্যাগণ রাখিয়া, তাহার পর রুদ্রানী গৌরীশঙ্করের স্ত্রী ও তৎপশ্চাৎ উক্ত আনন্দচন্দ্র ও নারায়ণচন্দ্র নিঃসন্তান, ও তাহার পর উক্ত মন্দোদরী এক

व्यक्तिर पर अन्य व्यक्तिर मृत्यु हय, ओ ए चने उक्त शम्भुचन्द्रेर पुत्र रामधन ओ कन्यागण अन्नपूर्णा अविरा ओ विमलामयीदेव्या जीवद्दशाय आछेन। एजन्य जिज्ञासा करा जाइतेछे जे उक्त शम्भुचन्द्रेर मोसाहेरा कि प्रकार उहार जीवित उत्त्राधिकारिगणेर मध्ये वाङ्गलादेशीय चलित शास्त्रानुसारे विभाग हइवेक इति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतदर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुत-ओलियमवेराडीनसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितेश्वीशब्दप्रतिपाद्येपुगुणगजेन्दुमिताब्दीयफेवरवरीमासीयाष्टौन्तु १७-मितदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तद्ब्दीयजन्मासीयगजेन्दु-१८मितदिनसम्बन्धियुधवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यद्यावोधो जात-स्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति शम्भुचन्द्रस्य मासिकं यत्तन्मरणानन्तरं तत्सुतैस्त्रिभिरर्थाद् आनन्दचन्द्रनारायणचन्द्ररामधनैस्तदधिकारित्वेन प्राप्तं तत्र मासिके यदि आनन्दचन्द्रनारायणचन्द्रयोः पुत्रादिमातृपर्य्यन्तानां मध्ये कश्चिन्नास्ति, तदा शम्भुचन्द्रपुत्रस्य रामधनस्याधिकारः, शम्भुचन्द्र-कन्ययोरन्नपूर्णादेवीविमलमयीदेव्योर्य्यावज्जीवं स्वस्वपतिकुलोचितग्रासाच्छा-दनोपयुक्तावश्यकधर्म्माचरणोपयुक्तस्वस्वपतिपक्षीयधनाभावे पितृत्यक्त-मासिकाद्यनुसारेण यावज्जीवं पितृकुलोचितग्रासाच्छादनोपयुक्तावश्यकधर्म्मा-चाचरणोपयुक्तधने चाधिकारः—इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागादिग्रन्था-नुसारिणी व्यवस्था ॥

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ।
तत्सुतः—इत्यादि दायभागादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥१॥
मृते भर्त्तर्य्यपुत्रायाः पतिपक्षः प्रभुः स्त्रियाः ।
विनियोगात्मरक्षासु भरणे च स ईश्वरः ॥

परिक्षीणे पतिकुले निर्मनुष्ये निराश्रये ।
तत्सपिण्डेषु चासत्सु पितृपक्षः प्रभुः स्त्रियाः ॥—इति दायभागादि-ग्रन्थधृतनारदवचनञ्चेति ॥२॥०॥

ईशवीयाब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयफेबरवरीमासीयवेदपक्ष२४ मितदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे प्रश्नपत्रघटितेयं व्यवस्था मया दत्तेति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(५८)—सओयाल बराबर श्रीयुत पण्डित आदालत जेले जालालपुरः

प्रथमतः—

चलित शास्त्र मैथिली ओ दायभाग जातिर प्रति कि देशेर प्रति। यदि जातीर प्रति हय तबे कोन कोन जातीर प्रति मैथिली शास्त्र ओ कोन कोन जातीर प्रति दायभाग शास्त्र; ओ यदि देशेर प्रति हय तबे कोन देशेर प्रति मैथिली शास्त्र, ओ कोन देशेर प्रति दायभाग शास्त्र चलित हइबेक। ओ यदि कोन एक व्यक्ति ये देशे मैथिली शास्त्र चलित सेइ देशी आपन स्थान परित्याग करिया एइ बङ्गदेशे ये दायभाग शास्त्र चलित आछे वसति करिया मृत्यु हइयाछे, ताहार सन्तानादि चतुर्थ पुरुष पर्य्यन्त एइ देशे आछे। ताहारदिगेर मध्ये उत्तराधिकारित्व, ये शास्त्रेर विषय राखे, विवाद उपस्थित हइले, ताहार विचार कोन शास्त्र मते हय, ओ यदि ताहारदिगेर वर्त्तमान सन्तानादिर मध्ये विवाहादि ओ श्राद्धादि क्रिया मैथिली शास्त्र मत चलित थाके, तबे कोन शास्त्र मते, ओ यदि ताहारदिगेर ऐ सकल क्रिया दायभाग सम्मत चलित थाके, तबे ताहारदिगेर विवाहादि वस्तुर विचार कोन शास्त्र मत हइबेक इति—

द्वितीय—

गङ्गा नामे एक अविरा स्त्री। ताहार स्वामीर भ्रातष्पुत्र हेमज्वलसिंह। ओ ताहार स्वामीर भ्रातष्पौत्र नारायणसिंहके राखिया मृत्यु हय। इहाते ताहार त्यज्य धनाधिकारि के हय— दुइ शास्त्रेर मत व्यवस्था प्रथक प्रथक लिखिवेन इति।

तृतीय—

हेमज्वलसिंहेर एक नावालग पुत्र जओाहेरसिंह नामे आपन विमाता चौराशी नाम, तत् गर्भजातक अविवाहिता एक कन्या ओ वेलकुमारि नामे जओयार सिंहेर एक सहोदरा भग्नी ओ नारायणसिंह नामे आपन पितार भ्रातष्पुत्र राखिया मृत्यु हय। इहाते जओाहेरसिंहेर तेय्य धनादि मैथलि शास्त्र मते काहाके ओ दायभागशास्त्र मते काहाके वर्त्ते। ओ यदि जओाहेरसिंह नारायणसिंहेर सहित एकान्नभुक्त थाकिया मृत्यु हइयाथाके, किम्वा ऐ नारायणसिंहेर प्रथक अन्ने मृत्यु हइयाथाके, एइ दुइ प्रकारे ऐ दुइ शास्त्र मते जओाहेरसिंहेर धनाधिकारि के हय। एवं आपनाके इहाओ ज्ञात करा जाइतेछे मे ऐ धनाधि[1] ताहारदिगेर सकलेर पैतृक। इहार यथाशास्त्र ये व्यवस्था हय प्रति छहओालेर निचे लिखिया ३ तिन दिवसेर मध्ये अथवा इहार पूर्व्व एइ अदालते पाठाइवेन इति॥

श्रीदुर्गाशरणम्

समुदयप्रश्नेर सप्रमान उत्तर प्रश्नेर नीचे लिखन स्थानाभाव प्रयुक्त पृष्ठे उत्तर लिखितेछि—

प्रथम प्रश्नस्योत्तरम्—

अर्थात्[2] प्रथम सओालेर उत्तरं लिख्यते। चलित मैथिलि शास्त्र एवं वङ्गदेशीय दायभाग शास्त्र मुख्य देशेर प्रति नहे। पारिभाषिक

---

१. धनादि०—इति साधियान् पाठः। २. अर्थात्—त्यप०।

परिक्षीणे पतिकुले निर्म्मनुष्ये निराश्रये ।
तत्सापिण्डेषु चासत्सु पितृपक्षः प्रभुः स्त्रियाः ॥—इति दायभागादि-
ग्रन्थधृतनारदवचनञ्चेति ॥२॥०॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयफेबरुवरीमासीयवेदपक्ष२४
मितदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे प्रश्नपत्रसहितेयं व्यवस्था मया दत्तेति ॥

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(५८,—सओल बराबर श्रीयुत पण्डित आदालत जेले जालालपुरः

प्रथमतः—

चलित शास्त्र मैथिली ओ दायभाग जातिर प्रति कि देशेर प्रति । यदि जातीर प्रति हय तवे कोन कोन जातीर प्रति मैथिली शास्त्र ओ कोन कोन जातीर प्रति दायभाग शास्त्र; ओ यदि देशेर प्रति हय तवे कोन देशेर प्रति मैथिली शास्त्र, ओ कोन देशेर प्रति दायभाग शास्त्र चलित हइवेक । ओ यदि कोन एक व्यक्ति ये देशे मैथिली शास्त्र चलित सेइ देशी आपन स्थान परित्याग करिया एइ वङ्गदेशे ये दायभाग शास्त्र चलित आछे वसति करिया मृत्यु हइयाछे, ताहार सन्तानादि चतुर्थ पुरुष पर्य्यन्त एइ देशे आछे । ताहारदिगेर मध्ये उत्तराधिकारित्व, ये शास्त्रेर विषय राखे, विवाद उपस्थित हइले, ताहार विचार कोन शास्त्र मते हय, ओ यदि ताहारदिगेर वर्त्तमान सन्तानादिर मध्ये विवाहादि ओ श्राद्धादि क्रिया मैथिली शास्त्र मत चलित थाके, तवे कोन शास्त्र मते, ओ यदि ताहारदिगेर ए सकल क्रिया दायभाग सम्मत चलित थाके, तवे ताहारदिगेर विवाहादि वस्तुर विचार कोन शास्त्र मत हइवेक इति—

द्वितीय—

गङ्गा नामे एक अविरा स्त्री। ताहार स्वामीर भ्रातष्पुत्र हेमञ्चलसिंह। ओ ताहार स्वामीर भ्रातष्पौत्र नारायणसिंहके राखिया मृत्यु हय। इहाते ताहार त्यक्त धनाधिकारि के हय—दुइ शास्त्रेर मत व्यवस्था प्रथक प्रथक लिखिवेन इति।

तृतीय—

हेमञ्चलसिंहेर एक नाबालग पुत्र जओाहेरसिंह नामे आपन विमाता चौराशी नाम, तत् गर्भजातक अविवाहिता एक कन्या ओ वेलकुमारि नामे जओयार सिंहेर एक सहोदरा भग्नी ओ नारायणसिंह नामे आपन पितार भ्रातष्पुत्र राखिया मृत्यु हय। इहाते जओाहेरसिंहेर तेथ्य धनादि मैथलि शास्त्र मते काहाके ओ दायभागशास्त्र मते काहाके वर्त्ते। ओ यदि जओाहेरसिंह नारायणसिंहेर सहित एकान्नभुक्त थाकिया मृत्यु हइयाथाके, किम्वा ऐ नारायणसिंहेर प्रथक अन्ने मृत्यु हइयाथाके, एइ दुइ प्रकारे ऐ दुइ शास्त्र मते जओाहेरसिंहेर धनाधिकारि के हय। एवं आपनाके इहाओ ज्ञात करा जाइतेछे ये ऐ धनाधि[1] ताहारदिगेर सकलेर पैतृक। इहार यथाशास्त्र ये व्यवस्था हय प्रति छहओालेर निचे लिखिया ३ तिन दिवसेर मध्ये अथवा इहार पूर्व्वे एइ अदालते पाठाइवेन इति॥

श्रीदुर्गाशरणम्

समुदयप्रश्नेर सम्पान उत्तर प्रश्नेर नीचे लिखन स्थानाभाव प्रयुक्त पृष्ठे उत्तर लिखितेछि—

प्रथम प्रश्नस्योत्तरम्—

अर्थात्[2] प्रथम सओालेर उत्तरं लिख्यते। चलित मैथिलि शास्त्र एवं वङ्गदेशीय दायभाग शास्त्र मुख्य देशेर प्रति नहे। पारिभाषिक

---

१. धनादि०—इति साधियान् पाठः। २. अर्थात्—नय०।

দেশের প্রতি, অর্থাত দেশস্থ লোকের প্রতি। মুখ্য দেশ ইহাকে কহে। দেশো নদী ভূধরঃ কন্দরাদিঃ। অতএব মুখ্য দেশের প্রতি নহে। শাস্ত্র জাতির প্রতি বটে। কিন্তু বঙ্গদেশীয় জীমূতবাহন কৃত দায়ভাগ শাস্ত্র বঙ্গদেশীয় সকলহিন্দুজাতির প্রতি। মৈথিলি শাস্ত্র মিতাক্ষরা মিথিলাদেশবাসিসকল হিন্দুজাতির প্রতি। মিথিলাদেশস্থ কোনো ব্যক্তি স্বদেশ ত্যাগ করিয়া বঙ্গদেশে ক্রমে চতুঃপুরুষ বাস করিয়া মৃত্যু হইলে, তাহার সন্তানাদি যদি মিথিলার শাস্ত্রানুসারে বিবাহাদি ক্রিয়া করে, তবে মিতাক্ষরাশাস্ত্রানুসারে, যদি বঙ্গদেশীয় শাস্ত্রানুসারে বিবাহাদি ক্রিয়া করে, তবে জীমূতবাহন কৃত দায়ভাগ শাস্ত্রানুসারে বিরোধি বস্তুর বিবাদ ভঞ্জন অর্থাত উত্তরাধিকারির নির্ণয় হইবেক। ইহা সর্ব্বদেশীয় শাস্ত্রানুসারে যথাশাস্ত্র ব্যবস্থা ইতি—

শ্রীশ্রীনাথবিদ্যাবাগীশপণ্ডিতস্য

দ্বিতীয় প্রশ্নস্যোত্তরং লিখ্যতে—

গঙ্গানাম্নী এক অবিরা স্ত্রী। তাহার স্বামীর ভ্রাতুষ্পুত্র হৈমঙ্গলসিংহ এবং স্বামির ভ্রাতষ্পৌত্র[1] নারায়ণসিংহকে ওয়ারিশ রাখিয়া মৃত্যু হইলে, তাহার ধনে অর্থাত তাহার দায়ে তাহার স্বামির ভ্রাতষ্পুত্র হৈমঙ্গলসিংহ অধিকারি হইবেক। তাহার স্বামির ভ্রাতষ্পুত্র[2] থাকিতে ভ্রাতষ্পৌত্র অধিকারি হইবেক না। ইহা বঙ্গদেশ চলিত জীমূতবাহন কৃত দায়ভাগ এবং মিথিলাদেশ প্রচলিত মিতাক্ষরা শাস্ত্র সম্মত। যথাশাস্ত্র ব্যবস্থা উভয় দেশীয় শাস্ত্র মতে এক ব্যবস্থা প্রযুক্ত পৃথক লিখিলাম না ইতি॥

শ্রীশ্রীনাথবিদ্যাবাগীশপণ্ডিতস্য

তৃতীয়প্রশ্নস্য উত্তর লিখ্যতে—

হৈমঙ্গলসিংহের এক নাবালগ পুত্র জয়োহেরসিংহ আপন বিমাতা চৌরাশী নাম্নী এবং তত্গর্ভজা পঞ্চ বৈমাত্রেয়া অবিবাহিতা

[1] ভ্রাতুষ্পৌত্র—ইতি সাধীয়ান্ পাঠঃ। [2] ভ্রাতুষ্পুত্র—ইতি সাধীয়ান্ পাঠঃ।

भगिनी एवं वेलकुमारी नाम्नी एक सहोदरा भगिनी एवं पितार भ्रातस्पुत्र नारायणसिंह—एइ चारिके राखिया कि एकान्ने कि पृथगन्ने थाकिया मृत्यु हइले। ताहार पैतृक धने एवं स्वकृत धने सकल धनेइ अर्थात् ताहार सकल दाये ताहार पितार भ्रातस्पुत्र अर्थात पितामह सन्तान नारायणसिंह अधिकारि हइवेक। ताहार विमाता एवं वैमात्रेया भगिनी एवं सहोदरा भगिनी अधिकारिणी हइवेक ना। किन्तु विमाता चौराशी उभयदेशीय शास्त्र मते ग्रासाच्छादन पाइवेक। इहा एतद्देश प्रचलित जीमूतवाहन कृत दायभाग एवं मिथिलादेश प्रचलित मिताक्षरा-शास्त्र सम्मत। यथाशास्त्र व्यवस्था उभयदेशीय शास्त्रे एक व्यवस्था प्रयुक्त पृथक लिखिलाम ना। विशेष एइ—तत्तद्देशीय दायभाग मते अविवाहिता वैमात्रेया भागिनीर विवाहेर ये धन व्यय ताहा नारायण सिंह जम्मोहेरसिंहेर स्थावरास्थावर वस्तुर अष्टमांशैकांश अर्थात जम्मोहेरसिंहेर धन अष्ट भाग करिया एक भाग दुइ ग्राना दिवेक इति ॥

श्रीश्रीनाथविद्यावागीशपण्डितस्य।

अत्र मैथिलशास्त्रमिताक्षरामते[1] प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः शिष्यः सब्रह्मचारिणः।

एषामभावे पूर्व्वस्य धनभागुत्तरोत्तरः॥—इत्यादि मिताक्षराधृतयाज्ञवल्क्यवचनम्।

अनन्तरः सपिण्डाद्यस्तस्य तस्य धनं भवेत्—इति वचनञ्च।

पित्रादिपितामहपर्य्यन्ताभावमुपक्रम्य पितृव्यस्तत्पुत्राश्च क्रमेण धन-भाजः। पितामहसन्तानाभावे प्रपितामही प्रपितामहस्तत्पुत्रास्तत्सून-वश्चेत्येवमासप्तमात् समानगोत्राणां सपिण्डानां धनग्रहणं वेदितव्यम्—इति मिताक्षरा(पृ० २२३ लिखनञ्च।

---

१. मैथिलि०—व्यप०।

भगिन्यश्चासंस्कृताः[1] संस्कर्तव्याः—इत्यादि मिताक्षरा(पृ० २०८) लिखनम्।

भ्रातृभगिन्याः समविभागं कृत्वा तयोरेकांशं चतुर्द्धा विभज्य चतुर्थांशस्य एकांशं दत्त्वा शेषं गृह्णीयात्—इति मिताक्षराटीका(या)ञ्च (पृ० २०६)।

दायभागमते प्रमाणम्—पत्नी दुहितरश्चैव—इत्यादि याज्ञवल्क्य वचनम्।

अनन्तरः सपिण्डाद्यस्तस्य तस्य धनं भवेत्—इति च वचनम्।

असंस्कृतास्तु संस्कार्या भ्रातृभिः पूर्व्वसंस्कृतैः—इति याज्ञवल्क्य-वचनम्।

भगिनीनां संस्कार्यतामाह, नाधिकारिताम्—इत्यादि दायभाग-(पृ०६६)लिखनञ्च।

पुंधनाधिकारे भगिन्यधिकारस्यालिखनात् नाधिकारः, न दायमर्हति स्त्री—इत्यादि निषेधवचनञ्च।

भरणं पोष्यवर्गस्य प्रशस्तं स्वर्गसाधनम्।
नरकं पीडने चास्य तस्माद्यत्नेन तं भरेत्॥—इति (दायभागग्रन्थधृत)-वचनम्।

मात्रधिकारे गर्भधारणपोषणहेतुनिर्देशाद्विमातुर्नाधिकारः इति॥

श्रीश्रीनाथविद्यावागीशपण्डितस्य

नं० ६३५७

मृत हेमञ्चलसिंहेर स्त्री चौराशी वादी

मृत दयालसिंहेर पुत्र नारायणसिंह प्रतिवादी

कलिकाताय सदर देवानि आदालतेर पण्डित स्थाने प्रश्नः एइ ये—

मजफरपुरजिलार अन्तःपाति पश्चिमदेशीय क्षत्रियवंशी हेमञ्चलसिंह चतुर्थ पञ्चम पुरुष जावत एतद्देशनिवासि हइया ए

१ ०संस्कृता—व्य० ०।

देशस्थ पैतृक वित्त ओ अवर्त्तमान स्त्रीर गर्भजात अप्राप्तवयसीय पुत्र जओाहेरसिंह ओ अविरा कन्या ओ द्वितीया स्त्री चौराशी वादि ओ ताहार गर्भजात हरकुमारी नाम्नी एक अदत्ता कन्या वर्त्तमान राखिया मृत्यु हय। ताहार चतुर्थ वर्षान्तरे ऐ जओाहरसिंह अप्राप्त वयसे मृत्यु हय। एतादृश स्थले ऐ वादि चौराशी ये एक अदत्ता कन्या राखे उक्त वित्त प्राप्ती हइवेक, कि नारायणसिंह जओाहेर सिंहेर पितृव्य पुत्रसत्वे ऐ वित्ताधिकारि हइवेक। यथा शास्त्र व्यवस्था लिखिवेन। इति सन १८३४ साल तारिख ४ जुन, मोताबक सन १२४१ साल तेरिख २३ ज्यैष्ठ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रव्यवस्थापत्रविचारपत्राणि यानीशयीशब्दप्रतिपाद्य-*निगमगुणगजेन्दुमिताब्दीयजुनमासीयगुणनेत्र–२३–मितदिनसम्बन्धिचन्द्र*-वासरे मया प्राप्तमथचेशयीशब्दप्रतिपाद्यनिगमगुणगजेन्दुमिताब्दीयदिशम्बर मासीयद्वितीयदिवसीयमत्कृतनिवेदनपत्रानुसारेण प्रभुसमर्पिततन्निवेदनपत्र-सहितविचारपत्रं यदीशयीशब्दप्रतिपाद्यगुणगजेन्दुमिताब्दीयफेब्रवरीमासीयतृतीयदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्राप्तम्, तेन ज्ञातमयं विवादो वङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेण निष्पन्न (इति)। तत्र कश्चिद्देशविषयकविरोधो वादिप्रतिवादिनोर्म्मध्ये नोपस्थितः। अत एवैतद्विवादविषये वङ्गदेशचलित-शास्त्रानुसारेण व्यवस्थालिखने सन्देहो नास्ति। अतस्तत्पत्रजातमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेण वङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति हेमन्तलसिंहो यद्यविद्यमानपत्नीगर्भजातम-प्राप्तव्यवहारं पुत्रं यमाहिरसिंहनामानमेकामवीरां दुहितरं द्वितीयपत्नीं चौरासीनाम्नीमर्थिनीं तद्गर्भजातामेकां हरकुमारीनाम्नीमदत्तां कन्यां विहाय मृतः स्यात्तदा हेमन्तलसिंहत्यक्तधने तत्पुत्रस्य यमाहिरसिंहस्य अप्राप्तव्यवहारस्याधिकारः। तस्मिन् पुत्रादिपितृप्रपौत्रपर्य्यन्तरहिते[1] मृते सति तत्त्यक्तधने प्रथमतस्तत्पितृदौहित्रस्याधिकारः। किन्तु यमाहिरसिंह-

---

१. प्रपौत्र०—न्यप०।

पितृदौहित्रस्येदानीमजातत्वेन तदुत्पत्तेः प्राक्कालपर्य्यन्तं यमाहिरसिंहवैमात्रेयभगिन्या हरकुमारीनाम्न्या अविवाहिताया एव अधिकारः। तस्याः पुत्रेषु जातेषु तेषामेवाधिकारः। हेमश्चलसिंहस्य मृतपत्नीगर्भजाताया अवीराया दुहितुर्यावज्जीवं स्वपतिकुलोचितग्रासाच्छादनोपयुक्तावश्यकविधवाधर्म्माद्याचरणोपयुक्तयतिपत्नीयधनाभावे हेमश्चलसिंहस्य धनान्तर्गततत्कुलोचितग्रासाच्छादनोपयुक्तावश्यकविधवाधर्म्माद्याचरणोपयुक्तधने चाधिकारः। अधिन्यारचोराणीनाम्न्या हेमश्चलसिंहस्य द्वितीयपत्न्या अपि यावज्जीवं स्वपतिकुलोचितग्रासाच्छादनोपयुक्तावश्यकविधवाधर्म्माद्याचरणोपयुक्तधने तत्कन्याया हरकुमारीनाम्न्याश्चाप्राप्तव्यवहारकालपर्य्यन्तं तद्धनरक्षणादौ चाधिकारः। सत्स्वेव[1] हेमश्चलसिंहस्य दौहित्रेषु स्वतो हेमश्चलसिंहस्य तत्पितृपितामहयोश्च पार्वणश्राद्धपिण्डदातृषु तेषां हेमश्चलसिंहदौहित्राणामुत्पत्तिसम्भावनायामपि हेमश्चलसिंहभ्रातृपुत्रस्य अर्थाद् यमाहिरसिंहपितृव्यपुत्रस्य नारायणसिंहस्य नाधिकारः—इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागदायतत्त्वदायभागटीकादायक्रमसंग्रहविवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥

अत्र प्रमाणम्—

त्रयाणामुदकं कार्य्यं त्रिषु पिण्डः प्रवर्त्तते—इत्यादि मनुवचनम् ॥१॥

अनन्तरः सपिण्डाद्यस्तस्य तस्य धनं भवेत्—इति च मनुवचनम् ।२।

पितुरपि प्रपौत्रपर्य्यन्ताभावे पितृदौहित्रस्याधिकारो बोद्धव्यो धनिदौहित्रस्येव—इति दायभागग्रन्थलिखनम् ॥३॥

यद्यपि दुहित्रभावे दौहित्रस्येव भगिन्या एव भागधिकारो युक्तस्तथापि तस्याः स्त्रीत्वेन पार्वणपिण्डदत्वाभावान्नाधिकारः। दुहितुस्तु दौहित्रात् पूर्व्वमन्नादत्वात् सम्भवति इत्यादिविशेषवचनादेवाधिकार इति भावः—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकालिखनम् ॥४॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः—इत्यादि दायभागादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥५॥

---

१ सत्स्विद—पु० ।

अभावे बीजिनो माता तदभावे च पूर्व्वजः —इति व्यवहारतत्त्वादिग्रन्थधृतनारदवचनम् ॥६॥

तदभावे पुनः पितृदौहित्र इति । तदभावे पितामहस्तदभावे पितामही तदभावे पितुः सोदरस्तदभावे पितुर्वैमात्रेयस्तदभावे पितृसोदरपुत्रपितृवैमात्रेयपुत्रपितृसोदरपौत्रपितृवैमात्रेयपौत्राणां क्रमेणाधिकारः —इति च श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकालिखनञ्चेति ॥७॥—

ईशवीशब्दप्रतिपाद्येयुगयुगगजेन्दुमिताब्दीयमार्च्चमासीयदशमदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रव्यवस्थापत्रमत्कृतनिवेदनपत्रैर्विचारपत्रैश्च सहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीदुर्गा

(१९)—अशेषगुणालंकृत नानाशास्त्राध्यापक श्रीयुत पीताम्बरतर्कवागीशभट्टाचार्य्य पण्डित आदालते देओयानि जेला. विरभूम सदन्तःकरणेषु —

यदि कोन विधवा स्त्रीलोक आपन तिन पुत्रेर सहित एक अन्ने थाकिते दुइ पुत्र मरे, आर ऐ एक पुत्र आपन मातार सहित एक अन्ने थाके, किम्बा प्रथक अन्ने थाके–एमत स्थले ऐ मृत दुइ पुत्रेर धनाधिकारि ताहारदेर माता कि भ्राता के हइवेक ?

पण्डितके उचित ये एइ सओयालेर जओयाव संस्कृत भाषा शब्दे एइ सओयालेर पार्शे आपन दस्तखत महुरे लिखिया ५रोज मध्ये हजुरे पाठान इति—

श्रीदुर्गा शरणम्

प्रभुप्रेषितप्रश्नपत्रावलोकनेन यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणात्र प्रत्युत्तरं लिख्यते—

दौहित्रपर्य्यन्तरहितयोर्मृतधनिनोः स्थावरादिधने मातुरेवाधिकारित्वम्—इति वङ्गदेशप्रचलितदायभागादिग्रन्थसम्मतेति ॥

श्रीकाली जयति

श्रीपीताम्बरतर्कवागीशभट्टाचार्य्येण ।

भाषा—

दौहित्रपर्य्यन्त विहिन मृत ये दुइ व्यक्ति, ताहारदेर स्थावरादि धने ताहारदेर मातार अधिकार हय, भ्रातार हय ना-इति वङ्गदेश चलित दायभाग प्रभृति ग्रन्थ सम्मता व्यवस्था इति । समाप्तिकेयं[1] व्यवस्थेति ॥

श्रीदुर्गा शरणम्

पितरि मृते ये भ्रातरोऽविभक्तास्तयोः पितृपर्य्यन्तोत्तराधिकारिरहितयोर्मध्यमकनिष्ठयोरुपरमे तद्धने माता अधिकारिणी । किन्तु तदानीं पैतृकेश्वरसेवारक्षणार्थमवश्यपोष्यवर्गपोषणार्थञ्च ज्येष्ठपुत्रेण यदृणादिकं कृतं तन्मात्रा पुत्रेण च परिशोध्य यदवशिष्टं धनं पश्चात् ताभ्यां विभजनीयम् । ऋणपरिशोधनानन्तरमेव विभागविधानात्—इति विदुषाम्परामर्शः । तस्य भाषा—

पितार मृत्युर पर तिन भ्राता वर्त्तमान, पितृ पर्य्यन्त उत्तराधिकारि रहित मध्यम एवं कनिष्ठेर परलोक हइले पर सेइ दुइ जनेर अंशे मातार रक्षणावेक्षणेर अधिकार हय । किन्तु ताहार पर पैतृकेश्वरसेवा रक्षार निमित्ते एवं अवश्यपोष्य कुटुम्बादि परिपालनेर कारण ये ऋणादि हय ताहा ज्येष्ठ भ्राता ओ माता दुइ जनके परिशोधन करिते हय । परिशोधनेर पर अवशिष्ट

---

[1] सना० रयेति-देवनागराक्षरेण लिखितम् ।

धन ये थाके, ताहा दुइ जनेर यथा योग्य वण्टन करिया लइवेक। किन्तु माता दानादि करिते पारेना। स्मृतिशास्त्र मते ऋणादि परिशोधनेर पर विभाग विधान करियाछेन इति—

श्रीगोपाल(?) जयति—	श्रीनन्दगोपालः शरणम्—
श्रीहरिरामशर्म्मणाम्।	श्रीहरगोविन्दन्यायालङ्कारस्य।
श्रीरामः शरणम्—	श्रीरामः शरणम्—
श्रीगुरुचरणशर्म्मणाम्।	श्रीत्रिलोचनशर्म्मणाम्।
श्रीरामः शरणम्—	श्रीरामः शरणम्—
श्रीकालीप्रसादशर्म्मणाम्।	श्रीरामधनशर्म्मणाम्।

नं० २४ शरारारि आपिल सन १८३१ मच्छिया—

रोवकारि आदालते देओयानि जेला विरभुम मेंहार दुइक पाटल साहेव एकटिन जज सन १८३४ मछिहा तारिख २६ सेतम्वर मोतावक सन १२४१ साल तारिख ११ आश्विन।

विलाशमनिदेव्या फेलेमदार—मथुरानाथसिंह मोताम्रेर—

एइ मकद्दमा शायेक जजसाहेवेर हुकुम अनुसारे एइ आदालतेर पण्डित पीताम्वरतर्कवागीश ये व्यवस्था दियाछेन प्रतिवादि मजकुर ताहाते एइ ओजारे राखे ये ऐ व्यवस्था शास्त्र मत नहे। शास्त्रेर अतिक्रम दोषरा पण्डितवर्गेर व्यवस्था, जाहा आमि लइयाछि, ताहा दोरस्त आछे। ताहाते मताम्रेर मजकुर कएक जन पण्डितेर दस्तखति एक खान व्यवस्था दरपेष करिलेक। इहाते मोताम्रेर मजकुरेर ओजोर निवारनेर निमित्त आर एइ दुइ व्यवस्थार दरस्ति.नदरोस्ति जानिवार निमित्त सदर देओयानिर पण्डितवर्गेर स्थाने सत्य व्यवस्था तलव करोन आविश्यक हइल। ए कारण हुकुम हइल ये एइ आदालतेर पण्डित पीताम्वरतर्कवागीशेर व्यवस्था आर मोवर्रेर मजकुरेर दाखिल करा व्यवस्था एइ रोवकारिर नकलेर सम्वलित आर एइ रकम इंरोज

चीटी सदर देओयानिर आदालतेर हाकीमानेर हुजुरे पाठान जाय ये हाकिमान एइ पाठान दुइ व्यवस्था सदर पण्डितेर आगे एइ निमित्तक जानिवार अनुमति ये एइ दुइ व्यवस्थार मध्ये कोन सत्य ओ शास्त्र अनुसार, आर इहार एक कोन खेलाफ शास्त्र हय पाठाइया एवं पण्डितदिगेर स्थान हइते इहार सत्य व्यवस्था तलब करिया परे पण्डितमहाशयेरदिगेर सत्य व्यवस्था ओफे इफि, एइ पौंछिले ताहा एइ आदालते पाठाइवेन इति ॥

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितविचारपत्रं वीरभूमिप्रदेशीयजिलाख्यावान्तरधर्म्माधिकरण-नियुक्तपण्डितसम्बन्धितद्धर्म्माधिकरणाधिपतिकृतप्रश्नपत्र व्यवस्थापत्रद्वयञ्च यदीशचीशब्दप्रतिपाद्यनिगमगुणगजेन्दु १८३४ मिताब्दीयदिशम्बरमासीय-प्रथमदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्राप्त तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तद-नुसारेणोत्तर लिख्यते—

वीरभूमिप्रदेशीयजिलाख्यावान्तरधर्म्माधिकरणाधिपतिकृतप्रश्नश्चाय-मेव । यदि काचिद् विधवा स्त्री स्वकीयैस्त्रिभिः पुत्रैः सहैकान्ने स्थिता, तदानीमेव द्वौ पुत्रौ मृतौ स्यातामेकः पुत्रः स्वमात्रा सहैकान्ने पृथगन्ने वा स्थितस्तदा मृतयोर्द्वयोः पुत्रयोर्धनाधिकारिणी माता भवति, किंवा[1] भ्राता भवतीति । तत्र तद्धर्म्माधिकरणनियुक्तपण्डितेन माता धनाधिकारिणी भवति, भ्राता न भवतीत्युत्तर लिखितं तच्छास्त्रानुसारेण शुद्धमस्ति । अन्यैरनियुक्तपण्डितैश्च माता धनाधिकारिणी भवतीत्येवोत्तर लिखितम् । अतएवैतद्विषये द्वयोर्व्यवस्थयोरैक्यमेवेति तद्विषये विचारस्यावश्यकता नास्ति, द्वयोरेव व्यवस्थयोरेतद्विषये वङ्गदेशचलितशास्त्रीयत्वात् । किन्त्व-नियुक्तैरन्यैः पण्डितैः स्वकीयव्यवस्थायामित्येवाधिकं प्रभुकृतप्रश्नात् लिखितम् । किन्तु तदानीं पैतृकेश्वरसेवारक्षणार्थमवश्यपोष्यवर्गपोषणार्थं च ज्येष्ठपुत्रेण यदृणादिकं कृतं तन्मात्रा पुत्रेण च परिशोध्य यदवशिष्ट धन पश्चात्ताभ्यां विभजनीयमृणपरिशोधनानन्तरमेव विभागविधानादिति

१. किम्वा—मप० ।

विदुषां परामर्श इति । तत्रच प्रभुकृतप्रश्नाशयवद्भिर्तत्वेन विचारानर्हत्व-मेवेति । विचारार्हत्वेऽपि वा दायभागादिग्रन्थे चायमेव विचारस्तद्विषये कृतः । पूर्व्वस्वामिकृतैवादृशनैयायिकमृणमुत्तराधिकारिभिः स्वस्वोपयुक्तां-शानुसारेणावश्यमेव परिशोध्यम् । तत्रापि विभागकर्त्तृभिरुत्तराधिकारिभिस्ता-दृशऋणपरिशोधनं विना विभागो न कर्त्तव्य इति न नियमः । किन्तु 'विभागकर्त्तृणां धनिकस्य चेच्छा चेत्तदा ऋणपरिशोधनानन्तरमेव विभागः । नैवमिच्छा चेद्विभागानन्तरमेव ऋणपरिशोधन मवितुं शक्नोतीति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धु :—इत्यादि दायभागादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य-वचनम् ॥१॥

यच्छिष्टं पितृदायेभ्यो दत्त्वर्णं पैतृकं ततः ।

भ्रातृभिस्तद्विभक्तव्यमृणी न स्याद् यथा पिता ॥ इदं नारदवचनम् *पित्र्यर्णशोधनावश्यम्भावार्थं न विभागकालार्थम्* । अस्माच्च नारदवचना-दयमर्थः सिद्ध्यति—यद् विभागकर्त्तृभिरुत्तमर्णानुमत्यैव पित्र्यादृणं *विभजनीयं परिशोध्यं*[1] वा—इति दायभाग(पृ० २५) ग्रन्थलिखन-ञ्चेति ॥२॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयमाघ्चमासीयत्रयोदशदिन-सम्बन्धिशुक्रवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रप्रश्नपत्राभ्यां व्यवस्थापत्रा-भ्याञ्च सहितमिदमुत्तरं दत्तमिति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(९०) श्रीसुब्रह्मण्यगुरुःशरणम्

चतुस्त्रिंशदधिकाष्टादशशतान्दीयसोतम्बरमासीयपञ्चदशदिवसे प्रत्यर्थि-

---

[1] परिशोध्य चेति—व्यव० ।

न्योर्विवादविषये प्रधानसदनमीनाख्यधर्म्माधिकारिप्रेषितप्रश्नसज्ज्ञितप्रति-रूपकपत्रमवलोक्य[1] यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते--

मृतशटकोपदासत्यक्तधनप्राप्त्यर्थं विवदमानयोः अमुकदासाख्यार्थ्य-मुकप्रत्यर्थिन्योर्मध्ये[2] यद्यपि अमुकाख्या शटकोपदासकन्या, तथाप्येतत् प्रतिरूपकपत्रलिखनानुसारेण सा पतिपुत्रविहीना[3] विधवेति[4] प्रतिभातीति कृत्वैतादृशमृतशटकोपदासत्यक्तधने[5] तद्धर्म्मभ्रात्रमुकदासस्याधिकारो न तु अमुकाख्यविधवायाः।[6] वैष्णवानां मध्ये केचन वानप्रस्थाः, केचन ब्रह्म-चारिणो भवन्तीति कृत्वैतादृशमृतशटकोपदासाख्यः स योगी चेदपि[7] वान-प्रस्थान्तर्भूत एवेति कृत्वा तत्त्यक्तधनं तद्धर्म्मभ्रात्रमुकदास एव प्राप्तुम-र्हति, न तु अमुकाख्यविधवा—इति[8] शास्त्रसम्मता व्यवस्था।

अत्र प्रमाणम्—

वानप्रस्थयतिब्रह्मचारिणां धनहारिणः।

क्रमेणाचार्य्यसच्छिष्यधर्म्मभ्रात्रेकतीर्थिनः॥—इति मिताक्षराप्रभृति-ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य २।१३७ वचनम् ॥१॥

एवं वानप्रस्थधनं धर्म्मभ्रातृत्वेनानुमतोऽपरो वानप्रस्थ एकतीर्थनि-वासी एकाश्रमनिवासी[10] वा गृह्णीयाद्—इति दायभाग(पृ० २१७) लिखनञ्चेति ॥२॥०॥

श्रीसुब्रह्मण्यगुरुः शरणम्
श्रीसखारामशास्त्रिणः

मोहर पण्डित आदालत देमानि—
मुकाबिले वालाबोपत मोहरीर मरमहाफ़नवीस ॥

---

१. धर्म्माधिकारिप्रेशितप्रतीरूप०—व्यप०।
२. वीवदमानयो अमुकदासाख्यार्थीअमुकप्रत्यर्थिन्यो०—व्यप०।
३ पत्नी०—व्यप०। ४. वीधवेति—व्यप०। ५ कृत्वे०—व्यप०।
६. वीध०—व्यप०। ७ सयोगिश्चेदपी—व्यप०। ८ वीधवेती—व्यप०।
९. मीता०—व्यप०। १०. °नेवासी—एकाश्रमनीवासी—व्यप०।

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितविचारपत्रं व्यवस्थापत्रञ्च यदीयवीशब्दप्रतिपाद्यनिगमगुणगजेन्दु १८३४ मिताब्दीयदीसम्बरमासीयमुनीन्दुमितदिनसम्बन्धिबुधवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

प्रभुसमर्पितव्यवस्था धर्मशास्त्रसम्मता न भवति, कलौ वानप्रस्थाश्रमस्य निषेधादिति ।

ईशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयमार्च्चमासीयत्रयोदशदिनसम्बन्धिशुक्रवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रव्यवस्थापत्राभ्यां सहितमिदमुत्तरं दत्तमिति ॥

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(६१) श्रीहरिःशरणम्

महामहिमश्रीयुतधर्म्माधिकरणाध्यक्षबहादेवमहाशयसमीपेषु उपरिलिखितप्रश्नपत्रस्योत्तरं लिख्यते—

अपुत्रस्य मृतजयकान्तरायस्य समस्तधने पञ्चमपुरुषीयज्ञातिसकुल्यदयानाथरायरामनाथरायमातृष्वस्रीयमथुरानाथघोषाणां[1] मध्ये धनिदेयमातामहपिण्डदातृत्वात् मातृष्वस्रीयमथुरानाथस्याधिकारो भवति—इति वङ्गदेशीयप्रचलितदायभागदायतत्त्वदायक्रमसंग्रहविवादभङ्गार्णवप्रभृतिग्रन्थविदां विदां सम्मता व्यवस्था साधीयसीति ॥

अत्र प्रमाणानि—

बहवो ज्ञातयो यत्र सकुल्या बान्धवास्तथा ।
यो ह्यासन्नतरस्तेषां सोऽनपत्यधनं हरेत् ॥१॥
अनन्तरः सपिण्डाद्यस्तस्य तस्य धनं भवेत् ।
अत ऊर्द्ध्वं सकुल्यः स्यादाचार्यः शिष्य एव वा ॥२॥

---

१. पुरुषीयज्ञातिसकुल्यदयानाथरायरामनाथरायमातृस्वस्रीयमथुरानाथघोषाणां—व.५० ।

त्रयाणामुदकं कार्य्यं त्रिषु पिण्डः प्रवर्त्तते ।
चतुर्थः सम्प्रदातैषां पञ्चमो नोपपद्यते ॥३॥

सपिण्डाभावे सकुल्यः—इति वृहस्पतिमनुबौधायनवचनानि ॥

तस्मात् तद्भोग्यपिण्डदातुरभावे तद्देयपिण्डदातुर्मातुलादेरधिकारो न्याय्य एव—इति दा० भा०(पृ० २१०)। एतेन वृद्धप्रपितामहाद् प्रभृतयः पूर्व्वपुरुषा प्रतिनप्तुः प्रभृतयोऽधस्तनास्त्रयः[1] पुरुषाः एकपिण्ड-भोक्तृत्वाभावाद् विभक्तदायादाः सकुल्या इति आचक्ष्यते दा० भा० (पृ० ११)। तस्माद् यो यस्तत्कुलोत्पन्नोऽतद्गोत्रोऽपि[2] स्वदौहित्रपितृ-दौहित्रादिः अतत्कुलोत्पन्नो वा मातुलादिर्धनिनो मृतस्य मातृकुलगत-त्रैपुरुषिकपिण्डदातृतया एकपिण्डसम्बन्धेन सपिण्डस्तस्य[3] तस्याप्यधि-कारार्थं त्रयाणामितिवचनम् । आनन्तर्य्येण च विशेषार्थम् अनन्तर इति वचनं वर्णनीयम् । तेन मृतभोग्यमृतदेयपित्रादित्रयपिण्डदातुः पितृदौ-हित्रादेरभावे मृतदेयमातामहादिपिण्डदातॄणां मातुलादीनामानन्तर्य्यक्रमे-णाधिकारिक्रमो बोद्धव्यः । एतत्पर्य्यन्ताभावे सकुल्यः—इति दायभाग (पृ० २१२।२१३)लिखनानि ।

मृतभोग्यपिण्डदात्रभावे बन्धुरिति मातामहमातुलादिः—इति दाय-तत्त्व(पृ० १९६)लिखनानि ।

ततः पितामहभ्रातृदौहित्रोऽधिकारी धनिभोग्यप्रपितामहपिण्डदातृ-त्वात् । तदभावे मातामहः तदभावे मातुलः तदभावे मातुलपुत्रः तद-भावे मातुलपौत्रः तथा तदभावे मातामहदौहित्रोऽधिकारी—इति दाय-क्रमसंग्रह(पृ० ६)लिखनानि च ।

दौहित्रान्तप्रपितामहसन्तानाभावे[4] मृतदेयमातामहादिपिण्डभोक्तॄ-णां तद्दातॄणां चासत्तिक्रमेण मातामहमातुलतत्पुत्रतत्पौत्रप्रमातामह-तत्पुत्रपौत्राणां पूर्व्वपूर्व्वाभावे[5] परपरोऽधिकारी । एवं तेषां दौहित्राणामपि

१. प्रभृत्यधस्तना°—व्य० ।
२ तदगोत्र—व्य० ।
३ सपिण्ड—व्य० ।
४. दौहित्रपुत्र—व्य० ।
५ पूर्व्वापूर्व्वाभावे—व्य० ।

मातामहवत् पितृतत्पितृपिण्डदानामधिकारः—इति विवादभङ्गार्णव (२६३ क) लिखनानि च इति ।

शकाब्दाः १७५६ इं० १८३४ साल १८ जुन ।

श्रीलक्ष्मीनारायणन्यायालङ्कारस्य सम्मता
श्रीलक्ष्मीनारायणपण्डितस्य

नं० २११ इ० सन १८३४ साल—

रोवकारि मिछिल सदर देओयानि आदालत मो० कलिकाता श्रीयुत मेष्टर हेनरि सिकिसपीयर साहेवेर वैठके। तारिख ३ मार्च्च इ० १८३५ साल मोताबके २१ फाल्गुन सन १२४१ साल वाङ्गला दिवस मङ्गलवार—

रामनाथराय ओ गयरह — आपीलाण्टगन
मथुरानाथ ओरफे श्रीकान्तराय — रेस्पाडण्ट

आपीलाण्टगणेर उकिल मेष्टर निलवेक्लमेन एडमेनष्टीन वेलि ओ रेस्पाडण्डेर उकिल मेष्टर जीमिष कोलवरुक सदरलेण्ड साहेव हाजीर आइल। इतः पूर्व्व गतो सनेर २३ शेतम्बर तारिखे आपीलाण्टगणेर सदर आपीलेर छओयाल ओ तत्तमिभ्यारि कागजात अनुबोधन अनुसारे उक्त तारिखेर रोवकारिर लिखित प्रमाण एइ मोकर्द्दमा लम्बरे दाखिल हओयार हुकुम हय। एवं अपीलाण्टगण जेलार आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था दाखिल नाकरण प्रयुक्त एइ मोकर्द्दमार कागजात तलव हइयाछिल। तत्परे आपीलाण्टगणेर मध्ये रामनाथराय आपीलाण्टेर दरखास्त उहार पूर्व्वेर मोकरर करा उकिलगणेर परिवर्त्ते हालेर उकिल निलवेक्लमेन एडमेनष्टीन वेलि साहेवेर नामे ओकालतनामा दाखिल करण विषये दाखिल हओया विधाय गतो सनेर १८ ओ २३ दिजम्बर तारिखे उपस्थित हइया मिछिलेर समिभ्यार

राखनेर हुकुम हय। जेला पुरनियार जज साहेबेर रिटरण ओ १ दिजम्बर मजकुरेर लिखित तथाकार रोवकारि सम्वलित पौहुच्छान मते अद्य आपीलाण्टगणेर सदर आपीलेर छओयाल ओ कागजात सम्वलित आमार वैठके दरपेस हइया अनुवोधने आइल। एइ मोकद्दमार विषये अन्य २ तदन्तेर पूर्व्व एइ विषय बोध करा आवश्यक ये जेलार आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था जाहार दृष्टे जेलार जजसाहेब एइ मोकद्दमार इनफछालेर हुकुम दियाछेन यथार्थ ओ सत्य बटे कि ना—ए प्रयुक्त उक्त विषयेर बोध जन्य हुकुम हइल ये जेलार आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था एइ हुकुमे एइ आदालतेर पण्डितेर निकट पाठान जाय ये पण्डित मजकुर उक्त विषयेर जओयाब दुइ सप्ताह मध्ये दाखिल करेण। ताहा पौहुछनेर पर उचित ये हुकुम ताहा जादेर हइवेक इति ॥—

श्रीऊर्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतहेनरोसिकिसूपीयरसाहेवधर्म्माधिकरण-लिखितेषान्दमतिपायेगुणगजेन्दुमिताब्दीयमार्च्चमासीयतृतीयदिवसीयवि-चारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्र तत्समर्पितव्यवस्थापत्रञ्च यत्तदब्दीयतन्मा-सीयाष्टेन्दुमितदिनसम्बन्धिबुधवासरे मया प्राप्त तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तर लिख्यते—

प्रभुसमर्पितव्यवस्था वङ्गदेशप्रचलितशास्त्रानुसारेण जातास्तीति ।

ईशवीशरद्मतिशरेषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयापरेलमासीयतृतीयदिनसम्ब-न्धिशुक्रवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रव्यवस्थापत्राभ्यां सहितमिदमुत्तरं दत्तमिति—

श्रीऊर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(६२)—महामहिम श्रीयुत खोदावन्दान् न्यामत बरावरेषु—

व्यवस्थासकलेर तरजमा पारशी एबारते[1] ओ भापाय तैयार हइया हजुरे दाखिल हइतेछे। ए प्रकार दस्तुर ए आदालते आछे। किन्तु सम्प्रति केह पारशीनवीश मुनशी आमार काछे नाइ, ये जाहार द्वाराय व्यवस्थासकल पारशी तरजमा कराइया हजुरे दाखिल करि, ओ इहार पूर्व्वे ए विषयेर वारम्वार हजुरे निवेदन करियाछि। किन्तु ए कर्म्मे केह मुनशी नियुक्त हये नाइ। अतएव निवेदन करितेछि ये कोन एक जन मुनशीके एमत हुकुम हय व्यवस्थासकल तरजमा करेण, किम्वा यदि वाङ्गला एबारते ओ भापाय व्यवस्थासकल तरजमा करिया दाखिल करिते हुकुम हय, तवे प्रस्तुत मते वाङ्गला भापाय ओ एवारते[1] एक प्रकार तरजमा हइते पारे। ओ दुइ किता व्यवस्थार तरजमा वाङ्गला भापाय ओ एवारते आमार काछे प्रस्तुत आछे। किन्तु हजुरेर हुकुम व्यतिरेके दाखिल करिते पारि ना। अतएव आरज करिलाम, जेमत हुकुम हय, खोदावन्दान मालिक, इहा आरज करिलाम इति। तारिख २३ आपरेल सन् १८३१ साल ईरावी।

प्रतिपाल्यतम श्रीवैद्यनाथमिश्रस्य
निवेदनमेतदिति

(६३)—सओाल—

धनि विजि पुरूप काशीरामदासेर, कालीचरण ओ कीर्त्तिनारायण ओ रघुनाथ ओ कान्तनारायण, चारि पुत्र वर्त्तमाने मृत्यु हय। तत् पर कालीचरणेर हरिनारायण ओ रामनारायण आ राधागोविन्द तिन पुत्र ओ तिन सहोदर वर्त्तमाने मृत्यु हय। तदनन्तर कान्तनारायण अविवाहित समय ओ कीर्त्तिनारायणेर विवा-

1. एतारते—व्यव०।

हेर पर निःसन्तति ऐ रघुनाथ भ्राता ओ कालीचरणेर पुत्र हरि-
नारायण ओ रामनारायण ओ राधागोविन्द भ्रातष्पुत्र वर्त्तमाने
मृत्यु हय। एवं कीर्त्तिनारायणेर ओरह मृत्यु हय। ओ पर ऐ रघुनाथ
हरिनारायण ओ रामनारायण ओ राधागोविन्द आपन भ्रातष्पुत्र
सहित कीर्तिनारायण ओ कान्तनारायणेर पैतृक ओ सकृत धने
आपन निज अंश सहित अविभक्त क्रमे भोग करिया श्रीमती भैर-
वीदास्या नामक एक अदत्ता कन्या राखिया मृत्यु हन। से मते
निवेदन कीर्तिनारायण ओ कान्तनारायण रघुनाथेर सहोदर ओ
रामनारायण इत्यादिर खुल्लता छिलेन, भ्राता ओ भ्रातष्पुत्र
वर्त्तमाने निःसन्तान मरण हओाते रघुनाथ मजकुरेर कि
पर्य्यन्त अंश पहुछिया हरिनारायण ओ रामनारायण ओ
राधागोविन्देर सहित भैरवीदास्यार कि प्रकारे कि पर्य्यन्त अंश-
भाहार यथाशास्त्र व्यवस्था चाहि इति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितविचारपत्र प्रश्नपत्रञ्च यद्दीशवीशब्दप्रतिपाद्येगुगुणगजेन्दु-
मिताब्दीयजानवरीमासीयखगुणमितदिनसम्बन्धिभृगुवासरे मया प्राप्तं
तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तर लिख्यते—

प्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति कान्तनारायणस्याकृतोद्वाहस्य पुत्रमारभ्य
पितृपर्य्यन्तरहितस्य मृतस्य माता यदि तन्मरणसमये विद्यमाना स्यात्, तदा
तत्यक्तसमुदायधने तन्मातुरेवाधिकारः, तस्याञ्च मृतायां रघुनाथाख्यस्तत्-
सहोदरभ्राता विद्यमानश्चेत्तदा तत्यक्तसमुदायधने रघुनाथाख्यस्य तद्भ्रातु-
रेवाधिकारः। कीर्त्तिनारायणस्यापि निःसन्तानस्य मृतस्य पत्नी यदि विद्य-
मानाया कीर्त्तिनारायणस्य मातरि मृता स्यात्तदा कीर्त्तिनारायणत्यक्ततत्पत्नी-
स्वान्तसमुदायधने तन्मातुरेवाधिकारः। तस्याञ्च मृतायां यदि रघुनाथाख्य-
स्तद्भ्राता विद्यमान आसीत्तदा तस्याधिकारः। एवञ्च सत्येतरात्ते रघुनाथ
त्यक्तसमुदायधनं यत्तस्य स्वांशरूपं यच्च वा तेनोपरिलिखितप्रकारेणोत्तरा-
धिकारित्वेन भ्रातृद्वयत्यक्तधनं प्राप्तम्, तस्मिन् समुदायधने तस्य पुत्रमारभ्य

पत्नीपर्य्यन्तरहितस्य मृतस्यादत्तकन्याया भैरवीदास्या स्वत्वाधिकारः। हरिनारायणरामनारायणगोविन्दनारायणानां ■ त्रयाणां सोदरभ्रातॄणां स्वपितृत्यक्तसमुदायधने समानाधिकारः। यदि चोपरिलिखितप्रकारेणोत्तराधिकारित्वेन प्राप्तपुत्रद्वयधना माता रघुनाथस्य मरणोत्तरमपि विद्यमाना आसीत्, तदा तस्या मातुर्मरणोत्तरं तत्संक्रान्तपुत्रद्वयधने मृतधनिनोः कान्तनारायणकीर्त्तिनारायणयोर्ये उत्तराधिकारिणस्तेषामेवाधिकारः। तत्र च तयोरुत्तराधिकारिणां मध्ये तयोः पुत्रमारभ्य भ्रातृपर्य्यन्ताभावेन तयोर्भ्रातृपुत्राणामर्थाद्धरिनारायणरामनारायणगोविन्दनारायणानामेव समानाधिकारः। एवञ्च सत्येतत्पक्षे रघुनाथकन्याया भैरवीदास्याः केवलं रघुनाथयोग्यांशे रघुनाथस्वत्यक्तधने अधिकारः। हरिनारायणरामनारायणगोविन्दनारायणानान्तु स्वपितृयोग्यांशे कान्तनारायणकीर्त्तिनारायणयोः स्वपितृव्ययोर्योग्यांशे च समानाधिकारः। अत्र प्रश्नपत्रे कान्तनारायणकीर्त्तिनारायणयोर्माता तयोर्मरणसमये रघुनाथस्य मरणसमये वा विद्यमाना आसीन्न वेति लिखितं नास्ति। अतएव प्रकारद्वयेन व्यवस्था लिखितेति निवेदनम्—इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागतट्टीकादायतत्त्वदायक्रमसंग्रहविवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था॥

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा।

तत्सुतः—इत्यादि दायभागादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम्॥१॥

अपुत्रस्य मृतस्य कुमारी रिक्थं गृह्णीयात्, तदभावे चोढा—इति दायभागादिग्रन्थधृतपराशरवचनम्॥२॥

अपुत्रा शयनं भर्त्तुः पालयन्ती गुरौ स्थिता।

भुञ्जीतामरणात् क्षान्ता दायादा ऊर्द्ध्वमाप्नुयुः॥—इति दायभागादिग्रन्थधृतकात्यायनवचनम्॥३॥

यद्वा पत्नीत्युपलक्षणम्, स्त्रीमात्राधिकारेऽयमर्थो बोद्धव्यः—इति दायभागग्रन्थलिखनञ्चेति॥४॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयापरेलमासीयवसुपक्षमितदिन·

सम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रमस्नपनाम्ना सहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

व्यवस्थार तरजमा वाङ्गला भाषाय—

हुजुरेर सोपरद् करा रोवकारि ओ सवायाल जाहा इङ्गरेजी सन १८३५ सालेर जानवरि मासेर ३० तारिखे दिवस शुक्रवारे आमि पाइया छिलाम ताहार विवेचना करिया ये मत बोध हइलो तदनुसारे जवाव लिखितेछि इति—

सवोयालेर लिखित वृत्तान्तक्रमे अविवाहित कान्तनारायणेर पुत्र अवधि पितृपर्य्यन्त रहित हइया मृत्यु हइले ताहार मरण समये यदि ताहार माता वर्त्तमाना छिल, तवे ताहार त्यक्त सकल वस्तुते ताहार मातार अधिकार हइयाछिलो। आर ऐ मातार मृत्यु हइले ताहार मरण समये रघुनाथनामे कान्तनारायणेर सहोदर भ्राता यदि विधमान छिल, तवे ऐ मातृसंक्रान्त कान्तनारायणेर त्यक्त धने ताहार भ्राता रघुनाथेर अधिकार हइया छिलो। एवं कीर्तिनारायण निःसन्तान मृत्यु हइले ताहार पत्नीर यदि उहार माता वर्त्तमाना थाकिते मृत्यु हइया थाके तवे कीर्तिनारायणेर त्यक्त ताहार पत्नीसंक्रान्त समुदाय धने कीर्तिनारायणेर मातार अधिकार हइयाछिलो। ओ कीर्तिनारायणेर मातार मरण समये यदि रघुनाथ नामे कीर्त्तिनारायणेर भ्राता वर्त्तमाने छिल, तवे ऐ वस्तुते ताहार अधिकार हइयाछिलो। ए प्रकार हइले रघुनाथेर त्यक्त समुदाय धन, याहा ताहार अश योग्य छिल, ओ ऐ व्यक्ति उपरेर लिखित प्रकारे दुइ भ्रातार त्यक्त धन उत्तराधिकारित्व प्रकारे पाइयाछिल,

তাহাতে তাহার পুত্র-অবধি পত্নী পর্য্যন্ত কেহ নাথাকা প্রযুক্ত তাহার অদত্তা কন্যা ভৈরবীদাসীর অধিকার হইবেক, ও হরিনারায়ণ ও রামনারায়ণ ও গোবিন্দনারায়ণ এই তিন জনের কেবল আপন পিতৃ যোগ্য অংশে সমান অধিকার হইবেক। যদি স্যাৎ কান্তনারায়ণ ও কীর্ত্তিনারায়ণের মাতা ঐ দুই পুত্রের ধন পাইয়া রঘুনাথের মৃত্যুর পর বর্ত্তমানা ছিল, এমত হয় তবে ঐ মাতা মরিলে তাহাতে সংক্রান্ত যে ঐ দুই পুত্রের ধন তাহাতে কান্তনারায়ণের ও কীর্ত্তিনারায়ণের যে ওয়ারিশ তাহারদিগের অধিকার হয়। তাহাতে ঐ দুই জনের ওয়ারিশের মধ্যে পুত্র অবধি ভ্রাতৃ পর্য্যন্ত না থাকাতে ভ্রাতৃপুত্র যে হরিনারায়ণ ও রামনারায়ণ ও গোবিন্দনারায়ণ তিন জন তাহারদিগের সমান অধিকার হইবেক। এ প্রকার হইলে এ পক্ষে রঘুনাথের কন্যা যে ভৈরবীদাসী তাহার কেবল রঘুনাথের হিস্যাতে অধিকার হয়, ও হরিনারায়ণ ও রামনারায়ণ ও গোবিন্দনারায়ণের আপন পিতার হিস্যাতে, ও কান্তনারায়ণ ও কীর্ত্তিনারায়ণ যে দুই পিতৃব্য তাহারদিগের হিস্যাতেও সমান অধিকার হইবেক ইতি। ও সওয়ালেতে কান্তনারায়ণ ও কীর্ত্তিনারায়ণের মাতা ঐ দুই পুত্রের মৃত্যু সময়ে ও রঘুনাথের মৃত্যু সময়ে বর্ত্তমানা ছিল কি না—ইহা কিছু লেখা নাহি। এ জন্যে দুই প্রকার লিখাগেল ইতি।

এ ব্যবস্থা বাঙ্গলার চলিত মনু ও দায়ভাগ ও তাহার টীকা ও দায়তত্ত্ব ও দায়ক্রমসংগ্রহ ও বিবাদার্ণবসেতু ও বিবাদভঙ্গার্ণব-প্রভৃতি গ্রন্থানুসারিণীতি ॥—

ইহার প্রথম প্রমাণ দায়ভাগ প্রভৃতি গ্রন্থের ধৃত যাজ্ঞবল্ক্য মুনিবচন। তাহার ভাষা—পুত্র-পৌত্র-প্রপৌত্র-রহিত মৃত ব্যক্তির ধন প্রথমে পত্নী পায়, পত্নী না থাকিলে কন্যা পায়, কন্যা না থাকিলে দৌহিত্র পায়, দৌহিত্র না থাকিলে পিতা পান, পিতা না থাকিলে মাতা পান, মাতা না থাকিলে ভ্রাতা পান, ভ্রাতা না থাকিলে ভ্রাতুষ্পুত্র প্রভৃতি পায় ইতি ॥১॥

দ্বিতীয় প্রমাণ দায়ভাগ প্রভৃতি গ্রন্থের ধৃত পরাশরমুনির বচন। তাহার ভাষা—পুত্র পৌত্র প্রপৌত্র পত্নী পর্য্যন্ত-রহিত মৃত ব্যক্তির ধন প্রথমে অবিবাহিতা কন্যা পায়, অবিবাহিতা কন্যা না থাকিলে বিবাহিতা কন্যা পায় ইতি ॥২॥

তৃতীয় প্রমাণ দায়ভাগ প্রভৃতি গ্রন্থের ধৃত কাত্যায়নমুনির বচন। তাহার ভাষা—পুত্র পৌত্র প্রপৌত্র না থাকিলে পত্নী যদি ভর্ত্তার শয্যা প্রতিপালন করেন অর্থাৎ ব্যভিচারিণী না হয়েন তবে পতিত্যক্ত ধন যাবজ্জীবন ভোগ করিবেন, অন্যথা ব্যয় করিবেন না। পত্নী মরিলে ঐ ধন পতির অন্য যে ওয়ারিস থাকিবেক তাহারা পাইবেক ইতি ॥৩॥

চতুর্থ প্রমাণ দায়ভাগগ্রন্থের লিখিত। তাহার ভাষা—পত্নী পতির ত্যক্ত ধন যাবজ্জীবন অন্যথা ব্যয় না করিয়া ভোগ করিবেন। তাহার পর পতির অন্য ওয়ারিস পাইবেক। এই নিয়ম। যাহা তৃতীয় প্রমাণে কাত্যায়নমুনির বচনে লিখা গেল তাহা কেবল পত্নীর প্রতি নহে, কিন্তু স্ত্রীমাত্রের প্রতি। অর্থাৎ স্ত্রীলোক যেখানে অধিকারিণী হইবেক সে সকল স্থানে ঐ নিয়ম জানা যাইবেক ইতি ॥৪॥

ইঙ্গরেজী সন ১৮৩৫ সালের আপরেল মাসের ২৮ তারিখে দিবস মঙ্গলবারে আমি হুজুরের রোপরদ করা রোবকারি ও সওয়ালের সহিত এই ব্যবস্থা দাখিল করিলাম ইতি ॥—

---

(৬৪) সওয়াল—

যদ্যপি কোনো অবীরা স্ত্রীলোক আপন পতিযোগ্য অংশ স্থাবর অস্থাবর বস্তুতে অপ্রাপ্ত ও বেদখলি থাকিয়া তদ্বস্তুপ্রাপ্ত্যর্থে আপন স্বামীর বহু জ্ঞাতি থাকিলেও অনেক জ্ঞাতিকে এমত একরার লিখিয়া দিয়া থাকে যে ঐ জন নালিশের দ্বারা কিম্বা অন্য কোনো রূপে ঐ অপ্রাপ্ত বস্তুতে প্রাপ্ত করাইতে পারে, তবে ঐ বস্তুর অর্দ্ধেক অথবা তাহার কিঞ্চিৎ ঐ প্রাপ্তকারক জন

आपन श्रम ओ खरचार्थे पाइवेक, एमत अवीरा स्त्रीलोकेर एरुप एकरार शास्त्र मत ग्राह्य कि ना, एवं अवीरा स्त्रीलोक आपन पति योग्य अंश वस्तु एरुप एकरारेर द्वारा अन्यके दिवार-क्षमता राखे कि ना। यदि राखे तवे ताहार वर्त्तमान पर्य्यन्त कि ताहार अवर्त्तमानेओ इति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं विचारपत्रादिश्चयच्च यदीयावीराब्दप्रतिपाद्येषुगुण-गजेन्दुमिताब्दीयफेवरवरीमासीयतृतीयदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यदि काचिदवीरा स्त्री स्वपतियोग्यांशस्थावरास्थावरात्मकवस्तुनि धन-हीनतया प्रायत्तत्वसम्पादनाशक्ता सती तद्वस्तुप्राप्त्यर्थं स्वपरिश्रमात्यन्तर्गता-यैकस्मै कस्मैचिन् ज्ञातये एतन्नियमेन संवित्पत्रं लिखित्वा दत्तवती स्यात्तथा हि भवान् धर्म्माधिकरणाभियोगद्वारेण प्रकारान्तरेण वोपरिलिखिताप्राप्तवस्तुनः प्राप्तिं कारयितुं शक्नोति चेत्तदोपरिलिखितविशदास्पदीभूतस्थावरास्थावर-स्यार्द्धं यत्किञ्चिद्वा स्वीयपरिश्रमस्य व्ययस्य वा विनिमये प्राप्स्यति इति। तत्र यदि सवित्पत्रसम्प्रदानभूतज्ञातिविशेषेण धर्म्माधिकरणाभियोगद्वारेण प्रकारान्तरेण वा तादृशाप्राप्तवस्तुनः प्राप्तिं तस्याः कारितवान् स्यात् तदैता-दृश्या अवीरायाः स्त्रियास्तादृशनियमेन संवित्पत्रं ग्राह्यं भवितुमर्हति, नो चेन्न भवति। एवमवीरा स्त्री स्वपतियोग्यांशवस्तुन एतादृशसंवित्पत्रद्वारा अन्यस्मै दानक्षमतामप्युपरिलिखिततादृशनियमपूर्व्वा रक्षति, नो चेन्न रक्षति। रक्षणपक्षे तस्या अवीराया मरणानन्तरमपि तद्रक्षणस्य समान-कार्य्यकारित्वात्—इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागतट्टीकादायतत्त्वदायक्रम-संग्रहविवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था।

अत्र प्रमाणम्

अत एव वर्त्तनाशक्तौ आधानमप्यनुमतम्। तत्राप्यशक्तौ विक्रय-णमपि—इति दायभागग्रन्थलिखनम् ॥१॥

स्वीकृतान्यप्रमाणानि कार्य्याण्याहुरनापदि ।
विशेषतो गृहक्षेत्रदानाधमनविक्रयाः ॥—इति विवादभङ्गार्णवादिग्रन्थधृतनारदवचनम् ॥२॥

सोपाधिदानमुपाध्यसिद्धावसिद्धम्—इति विवादभङ्गार्णवग्रन्थलिखनञ्चेति ।

ईशवीयाब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयापरेलमासीयसप्तमदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रतदतिरिक्तविचारपत्रादिद्वयसहितेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

व्यवस्थार तरजमा बाङ्गला भाषाय—

हजुरेर सोपरद्द करा सओयाल ओ ताहार सेओयाय रोयकादि प्रभृति तिन येता कागज याहा इङ्गरेजी सन १८३५ सालेर फेब्रुयरी मासेर ३ तारिखे दिवस मङ्गलवारे आमि पाइयाछिलाम ताहा विवेचना करिया येमत बोध हइलो तदनुसारे जवाब लिखितेछि इति—

यदि कोन अवीरा स्त्रीलोक आपन पतिर योग्यांश स्थावरास्थावर वस्तु ताहाते आपन अर्थ सामर्थ्य ना थाकाते दखल करिते अक्षम हइया ऐ वस्तु दखल पाइवार कारण आपन स्वामीर ज्ञातिर मध्ये एक जनके ए प्रकार नियमे एकरार लिखिया देय ये तुमि आदालते नालिशेर द्वाराय कि अन्य कोन प्रकारे उपरेर लिखित वेदखलि वस्तुते आमार दखल कराइते पारह तवे उपरेर लिखित स्थावर ओ अस्थावर—प्रभृति विरोधीय वस्तुर अर्द्धेक किम्वा किञ्चित् आपन परिश्रमेर ओ अर्थव्ययेर परीवर्त्ते पाइवा इति । ताहाते ऐ व्यक्ति यदि आदालते नालिशेर द्वाराय किम्वा अन्य कोनो प्रकारे ऐ वेदखलि वस्तुते ऐ अवीरा स्त्रीलोकेर दखलसम्पादन करिया थाके तवे ऐ प्रकार अवीरा

স্ত্রীলোকের এ প্রকার একরার গ্রাহ্য হইতে পারে, ও যদি ঐ প্রকারে কোনো তফাৎ হইয়া থাকে তবে গ্রাহ্য হইতে পারে না। আর এই রূপ অবীরা স্ত্রীলোক আপন স্বামীর যোগ্যাংশ বস্তুর এ প্রকার একরারের দ্বারায় অন্য ব্যক্তিকে দিবার ক্ষমতা উপরের লিখিত ঐ প্রকার নিয়ম সমাপন হইলে রাখে, ও ঐ নিয়ম সমাপন না হইলে রাখে না, ও এ পক্ষে ক্ষমতা রাখনের প্রতি কোনো কাল নিয়ম নহে, অর্থাৎ ঐ অবীরা স্ত্রীলোক যে পর্য্যন্ত জীবদ্দশায় থাকিবেক সে পর্য্যন্ত ঐ ক্ষমতা রাখনের যে ফল তাহা তাহার মৃত্যু হইলে ও সমান ইতি। এই ব্যবস্থা বঙ্গদেশের চলিত মনু ও দায়ভাগ ও তাহার টীকা ও দায়তত্ত্ব ও দায়ক্রমসংগ্রহ ও বিবাদার্ণবসেতু ও বিবাদভঙ্গার্ণব-প্রভৃতি গ্রন্থানুসারিণীতি ॥

ইহার প্রথম প্রমাণ দায়ভাগগ্রন্থের লিখিত। তাহার ভাষা— স্ত্রীলোকের খোরপোষ প্রভৃতি অচল হইলে আপন পতির ত্যক্ত সংক্রান্ত বস্তুর বন্ধক সিদ্ধ হইতে পারে। তাহাতেও অচল হইলে ঐ পতির ত্যক্ত বস্তুর বিক্রয় সিদ্ধ হইতে পারে ইতি ॥১॥

দ্বিতীয় প্রমাণ বিবাদভঙ্গার্ণব প্রভৃতি গ্রন্থ ধৃত নারদমুনির বচন। তাহার ভাষা—আপৎকাল ব্যতিরেকে স্ত্রীলোকের করা সকল কর্ম্ম অসিদ্ধ, বিশেষতঃ ঘর, দরোজা ও ভূমি, ইহার দান ও বন্ধক ও বিক্রয় আপৎকাল ব্যতিরেকে সিদ্ধ হইতে পারে না ইতি ॥২॥

তৃতীয় প্রমাণ বিবাদভঙ্গার্ণব গ্রন্থ লিখিত। তাহার ভাষা— কোনো প্রয়োজন সিদ্ধ হওয়ার নিমিত্তে কোনো নিয়মে যে কিছু দেয় সে প্রয়োজন ঐ নিয়মে যদি সিদ্ধ না হয় তবে সে দেওয়া সিদ্ধ হইতে পারে না ইতি ॥২॥

ইঙ্গরেজী সন ১৮৩৫ সালের আপরেল মাসের ২৮ তারিখে দিবস মঙ্গলবারে আমি হজুরে র সোপরদ্দ করা সবাল ও তাহার সঙ্গেও যায় রোবকারি প্রভৃতি তিন কেতা কাগজ সহিত এই ব্যবস্থা দাখিল করিলাম ইতি ॥—

———

(६५) लं० २५८

सन १८३२ साल ईशावी

रोवकारि मिछिल आदालत देश्रोयानि सदर मोकाम कलिकाता आदालत मजकुरार हाकिम श्रीयुत तामस किमिल रावटसेन साहेवेर वैठके तारिख २१ आपरेल सन १८३५ साल ईशावी मोतावेक तारिख ९ माह वैशाख सन १२४२ साल बाङ्गला रोज मङ्गलवार—

राजीवलोचनसतपति आपिलाण्ट—

वेचारामराय रप्पाडण्ट—

जेला मेदिनीपुरेर आदालत देमानीर एक केता रिटरण ताहार तारिख २७ माह मार्च्च सन १८३५ साल ईशावी ओ एक केता रोवकारि सहित ओ नयरह कागजात रप्पाडण्टेर असाक्षाते एखाने पहुँचिया अत्र मोकद्दमार कागजात समभिव्याहारे आपिलाण्टेर वकिल मुनशी हसन आलि ओ खोद रप्पाडण्टेर साक्षाते रोवकार हइलो ओ।जिला मेदिनीपुरेर आदालतेर कागजात ओ तथाकार फयसला पर्य्यन्त पाठ करागेल। ओ उचित हइलो ये चूडान्त हुकुम सादर हओनेर पूर्व्वे ए विषय दरियाप्त करा ये जिला मेदिनीपुरेर आदालतेर पण्डितेर दाखिल करा व्यवस्थासकल मोतावेक शास्त्र मरओजे मुलुक बाङ्गला किम्वा उडिस्यार दोरस्त वटे कि ना, आवश्यक वोध हइया हुकुम हइलो ये दुइ केता व्यवस्था एइ हुकुमे ए आदालतेर पण्डितेर निकट पाठान जाय ये व्यवस्थायात मजकुर वङ्गदेशचलित शास्त्रानुसारे किम्वा उडिस्या देशेर चलित शास्त्रानुसारे सिद्ध वटे कि ना। ओ सिरिस्तादार ए विषयेर कैफियत् दाखिल करेण ये मुद्दइर दावी डिसमिस हइया दखल रप्पाडण्टेर थाके ओ डिगरिर टाका वेविलरफार फिरिया पाइयाछे कि ना। यद्यपि पाइया थाके तवे सेइ मकद्दमार लम्वर ओ फयसलार तारिख निशान दिया कैफियत दाखिल करेण। आर रप्पाडण्टके

वुझिया देया जाय ये तुमि आइन्दा मङ्गलवारे हाजिर ना थाकिवा तवे तोमार अपेक्षा मुलतवी ना राखिया मकद्दमा फयशला करा जाइवेक। अतएव तोमाके ज्ञात करा गेल इति॥—

श्रीश्रीदुर्गा

नं० ३६—

अस्योत्तरम्—

भरणार्थदत्तभूमेर्भरणमात्रफलकत्वाद् दानोद्देश्येन वस्तुतेन वा प्राप्तव्यवहारपुत्रवता विक्रेतुं न शक्यत इति विद्वद्भिर्निरस्थायि। पैतृकस्थावरभूमेरप्यप्राप्तव्यवहारपुत्रवता विक्रेतुं न शक्यत इत्यपि मिताक्षरामतम्॥

अत्र प्रमाणम्—

स्थावरे तु स्वार्जिते पित्रादिप्राप्ते च पुत्रादिपारतन्त्र्यमेव।
स्थावरं द्विपदञ्चैव यद्यपि स्वयमर्जितं॥
असम्भूय सुतान् सर्व्वान् न दानं न च विक्रयः॥—इत्यादि मिताक्षरालिखनम्॥

श्रीकमलाकान्तविद्यालङ्कारपण्डितैः

अस्य भाषा—

पुत्र-पौत्रादि-क्रमे भरणार्थ दत्त भूमि पाइया भोग मात्र करिते पारे। ग्रहीता किम्बा ताहार पुत्र अप्राप्तव्यवहार पुत्र सत्वे विक्रय करिते पारे ना। अपर मिताक्षरा मते पैतृक भूमि पुत्रादि थाकिते विक्रय करिते पारे ना इति। सन १८३२ साल ५ आपरेल॥—

श्रीकमलाकान्तविद्यालङ्कारपण्डितैः

न० ३८

अस्योत्तरम्—

भरणार्थदत्तभूमेर्भरणमात्रफलकत्वाद्दानोद्देश्येन वस्तुतेन वा विक्रेतुं

न शक्यते इति व्यवस्था तु मिताक्षरादायभागदायतत्त्वप्रभृतिसर्वशास्त्रसम्मता सर्वदेशसाधारणीति विद्वद्भिर्निरणायि ।

श्रीकमलाकान्तविद्यालङ्कारपण्डितैः

पैतृकताद्दशनिव्यूढस्वत्वकद्भूमिमपि अप्राप्तव्यवहारपुत्रवान् विक्रेतुं न शक्नोति—इति तु व्यवस्था मिताक्षरामात्रसम्मता इति विद्वद्भिर्निरणायि ।

दायभागकृज्जीमूतवाहनमते तु पितृपितामहादिसम्बन्धप्राप्तां भूमिमपि अप्राप्तव्यवहारपुत्रवानपि विक्रेतुं शक्नोति, किन्तु विक्रेता प्रत्यवायी भवति—इति च विद्वद्भिर्निरणायि ।

श्रीकमलाकान्तविद्यालङ्कारपण्डितैः

तत्र प्रमाणानि—

दात्रमितं धननिमित्तत्वात् स्वत्वस्य २४।१।१४ यथा याज्ञवल्क्य —

मणिमुक्ताप्रवालानां सर्व्वस्यैव पिता प्रभुः ।

स्थावरस्य च सर्व्वस्य न पिता न पितामहः ॥

पितामहश्रुतेस्तदनविषयं वचनम् । तत्रापि सर्व्वस्येत्युपादानात् सर्व्वस्य कुटुम्बवर्त्तनहेतोर्दानादानपरं ८।२।१ जीमूतवाहनदायभागग्रन्थकार ।

श्रीकमलाकान्तविद्यालङ्कारपण्डितैः

अस्य भाषा—

पुत्र पौत्रादि क्रमे भरणार्थ दत्त भूमि पाइया भागमात्र करिते पारे । अह्येता किम्बा साहार पुत्र अप्राप्तव्यवहारपुत्र सत्त्वे विक्रय करिते पारे ना । ए सर्व्वशास्त्रवित् पण्डितदेर निर्णय । इति जीमूतवाहनमतः ।

अप्राप्तव्यवहार पुत्र सत्त्वे पिता पैतृक कोन भूमि विक्रय करिते पारे ना—ए कथा मिताक्षरामत । दायभागमते पितृपितामहादि सम्बन्ध प्रयुक्त अंश रूपे प्राप्त भूमि अप्राप्तव्यवहारपुत्र सत्त्वेओ विक्रय करिते पारे, किन्तु विक्रयकर्त्तार पाप हय इति । जीमूतवाहन दायभागग्रन्थकर्त्ता इति ।

ए देशेर मध्ये उत्कलमतावलम्बि उत्कल ब्राह्मण आर ताहार-दिगेर यजमान शिष्य उडिया सृष्टिकरण ओ क्षत्रिय, वैश्य ओ कान्यकुब्ज ब्राह्मण। इहारदिगेर मिताक्षरा मते व्यवस्था। राढीय ब्राह्मण ओ दक्षिण राढीय कायस्थ प्रभृतिर दायभाग मते व्यवस्था। ए विवादे विक्रय कर्त्ता कोन जाति ताहा लइया विचार करिते हय इति—

इति श्रीकमलाकान्तविद्यालङ्कारपण्डितैर्निरणायि—

श्रीकमलाकान्तविद्यालङ्कारपण्डितैः

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतमात्तकिमिलरावटसेनसाहेबधर्म्माधिकरणलिखितेशवीयाब्दप्रतिपालेषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयाषरेलमासीयैकविंशतितमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नपत्रमेव तत्समर्पितरसगुणाङ्कितव्यवस्थापत्रं वसुगुणाङ्कितव्यवस्थापत्रञ्च यत्तदब्दीयतन्मासीयगुणपक्षमितदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रभुसमर्पितरसगुणाङ्कितव्यवस्थायां वसुगुणाङ्कितव्यवस्थायाञ्च प्रथमतो लिखितमस्ति भरणार्थदत्तभूमेर्भरणमात्रफलकत्वाद्दानोद्देश्येन तत्सुतेन वा अप्राप्तव्यवहारपुत्रवता विक्रेतुं न शक्यत इतीति। तत्र यदि दात्रा दानोद्देश्यायेयं भूस्त्वया पुत्रपौत्रादिक्रमेण भोक्तव्या, किन्त्वस्यां भूमौ मदीयं स्वत्वमस्त्वेवेति नियमेन भरणार्थं तद्भूमिर्दत्ता स्यात्तदा तद्व्यवस्थालिखितं तन्मतं वङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेणोत्कलदेशचलितशास्त्रानुसारेण वा शुद्धं भवतीति। एवं तत्तद्व्यवस्थायां पुनरपि लिखितमस्ति पैतृकभूमिमप्राप्तव्यवहारपुत्रवान् विक्रेतुं शक्नोतीति। तत्रापि यद्यप्राप्तव्यवहारपुत्रवता पैतृकभूमिविक्रयसिद्धिसम्पादकशास्त्रीयावश्यकहेतुं विना स्वेच्छयैव तद्भूमिर्विक्रीता स्यात्तदा तत्तद्व्यवस्थालिखितं तन्मतं वङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेणोत्कलदेशचलितशास्त्रानुसारेण वा शुद्धं भवतीति। एवं वसुगुणाङ्कित-

व्यवस्थाया पुनरपि लिखितमस्ति दायभागजीमूतवाहनमते न पितृपितामहादिसम्बन्धप्राप्ता भूमिमप्राप्तव्यवहारपुत्रवानपि विक्रेतु शक्नोति, किन्तु विक्रेता प्रत्यवायी भवतीति चेति। तत्रापि यदप्राप्तव्यवहारपुत्रवता पितृपितामहादिसम्बन्धप्राप्तभूमिविक्रयविदिसम्पाद्यशास्त्रीयावश्यकहेतुभि र्वैधिस्तितृपितामहादिसम्बन्धप्राप्ता भूमिर्विनीता स्यात्तदा तद्व्यवस्थालिखितं तन्मत वङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेणोत्कलदेशचलितशास्त्रानुसारेण च शुद्ध भवतीति ॥—

ईशवीयाब्दप्रतिपाद्येपुगुणगजे-दुमिता-दीयापरेलमासीयाङ्कपञ्चमितदिनसम्बन्धिबुधवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रेण व्यवस्थापत्राभ्याञ्च सहितमिदमुत्तरं दत्तमिति ॥—

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(६६)—नं० ३५० सदर—

रुवकारि मिछिल आदालते दिवोयानि सदर मोकाम कलिकाता बैठक श्रीयुत जावर्ज इष्टाकोएल साहेब कायेम मोकाम हाकिम आदालत मजकुरा सन १८३५ साल तारिख १८ मे, मो० सन १२४२ साल तारिख ५ ज्येष्ठ।

मतिलाल कल्याणसिंह	आपीलयटान्ट
ब्रजलाल ओ शीताराम ओ गयरह	रेप्पाडयटान्

आपीलस्टेनेर उकिल मुनशी गोलाम आहमद ओ रेप्पाडयटानेर उकिल जिमिश कोउलवोरक सदरलेण्ड साहेब ओ मुनशी दादारवरुक खाँ हाजीर आशीलेन। एइ मोकर्दमा २६ आपरेल तारिखे आमार निकट रुवकार हइया ४६ नम्बर पर्य्यन्त कागजात पढागिया दिवावसान प्रयुक्त ओ ऐ माहार २८ तारिखे रेप्पा(ड)यटानेर उकिलेर हाजीर ना हओयार जन्ये मुलतवि छिल. पुनराय अद्य रुवकार हइया बाकी कागजात पढागेल। जे हेतुक

मिछिलेर कागजात विवेचनार द्वाराय औ मोकर्द्दमार गतिकेर दीष्टे एइ मोकर्द्दमार चूडन्त हुकुम हओनेर पूर्व्वे एइ आदालतेर पण्डितेर निकट हइते एइ विशय जिज्ञासा करा आविश्यक औ जरुर जे वेहार देशेर चलित शास्त्रेर द्वाराय पिता औ पितामहेर एमत साद्धं दयमता आछे कि ना—ये आपन पुत्र औ पौत्रेर विने अनुमतिते पैतृक स्थावर वस्तु हस्तान्तर करे, औ यद्यपि पुत्रेर परलोक हय, तबे पौत्रेर अनुमति आविश्यक राखे कि ना। औ यद्यपि स्यात् तथाकार चलित शास्त्रेर द्वाराय ए प्रकार वस्तु हस्तान्तरे निषेध थाके, तबे एमत स्थले ये विक्री अशीर्द्ध करणेर हाकीमके कर्त्तव्य औ आविश्यक बटे कि ना, एवं पैतृक वस्तु समुदय किम्वा ताहार मध्ये किञ्चित हस्तान्तर करणेर विषये शास्त्रेर मध्ये किछु विशेष पाओया जाय कि ना। आर एइ आदालतेर सेरेस्ता हइते एइ विशय ये इहार पूर्व्वे एइ आदालते शुभे वेहारेर मोतालकेर कोन मोकर्द्दमात एमत कोन फयछला ये पैतृक विशय हस्तान्तर करणे सिद्ध अथवा असिद्ध हइआ थाके जाना आविश्यक। अतएव हुकुम हइल ये निचेर लिखित मत प्रश्न एइ रुवकारिर नकलेर सम्वलित एइ रुवकारि पौछिवार तारिख हइते सप्ताह मेयादेर मध्ये प्रत्युत्तर लिखिवार हुकुमे एइ आदालतेर पण्डितेर निकट पाठान जाय औ एइ आदालतेर सेरेस्ता दारेर कर्त्तव्य ये वलवि कैफियत सेरेस्ता तल्लास औ तहकीकात करिया गुजरान इति।

प्रथम प्रश्न :—

शुभे वेहारेर चलित शास्त्र द्वाराय पिता औ पितामहेर एमत साद्धय औ दय(म)ता आछे कि ना। ये—आपन पुत्र औ पौत्रेर विने अनुमतिते पैतृक स्थावर वस्तु हस्तान्तर करे।

द्वितीयप्रश्न :—

पुत्रेर परलोक हइले पौत्रेर अनुमति आविश्यक राखे कि ना—

तृतीयप्रश्न —

यद्यपि तथाकार चलित शास्त्र द्वाराय एमत वस्तु हस्तान्तरेर विशये निषेध थाक, तवे एमत स्थले ए विक्री असिद्ध करिवार हाकिमक कर्त्तव्य ओ आविश्यक बटे कि ना इति।

चतुर्थप्रश्न —

एतक वस्तु समुदाय अथवा ताहार किञ्चित् हस्तान्तर करिवार विशये शास्त्रे किछु विशेष पाओया याय कि ना इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिस्थानाभिषिक्तश्रीयुत आज्जरष्टाक एलसाहेव धर्म्माधिकरणलिखितेष्वीयन्दमतिपात्रेषुपुत्रगणे दुमितान्दीयमासीयाद्य दद्यदिवसीयावचारपत्रान्तगतप्रश्नप्रतिरूपपत्र यच्चदन्दीयस मासीयत्रयाविश तितमदिनधर्म्माधश नवासरे मया प्राप्त तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्त दनुसारेणोत्तर लिख्यते।

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

बहारदेशचलतशास्त्रानुसारेण पुत्रस्य पौत्रस्य वा अनुमति विना पैतृकस्थावरस्य हस्तान्तरकरणे पितु पितामहस्य वा स्वेच्छया क्षमता नास्तीति। द्वितीयप्रश्नस्योत्तरमप्यर्थादत्रैव पर्य्यवसितामति पृथङ् न लिखितमिति॥—

अत्र प्रमाणम्—

मणिमुक्ताप्रवालाना सर्व्वस्यैव पिता प्रभु।
स्थावरस्य तु सर्व्वस्य न पिता न पितामह॥—इति मिताक्षरादि प्र धृतयाज्ञवल्क्यवचनम्॥१॥

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

बहारदेशचलितशास्त्रानुसारेणैतादृशवस्तुनो हस्तान्तरविषये पितु पितामहस्य वा स्वेच्छया निषेधे सति शास्त्रनिषिद्धविक्रयासिद्धकरण धर्म्माधिकरणाधिपते कर्त्तव्यमवश्यकञ्च भवतीति—

अत्र प्रमाणम्—

व्यवहारान् नृपः पश्येद्विद्वद्भिर्ब्राह्मणैः सह ।

धर्मशास्त्रानुसारेण–इत्यादि मिताक्षरादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥१॥

चतुर्थप्रश्नस्योत्तरम्—

पैतृकधनसमुदायस्य यत्किञ्चिद्वस्तुनो वा हस्तान्तरकरणविषये शास्त्रे कश्चिद्विशेषोऽस्ति[1] । स च विशेषः प्रथमप्रश्नोत्तरप्रमाणे लिखितः—इति वेहारदेशप्रचलितमनुमिताक्षरावीरमित्रोदयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रमाणमेवेति ॥

इंग्रेजीशाब्दप्रमित्या गुणगुणगजेन्दुमिताब्दीयजुनमासीयनवमदिनसम्बलित-मङ्गलवासरे मया प्रश्नपत्रलिखितेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(६७)—नं २२२ सन १८३३ साल—

मोकाम कलिकाता सदर देओआनि आदालतेर श्रीयुत ओलीयम ब्राडिन साहेब ऐ आदालतेर हाकिमेर पेठकेर इ० सन १८३५ सालेर २८ मे मोताबक बाङ्गला सन १२४२ सालेर १५ ज्येष्ठ बृहस्पतिवारेर रोवकारि ॥—

भोलानाथदास आपीलाण्ट

श्रीमतीसावित्रा ओ गोपालकृष्ण ओ गायरह रेस्पाण्डेण्टान

आपीलाण्टेर उकिलमुनशी होसेन आलि ओ हाजिरा रेस्पाण्डण्ट श्रीमतीसावित्रार उकिल राधाकृष्ण ओ गोपालकृष्ण-सिंहेर उकिल सदाशुखपण्डित हाजिर आइल । एइ मोकर्दमा

---

१. किञ्चिद—पा० ।

एइ मासेर १६ तारिखेर हुकुमानुसारे अद्य पुनराय दरपेस हइया ए आदालतेर पण्डितके हुजुरे तलब करिया ये व्यवस्था कोर्टेर हाकिमेर तलबानुसारे पण्डित लिखियाछिलेन ताँहाके अर्पन करिया जिज्ञासा करागेल ये एइ व्यवस्था दृष्ट करिया ताहार ये अर्थ यथार्थ हय बलेन। पण्डित दृष्ट ओ गओर करार पर कहिलेन ये प्रथम प्रश्नेर शेषेर प्रत्युत्तरेर विशयेर अर्थ एइ ये ये पुत्र आपन माताके मन्द कहे से पुत्र, ये पर्य्यन्त प्रायश्चित्त ना करे, उत्तराधिकारिहेतुते कोन पक्ष सत्त्वे स्वत्वाधिकारि हइते पारे। ना जखन भोलानाथदास हलफ करिया कहियाछे ये ताहार विमाता व्यभिचारिणीर कर्म्मे इच्छुक हइया मानेर लाघव करियाछे, ओ व्यभिचारिणीर कर्म्मकरार हेतुते शास्त्रानुसारे जातीर व्यवहार हइते बाहिर हइयाछे, उपरेर लिखित विशय हाकीमेर तजविजे साबुद हय नाइ। एवं उक्त व्यवस्थार मध्ये ए विशयेर कोन विस्तारित ये एमत मन्द कहने कि प्रकार प्रायश्चित्त करिते हइवेक लेखा नाइ। ए कारण हुकुम हइल ये एइ रोवकारिर नकल एइ ये ए विशयेर जओाब, ये विमातार पक्षे उपरेर लिखित विशय सम्बन्ध करणे ओ साहा साव्यस्त ना हओने उहा बक्ता पुत्रेर पक्षे बङ्गदेशीय चलित शास्त्रानुसारे कि प्रकार प्रायश्चित्त उचित, ओ ये प्रकार पापेर प्रायश्चित्तेर जन्य शास्त्रेर मध्ये किछु मेयाद निःधार्य्य आछे कि ना। यदि थाके, तवे ताहार प्रकाश हओनेर दिवस हइते कत दिवस मध्ये प्रायश्चित्त करिवेक—एइ रोवकारिर पाओार तारिख हइते तिन दिवस मध्ये लेखेन—ए आदालतेर पण्डितके अर्पन करा जाय इति॥—

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतओलियमवेराडीनसाहेवधर्म्माधिकरण-लिखितेशवीशब्दप्रतिपाद्येयुगुणगजेन्दुमिताब्दीयमेइमासीयाष्टाविंशतितम-

दिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदब्दीयजुनमासीयाष्टमदिनसम्बन्धिसोमवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

व्यभिचारदोषरहिताया विमातू राजसन्निधौ ज्ञानपूर्वकव्यभिचारदोषख्यापनात्यन्ताभ्यासजनितपापप्रशमनार्थं द्वादशवार्षिकं महाव्रतं कर्त्तव्यम्। तत्राशक्तौ साशीतिशतसंख्यकधेनुदान तन्मूल्यस्य वा चत्वारिंशदधिकपञ्चशतकार्षापणस्य तत्तुल्यस्य सुवर्णस्य रजतस्य वा दानं कर्त्तव्यम्, दक्षिणा च गोशतं तन्मूल्यं वा कार्षापणशतं देयम्। एतत् प्रायश्चित्तं संवत्सरमध्य एव कर्त्तव्यम्। संवत्सरानन्तरमुपरिलिखितैतत्प्रायश्चित्तस्य द्विगुणं प्रायश्चित्तं कर्त्तव्यम्-इति मनुप्रायश्चित्तविवेकप्रायश्चित्ततत्त्वादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था॥

अत्र प्रमाणम्—

अनृतन्तु समुत्कर्षे राजगामि च पैशुनम्।

गुरोश्चालीकनिर्बन्धः समानि ब्रह्महत्यया॥ इति मनु(११।५५)-वचनम्॥ १॥

अकामतो द्वादशवार्षिकं कर्त्तव्यम्, तदशक्तावशीत्युत्तरपयस्विधेनुशतं देयम्, तदशक्तौ चत्वारिंशत्पुराणोत्तरचूर्णिपञ्चशतमूल्यं हिरण्यादिकं देयम्, दक्षिणायां गोशतदानाशक्तौ चूर्णीशतमेकं देयम्—इति प्रायश्चित्तविवेक(पृ० ८८)ग्रन्थलिखनम्॥ २॥

स्मृतिसागरे देवलः—कालातिरेके द्विगुणं प्रायश्चित्तं समाचरेदिति। कालातिरेके संवत्सरातिरेके संवत्सराभिशस्तस्य दुष्टस्य द्विगुणो दमः इति मनुवचनेन—इति प्रायश्चित्ततत्त्व(पृ० ४७४)ग्रन्थलिखनञ्चेति॥३॥

॥०॥०॥०॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयजुनमासीयत्रयोविंशतितमदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रसहितेयं व्यवस्था दत्तेति॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(६८)—नं १४ सन १८३४ साल खास श्रापिल—

रुवकारि मिछिल सदर देश्रोनि श्रादालत मोकाम कलिकाता श्रादालत मजकुरेर कायेम मोकाम हाकिम एडश्रोयार्ड जान हारिंग्टन साहेबेर वैठके इ० सन १८३५ साल तारिख २६ मे मोताबक बाङ्गला सन १२४२ साल तारिख १६ ज्यैष्ठ दिवस शुक्रवस ? ॥—

रत्नाकरविपुइ श्रो पुनिविपुइ — श्रापिलाण्टान
साधुचरणविविगङ्गन श्रो गयरह — रेप्पाइण्टान

श्रापिलाण्टानेर उकिल मुनशी दादारवक्स खाँ हाजिर श्राइल। रेप्पाइण्टान तालपत्रे उडिया श्रक्षर श्रो मजमुने एत्तेला नामार रशीद लिखिया दियाश्रो हाजीर हय नाइ। अत एव मोकद्दमा एकतरफा सुरत आमार वैठके उपस्थित हइया मोकद्दमार कागजात मोनाहेजाय बोध हइल ये वादि अर्थात् श्रापीलाण्टान नेहालपुर जमिदारिर मध्ये रकम १५८) श्राना श्रापनारदिगेर पैतृक एजहारे दखल देलाइया पाइवार दाविते जेला कटकेर देश्रोनि श्रादालते नालिस करे। प्रतिवादिगण श्रापनारदिगेर जश्रोब वादिदिगेर एजहार श्रो दावि हइते अस्वीकार हइया गुजराइलेक। जेलार जजसाहेबेर तजविजे मुद्दइयानेर हकेक डिकरिर हुकुम सादेर हय, एवं सेइ डिकरि श्रापिलेर श्रादालते रद हय, ताहार पर खास श्रापील सुरत ए श्रादालते उपस्थित हय। एइ मोकद्दमार कागजात द्वारा प्रकाश ये जमिदारि मजकुरार मालिक मुद्दइयानेर प्रपितामह पद्मनाभ विविगङ्गनेर मृत्युर पर तिन पुरुश पर्य्यन्त मतश्रोफा मजकुरेर हासील करा वस्तु प्रधान पुत्रेर नामे कालेक्टरि श्रो गयरहते नामाङ्कित हय, श्रो आमलि सन ११९५ साले पूर्व्व पुरुष मजकुरेर श्रासल श्रोयारिसानदिगेर मध्ये प्रथकान्न हइया स्थावर वस्तु हिस्या करिया नय। ए दयने उभय विवादिर मध्ये एइ विवाद प्रकाश ये श्रापिलण्टान प्रकाश करे ये श्रासल पूर्व्व पुरुष

मजकुरेर सकल ओयारिसान जमिदार ओ हकदारेर न्याय विवादेर वस्तुते दखिलकार स्थिल। प्रधान पुत्रेर नाम जारि थाकिते येवाक जमिदारिर हकदार ओ मालिक से नहे इति। उभयेर प्रपितामह पद्मनाभ विविगडनेर सोपार्जित ओ स्वक सकल जमिदारि करार दिया रेस्पाडण्ट जाहेर करे ये सुदइयान आपिलाण्टान ऐ जमिदारिर हदोयत ओ कर्तृत्व ओ दखिलकारिर पक्षे किछुइ एलाका राखे ना, वरं आपीलाण्ट-दिगेर पिता मालगुजारिर उसुल तहशील कागज पत्र लिखित पडित करा पर्य्यं ऐ जमिदारिर पयरवि ओ मददगारि कर्म्मे नियुक्त थाकिया रेस्पाडण्टदिगेर स्थाने मोशाहेरा लइयाछे। अतएव प्रथम एइ विषय बोध करा आवश्यक हइल ये एत काल गतो होइर परे ए इक्षणे ऐ जमिदारिर परस्पर उत्तराधिकारि-दिगेर मध्ये विभाग हइते पारे कि ना। ए कारण हुकुम हइल ये एइ मकदमारि नकल कागजात सम्वलितपत्र हुकुमे एइ आदालतेर पण्डितेर हाओला करा जाय ये मोकद्दमार कागजात दृष्टे फतयेर मलित शास्त्रानुसारे एइ विषयेर व्यवस्था ये एतो काल गतो परे विरोधि जमिदारि पूर्व्वोक्त पूर्व्वे पुरुषेर उत्तराधिकारिदिगेर महित एक्षेने वण्टक हइते पारे कि ना—एइ समाद मध्ये लिखेन इति ॥०॥

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिरथानाभिषिक्तश्रीयुतउइलोम्जेन्सदारिएटीन-स रेवधर्म्माधिकरणस्थितिमिने तत्र शब्दप्रतिपादितगुणगजेन्दुमिताब्दीयदर्दमाधी-येन त्रियत्तर्नादिक्सीवि नारस्थान्तर्गतभरनप्रतिरूतानं तत्सर्मा ह्देत द्विवादनि-पदानि विद्वद्वरकोके लरिकादस्य मतरक्षीवतूलमार्थीयचतुर्थदिवसमन्त्रिपिकूदस्य-तिनावदे मया प्राप्तं तद्वचोस्य माहदवचोवो ब्यवस्थानुसारेणोत्तरं लिख्यते—

गते चैतावति काले इदानीमपि विवादास्पदीभूतव्यवस्थापत्रस्य

विभागस्तद्धनस्याम्युत्तराधिकारिणां मध्ये भगिनु येभ्यो भवति—इति कटक-देशचलितमनुमिताक्षरावीरमित्रोदयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

अविभक्ते निजे प्रेते तत्सुतमृक्थभागिनम् ।
कुर्व्वीत जीवनं येन लब्धं नैव पितामहात् ॥
लभेतांशं स पित्र्यन्तु पितृव्यात्तस्य वा सुतात् ।
स एवांशस्तु सर्व्वेषां भ्रातॄणां न्यायतो भवेत् ॥

लभते तत्सुतो वापि—इति वीरमित्रोदयादिग्रन्थधृतकात्यायन-वचनम् ॥१॥०॥

ईशवीयाब्दप्रतिपान्नेगुणगजेन्दुमिताब्दीयजूनमासीयाद्रिपक्षमितदिन-सम्बन्धिशनिवासरे मया प्रस्तुतमर्पितैतद्विवादनिविष्टपत्रजातविचारपत्राभ्यां सहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(६९) श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतग्रलकसिन्दर ब्रानकालविन साहेबधर्म्मा-धिकरणकवेदाम्यष्टेन्दुमिताब्दीयदिसम्बरमासीयप्रथमदिनसम्बन्धिविचारपत्र-संवलितैतन्मथुरादेव्यर्थिनीप्राणकृष्णकृष्णलालप्रत्यर्थिविवादनिविष्टपत्रजात[1]यदेतदब्दीयैतन्मासीयषष्ठदिवसीयशनौ घटिकैकोत्तरयामद्वये मया प्राप्तं तद-वलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं दीयते—

एतद्विवादनिविष्टपत्रजातमवलोक्य कश्चिद्धर्म्मचन्द्रनामा पुरुषः स्वयं रेव स्वपत्नीपुत्रपत्न्योः स्वविभक्तासकान्तस्थावरास्थावरसकलधनस्य स्वदौहित्र-विहारीलालसम्प्रदानकं दानपत्रं विलिख्य स्वपत्नीपुत्रपत्नीदौहित्रांस्त्यक्त्वा[2] ममार । पुनस्तत्पत्नी देवापि स्वपतिदत्तधनस्य दानपत्रं तस्मा एव दौहित्राय

१. ०दर्व्यार्थान०—व्यप० । २. ०पुत्रपत्नि०—व्यप० ।

दत्त्वा पुत्रवधूं दौहित्रं च विहाय स्वर्लोकमगमदिति निश्चितम्मया। तत्रेत्थं-प्रकारके वृत्ते सा स्नुषा प्राप्तदानपत्रविहारीलालपुत्राभ्यां प्राणकृष्णकृष्णलालाभ्यां स्वश्वशुरधनं लब्धुमीहमाना विवदते। तत्रैवं विषये धर्म्मचन्द्र-तत्पत्नीदत्तदानपत्रमनुसृत्य तद्धनादर्थिनीमदत्त्वा प्रत्यर्थिनोः पितुः किञ्चित् प्राप्नोति न वा। अथ तद्दानपत्रमनुसृत्य नाप्नोति चेत्तदा धर्म्मचन्द्रस्य मातामहस्य धने विहारीलालस्य दौहित्रत्वेन किञ्चित् स्वत्वमंशो वा प्राप्तुमर्हति न वा। प्राप्नोति चेत्तत्पितुः कथ तत्स्नुषायाश्च श्रीगोपाल-पुत्रपत्न्याः कीदृग् (अंशः) इति प्रश्नः। तत्र तेन धर्म्मचन्द्रेण तद्दाना-वसरे तस्माद्धनात् स्वपत्न्यै पुत्रपत्न्यै च पृथक्त्वेन किञ्चिद्दत्त्वा तद्दानपत्रं दत्तमिति दानपत्रादिभ्यो प्रतीतेस्तद्दानमसिद्धं भवितुमर्हति, सर्वस्वदानाद्धु-त्तराधिकारिसत्त्वे सर्वस्वदाननिषेधस्य सकलनिबन्धसिद्धत्वात्। तथा च तद्धनं धर्म्मचन्द्रस्यासीत्। अथ धर्म्मचन्द्रमरणात् तद्धनं तत्पत्न्या देवाया आसीत्, दौहित्रादिसत्त्वे विभक्तापुत्रमृतधने पत्न्यधिकारस्य सर्व्वपि-सम्मतत्वेन प्रसिद्धत्वात्। अथ धर्म्मचन्द्रमरणाद्देवाप्राप्त तद्धन देवाया[1] अपि दातुं न शक्यते पूर्व्वोक्तहेतोरत्रापि तुल्यत्वात्, विशिष्योत्तराधिकारि-सत्त्वे स्त्रियाः स्वापतेयस्थावरादिदाननिषेधाच्च। तथा च यद्यपि मिताक्षरादि-ग्रन्थेषु स्नुषाधिकारो न गणितो गणितश्च दौहित्राधिकारस्तथापि श्वश्र्वा देवाया मरणात्तद्धनं मथुरादेवी तत्स्नुषा प्राप्तुमर्हति[2], पत्न्योत्तराधिकारि-शून्यविभक्तमृतधने सत्स्वपि दुहित्रादिपूत्तराधिकारिषु स्नुषाधिकारस्य सर्व्वदे-शीयानादिसिद्धलोकव्यवहारसिद्धत्वात्। लोकव्यवहारस्यापि शास्त्रसम्मतत्वात्, लोकव्यवहारविरोधे प्रजाप्रक्षोभादिदोषाणां कीर्त्तनाच्च। परन्तु तथा मथुरा-देव्या विवादास्पदीभूतं गृहत्रयं भाटकादिरूपेण भोगेन भोक्तव्यमेव, परं न तद्दानव्ययादिकं कुर्य्याद् आवश्यकं विना, उत्तराधिकारिसत्त्वे तन्निषेधात्। अथ यदि पूर्व्वोक्तदोषसद्भावेऽपि प्रभुणा अनादिसिद्धलोकव्यवहारो नाद्रि-यते[3] तदा देवाया मरणात् तद्विहारिण एव आसीत्, तस्य दौहित्रत्वेन प्रव-

---

१. देवायापि—व्यप०। २. मथुरादेवी तत्स्नुषा प्राप्तमर्हति—व्यप०।
३. नाद्रयते—व्यप०।

लोचराधिकारित्वात् । तन्मरणात्तत्पुत्रयोः प्राणकृष्णकृष्णलालयोरासीत्, पितृधने पुत्राधिकारस्य निर्विवादसिद्धत्वात् । परञ्चास्मिन् पक्षे विहारीलाल-पुत्राभ्यां मथुरया भरणमवश्यमेव कर्त्तव्यम्, तदा मूलधनिनः पुत्रवधूत्वात्, विहारीलालस्य च धर्मचन्द्रस्थानीयत्वादेतादृश्या भरणस्य लोकप्रसिद्धत्वात् । अथार्थिपित्रोर्विभागस्तु न सम्भवति मातुलेन तदा पुनर्योर्विभागस्य शास्त्रलोकोभयविरुद्धत्वाद् इत्येवद्देशप्रचलितमनुमिताक्षरावीरमित्रोदयविवादचिन्तामणिप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेयमिति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

स्वकुटुम्बाविरोधेन देयं दारसुताहते ।
नान्वये सति सर्व्वस्वं यच्चान्यस्मै प्रतिश्रुतम् ॥ इति मिताक्षरादि-सकलनिबन्धधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥१॥

गृहीत्वादत्तं यो मोहाद् यश्चादेयं प्रयच्छति ।
दण्डनीयावुभावेतौ धर्मज्ञेन महीक्षिता ॥—इति विवादरत्नाकरे नारदवचः ॥२॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा—इत्यादि सकलनिबन्धधृत-याज्ञवल्क्यवचनम् ॥३॥

भर्त्रा प्रीतेन यद्दत्तं स्त्रियै तस्मिन्मृतेऽपि तत् ।
सा यथाकाममश्नीयाद्दद्याद्वा स्थावराद्दते ॥—इति मिताक्षराधृत-वचनम् ॥४॥

देशजातिकुलानाञ्च ये धर्म्माः प्राक्प्रवर्तिताः ।
तथैव ते पालनीयाः प्रजा प्रक्षुभ्यतेऽन्यथा ॥
जनापरक्तिर्भवति बलं कोशश्च नश्यति ।—इत्यादीनि वीरमित्रोदयादिधृतानि बृहस्पत्यादिवचांसि ॥५॥

अपुत्रा शयनं भर्त्तुः पालयन्ती व्रते स्थिता ।
भुञ्जीतामरणात् क्षान्ता दायादा ऊर्द्ध्वमाप्नुयुः ॥—इति तत्रैव कात्यायनवचनञ्चेति ॥६॥

यावत्यो विधवा नार्यो ज्येष्ठेन श्वशुरेण वा ।
गोत्रजेनापि चान्येन भर्तव्याच्छादनाशनैः ॥—इत्यपि तत्रैव नारद-वचनञ्च ॥७॥

एतदब्दीयदिसम्बरमासीयविंशतिदिवसीयशनौ दत्तेयं व्यवस्था मयेति ॥

श्रीर्जयतितराम्
श्रीहीरानन्दमिश्रेण

संशोधितमिदं व्यवस्थापत्रं पण्डितहरदयालमिश्रनागरीनवीसेनेति ॥

श्रीदुर्गा शरणम्

रोवकारि मिञ्जिल आदालते देवोयानि सदर मोकाम एलाहाबाद मानएदुकु हुजरि टरम्बर साहेब आदालत मजकुरेर हाकिमेर वैठके तारिख २० जानेर सन १८३५ साल इ० मोताबके तारिख ६ माघ सन १२४२ फछलि रोज मङ्गलवार ॥

मथुरा दलोइ — आपीलाएट—

प्राणकृष्ण ओ कृष्णलाल, वेहारीलालेर पुत्र—रेस्पाण्डएटान्—

आपीलएटेर उकिल लाला लछमनसिंह ओ रेस्पाण्डएटेर उकिल मिरजाख्ञीनवेग हाजीर हइल । एइ मकर्‍मा सन १८३४ सालेर २१ दिजम्बर तारिखेर हुकुम अनुसारे प्रथक प्रथक तारिखे आमार वैठके रोवकार आर ऐ सकल तारिखेर रोवकारिसकलेर लिखित कागजात पडा जाइया मुलतवि छिल । अद्य पुनराय रोवकार हइया वोध हइल ये आपीलाएट सावेक मुदइया आपनार स्वामीर पिता धरमचाँदेर विषय तिन खान वाटीर दखल पाओनेर दावीते मुद्दाआलेहेमार नामे नालिस करे । मुद्दाआलेहेमार जवावेर खोलसा एइ ये मुद्दाआलेहेमार पिता वेहारिलालके ऐ वेहारिलालेर मावार पिता धरमचाँद आपनि वर्त्तमाने

হইতে প্রতি পালন করিয়া আপনার কাইম মোকাম করিয়া। পুষ্য পুত্র করিয়া ফরজন্দীনামা লিখাইয়াদেন, আর আপন নামের খালীসা সরিস্তারনাম বাদসাহের হুজুর হইতে মুহা-আলেহমার পিতা বেহারিলালের নামে লিখিয়াদেয়। ঐ তাহার ফৌত পরে মোদ্দম্মাত দেঔয়ানবিবি ধরমচাঁদের স্ত্রী আদালতের সাহেবের দস্তখতি দস্তাবেজ লিখিয়া উহার দাওয়ালি করে, আর আপন বিষয় সাবুত করণের নিমিত্তে সন ১৮১২ সালের ১২ সেপ্তম্বর তারিখের লিখিত ধরমচাঁদের মোহরি ফরজন্দীনামা দস্তাবেজ ও সন ১৮১৫ সালের ২৩ নবম্বর তারিখের লিখিত ধরমচাঁদের স্ত্রীর লিখিয়া দেওয়া দস্তাবেজ দরপেস করিলেক, আর এই আদালতের পণ্ডিত সন ১৮১৪ সালের ১ দিসম্বর তারিখের হুকুম অনুসারে এক কেতা ব্যবস্থা এই রোলাসায় যে মিশিলের কাগজাত হইতে প্রকাশ হয় না—যে ধরমচাঁদ হেবানামা লিখন কালিন আপনার স্ত্রীকে কিম্বা আপনার পুত্রবধূকে কিছু দিয়া থাকে, তবে সে হেবানামা গ্রাহ্য হইতে পারে না। আর হেবা অগ্রাহ্য করণ যে মালের মালিক ধরম-চাঁদ হয়। ঐ ধরমচাঁদের ফৌত পরে উহার স্ত্রী মালিক হয়। আর ঐ মালের হেবা উহার স্ত্রীর করণের ক্ষমতা নাই। আর যদ্যপি মিতাক্ষরা পুথিতে পুত্রবধূর হকিয়তের শুমার লেখে নাই, আর দৌহিত্রের হকীয়তের শুমার লিখিয়াছে, তথাপি মোদ্দম্মাত দেঔ-য়ানের ফৌত পরে ঐ মালের অধিকার আপীলণ্টের হইবেক। যদি যে যেহ বিষয় বিনা বিক্রি রাখিয়া ফৌত করে, আর তাহার পুত্র ও পৌত্র ও স্ত্রী না থাকে, আর কন্যা ও দৌহিত্র ও গয়রহ ওয়ারিস থাকে, তথাপি ঐ মাল পুত্রবধুর হকিয়তে পৌছন চীর কাল হইতে দেশের রছম আর রেওয়াজ সকল মুলুকে ন্যায্য আছে। আর তাহা শাস্ত্রেতে ও ন্যায্য আছে, আর আপীলণ্টের দান বিক্রি করণের ক্ষমতা নাই। আর যদি রেওয়াজ অগ্রাহ্য হয় তবে দেঔয়ানের ফৌত পরে বেহারিলাল, যে দৌহিত্র ওয়ারিস

आछे, उहाके पौछिवेक दाखिल करिलेक इति। ए कारण एइ आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था लिखनेर धाराय प्रकाश आछे ये मिताक्षरा पुथिते पुत्रेर और हकिएतेर शुमार किन्तु लेखा नाइ, दौहित्रेर हकिएतेर शुमार लेखा आछे; ताहाते ओ ऐ रछम ओ रेओयाज चिरकालेर ओ शास्त्रेर पछिन्दो लिखीयाछे, आर मेघनाटनसाहेबेर तैयारि दायभागेर तरजमा केतावेते प्रकाश ये यदि कोन व्यक्तिर पुत्र पौत्र ना थाके ताहार विषयेर मालिक ताहार दौहित्र हइवेक, पुत्रवधु हइवेक ना, जाहार स्वामी आपन पितार सुमुखे मरे—ए निमित्त चुडन्त हुकुम द्यादेर करणेर पूर्व्वे कलिकाता सद्रेर पण्डितेर स्थाने व्यवस्था तलब करा आर एइ विषय जानिवार निमित्त ये एइ धारार मकर्द्दमाते रछम रओयाज अपेक्षा शास्त्र बलवान कि चिरो-कालेर देशेर रछम रओयाज ये प्रकार एइ आदालतेर पण्डितेर व्यवस्थाते लिखा आछे, ओ ताहा यदि शास्त्रेर बहिर्भूत हय तवे रेओयाज हओयार योग्य हइते पारे कि ना। मोनाछेव बोध हइया हुकुम हइल ये मकर्द्दमा अद्य मुलतवि थाके, आर एइ रोवकारिर नकल एइ आदालते पण्डितेर व्यवस्था नकलेर सहित एइ आविरयके ये एइ आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था मोत्ताहेजार परे तलव करा व्यवस्था दाखिल करेण—एइ आदालतेर रेजष्टर साहेबेर चिठीर द्वाराय मोकाम कलिकातार सदरेर रेजष्टर साहेबेर निकट पाठान जाय इति॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

*प्रभुसमर्पितविचारपत्रं व्यवस्थापत्रञ्च यदीशवीशवन्द्रमतिपार्श्वेपुगुण्य-*गजेन्दुमिताब्दीयफेव्ररवरीमासीयाष्टाविंशतितमदिनसम्बन्धिशनिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

धर्म्मचन्द्रनामा कश्चित् पत्न्यां पुत्रपत्न्याञ्च विद्यमानायां स्वस्वत्वा-स्पदीभूतस्थावरास्थावरसमुदायधनं विहारीलालनाम्ने स्वदौहित्राय दत्त-

वान्[1]—इति प्रमुखमर्पितव्यवस्थापत्रेण ज्ञातम्। एवञ्च सति धर्म्मचन्द्रस्य धनं तत्पत्न्यास्तत्पुत्रपत्न्याश्च यावज्जीवं स्वस्वपतिकुलोचितग्रासाच्छादनोपयुक्तावश्यकविधवाधर्म्माद्याचरणोपयुक्तातिरिक्तं चेत्तदा तादृशधने तद्दानं सिद्ध्यति। धर्म्मचन्द्रस्य धनं यदि तत्पत्न्यास्तत्पुत्रपत्न्याश्च यावज्जीवं स्वस्वपतिकुलोचितग्रासाच्छादनोपयुक्तावश्यकविधवाधर्म्माद्याचरणोपयुक्तातिरिक्तं न भवति तदा तद्दानं न सिद्ध्यति। एवञ्च सति तद्दानस्यासिद्धत्वपक्षे धर्म्मचन्द्रत्यक्तधने तन्मरणानन्तरं तस्य पुत्रपौत्रप्रपौत्राणामभावे तत्पत्न्या देवानाम्न्या एवाधिकार आसीत्। तस्याञ्च मृतायां तस्य धर्म्मचन्द्रस्य काचिद्दुहिता चेद्विद्यमाना तदा तस्या अधिकार आसीत्। तदभावे धर्म्मचन्द्रस्य दौहित्राणामेवाधिकारः। किन्त्वेवञ्चेदपि धर्म्मचन्द्रपुत्रवध्वा जीवति धर्म्मचन्द्राख्ये स्वपतिपितरि मृतपतिकाया यावज्जीवं स्वपतिकुलोचितग्रासाच्छादनोपयुक्तावश्यकविधवाधर्म्माद्याचरणोपयुक्ते धर्म्मचन्द्रत्यक्तधनान्तर्गतधने अधिकारः। तत्र च धर्म्मचन्द्रपुत्रवध्वाः पतिपुत्रादिविहीनत्वेनानन्यगतिकाया धर्म्मचन्द्रत्यक्तधनमात्रोपजीविन्या धर्म्मचन्द्रदौहित्रैः सह विरोधे सति पृथक्त्वेन यावज्जीवं स्वपतिकुलोचितग्रासाच्छादनोपयुक्तावश्यकविधवाधर्म्माद्याचरणोपयुक्तधनग्रहणस्य आवश्यकतैव। तदतिरिक्तधन एव धर्म्मचन्द्रदौहित्राणामधिकारः। एवं च सति पश्चिमदेशीयैर्धर्म्मशास्त्रार्थविशारदैरन्यैर्वा धर्म्मशास्त्रार्थानुष्ठातृभिः शिष्टैः प्राचीनैर्जीवति पितरि मृतस्य पुत्रस्य पत्न्या विद्यमानायां स्वदौहित्रेषु विद्यमानेष्वपि पुत्रवध्वा यावज्जीवं स्वपतिकुलोचितग्रासाच्छादनोपयुक्तावश्यकविधवाधर्म्माद्याचरणोपयुक्तमात्रमेव धनमस्तीति ज्ञात्वा यावज्जीवं पुत्रवध्वा एवाधिकारो न्याय्य। दौहित्राश्चेत्तद्धनाधिकारिणस्तदा तेषां पुत्रवध्वा सह विरोधोऽस्तीत्यतस्तस्या यावज्जीवं ग्रासाच्छादनाद्यावश्यकविधवाधर्म्माद्याचरणमपि न निर्वहतीति विविच्य यावज्जीवं पुत्रवध्वा एव तद्धने अधिकारोऽस्त्विति व्यवहृतस्तन्मूलश्चेत् पुत्रवध्वा यावज्जीवं स्वपतिकुलोचितग्रासाच्छादनोपयुक्तावश्यकविधवाधर्म्माद्याचरणोपयुक्तश्वशुरत्यक्तधने तस्या अधिकारस्तदा धर्म्मशास्त्रीययुक्तिसिद्धस्तादृशव्यवहारस्य धर्म्मशास्त्राविरुद्धस्य

---

१ दत्तामिति—व्य० ।

धर्मशास्त्रानुसारेण प्रचारयोग्यताया बलवत्त्वं भवितुं शक्नोति, अन्यथा प्रचारयोग्यताया बलवत्त्वं भवितुं न शक्नोतीति पश्चिमदेशचलितमनुमिताक्षरावीरमित्रोदयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

कुटुम्बभक्तवसनादेयं यदतिरिच्यते—इति वीरमित्रोदयादिग्रन्थधृतबृहस्पतिवचनम् ॥१॥

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनम् ॥२॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा।
तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः शिष्यः सब्रह्मचारिणः ॥
एषामभावे पूर्व्वस्य धनभागुत्तरोत्तरः ॥
स्वर्य्यातस्य ह्यपुत्रस्य सर्व्ववर्णेष्वयं विधिः—इति मिताक्षरादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥३॥

यावत्यो विधवाः साध्व्यो ज्येष्ठेन श्वशुरेण वा ।
गोत्रजेनापि चान्येन भर्त्तव्याश्चादनाशनैः ॥—इति वीरमित्रोदयादिग्रन्थधृतनारदवचनम् ॥४॥

केवलं शास्त्रमाश्रित्य न कर्त्तव्यो विनिर्णयः ।
युक्तिहीनविचारेण धर्म्महानिः प्रजायते ॥—इति तत्तद्ग्रन्थधृतबृहस्पतिवचनञ्चेति ॥५॥

ईशवीयान्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमितान्दीयतुलाख्यमासीयद्वितीयदिनसम्बन्धिबृहस्पतिवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रं व्यवस्थापत्रं च यत्तदब्दीयफेवरवरीमासीयगुणपक्षमितदिनसम्बन्धिशनिवासरे मया प्राप्तं ताभ्यां सहिता प्रभुसमर्पितविचारपत्रान्तरमगरेबोलिखनञ्च यत्तदब्दीयमेमासीयशरेन्दुमितदिनसम्बन्धिशुक्रवासरे मया प्राप्तं ताभ्यां च सहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(७०) रोवकारि मिछिल सदर देओयानी आदालत मोकाम कलिकाता आदालत मजकुरेर हाकिम श्रीयुत हेनरि सिकिस-पिएरसाहेबेर बैठके। तारिख १६ माइ इ० १८३५ साल मोताबके ६ ज्यैष्ठ १२४२ साल बाङ्गला दिवस मङ्गलवार ॥—

रामकृष्णराय छायेल

छायेलेर उकिल सदासुखपण्डित ओ द्वितीय पक्ष कालीकिशोररायेर उकिल मुनशी होसन आलि हाजिर आइल। सन हालेर २३ आपरेल तारिखेर हुकुमानुसारे जेला मयमनसिंहेर देओयानी आदालतेर जजसाहेबेर रिटरण ओ इं० १८३५ सालेर ५ आपरेलेर लिखित तथाकार रोवकारि ओ साक्षीगणेर एजहार सम्वलित इं १८३४ सालेर २८ जानेओयारिर छायेर छओया एइ आदालतेर हुकुमेर प्रत्युत्तरे छओयालादि कागजसकलेर सहित अद्य दरपेष हइया पडागेल। रिटरणेर सम्वलित जजसाहेबेर प्रेरित साक्षीगणेर एजहारेर द्वाराय प्रकाश ये नारायणीदेव्या ओ जगदीश्वरीदेव्यार स्थाने रामनृसिंहराय डिगरिदारेर पाओना कर्ज टाका वाहार किछु जमीदारिर कर्म्म निर्व्वाह अर्थात् सरकारि मालगुजारि आदायेते ओ किञ्चित गोलकमनिर सावेक देना परिशोधे खरच हइयाछे। ओ कोन सन्देह प्रकाश हय ना ये कर्ज्जार टाका मजकुर उक्त देव्यादिगेर सेच्छा ओ वाञ्छा सिद्धिते निज तद्रुपे खरच हइयाछे। ए जन्य उचित ये एइ आदालतेर पण्डितेर स्थाने एइ विशयेर प्रत्युत्तर दुइ सप्ताह मेयादे तलब हय, ये उपरेर लिखनानुसारे उक्त देव्यादिगेर हिस्यार वस्तु, याहा इं १८३३ सालेर १२ जानेओयारिर जेलार जजसाहेबेर रोवकारिर लिखित रफानामा ओ छोलेनामार द्वाराय उक्त देव्यादिगेर जीवदशापर्य्यन्त स्थैर्य्यता पाइयाछे, डिगरिदारेर हासील करा डिगरि परिशोध विक्रय हइते पारे कि ना। एवं एइ आदालतेर पण्डितेर उचित ये उपरेर लिखित छओयालेर प्रत्युत्तर लिखने गौरिप्रसादचौधुरि

चनाम जयमालाचौधुराणीर ८३५ लम्बरेर मोकद्दमार इ १८२७ सालेर ■ फिवरुओयारिर लिखित एइ आदालतेर व्यवस्था एवं एजे धावेटैकटोएन एस्तफानुड[1] छाएलेर मोकद्दमार दरुन इ १८३३ सालेर १९ दिजम्बरेर लिखित आपन दाखिल करा व्यवस्थार प्रति, जाहार प्रसङ्ग इ १८३४ सालेर १० फिवरुओयारिर आमार रोवकारिते लेखा आछे, अनुबोधन करेण। आर यदि स्यात् पूर्व्वेर ओ एइ क्षनकार व्यवस्था-सकलेते किछु अनश्चय हय, उचित ये उक्त पण्डित ताहार विस्तारित हेतु लिखेन, एवं एइ विरायेरो प्रत्युत्तर लिखेन—ये यद्यपि स्यात् दें॰ट्रदिगेर हिस्या उद्धारदिगेर उभय ओ कालीकिशोररायेर छोलेनामार दफे, जाहार द्वाराय देव्यादिगेर हकीयत जीवद्दशा पर्य्यन्त स्थैर्य्यता पाइयाछे, विक्रय हइते ना पारे, ओ प्रकार देनादारदिगेर अर्थात् उक्त देव्यागणेर देनार सामुदाइक टाका, जाहा जमीदारिर मुनाफार जन्य खरच हइयाछे, निज खरचे व्यय हय नाइ, उक्त कालीकिशोरेर स्थाने तलब हइते पारे कि ना, आर से तलब एइ क्षने हइते पारे कि, उक्त देव्यादिगेर मृत्युर पर इति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतहेनरीविकिन्सपीयरसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितेशवीशाब्दप्रतिपान्नेगुणगजेन्दुमिताब्दीयमैमासीयोनविंशतितमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदब्दीयजुनमासीयाष्टमदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥—

प्रभुकृतविचारपत्रलिखितानुसारेण नारायणीदेवीजगदीश्वरीदेव्योर्यौ यौ तयोर्जीवनपर्य्यन्तमीशवीयाब्दप्रतिसप्तरामगुणगजेन्दुमिताब्दीयजानवरी-

१. खाना भक्यठ कटोयर इष्टकानुस—भंव प्रश्नस्योत्तरभागे पाठः।

मासीयार्कमितदिवसीयजिलाख्यावान्वरधर्म्माधिकरणाधिपतिकृतविचारपत्र-लिखितनिष्पत्तिपत्रसन्धिपत्राभ्यां स्थिरता प्राप्तौ, जयपत्रकारयितृणा व्यक्ति-विशेषाणां जयपत्रलिखितऋणपरिशोधनार्थं विक्रययोग्यो भवितुं न शक्नुतः, राजस्वीकृतसन्धिपत्रे तद्विक्रयस्य निषेधात्। शास्त्रानुसारेण कालीकिशोररायाभिधेयस्य दत्तकपुत्रस्याप्राप्तव्यवहारतायां तत्स्वत्वास्पदीभूतसमुदायधनस्य राजस्वर्त्तोभावेन रक्षकत्वेन राजकरदानार्थमप्राप्तव्यवहारापाकरणीयऋण शास्त्रानुसारेण केनचित् कर्त्तुमावश्यकं न भवति। एवमप्राप्तव्यवहारापाकरणीयऋणपरिशोधनमपि तस्याप्राप्तव्यवहारतायां केनचिच्छास्त्रानुसारेण कर्त्तुमावश्यकं न भवति, शास्त्रे अप्राप्तव्यवहारतायामृणपरिशोधनस्य विशेषतो निषेधात्, कालीकिशोररायाभिधेयस्य प्राप्तव्यवहारतायाञ्च तद्देयऋण-परिशोधनस्य राजकरदानस्य च तन्मात्रकर्त्तव्यत्वेन तदितरेषां तद्ग्रहीतृमा-तृपितामहीप्रभृतीनां कर्त्तव्यत्वाभावात्। एवं गौरीप्रसादचतुर्द्धरीणस्यार्थिनो जयमालाचतुर्द्धरीण्या[1] प्रत्यर्थिन्या पञ्चत्रिंशदधिकचतुश्शतपरिमिताङ्कितवि-वादनिविष्टे तद्धर्म्माधिकरणीयेशाब्दप्रतिपाद्याद्विपद्गजेन्दुमिताब्दीय फेब्रुवरीमासीयसप्तमदिनलिखितव्यवस्थायाः ख्वाजाअबयटकटीयरहपानु-सारस्यार्थिनो विवादसम्बन्धिन्या ईशवीशब्दप्रतिपाद्याग्निगुणगजेन्दुमिताब्दीय-दिशम्बरमासीयाङ्केन्दुमितदिनलिखितास्मद्दत्तव्यवस्थया भिन्नविषयकत्वेना-नैक्यशङ्कैव नावतरति। तथाहि गौरीप्रसादचतुर्द्धरीणस्यार्थिनो विवाद-सम्बन्ध्युपरिलिखितव्यवस्थायामित्येव लिखितमस्ति—मृत्युञ्जयशर्म्मणः प्राप्तजयपत्रलिखितमृणं यदि शिवप्रसादस्यावश्यकश्राद्धाद्यौर्द्ध्वदैहिकक्रियार्थं स्वभरणपोषणार्थं वा तन्मात्रा जयमालया कृतं स्यात्तत्परिशोधनं यदि स्वसंक्रान्ततदीयांशविक्रयं विना न भवति, तदा जयमालोपस्थापितऋणस्य सत्यत्वे असत्यत्वे वा तदर्थमुपरिलिखितऋणपरिशोधनोपयुक्तस्य तदीयांशान्तर्गतस्य विक्रयो भवितुमर्हति, न तु स्वेच्छया स्वाभिप्रायेण वा, जयमालया कृतस्य ऋणस्य परिशोधनार्थमिति। एतल्लिखनस्येदं बीजम्—शिवप्रसादचतुर्द्धरीणस्य त्यक्तधनं तस्य पुत्रमारभ्य पितृपर्य्यन्ताभावे तद्-ग्रहीतृमात्रा जयमालयैवाधिकारित्वेन प्राप्तम्, अतएव जयमालाजीवनप

1. जलमाला०—पा० ।

र्य्यन्तमन्येन केनचिदुत्तराधिकारित्वेन धनिनः शिवप्रसादस्यावश्यकश्राद्धाद्यौर्द्ध्वदैहिकक्रियाजातं जयमालाया भरणपोषणञ्च शास्त्रानुसारेण कर्त्तुं न शक्यते, केवलं जयमालयैव कर्त्तुं शक्यत इति साक्षा अवस्ट कटीयर इष्टपानुसरयार्थिनो विवादसम्बन्धिन्यां व्यवस्थायामित्येव लिखितमस्ति। यदि मूलधनिनो रामकिशोररायाभिधेयस्य एतद्धर्म्माधिकरणार्थिनः पितुस्त्यक्तधने सन्धिपत्रानुसारेणैतद्धर्म्माधिकरणार्थिनो नारायणीदेव्याश्च जगदीश्वरीदेव्याश्च स्वत्वं निश्चितं स्यात्, एवं तदेव सन्धिपत्रं जिलाख्यावान्तरधर्म्माधिकरणे सत्यं जातं स्यात्, एवं तेनैव सन्धिपत्रेण जगदीश्वरीदेवीमरणोत्तरं तदायत्तीभूतांशश्च एतद्धर्म्माधिकरणार्थिनो भविष्यतीत्यवगम्यमानं स्यात्, तदा जगदीश्वरीदेवीदेयऋणपरिशोधनार्थं तज्जीवनपर्य्यन्तमुपस्वत्वभोगार्थं तत्पुत्रस्वत्वाश्रयीभूततदायत्तीभूतांशो विक्रययोग्यो भवितुं न शक्नोति, सन्धिपत्रतात्पर्य्यार्थं धर्म्मशास्त्राभ्यां तथैव पर्य्यवसानादिति। एतल्लिखनस्येदं बीजम्— मूलधनिनो रामकिशोररायाभिधेयस्य त्यक्तसमुदायधने उत्तराधिकारित्वेन, कालीकिशोररायाभिधेयस्य तदीयदत्तकपुत्रस्य स्वत्वं शास्त्रानुसारेण जातम्, न तु जगदीश्वरीदेव्यास्तत्पत्न्या नारायणीदेव्यास्तन्मातुर्व्वेति। अथ च मूलधनिनो रामकिशोररायाभिधेयस्यावश्यकश्राद्धाद्यौर्द्ध्वदैहिकक्रियाजातं तत्पत्नीमातृप्रभृतीनां भरणपोषणञ्च तदीयऋणपरिशोधनं तद्देयराजकरदानं च तदीयदत्तकपुत्रेण कालीकिशोररायाभिधेयेनैव कर्त्तुमावश्यकं भवति, न तु तत्पत्न्या जगदीश्वरीदेव्या, तन्मात्रा नारायणीदेव्या वेति। यदि नारायणीदेवीजगदीश्वरीदेव्योरथवा नारायणीदेवीजगदीश्वरीदेव्योः कालीकिशोररायाभिधेयस्य सन्धिपत्रानुसारेण नारायणीदेवीजगदीश्वरीदेव्योर्जीवनपर्य्यन्तमुपस्वत्वभोगोपयुक्तमात्रस्वत्वयोरुपरिलिखितानुसारेण विक्रययोग्ययोर्भवितुमशक्ययोरधमर्णयोर्नारायणीदेवीजगदीश्वरीदेव्योर्द्देयऋणमुद्राजातं कालीकिशोररायाभिधेयमूलधनिदत्तकपुत्रस्वत्वास्पदीभूतसराजकरस्थावरस्य वृद्ध्यर्थमेव व्ययितम्, ननु स्वस्वीयव्ययार्थं व्ययितमित्यवगम्यमानं भवति, तथाप्युपरिलिखितोत्तरदृष्ट्या सन्धिपत्रलिखितनियमजातविवेचनया च समुदायऋणयाचनं कालीकिशोररायाभिधेयस्यान्तिके इदानीं जगदीश्वरीदेवीनारायणीदेव्योर्म्मरणानन्तरं वा कदाचिदपि भवितुं न शक्नोति, सन्धिपत्रता-

त्पर्य्यार्थशास्त्राभ्यां तथैव पर्य्यवसानाद्—इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

अराजके हि लोकेऽस्मिन् सर्व्वतो विद्रुते भयात् ।
रक्षार्थमस्य सर्व्वस्य राजानमसृजत् प्रभुः ॥ इति मनु(७।३)-वचनम् ॥ १ ॥

बालदायादिकमृक्थं तावद्राजानुपालयेत् ।
यावत् स स्यात् समावृत्तो यावच्चातीतशैशवः ॥ इति मनु(८।२७) वचनम् ॥२॥

नाप्राप्तव्यवहारैश्च पितर्य्युपरते क्वचित् ।
काले तु विधिना देयं वसेयुर्नरकेऽन्यथा ॥ इति विवादार्णवसेतु (पृ० २८)विवादभङ्गार्णवादिग्रन्थधृतकात्यायन(कात्स्मृ० ५५२।पृ० ६।६)-वचनम् ॥३॥

सर्व्वे ह्यनौरसस्यैते पुत्रा दायहराः स्मृताः—इति दायभागादिग्रन्थधृतदेवलवचनम् ॥४॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ।
तत्सुतः—इत्यादि दायभागादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥५॥

न स्त्री पतिपुत्रकृतं न स्त्रीकृतं पतिपुत्रौ—इति विवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थधृतविष्णुवचनञ्चेति ॥६॥

ईशवीयाब्दस्यैतनाग्नेयगुणगणेन्दुमिता-दीयजुलाइमासीयेन्दुपद्ममितदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रदर्शनेनैव व्यवस्थादत्तेति ॥—

श्रीजयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

—————

(७१)—मोकाम कलिकातार सदर देवानि आदालतेर सन १८३५ सालेर १६ जुन मोताबक बाङ्गला सन १२४२ सालेर ३

आषाढ मङ्गलवार दिवसेर ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत ओली-यमब्राडिनसाहेबेर वैठकेर रोवकारि—

नं० २८६ सन १८३३ साल

वीरेन्द्रनारायणचौधुरि ओ गायरह आपीलाण्टान

श्रीमती सत्यभामादेव्या रेस्पाण्डण्ट

आपीलाण्टदिगेर उकिल सदासुकपण्डित ओ रेस्पाण्डण्टेर उकिलेदिगेर मध्ये मुनशी आमिनद्दीन महम्मद हाजिर आइल। अद्य ए मोकद्दमा उपस्थित हइया जेलार ओ ए आदालतेर कागज-सकल पाठ करागेल। कोन हुकुम प्रकाश हओनेर पूर्व्वे ए आदालतेर पण्डितेर स्थाने व्यवस्था तलब करा उचित बोध हइल। ए कारण हुकुम हइल ये एइ रोवकारिर नकल एइ हुकुमे ये निचेर लिखित विशयसकलेर उत्तर पञ्चम दिवसेर मध्ये दाखिल करेण, ए आदालतेर पण्डितके अर्पन कराजाय।

प्रश्न–एक व्यक्ति हिन्दुर पाँच पुत्र छिल। ताहारदिगेर मध्ये दुइ पुत्र आपन २ पितार समिक्षे निःसन्तान लोकान्तर हय, ओ ताहार पर ऐ हिन्दु व्यक्तिर मृत्यु हय, ओ ताहार मृत्युर पर उहार वर्त्तमान तिन पुत्रगन आपन २ पितार तेज्य वस्तुर पर विभाग द्वाराय दखलीकार हयेन, ओ तिन भ्रातार मध्ये दुइ भ्रातार उत्तराधिकारिगण आपन २ पितार तेज्य विशयेर पर दखलीकार आछेन, ओ एक भ्राता एक स्त्री ओ एक कन्या राखिया लोकान्तर हय, ओ मृत व्यक्तिर स्त्री स्वामीर तेज्य विशयेर पर दखलीकार हइया आपन कन्यार विवाह देओनेर पर ऐ विशयसकल आपन कन्या ओ जामाताके हेवा करे, ओ ऐ कन्या ओ जामाता हेवार-द्वाराय ऐ विशयेर पर दखलीकार हयेन, ओ ताहारदिगेर नाम कलेकटरि सेरेस्ताय दाखिल हय। ताहार पर उक्त कन्या आपन मातार समिक्षे एक पुत्र राखिया लोकान्तर हय, ओ उक्त पुत्र उत्तराधिकारि द्वाराय आपन मातार तेज्य वस्तुर पर दखिल ओ उहार नाम ताहार पितार अर्थात् उक्त कन्यार स्वामिर नाम

सम्वलित कालेक्टरि सेरेस्ताय जारि हय। तत्परे उक्त पुत्र आपन पिता ओ मातामहिर समिक्षे लोकान्तर हय। ओ ऐ पुत्रेर मृत्युर पर उक्त पुत्रेर पिता ऐ सकल विशयेर पर हेवार-द्वाराय ओ उत्तराधिकारिरूपे दखिल हइया ताहा आपन द्वितीय स्त्रीके हेवा करिया ऐ स्त्रीर नाम कालेक्टरि सेरेस्ताय जारि करिया दियाछे। अतएव मृत व्यक्तिर स्त्री आपन कन्या ओ जामाताके ये हेवा करियाछे ताहा बङ्गदेशीय चलित शास्त्रानुसारे सिद्ध वटे कि ना, ओ मृत व्यक्तिर गोष्टीर पञ्चम पुरुशीय खुडततो भ्रातष्पुत्रगणेर दावो। ये ऐ मृत व्यक्तिर ओ ताहार स्त्रीर उत्तराधिकारिद्वाराय आछे, हेवार विशयेर संक्रान्ते ए हेतुते ओ ये उक्त भ्रातष्पुत्रगणेर पक्ष हइते हेवानामा लिखित पठित समये कोन एक आपत्य ना हइया थाके, तवे अर्शे कि ना इति ।।—

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतश्रीलियमवेराबिनसाहेबधर्म्माधिकरणलिखिते शकीयाब्दप्रतिपान्नेगुणगजेन्दुमिताब्दीयजुनमासीयरसेन्दुमितदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्र यत्तदब्दीयजुलाइमासीयमुनिमितदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्राप्त तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तर लिख्यते—

प्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्य मृतस्य स्थावरादिधने जाताधिकारया पत्न्या यदि स्वानन्तरोत्तराधिकारिण्यै सम्भावितपुत्रायै स्व कन्यायै तत्पतये च स्वस्वकान्तपतिस्थावरादिधन दत्त स्यात् तदा तद्दान बङ्ग देशचलितशास्त्रानुसारेण सिद्ध्यति, पत्युरनन्तरोत्तराधिकार्य्यनुमत्या पत्नीकृतस्वस्वकान्तपतिस्थावरादिधनदानसिद्धेः शास्त्रीयत्वेन, पत्नीकृतस्वानन्तरोत्तराधिकार्य्युद्देश्यकदानसिद्धेः शास्त्रीयत्वस्यार्थसिद्धत्वाद्, जामातुद्देश्यकदानस्यापि कन्यासम्प्रदानतायाः दात्र्या जामातुः पृथक्स्वत्वेच्छायामपि

ब्राह्मणजातीयस्वामात्रुद्देश्यकदानस्यादृष्टार्थतायाश्च शास्त्रीयत्वात्, पत्न्याः स्वसंक्रान्तपतिस्थावरादिधनस्यादृष्टार्थं दानस्वमतायाऽपि शास्त्रसिद्धत्वाच्च। एवं धनिनो मृतस्य पञ्चमपुरुषीयसगोत्रभ्रातृपुत्रैर्मृतस्य धनिनस्तत्पत्न्याश्चो-त्तराधिकारित्वेनाभियोगो दानविषयीभूतस्य वस्तुन उपरिलिखितोत्तरदष्ट्र्या तेभ्यो भ्रातुष्पुत्रेभ्यः सकाशात्तद्दानपत्रलिखनसमये तद्दानविषयकप्रतिबन्ध-कतायाऽसम्पादनदृष्ट्या च शास्त्रानुसारेण साकांक्षो भवितुं न शक्नोति, तद्दानसमये तेषां भ्रातृपुत्राणामप्रतिषेधरूपाया अनुमतेरपि तद्दानसिद्धि-सम्पादकहेत्वन्तर्गतायाः सत्त्वात्—इति वङ्गदेशप्रचलितमनुदायभागदायतत्त्वा-दिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

एतान्यपि प्रमाणानि भर्त्ता यद्यनुमन्यते ।

पुत्राः पत्युरभावे च राजा वा पतिपुत्रयोः ॥—इति नारदस्मृत्यादि-ग्रन्थधृतनारदवचनम्[1] ॥१॥

यद्दत्तं दुहितुः पत्ये स्वयमेव तदन्वियात् ।

मृते जीवति वा पत्यौ तदपत्यमृते स्त्रियाः ॥ इति दायभाग (पृ० ७५)-ग्रन्थधृतमुनिवचनम् ॥२॥

दातृभिस्सन्धिनिमित्तत्वात्स्वत्वस्य—इति दायभागग्रन्थलिखनम् ॥३॥

विष्णुं जामातरं मन्ये—इत्युद्वाहतत्त्वादिग्रन्थधृतमुनिवचनम् ॥४॥

मृते भर्त्तरि साध्वी स्त्री ब्रह्मचर्यव्रते स्थिता ।
स्नाता प्रतिदिनं दद्यात् स्वभर्त्रे सतिलाञ्जलीन् ॥
कुर्य्याच्चानुदिनं भक्त्या देवतानाञ्च पूजनम् ।
विष्णोराराधनञ्चैव कुर्य्यान्नित्यमुपोषणम् ॥
दानानि विप्रमुख्येभ्यो दद्यात् पुण्यविवृद्धये ।
उपवासांश्च विविधान् कुर्य्याच्छास्त्रोदिताञ्छुभे ॥
लोकान्तरस्थं भर्त्तारमात्मानञ्च वरानने ।

---

१. वचनमिदं नोपलब्धम् ।

तारयत्युभयं नारी नित्यं धर्म्मपरायणा ॥—इति दायभागादि(दाभा० पृ० १६४।१६५)ग्रन्थधृतव्यासवचनम् ॥५॥

प्रार्थ्यमानोऽर्थिना यत्र यो ह्यर्थो नाभिघातितः ।
दानकालेऽथवा तूष्णीं स्थितः सोऽर्थोऽनुमोदितः ॥—इति प्रायश्चित्तविवेकादिग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥६॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ।
तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः—इत्यादि दायभागादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनञ्चेति ॥७।

ईशवीशब्दप्रतिपान्नेपुगुणगजेन्दुमिताब्दीयागस्त्यमासीयपञ्चमदिनबुधवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रसहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीजयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(७२)—सं० २१६

रुवकारि मेछल आदालते देओयानी सदर मोकाम कलिकात्ता पजलाछे श्रीयुत जार्ज इष्टाकोपल साहेब हाकिम आदालत मजकुरा सन १८३५ साल ता० ६ जुलाइ मोताबेक सन १२४२ साल तारिख २२ आषाढ ।

गुरुप्रसादवसु आपिलाण्ट
महेन्द्रनारायणवसु रेस्पाण्डण्ट

आपिलाण्टेर उकिल मुनशी राधाकृष्ण ओ रेस्पाण्डण्टेर उकिल वंशीवदनमित्र हाजिर आसिल ओ मिछिलेर कागजात मोलाहेजा हइल। ये हेतुक एइ मोकद्दमार चुडान्त हुकुम छादेर हओनेर पूर्व्वे एइ आदालतेर पण्डितेर निकट एइ विशय ये कायस्थ जाति गङ्गानारायणनामक एक व्यक्तिर तिन पुत्र छिल, ताहार मध्ये एक पुत्रेर विवाहकालिन किञ्चित भूमि, ये पुत्रेर विवाह हइलो, ताहार शसुरेर स्थाने प्राप्त हइल, एवं तद्भूमिर

दानपत्र यत् द्वारा दान कृत हइलो, गङ्गानारायणेर नामे लिखित हइल, ए स्थले गङ्गानारायणेर परलोकानन्तर ऐ भूमि पूर्व्वोक्त-व्यक्तिर तिन पुत्र समान अंश करिया लइवेक, किम्बा ऐ विवाहकर्त्ता व्यक्तिर, जाहार विवाहोपलक्षे ऐ भूमि प्राप्त हइल, सेइ व्यक्ति पाइवेक, जिज्ञाशा करा आविश्यक–ए प्रयुक्त हुकुम हइल ये एइ रुयकारिर नकल उपरेर लिखित प्रश्नसम्बलित एइ आदालतेर पण्डितेर निकट एइ हुकुमे पाठान जाय ये पूर्व्वोक्त प्रश्नेर प्रत्युत्तर बाङ्गलादेशीय चलित शास्त्रानुसारे एइ हुकुम पौछनेर तारिख अवधि पञ्चम दिवसेर मध्ये दाखिल करेण इति ॥–

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतजाज्जंइष्टवोयलसाहेवधर्म्माधिकरण लिखितेशावीयाब्दप्रतिपाद्गुणगजेन्दुमिताब्दीयजुलाइमासीयरस मितदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्र यत्त्वस्वदीयतन्मासीयशरेन्दुमितदिनसम्बन्धिबुधवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशार्थो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥–

प्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति गङ्गानारायणस्य मरणानन्तरं विवादास्पदीभूतधने गङ्गानारायणस्य त्रयाणामेव पुत्राणां समानाधिकारः–इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥–

अत्र प्रमाणम् –

प्रदानं स्वाम्यकारणम्–इति मनुवचनम् ॥१॥

पितर्य्युपरते पुत्रा विभजेयुर्द्धनं पितुः–इति दायभागादिग्रन्थधृतदेवलवचनञ्चेति ॥२॥०॥०॥०॥

ईशवीयाब्दप्रतिपाद्गुणगजेन्दुमिताब्दीयागस्तमासीयरसमितदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रसहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥–

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(७३)—मोनछफि डिगरि जारिर नम्बर १२४२२

रोयकारि आदालते देवोयानि जेला वर्द्धमान एजलास मे० जेमछ करटिछ साहेब काइम मोकाम जज सन १८३५ मछिया तारिख ४ आपरेल—

गोकुलचन्द्रमिश्र डिगिरिदार मतर्फा— वादि—
कार्तिकमोण्डल देयेनदार— प्रतिवादि—
दयाकुमारि ओ सुन्दरकुमारि— ओजोरदार—

खन्दकार नाछेरद्दिन माहम्मद ओ कृष्णधनमुखोपाध्याय दयाकुमारिर उकिल एज्जेंत होशेन, सुन्दरकुमारिर उकिलेर मध्ये एक उकिल मिछिले हाजिर हइलो। परे मिछिलेर कागज मोला-हेजा हइया बोध हइलो जे एइ मकद्दमा ४१।~)।१ टाका आदाय कारण डिगरिदार मोतर्फा तरफ हइते किस्तिबन्दि जारिर दर-खास्त गुजराण ओ प्रतिवादिर जायदाद क्रोक हइले परे दया-कुमारि मजकुर सन १२३१ सालेर १६ ज्यैष्ठ तारिखे आपन मुकाविलाय एक केता दरखास्त एइ मजमुने एइ आदालते दाखिल करिलेक—ये उहार पुत्र गोकुलचन्द्रमिश्र फौत करियाछे, ओ उहार समस्त विशय ओ ठाकुरसेवा प्रभृति उहाके दान करियाछे, ओ मोतर्फा मजकुरेर विशय दखलिकार, ओ ओया-रिष आपनि आछे, आर एइ मकद्दमार तजविजेर निष्पत्येर प्रार्थना करिलेक, आर सन १८३४ सालेर १४ जुन तारिखेर आपनार दरखास्तेर उपरेर लिखित हुकुम अनुसारे दानपत्रेर निचेर लिखित तिन जोन साक्षी हाजिर आनिया तिन जोन साक्षीर एजाहार, ओ सन १२४१ सालेर २० वैशाख तारिखेर लिखित दानपत्र दाखिल हइले परे सुन्दरकुमारि एक केता दरखास्त उहार स्वामि गोकुलचन्द्रमिश्रेर फौत हओया ओ आपनि ऐ मोतर्फा मजकुरेर मालामालेर दखलिकार ओ ओयारिष ओ उहार स्वामी उहाके पुष्यपुत्र करणेर अनुमति देओया, एवं सकल विसय उहाके मालिक कराने ओ चावि छोडान प्रभृति आपन

जीवद्दशाय मातब्बेर लोकेर साक्षाते अर्पन करा, ओ दया-कुमारिर एजाहारि दानपत्र नितान्त मिथ्या—एइ सकल विर्त्तान्ते सन १८३४ सालेर ३० जुलाइ तारिखे दाखिल करिलेक। एइ मकर्द्दमा पूर्व्वे सन हालेर १० फेब्रुवरि तारिखे रोवकार हइया ऐ तारिखेर लिखित रोवकारि अनुसारे दोपरा विपयेर कैफियात पुरुषोत्तमदासमोहोन्तेर स्थाने तलव हइया सुन्दरकुमारिर उकिलेर पर जे सकल लोकेर साक्षीते सुन्दरकुमारिर स्वामी गोकुलचन्द्रमिश्र आपन समस्त विशयेर मालिक सुन्दरकुमारिके करा ओ उहाके पुष्यपुत्र करणेर अनुमति देओया साबुद हइवेक-ऐ सकल लोकेर नामे इशमनविसि दाखिल करिते हुकुम हय। तदनुसारे सुन्दरकुमारिर उकिल सात जोन साक्षिर नामे इसमनविषि दाखिल करिले। साक्षिर पर सफिना जारि हइले परे परान आच(।)र्य्य ओ रामचाँदराय ओ कार्त्तिकघोप ओ लक्ष्मी वेओया एइ चारि जन हाजिर हइले उहारदिगेर एजहार याङ्गला अक्षर ओ एवारते आला(हि)दा २ फर्द्दे नओया जाय इति। अथ दयाकुमारि मजकुर एक केता दरखास्त एइ मजमुने जे मदन मजकुरेर वयेय[1] दश बारो वत्सर, ओ मदन मजकुर सुन्दरकुमारिर सहोदर भ्राता निमित्तेक शास्त्रानुसारे जज्ञ उपवित हइले परे पुष्यपुत्र लओनेर विधान हय ना, ओ उहार पितार फौत परे उहार पितार गोत्रेते विधान हइते पारे ना; ओ सुन्दरकुमारिर एक केता दरखास्त एइ विर्त्तान्त ये मृत समय कोनो दान सिद्धि हये ना। आर स्वामिर अनुमति क्रमे आपन सहोदर मदनठाकुरके पुष्यपुत्र करियाछे-एइ सकल अन्य २ वित्तान्त दाखिल करिलेक इति। एइ मकर्द्दमाय एइ प्रकार व्यवस्था तलब आविस्वक जे यदि केहो आपन वर्त्तमान थाकिते मृत्यु समय ज्ञान पूर्व्वक परकालेर पुन्येर निमित्ते आपन गुरुर साक्षेते आपन मातांके दान करोनेर

१. वयेद—इति साक्षीवान् पाठः।

एकरार लिखित पद्धितेर द्वाराय हओक किम्वा ताहार वाक्याव-द्वाराय हउक, दान करिया फौत करे। ए प्रकार दान सास्त्रेर विधान कि ना, ओ गुरुर एजहार कोन विशयेते शिष्येर पक्षे काफि हय कि ना, आर कोन एक पुत्र दश कि द्वादश वत्सर वयक्रम हओयाते ओ ताहार यज्ञोपवित हइलेओ पितार फौत परे आपन पितार गोत्रेते ए पुत्रेर भगिनपुत्र मजकुरके आपन मातार अनुमतिते पुष्यपुत्र लइते पारे कि ना। ए कारण हुकुम हइल ये एइ रोयकारिर नकल डिगरि जारिर नथिर सम्वलित इङ्गरेजी चीठीर द्वाराय सदर देओयानि आदालतेर हाकिमेर हुजुरे एइ प्रार्थनाय पाठान जाय-ये अररेर लिखित वृत्तान्तेर सओयालेर जवाव शास्त्रानुसारे ऐ आदालतेर पण्डितेर स्थाने लइया एइ आदालते प्रेरण करिते आज्ञा हय इति॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रस्तुतसमर्पितविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नपत्रमेतद्विषयनिविष्टपत्रजात मङ्गरेजीलिखनञ्च यदीयचीफ॰इस्तविनायेगुणगजेन्दुमिताब्दीयमैमासीय-वारे-न्दुमितदिनसम्बन्धिशुभवासरे मया प्राप्त तदवलोक्य यादृशबोधो जात-स्तदनुसारेणोत्तर लिख्यते—

प्रश्नलिखितवृत्तान्ते उल्लेखादृशदान दातुः पत्न्या यावज्जीव दातृकुलो-चितग्रासाच्छादनोपयुक्तावश्यकविषयाधम्माद्याचरणोपयुक्तातिरिक्ते दातृस्व स्वाधिकारीभूतधने शास्त्रानुसारेण सिद्ध्यति। एव गुरुरास्य शिष्य प्रति विषयविशेषे प्रबलप्रमाण भवत्येव। एवमेकमात्रपुत्रस्य कस्यचित् तनक पुत्र दशवर्षवयस्क द्वादशवर्षवयस्कं वा जनकगोत्रेण जनकमरणानन्तर -मुपवीत तद्भगिनी स्वमातुरनुमतिमात्रेण दत्तकपुत्रत्वेन ग्रहीतु न शक्नोति-इति वङ्गदेशप्रचलितमनुदायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति—अत्र प्रमाणम्—

प्रदान स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनम्॥१॥

कुटुम्बभक्तवसनादेय यदतिरिच्यते—इति विवादभङ्गार्णवादिग्रन्थ धृतवृहस्पतिवचनम्॥२॥

अदत्तन्तु भयक्रोधकामशोकरुगन्वितैः—इत्याद्युपरिलिखितग्रन्थधृत-नारदवचनम् ॥३॥

अत्र भयादिरुगन्वितान्ताः[1] पञ्च प्रकृतिस्थितिविरोधिनो द्रष्टव्याः—इति तत्तद्ग्रन्थलिखनम् ॥४॥

स्वस्थेनार्त्तेन वा दत्तं श्रावितं[2] धर्म्मकारणात् ।

अदत्त्वा तु मृते दाप्यस्तत्सुतो नात्र संशयः ॥-इति तत्तद्ग्रन्थ-धृतकात्यायनवचनम् ॥५॥

न स्त्री पुत्रं दद्यात् प्रतिगृह्णीयाद्वा अन्यत्रानुज्ञानाद्भर्त्तुः-इति दत्तक-मीमांसादिग्रन्थधृतवशिष्ठवचनम् ॥६॥

चूडाद्या यदि संस्कारा निजगोत्रेण वै कृताः ।

दत्ताद्यास्तनयास्ते स्युः—इत्याद्युपरिलिखितग्रन्थधृतकालिकापुराणव-चनञ्चेति ॥७॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमितशब्दीयागस्तमासीयगुणेन्दुमितदि-नसम्बन्धिबृहस्पतिवासरे मया प्रगुणसमर्पितविचारपत्रैतद्विवादविषयनिविष्ट-पत्रजाताङ्करैरवलोकनैः सहितेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(७.)—प्रश्न :—

संन्यासीदासनाम्नः कस्यचिद्धनिनो द्वितीयस्त्रीजात एकः पुत्रो वर्त्तते, एका द्वितीया स्त्री वर्त्तते, एका पुत्रवधूर्वर्त्तते । इदानीं मृतसन्यासीदासस्य स्थावरादिधने एतेषां मध्ये कस्याधिकारः—इति धर्मशास्त्रानुसारेण व्यवस्था लेखनीया ॥

अस्योत्तरम्— उक्तप्रश्नानुसारेण—

सन्यासीदासस्य द्वितीया स्त्री एवं द्वितीयास्त्रीजातनाबालकपुत्रः एवं प्रथमास्त्रीजातप्रथमपुत्रवधूषु सत्सु मृतसंन्यासीदासस्य स्थावरादिधने द्वितीय-

---

१. रोगादि०-इति मूले पाठः २. श्रावितम्-इति का०सू० पाठः ।

स्त्रीजातनाबालकपुत्रस्यैवाधिकार एव, न तु प्रथमास्त्रीजातपुत्रवध्वोरिति- विदुषा परामर्शः ॥०॥

अत्र प्रमाणम्—

पितर्य्यूर्द्ध्वंगते पुत्रा विभजेयुर्धनं पितुः ।

अस्वाम्यं हि भवेदेषां निर्दोषे पितरि स्थिते ॥—इति दायभागधृत- नारदवचनम् ॥ अपरम्—

ऊर्द्ध्वं पितुश्च मातुश्च समेत्य भ्रातरः समम् ।

भजेरन् पैतृकं रिक्थमनीशास्ते हि जीवतोः ॥—इति दायभागधृत मनुवचनम् ॥०॥

श्री दुर्गा

सन्यासीदासेर दुइ स्त्री। प्रथमा स्त्रीते एक पुत्र हय, परे द्वितीया स्त्रीते एक पुत्र हय, ऐ पुत्र नाबालक। प्रथमा स्त्रीते ये पुत्र हय ताहार विवाह हइयाछे[1]। इतो मध्ये ऐ सन्यासी- दास नगर कलिकाता सिमुलिया मध्ये ४ काटा भूमि आपन नामे क्रय[2] करिया आपनि वर्त्तमान थाकिते प्रथमा स्त्रीर औ प्रथम पुत्रेर काल हय। परे ऐ सन्यासीदासेर द्वितीय स्त्री एवं ऐ नाबालक पुत्रः एव मृतपुत्रेर वधू- एइ तिन व्यक्तिके राखिया सन्यासीदास परलोक प्राप्त हय। एइ स्थले उक्त भूमीर बाटी आछे। ताहाते ऐ तिन व्यक्ति वर्त्तमान आछेन। ऐ सन्यासी- दासेर विषय काहार प्राप्त हइवेक- यथाशास्त्र व्यवस्था दिते आज्ञा हय इति।

उत्तर :—

सन्यासीदासेर द्वितीया स्त्रीजात नाबालक पुत्रः, एव द्वितीया स्त्री, प्रथमा स्त्रीजात मृतपुत्रवधू- इहादिगेर मध्ये सन्यासीदासेर स्थावरादि धनेते द्वितीयस्त्रीजात नाबालक पुत्रेर हइवेक इति, इहार प्रमाण—

---

१ इया इयाछे—प्रप० २ क्रय इति साधीयान् पाठ.

श्री श्रीदुर्गाशरणम्

(७५)—रोवकारी मिछिल सदर देओयानि आदालत मोकाम कलिकाता आदालत मजकुरेर हाकिम श्रीयुत हेनरि सिकिस पियर साहेबेर वैठके। तारिख १२ जुलाइ इङ्गरेजी सन १८३५ साल मोताबके बाङ्गला सन १२४२ साल तारिख ३० आषाढ दिवस सोमवार ॥—

कुशाइचन्द्रकविराज आपीलाण्ट

मोछम्मात जयमनी ओ कृष्णमनि ओ कृष्णमनीर मृत्युर पर मोछम्मात जयमनी ओ जयमनीर मृत्युर पर नृसिंहराय—रेष्पा-ण्डण्ट।

आपीलाण्टेर उकिल मुनशी हयदर आलि ओ रेष्पाण्डण्टेर उकिल मुनशी गोलाम बतुल हाजीर आइल। जेला बिरभूमेर देओयाणी आदालतेर जजसाहेबेर रिटरण इ० सन १८३५ सालेर २१ मार्च्चेर लिखित तथाकार रोवकारी सम्बलित ओयारिष सावुदेर लओयाजिमा कागजात सम्बलित मोकद्दमार कागजातेर सामिल अद्य दरपेस हइया, ऐ सनेर २ जुनेर रोवकारि समिभ्यार पढागेल। हुकुम हइल जे एइ मोकद्दमार रेष्पाण्डण्टीते नृसिंहरायेर नाम लेखा जाय। परे अन्य २ कागजात अनुबोधने बोध हइलो जे इ सन १८३१सालेर १०सेतम्बर तारिखे एइ मोकद्दमार कागजात व्यवस्था तलबेते एइ आदालतेर पण्डितेर निकट पाठान गियाछिल, आर ताहार उत्तरे तहकिक हय जे मोछम्मात जयमनी ओ कृष्णमनीक भैरव कविराजेर जोयानि हेवा उचित बट, किन्तु प्रोविण्सीयान कोटर डिगरिर पर, जाहार द्वाराय जेलार फयछला उक्त मोछम्मातादिगेर हक्के बहाल थाके, उक्त मोछम्मात कृष्णमणीर मृत्यु हय, आर मोछम्मात जयमणी जोयाणी हेवार बुनियाद उहार हिस्याते दाविदार हय, एव एइ आदालतेर पण्डित जिज्ञासा मते ए प्रकार हेवा सत्य लिखेन। इ सन १८३२ सालेर १२ माइ ताहार सत्व तावत

हकिकेर हुकुम जेलार जजसाहेबेर नामे छादेर हय। ताहार उत्तरे जजसाहेब ऐ सनेर २६ दिशम्बरेर लिखित रोवकारी तहकिकेर लश्रोयाजिमा सम्बलिप्ट एइ आदालते पाठान। किन्तु मोछम्मात जयमणीर मृत्यु हश्रोया जन्य जे इति मध्ये हइयाछे, उक्त मोछम्मातेर ओयारिष हाजीरेर जन्य इस्तहार जारि हश्रोया प्रयुक्त मोकद्दमार तजविज स्थकिद छिल, अद्य तहकिकेर कागजात ओ गयरह ओ साक्षीगणेर एजहार अनुबोधनेते जयमणीके मोछम्मात कृष्णमणीर जोवानि हेवा सत्वताय पौंछित। किन्तु एइ मोकद्दमार डिगरि हाशील करा ओ एकान्त प्रयुक्त नितान्त अनुमान हय जे ए प्रकार हेवा यदि स्यात् हइयाथाके, तवे उक्त तहकिकेर द्वाराय सामुदाइक विवादीय वस्तु मोछम्मात जयमणीर हक्कें पौंछे। किन्तु उक्त मोछम्मातेर मृत्यु जन्य उक्त मोछम्मातेर ओयारिशेर जन्य एइ मोकद्दमार विवाद पुनराय हइल। एइ प्रकारे जे उभय विवादिर पूर्व पुरुप मोनहरकविराजेर दौहित्रेर पुत्र सुरते विवादीय वस्तुते आपीलाएट हक राखे, कि नृसिंहदेव, जे आपनाके मोछम्मात जयमनीर स्वामीर द्वितीय पत्नेर स्त्रीर पुत्र अर्थात् उक्त मोछम्मातेर सपत्निपुत्र करार देय, ओयारिष हइवेक। ए प्रयुक्त ए विशयेर प्रकाश जन्य हुकुम हइल जे एइ आदालतेर पण्डितेर निकट कागज पाठान जाय एइ हुकुमे जे उपरेर लिखित विशयसकलेते अनुधापन करिया तहार उत्तर दुइ सप्ताह मध्ये लिखेन, आर से पर्य्यन्त हुकुम हश्रोया स्थकिद थाके इति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतदर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतहेनरीसिक्सिपीयरसाहेवधर्म्माधिकरणलिखितेशवीशब्दप्रतिपाद्येगुणगजेन्दुमिताब्दीयजुलाइमासीयगुणेन्दुमितदिनसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवद्विवादनिविष्टपत्रजातञ्च यचदब्दीयतन्मासीयाद्रिपक्षमितदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रभुसमर्पितविचारपत्रलिखितवृत्तान्ते सति जयमनीमरणोत्तरं विवादास्पदीभूततत्यक्तयौतकस्त्रीधने तस्याः प्रपितामहदौहित्रपुत्रसपत्नीपुत्रयोस्समवाये सपत्नीपुत्रस्याधिकार—इति वङ्गदेशप्रचलितमनुदायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

दौहित्रपर्य्यन्तानन्तरमेव सपत्नीपुत्रः—इत्यादि दायक्रमसंग्रहग्रन्थलिखनम् ॥१॥

ईशानीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयश्रितमन्दरमासीयनवमदिनसम्बन्धिबुधवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रैतद्विवादनिविष्टपत्रजातैः सहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

३५६ नं० सदर—

(७६) रोवकारि मिछिल सदर देओयानि आदालत मोकाम कलिकाता आदालत मजकुरेर हाकिम श्रीयुत हेनरि सिकिसपीयरसाहेबेर वैठके। तारिख २२ जुलाइ इङ्गरेजी सन १८३५ साल मोतावके ७ श्रावण बाङ्गला सन १२४२ साल दिवस बुधवार।

शिटवरतसिंह आपीलाण्ट

मोहम्मांव कुडा ओ गयरह रेस्पाडण्टान्

आपीलाण्टेर उकिलगणेर मध्ये मुनशी गोलाम आहम्मद ओ मोहम्मांन कुडा ओ मोहाण्डलसिंह दुइ जन रेस्पाडण्टानेर उकिल सदासुख पण्डित हाजीर आइल, आर रघ्यालाल रेस्पाडण्ट मोटेर इयालामनामा एवं एइ आदालतेर एतलानामा जारि हओयातेओ हाजीर नाहि। एइ आदालतेर कायेम मोकाम हाकीम एडओयार्ड जान हारण्टी साहेबेर ३ सन १८३५ सालेर

১৭ মার্চের লিখিত হুকুমানুসারে এই মোকর্দমার কাগজাত আমার বৈঠকে দরপেশ হইয়া উক্ত তারিখের হাকিম মৌস্কের লিখিত রোবকারির রায় ও প্রথম আদালত সদর আমিনের তজবিজের বাবতের কাগজাত ইস্তক নালিশী আরজি ও তথাকার ফয়ছলা পর্য্যন্ত ও দ্বিতীয় আদালতের বাবত জজ আপীলের কাগজাত ইস্তক মৌজেবাত ও তথাকার ফয়ছলা ও কোর্ট আজিমাবাদে দাখিল হওয়া মৌজেবাতের ন্যায় খাস আপীলের দরখাস্ত ও কোর্ট মজকুরের হাকিম জিমিস হারগেটী সাহেব ও খাস কমীসনর বাবতো আলিয়াট সাহেবের ই০ ১৮২৯ সালের ২২ আপরেল ও ই০ ১৮৩৩ সালের ১৫ আপরেল তারিখের লিখিত খাস আপীল মঞ্জুরির বিশয়ের রায় আর তাহার নামঞ্জুরির বিষয়ে উক্ত কোর্টের হাকিম জেজলি তামস কদবরট সাহেবের ই০ সন ১৮৩২ সালের ৫ জুলাই তারিখের লিখিত রায় ও এই আদালতের দাখিল হওয়া মৌজেবাতের জওয়াব সামুদাইক পড়ান গেল। যদি স্যাত্—প্রকাশ যে এই মোকর্দমা জেলার আদালতে তথাকার পণ্ডিতের ব্যবস্থা মতে ফয়ছেল হয়, আর মেষ্টর বারডো আলিয়াট সাহেব খাস আপীলের মঞ্জুরির রোবকারিতে উক্ত ব্যবস্থার সবতার প্রতি সন্দেহ আনেন। এ অন্য চুড়ন্ত হুকুম ছাদের হওনের পূর্ব্বে এই আদালতের পণ্ডিতের স্থানে এই বিশয়ের বোধকরণ যে জেলার পণ্ডিতের ব্যবস্থা শাস্ত্রানুসার উচিত বটে কি না। কর্ত্তব্যত্ব এই হুকুম হইল যে এই রোবকারির নকল পণ্ডিতের নামের দুই কেতা সওয়াল ও পণ্ডিতের পত্র হইতে তাহার উত্তরের নকল সম্বলিত এই আদালতের পণ্ডিতের নিকট পাঠাইয়া হুকুম দেওয়া যায় যে উক্ত পণ্ডিত উপরের লিখিত বিশয়ের উত্তর দুই সপ্তাহ মধ্যে লিখেন, এবং এই বিশয় যে যদি স্যাত্ বিবাদীয় বস্তু সাধারণ থাকায় কিম্বা সাধারণ না থকায় ব্যবস্থার কোন তফাত হইবেক কি না॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतहेनरीसिक्सपीयरसाहेबधर्म्माधिकरणलिखितेशशीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिता-ब्दीयतुलाह्मासीयद्वाविंशतितमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं तत्समर्पितजिलाख्यावान्तरधर्म्माधिकरणनियुक्तपण्डितसम्बन्धिप्रश्नद्वय तत्पण्डितदत्तोत्तरद्वयञ्च यत्तद्-ब्दीयाग्रहिमासीयषष्ठदिनसम्बन्धिबृहस्पतिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

विवादास्पदीभूतधनमसाधारणं चेत्तदा जिलाख्यावान्तरधर्म्माधिकरणनियुक्तपण्डितलिखितव्यवस्था पश्चिमदेशचलितशास्त्रानुसारिणी भवति। विवादास्पदीभूतधनं साधारणं चेत्तदीयपरिलिखितव्यवस्था पश्चिमदेशचलितशास्त्रानुसारिणी न भवति।

ईशाब्दीयशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयसितम्बरमासीयनवमदिनसम्बन्धिबुधवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रजिलाख्यावान्तरधर्म्माधिकरणनियुक्तपण्डितसम्बन्धिप्रश्नद्वयतत्पण्डितदत्तोत्तरद्वयेन सहितेयं व्यवस्था दत्तेति।

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

यदि[1] कश्चिद्धनवत्यः पत्नीं विहाय मृतस्तर्हि तद्धने तत्पत्न्यधिकारिणी, अपुत्रधनं पत्न्यभिगामि—इति विष्णुवचनात्, अपुत्रा शयनं भर्तुः पालयन्ती व्रते स्थिता, पत्न्येव दद्यात्तत्पिण्डं कृत्स्नमंशं लभेत च इति बृहन्मनुवचनाच्च॥ मिताक्षरादायभागादिमहाग्रन्थानुसारेणेयं व्यवस्थेति—

वदति[2] त्रिपाठिश्रीबोधकृष्णशर्म्मा।

---

(७७) सदर देवानि आदालतेर पण्डित प्रति प्रश्नः—
छुथरे जातिर पात्रर नख काटीले ओ विवाहेर समय ताहार-

[1] न्यस्येयं द्विलिखिता।
[2] वदतिस्थाने त्रिपाठिबोधकृष्णशर्म्मा।

দিগের মাথাতে সূত্র ধরিলে নাপীতদিগের জাতির পর কিছু আঘাত হয় কি না। উচিত যে তুমি যথাশাস্ত্র প্রশ্নের নিচে তাহার উত্তর লিখহ। ইতি সন ১৮৩৫ তারিখ ২৭ মার্চ মোতাবেক সন ১২৪২ তারিখ ১৪ জ্যৈষ্ঠ।

প্রভুসমর্পিতবিচারপত্রং প্রশ্নপত্রঞ্চ যদীশাবীশাব্দপ্রতিপাদ্যেষুগুণগজেন্দুমিতাব্দীয়তুলামাসীয়তৃতীয়দিনসম্বন্ধিশুক্রবাসরে ময়া প্রাপ্তং তদবলোক্য যাদৃশবোধো জাতস্তদনুসারেণোত্তরং লিখ্যতে—

অস্মদ্দেশশাস্ত্রে বিশেষতঃ এতদ্বিষয়কবিধিনিষেধাবিদানীং নোপলভ্যৌ, অতএব লুথর ইতি প্রসিদ্ধজাতীয়পাদনখবপনে বিবাহসময়ে তজ্জাতীয়শিরসি ছত্রধারণে[১] চ নাপিতজাতীয়ানাং জাতিব্যাঘাতস্তদ্দেশে ব্যবহৃতশ্চেত্তদা তত্তৎকর্ম্মকরণে *নাপিতজাতীয়ানাং জাতিব্যাঘাতঃ শাস্ত্রতো ভবত্যেব।* তদ্দেশে এবং ব্যবহারো ন চেত্তদৈবং শাস্ত্রতো ন ভবতি—ইতি বহুদেশাচলিতমন্বাদিধর্ম্মশাস্ত্রানুসারিণী ব্যবস্থেয়ং॥

অত্র প্রমাণম্—

জাতিজানপদান্ ধর্ম্মান্ শ্রেণীধর্ম্মাংশ্চ ধর্ম্মবিৎ।
সমীক্ষ্য কুলধর্ম্মাংশ্চ স্বধর্ম্মং প্রতিপালয়েৎ॥ ইতি মনুবচনম্॥ ১॥

ঈশাবীশাব্দপ্রতিপাদ্যেষুগুণগজেন্দুমিতাব্দীয়বিতস্বরমাসীয়বেদেন্দুমিতদিনসম্বন্ধিচন্দ্রবাসরে *ময়া প্রভুসমর্পিতবিচারপত্রপ্রশ্নপত্রাভ্যাং* ভদ্রিত্থং ব্যবস্থা দত্তেতি ॥—

শ্রীজয়বিতরাম্
শ্রীবৈদ্যনাথমিশ্রেণ

---

(৯৮)

লং : ২২৫ সদর
ল : ৬৪২৩, কোর্ট ঢাকা
মো০ কলিকাতার সদর দেওয়ানি আদালতের ইং : সন ১৮৩৫

১. ছত্র—ইতি সাধীশান্ পাঠ:।

सालेर ५ आगष्ट मोताबेक बाङ्गला सन १२/२ सालेर २१ श्रावण बुधवार दिवसेर ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत थोलारम ग्राडोन साहेबेर येठरेर रोवकारि--

ईशानचन्द्रदास ओ गायरह — आपीलाण्टान

प्राणकृष्णदास — रेस्पाण्डण्ट

आपालाण्टदिगेर उकिलगणेर मध्ये एक व्यक्ति तारकचन्द्र-राय ओ महापुरपण्डित ओ मुनशी राधाकृष्ण, रेस्पाण्डण्टेर उकिलगण हाजीर आछेन ओ श्रीरामराय आपीलाण्टदिगेर द्वितीय उकिल ओ मुनशी होछेनआली रेस्पाण्डण्टेर तृतीय उकिल हजुरे हाजीर नाइ। ए मोकद्दमा ए आदालतेर साबेक कायम मोकाम हाकिम एक्षने हाकिम जार्ज इष्टारुब्रुक साहेबेर सन हालेर १८ आपरल तारिखेर हुकुमानुसारे अद्य आमार पैठक उपस्थित हइया जेलार आदालतेर फयशला ओ अन्य २ दोपरा कागजात हाकम मौसुफेर ऐ तारिखेर रोवकारिर विस्तारित लिखित रायेर सम्बलित पाठ करागेल। ऐ हुकुम देखोनेर पूर्व्वे निचेर लिखित विशयेर प्रत्युत्तर ए आदालतेर पण्डितेर स्थान हइते लओया उचित बोध हइल। ए कारण हुकुम हइल ये एइ रोवकारिर नकल एइ हुकुमे ये निचेर लिखित विशयेर प्रत्युत्तर एइ रोवकारिर नकल पाओनेर दिवसावधि पञ्चम दिवसेर मध्ये लेखेन—ए आदालतेर पण्डितके अपन कराजाय।

प्रश्न :—यद्यपि स्यात् एक व्यक्ति हिन्दु, ये ताहार माट विषय कान तालुकेर केवल छय आनाछिल, ताहार मध्ये चारि आना आपन वर्त्तमान स्त्रीके ओ दुइ आना आपन द्वितीय मृत स्त्रीर गर्भ जाता कन्याके हेबा करे, ओ ऐ कन्या आपन स्वामीर मृत्युर पर दश वत्सर वयक्रमे आपन विमातार समिक्षे लोकान्त हय तबे बङ्गदेशीय चलित शास्त्रानुसारे ऐ कन्यार तेज्य विशयेर उत्तराधिकारि ताहार विमाता किम्वा ताहार स्वामीर पिता हइबेक इति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतओलियमवेराडीनसाहेबधर्म्माधिकरण-लिखितेयं शीशक्रप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयाग्निमासीयप्रथमदिवसीय-विचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदब्दीयतन्मासीयप्रथमदिवसीयषष्ठ-दिनसम्बन्धिबृहस्पतिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनु-सारेणोत्तरं लिख्यते ॥—

प्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति तत्कन्यात्यक्तधने श्वशुरोऽधिकारी भवति । इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥—

अत्र प्रमाणम्

ततः श्वशुरः —इति दायभागटीका(पृ० २१८ लिखनम् ॥१॥

ईशाग्नीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयसितस्वरमासीयचेदेन्दुमितदि-नसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रसहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

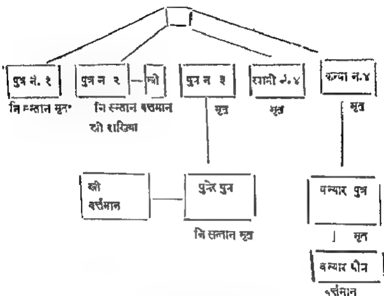
श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(७९) कोन व्यक्तिर द्वितीय ओ तृतीय पुत्र आपन २ धर्मेर द्वारा कयेक ग्राम लाभ करिल। ताहार पर द्वितीय पुत्र निःसन्तान एक स्त्री राखिया मरिल। तृतीय पुत्रेर पुत्रओ निःसन्तान एक स्त्री राखिया मरिल, एवं ऐ स्त्री एखन पर्य्यन्त निःसन्तान वर्त्तमान आछे। इहाते जिज्ञासा करा जाय—१ प्रथम सओयाल—एइ ये ऐ द्वितीय पुत्रेर विधवा स्त्री एवं तृतीय पुत्रेर पुत्रवधू ऐ कयेक ग्रामे अधिकार थाके कि ना, यदि थाके तबे कि पर्य्यन्त थाके—

२ द्वितीय सओयाल—एइ ये द्वितीय ओ तृतीय पुत्रेर भगिनीर पौत्रेर ऐ कयेक ग्रामे अधिकार थाके कि ना॥

एइ व्यवस्था वाराणसी देशेर चलित शास्त्रानुसारे देओया याय इति॥



श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितवङ्गदेशीयान्तरप्रश्नपत्रं वंशावलीपत्रं च यदीशवीशब्दमतिपार्श्वेगुणगजेन्दुमिताब्दीयाक्तूबरमासीयाङ्कपक्षमितदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥

प्रथमप्रश्नस्योत्तम्—

प्रभुसमर्पितप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति द्वितीयपुत्रतृतीयपुत्राभ्यामुपार्जिता ग्रामाः पितृव्यभ्रातृपुत्रयोर्मध्ये साधारणाः स्थिताः, एवं द्वितीयपुत्रो विद्यमाने च भ्रातृपुत्रे मृतः स्यात्तदा मृतस्य पितृव्यस्य पत्न्या यावज्जीवं स्वपतिविभवोचितग्रासाच्छादनोपयुक्तावश्यकविधवाधर्म्माद्याचरणोपयुक्तधने अधिकारः । यदि च द्वितीयपुत्रतृतीयपुत्राभ्यामुपार्जिता ग्रामाः पितृव्यभ्रातृपुत्रयोर्मध्ये साधारणा न स्थिताः, अथवा साधारणा अपि विभक्ता आसन्, एवं स एव द्वितीयः पुत्रो जीवति भ्रातृपुत्रे च मृतः स्यात्तदा मृतस्य

पितृव्यस्यासाधारणस्वत्वास्पदीभूतधने विभक्तधने वा तत्पत्न्या एव यावज्जीवमधिकारः। यदि च द्वितीयपुत्रतृतीयपुत्राभ्यामुपार्जिता ग्रामाः पितृव्यभ्रातृपुत्रयोर्मध्ये साधारणाः स्थिताः, अथ च स एव द्वितीयः पुत्रो मृते च भ्रातृपुत्रे मृतः स्यात्तदा द्वितीयपुत्रतृतीयपुत्राभ्यामुपार्जित-ग्रामसमुदायेषु द्वितीयपुत्रस्यैव साधारण्यप्रतियोगिनोऽसाधारणस्वत्वोत्पत्तेस्तत्पत्न्या एव विवादास्पदीभूतसमुदायग्रामेषु यावज्जीवमधिकारः एव। तृतीयपुत्रस्य पुत्रो यदि विद्यमाने पितरि मृतः स्यात्तदा तस्य पितृधने असाधारणस्वत्वानुत्पत्तेस्तत्पत्न्या अपि तद्धने नाधिकारः, किन्तु यावज्जीवं स्वपतिविभवोचितग्रासाच्छादनोपयुक्तावश्यकविषयाधर्माचारणोपयुक्तधने अधिकारः। तृतीयपुत्रस्य पुत्रो यदि मृते पितरि पितृव्ये च जीवति मृतः स्यादेवं द्वितीयपुत्रतृतीयपुत्राभ्यामुपार्जिता ग्रामा द्वितीयपुत्र-तृतीयपुत्रयोर्मध्ये साधारणाः स्थितास्तदा मृतस्य तृतीयपुत्रपुत्रस्य पत्न्या यावज्जीवं स्वपतिविभवोचितग्रासाच्छादनोपयुक्तावश्यकविषयाधर्माचारणोपयुक्तधनेऽधिकारः। तृतीयपुत्रस्य पुत्रो यदि मृते पितरि पितृव्ये च जीवति मृतः स्यादेवं द्वितीयपुत्रतृतीयपुत्राभ्यामुपार्जिता ग्रामा द्वितीयपुत्र-तृतीयपुत्रयोर्मध्ये साधारणा न स्थिताः, अथवा साधारणा अपि विभक्ता जातास्तदा मृतस्य तृतीयपुत्रपुत्रस्यासाधारणस्वत्वास्पदीभूतधने विभक्तधने वा तत्पत्न्या एव यावज्जीवमधिकारः। यदि च द्वितीयपुत्रतृतीयपुत्रा-भ्यामुपार्जिता ग्रामाः पितृव्यभ्रातृपुत्रयोर्मध्ये साधारणाः स्थिताः, अथ च तृतीयपुत्रस्य पुत्रो मृते पितरि पितृव्ये च मृते मृतः स्यात्तदा द्वितीयपुत्र-तृतीयपुत्राभ्यामुपार्जितग्रामसमुदायेषु तृतीयपुत्रपुत्रस्यैव साधारण्यप्रतियो-गिनोऽसाधारणस्वत्वोत्पत्तेस्तत्पत्न्या एव विवादास्पदीभूतसमुदायग्रामेषु[1] यावज्जीवमधिकार इति।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा।
तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः शिष्यः सब्रह्मचारिणः॥
एषामभावे पूर्वस्य धनभागुत्तरोत्तरः।

---

१. °समुदाय°—ख्य°।

स्वर्य्यातस्य ह्यपुत्रस्य सर्व्ववर्णेष्वयं विधिः ॥ इति मिताक्षरावीरमित्रोदयादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥१॥

पत्नी गृह्णीयादित्येतद्वचनजातं विभक्तभ्रातृस्त्रीविषयम्—इति मिताक्षराग्रन्थलिखनम् ॥२॥

तस्मादपुत्रस्य स्वर्य्यातस्य विभक्तस्यासंसृष्टिनो धनं परिणीता स्त्री संयता सकलमेव गृह्णातीति स्थितम्—इति मिताक्षरा(पृ० २२१)ग्रन्थलिखनम् ॥३॥

स्वर्य्याते स्वामिनि स्त्री तु ग्रासाच्छादनभागिनी ।
अविभक्ते धनांशे तु प्राप्नोत्यामरणान्तिकम् ॥ इति वीरमित्रोदयादिग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥४॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्

द्वितीयपुत्रतृतीयपुत्रयोस्त्यक्तकथने तयोर्भगिनीपौत्रस्याधिकारप्रतिपादकशास्त्राभावाद्राज्प्रसादं विना नाधिकार:—इति वाराणसीप्रदेशप्रचलितमनुमिताक्षरावीरमित्रोदयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥—

ईशवीयाब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयदिशम्बरमासीयदशमदिनसम्वलितबृहस्पतिवासरे मया प्रभुप्रमर्पितप्रश्नपत्रवशात्रचीपत्राभ्यां सहितैव व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(८०) श्रीगणेशाय नमः । अवधूराय धूरीराय-सरन्प्रराया भ्रातरः सहोदरा आसन् । तेषां मध्ये अवधूरायनाम्नान्यदायादोपार्जितग्रामः परहस्तगतो निजप्रयत्नेन स्वभोग्ये आनीतः । स ग्रामः पूर्व्वोपार्जितादन्यः । यदा अवधूरायेण ग्रामार्थं वादिना सह विवाद आरब्धस्तदा धूररायेण तद्भ्राता न स्वीकृतः, उक्त च नाहं विवादं करिष्यामीति, स्वांशोऽपि न गृहीतः । तदनन्तरं ग्रामविभागावसरे अवतारराययोऽवधूरायात्मजः हरिगोविन्दराययो

धूरीरायात्मजः सर्वजितरायस्मरनामरायात्मजः तेषां मध्ये हरिगोविन्द-रायेण भागो न स्वीकृतः, उक्तं मत्पित्रा भागो न गृहीतस्तस्मादहमपि न ग्रहीष्यामीति । ग्रामविभागावसरे रामजतनरायप्रभृतय उत्पन्ना आसन्, परञ्चार्तावबालकाः हरिगोविन्दरायात्मजाः । साम्प्रतं हरिगोविन्दराय त्मजा रामजतनप्रभृतयो भागमर्थयन्ते । ते पितृतिरस्कारेण पूर्वं पित्रा भागो न स्वीकृतः, अतो भागार्हा न भवन्ति वा भवन्तीति प्रश्ने––

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितसंस्कृतप्रश्नपत्रं पारशीकप्रश्नपत्रञ्च यदीयवीशाब्दप्रतिपाद्ये-पुगुणगजेन्दुमिताब्दीयाश्विनमासीयचतुर्थदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते–

प्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति विवादास्पदीभूतग्रामस्येदानीं विभागमर्थयन्तो हरिगोविन्दरायात्मजा रामजतनरायप्रभृतयो विभागार्हा न भवन्त्येव । अन्य-दायादोपार्जितग्रामे यथा पितृपितामहाभ्यां द्वाभ्यां विक्रयेण तयोर्द्वयोः स्वत्व-नाशे न पौत्राणां स्वत्वनाशो भवति, तथा पितृपितामहयोः स्वांशग्रहणोपेक्षा-मूलकस्वत्वनाशेनाप्राप्तव्यवहाराणां पौत्राणां विभागमर्थयतामपि स्वत्वनाशः शास्त्रविवेचनया भवितुं शक्नोत्येव इतिपश्चिमदेशप्रचलितमनुमिताक्षरावीर-मित्रोदयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ।—

अत्र प्रमाणम्—

संविभागक्रयप्राप्तं पित्र्यं लब्धं च राजतः ।

स्थावरं सिद्धिमाप्नोति भुक्त्या हानिमुपेक्षया ॥ इति वीरमित्रोदयादि-(पृ० २०१)ग्रन्थधृतबृहस्पति(पृ० ७२)वचनम् ॥१॥—

ईशावीशाब्दप्रतिपाद्येपुगुणगजेन्दुमिताब्दीयदिराश्विनमासीयार्कमितदिन-सम्बन्धिशनिवासरे मया प्रभुसमर्पितसंस्कृतप्रश्नपत्रपारशीकप्रश्नपत्राभ्यां सहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(८१) प्रश्नः—

यथाशास्त्रानुसारे पण्डितेर प्रति जिज्ञास्य हइयाछे—

१ दफा—

यद्यपि एक व्यक्ति धर्म्माकाङ्क्षी हइया तीर्थयात्रा करिया २० वत्सरेर मध्ये आपन वासस्थाने पुनरावृत्ति ना हइया सर्व्वदा अज्ञात थाके, ताहाते एइ जिज्ञास्य ये ऐ संवाद रहित व्यक्तिर जीवनावशेष विवेचित हय कि ना।

आर ऐ व्यक्तिर समुदाय वस्तु दान ग्रहीता व्यक्तिसकले ऐ अज्ञातसंवादी अर्थात् अनुद्दिश्य व्यक्तिर तीर्थयात्रार पूर्व्वकृत दखल प्रमाण प्राप्त वस्तु ऐ लिपिर निर्द्धारित मते आपन २ अंश विभाग करिया लइते पारे कि ना, येमन एक मृत व्यक्तिर इष्टेटेर न्याय—

२ दफा—

एवं ऐ व्यक्ति आपन वासस्थाने २० वत्सरेर मध्ये किम्वा परे पुनरावृत्ति हइले उहार निज वस्तुसकलेर मालिकत्व रहित हइया अनधिकारि हइबे कि ना—एइ पण्डितेर व्यवहार अविषयक हइयाछे, शास्त्रानुसारे व्यवस्था आज्ञा हय इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितविचारपत्रं प्रश्नपत्रञ्च यदीयाबीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दु-मिताब्दीयागष्टमासीयद्वाविंशतितमदिनसम्बन्धिशनिवासरे प्रभुसमर्पित-विचारपत्रान्तरञ्च यच्चन्द्रीयसितम्बरमासीयदशमदिनसम्बन्धिबृहस्पतिवासरे मया प्राप्त तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति प्रस्थानदिनमारभ्य विंशतिवर्षपर्य्यन्त संवादरहितस्य मरणावधारणं शास्त्रतो भवति। एवञ्च सति तदीय[1]

---

१ तदीयस्यानुदाय० —स्य०।

समुदायधनं तत्कृत-उइलशब्दप्रतिपाद्यलिपिनिर्द्धारितस्वस्वांशानुसारेण दान-ग्रहीतारो मृतस्य कस्यचित् त्यक्तधने तदुत्तराधिकारिन्यायेन विभज्य ग्रहीतुं शास्त्रतः शक्नुवन्तीति ।

अत्र प्रमाणम्—

गतस्य न भवेद् वार्त्ता यावद् द्वादशवार्षिकी ।

प्रेतावधारणं तस्य कर्त्तव्यं सुतबान्धवैः ॥—इति तिथितत्त्वादि(पृ० २०) ग्रन्थधृतयमवचनम् ॥१॥

प्रदानं स्वाम्यकारणम्–इति मनुवचनम् ॥२॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

स एव प्रस्थितो व्यक्तिविशेषो यदि विंशतिसंवत्सरमध्ये तत्परतो वा पुनरागच्छति तदा प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितानुमितप्रस्थितमरणावधारणप्रयुक्त-स्वत्वनाशस्तस्य स्वकीयधने न भवति । प्रत्यागमनेन सम्भावितस्वत्वनाशस्य प्रस्थितागमनेन बाधितत्वात् । किन्तु प्रथमप्रश्ने दानोल्लेखो लिखितः । तत्र दाने यद्ययं नियमो दातुर्यावदहं जीवामि न जीवामि वोभयथैव दान-ग्रहीतृणां तद्धनं भविष्यति तदैवाढ्यदानेन दातुः स्वत्वत्यागेन स्वामित्व-राहित्यं शास्त्रीयमेव । यदि तद्दाने अयं नियमो यदहं जीवामि तदा तद्धनं ममैवास्ति, यदि न जीवामि तदा दानग्रहीतृणां भविष्यति, तदा दातुर्जीवन-दशायां दातुः स्वत्व(?)त्यागेन स्वामित्वराहित्यं न भवति–इति वङ्गदेश-चलितमनुदायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ।

अत्र श्रीइल-शब्दप्रतिपाद्यलिपिमदृष्ट्वा प्रश्नयोराशयः सम्यङ् न ज्ञातोऽत एवैवमुत्तरं लिखितमिति निवेदनम् ॥—

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितद्वितीयप्रमाणम् ॥ १ ॥

सोपाधिदानमुपाध्यसिद्धावसिद्धम्—इति विवादभङ्गार्णवग्रन्थलिख-नञ्चेति ॥२॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्ये गुणगजेन्दुमिताब्दीयदिशम्बरमासीयमुनीन्दुमित-

दिनसम्बन्धिबृहस्पतिवासरे मया प्रमुसमर्पितोपरिलिखितांच.रात्रद्वय-
प्रश्नपत्रैः सहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(८०)—रोबकारि मिछिल सदर देओयानि आदालत मो०
कलिकाता। आदालत मजकुरेर हाकिम श्रीयुत हेनरि सिक्सि-
पियेर साहेबेर बैठके तारिख ६ आगष्ट ईं सन १८३५ साल
मोतावके २२ श्रावण सन १२४२ साल बाङ्गला दिवस
बृहस्पतिवार।—

बैठल छापल—

छापलेर पक्षेर एक केता ओकालतनामा मुनशी आब्बाछ
आलि दाखिल करिया हाजीर आइल। इतः पूर्व्वे ईं सन १८३५
सालेर २० जुलाइ तारिखे ओलिएम बेराडीन साहेबेर ये सनेर
१६ जुनेर छादेर हओया हुकुम मोतावक छापलेर छओयाल
तत्समभिव्यारि कागजात उपस्थित हइया छापलेर गरहाजीरि
मजुक मुलतवि छिल, अद्य पुनराय उपस्थित हइल। एइ आदाल-
तेर हाकीमान ओलिएम बेराडीन साहेब ओ डेविड इरमीट
साहेबेर २ जानेओयारि ओ १६ जुनेर छादेर हओया रायेर सहित
पडागेल। यदि स्थाव येइ छओयाल छरछरि आपील मञ्जुरिर
प्रार्थनाय घटे, ईं सन १८१४ सालेर २६ कानुनेर ३ दफार २
धारार लिखित प्रकरणसकल ताहार मञ्जुरिर जन्य प्रकाश
नाइ, ये तदृष्टे मञ्जुरिर योग्य हय, आर जज साहेबेर फयछलार
उपर, जाहा रेजष्टर साहेबेर फयछलार पर हय, ताहार खास
आपील प्रचलित कानन मते मञ्जुर हइते पारे ना। ए प्रजुक
आमार राय ओलिएम बेराडीन साहेबेर १६ जुनेर लिखित
रायेर सहित एइ प्रकारे ऐक्य हय—ये ताहार मञ्जुरिर हुकुम

छादेर हइते पारे ना। किन्तु यदि स्यात् एइ आदालतेर तावेर कोन आदालते नितान्त आइनेर वहिर्भूत कोन हुकुम छादेर हय, आर से मोकद्दमा खास आपील मञ्जुरिर योग्य ना हय, ताहार दोरस्त करा ए आदालत हइते उचित। तद्दृष्टे ए आदालतेर पण्डितेर स्थाने एइ विशय जिज्ञासा उचित जे छापन ओ अन्य २ मुर्दाआलेहमेर गोलामीर विशयेर मोकद्दमा शास्त्र मतो तहकिक हइया निष्पत्य हइयाछे, कि ना। परे हुकुम हइल जे एइ रोयकारिर नकल डेविड इस्मीट साहेव हाकीमेर तलव मते, ये कागज पौछियाछे, ताहा सम्वलित एइ आदालतेर पण्डितेर निकट एइ हुकुमे पाठान जाय ये उक्त पण्डित उपरेर विशयेर जओयाव लिखेन। यदि स्यात् जजसाहेवेर फयछलाय तजविजेर कोन व्यतिक्रम प्रकाश हय तवे ताहार शोधन करार जन्य हुकुम छादेर हइते पारे, आर यदि पण्डितेर जओयावेर द्वाराय व्यतिक्रम प्रकाश ना हय, ए आदालतेर हस्तार्पणेर कोन कारण हइते पारिवेक ना इति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतहेनरीसिक्सिपीयरसाहेबधर्म्माधिकरणलिखितेशवीशब्दप्रतिपाद्येगुणगजेन्दुमिताब्दीयागस्तिमासीयपष्ठदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं तत्समर्पितैतद्विवादविषयनिविष्टपत्रजातं च यचदब्दीयतन्मासीयरसचन्द्रमितदिनसम्बन्धिबुधवासरे मया प्राप्त तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

एतद्धर्माधिकरणार्थिनस्तदितरप्रत्यर्थिनां च दासत्वविषयकविवादनिष्पत्तिःशास्त्रानुसारेण जातास्ति-इति मन्वादिशास्त्रानुसारिणी व्यवस्थेति।

अत्र प्रमाणम्—

गृहजातस्तथा क्रीतो लब्धो दायादुपागतः—इत्यादि नारदवचनम् ॥१॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयजानवरीमासीयशिवमितदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रैः तद्विवादविषयनिविष्ट-

पत्रजाते सहिनेश व्यवस्था ददाति ॥

श्रीउर्ज्जयतितराम्
श्रीरघुनाथमिश्रेण

---

(८२) श्रीदुर्गा शरणम्

सवालेर तरजमा—

यद्यपि एक व्यक्ति हिन्दु आपन वृद्ध प्रपितामहेर सहोदर भ्रातार पौत्रेर वंश ओ आपन वृद्ध प्रपितामहेर वैमात्रेय भ्रातार पौत्रेर वंश एइ दुइ व्यक्ति ओयारिश राखिया मरियाछे, ए प्रकारे शास्त्रानुसारे ऐ मृत व्यक्तिर त्यक्त धन, अस्थावर हउक, किम्वा स्थावर हउक, विभक्त हउक, किम्वा अविभक्त हउक, उभयेर वंशके अर्शिवेक, किम्वा मृत व्यक्तिर वृद्धप्रपितामहेर सहोदर भ्रातार पौत्रेर वंश, ये अव्यवहित सम्पर्की बटे, केवल सेइ पाइवेक इति ।

मूल पुरुष ताहार दुइ पत्नी

एक पत्नीर दुइ पुत्र		द्वितीय पत्नी
ताहार मध्ये एक पुत्र	द्वितीय पुत्र	ताहार पुत्र
तस्य पुत्र	तस्य पुत्र	तस्य पुत्र
तस्य पुत्र	तस्य पुत्र	तस्य पुत्र
तस्य पुत्र	तस्य पुत्र	तस्य पुत्र
तस्य पुत्र	तस्य पुत्र	तस्य पुत्र

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं विचारपत्रद्वयं च यदीशवीशब्दप्रतिपाद्येषु-गुणगजेन्दुमिताब्दीयमार्गशीर्षमासीयद्वाविंशतितमदिनसम्बन्धिशनिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥

प्रभुसमर्पितप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति मृतधनिवृद्धप्रपितामहसहोदरभ्रातृपौत्रवंशमृतधनिवृद्धप्रपितामहवैमात्रेयभ्रातृपौत्रवंशयोर्म्मध्ये मृतधनिवृद्धप्रपितामहसहोदरभ्रातृपौत्रवंशस्यैव मृतधनित्यक्तविभाज्यदायदीभूतधने मृतधनिसन्निकृष्टसपिण्डत्वेनाधिकारः—इति पश्चिमदेशचलितमनुमिताक्षरादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥

अत्र प्रमाणम्—

अनन्तरः सपिण्डाद्यस्तस्य तस्य धनं भवेत्-इति मिताक्षरादिग्रन्थधृतमनुवचनम् ॥१॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यखगुणगजेन्दुमिताब्दीयमार्गशीर्षमासीयरसेन्दुमितदिनसम्बन्धिशनिवासरे मया प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रविचारपत्रैः सहितेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण



(८४) सवकारि मिछिल आदालते देश्रोयानि सदर मोकाम कलिकाता आदालत मजकुरार हाकिम श्रीयुत जार्ज्ज इष्टाकोयेल साहेवेर बैठके। सन १८३५ तारिख ११ डिसेम्बर मोताबके सन १२४२ बाङ्गला तारिख २७ अग्रहान रोज शनिवार ॥

४२४ लम्बर सदर—

जगन्नाथवसु	आपीलाण्ट
रामकानाइवसु	रेस्पाण्डेण्ट

আপীলাণ্টের উকিল সিবনারায়নচট্টোপাধ্যায় উপস্থিত হইল। রেস্পাণ্ডেণ্ট স্বততঃ বা উকিলতঃ উপস্থিত নাই। মকর্দ্দমা তরতিব নম্বর মতে বর্ত্তমান বৎসরের ১ ডিসেম্বর তারিখে আমার বৈঠকে রুবকার হইয়া কতক কাগজাত দৃষ্টির পরে ঐ দিবসের রুবকারির লিখিত হেতুতে মোলতবি ছিল, অদ্য পুনরায় রুবকার হইয়া হিসাবের বিষয়ে আপীলাণ্টের উকিলের কথার আভাষ বিবেচনায় উচিত হইল যে মিছিলের সম্বলিত ২ দুই খাতা এই আদালতের খাজাঞ্চীর জিম্বা করা জায়। জে সে রামকানাইবসুর খাতার লিখিত অঙ্কসকল, জাহা তারিণী-চরণবসু ও জগন্নাথদাসের নামে লিখিত আছে, জগন্নাথ-দাসের খাতার অঙ্কসকলের সহিত, জাহা রামকানাইবসুর নামে লিখিত আছে, মোকাবেলা অর্থাৎ ঐক্য করিয়া সমান অথবা ন্যূনাতিরেক, জাহা প্রকাশ হয়, তাহার কৈফিয়ত দাখিল করে। এব জে হেতু প্রকাশ আছে জে ফরিয়াদী রামকানাইবসু পিতা ও এই মকর্দ্দমার এক জনা আসামী তারিণীচরণবসু উহার পুত্র এবং ফরিয়াদির নিকট এই মকর্দ্দমার দাবির টাকা কর্জ লওন আসামির সহিত অর্থাৎ পিতা পুত্রের এক স্থান বাস ও একান্ন-ভুক্তের সময় প্রকাশ আছে। অতএব আদালতের পণ্ডিতের স্থানে এ বিষয়ের প্রশ্ন, জেমত প্রকার বিষয়ে পিতা কর্ত্তৃক পুত্রের প্রতি কর্জ্জ টাকা প্রাপ্তি জন্য নালিশ এ প্রদেশের চলিত শাস্ত্র মতে বৈধ এবং জথার্থ বটে কি না, আবিশ্যক। অতএব হুকুম হইল জে এই রুবকারির নকল এই বিষয়ের উত্তর লিখনের ইঙ্গিতে জে যদি স্যাৎ পুত্র পিতার স্থানে একত্র বাস ও একান্নভুক্ত অবস্থায় টাকা কর্জ লয়, তাহা প্রাপ্তি জন্য পুত্রের প্রতি পিতার নালিস বৈধ ও যথার্থ বটে কি না-এই আদালতের পণ্ডিতের নিকট প্রেরিত হয়, এবং মকর্দ্দমার মিছিলের সম্বলিত খাতা আদালতের খাজাঞ্চীর জিম্বা হয়-জে সে উপরের লিখিত মত কৈফিয়ত ১ এক সপ্তাহের মধ্যে গোজরায় ইতি ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतजार्ज्जइयथकोप्लसाहेवधर्म्माधिकरणलिखिते शकीयाब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयदिगम्बरमासीयरविमितदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यच्चाब्दीयतन्मासीयमुनीन्दुमितदिनसम्बन्धिगुरुवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।।–

यदि पितापुत्रयोरेकशाकेन वसतोर्म्मध्ये पुत्रः पितुः सकाशाद् भूयो गृह्णाति तदा तत्प्राप्त्यर्थं पुत्रं प्रति पितुरभियोगः शास्त्रविहितो न भवति—इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ।।—

अत्र प्रमाणम्—

भ्रातॄणामथ दम्पत्योः पितुः पुत्रस्य चैव हि ।

प्रातिभाव्यमृणं साक्ष्यमविभक्ते न तत्स्मृतम् —इति विवादभङ्गार्णवादि(१ विवा० १५२ क ,ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य(पृ० २१५२)वचनम् ।।१।।

ईशकीयाब्दप्रतिपाद्यशरगुणगजेन्दुमिताब्दीयफिवरवरीमासीयदिङ्मितदिनसम्बन्धिबुधवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रसहितेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण



(८५) मोकाम कलिकातार सदर देओानि आदालतेर इं० सन १८३५ सालेर १६ दिजम्बर मोताबेक बाङ्गला सन १२४२ सालेर २ पौष बुधवार दिवशेर श्रीयुत ओलीयम ब्राडिन साहेवेर बैठकेर रोवकारि—

भिक्षनारायणसिंह बनामे तिलकधारिसिंह ओ भिक्षधारिसिंह ओ गायरह ।

छायेलेर उकिल मुनशी ओलीउल्ला हाजिर आइल । पञ्चाश

টাকা মূল্যের ইষ্টাম্পের পর ছাপেলের দরখাস্ত মৌজে ভজাপট্টীর অর্দ্ধেক ও মৌজে নশ্রোরুল্লাবাদের মোছলমের চারি আনা ও মৌজে নোমা ও মৌজে দিখি ও গায়রহর মোট সোল আনার বারো আনা হিস্যার দখল পাইবার ও হকীয়তের তজবিজের ও কালেক্টরির কেতাবে নাম লেখাইবার মোকদ্দমায় জমা রুলের তিন গুণ ও বয়েবাদির টাকা মুবলগে এক হাজার দুই সত শাতশষ্টী টাকা সাড়ে দশ আনার সংখ্যায় খাস আপিল মঞ্জুর হওনের প্রার্থনায় উকিল মজকুরের নামের উকালতনামা ও সন ১৮৩৩ সালের ৮ জুলাই তারিখের লিখিত তেরহোত জেলার সদর আমিনের তজবিজ করা এক কেতা ডিগরির নকল ও সন ১৮৩৫ সালের ২০ আগষ্ট তারিখের পে জেলার জজসাহেবের এক কেতা ফয়শালার নকল ও সন ১৮১৬ সালের ৩০ জুলাযর লেখা জেলা মজকুরের রেজষ্টর সাহেবের এক কেতা ফয়সালার নকল ও সন ৯৮১৬ সালের ২১ জুলাইয়ের প্রকাশ হওা তেরহোত জেলার আদালতের পণ্ডিতের এক কেতা ব্যবস্থার নকল সম্বলিত, যে এই মাসের প্রথম দিবসে দাখিল হইয়াছিল, অদ্য দরপেষ হইয়া হুষ্টে আইল। কোন হুকুম প্রকাশ হওনের পূর্ব্বে শাস্ত্রের বিবরণ জ্ঞাত হওা উচিত বোধ হইল। এ কারণ হুকুম হইল যে এই রোবকারির নকল এই হুকুমে যে নিচের লিখিত বিশয়ের প্রত্যুত্তর নকল রোবকারি প্রাপ্তের দিবসাবধি পঞ্চম দিবসের মধ্যে লেখেন—এ আদালতের পণ্ডিতকে অর্পন করা যায়।

প্রশ্নঃ—যদ্যপি স্যাৎ তেরহোত জেলা নিবাসীয় দুই ব্যক্তি হিন্দু পৈতৃক বিশয়ের পর সাধারণে দখলীকার ও উদ্ধারা দেনাদার, এবং উভয়ের অপ্রাপ্তব্যবহার পুত্রগণ থাকে, আর এমন কোন বিশয় উহাদিগের না থাকে জে তাহা হইতে উহাদিগের দেনার টাকা পরিশোধ হইতে পারে ও উদ্ধারা অনুপায়ে পৈতৃক বিশয় অপ্রাপ্তব্যবহার পুত্রগণ থাকিতেও আপন ২ মহাজনের দেনা পরিশোধার্থে[১]

১—পরিশোধার্থ-বঙ্গ০।

विक्रय अथवा तमलीक करे, तबे ऐ विक्रय ओ तमलीक पश्चिम-देशीय चलित शास्त्रानुसारे सिद्ध बटे कि ना इति ।

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतश्रोलियमवेराडीनसाहेबधर्म्माधिकरण-लिखितेशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयदिशम्बरमासीयरगेन्दुमित-दिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदब्दीयतन्मासीयवेदपक्षमित-दिनसम्बन्धिबृहस्पतिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनु-सारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रभुसमर्पितप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सत्येतादृशविक्रयस्तमलिकशब्दप्रति-पाद्यं च शास्त्रानुसारेण सिद्ध्यति—इति पश्चिमदेशचलितमनुमिताक्षरा-प्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥ —

अत्र प्रमाणम् —

अप्राप्तव्यवहारेषु पुत्रेषु पौत्रेषु चानुज्ञानादावसमर्थेषु भ्रातृषु वा तथाविधेष्वविभक्तेष्वपि सर्व्वकुटुम्बव्यापिन्यामापदि तत्पोषणे चावश्य-कर्त्तव्येषु च पित्रादिश्राद्धादिषु स्थावरस्य दानाधमनविक्रयमेकोऽपि समर्थः कुर्य्याद्—इति मिताक्षरा(पृ० २००)ग्रन्थलिखनम् ॥१॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयाफ्ररयरीमासीयैकादश-दिनसम्बन्धिबृहस्पतिवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रमुद्दिश्येयं व्यवस्था दत्तेति ॥ —

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(८६) प्रथम प्रश्नः—

यदि कोनो व्यक्ति दुइ स्त्री राखिया लोकान्तर हय, आर ताहार ज्येष्ठा स्त्री अघोरा, कनिष्ठा स्त्रीर गर्भजातक कन्यार एक पुत्र अर्थात् मृता व्यक्तिर दौहित्र सन्तान थाके, तबे एतद्देशीय चलित शास्त्रसम्मत उत्तराधिकारि के हइते पारे ?

द्वितीय प्रश्नः—

यद्यपि एतद्देशीय चलित शास्त्रानुसारे दौहित्र सन्तान उत्तराधिकारि हय, तवे ऐ ज्येष्ठा अवीरा स्त्रीर जीवनावधि भरण-पोषणार्थेर कि हइते पारे। सन १८२५ साल तारिख २७ जुलाइ मो० सन १२४२साल तारिख १२श्रावण।

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्र विचारपत्रद्वयं च यदीशबोशब्दप्रतिपाद्येपुगुण-गजेन्दुमिताब्दीयस्तितस्वरमासीयशिवनेत्रमितदिनसम्बन्धिगुरुवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रथमप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति मृतस्य धनिनो द्वे पत्न्यौ जीवन्त्यौ चेत्तदा द्वयोः पत्न्योरेव मृतस्य धनिनस्त्यक्तस्थावरास्थावरसमुदायधने यावज्जीवं समानाधिकारः। तयोर्द्वयोः पत्न्योर्म्मध्ये एका चेज्जीवन्ती, तदा केवलं तस्या जीवन्त्या एव यावज्जीवं मृतधनित्यक्तसमुदायधनेऽधिकारः। जीवन्त्योर्द्वयोः पत्न्योर्जीवन्त्यां वैकस्यां पत्न्यां मृतधनिदुहितुर्दौहित्रस्य वा मृतधनित्यक्त-धने नाधिकार इति।

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरमप्यर्थादत्रैवपर्य्यवसन्नमिति पृथङ् न लिखितम्—इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति॥

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा—इत्यादि दायभागादिग्रन्थधृत-याज्ञवल्क्यवचनम् ॥१॥

ईशबोशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयफेब्रवरीमासीयगजेन्दुमित-दिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मया प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रविचारपत्रैः सहितेयं व्यवस्था दत्तेति।

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(८७)—मोकाम कलिकाताय सदर देओयानि आदालतेर इ० सन १८३५ सालेर १४ जुलाइ मोताबक बाङ्गला सन १२४२ सालेर ३१आषाढ मङ्गलवार दिवसेर ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत ओलियम ब्राडीन साहेबेर बैठकेर रोबकारि—

गोलोकनारायणराय   छापल

छापलेर उकिल सदासुखपण्डित हाजीर आइल। छापलेर दरखास्त ओ ताहार सम्वलित कागजात, जे ए आदालतेर सावेक हाकिम रिचार्ड ओआलपोल साहेबेर बैठकेर मोतालक छिल, अद्य आमार बैठके दरपेप हइया पाठ करा गेल। कोन हुकुम देओनेर पूर्व्वे निचेर लिखित विषयेर प्रत्युत्तर ए आदालतेर पण्डितेर स्थाने लओ्रा उचित बोध हइल, ए कारण हुकुम हइल जे एइ रोबकारिर नकल एइ हुकुमे जे निचेर लिखित विशयेर प्रत्युत्तर रोबकारि प्रामेर दिवसावधि पञ्च दिवसेर मध्ये लेखेन- ■ आदालतेर पण्डितके अर्पन करा जाय। एइ हेतु जे श्रीमती तारिणी किछु टाका सूत कालीप्रसादरायेर पुत्रगण श्यामसुन्दर देओ प्रभृतिर स्थाने कर्ज्ज लय, ओ शेष ताहा परिशोध ना हओने ऐ श्यामसुन्दर प्रभृति आदालतेर डिगरि ऐ श्रीमतीतारिणीदेव्यार नामे हासील करिया चारि पाच बत्सर पर्य्यन्त, जे ऐ श्रीमती जीवद्दशाय छिल, ताहा जारि ना करिया बहार मृत्युर पर डिगरि जारिर दरखास्त छापलेर नामे जे उत्तराधिकारि हेतुके मोट परगने भओोलेर नय आनार मध्ये तिन आना ऐ श्रीमतीर वैध्य अंशेर पर दखलीकार हइयाछिल, जैलार आदालते गुजराय, ओ छापल आपत्य करे जे ऐ श्रीमतीर स्वकीय ऋनेर टाकार जओाव देओन आमार पर नाइ। ए जन्य जिज्ञासा करा जाइते- छे जे वङ्गदेशीय चलितशास्त्रानुसारे ऐ श्रीमतीर देना परिशोध करा छापलके उचित हय कि ना-इति।—

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमयितेशवीशब्दप्रतिपायेपुगुयगजेन्दुमितान्दीयजुआदमासीयचे -

देन्दुमितदिवसीयविचारपत्रं तत्प्रतिरूपपत्रं च तदब्दीयागस्तमासीय-दिङ्मितदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया व्यवस्थालिखनार्थं प्राप्तम्। किन्तु तद्विचारपत्रान्मृततारिणीदेवीत्यक्तं धनं तस्याः स्त्रीधनमासीत्, तत्पति-पुत्रादिपरित्यक्तं वा तत्सकान्तमासीदिति, किं वा तारिणीदेव्या एतद्दयं किमर्थं कृतमिति, तारिणीदेव्या सहैतद्धर्माधिकरणार्थिनः कः सम्बन्धः इति च निश्चयं ज्ञातुं न शक्यते। तन्निश्चयज्ञानं विना प्रमाणाज्ञापितव्यवस्था भवितुं न शक्नोतीति। अतो निवेदयामि। यथा आज्ञा तथा कर्तव्यमिति निवेदनमिति।

ईशवीयाब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयदिशम्बरमासीयगुणपक्षमित-दिनसम्बन्धिबुधवासरे मयैतन्निवेदनं कृतमिति॥

श्रीर्जयतितराम्

प्रतिपाल्यतमश्रीवैद्यनाथमिश्रस्य निवेदनमिति।

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतश्रीजियमवेराडीनसाहेब धर्माधिकरण लिखितेशवीयाब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयजुलाइमासीयवेदेन्दुमितदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदब्दीयागस्तमासीयदिङ्मित दिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे तत्प्रभुधर्माधिकरणलिखितेशवीयाब्दप्रतिपाद्यरस-गुणगजेन्दुमिताब्दीयफेब्रवरीमासीयवसुमितदिवसीयविचारपत्रान्तरं यत्तद-ब्दीयतन्मासीयवेदपक्षमितदिनसम्बन्धिबुधवासरे च मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रभुसमर्पितप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सतीशवीयाब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दु-मिताब्दीयफेब्रवरीमासीयवसुमितदिवसीयप्रभुकृतविचारपत्रदृष्ट्या च तारि-णीदेवीकृतार्पणपरिशोधनमविना शास्त्रानुसारेण कर्तुमुचितं न भवति—इति. वङ्गदेशचलितमनुदायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति।

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयफेब्रुवरीमासीयाङ्कचन्द्रमि-
तदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रसहितेयं व्यवस्था
दत्तेति ।

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुकृताज्ञानुसारेण निवेद्यते—

प्रभुसमर्पितेशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयजुलाइमासीयनेत्रे-
न्दुमितदिवसीयविचारपत्रं तदब्दीयागस्तिमासीयदिङ्मितदिनसम्बन्धिचन्द्र-
वासरे यद्यपि मया प्राप्तम्, किन्तु कर्म्मबाहुल्यवशात्तत्समये तदन्तर्गत-
प्रश्नाशयो नावगतो यदैतस्योत्तरं लेखनीयं तदैवैतस्य प्रश्नस्यार्थोऽपि
सम्यग्ज्ञातव्य[1] इत्येव मनसि निधाय प्रभुसविधे निवेदनं न कृतम् । एत-
स्मिन्नेवावसरे श्रीयुतहेनरीसिक्विमपीयरसाहेबाभिधानैतद्धर्म्माधिकरणप्राची-
नाधिपतिभिराज्ञप्त निवेदनलिखनार्थमेकमाज्ञापत्रमीशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगु-
णगजेन्दुमिताब्दीयागस्तिमासीयेन्दुगुणमितदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे प्राप्तम्,
तदनन्तरं तन्निवेदनलिखनमत्कर्त्तव्येतरेतरकार्य्यसमुदायव्यग्रेण प्रभुसमर्पित-
प्रश्नस्य प्रश्नान्तरजातस्य वा तत्पूर्व्वमपि प्राप्तस्योत्तरलिखने श्रीश्रीश्वरपूजार्थं-
धर्म्माधिकरणावकाशात् पूर्व्वमवकाशलेशोऽपि न प्राप्तः । अनन्तरं नेत्रगु-
णमितदिनपरिमितो धर्म्माधिकरणस्यावकाशोऽपि श्रीश्रीश्वरपूजार्थमुपस्थितः ।
अत एव श्रीयुतहेनरीसिक्विमपीयरसाहेबाभिधानैतद्धर्म्माधिकरणप्राचीना-
धिपतिभिराज्ञप्त तन्निवेदनपत्रं लिखित्वेशवीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिता-
ब्दीयनवम्बरमासीयरसेन्दुमितदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे दत्तम् । तदनन्तरं
च यद्यत्प्रश्नजातं प्रभुसमर्पितप्रश्नात् पूर्व्वं परतो वा प्राप्तं तस्य तस्योत्त-
रलिखनप्रवृत्तेनापि यस्य व्यवस्थाजातस्य मत्कर्त्तव्येतरेतरकार्य्यस्य वा

---

१. सम्यक् ज्ञातव्यः—प्र० ।

श्रीमतां प्रभूणामेतद्धर्माधिकरणाधिपतीनामवान्तरधर्माधिकरणपतीनां वा आज्ञावशात् शीघ्रता जाता, तद्व्यवस्थाजातं प्रथमतो लिखित्वा दत्तम्, तत्तत् कर्म्म च कृतम्। अनन्तरं प्रभुसमर्पितप्रश्नस्योत्तरलिखनप्रवृत्तेनापि यद्विषयभयं प्रभुसचिवो निवेदितं तस्य विषयस्य ज्ञानं प्रभुसमर्पितप्रश्न-स्योत्तरलिखने अत्यावश्यकं जातम्। तस्य विषयस्य ज्ञानं विना प्रभुसमर्पि-तप्रश्नस्योत्तरं दातुमशक्तेनागत्य प्रभुसचिवो निवेदितमिति निवेदनमिति ॥

ईशवीशकप्रतिपाद्यसगुणगजेन्दुमिताब्दीयफेवरवरीमासीयाङ्कपञ्चमि-तदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रसहितमिदं निवेदनपत्रं दत्तमिति।

श्रीर्जयतितराम्

प्रतिपाल्यतमश्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीदुर्गा शरणम्

(८८)—जिला कटकेर दिवानि आदालतेर सदर आमिन आलार बैठकेर सवाल। मोकाम कलिकातार सदर दिवानि आदालतेर पण्डितानेर प्रति। प्रथम सवाल एइ ये, क्रय ओ विक्रय प्रभृति मोकद्दिमार विषयेते शास्त्रेर आज्ञासकल हिन्दु-जातीर मध्ये बाङ्गला ओ ओडिस्या ओ वेहार ओ तैलङ्ग ओ महाराष्ट्र देशेर एक प्रकार बटे, कि पृथक पृथक इति।—

द्वितीय सवाल एइ ये, हिन्दुजातीर मध्ये क्रय ओ विक्रयेर स्थले क्रेता ओ विक्रेतार स्वीकार कराते क्रय विक्रय सिद्ध हय, कि मूल्येर समस्त टाका दिले सिद्ध हय, कि किञ्चित मूल्य दिले ओ निलेओ सिद्ध हय इति।—

तृतीय सओाल एइ ये, यद्यपि कोनो व्यक्ति हिन्दु जाति आपन स्त्री ओ अप्राप्त व्यवहार पुत्र विद्यमान थाकिते पैतृक कोनो स्थावर किम्वा स्वोपार्जित कोनो स्थावर काहारो निकट विक्रय करे, तवे ए प्रकार विक्रय शास्त्रानुसारे सिद्ध बटे कि ना इति।—

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्र विचारपत्रद्वयञ्च यदीशवीशब्दप्रतिपाद्येपुगुण-गजेन्दुमिताब्दीयाक्तूवरमासीयाङ्कपक्षमितदिनसम्यन्वित्रृहस्पतिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

हिन्दुजातीयक्रयविक्रयप्रभृतिविवादविषयकशास्त्राशा वङ्गदेशे उत्कलदेशे वेहारदेशे त्रैलिङ्गदेशे महाराष्ट्रदेशे च क्वचित् क्वचित् स्थलविशेषे पृथकाप्यस्तीति ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

क्रयविक्रयस्थले समस्तमूल्यग्रहणपूर्व्वकक्रेतृविक्रेत्रोः स्वीकारेण विक्रयस्य सिद्धिर्भवति । किञ्चिन्मूल्यग्रहणेन विक्रयस्य सिद्धिर्न भवतीति ।

अत्र प्रमाणम्—

मत्तोन्मत्तेन विक्रीतं हीनमूल्यं भयेन वा ।

अस्वतन्त्रेण मूढेन त्याज्यं तस्य पुनर्भवेत् ॥—इति वीरमित्रोदयादि-(पृ० ४४१)ग्रन्थधृतवृहस्पति(पृ० १५५)वचनम् ॥१॥

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि केनचित् पत्न्यां विद्यमानायामप्राप्तव्यवहारेषु पुत्रेष्वपि विद्यमानेषु क्रमागतं स्वोपार्जितं वा स्थावरं शास्त्रीयावश्यककार्य्यार्थव्यतिरेकेण विक्रीतं स्यात्तदा शास्त्रानुसारेण न सिद्ध्यति, शास्त्रीयावश्यककार्य्यार्थव्यतिरेकेण[1] विक्रीतं स्यात्तदा शास्त्रानुसारेण सिद्ध्यति—इति कटकप्रदेशप्रचलितमनुमिताक्षरावीरमित्रोदयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

मणिमुक्ताप्रवालानां सर्व्वस्यैव पिता प्रभुः ।

स्थावरस्य तु सर्वस्य न पिता न पितामहः ॥—इति मिताक्षरा प्रभृतिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥१॥

---

१. कार्य्यार्थव्यतिरेकेण—व्यव० ।

ये जाता येऽप्यजाताश्च ये च गर्भे व्यवस्थिताः ।
वृत्तिं ते ऽभिकांक्षन्ति न दानं न च विक्रयः ॥–इति मिताक्षरादि-
(पृ० २०० ग्रन्थधृतमुनिवचनम् ॥२॥

अप्राप्तव्यवहारेषु पुत्रेषु पौत्रेषु चानुज्ञानादावसमर्थेषु भ्रातृषु वा तथा-विधेष्वविभक्तेष्वपि सर्व्वकुटुम्बव्यापिन्यामापदि तत्पोषणे चावश्यकर्त्तव्येषु पित्रादिश्राद्धादिषु स्थावरस्य दानाधमनविक्रयमेकोऽपि समर्थः कुर्य्याद्—इति मिताक्षरा(पृ० २००)ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥३॥

ईश्वरीशरद्यमनिशाकरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयमार्च्चमासीयदिङ्मितदिन-सम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मया प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रविचारयत्नैः सहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्—
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(८९) मोकाम कलिकातार सदर देओयानि आदालतेर इङ्गरेजी सन १८३६ सालेर ७ जानेर मोताबके बाङ्गला सन १२४२ सालेर २४ पौष वृहस्पतिवार दिवशेर ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत ओलियम प्राडीन साहेबेर रोयकारि ।—

काशीचन्द्रमुस्तोफि — आपेल—

आपेलेर वकिल शिवनारायणचट्टोपाध्याय हाजीर आइल । सन १८३५ सालेर १९ दिशम्बरेर लिखित हुगलि जेलार आदालतेर एक केता रिटरण सथाकार एक केता रोयकारि ओ ओछिनामार नकल ओ गयरह ऐ रिटरणेर सम्बलित सन मजकुरेर ३१ आगष्टेर प्रकाशित ए आदालतेर हुकुमेर जओयाबे प्राप्त ओ अत्र दरपेष हइया आयेलेर छओयाल ओ गयरह ऐ छओयालेर संक्रान्तेर कागजसकलेर सहित ओ ए आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था दृष्टे आइल । ए आदालतेर पण्डितेर व्यवस्थार लिखित हइयाछे जे यदि एक व्यक्ति अविरा कन्यार स्वामि कुनेर स्वामिर भ्रातार न्याय प्रभृति जे ताहा हइते ऐ अवीरा स्वीर धर्म्म ओ लज्जा

मानेर रक्षणावेक्षण हइते पारे थाके, तवे आपन स्वामीर गृहे अवीरा स्त्रीर जाओन कर्त्तव्य वटे, ओ यदपि ऐ प्रकार ना थाके, ओ ऐ कन्यार पितृकुलेर पिता ओ भ्राता प्रभृति थाके जे ताहादेर हइते ऐ कन्यार धर्म्म प्रभृति लज्जा मानेर रक्षणावेक्षण हइते पारे, तवे ताहा त्याग करिया कन्या मजकुरार आपन स्वामिर गृहे जाओन आविश्यक राखे ना; वरं स्वामिकुलेर एक व्यक्ति पुरुस रक्षणावेक्षणेर उपयुक्त ना थाकार सम्भवे ऐ स्त्रीर रक्षणापेक्षण ऐ स्त्रीर पितृकुलेर मनुष्यदिगेर पर उचित वटे। किन्तु व्यवस्था मजकुरा श्रीमती कमलकुमारिर स्वामि मृत रमेशचन्द्रेर लिखिया देओ। ओछिनामा दिष्ट व्यतिरेक लिखित हइयाछे। ए कारण हुकुम हइल जे एइ रोवकारिर नकल ओ प्राप्त ओछिनामा एइ हुकुमे जे नकल रोवकारि प्राप्तेर दिवसावधि पञ्चदिवसेर मध्ये वङ्गदेशीय चलित शास्त्रानुसारे लेखेन जे ओछिनामा मजकुरार दिष्ट अप्रामाण्यद्वारा श्रीमतीकमलकुमारी स्वामीर ग्रहे आपन शाशुडिर निकट थाकन आविश्यक वटे, अथवा ताहार पितार निकट थाकिते पारे—ए आदालतेर पण्डितके अर्पन करा जाय इति।

श्रीकृष्णः शरणम्

परमपूजनीयश्रीमतीकमलकुमारीदासी माता ठाकुराणी श्रीचरणाम्बुजेषु।

लिखितं श्रीरमेशचन्द्रदत्तकस्य ओछियतनामापत्रमिदम्। कार्य्यनञ्चागे[1] आमि सारिरिक पीडाय अत्यन्त पीडित, एवं जीवन संशय वोध हइतेछे। अतएव एक्षणे आमार होप वाहाल आछे, आपन ओ श्रीमतीकमलकुमारीदासीके पुष्यपुत्र लओनेर अनुमति पत्र लिखिया दिया आमार पैतृक ओ सोपार्जित मनकुजा ओ गएर मनकुला दोरोवस्त विषयेर

१.—कार्य च। आगे-इति साधीयान् पाठः।

এবং আমার ঐ স্ত্রীর ও তাহার লওয়া ঐ পুষ্যপুত্রের রক্ষণা ও হেফাজত কারণ আপনাকে ওচি মকরর করিয়া লিখিয়া দিতেছি—জে আপনে মালিক নিচের তপসীল সকল কর্ম্ম করিবেন।

১ দফা। দোরবস্ত এমলাক মনকুলা ও গয়ের মনকুলা, জে কিছু আমার দখলে আছে ও জাহা আমার সরিকানের নিকট হইতে বুঝ সমুঝ করিয়া লইতে বকী আছে,—তাহা বুঝ সমুঝ করিয়া লইয়া তাবত বিষয়ে দখিলকার থাকিয়া হেফাজত করিবেন, এবং দেনা ও পাওনা জাহা আছে তাহা বুঝ সমুঝ করিয়া দিবেন ও লইবেন ।।—

২ দফা। নিত্য-নৈমিত্তিক ক্রিয়া-কলাপ ও সংসারের খরচ-পত্র অর্থাৎ পরিবারের ভরণ পোষণাদি সময় মত করিবেন ।।—

৩ দফা। আমার স্ত্রী আমার অনুমত্যানুসারে যথাশাস্ত্র জে পুষ্যপুত্র লইবেক, ঐ পুষ্যপুত্রের এবং আমার ঐ স্ত্রীর রক্ষণা-পত্তন আপনে করিবেন। জাবত ঐ পুষ্যপুত্র বয়েস-প্রাপ্ত না হয় তাবত সমুদায় বিষয় ওচি সুরত আপনকার দখলকবজে থাকিবেক। ঐ পুষ্যপুত্র বয়েস-প্রাপ্ত হইলে আপনে তাহাকে সমজাইয়া দিবেন। যদ্যপি পুষ্যপুত্রের বয়েস-প্রাপ্ত হওনের মধ্যে আপনে কোন পীড়ায় অথবা অন্য কোন কারণে জীবন সংশয় বুঝেন, তবে আপন পরিবর্ত্তে অন্য কাহাকে খাতির্জমা মতে ওচি মকরর করিবার এক্তেয়ার আপনকার থাকিল ।।—

দফা। আমার পৈতৃক ও সোপার্জিত কালেক্টরি মালগুজারি সমপর্কীয় ও পত্তনি ও দরপত্তনি তালুকাত জে আছে, তাহাতে আমার এলাগায়েত খরচ-পত্রের বাহুল্যতায় ও অন্য দেনা পরিশোধে সন হালের সদর মালগুজারি আদায়ের অনেক অসংস্থান আছে। আপনে ঐ তালুকাতের মধ্যে কোন এক অথবা ততোধিক তালুক পত্তন করিয়া দরপত্তন দিয়া তাহার পন বাহায় ঐ অসংস্থান মালগুজারির সরবরাহ করিয়া বিষয় রক্ষা করিবেন। ইতি সন ১২৩৭ সাল তারিখ ৬ কার্ত্তিক—

इत्यादी

श्रीरामदत्त	श्रीवैद्यनाथमिश्र
सां० देवानन्दपुर।	सां० हाजीपुर पं० चौगुहा।
श्रीगोविन्दपाल	श्रीपाँचकडिघोष
सां० देवानन्दपुर।	सां० गड्ड।

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतश्रोलियमवेराडोनसाहेवधर्म्माधिकरण-लिखितैशवीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयजानवरीमासीयमुनिमित-दिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं तत्समर्पितासीयश्रामाख्य पत्रं च यत्तदब्दीयफेवरवरीमासीयशिवमितदिनसम्बन्धिबृहस्पतिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥—

प्रभुसमर्पितासीयश्रामाख्यपत्रदृष्ट्या श्रप्राप्तव्यवहारायाः श्रीमत्याः कमलकुमार्य्याः पतिगृहे श्वश्रूसन्निधानस्थितेः शास्त्रानुसारेणावश्यकता नास्ति स्त्रीत्वेन स्वतोऽस्वतन्त्रायाः स्त्र्यन्तररक्षकत्वस्याशास्त्रीयत्वेन तस्य पितृसन्निध(ा)ने स्थितिर्भवितुमर्हति—इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागादि-ग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति।

अत्र प्रमाणम्—

पिता रक्षति कौमारे भर्त्ता रक्षति यौवने।

रक्षन्ति स्थाविरे पुत्रा न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति ॥—इति मनु(९।३)-वचनम् ॥१॥

भर्त्ता रक्षति यौवन इत्यादि प्रायिकम्, अभर्तृपुत्रायाः सन्निहितायाः पित्रादिभिरपि रक्षणात्—इति कुल्लूकभट्टकृतमन्वर्थमुक्तावलीग्रन्थ(पृ० ३४६)लिखनम् ॥२॥

मृते भर्त्तर्य्यपुत्रायाः पतिपक्षः प्रभुः स्त्रियाः।

विनियोगात्मरक्षासु भरणे च स ईश्वरः ॥

परिक्षीणे पतिकुले निर्म्मनुष्ये निराश्रये ।
तत्सपिण्डेषु चासत्सु पितृपक्षः प्रभुः स्त्रियाः ॥—इति दायभागादि-
(पृ० १७३।१७४)धृतनारद(१३।२८-२९)वचनञ्चेति ॥३॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयापरैलमासीयेषुमितदिन-
सम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्राणोपलभ्यामाद्य रात्राभ्यां
प्रहितेय व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीजर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(९०)—रुबकारि मिछिल मोकाम कलिकाता सदर देओ-
यानी आदालतेर सन १८३६ सालेर मार्च्च मासेर स्याष्टादस
दिवस बुधवारे डिवड इसमिट साहेब-कायेम मोकाम हाकिमेर
वैठके ॥—

जगतचन्द्रअधिकारि— सापल

सापलेर उकिल नित्यानन्दबन्द्योपाध्याय हाजीर हइल । सन
१८३५ सालेर दिजम्बर दशम दिवसेर जिला वर्द्धमानेर जज
साहेवेर ओ जिलार पण्डितेर व्यवस्थानुसारे सायेलेर एवं
मधुसूदनवडाल प्रतिवादिर पूर्व्वपुरुषेर स्थापित ओ प्रकाश करा
श्रीश्रीश्वरठाकुर-ठाकुराणी सूद्रजाति सेवकेर दिगेर वाटिते लइया
जाइवार अनुमतिते मकद्देमा निष्पत्य करियाछेन, ए कारण
सापल ताहाते असम्मत हइया श्रीमन्दिर हइते ठाकुर-ठाकुराणी
अन्यन्तरे लइया जाओया रहित हुकुम छादेर हओनेर प्रार्थनाय
आपन सओोल आर उकिलेर नामेर ओकालतनामा ओ सन १८३५
सालेर दिजम्बरमासेर दशमदिवसेर ऐ जिला आदालतेर रुब-
कारिर नकल ओ सापलेर सन १८३२ सालेर आगष्टमासेर
सप्तदशदिवसेर हुकुम देओया दरखास्तर नकल आर सन १८३५
सालेर जानेओरि मासेर चतुर्दश दिवसेर हुकुम देओया मधुसूदन

चण्डाल प्रतिवादिर दरखास्तर नकल आर ओ जिला आदालतेर पण्डितेर व्यवस्थार नकल सम्बलित एइ मासेर पञ्चम दिवसे सेरेस्ताय दाखिल हइयाछिल, अद्य तारिखे दरपेश हइया पडा-गेल इति। जिला मजकुरेर जज साहेबेर गतो सनेर डिसेम्बर मासेर दशम दिवसेर रुबकारि द्वाराय प्रकाश हइल जे जिलार पण्डित सदर आमिनेर काछारिते उभय विवादीर जे सकल साक्षी गुजरियाछे तदनुसारे उभय विवादीर पूर्व्व पुरुषेर रीति अनुसारे ठाकुर-ठाकुराणीजीउके वाहारदिगेर शूद्रजाति सेवकेर वाटीते लइया जाओया प्रमाण हइयाछे। एवं श्री पण्डित सदर आमिनेर व्यवस्था द्वाराते ओ ठाकुर-ठाकुराणीजिउर शूद्रसेवकेर दिगेर वाटीते गमने देवत्व हानि हओया किछु बोध हय ना। ये हेतु एक वार तथाय गमन करियाछिलेन, ए कारण आपलेर प्रति किछु हुकुम जादेर करार पूर्व्वे ए आदालतेर पण्डितेर द्वाराय एइ व्यवस्था तलब करा उचित हइल जे यदि ब्राह्मणेर प्रकाशीत ठाकुर ओ ठाकुराणीजिउ एक वार शूद्रजाति सेवकेर दिगेर वाटीते गमन करिया थाकेन, तवे पुनराय पूर्व्वेर रीति अनुसारे ठाकुर-ठाकुराणी शूद्रसेवकेरदिगेर वाटीते गमन करिते पारेन कि ना। एवं यदि गमन करेन ताहाते ताँहार-दिगेर देवत्वर किछु हानि हय कि ना। एमते हुकुम हइल जे ए आदालतेर पण्डित बङ्गदेशेर चलित शास्त्रानुसारे उपरेर लिखित वित्तान्तेर व्यवस्था पञ्च दिवसेर मध्ये दाखिल करेण। व्यवस्था दाखिल करा पर्य्यन्त सओयाल स्थकित थाकिल इति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिसंज्ञानाभिषिक्तश्रीयुतडिविडडगलसिटवाहेव-धर्म्माधिकरणलिखितेशवीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयमार्च्चमासी-यरसेन्दुमितदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदन्दोयन्मासो र·

द्विपद्मितदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥—

ब्राह्मणजातिप्रकाशितदेवताविग्रहाभ्यामेकवारं केनचिन्निमित्तेन शूद्रजातिसेवकस्य गृहे गतं चेत्तदनुसारेण पुनरपि तन्निमित्तवशाच्छूद्रजातिसेवकस्य गृहे ताभ्यां विग्रहाभ्यां गन्तुं शक्यते। तद्धेतुवशाच्छूद्रजातिसेवकगृहगमनेन चैतादृशविग्रहयोर्देवत्वहानिर्न भवति–इति बङ्गदेशप्रचलितमन्वादिधर्मशास्त्रानुसारिणी व्यवस्थेति।

अत्र प्रमाणम्—

जातिजानपदान् धर्म्मान् श्रेणीधर्मांश्च धर्म्मवित्।
समीक्ष्य कुलधर्म्मांश्च स्वधर्म्मं प्रतिपालयेत्॥ इति मनुवचनम् ॥१॥
देशजातिकुलानाञ्च ये धर्म्माः प्राक् प्रवर्तिताः।
तथैव ते पालनीयाः प्रजा प्रक्षुभ्यतेऽन्यथा॥ इति वृहस्पतिवचनञ्चेति ॥२॥

ईशवीयाब्दप्रतिपादकवसुगुणगजेन्दुमिताब्दीयापरेलमासीयाङ्कमितदिनसम्बन्धिशनिवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रसहितेयं व्यवस्था दत्तेति।

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(९१)—तरजमा सवालात—

जिला तिरहुतेर कायेम मोकामँ सदर आमीन आला सैयद अवदुल श्रो आहिद स्वान वहादुरेर वैठकेर सवाल सदर दिमानी आदालतेर पण्डितानेर प्रति ओ वाराणसेर पाठशालार पण्डितानेर प्रति—

मदारीलालेर उत्तराधिकारि रामभञ्जनसिंह आपीलाण्ट ओ वालेवरसिंह रेस्पाण्डण्टेर मोकद्दिमाते मैथिल देशेर प्रलित

शास्त्रानुसारे ओ वाराणस देशेर चलित शास्त्रानुसारे ओ नदियार चलित शास्त्रानुसारे जवाब लिखेन—इति।

प्रथम सवाल—एइ ये मैथिलदेशेर चलित शास्त्रानुसारे विभागेर अर्थ कि—इति।

द्वितीय सवाल—एइ ये मैथिलदेशेर चलित शास्त्रानुसारे साधारण्य कय प्रकार घटे—इति।

तृतीय सवाल—एइ ये ए प्रकार कोन साधारण्य आछे, ये हिन्दुजातिर सन्तानहीन कन्यासकलेर अधिकार पितार मृत्युर पर पितामहेर सपिण्ड विद्यमान थाकिते पितृपितामहेर त्यक्त धने हय कि ना इति।

चतुर्थ सवाल—एइ ये यद्यपि कोनो व्यक्ति आपन पितामहेर पौत्रसकलेर सहित विवाद उपस्थित करिया आपन अंशेर डिगरि आदालत हइते पाइया ओइ डिगरी अनुसारे दखिलकार हइया आपन जीवन पर्य्यन्त पृथक् पृथक् वसूल तहसील करिया मरियाथाके, तबे एमत विषयेर विभाग बला याइवेक कि ना इति।

पञ्चम सवाल—एइ ये यद्यपि कोनो व्यक्ति हिन्दु आपन पितामहेर पौत्र सकलेर सहित पृथगन्न ओ कारोबार ओ दान ओ ग्रहण ओ आय ओ व्यय पृथक् पृथक् करिया ओ पितामहेर त्यक्त किञ्चित भूमि अविभक्त राखितो, ओ ओइ भ्रातासकल आपन आपन अंशेर परिमित असूल तहसील पृथक् पृथक् करितेछिलेन—ए प्रकारे ओइ पितामहेर त्यक्त स्थावर विभक्त जाना जाइवेक कि, अविभक्त जाना जाइवेक। ओ ए प्रकार साधारण्य कन्यार अनधिकारेर कारण हइते पारे कि ना इति।

षष्ठ सवाल—एइ ये यद्यपि पितामहेर पौत्रसकलेर मध्ये क्रमागत स्थावर विभक्त ना हइया थाके, ओ ओइ स्थावरेर उपस्वत्व अंशीसकल आपन आपन अंशेर अनुसारे पृथक पृथक असूल ओ तहसील करिते थाकेन—तबे ए प्रकारे ओइ स्थावर विभक्तेर मध्ये गणना हइवेक कि ना, ओ ओइ स्थावर विभक्त-

पदेर अर्थ हइवेक कि ना, ओ ओइ स्थावर विभक्त पदेर अर्थेर मध्ये गणित हइवेक कि, अविभक्त पदेर अर्थेर मध्ये गणित हइवेक इति ॥

श्रीऊर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्र विचारपत्रं च यशीशचीशब्दप्रतिपाद्येपुगुणगजेन्दु-मिताब्दीयसितम्बरमासीयगजेन्दुमितदिनसम्बन्धिभृगुवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

द्रव्यसमुदायविषयाणामनेकस्वाम्यानां तत्तदेकदेशे प्रादेशिकस्वत्वव्य-वस्थापनं मिथिलादेशचलितशास्त्रानुसारेण विभाग इति ।

अत्र प्रमाणम् —

विभागो नाम द्रव्यसमुदायविषयाणामनेकस्वाम्यानां तत्तदेकदेशेषु व्यवस्थापनम्— इति मिताक्षरा(पृ० १६७)ग्रन्थलिखनम् ॥१॥

विभागशब्दस्त्वनेकस्वाम्यानां द्रव्यसमुदायविषयाणां तत्तदेकदेशे व्य-वस्थापने शक्तः—इति वीरमित्रोदयादि(वी०मि० पृ० ५२२)ग्रन्थलिखनम् ॥२॥

एकदेशोपात्तस्यैव गोभूहिरण्यादावुत्पन्नस्य स्वत्वस्य विनिगमना-प्रमाणाभावेन वैशेषिकव्यवहारानर्हतया अव्यवस्थितस्य गुटिकापातादिना व्यञ्जनं विभागः—इति दायभाग(पृ० ८)ग्रन्थलिखनम् ॥३॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

मिथिलादेशचलितशास्त्रानुसारेण साधारण्यमनेकविधमस्ति । तत् सर्वमधोलिखितवचनजातेष्वेव स्पष्टमिति ॥

अत्र प्रमाणम्—

दानग्रहणपश्वन्नगृहक्षेत्रपरिग्रहाः ।
विभक्तानां पृथग् ज्ञेयाः पाकधर्मागमव्ययाः ॥—इति विवादरत्नाकर-(पृ० ६०६)विवादचिन्तामणि(पृ० २५३)विवादचन्द्र(पृ० ८७) मिताक्षरावीरमित्रोदय(पृ० ७१६)दायभाग(पृ० २१०)दायतत्त्व(पृ०

१७९)विवादार्णवसेतु(पृ० ८३)विवादभङ्गार्णवादिग्रन्थधृतनारद(नाम· सं० पृ० १५६) वचनम् ॥१॥

साक्षित्वं प्रातिभाव्यं च दानं ग्रहणमेव च ।

विभक्ता भ्रातरः कुर्युर्नाविभक्ताः कथञ्चन ॥—इति तत्तद्ग्रन्थधृत-नारद(नामध० पृ० १५६)वचनम् ॥२॥

येषामेताः क्रिया लोके प्रवर्तन्ते स्वरूपधतः ।

विभक्तानवगच्छेयुर्लेख्यमप्यन्तरेण तान् ॥ इति तत्तद्ग्रन्थधृतनारद· (नामध० पृ० १५७)वचनम् ॥३॥

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

मृते पितरि विद्यमानेषु पितामहसपिण्डेषु पितृपितामहत्यक्तधने येन साधारण्येन कन्यानरहितदुहितॄणामधिकारो न भवति, तत्साधारण्यञ्च भ्रातॄणां पितृव्यभ्रातृपुत्रादीनां वा सपिण्डानां परस्परमविभक्तधनाना· मेकपाकेन वसतामेकत्र पितृदेवद्विजार्चनमायव्ययादिकमपि कुर्वतां परस्पर-मृणप्रातिभाव्यसाक्ष्यादिकमप्य(पा)कुर्वतां[1] तत्तत्कर्मजातमेवेति ।

अत्र प्रमाणम्—

द्वितीयप्रश्नोत्तरलिखितप्रमाणत्रयमेवेति ।

चतुर्थप्रश्नस्योत्तरम्—

चतुर्थप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सत्येतादृशं धनं विभक्तमध्ये गणितं भवितुं शक्नोतीति ।

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रमाणत्रयमेवेति ।

पञ्चमप्रश्नस्योत्तरम्—

पञ्चमप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सत्येतत्प्रश्नलिखितपितामहत्यक्तं स्थावरं धन विभक्तमध्ये गणितं भवितुं शक्नोति, एतादृशसाधारण्यञ्च कन्यान-धिकारप्रयोजकं भवितुं न शक्नोतीति ।

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रमाणत्रयमेवेति ॥

---

१. ०मप्यकुर्वताम्—व्यव० ।

षष्ठप्रश्नस्योत्तरम्—

षष्ठप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सत्येतादृशं स्थावरं विभक्तमध्ये गणितं भविष्यति, एतादृशं स्थावरं विभक्तरद्वाच्य भविष्यत्येतादृशं स्थावरं विभक्तपदार्थान्तर्गतञ्च भवति ॥—इति मिथिलादेशचलितमनुविवादरत्नाकरविवादचिन्तामणिमल्लतत्त्वपारिजातविवादचन्द्रप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी वाराणसीप्रदेशचलितमिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारमयूखव्यवहारमाधवव्यवहारकौस्तुभादिग्रन्थानुसारिणी नदियाप्रदेशचलितदायभागदायतत्त्वदायक्रमसंग्रहविवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी च व्यवस्थेति ।

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रमाणत्रयमेवेति ।

ईशचीशब्दप्रतिपाद्यखगुणगजेन्दुमिताब्दीयापरेलमासीयरसेन्दुमितदिनसम्बन्धिशनिवासरे मया प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रविचारपत्राभ्यां सहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

१०१ लं जारि—

(९२)—जेला चब्बिस परगनार मोतालक चौब्बि नबाबगञ्जेर मोनछफी काछारि हइते सदर देमानि आदालतेर श्रीयुत पण्डितेर निकट व्यवस्थाकारण सओयाल पाठान जाय ।

श्रीमतीपार्व्वतीदासी साकिन नैहाटी प० हाविलीसहर—
डिगरिदार

श्रीमतीठाकुराणीदासी ओ रामनारायणमित्र— देनदार

कालीप्रसादमित्र ओ बेनिमाधवमित्र ओ मधुसूदनमित्र—
नाबालगदिगेर माता श्रीमतीकरुणामयीदासी—मोजाहेम ।

गोविन्दचन्द्रमित्र सा० नेहाटी प० कलिकाता—
दोयरा मोजाहेम

दा० २७३॥॥ टाका माय खरचा—

यद्यपि ँ कमललोचनदे आपन स्थावर ओ अस्थावर विषये ओ आपन स्त्री श्रीमतीठाकुराणीदासी ओ दुइ कन्या श्रीमतीकरुणामयीदासी ओ आनन्दमयीके राखिया परलोक हय आर करुणामयीदासीर गर्भजातक सन्तान श्रीयुतमधुसूदनमिश्र ओ वेनिमाधवमिश्र ओ कालीदासमिश्र नाबालग वर्त्तमान थाके— एमत दशाय ऐ करुणामयीर माता श्रीमतीठाकुराणी कमललोचनदेर स्त्री ऐ करुणामयीर स्वामी रामनारायनमिश्रेर सम्बलित कमललोचन मजकुरेर खरिदा ब्रह्मोत्तर ॥१ जमि बन्धकेर द्वाराय टाका कर्ज्ज लइया थाके, आर डिगरि हओनेर पर डिगरि जारिर द्वाराय अधिनामार लिखित जमि ऐ कमललोचनेर त्यागी वस्तु क्रोक हइया थाके, तबे कमललोचनदेर दौहित्र लोक थाकिते ताहार त्यागी वस्तु ऐ ठाकुराणीदासी ओ रामनारायण मजकुरेर देनाय बिक्री हइते पारे कि ना। यदि ठाकुराणी मजकुरा ऐ टाका आपन निज खरच किम्वा आपन स्वामीर ँ गयातीर्थे पिण्डदान किम्वा आपन द्वितीय कन्यार विवाहेर कारण लइया थाके—एमत तृतीय हेतुते कमललोचन मजकुरेर त्यागी वस्तु हइते ठाकुराणीदासीर देना परिशोध हइते पारे कि ना इति।

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं विचारपत्र च यदीशत्रीशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताब्दीयविशम्वरमासीयगुरुपक्षमितदिनसम्बन्धिबुधवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति मृतस्य मूलधनिनः कमललोचनदेनाम्नो दौहित्रेषु विद्यमानेषु कमललोचनत्यक्तधने पत्नीत्वेन जाताधिकारया ठाकुराणीदास्या मृतधनिपत्न्या प्रश्नलिखिततदृणं यदि शास्त्रीयावश्यककार्य्यार्थव्यतिरेकेणार्थात् स्वेच्छया स्वाभिप्रायेण वा कृतं स्यात्तदा तदृणपरिशोधनार्थं कमललोचनत्यक्तधनस्य विक्रयो भवितुं न शक्नोति; यदि

च ठाकुराणीदासी तदेव स्वयं शास्त्रीयावश्यककार्य्यार्थमर्थात् स्वकीयभरणपोषणाद्यर्थं स्वपत्युः श्राद्धार्थं द्वितीयकन्याविवाहार्थं वा कृतवती स्याच्चदा कमललोचनस्यकथनात् ठाकुराणीदासीकृतर्णपरिशोधनं भवितुं शक्नोति—इति बङ्गदेशचलितमनुदायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव—इत्यादि दायभागादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥१॥

अपुत्रा शयनं भर्त्तुः पालयन्ती गुरौ स्थिता ।

भुञ्जीतामरणात् क्षान्ता दायादा ऊर्द्ध्वमाप्नुयुः ॥ इति दायभागादिग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥२॥

भर्त्तुरौर्द्ध्वदेहिकक्रियार्थं दानादिकमप्यनुमतमिति । वर्त्तनाशक्ताधानमप्यनुमतम् । तत्राप्यशक्तौ विक्रयणमपीति च-दायभागग्रन्थलिखनम् ॥३॥

कन्या वैवाहिकञ्चैव प्रेतकार्य्येषु यत् कृतम् ।

एतत् सर्व्वं प्रदातव्यं कुटुम्बेन कृतं प्रभोः ॥ इति व्यवहारतत्त्वादिग्रन्थधृतकात्यायन(कास्मृ० ५४३.पृ० ६८)वचनञ्चेति ॥४॥

ईशवीयाब्दप्रतिपाद्य रसगुणगजेन्दुमिताब्दीयमैमासीयद्विचत्वारिंशत्तमदिनसम्बन्धिबुधवासरे मया प्रनुसमर्पितप्रश्नपत्रविचारपत्राभ्यां सहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(९३)—नं० ६७० सद्र—

इ० सन १८३६ सालेर १९ मार्च मो० बा० सन १२४२ सालेर ८ चैत्र शनिवारेर श्रीयुत जार्ज्ज इष्टाकोएल साहेब विचाराद्ध्यक्षेर आधिपत्येर मोकाम कलिकातार सदर देओयानी आदालतेर मिछिलेर रुबकारि—

राणीजयदुर्गा आपीलाण्ट—
राणीकृष्णमणी रेस्पाण्डण्ट—

आपीलाण्टेर उकिल वर्ग सदासुखपण्डित ओ वंशीवदन मित्र ओ रामना(रा)यण उपस्थित हइल। रेस्पाडेण्ट एयानामनामा ओ एस्तहारनामा जारि हओनेओ स्वतः वा उकिलतः उपस्थित हइल ना। अद्य एइ मकर्दमा संख्यार शृङ्खलामते आमार आधिपत्ये समग्र हइया मिछिलेर कागजसकल पठित हइल। अवधारित हइल ये मोद्दाइया अर्थात् वादी उभयेर स्वीकृत विमलादास्यार स्वोपार्जित सामुद्राइक अर्द्धेक मौजे राणी ग्रामेर अर्द्धेक अर्थात उक्त मौजेर।) चारि आना अंश पाओनेर दावि उपस्थित करे। मोद्दालेहा अर्थात् प्रतिवादी राणीजयदुर्गा विमलादास्या कर्त्तृक विक्रयेर आपत्य उत्थापन करिलेक। जेलार सदर आमीन सेइ विक्रयके अवीरा खीर पत्र हइते अशीद्ध विवेचना करिया वादीके डिक्री देन। ऐ डिक्री आपीले जेला रङ्गपुरेर जजसाहेबेर अग्रे अङ्गिकार पत्र विक्रीर न्याय साव्यस्थ ना हओनेर योधे स्थिरतर रहिल, एवं विषय हस्तान्तर हओन सिद्ध वाक्येर विशेष हओनेर निमित्त आपील खास ग्राह्य हइल। अतएव उपरोक्त विक्रयपत्र साव्यस्थ कि असाव्यस्थ—अनुसन्धाने साक्षिगणेर उक्तिसकल दृष्टी करणेर पूर्व्वेइ उचित हइल जे आदालतेर पण्डितके जिज्ञासा जाय जे। विधवा स्त्री, आहार सम्वान सन्तत्यादि जीवद्दशाय नाइ, एवं स्वहस्ते विषय उपार्ज्जन करे, से विषय हस्तान्तर करणेर क्षमता राखे कि ना। हुकुम हइल जे एइ रुवकारिर नकल एइ आज्ञाय जे आदालतेर पण्डित लिखित प्रश्नेर उत्तर २ दुइ सप्ताहेर मध्ये दाखिल करेण आदालतेर पण्डितेर निकट प्रेरित हय—इति॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतजार्ज्जइष्टाकोएलसाहेबधर्म्माधिकरण–

लिखितेशवीशब्दप्रतिपायरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयमार्च्चमासीयाद्धेन्दुमितदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं तच्चदब्दीयतन्मासीयभजपक्षमितदिनबन्धिचन्द्रवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥—

मृतसन्तानया विधवया स्त्रिया यदि स्वयमेव धनमुपार्जितं स्यात्तदा तस्या विधवायास्तद्धनहस्तान्तरकरणक्षमतास्त्येव–इति बङ्गदेशचलितमनु-दायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ।

अत्र प्रमाणम्—

सौदायिके सदा स्त्रीणां स्वातन्त्र्यं परिकीर्त्तितम् ।

विक्रये चैव दाने च यथेष्टं स्थावरेष्वपि ॥—इति दायभागादि-(पृ० ७६)धृतकात्यायन(कास्मृ० ९०९।पृ० ११०)वचनम् ॥१॥

पतिमरणोत्तरं च विधवाया न कश्चित् स्वामी, किन्तु भरणादिकर्त्ता गुरुरेव श्वशुरादिः, अतस्तदानीमर्ज्जिते स्वातन्त्र्यमेव—इति विवादभङ्गार्णव(२, पृ० ३९४ क)धृतलिखनश्चेति ॥२॥

वेदवीशब्दप्रतिपायरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयमेमासीयरसेन्दुमितदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रसहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीउज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(९४) सर्व्वशास्त्राध्यापक पण्डित आदालत देओानि सदर मोकाम कलिकाता सत्तचरित्रेषु—

प्रथम प्रश्नमिदम्—

यद्यपि कोन स्त्रीलोक किछु दिन्यादि राखिया निःसन्तान मृत्यु हय । ततपरे ताहार स्वर्ज्य धनेर उपर ताहार स्वामीर पितामहेर सधवा एक कन्या एवं ऐ कन्यार एक दत्तक पुत्र एवं ऐ मृता स्त्रीर स्वामीर प्रपितामहेर भ्रातुपौत्र राधागोविन्दनामक एक जना आर ऐ मृता स्त्रीर स्वामीर प्रपितामहेर भ्रातुपुत्रवधु श्रीमती-लक्ष्मीप्रियानाम्नी एक जना एवं तस्य दत्तकपुत्र गोविन्दकीशोर

नामक दाविदार हय; तवे यथाशास्त्र ऐ सकल दाविदारानेर मध्ये कोन व्यक्ति ऐ मृतार त्यज्य धनाधिकारि हइवेक, एवं दत्तक पुत्रेर माता वर्त्तमान थाकिले दत्तक पुत्रके धन पौंछिते पारे कि ना—एहार यथाशास्त्र उत्तर लिखिवा। परन्तु दुइ किता वंशावली-पत्रिर नकल तोमार ज्ञातार्थे प्रश्नपत्र सम्वलित पाठान जाइतेछे इति। १ माहे मार्च्च सन १८३६ इङ्गरेजी मतावक सन १२४२ वा० तारिख १९ माहे फाल्गुन॥

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं विचारपत्र वंशावलीपत्रद्वयं च यदीशवीशब्द-प्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमितान्दीयमार्च्चमासीयद्विपक्षमितदिनसम्मिग्धमङ्गल-वासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रभुसमर्पितप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति हरिश्चन्द्ररायस्यक्तत्पत्नीसंक्रान्त-धने मृतायाः स्त्रियाः पत्युः पितामहस्य सपत्नकन्याया दत्तकपुत्रस्याधां-न्मृतधनिहरिश्चन्द्ररायपितामहदौहित्रस्यैवाधिकारः—इति; एवं दत्तकपुत्रस्य मातरि विद्यमानायामपि दत्तकपुत्रस्यैवाधिकारः—इति वङ्गदेशाचलितमनु-दायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति॥

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव—इत्यादि दायभागादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य-वचनम्॥१॥

पितामहप्रपितामहसन्ततेरपि दौहित्रान्तायाः पिण्डप्रत्यासत्तिक्रमे-णाधिकारो बोद्धव्यः—इति दायभागग्रन्थलिखनम्॥२॥

पितृव्यपौत्राभावे पितामहदौहित्रस्याधिकारः—इति दायभागटीका-(पृ० २१८)दायक्रमसंग्रह(पृ० ८)प्रभृतिग्रन्थलिखनञ्चेति॥३॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमितान्दीयबुत्मासीयाङ्कमितदिनसम्ब-न्धिवृहस्पतिवासरे मया प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रविचारवंशावलीपत्राभ्याञ्च सहितेयं व्यवस्था दत्तेति॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(९५) यदि कश्चिन्निरपत्यो ब्राह्मणः स्वभार्य्यां समीपवर्त्तिनः सपिण्डांश्च त्यक्त्वा मृतस्तदा तत्समीपवर्त्तिनि सपिण्डे विद्यमाने लब्ध-पतिधना तत्पत्नी स्वभर्त्तुः स्थावरधन पत्रकरणपूर्व्वकं कस्मैचिद्दत्तवती चेत्, तत्स्वीकृतं दानमप्रामाणिकम् ।

स्वीकृतान्यप्रमाणानि कार्य्याण्याहुरनापदि ।

विशेषतो गृहक्षेत्रदानाधमनविक्रयाः ॥—इति विवादचन्द्रग्रन्थस्थ-कृतनिर्ण्णयप्रकरणधृतार्षवचनादिति ॥—

सही—कल्याणमिश्रपण्डित
आदालत दिवानी जिले तिरहुत वकलम
रामनाथमिश्र पण्डित ।

शरीरार्द्धं स्मृता जाया पुण्यापुण्यफले समा ।
यस्य नोपरता भार्य्या देहार्द्धं तस्य जीवति ।
जीवत्यर्द्धशरीरेऽर्थं कथमन्यः समाप्नुयात् ॥
अपुत्रा शयनं भर्त्तुः पालयन्ती व्रते स्थिता ।
स्वीकृतान्यप्रमाणानि कार्य्याण्याहुरनापदि ॥

विशेषतो गृहक्षेत्रदानाधमनविक्रयाः ॥—इति दायभागविवादचन्द्र-स्थकात्यायनवृहस्पति (पृ० २११) वचनादिति ॥—

सही—कल्याणमिश्र पण्डित आदालत दिवानी
जिले तिरहुत वकलम
रामनाथमिश्रपण्डित ।

नं० ३५९ सदर—

इं० सन १८३६ सालेर १७ मे मोताबक सन १२४३ सालेर ५ ज्यैष्ठ मङ्गलवारेर प्रकाश्य मोकाम कलिकातार सदर देओयानि आदालतेर मिछिलेर सोवकारि उक्त आदालतेर हाकिम श्रीयुत जार्ज्ज ष्ट्राकोयेल साहेबेर नेसस्ते—

गम्भिरराय, ताहार मृत्युर पर विजयराय ओ गयरह—

श्रापीलाण्टान
मोछमात धनेश्वरी ओ गयेरह् रेष्पानडेण्टान

श्रापीलाण्टानेर उकिल बजरङ्गीलाल ओ रेष्पानडाण्टानेर उकिल मुनशी दादारवक्स हाजीर हइल। एइ मोकर्दमा अद्य तरतिब नम्बर मते आमार नेसस्ते रोवकार हइया मिछिलेर कागजात पठीत हइल। ताहार मध्ये ये जेला बिरोहुतेर आदालतेर पण्डितेर दुइ व्यवस्था मोलाहेजा हइल। यदि स्यात् उक्त दुइ व्यवस्थार मध्ये रेजेष्टर साहेबेर सओयाल ओ जजसाहेबेर सओयालेर मध्ये विभिन्नतार प्रति दृष्टीते आमार निकट कोनो प्रभेद प्रकाश नाइ। किन्तु जे हेतुक प्रकाश आछे–जे एइ मकर्दमार द्वारा आपील लिखित व्यवस्थासकलेर तेहाजे मञ्जुर हइयाछे, ए जन्य ए आदालतेर पण्डितके उक्त व्यवस्थासकलेर लिखित जओयावेर यथार्थता तिरहुतेर चलित शास्त्र अर्थात् मैथिल अनुसारे जिज्ञासा जन्य ताहा समर्पन उचित विवेचना हइया हुकुम हइल जे एइ रोवकारिर नकल मोकर्दमार नथिर ग्रन्थितो आसल दुइ व्यवस्था समेत एइ आदालतेर पण्डितेर निटक पाठान जाय। एइ हुकुम, ये उक्त पण्डित दुइ व्यवस्था दृष्टेर पर एइ विषयेर जओयाब जे लिखित व्यवस्थासकल तिरहुत जेलार चलित शास्त्र अनुसारे यथार्थ बटे कि ना—एक सप्ताइ मेयाद मध्ये दाखिल करेन इति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतबार्ल्वेहृष्टाकोएलसाहेबधर्म्माधिकरण-लिखितेशाणीशब्दप्रतिपाद्यसगुणगजेन्दुमिताब्दीयमैमासीयमुनीन्दुमितदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रविलरत्नमेवं तत्सम्पर्पिततोरभुक्तिजिलाख्यान्तरधर्म्माधिकरणनियुक्तपण्डितलिखितव्यवस्थाद्वयं च यचद्रन्ध्रीयतत्मासीयगजपक्षमितदिनसम्बन्धिशनिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधा जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥—

प्रभुसमर्पितव्यवस्थाद्वयोस्तात्पर्यार्थस्त्वयमेव—कस्यचिदनपत्यस्य मृतस्य ब्राह्मणस्य पत्न्याः स्वस्वकान्तपतिस्थावरादिधनस्य पतिसपिण्डेषु विद्यमानेष्वन्यस्मै हस्तान्तरकरणे क्षमता नास्ति, किन्तु यावज्जीवं भोगाधिकार इति। तत्प्रभुसमर्पितव्यवस्थाद्वयोपरिलिखितप्रश्नद्वयलिखितवृत्तान्ते सति मिथिलादेशप्रचलितशास्त्रानुसारेण यथार्थमेव भवति. प्रभुसमर्पितव्यवस्थाभ्या तद्व्यवस्थाद्वयोपरिलिखितप्रश्नाभ्यां चैतद्विवादे पत्न्याः स्वस्वकान्तपतिस्थावरादिधनस्य हस्तान्तरकरणक्षमताबोधकशास्त्रीयावश्यकहेतुनवगमादिति ॥—

ईशवीयशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयजुनमासीयद्वाविंशतितमदिनसम्बन्धिबुधवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्राभ्यां व्यवस्थापत्राभ्यां च निवेदनपत्रेण च सहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(৯৬)—৯৩ नং सदर—

इং सन १৮৩৬ साल्लेर ৬ एफरेल मोताबक सन १२४२ साल्लेर २६ चैत्र तारिख बुधवारेर प्रकाश्य मोकाम कलिकातार सदर देওयानी आदालतेर रोवकारि उक्त आदालतेर हाकिम श्रीयुत जार्ज्ज इष्टाकोयेल साहेबेर एजलासे—

রামনাথসিংহ— आपीलाण्ट—

राजारूपसिंह ओ राधेकृष्ण— रेस्पाडेण्टान—

आपीलाण्टेर उकिल मुनशी दादारवक्स ओ रेस्पाडेण्टानेर उकिल मुनशी आलीउल्ला उपस्थित हइलो। एइ मोकद्दमा अद्य तरतिब नम्बर मते आमार नेसवते रोयकार हइया मिछिलेर कागजसकल विवेचनाय जाना गेलो जे मुद्दइआन अर्थात रेस्पाडेण्टान राजारूपसिंह ओ राधेकृष्णेर नओयान परगनार दत्तौट ओ गयरहे मौजाहायेर पर हक्क-सफा सुरते दखल करणेर दाविते

विक्रेता धुरमलसिंह श्रो खरिदार रामनाथसिंहेर नामे जेला साहाबादेर देओयानी आदालते नालिस करिलेक। जेलार जज साहेबेर वजविजे आदालतेर मौलविर स्थाने फतओया अर्थात् व्यवस्था लइया सफा अनुसारे विरोधीय वस्तुर प्रति मुद्दाइआनेर दावि यथार्थ हओयानेर विशय डिक्री करिलेन श्रो सेइ डिक्री द्वितीय निष्पत्य स्थाने एलाका आजिमाबादेर प्रोविनशीयल कोर्टे बहाल करिल, जे वर्त्तमान आपीलाण्ट ताहाते नाराज हइया ए आदालते आपील खास उपस्थित करिलेक। सन १८३३ सालेर २३ जुलाइ तारिखेर रोयकारि मते एइ आदालतेर हाकिम रावर्ट हालडन राटरि साहेबेर नेसस्त हइते मञ्जुर हइलो। जे हेतुक प्रकाश जे आपील खास मञ्जुरिर कारण—ये जाहार उभय पक्ष हिन्दुजाति, से मकद्दमा तजविज हओया शरा अर्थात् जवनीय धर्म्मशास्त्रेर अधिकारिके जिज्ञास्यमते। अतएव अन्य विषयसकल वजविजेर पूर्व्वे आदालतेर पण्डितके ताओरा जिज्ञाशा उचित। यथा उभय पक्षेर उकिल प्रकाश करिलेक जे यदि जजसाहेबेर फयशालार लिखित सओयालसकलेर जओयाव वेहारदेशेर चलित शास्त्रानुसारे ए आदालतेर पण्डितेर स्थाने लओया जाय लभ्यजनक हइवेक। अतएव हुकुम हइलो जे एइ आदालतेर पण्डित निचेर लिखित सओयालसकलेर जओयाव दुइ सप्ताहेर मध्ये दाखिल करेण, श्रो रोयकारिर नकल बाङ्गला तरजमार सहित आदालतेर पण्डितेर निकट प्रेरित हय॥—

१ प्रथम सओयाल—

देओट तालुकेर हिस्यादार धुरमलसिंह विक्रेता, बाबु रामनाथसिंह खरिदार, राजरूपसिंह श्रो राधेकृष्णसिंह हक-सफा तलविर श्रोजरदार, आर मौराशी तालुक मजकुरार हिस्यादारान, एवं चतुर्थ पट्टी, जाहाते विक्रेता वेसरिक आछे, ताहारो हिस्यादार राजरूपसिंह श्रो राधेकृष्ण श्रोजरदारेर दाओट तालुकेर

मध्ये अन्य एक मौजार खरिदार उक्त बाबुरामनाथसिंह। यदि-स्यात् विक्रेता आपन अंश बाबुरामनाथसिंहेर निकट बिक्री करे, उपरेर लिखितेर प्रति विवेचनाय राजरूपसिंह ओ राधेकृष्णोर हकसफा अर्शे कि ना ॥—

२ द्वितीय सओयाल—

धूरमलसिंह विक्रेता बाबु रामनाथसिंह खरिदारके सन १२३५ फसलीर लेखा एक केता बयनामा मबलगे तिन सत टाकार कबे दे(य), ओ बायनार तारिख हइते एक मासेर मध्ये कबाला लिखिया दिबार ओ तत्कालीन पानेर बाकि मबलगे एक हाजार पञ्चाश टाका लइबार एकरारे लिखिया देय। इति मध्ये राजरूप-सिंह ओ राधेकृष्ण एक मास गतां हओनेर पूर्व्वे अर्थात् सन १२२८ सालेर १६ मै तारिखे तिन सत टाका उपस्थित करिया मलबे लओया सुरत अर्थात् तलपरता चेष्टा करिलेक, फलितार्थ आदालते दाखिल करिलेक। ए प्रकार विषय एमत् आनामत हक-शफा रक्षा करणार्थ फलदायक हय कि ना ॥—

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतजजबर्डशाकोपलक्षाद्देवधर्म्माधिकरण-लिखितेशवोधानन्दप्रतिपाद्यस्वगुणगजेन्दुमिताब्दीयापरैलमासीयविचारपत्रा-न्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपार्थं यत्तदब्दीयतन्मासीयरसेन्दुमितदिनसम्बन्धिपत्रलिखा-मरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रभुसमर्पितप्रथमप्रश्नलिखितविवेचनया धर्म्मशास्त्रानुसारेण राजरूप-सिंहराधेकृष्णयोर्हक्शफाशब्दप्रतिपाद्यं भवितुं न शक्नोतीति ॥

अत्र प्रमाणम्—

व्यवहारान् नृपः पश्येद्विद्वद्भिः ब्राह्मणैः सह ।

धर्म्मशास्त्रानुसारेण—इत्यादि मिताक्षरादिमन्यधृतयाज्ञवल्क्य(२।१) वचनम् ॥१॥

यद्येकजाता बहवः पृथग्धर्माः पृथक्क्रियाः ।
पृथक्कर्म्मगुणोपेता न तत्कार्य्येषु सम्मताः ॥२॥
स्वभागान् यदि दद्युस्ते विक्रीणीयुरथापि वा ।
कुर्य्युर्यथेष्टं तत्सर्व्वमीशास्ते स्वधनस्य वै ॥ इति वीरमित्रोदयादि-ग्रन्थधृतनारदवचनद्वयम् ॥३॥—

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रभुसमर्पितद्वितीयप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति एतादृशमूल्यस्थापनं इकस्-फाशब्दप्रतिपाद्यस्य रक्षणार्थं धर्म्मशास्त्रानुसारेण फलदायकं न भवति—इति बेहारदेशचलितमनुमितात्तरावीरमित्रोदयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ।

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रमाणत्रयमेवेति ॥३॥—

यद्यपि महानिर्व्वाणतन्त्रग्रन्थे इकस्फाशब्दप्रतिपाद्यविषये उपरि-लिखितव्यवस्थाया विरुद्धमपि लिखितमस्ति, किन्तु महानिर्व्वाणतन्त्रग्रन्थो धर्म्मशास्त्रान्तर्गतो न भवति। अत एव तद्ग्रन्थानुसारेण व्यवस्था न लिखिता इति निवेदनमिति ॥—

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यसप्तसुखागजेन्दुमिताब्दीयजुनमासीयद्वाविंशतितम-दिनसम्बन्धिबुधवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रवहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(९७)—नम्बर—११६

मोकाम कलिकातार सदर देओयानि आदालतेर पण्डित समीपे प्रश्न एइ—

कालीकान्तवल — आपीलाण्ट
पार्व्वतीदास्या — रेस्पाण्डण्ट

यदि कोन व्यक्ति तिन पुत्र ओ एक स्त्री राखिया मृत्यु हय, ओ ताहार स्त्री ओ पुत्र दिगेर अनैक्यताभाव अर्थे, तवे एतद्देशीय

चलित शास्त्रानुसारे ऐ मृत व्यक्तिर स्त्री पुत्रदिगेर समक्षे पतिर वित्तेर अंश पुत्रदिगेर समांस मते पाइते पारे कि ना। यदि पुत्र-दिगेर समांसे वित्तांसि ना हय, तवे कि परिमाणे वित्तांसि हय—एहार उत्तर लिखिवेन इति। १८३६ सा॰ ८ फेब्रुआरी मोताबेक वङ्गला सन १२४२ तारिख २७ माघ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं विचारपत्रं च यदीशवीशब्दप्रतिपाद्यरसगुण-गजेन्दुमिताब्दीयमाघमासीयद्विपक्षमितदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्राप्य तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यदि कश्चिद्व्यक्तिविशेषस्त्रीन् पुत्रानेकां पत्नीं च विहाय मृतः स्यात्, अथ च मृतस्य पत्न्या सह मृतस्य पुत्राणामर्थान्मातृपुत्राणां मध्ये पुत्रकृत-पितृधनविभागद्वारेणानैक्ये सति अर्थात् त्रिभिः पुत्रैर्मात्रे भागमदत्त्वा पितृधनं समांशेन विभज्यते, तदा मातापि पुत्रसमांशं ग्रहीतुमर्हति, पुत्रकृतपितृत्यक्तधनविभागोपक्रमं विनैव मात्रा स्वेच्छयैव विभागं कृत्वा पतित्यक्तधनांशयाचनेन अनैक्ये सति माता विद्यमानेषु पुत्रेषु पतित्यक्त-धनांशं पुत्रांशं समांशानुसारेण प्राप्तुं नार्हति, किन्तु यावज्जीव स्वपतिकुलोचितग्रासाच्छादनोपयुक्तधनावश्यकविधवाधर्म्माद्याचरणोपयुक्त-धनस्य चाधिकारिणी भवति—इति बङ्गदेशचलितमनुदायभागादिग्रन्थानु-सारिणी व्यवस्थेति॥

अत्र प्रमाणम्—

पितरि चोपरते सोदरभ्रातृभिर्विभागे क्रियमाणे मात्रे पुत्रसमांशो दातव्यः—इति दायभाग(पृ॰ ६७)ग्रन्थलिखनम्॥१॥

भरणं पोष्यवर्गस्य प्रशस्तं स्वर्गसाधनम्
नरकं पीडने चास्य तस्माद् यत्नेन तं भरेत्॥ इति दायभागादि-ग्रन्थधृतमनुवचनम्॥२॥

पिता माता गुरुर्भार्या प्रजा दीनाः समाश्रिताः ।
अभ्यागतोऽतिथिश्चैव पोष्यवर्ग उदाहृतः ॥ इति दायभागटीका(पृ० ३४)धृतमनुवचनञ्चेति[1] ॥३॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यरथगुणगजेन्दुमिताब्दीयतुलाख्यमासीयगुणेन्दुमितः दिनस्थनिधिघुघन्नाक्षे मया प्रसुसमर्पितप्रश्नपत्रविचारपत्राभ्यां इङ्गरेजीपत्राभ्यां च सहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीउर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(९८) नं० २०२ सन १८३३ ।—

मोकाम कलिकातार सदर देओयानी आदालतेर मिछिलेर रुबकारि उक्त आदालतेर हाकिम श्रीयुत आर्ज्ज ड्राकोयेल साहेबेर नेमस्ते इंराजी सन १८३६ सालेर १६ आपरेल मोतावक बाङ्गला सन १२४३ सालेर ५ वैशाख शनिवार प्रकाश्य—

शिवनारायणचौधुरि	आपीलाण्ट
राधाप्यारीदासी ओ गयरह	रेस्पाण्डेण्टान
राधामोहनमित्र	जेवार मोजाहेम
मधुसूदनदास	एइ आदालतेर छायेल

आपीलाण्टेर उकिलवर्ग जेमेप कोलब्रोक सवरलेण्ड साहेब ओ सदाशुखपण्डित औ रेस्पाण्डेण्टानेर उकिल तारार्चांदवन्द्योपाध्याय ओ राधामोहनमित्रेर उकिल गौरहरिवन्द्योपाध्याय ओ मधुसूदनदासेर उकिल शिवनारायणचट्टोपाध्याय उपस्थित हइल। एइ मकर्द्दमा अपरिमित तारिखे आमार नेमस्ते रुबकार हइया मिछिलेर कागजसकल पठित हइल। बोध हइल जे मोद्दइ आपीलाण्ट लाद राघानगर आपन खरिदा पर्त्तनिर हकियते

१. मनुस्मृतौ नोपलभ्यते।

दखल थाक्षोनेर दाविते वयनामार लिखित मूल्य ओ तालुकेर उपस्वत्त्व मवलेग ७०५१ टाकार तायदादे राधाप्यारिदासी ओ कृष्णदासदत्त ओ तिलकरामदत्त आसामीयानेर नामे हुगलि-जेलार देश्रोयानि आदालते एइ एजहारे नालिश करे जे राम-गोपालदत्त ताहार भ्रातृगण तिलकरामदत्त ओ रघुनाथदत्तेर सहित अन्न प्रथक हओनेर परे सन १२२१ साले आपन उपार्जन-हइते नाट राधानगर तालुक पत्तनी सुरते खरिद करिया दखिल ओ कावेज हइया लोकान्तर हय। ताहार मृत्युर पर ताहार. वनिता राधाप्यारीदासी आपन स्वामीर ज्येष्ठ भ्राता तिलकराम-दत्त ओ पोष्य पुत्र ओ दौहित्र कृष्णरामदत्तेर सरवराहकारिर द्वारा दखिलकार हइया सदर जमिदारेर जमिदारि सेरेस्ताय आपन नामे दाखिल कराइया नाम जारिर लिपि हासिल करिया स्वामिर ऋण परिशोध ओ मालगुजारिर वाकि निमित्त. उक्त तालुकेर सामुदाइक हकुक सन १२३८ सालेर २३ फाल्गुण तारिखे मवलगे पाँच हाजार टाका पने फरियादिर हस्ते विक्रय करिया, ताहार वयनामा साक्षिगणेर साइदीते ओ रेजेष्टरी निशा नीते लिखिया दिया, खारिज ओ दाखिल कराइया फरियादिके ओ दखीलकार करार परे उक्त राधाप्यारि अन्य प्रतिवादिगणेर कुपरामर्शे फरियादिर हस्ते विक्रय करा अस्वीकार सम्वलित फौजदारिते दरखास्त गोजराय ओ उक्त राधाप्यारी ओ तिलक-रामदत्त ओ रघुनाथदत्तेर पत्तनी दावि सुरते ओ जगमोहन-मिश्रेर ओयारिश राधामोहनमिश्रेर उक्त नाटेर चारि आना रकमे दरपत्तनीदारि पदे दखल थाकनेर हुकुम ओ तम्वरि नालि-सेर अनुमति फरियादिर प्रति छादेर कराय। आसामीयान ताहार जओयावे पष्ट अस्वीकारी हइया विरोधीय तालुक जे राधाप्यारीर स्वामी रामगोपालदत्तेर सोपार्जित ओ ताहार भ्रातृ-वर्गेर सहित प्रथकान्ने थाका मुनकीर, वरं ए काल पर्य्यन्त ताहार-दिगेर तावत कारवार साधारणे ओ एजमालीते थाका प्रकाश.

करे, एवं फरियादिर दरपेश करा कवाला जाल ओ कित्रिम करार दिया शास्त्र मते उक्त राधाप्यारिर कन्या ओ दौहित्र वर्त्तमाने दान ओ विक्रय अशीध्य वयान करे। जेलार जज-साहेव जुरिरदिगेर राय, ए विषयेर विशेष तह्कीकाते जे विरोधीय तालुक रामगोपाल दत्तेर स्वोपार्जित कि तिन सरिकेर अंश आछे, लइया आपन रायेर ऐक्यताय तदानुसारे सन १२३४ सालेर ३ मार्च्च तारिखे लिखित फयसलार कारणसकले फरियादिर दावी डिसमिस करिलेन। एइ प्रकारे जे फरियादी, यदि राधाप्यारिदासयार हिस्यार प्रति कोन दावि राखे, पृथक् नालिश उत्थापन करणेर क्षमता आछे। मोदइ ताहाते नाराज हइया एइ आदालते आपिल करियाछे—जे हेतुक आमार निकट राधामोहनमिश्रेर मोजाहेमो सओयालेर प्रति, जे आपनाके विरोधीय तालुकेर चतुर्थांशेर दरपत्तनीदार करार देय, एइ विवेचनाय जे से ए मकद्दमार आसामियानेर मध्ये नहे। केवल दर पत्तनीदार मात्र, कोन हुकुम छादेर करा आविश्यक नाइ, ओ मधुसूदनदासेर अर्पित दरखास्तेर प्रति ओ जे से आपन खरिद करिया ए आदालते दाखिल करियाछे, कोन हुकुम उपयुक्त वोध हय ना। जखन ए मकद्दमा निष्पत्य हइवेक एवं विरोधीय वस्तु, आपीलाण्ट किम्वा रेष्पाण्डेण्ट, जाहार हक, हइवेक, ताहार पर दावि उपस्थित करा व्यतिरेके उहार दखलेर हुकुम हइते पारे ना। अतएव ताहा परित्याग करिया ए मकद्दमार आसल अवस्थार प्रति मोहनलालखाँ आपीलाण्टेर मकद्दमार प्रसङ्ग जाहा राणी सिरोमणी रेष्पाण्डेण्टेर नामे सन १८१२ सालेर ३१ आगष्ट तारिखे एइ आदालत हइते निष्पत्य पाइयाछे। एवं आमार अनुमाने ताहार लिखित हेतुसकल जावदीय उत्तराधिकारी जाहारा हस्तान्तरेर समय जीवत्मान थाके ताहारदिगेर सम्मति ओ अनुमति भिन्न स्वामीर स्वार्थ्य सामुदाइक विषय हस्तान्तर करणेर विषये अशीद्ध वोध हय। अनुष्ठान करा गेल। ताहाते

आपीलाण्टेर उकिल कहिलेक जे आमि अनुमान करि से मक-र्द्दमा दान विषयक, ताहाते पण्डितवर्गेर लिखित जे व्यवस्था ताहा एइ विक्री विषयक, मकर्द्दमार सहित कोन सम्पर्क नाइ। ए जन्य ए विषय शास्त्रवेत्ताके जिज्ञासा करा उचित बोध हइल। अर्थात् एइ आदालतेर पण्डितके जिज्ञासा करा जाय जे से उपरेर लिखित फयसला दृष्टि करणेर परे सकल उत्तराधिकारि, जाहारा विक्रयपत्र लेखा हइवार समय जीवद्दशाय छिल, ताहार-दिगेर अनुमति भिन्न टाकार परिवर्त्ते स्वामीर स्थाव्यं सामुदाइक भूम्यादि विक्रयेर प्रति विधवा स्त्रीर क्षमता विषये शास्त्रेर आज्ञा बयान करे, ओ ए विषये स्वामिर ऋण थाकुक वा ना थाकुक कोन प्रभेद आछे कि ना; एवं यदि स्यात् स्वामीर स्थावर सामु-दाइक भूम्यादि विक्रय करिते ना पारे, तवे तन्मध्ये कि परिमान विक्रय करिवार क्षमता राखे—स्पष्ट करे। अतएव हुकुम हइल जे मकर्द्दमा अद्य मोलतवी थाके, एवं उपरेर लिखित विषयमकलेर जिज्ञाशा करेण। एइ रुवकारिर नकल एइ आदालतेर पण्डितेर निकट प्रेरित हय इति॥

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतजार्ज्जइष्टाकोपलसाहेबधर्म्माधिकरण-लिखितैतद्वीयाब्दमतिपार्थरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयावरेलमासीयरसेन्दुमित-दिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपञ्च यच्चतद्ब्दीयमेइमासीयशिवमित-दिनसम्बन्धिबुधवासरे तत्समर्पितरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयजुलाइमासीयमुनि-मितदिवसीयविचारपत्रान्तरञ्च यच्चतद्ब्दीयतन्मासीयगुणेन्दुमितदिनसम्बन्धि-बुधवासरे च मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेण प्रभु-समर्पितविचारपत्रलिखितप्रश्नावलोकनेन-चोत्तरं लिख्यते—

विक्रयपत्रलिखनकालीनविद्यमानोत्तराधिकारिसमुदायानुमतिमन्तरेण राजतमुद्राविनिमये पत्न्याः स्वसंक्रान्तसमस्तपतिस्थावरादिधनस्य विक्रयकरण-

क्षमता शास्त्रीयावश्यककार्य्यार्थमर्थात् पतिकृतर्णपरिशोधनार्थं पत्यौर्द्ध्वदैहिकक्रियाद्यर्थं पतिकुटुम्बभरणार्थं स्वभरणपोषणाद्यर्थं चास्त्येव । पत्नी शास्त्रीयावश्यककार्य्यार्थव्यतिरिक्तस्वेच्छया स्वमरणानन्तरं विद्यमानपत्युत्तराधिकारिस्वत्वनाशकविक्रयकरणक्षमतां न लभत इत्येवात्र विशेषः । एवञ्च सति पतित्यक्तस्थावरादिधनान्तर्गतेन यावता धनेन पतिकृतर्णपरिशोधनस्योपरिलिखितावश्यककार्य्यान्तरस्य वा निर्व्वाहो भवति विधवायास्तत्परिमितपतित्यक्तस्थावरादिधनस्य विक्रयकरणक्षमतायाः शास्त्रीयत्वमेव । यदि च पतित्यक्तस्थावरादिसमुदायधनस्य विक्रयमन्तरेण पत्नीकर्त्तव्यशास्त्रीयावश्यककार्य्यजातस्य तदन्तर्गतस्य कस्यचिदपि कार्य्यस्य वा निर्व्वाहो भवितुं न शक्यते, तदा तत्तत्कार्य्यस्य निर्व्वाहार्थं पत्न्याः पतित्यक्तस्थावरादिसमुदायधनस्य विक्रयकरणक्षमतायाः शास्त्रीयत्वमेव—इति वङ्गदेशप्रचलितदायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥

अत्र प्रमाणम्—

ऋक्थग्राही ऋणं दाप्यः—इति विवादभङ्गार्णवादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥१॥

भर्तृकामेन वा भर्त्रा उक्ता देयमृणं त्वया ।
अप्रपन्नापि सा दाप्या धनं यद्याश्रितं स्त्रिया ॥ इति विवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥२॥

भर्त्ता जीवन् यथा यस्य पोषणादिकं यद्यद्वा कर्म्म करोति मृतभर्तृकापि स्वशक्त्यनुसारेण तथैव तस्य पोषणं तच्च कर्म्म कुर्य्यात्—इति विवादभङ्गार्णवग्रन्थलिखनम् ॥३॥

भर्त्तुरौर्द्ध्वदैहिकक्रियाद्यर्थं दानादिकमप्यनुमतमिति । वर्त्तनाशक्तावाधानमप्यनुमतम् । तत्राप्यशक्तौ विक्रयणमपि च—इति दायभागग्रन्थलिखनञ्चेति ॥४॥

ईशवेशशब्दप्रतीताक्षरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयजुलाइमासीयइन्दुपक्षमित-

दिनधर्म्मनिप्रबुधवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रेण चतुर्भिर्व्यवस्थापत्रैः सहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

अत्र प्रमाणम्—
पश्यन्नन्यस्य ददतः क्षितिं यो न निवारयेत् ।
स्वामी सतापि लेख्येन पुनस्तान्न समाप्नुयात् ॥ इति वृहस्पति(पृ० ७५)वचनादिति—

सही –रामनाथमिश्र, पण्डित अदालत दिवानीः
जिले—तिरहुत ॥

श्रीश्रीदुर्गा

(१००) – नं० ५१४ –

मोतफरका सन १८३६ ई०—

रोयकारि मिछिल आदालत देओयानि सदर मोकाम कलिकाता श्रीयुत डेविड इरामितसाहेब कायेम-मोकाम हाकिम आदालय मजकुरार बैठके। तारिख १८ जून सन १८३६ ई० मोताबक ६ आषाढ सन १२४३ वाङ्गला रोज शनिवार ॥—

मोकमात रूफमन— शाएला—

साएलार उकिल तारकचन्द्रराय हाजिर हइलो, गत रोजेर हुकुमानुसारे जिला भागलपुरेर जजसाहेबेर गत २८ माइ माहार लिखित रोबकारि ओ रिटरण जाहा एइ आदालतेर हाल सनेर २४ मार्च्च माहार लिखित रोबकारिर जवावे एइ मकद्दमार कागजात ओ ताहार इंलेरि तरजमा सम्वलित पौंछियाछिल, अद्य साएलार सओाल ओ गयरह कागजात सहित उपस्थित हइया विवेचना हइल। जे हेतुक साएलार सओाल प्रति नातफ-

(१०१)—पण्डितेर पर सञ्जोल—

श्रीरामरामसुखोपाध्याय नामे एक जन छिल। ताहार चारि पुत्र। ज्येष्ठ श्रीरामलोचनमुखोपाध्याय, द्वितीय श्रीराममोहनमुखोपाध्याय, तृतीय श्रीरामतनुमुखोपाध्याय, चतुर्थ श्रीताराचाँदमुखोपाध्याय। ताहार मध्ये राममोहनमुखोपाध्याय निःसन्तान फौत करियाछे। आर बाकी तिन जनार ओयारिस वर्त्तमान आछे। ऐ रामरामसुखोपाध्याय आपन ब्रह्मोत्तर देड़ बिघा जमि बागान आपन एक कन्या करुणामयीदेवीके दान करे। ताहार दानपत्र एक केता सन ११७४ सालेर २५ वैशाख तारिखेर लिखित दाखिल हइयाछे। ऐ दानपत्रेर शाइद हय नाइ। अतएव जिज्ञास्य एइ ऐ दानपत्रे दानदत्तार ओयारिसान अर्थात ताहार पुत्रसकल सत्ते यदि दान हइया थाके, आर ऐ दानदत्तार पुत्रेरा सेइ दानपत्रे यदि साक्षि ना हइया थाके, आर दानदातार अयारिशानेर अनुमति व्यतिरेके ऐ दान यदि हइया थाके, तवे एमत दान सिद्ध हय कि ना–यथाशास्त्र इहार व्यवस्था, जाहा हये, लिखिवेन इति। सन १८३६ साल तारिख १२मे॥—

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं विचारपत्रद्वयञ्च यदीशधीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयजुनमासीयवेदेन्दुमितदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति दात्रुत्तराधिकारिणां विद्यमानतायां दानं यदि वास्तवं जातं स्याद्, एवं तद्दानपत्रे दातृपुत्राः साक्षिणो नैव जाताः स्युः, दात्रुत्तराधिकारिणामनुमतिमन्तरेण तद्दानं जातं स्यात्, तत्र तद्दानविषयीभूतं धनं दात्रवश्यभर्त्तव्यकुटुम्बभरणोपयुक्तातिरिक्तञ्चेत्तदा तद्दानं शास्त्रानुसारेण सिद्ध्यति, तद्दानविषयीभूतं धनं दात्रवश्यभर्त्तव्यकुटुम्बभरणोपयुक्तातिरिक्तं न चेत्तर्हि तद्दानं न सिद्ध्यति–इति वङ्गदेशचलित–मनुदायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति॥–

अत्र प्रमाणम्—

कुटुम्बभक्तवसनादेयं यदतिरिच्यते—इति विवादभङ्गार्णवादिग्रन्थधृतबृहस्पतिवचनम् ॥१॥

पण्यमूल्यं भृतिस्तुष्ट्या स्नेहात्प्रत्युपकारतः ।
स्त्रीशुल्कानुग्रहार्थं च दत्तं दानविदो विदुः ॥ इति तत्तद्ग्रन्थधृतनारद-(नामस० पृ० ६०)वचनञ्चेति ॥२॥

ईशावीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमितशकीयशिततरमार्गशीर्षमुनिमितदिनसम्बन्धिबुधवासरे मया प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रविचारपत्रैः सहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीर्जयतितराम्—
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(१०२)—महामहिम श्रीयुत अध्यापक महाशय वरावरेषु—निवेदन ।

प्रथम प्रश्न :—

एक व्यक्ति धनि आपन स्वोपार्जित तथा पितृपार्जित स्थावरास्थावर माय इमारतादि भद्रासन बाटी बागान पुष्करणी तथा ब्रह्मोत्तर जमि आपन भोग-दखले कायेम थाकिया औयारिस चारि पुत्र । ताहार ज्येष्ठ प्राप्त वयस, मध्यमदीगर नावालगके ऐ सकल वस्तुते भोग दखले राखिया सन १२०२ साले लोकान्त हयेन । ताहाते ऐ ज्येष्ठ सहोदर ऐ सकल वस्तुर उपस्वत्त्व तथा किञ्चित २ आपन उपार्जन-द्वारा ऐ संसार भरण पोषन आन्दाज १७ वतसर करियाछेन । ताहार मध्ये जमिदारलोक तथा इजारादारलोक कोन २ जमि आटक करियाछिल, ताहाते ऐ एकान्नवृत्ति ऐ ज्येष्ठ सहोदर ए जमिर दलिल[1] ओ भोग सप्रमाण देखाइया आपन परिश्रमेर द्वारा ऐ जमिर फसल छाड करिया खालाम

---

१. दखलार्थे छानीयान् पाठ. ।

करियाछेन। अतएव ए दयने ऐ जमिर किरूप अंश हइवेक्, शास्त्रानुसारे व्यवस्था आज्ञा हय ।।—

द्वितीय प्रश्न :—

ऐ चारि सहोदरेर मध्ये तृतीय भ्राता आपन वनिता ओयारिप राखिया ऐ रूप एकान्नवृत्ति थाकिया लोकान्त हयेन। ऐ मृत व्यक्तिर वनिता ओ तिन सहोदर एकान्नवृत्ति थाकिया ताहार मध्ये मध्यम विदेशस्थ हइया आपन चाकुरि द्वारा प्रतिपालन नित्य नैमित्तिक क्रिया आन्दाज २० वत्सर करियाछेन, आर पैतृक भद्रासन वाटी भग्न हइयाछिल, ताहाते अनेक टाका खरच-पत्र-पूर्व्वक उत्तम करियाछेन। ए दयने ऐ वाटीर किरूप अंश हइते पारिवेक, शास्त्रानुसारे व्यवस्था आज्ञा हय ।।—

तृतीय प्रश्न :—

एसकल प्रश्नोत्तर जमिर मध्ये कोनो जमि जमिदार आटक करियाछिल। ताहाते मध्यम ओ कनिष्ठ सहोदर विदेशस्थ प्रजुक्त ज्येष्ठ सहोदर आदालते आपन नाम जारि करिया साधारणेर धन व्यय करिया ऐ जमिर नालिस करिया खालास करियाछेन। ए दयने ऐ डिगरि जमिर किरूप अंश हइवेक व्यवस्था लिखिते आज्ञा हइवेक ।।—

चतुर्थ प्रश्न :—

ऐसकल सहोदरेर मध्ये मध्यम सहोदर संसार प्रतिपालन करिया आसिते छिलेन। अकुलान मते किछु टाका कर्ज्ज हइयाछे। अतएव ए दयने ऐ संसार भरण-पोषणेर देना ऐ व्यक्ति परिशोध करिवेक, कि ऋण परिशोद हइया अंश हइवेक, ताहार शास्त्रानुसारे व्यवस्था आज्ञा हय, निवेदनमिति ।।—

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं विचारपत्रं च यदीशावीशन्दप्रविशारदगुणगजेन्दुमितान्दीयागस्तिमासीयाभ्रवमितदिनसम्वन्धिशनिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते —

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रथमप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति विवादास्पदीभूतां भूमिं समं चतुर्धा विभाज्यैकैको भागश्चतुर्णां भ्रातॄणां भवतीति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

विभजेरन् सुताः पित्रोरूर्ध्वंमृक्थमृणं समम्— इति दायभागादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥१॥

पितेव पालयेत् पौत्रान् ज्येष्ठो भ्रातॄन् यवीयसः ।
पुत्रवच्चापि वर्त्तेरन् ज्येष्ठे भ्रातरि धर्मतः ॥—इति मनुवचनम् ॥२॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

द्वितीयप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति विवादास्पदीभूतमद्राधनवाट्याः समं भागचतुष्टयं कृत्वा एको भागो ज्येष्ठस्य, एको भागो मध्यमस्यैको भागो मृतस्य भ्रातुः पत्न्याः, एको भागः कनिष्ठस्येति ॥

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रमाणद्वयम् ॥२॥

बिभृयाद्वेच्छतः सर्व्वान् ज्येष्ठो भ्राता यथा पिता ।
भ्राता शक्तः कनिष्ठो वा शक्त्यपेक्षा कुले स्थितिः ॥ इति दायभागादि(पृ० ६२)ग्रन्थधृतनारद(नमसं० १३.५)वचनम् ॥३॥

पत्नी दुहितरश्चैव—इत्यादि दायभागादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥४॥

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

तत्तद्भ्रातृभूमीनाम्मध्ये काचिद्भूमिः सराजकरस्थावराधिपतिप्रतिबद्धा सती ज्येष्ठद्वयोदरेण साधारणधनव्ययेनाभियोगेन च स्वायत्तीकृता स्यात्, तदा तस्यां भूमौ द्वितीयप्रश्नोत्तरलिखितानां चतुर्णां समानांश एवं भवतीति ।

अत्र प्रमाणम्

द्वितीयप्रश्नोत्तरलिखितप्रमाणचतुष्टयमेवेति ॥४॥

चतुर्थप्रश्नस्योत्तरम्—

चतुर्णां सोदरभ्रातॄणां मध्ये मध्यमसहोदरेणाशक्त्या यदर्थं भ्रातृचतुष्टयसाधारणकुटुम्बभरणार्थं कृतं स्यात्, तदर्थं सर्व्वैरेवांशिभिः स्वस्वांशानुसारेण परिशोधनीयम्—इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥

अत्र प्रमाणम्—

पितृव्यभ्रातृपुत्रस्त्रीदासशिष्यानुजीविभिः ।

यद् गृहीतं कुटुम्बार्थे तद्गृही दातुमर्हति—इति विवादभङ्गार्णववादिग्रन्थ(१ विवा० १६५ ख)धृतवृहस्पति(पृ० ११८)वचनम् ॥१॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयाकतुवरमासीयतृतीयदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रविचारपणाभ्यां सहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

कलिकातार सदर देवानि आदालतेर पण्डितेर प्रति सओयाल, एइ ये—यद्यपि ए-वी-नामे दुइ जन सहोदर भ्राता छिलो। ताहार मध्ये ए-नामे एक पुत्र राखिया वीनामे द्वितीय भ्राता विद्यमान थाकिते मृत्यु हय। एवं वी-नामे द्वितीय भ्राता एक पत्नी एवं कयेक कन्याके राखिया एवं आपन स्वोपार्ज्जित ओ असाधारण धन राखिया आपन भ्रातृपुत्र अर्थात् ए-नामक आपन भ्रातार पुत्र विद्यमान थाकिते मृत्यु हय। अतएव जिज्ञासा करा जाइतेछे जे ओइ वी-त्यक्त धन ओइ वीर स्त्रीके किम्वा कन्याके किम्वा भ्रातुष्पुत्रके अर्शिवेक-इहार व्यवस्था वारानशेरे र चालित शास्त्रानुसारे लिखेन इति।—

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितश्चङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्याक्षरप्रश्नपत्रं यदीशवीशब्दप्रतिपाद्य-मुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयजानवरीमासीयगजचन्द्रमितदिनसम्बन्धिशनिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य प्रभुप्रेषितगुरुचरणवसुकिरानीशब्दप्रतिपाद्यमुल्लोच-रितशब्दार्थविवेचनया च यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तर लिख्यते—

प्रभुसमर्पितप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति वोनामक व्यक्तिविशेषत्यक्तधने तत्पत्न्याः, पत्न्यभावे दुहितॄणा चाधिकारः—इति वाराणसीप्रदेशचलित-मिताक्षरावीरमित्रोदयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव—इत्यादि मिताक्षरादिग्रन्थधृत याज्ञवल्क्य(२।१३५)-वचनम् ॥१॥

अनपत्यस्य धनं पत्न्यभिगामि—इत्यादि तत्तद्ग्रन्थ(मिता० पृ० २२७)धृतविष्णुवचनञ्चेति ॥२॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगजेन्दुमिताब्दीयफेब्रवरीमासीयरसमितदिन-सम्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्रभुसमर्पिताङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्याक्षरप्रश्नपत्रसहि-तेयं व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(१०३)—२२६ सन १८३४ ई—

ई सन१८३६सालेर२४डिसम्बर मोतावेक बाङ्गला सन १२४३ सालेर ११पौष तारिखेर सदर देओयानी आदालतेर मिछिलेर रोवकारि उक्त आदालतेर हाकिम श्रीयुत वट्समममनी साहेवेर वैठके—

मोछम्मातसूर्य्यकुञर — आपीलाण्ट

कारुसिंह ओ गयरह — रेस्पाण्डेण्टान

आपीलाण्टानेर तरफ एइ मकद्दमार हामफाजेव ई सन१८३१

सालेर १४६लम्बरेर मकर्द्दमार उकिल चारलेस जेमेस कोलब्रोक सदरलेण्ड साहेब ओ मुनशी महम्मद हानिफ ओ एइ मकर्द्दमार रेष्पाइण्टानेर उकिल चारलेस फ्रेञ्च साहेब ओ बलवन्तसिंह मक्कार ओ नम्बर मजकुरेर मकर्द्दमार रेष्पाइण्टानेर तरफ उकिलान तारकचन्द्र ओ श्रीरामराय उपस्थित हइल ओ एइ मकर्द्दमार आपीलाण्टेर उकिलान सदासुखपण्डित ओ मुनशी दादारबक्स पीडित ओजरे उपस्थित नाइ। एइ मकर्द्दमा वर्त्तमान मासेर २२ तारिखे तरतीब नम्बरमते आमार बैठके रोवकार हइया ३३ नम्बर-पर्य्यन्त कागजात दृष्टीपरे दिवा अवसान प्रयुक्त मोलतबि छिल, अद्य पुनराय रोवकार हइया मिछिलेर दाखिल हओया व्यवस्था सकल पठित हइल। जे-हेतुक आमार निकटे निचेर लिखितमते आदालतेर पण्डितके जिज्ञासा आविश्यक-एजन्य हुकुम हइल जे एइ रोवकारिर नकल एइ हुकुमे जे आदालतेर पण्डित निचेर लिखित सओयालेर जवाब २ दुइ दिवस मेयादे दाखिल करेण-आदालतेर पण्डितेर निकट प्रेरित हय ओ आदालतेर पण्डितेर निकट हइते जवाब आसा पर्य्यन्त मकर्द्दमा मोलतबि थाके॥—

यदि स्यात् त्रिहुत-जेला निवासी हिन्दुजाति कोन एक व्यक्ति दुइ स्त्री राखिया लोकान्तर हय एवं उक्त व्यक्तिर मृत्युर परे ऐ दुइ स्त्री आपनार दिगेर स्वामीर त्यार्ज्ज विषये अधिकारिणी थाकिया प्रत्येक स्त्री आपन आपन गर्ब्भेर एक एक कन्या राखिया मृता हय एवं ऐ उभय कन्यार मध्ये एक जन एक पुत्र राखिया मरे, अपरा एक पुत्र-प्रसूता हइया उक्त पुत्रेर सहित जीवित। ओ वर्त्तमाना थाके—ए विधाय मृत व्यक्तिर त्यर्ज्ज वस्तु जे कन्या मरियाछे ताहार पुत्रे कि जे कन्या एक पुत्रेर (सहित) वर्त्तमाना आछे ताहाते अर्शिवेक; किम्वा कि। एवं यद्यपि मृत व्यक्तिर ज्ञातिगण, जाहार दिगेर सम्पर्क ऐ मृतेर सहित तिन किम्वा चारि पुरुषेर दुर हय, वर्त्तमान थाके—ए मृत व्यक्तिर

त्याज्यं वस्तुते ताहार दिगेर प्राप्यता ओ यथार्थतार प्रति शास्त्रेर आज्ञा कि आछे—ए विषयेर उत्तर मैथिलशास्त्र जाहा त्रिहुत प्रदेशेर चलित तदनुसारे लेखेन इति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतउइममनीसाहेबधर्म्माधिकरणलिखितेशावीशन्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयदिसम्बरमासीयवेदपक्षमितदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यच्चदब्दीयतन्मासीयरसपक्षमितदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रस्तुतमर्पितप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति प्रपौत्रपर्यन्तरहितस्य मृतस्य स्थावरादिधने जाताधिकारिण्योर्द्वयोर्निपत्न्योरुपरमे विद्यमानपुत्राया दुहितुरेवाधिकारः; दुहित्रभावे दौहित्राधिकारः इति कल्पतरुमदनपारिजातविवादरत्नाकरस्मृतिसार-ग्रन्थेषु लिखितः। किन्तु विवादचिन्तामणिविवादचन्द्रग्रन्थेषु न लिखितः इति तृतीयपुरुषीयसपिण्डानां चतुर्थपुरुषीयसपिण्डानां वा अधिकारप्रतिपादकमिथिलादेशचलितशास्त्राणामर्थादधोलिखितग्रन्थजातानां परस्परं विरुद्धमाशङ्क्यातमयोलिखितप्रमाणजातेष्वेव स्पष्टीकृतं विस्तरभयाद् व्यवस्थाया न लिखितम् इति निवेदनम्-इति मिथिलादेशचलितमनुविवादचिन्तामणि-विवादरत्नाकर-विवादचन्द्र-कल्पतरु-मदनपारिजातस्मृतिसारप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

विष्णुः—*अपुत्रस्य धनं पत्न्यभिगामि तदभावे दुहितृगामि तदभावे दौहित्रगामि तदभावे मातृगामि तदभावे पितृगामि तदभावे भ्रातृगामि तदभावे भ्रातृपुत्रगामि तदभावे बन्धुगामि तदभावे सकुल्यगामि*इति।

दुहितृदौहित्रानन्तरं पुनः बृहस्पतिः—तदभावे भ्रातरस्तु भ्रातृपुत्राः सनाभयः।

सकुल्याः बान्धवाः *शिष्याः* श्रोत्रियाश्च धनाहकाः ॥—इति कल्पतरुग्रन्थलिखनम् ॥१॥

दुहित्रभावे दौहित्रो धनभाक् । यदाह विष्णुः—

अपुत्रपौत्रसन्ताने दौहित्रा धनमाप्नुयुः ।

पूर्वेषान्तु स्वधाकारे पौत्रा दौहित्रका मताः ।

अयमर्थो याज्ञवल्क्येनापि दुहितरश्चैव इत्यत्रैवकारेण द्योतितः । दौहित्रस्याप्यभावे पितरौ धनभाजौ—इति मदनपारिजातग्रन्थलिखनम् ॥२॥

दुहितृदौहित्रानन्तरं बृहस्पतिः

तदभावे भ्रातरस्तु भ्रातृपुत्राः सनाभयः ।

सकुल्या बान्धवाः शिष्याः श्रोत्रियाश्च धनार्हकाः ॥—इति विवादरत्नाकर(पृ० ५१५)ग्रन्थलिखनम् ॥३॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः शिष्यः सब्रह्मचारिणः ॥

एषामभावे पूर्व्वस्य धनभागुत्तरोत्तरः - इत्यादि विवादचिन्तामणि(पृ० २००)विवादरत्नाकर[१] पृ० ५६४ विवादचन्द्र(पृ० ८०)प्रभृतिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य(२।१३५) वचनम् ॥४॥

अनपत्यस्य धनं पत्न्यभिगामि तदभावे दुहितृगामि तदभावे मातृगामि तदभावे पितृगामि तदभावे भ्रातृगामि तदभावे भ्रातृपुत्रगामि तदभावे बन्धुगामि तदभावे सकुल्यगामि—इत्यादि विवादचिन्तामणि(पृ० २३५)विवादचन्द्र(पृ० ८१)विवादरत्नाकर(पृ० ५६५)प्रभृतिग्रन्थधृतविष्णुवचनम् ॥५॥

स्वपुत्रस्तदभावे पौत्रस्तदभावे प्रपौत्रस्तदभावे साध्वी भार्य्या तदभावे दुहिता तदभावे माता तदभावे पिता तदभावे भ्राता तदभावे तत्पुत्रस्तदभावे आसन्नसपिण्डस्तदभावे यथाक्रमं व्यवहितसपिण्डस्तदभावे आसन्नसकुल्यस्तदभावे यथाक्रमं व्यवहितसकुल्यः—इत्यादि विवादचिन्तामणि(पृ० २४३)ग्रन्थलिखनम् ॥६॥

बृहस्पतिः

यथा पितृधने स्वाम्यं तस्याः सत्स्वपि बन्धुषु ।

तथैव तत्सुतोऽपीष्टे मातृमातामहे धने ॥

---

१. ०पौत्रदौहित्रका.ऽन्या—इतिपर्कोपरस्थपाठः ।

मनुः—

दौहित्रो ह्यखिलम् ऋक्थमपुत्रस्य पितुर्हरेत् ॥

स एव दद्यात् द्वौ पिण्डौ पित्रे मातामहाय च ॥

एतद्द्वयं मात्राद्यभावे पत्नीदुहितरः—इत्यादि क्रमानुरोधात्—इति विवादचिन्तामणि(पृ० २३६)प्रन्थलिखनञ्चेति ॥७॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयफेवरवरीमासीयगजमितदिनसम्बन्धिबुधवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रसहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

तरजमा सवाल—

(१०४)—अलिफ ओ वे दुइ भ्राता छिलो। ताहार मध्ये कनिष्ठ भ्राता अर्थात वे पित्रादि-क्रमागत धनोपघातव्यतिरेके किछु धनोपार्जन करिलेक। ताहाते ज्येष्ठ भ्राता अर्थात अलिफेर किछुइ स्वत्व छिलोना। वरं आपन जीवद्दशा-पर्यन्त अलिफ किछुइ अंश ऐ धनेर पाय नाइ ओ एक पुत्र राखिया मृत्यु हइलो। ताहार पर कनिष्ठ भ्राता आपन स्त्री ओ कन्या सकलके राखिया मृत्यु हइलो, एवं उक्त व्यक्ति पुत्र किम्वा पौत्र किम्वा प्रपौत्र किछुइ राखे ना। अतएव प्रश्न करा जाइतेछे जे उपरे ये प्रकार लिखा गेलो ताहाते ऐ कनिष्ठ भ्रातार स्वत्व धने ताहार स्त्रीके अर्शिवेक किम्वा ताहार स्त्रीके ना अर्शिया ताहार ज्येष्ठ भ्रातार पुत्रके अर्शिते पारिवेक इति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितपारसीयशब्दप्रतिपाद्याच्चप्रश्नपत्रमंगरेजीशब्दप्रतिपाद्यादरपत्रं च यदीशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयफेवरवरीमासीयगजमितदिनसम्बन्धिबुधवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥—

प्रभुसमर्पितप्रश्नलिखितवृत्तान्ते मति वैश्यामकव्यक्तिविशेषत्यक्तधने तत्पत्न्याः पत्न्यभावे दुहितॄणां चाधिकारः—इति वाराणसीप्रदेशचलितमनुमिताक्षरावीरमित्रोदयप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव—इत्यादि मिताक्षराप्रभृतिमन्धधृतयाज्ञवल्क्य-(२।१३५)वचनम् ॥१॥

अनपत्यस्य धनं पत्न्यभिगामि तदभावे दुहितृगामि—इत्यादि तत्तद्ग्रन्थ(मिता० पृ० २१७)धृतविष्णुवचनञ्चेति ॥२॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयफेब्रवरीमासीयगुणपक्षमितदिनसम्बन्धिबृहस्पतिवासरे मया प्रभुसमर्पितपारशीशब्दप्रतिपाद्याक्षरप्रश्नपत्राङ्करेजीशब्दप्रतिपाद्याक्षरपत्राभ्यां सहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रस्य

---

(१०५)—मोकाम कलिकातार सदर देवानि आदालतेर ईसन १८३६ सालेर १९ मे मोतावेक वाङ्गला सन १२४२ सालेर ७ ज्यैष्ठ बृहस्पतिवार दिवसेर श्रीयुत ओलियेम आडिनसाहेबेर बैठकेर रोवकारि—

भेकनारायणसिंह— वनाम—

तिलकधारिसिंह ओ भेकनारायणसिंह ओ गयरह छापलेर उकिलदिगेर मध्ये एक व्यक्ति मुनशी दादारबक्स ओ द्वितीय पक्ष सदाशिवसिंह ओ मनकसिंह ओ तिलकधारिसिंह खोद ओ मृत रङ्गलालसिंह ओ अमृतलालसिंहेर अप्राप्तव्यवहार पुत्रगण ठाकुरसिंह ओ कालुसिंह ओ भुवनसिंहेर घोलिर उकिल मुनशी होल्हेन आलि हाजिर आइलेन। द्वितीय पक्षेर छपोल प्रत्येक विषयेर सम्बलित उद्धारदिगेर उकिलेर नामेर एक पत्र ओकाल-

লতনামা ও লালা কাশীপ্রসাদের নামের মোক্তারনামা সহিত যে এই মাসের ১২ তারিখে দাখিল হইয়াছিল অদ্য দরপেস হইয়া ছাপলের খাস আপীলের ছওয়াল ও গায়রহ ঐ ছওয়ালের এলাকার কাগজসকলের সহিত ও ছাপল যে সকল কাগজ সন হালের ১৪ আপরেলের দরপেস হও আপন ছওয়ালের সম্বলিত গুজরাইয়া ছিল, দিষ্ট আইল। পরে দ্বিতীয়পক্ষের বকিল গোপালচন্দ্র ও গায়রহ আপিলাণ্টান, বাবু কুঙ্করসিংহ রেষ্পাডণ্টের ২৯০৫ নং মোকদ্দমার সন ১৮৩০ সালের ৩ আপরেল তারিখের পনফছালি রোবকারির নকল এক কেতা দাখিল করিলেক, পাঠ করা গেল। তদপরে ছাপলের দাখিল করা মোতিলাল ও কল্যানসিংহ আপীলাণ্টান ব্রজলাল ও গায়রহ রেষ্পাণ্ডেণ্টদিগের মোকদ্দমার সন ১৮৩৫ সালের ৪ জুলায়ের এ আদালতের হাকিম শ্রীযুত জাজে হচ্চাকোপ্সল সাহেবের বৈঠকের রোবকারির নকল দিষ্ট করিয়া ঐ মোকদ্দমার মিছিল সেরেস্তা হইতে তলব করিয়া মোকদ্দমা মজকুরের দাখিল হও। এ আদালতের পণ্ডিতের ব্যবস্থা দিষ্ট করিয়া বোধ হইল যে এ আদালতের পণ্ডিত বৈদ্যনাথমিশ্র যে ব্যবস্থা এ মিছিলে দাখিল করিয়াছেন তাহা ঐ মোতিলাল ও কল্যাণসিংহ দিগের মোকদ্দমার দাখিল হও। তাহার ব্যবস্থার বিপরীত। আর যদ্যপি স্যাত এ মোকদ্দমার ও মোতিলাল ও গায়রহের মকদ্দমার প্রশ্নসকলের লিখিত শব্দসকল জাহেরা অন্যথা হইয়াথাকে। কিন্তু এ দুই মোকদ্দমার প্রশ্নসকলের মর্ম্ম একই প্রকার রাখে একারণ আমার নিকট এ মোকদ্দমা দ্বিতীয় বার বিবেচনার যোগ্য, ও এ মোকদ্দমার আপিল খাস মঞ্জুরির যোগ্যবোধ হইয়া হুকুম হইল যে ছাপল এক মাস সংখ্যার মধ্যে খাস আপিলের বক্রী সরঞ্জসকল আমলে আনে আর কাগজাত মোর ওব করিবার জন্য এ আদালতের কায়েম মোকাম হাকিম শ্রীযুত ডেম্বোট ইসমিট সাহেবের হজুরে পাঠান যায়, আর এই

১—৫৩

रोबकारिर नकल एइ हुकुमे जे ए मोकद्दमा ओ मोतिलाल ओ गायरहेर मोकद्दमार प्रश्नसकलेर मर्म्म ओ अभिप्राय एक दुइ बाते ओ दुइ मोकद्दमार वैपरित्य व्यवस्थासकल देओनेर कारण कि, नकल-रोबकारि प्राप्तेर दिवसावधि एक सप्ताहेर मध्ये लेखेन—ए आदालतेर पण्डितके अर्पन करा जाय इति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतश्रीलियमवेराडोनसाहेबधर्म्माधिकरण-लिखितेश्वीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयमैमासीयाङ्केन्दुमितदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदब्दीयजुनमासीयगजेन्दुमितदिनसम्बन्धिशनिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥—

प्रभुसमर्पितैतद्विवादविषयकप्रश्नस्त्वयमेव । यदि तीरभुक्तिजिला-ख्याधान्तरदेशनिवासिनौ द्वौ हिन्दुजातीयौ स्वस्वपित्रादिक्रमागतस्थावरधनं साधारण्येन भुञ्जानौ ऋणग्रस्तावप्राप्तव्यवहारपुत्रवन्तौ च स्वस्वपित्रादिक्रमागतस्थावरभिन्नऋणपरिशोधनोपयुक्तधनरहितावशक्त्या ऋणपरिशोधनार्थमप्राप्तव्यवहारस्य स्वस्वपुत्रस्य विद्यमानतायामपि स्वस्वपित्रादिक्रमागतस्थावरधनस्य विक्रयणं तमलिकशब्दप्रतिपाद्यं च कृतवन्तौ स्याताम्, तदैतादृशविक्रयस्तमलिकशब्दप्रतिपाद्यं च पश्चिमदेशचलितशास्त्रानुसारेण सिद्ध्यति न वेति । अनेन ऋणपरिशोधनस्योपायान्तररहिताभ्यां स्वस्वपित्रादिक्रमागतस्थावरधनविक्रयतमलिकशब्दप्रतिपाद्यकर्तृभ्यां हिन्दूजातीयाभ्यां तदृणपरिशोधनरूपस्यातीवावश्यकस्य कर्म्मणः सम्पत्त्यर्थमप्राप्तव्यवहारपुत्रवद्भ्यां पित्रादिक्रमागतस्थावरधनविक्रयणं तमलिकशब्दप्रतिपाद्यं च कृतमिति निश्चितम् इति । एतादृशावश्यककार्य्यार्थे दायकृतस्यापि धनि-पित्रादिक्रमागतस्थावरधनविक्रयस्य तमलिकशब्दप्रतिपाद्यस्य च सिद्धेः शास्त्रीयत्वेन ऋणपरिशोधनोपयुक्तधनान्तररहितेन ऋणग्रस्तेन पित्रा कृतस्य तदृणपरिशोधनार्थमप्राप्तव्यवहारस्य पुत्रस्य विद्यमानतायां पित्रादिक्रमागत-स्थावरधनविक्रयस्य तमलिकशब्दप्रतिपाद्यस्य च सिद्धेः शास्त्रीयत्वस्य

निस्सन्दिग्धतया अर्थसिद्धत्वात् । सर्वत्रैव शास्त्रे विशेषतो लिखितमस्ति आवश्यककार्य्यार्थं पितृकृतं पित्रादिक्रमागतस्थावरधनविक्रयणं तमलिकशब्दप्रतिपाद्यं च शास्त्रीयमेव भवति । अतएव प्रभुकृतैतद्विवादविषयकोपरिलिखितार्थप्रतिपादकप्रश्नस्योत्तरव्यवस्थायां प्रभुसमर्पितप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सत्येतादृशविक्रयस्तमलिकशब्दप्रतिपाद्यं च शास्त्रानुसारेण सिद्धयतीति मया लिखितमिति । मतिलाल-कल्याणसिद्धार्थिक्रजलाल सीतारामप्रभृतिप्रत्यर्थिकविवादविषयकश्रीयुतजार्ज्जहष्टाकोएलसाहेबाभिधानैतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिकृतविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नानाम्मध्ये प्रथमप्रश्नस्त्वयमेव । बेहारदेशचलितशास्त्रानुसारेण पितुः पितामहस्य वा पुत्रस्य पौत्रस्य वा अनुमतिं विना पित्रादिक्रमागतस्थावरधनस्य हस्तान्तरकरणन्तु मतास्ति न वेति । पुत्रस्य मरणानन्तरं पौत्रानुमतेरावश्यकतास्ति न वेति द्वितीयः । यदि च पित्रादिक्रमागतस्थावरधनस्य तद्देशचलितशास्त्रानुसारेण विक्रयस्य निषेधस्तदा धर्म्माधिकरणाधिपतिभिस्तद्विक्रयस्य परावर्त्तनं कर्त्तुमावश्यकं भवति न वेति तृतीयः । पित्रादिक्रमागतवस्तुसमुदायस्य यत्किञ्चिद्वस्तुनो वा हस्तान्तरकरणविषये शास्त्रे किञ्चिद्विशेषः प्राप्तुं शक्यते न वेति चतुर्थः । एतेषां चतुर्णां श्रीयुतजार्ज्जहष्टाकोएलसाहेबाभिधानैतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिकृतविचारपत्रलिखितानां प्रश्नानां मध्ये कुत्राप्येतादृशं पदं नास्ति येनैतद्विक्रयस्यावश्यककार्य्यार्थतायाः बोधो भवितुं शक्नोति । अतएवैतैश्चतुर्भिः प्रश्नैः पित्रादिक्रमागतस्थावरधनमावश्यककार्य्यार्थमन्तरेणार्थात् स्वेच्छयैव पित्रा हस्तान्तरं कृतमित्येव निश्चितं भवति । अतएव मया तत्रोत्तरं लिखितं पितुः पितामहस्य वा पुत्रानुमतिं विना पौत्रानुमतिं विना वा पित्रादिक्रमागतस्थावरधनविक्रयस्य स्वेच्छया क्षमता बेहारदेशचलितशास्त्रानुसारेण नास्तीति । अनेनावश्यककार्य्यार्थं पित्रादिक्रमागतस्थावरधनविक्रयस्य क्षमता सामान्यतः पुत्रानुमतिमन्तरेण पौत्रानुमतिमन्तरेण वा पितुः पितामहस्य वास्त्येवेति । अस्य स्पष्टत्वेन शास्त्रानुसारेण अनुमतिदानानर्हाप्राप्तव्यवहारपुत्रानुमतिमन्तरेण ऋणपरिशोधनरूपातीवावश्यककार्य्यार्थं तद्परिशोधनोपयुक्तधनान्तररहितस्य पितुः क्रमागतस्थावरधनविक्रयस्य क्षमता शास्त्रानुसारेण स्पष्टैव । श्रीयुतजार्ज्जहष्टाकोएलसाहेबाभिधानैतद्धर्म्मा-

धिकरणाधिपतिकृतोपरिलिखितविवादविषयकविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नाशयानां प्रभुकृतैतद्विवादविषयकावश्यककार्यार्थविक्रयतमलिकशब्दप्रतिपाद्यप्रविपादकप्रश्नाशयस्य च भेदः स्पष्टतर एव। तद्व्याख्यानस्यावश्यकता नास्ति। अमातव्यवहारस्य पुत्रस्य विद्यमानतायां तदनुमतिमन्तरेणावश्यककार्य्यार्थं पित्रा कृतस्य क्रमागतस्थावरधनविषयकहस्तान्तरस्य सिद्धिविषयिणी पश्चिमदेशचलितशास्त्रानुसारिणी व्यवस्थाप्येतद्धर्माधिकरणे पूर्व्वं जाता। तदनुसारेण तद्विवादनिष्पत्तिरप्येतद्धर्माधिकरणे जातास्तीति निवेदनमिति।

इत्यवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयमार्च्चमासीयगजपक्षमितदिनसम्बन्धिमंगलवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रसहितेदमुत्तरं दत्तमिति।

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीकृष्णः सहाय

(१०६)—पण्डितेर पर सओाल—

काशीनाथचौधुरिनामे एक व्यक्ति फौत करियाछे। ताहार सपिण्ड ज्ञाति अर्थात् तिन पुरुषीय। ज्ञाति केह ओयारिस नाइ। एइ स्थले ऐ काशीनाथेर मातुल रामजयसिमताइ ओयारिस हइते पारे कि ना ऐ मोतओफार पञ्चम-पुरुषान्त ज्ञाति ऐ काशीनाथ मोतओफार ओयारिस अर्थात् उत्तराधिकारि हइते पारे बाङ्गलादेशेर चलन शास्त्रानुसारे इहार जे व्यवस्था ताहा ऐ सओयालेर दक्षिणपार्श्वे लिखिवेन। इति सन१८३६ता।१९ आगष्ट मो० सन १२४३ वां ५ भाद्र॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं विचारपत्रद्वयमङ्करेजीशब्दप्रतिपाद्यपत्रञ्च यदीयवीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयसितम्बरमासीयमुनीन्दुमितदिनस-

1. °विश्यक आवश्यक–व्य०

-ऽब्ध्यिशनिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते —

प्रभुसमर्पितप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति मृतस्य काशीनाथचतुर्द्धरीणस्य -त्यक्तधने यदि तस्य पुत्रमारभ्य मातामहपर्य्यन्तानाम्मध्ये कश्चिन्नास्ति तदा तन्मातुलस्य रामजयशिमलाइनाम्न एवाधिकारः—इति बङ्गदेशचलित-मनुदायभागदायतत्त्वदायभागटीकादायक्रमसंग्रहविवादार्णवसेतुविवादभङ्गा-र्णवप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः—इत्यादि उपरिलिखितग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य-(२।१३५)वचनम् ॥१॥

प्रपितामहसन्तानस्य दौहित्रान्तस्य मृतभोग्यपिण्डदातुरभावे मृत-देयमातामहादिपिण्डदानेन पिण्डानन्तर्य्यान्मातुलादिग्रहणार्थं 'बन्धु-पदं' प्रयुक्तवान् याज्ञवल्क्यः । मनुना तु पिण्डदानानन्तर्य्यवचनेनैव दर्शितं मृतदेयमातामहादिपिण्डत्रयस्य मातुलादिभिर्देयमानत्वान् मातु-लाद्यर्थत्वं धनस्य धनद्वारेण तस्यापि पिण्डदातृत्वात्—इति दायभाग-(पृ० २०६)ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥२॥

तदभावे मातामहस्तदभावे मातुल—इत्यादि दायक्रम संग्रहग्रन्थ-लिखनञ्चेति ॥३॥

ईशवीयाब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयापरेलमासीयरुल्मितदिन-सम्बन्धिगुरुवासरे मया प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्राङ्गरेजीयाब्दप्रतिपादकपत्राभ्यां विचारपत्राभ्यां च सहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥ —

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(१०७)—मोकाम कलिकातार सदर देओानि आदालतेर पण्डितेर पर सओालः फरियादि श्रीरघुनाथराय ओ श्री राधा-नाथराय ओ श्रीगोपीनाथराय सा० कपिलेश्वर परगणे उखडा

आसामी कुँदपाडा साकीनेर श्रीसमशेर खाँ वनामे जमि दखल पाओवत नालिस करे ऐ मोकर्द्दमार एक व्यवस्था लओा आवश्यक हइल। विवरण एइ—फरियादियान जे जमिन्दखलेर प्रार्थनाय नालिस करे ऐ जमि पूर्व्वे पष्ठीदास सिद्धान्तेर छिल। ऐ पष्ठीदास एक पुत्र जगन्नाथपञ्चानन आर दौहित्र फरियादियानेर पिता भवानीशंकररायके राखिया लोकान्तर हयेन। आर ऐ जगन्नाथ आपन जीवतमान पर्य्यन्त आपन पितार विषयेते भोगवान थाकिया अपुत्रक आपन स्त्री यशोदादेव्या ओ भवानीशंकररायके राखिया लोकान्तर हयेन। यदि ऐ अवीरा यशोदादेव्या सन १२१८ साले आपन स्वामिर ऋणपरिशोद अर्थे ऐ विरोधीय जमी आसामिके विक्रय करिया थाके आर सेइ विक्रयानुसारे ऐ जमिते आसामि भोगवान थाके आर ए काल पर्य्यन्त फरियादियानेर पिता ए विषयेर कोन आपत्तं ना करिया थाके, तवे शास्त्रानुसारे ऐ विषय सिद्ध हय कि ना। आर फरियादियानेर दावि ऐ विषयेर पर अर्शे कि ना—इहार व्यवस्था वाङ्गलार चलन शास्त्रानुसारे जे हय एइ सओालेर दक्षिण पार्श्वे लिखिवेन। इतिं सन १८३६ साल १९ शेतम्बर ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं विचारपत्रद्वयमङ्करेजीशब्दप्रतिपाद्याक्षरपत्रञ्च यदीयवीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयनवम्वरमासीयग्रहेन्दुमितदिन-सम्बन्धिशनिवासरे मया प्राप्तन्तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारे-णोत्तरं लिख्यते—

प्रभुसमर्पितप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति अवीरया यशोदादेव्या यदि स्वसंक्रान्तपतिस्थावरधनस्य विक्रयस्स्वपतिकृतर्णपरिशोधनार्थमेव वास्तवं-कृतः स्यात्तदैतादृशविक्रयश्शास्त्रानुसारेण सिध्यति एवं तद्विक्रयस्य-सिद्धौ सत्यामर्थिनां चाभियोगस्तद्विषये शास्त्रीयो न भवतीत्यर्थसिद्धमेव-—इति वङ्गदेशप्रचलितमनुदायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति—

अत्र प्रमाणम्—

ऋणस्थग्राही ऋणं दाप्यः-इतिविवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादि-
(१ विवा १७६ ख) ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य(२।५१)वचनम् ॥१॥

मर्तुकामेन या भर्त्रा उक्ता देयमृणं त्वया ।
अप्रपन्नापि सा दाप्या धनंयद्याश्रितं स्त्रिया ॥-इति वचद्ग्रन्थ(पृ०६०)
(१ विवा २०६)धृतकात्यायन(कात्सू० ५४७।पृ० ६६)वचनञ्चेति ॥२॥

ईशावीशाब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयमैमासीयार्कमितदिनम-
स्वन्धिशुक्रवासरे मया प्राप्तसमर्पितप्रश्नपत्रेण विचारपत्राभ्यामङ्करेजीशब्द-
प्रतिपाद्याक्षरपत्रेण च सहितेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(१०८)—नं १४७ सन १८३५ साल मो० कलिकाता सदर देवोानि आदालतेर इं० सन १८३७ सालेर २ मार्च मोताबेक बाङ्गला सन १२४३ सालेर २० फाल्गुन बृहस्पतिवार दिवसेर श्रीयुतओलीयमब्राडीनसाहेब पे आदालतेर हाकिमेर वैठकेर रोवकारि—

श्रीमतितओधकलकुन्डर— आपीलाण्ट
श्रीमतिनन्दकुन्वर ओ गैरह— रेस्पाण्डण्टान

आपीलाण्टेर वकिल लाला वस्ति ओ रेस्पाण्डण्टानेर वकिल-गण मुनसि हुसन आली ओ जेमेष्ठ कुलवरूक छदरलण्लाण्ड साहेब जे छदरलण्लाण्डसाहेवेर नामेर, ओकालतनामा अद्य गुजरियाछे हाजीर आइलेन ए आदालतेर हाकिम श्रीयुतओकरेममनिसाहेवेर गत २१ फिबरिओयारिर हुकुमानुसारे ए मकद्दमा गतकल्प आमार वैठके रूबकार ओ गत कल्येर रूबकारिर विस्तारित लिखित कागजसकल पाठ हइया स्थगित छिल। अद्य पुनराय रुबकार हइया सदर आमीन अलार ओ जजसाहेब मकद्दमार

पक्षी कागजसकल ओ ए आदालतेर कागजसकल प्रसंसीय हाकिमेर गत २१ फिब्ररिओयारिर रोवकारिर लिखित राएर सम्वलित पाठ करा गेल। परे आपीलाएटेर उकील सन १२०७ फसलिर ११ कार्तिकेर लिखित श्रीमति सुगन्धाकुङ्करेर लिखिया देया हेवानामार नकल एक केता दुइ टाका मूल्येर फिरिस्तिर द्वाराय लम्वरे दाखिल करिलेक इहे आइल वोध हइलो जे भोलासिंहनामक श्रीमतिसुगन्धानामक एक स्त्री ओ श्रीमतिनन्दकुङर ओ वदनकुङर दुइ कन्या व्यतित द्वितीय उत्तराधिकारि राखितो ना, ओ उक्त भोलासिंह आपन निज दलील ओ वएटकि पैत्रीक विशय आपन स्त्रीर सम्मतिते आपन कन्यार दिगेरके जवानि हेवा करिया हेवा नामा लिखिया देओर जन्य आपन स्त्री श्रीमतिसुगन्धाके अनुमति करियाछे तदनुसारे श्रीमतीशुगन्धा उहार स्वामि भोलासिंहेर मृत्युर पर आपन स्वामिर अनुमत्यनुसारे आपन जामातागण अर्थात मित्रजितसिंह ओरफे बुलाकिसिंह उक्त नन्दकुङरेर स्वामि ओ केनरसिंह उक्त वदनकुङरेर स्वामिर नामे हेवानामा लिखिया दियाछे ओ तदनुसारे मित्रजितसिंह ओ केनरसिंह श्रीमतीसुगन्धार सम्मतिते कालेक्टरि सेरस्ताय आपन-आपन नाम दाखिल करिया अनेक दिवस हेवा करा विषयेर पर दखिल ओ कावेज आछे। ओ शाखेर वृत्तान्त ज्ञात हओ्रो एइ विषय जे भोलासिंहेर एमत क्षमता जे आपन निज दखलि मौरुशी विषयेर अंश जे अनेक दिवस वएटक हइयाछे आपन कन्यागन ओ जामातागणके आपन स्त्रीर सम्मतिते हेवा करिते पारे कि ना, आर ए प्रकार हेवा मैथिल देशीय चलित शास्त्रानुसारे ग्राह्य ओ सिद्ध वटे कि ना। उचित वोध हइल ए जन्य हुकुम हइल जे एइ रोवकारिर नकल एइ हुकुमे जे उपरेर लिखित विषयेर प्रत्युत्तर एइ रोवकारिर नकल प्राप्तेर दिवसावधि एक सप्ताहेर मध्ये लेखेन ओ आदालतेर पण्डितके अर्पन करा जाय इति—

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतश्रीलियमवेपडीनसाहेबधर्म्माधिकरण-लिखितेशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयमार्चमासीयद्वितीयदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यच्छब्दीयतन्मासीयमुनिपक्षमितदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रभुसमर्पितविचारपत्रलिखितवृत्तान्ते सति भोलासिंहनामा कश्चिद् व्यक्तिविशेषः पित्रादिक्रमागतस्वायत्तीभूतविभक्तविषयस्य स्वपत्नीसम्मत्या स्वकन्याभ्यो जामातृभ्यो दानं कर्तुं शक्नोति । एतादृशदानं च मिथिलादेशचलितशास्त्रानुसारेण सिध्यति—इति मिथिलादेशचलितमनुविवादचिन्तामणिविवादचन्द्रविवादरत्नाकरकल्पतरुमदनपारिजातस्मृतिसारप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति—

अत्र प्रमाणम्—

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनु(५।१५२)वचनम् ॥१॥

पण्यमूल्यं भृतिस्तुष्ट्या स्नेहात् प्रत्युपकारतः ।

स्त्रीशुल्कानुग्रहार्थं च दत्तं[1] सप्तविधं विदुः ॥—इति कल्पतरुविवादरत्नाकर(पृ० १३३)प्रभृतिग्रन्थधृतनारद(ना० ४० पृ० ६०)-वचनम् ।२॥

तान्येव तु प्रमाणानि भर्ता यद्यनुमन्यते-इति नारदस्मृत्यादिग्रन्थधृतनारदवचनम् ॥३॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयमेमासीयनवमितदिनसम्बन्धिशनिवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रसहितेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीजर्यतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(१०९)—प्रश्न बनाम परिडत आदालते सदर देओानि—

१, दत्तं दानविदो विदुः—इति पाठे. पाठः ।

यद्यपि कोन वेक्तिर कुलाचारे एमत रित थाके ये अवीरा स्त्री ओ कन्या ओ दौहित्रेर नाम जमिदारिते जारि हइवेक नाइ, आर यद्यपि उभय विवादिर पूर्व पुरुषादगेर आपसे ऐमत एकरार लेखा पडा हइया, ऐ रित चलित थाके, तवे पुनराय शास्त्रानुसारे व्यवस्थार आविश्यक हय कि ना। यद्यपि आविश्यक हय, तवे अवीरा स्त्रीर नाम ताहार स्वामीर त्यक्त वस्तुते जारि हइते पारे कि ना—इहार व्यवस्था शास्त्रानुसारे एइ प्रश्नेर पार्श्वे लिखिवेन इति–

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं विचारपत्रद्वयं चाङ्करेशशब्दप्रतिपाद्यात्तरपक्षमाशापक्ष यदीशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयमार्च्चमासीयदिव्यितदिनसम्बन्धिशुक्रवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यद्यपि कस्यचिद् वंशे अवीरापत्नीकन्यादौहित्राणां नामनिर्द्देशः सराजकरदानागारविषये न भवतीति व्यवहारो वादिप्रतिवादिनोः पूर्व्वपुरुषाणां परस्परसविरोधेण प्रचलितः स्यात् तदा कुलाचारविरुद्धव्यवस्थाया एतद्विषये आवश्यकता नास्ति—इति वङ्गदेशप्रचलितमनुदायभागप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति—

अत्र प्रमाणम्—

जातिजानपदान् धर्म्मान् श्रेणीधर्म्मांश्च धर्म्मवित् ।

समीक्ष्य कुलधर्म्मांश्च स्वधर्म्मं परिपालयेत् ॥—इति मनुवचनम् ।१॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयमैमासीयबाणपक्षमितदिनसम्बन्धिगुरुवासरे मया प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्राङ्करेशीशब्दप्रतिपाद्योत्तरपत्राभ्यां विचारपत्राभ्याञ्च सहितेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(११०)—रोवकारि मिछिल सदर देवायानी आदालत मोकाम कलिकाता। उक्त आदालतेर कायम मोकाम हाकिम श्रीयुत फ्राणसीस करक्ष स्मीथ साहेबेर बैठके। तारिख ४ मार्च्च इङ्गरेजी सन १८३७ साल मोताबक २२ फाल्गुन सन १२४३ साल बाङ्गला दिवस शनिवार—

पद्मानन्ददास बनाम राधाचन्द्रबाल्

छापेलेर उकिल मुनशीआमीनोद्दिनमहम्मद हाजीर आइल। ३२ टाका किम्मतेर कागजेर उपर छापेलेर दरखास्त आपीलेर छओयाल जेला मेदिनिपुरेर आमीनशरान जजसाहेबेर कृत सन १८३६ सालेर २६ सेप्तम्बरेर फयसलार हुकुमेर नाराजीते, जाहा तथाकार सदर आमीनआलार सन १८३४ सालेर ४ सेप्तम्बरेर लिखित फयसलार बहालिते छादेर हइयाछे, मौजे गोशमदार दखल पाओयार ओ ईस्तमाय मयलगे ५२२६॥१ टा ॥र बाबंदाइ दाव आपील मञ्जुरिर उमेदे उकिल मजकुरेर नामेर एक पेता ओकालतनामा मसवलित ओ योगाराचन्द्रसिंह ओ विजयकीशोर घोषेर नामेर एक केता मोक्तारनामा ओ जेलार देओयानि आदालतेर उपरेर लिखित तारिखेर दुइ केता फयसलार नकल आमिनशरान जज साहेब ओ सदर आमीन आलार तजवीजी, जाहा गतो फिब्रुयेरि माहार ८ तारिखे दाखिल हइयाछिल, अद्य उपस्थित हइया पडा गेल। द्वितीय हुकुम छादेर हओनेर पूर्ब्बे एइ विषयेर सओयाल करा जे एक व्यक्ति हिन्दुस्थानी बसतिर बाटी त्याग करिया अन्य पञ्चुन्दवे तफात हइया उदासिन ओ तीर्थवासी हय, आर ताहार अन्य बन्धु दवे तफात हओया सुरत विप चरमर गतो हय, आर ए समये किछु मिलकियत खरिद करिया भोगयान थाकिया दिपनेरइ नामे एक जन शिष्योदके ओयारिस राखिया मरे। ए प्रकारे उदासिन व्यक्तिर ओयारिस शास्त्रानुसार उक्त मोसम्माँत हइबेक, कि महरव्यधम्म्मावध आत्मबन्धु। आर यदि हवात् शास्त्र मते उदासीन व्यक्तिर ओयारिस उक्त मोदम्माँत हय,

ओ प्रकारे उक्त मोकद्दमातेर उदासीन व्यक्तिर त्याज्य वस्तुर दखल करा ओ विक्रयेर क्षमता आछे कि ना एइ आदालतेर पण्डितेर स्थाने उचित बोध हइया हुकुम हइल जे एइ रोवकारिर नकल छओयाल प्रभृति कागज सम्वलित एइ हुकुमे जे पण्डित मोहक उपरेर चाओया प्रश्नेर उत्तर एक सप्ताह मध्ये लिखेन–पाठान जाय, आर से पर्य्यन्त हुकुम जादेर हओया मुलतवि थाके इति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिस्थानाभिषिक्तश्रीयुतफ्रानसीसकरुण इसमित-याहेवधर्म्माधिकरणलिखितेशवीयाब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयमा-र्च्चमासीयषेदमितदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं तत्समर्पितैतद्-विवादविषयनिविष्टलिखितादिकं च यत्तदब्दीयतन्मासीयनखमितदिनसम्ब-न्धिचन्द्रवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते —

प्रभुसमर्पितप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति धनिनो मृतस्य पुत्रपौत्रप्रपौत्रा-भावे सति मृतधनित्यक्तधने तत्पत्न्या दीपनदेइनाम्न्या एवाधिकारः, तस्याश्च मृतपतित्यक्तधनस्यायत्तीकरणक्षमता शास्त्रसिद्धैव, एव हस्तान्तर-करणक्षमता तु शास्त्रोक्तावश्यककार्य्यमन्तरेण नास्ति-इति धर्म्मशास्त्रा-नुसारिणी व्यवस्थेति—

अत्र प्रमाणम्—

अपुत्रा शयनं भर्त्तुः पालयन्ती गुरौ स्थिता ।

भुञ्जीतामरणात् क्षान्ता दायादा ऊर्द्ध्वमाप्नुयुः ॥—इति कात्यायन-वचनम् ॥१॥

ईशवीयाब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयजुनमासीयप्रथमदिनसम्ब-

न्धिगुरुवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रेखैवद्विवादविषयनिविष्टलिखित-
ज्ञातैश्च सहितेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(१११) तरजमा रोवकारि—

नकल रोयकारि आदालत दिमानि जिला चाटीग्राम हेनरी-
मोरसाहेब कायेम मोकाम जजेर बैठके तारिख ८माह अकतूबर
सन १८३६ आठारह सय छत्तिस ईशावी—

प्रतापनारायणचक्रवर्त्ती, साकिम दुर्गापुर डिगरिदार,
परमानन्द चक्रवर्त्ती ओ रामधन ओ रामलोचन ओ
प्रतापनारायण ओ उमाकान्त ओ लक्ष्मीनारायण ओ रामकीशोर
ओ रामशरण ओ रामकान्त ओ शिवप्रसादठाकुर ओ राममोहन
ओ द्वितीय रामलोचन ओ रामप्रसाद ओ द्वितीय परमानन्द
ओ काशीनाथ ओ वेचन ओ रामदास ओ विजयनाथ
ब्राह्मणसकल साकिमान दुर्गापुर ओ उत्तरदुर्गापुर ओ मुरालीपुर
ओ गोपालपुर ओ मिठारा ओ मटमारिया तरफसानियान्—

मोकद्दिमा इजराय डिगरी समाज—

हेजुरेर हुकुमानुसारे एइ मोकद्दिमा मौलवी अबदुल मजीद
खाँ बाहादुर सदर आमीन आलार निकटे दरपेश हइयाछिलो।
गत अगस्ट मासेर २० तारिखे ए सदर आमिन आला डिगरी-
दारेर सहित तरफसानीसकलके एकत्र वसिया आहार करिते
आज्ञा दिलेन, ओ लक्ष्मीनारायणचक्रवर्त्ति तरफसानी ए सदर
आमिनआलार हुकुमेर नाराजीते एक केता दरखास्त अपिल
मरसरीर बावति गत सितम्बर मासेर ७ तारिखे गुजराइलेक, ओ
चूएजहार करिलेक ये दहार ज्वे ए आदालत हइते सदर दिमानी

आदालतेर पण्डितेर स्थाने व्यवस्था लइवार कारण आज्ञा हइयाछिलो, तरफसानीसकल ऐ डिगरि जारि हओयाते खालास पाइयाछे । ऐ आज्ञार वहिर्भूत ऐ सदर आमिन आला ऐ डिगरि जारिर समये तरफसानीसकलके ऐ डिगरिदारेर वाटीते आहार करिते हुकुम दिया तरफसानीसकलेर जातिर प्रति शत्रुता करितेछे, ओ सन १८३६ सालेर २०सितम्बर तारिखे लक्ष्मीनारायणठाकुर ओ रामधन ओ कमलाकान्त ओ प्रताप ओ भजन ओ रामलोचन ओ वैद्यनाथठाकुर-गयेर उकिल सेख अहमदुल्लाहेर साक्षाते सरसरी आपीलेर सयाल ओ सदर आमीन आला मौसुफेर सन १८३६ सालेर २० अगस्त तारिखेर रोवकारिर नकल दृष्टे आइलो । वोध हइलो ये उभय विवादिर एइ प्रकार विवाद वटे ये सदर दिमानी आदालतेर हुकुम एइ प्रकार आसियाछे । ये आदालतेर पण्डितेर स्थान हइते व्यवस्था लइया एइ डिगरि एजराय करा जाइवेक । अतएव आदालतेर पण्डित व्यवस्था दाखिल करियाछे–ये शास्त्रानुसारे एइ डिगरी यथार्थ वटे । ताहाते मुद्दाआलेहगण विरोध करिया एइ प्रकार आपत्ति करे ये एइ आदालतेर पण्डित ये व्यवस्था दियाछे से व्यवस्था चाटग्रामेर व्यहेरालोकेर प्रति वटे । ऐ प्रकार रसम रवाज व्यहेरालोकेर रवाजेर वरखेलाफ वटे, ओ तरफसानीगण निजामपुरेर वटे, ओ तरफसानीदिगेर उकिल प्रकाश करिलेक ये चाटग्रामेर लोक निजामपुरेर व्यहेरासकलेर सङ्गे सकल कर्म्म आहार व्यवहार करे नाइ इति । ओ ऐ सदर आमीन आलार स्थान हइते आदालतेर पण्डितेर व्यवस्थार नकल तलव करार आज्ञा ओ ऐ व्यवस्थार नकल सदर दिमानी आदालतेर प्रवल प्रताप हाकिमानेर हजुरे पाठाइवार हुकुम ओ सदर दिमानी आदालतेर पण्डितेर स्थाने व्यवस्था तलव करा एइ प्रकार जे एइ डिगरी निजामपुरेर दस्तुर माताविक किम्वा चाटग्रामेर दस्तुर मोताविक जारि हइवेक–हुकुम दिया गेलो, ओ उभय विवादि निजामपुरेर

সামাজের বটেন, ও সদর দিমানী আদালত হইতে জবাব আসা পর্য্যন্ত এই ডিগরী জারি মকুফের হুকুম সাদর হইলো ইতি। ও অদ্য আদালতের পণ্ডিতের ব্যবস্থার নকল সদর আমীন আলার স্থান হইতে এ আদালতে পৌছিলো। অতএব হুকুম হইলো যে আদালতের পণ্ডিতের ব্যবস্থার নকল যাহা যে সদর আমীন আলার স্থান হইতে আসিয়াছে এই রোবকারি সহিত ও অঙ্গরেজী চিঠির সম্বলিত সদর দিমানী আদালতের প্রবলপ্রতাপ হাকিমানের হুজুরে পাঠান জায়। সবাল এই যে, উভয় বিবাদি নিজামপুরের বাসিন্দা বটেন, ও জাতি ব্রাহ্মণ বটেন, ও ব্যহেরাসকলের পুরোহিত বটেন, ও নেজামপুরের ব্যহেরার যজন-পূজন করাতে মুদ্দইকে মুদ্দাআলেহ ব্রাহ্মণসকল, জাতি হইতে বহির্ভূত করিয়াছিলো। তাহাতে মুদ্দই পণ্ডিত সদর আমীনের আদালতে নালিস করিয়া আপন হক কে ডিগরী হাসিল করিয়াছিলো। ও যে ডিগরী আপিল আদালতে অর্থাত জজসাহেবের নিকট বহাল থাকিলো। যে ডিগরী জারী হওয়ার সময়ে রসম-রবাজের তকরার দরপেশ হইয়া সবাল সদর দিমানী আদালত পর্য্যন্ত গুজরিয়াছিলো। ও যে সদর দিমানী আদালতে হাকিমান হুকুম দিয়াছেন—যে এই ডিগরী পণ্ডিতের ব্যবস্থানুসারে জারী করো। ও পণ্ডিত আদালতি এই প্রকার ব্যবস্থা দাখিল করিলেক—যে এই ডিগরী যাথার্থ, ও মুদ্দাআলেহসকলকে মুদ্দৈর সহিত একত্র আহার ব্যবহার করা আবশ্যক, ও এইরায় ডিগরী আমলে আইলো। ও এ হুকুম ও এ ব্যবস্থাতে মুদ্দাআলেহ তকরার করে। ও মুদ্দাআলেহসকলের ওজুর এই প্রকার বটে—যে এ মুদ্দাআলেহদিগের সহিত নিজামপুরের বেহারা দিগের যজন-পূজনের বিষয়ে নিজামপুরের বেহারাদিগের সঙ্গে এই মোকদ্দিমা উপস্থিত হইয়া নিজামপুরের বেহারারা এই এজহার করে যে আমরা নিজামপুরের বেহারা বটো, আমারদিগের রসম রবাজ চাটিগ্রামের বেহারাদিগের ও ব্রাহ্মণসকলের

प्राचीन रसम-रवाज हइते भिन्न प्रकार वटे, ओ ऐ आदालतेर पण्डितेर[1] व्यवस्था चाटग्रामेर वेहारादिगेर रसम-रवाजेर विषये वटे इति। ए कारण सवाल करा जाइतेछे कि यद्यपि नेजामपुरेर वासिन्दा लोकेर रसम-रवाज हइते भिन्न प्रकार रसम-रवाज ये सकल लोकेर रसम-रवाजेर विषयेर एइ व्यवस्था आछे, हय एइ व्यवस्था शास्त्रानुसारे यथार्थ वटे कि ना। वास्तव सवाल एइ आछे-ये यद्यपि एइ आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था शास्त्रानुसारे यथार्थ हय, तवे यदि नेजामपुरेर वासिन्दा ब्राह्मणसकल ओ वेहारासकलेर रसम-रवाजेर विपरीत हय, तवे नेजामपुरे जारी हइते पारिवेक कि ना। आर यद्यपि कोनो देशे पुरोहित-यजमानेर मध्ये पूर्व्व हइते पुरुषानुक्रमे ये रसम-रवाज जारी थाके, यद्यपि ऐ रसम-रवाज जारी हओयार तारिखेर निश्चय ना थाके, एइ प्रकार रसम-रवाज नितान्त चलित नाइ, वरं चलनेर विरुद्ध वटे। तथापि प्राचीन रसम-रवाज, जाहा ओहादिगेर शास्त्रेर न्याय चलित वटे, ऐ रसम-रवाज ऐ नेजामपुरेर वासिन्दालोकेर वटे कि ना। ऐ सदर दिवानी आदालतेर प्रबलप्रताप हाकिमान अनुग्रह पूर्व्वक एइ विषयेर व्यवस्था सदर दिवानी आदालतेर पण्डितेर स्थाने लइया एइ आदालते प्रेरण करेन इति। अथ सन १८२६ साल ईशवी तारिख २८ माह नवम्बर डिगरीदारेर उकिल रामसुन्दरदत्त आरज करिलेक ये डिगरीदारेर मोक्तार रामकुमार हजुरे ए विषय आरज करिवार कारण हाजीर छिलो ये मुद्दाआलेहसकल वेहारा जाति वटे, ओ गुलाम ओ लौंडी आपन आपन घरे मेत्तइसकल यजन-पूजन जलाञ्जलि करितेछे। नथीर सामिल साक्षिदिगेर एजहारेर द्वाराय ■ विषय निश्चित ओ ए कथा रोवकारिते लिखा जाय इति। उकिलेर प्रार्थना मते रोवकारि लेखा गेलो, किन्तु ए विषय सवालेर सहित सम्पर्क

---

१. पण्डितेर पण्डितेर-व्यप॰।

राखे ना। ए विषय एक तजविजेर स्थान बटे। सवाल ये प्रकार लेखा गेलो सेइ यथार्थ वटे-ए विषयेर यवाव आसिवार परे दुइ व्यवस्था दृष्टि करिया ओ कागजात ओ उभय विवादीर सवाल ओ यवाव मोलाहिजा करिया डिगरी जारी विषयेर उचित हुकुम देया जाइवेक इति ॥—

श्रीदुर्गा शरणम्—

श्रीयुक्तजानलुइयजजसाहेवमहाशयप्रेरितान्येतानि विवादपत्रादीन्यवलोक्याथ व्यवस्था लिख्यते—अत्रार्थी एतद्देशीयवेहारानामशूद्रविशेषगृहकृतयजनपूजनादिव्यापारः प्रत्यर्थिभिरव्यवहार्य्यो नैव भवेदिति विदुषां परामर्शः। एतद्देशीयवेहारानामशूद्रविशेषानीतजलपानस्य एतद्देशीयप्रधानब्राह्मणशूद्रादिभिः क्रियमाणत्वाद् विशेषतोऽत्रार्थिवत् प्रत्यर्थिनामपि केषाञ्चिद् तद्देशवेहारानामशूद्रविशेषाणां यजनपूजनादिव्यापारकरणेऽपि अव्यवहार्य्यत्वाभावस्य साक्षिभिर्निरुक्तत्वाद्, "येषु स्थानेषु यच्छौच धर्म्माचारश्च यादृशः, तत्र तन्नावमन्येत धर्म्मस्तत्रैव तादृशः"—इति शुद्धितत्त्वधृतवचने देशविशेषीयपारम्पर्य्यक्रमागतयादृशधर्म्माचारस्तादृशस्याभिमतत्वज्ञापनाच्चेति।

अस्यार्थः—

श्रीयुत जान लुइस जज साहेब महाशय कर्त्तृक प्रेरित एसकल कागज पत्र अवलोकन करिया ए विषये व्यवस्था लेखा याइतेछे। ये ए डिग्रीदार एतद्देशीय वेहारा शूद्रेर गृहे यजन-पूजनादि व्यापार कराते आसामि-कर्त्तृक अव्यवहार्य्य हइते पारे ना। कारण एतद्देशीय वेहारा शूद्रेदर[1] जलाचरणादि व्यवहार एतद्देशीय प्रधान ब्राह्मण ओ शूद्रादिसकले करिया आसितेछे, एवं विशेषत एइ फैरादिर मत कोन आसामि वेहारा शूद्रेर यजन पूजन कराते ओ ताहार व्यवहार्य्यत्व साक्षि कर्त्तृक कथित आछे, एवं ये स्थाने यादृश शौच ओ यादृश धर्म्माचार, से स्थाने ताहा अवमत हइवे ना, ताहाइ प्रचलित हइवे-एइ शुद्धितत्त्व धृत वचनेते

१. एतद्देशे—अव०।

পূর্ব্বাপর যাদৃশ ধর্ম্মাচার রূপ ব্যবহার যে দেশের যেমন চলিয়া আসিতেছে, তাহার অভিমতত্ব জ্ঞাপন করিয়াছেন-বোধ হইল ইত্যাদি। ইং সন ১৮২৫ তারিখ ১ আপ্রেল—

শ্রীঅখিলচন্দ্রন্যায়রত্নশর্ম্মণাম্

শ্রীর্জ্জয়তিতরাম্

প্রভুসমর্পিতবিচারপত্রং ব্যবস্থাপত্রমঙ্কুরেজীশব্দপ্রতিপাদ্যাস্থরপত্রং চ যদীশবীশব্দপ্রতিপাদ্যরসগুণগজেন্দুমিতাব্দীয়দিগম্বরমাসীয়গুণেন্দুমিত-দিনসম্বন্ধিমঙ্গলবাসরে ময়া প্রাপ্তং তদবলোক্য যাদৃশবোধো জাতস্তদনু-সারেণোত্তরং লিখ্যতে।—

প্রভুসমর্পিতবিচারপত্রলিখিতবৃত্তান্তে সতি চট্টগ্রামপ্রদেশীয়জিলাখ্যা-বান্তরধর্ম্মাধিকরণনিযুক্তপণ্ডিতলিখিতব্যবস্থা নেজামপুরপ্রদেশবাসিনা-মর্থিপ্রত্যর্থিনা ব্রাহ্মণানাং প্রচলিতব্যবহারানুসারিণী চেত্তদৈব নেজামপুর-প্রদেশবাসিনাবর্থিপ্রত্যর্থিনৌ ব্রাহ্মণৌ প্রতি শাস্ত্রসিদ্ধা ভবিতুমর্হতি, নেজামপুরপ্রদেশবাসিনামর্থিপ্রত্যর্থিনাং ব্রাহ্মণানাং কথঞ্চিদপি প্রচলিত-ব্যবহারবিরুদ্ধতয়া জ্ঞাতুং শক্যতে চেত্তদা নেজামপুরপ্রদেশবাসিনাবর্থিপ্রত্য-র্থিনৌ ব্রাহ্মণৌ প্রতি শাস্ত্রতঃ প্রচলিতুং নার্হতি ; এবং কস্মিংশ্চিদ্দেশে পুরোহিত-যজমানয়োর্দ্বয়োঃ পূর্ব্বপুরুষপারম্পর্য্যক্রমেণ কশ্চিদ্ব্যবহারোঽলিখিতপ্রচারদি-বসোঽপি যদি তেষাং তাদৃশপ্রাচীনব্যবহারঃ শাস্ত্রসাম্যেন প্রচলিতঃ স্যাত্তদা তাদৃশব্যবহারো নেজামপুরপ্রদেশবাসিনামর্থিপ্রত্যর্থিনাং ব্রাহ্মণানাং শাস্ত্রতঃ সমীচীনো ভবত্যেব—ইতি নেজামপুরপ্রদেশচলিতমনুস্মৃতিযাজ্ঞবল্ক্যস্মৃতি-বৃহস্পতিস্মৃতিশুদ্ধিতত্ত্বব্যবহারতত্ত্বব্যবহারমাতৃকাপ্রভৃতিগ্রন্থানুসারিণী ব্য-বস্থেতি ॥

অত্র প্রমাণম্—

জাতিজানপদান্ ধর্ম্মান্ শ্রেণীধর্ম্মাংশ্চ ধর্ম্মবিৎ।

সমীক্ষ্য কুলধর্ম্মাংশ্চ স্বধর্ম্মং পরিপালয়েৎ॥ ইতি মনু-বচনম্ ॥১॥

यस्मिन्देशे य आचारो व्यवहारः कुलस्थितिः ।

तथैव परिपाल्योऽसौ यदा वशमुपागतः ॥—इति याज्ञवल्क्यस्मृति-प्रभृतिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥२॥

देशजातिकुलानां च ये धर्म्माः प्राक् प्रवर्तिताः

तथैव ते पालनीयाः प्रजा प्रक्षुभ्यतेऽन्यथा ॥—इति बृहस्पतिस्मृति-प्रभृतिग्रन्थधृतबृहस्पतिवचनम् ॥३॥

केवलं शास्त्रमाश्रित्य न कर्त्तव्यो विनिर्णयः ।

युक्तिहीनविचारेण धर्म्महानिः प्रजायते ॥—इति बृहस्पतिस्मृति-व्यवहारतत्त्वव्यवहारमातृकाप्रभृतिग्रन्थधृतबृहस्पतिवचनम् ॥४॥

येषु स्थानेषु यच्छौचं धर्म्माचारश्च यादृशः ।

तत्र तन्नावमन्येत धर्म्मस्तत्रैव तादृशः ॥—इति शुद्धितत्त्व(पृ० २७५)-प्रभृतिग्रन्थधृतमरीचिवचनम् ॥५॥

देशानुशिष्टं कुलधर्म्ममग्र्यं स्वगोत्रधर्म्मं नहि संत्यजेच्च—इति शुद्धितत्त्व(पृ० २७६)प्रभृतिग्रन्थधृतवामनपुराणवचनञ्चेति ॥६ ॥

व्यवस्थान्तरलिखनव्यग्रतया स्वकर्त्तव्यकार्य्यान्तरव्यग्रतया चैतद्व्यवस्थायाः काठिन्यतरत्वेन चैतद्व्यवस्थादाने एतावान् विलम्बो जात इति निवेदनमिति ॥—

ईशवीयाब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयजुनमासीयमुनीन्दुमित-दिनसम्बन्धिशनिवासरे मया प्रभुसमर्पितव्यवस्थापत्रविचारार्थमाङ्गरेजीयाब्द-प्रतिपाद्याचरपत्रैः सहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीदुर्गा

(११२)—मो० कलिकातार सदर देओयानि आदालतेर ३० सन १८३७ सालेर १५ फिब्ररेल मोताबेक बाङ्गला सन १२४३ सालेर ४ फाल्गुन बुधवार दिवसेर श्रीयुत ओलियम ब्राडिन साहेब ऐ आदालतेर हाकिमेर रुवकारि—

शिउलछाय ओ कुञ्जवेहारीलाल—

बनाम

मोहम्मातान् मसणबिबि ओ गैरह—

छापलानेर उकिल तारकचन्द्रराय, फरिकसानिर उकिल गण मुनशी दादारवक्स ओ श्रीरामराय हाजीर आइलेन। छापलानेर खास आपीलेर दरखास्त ओ ऐ दरखास्तेर सम्पर्कीय कागजसकल, जे सन १८३६ सालेर २१ दिजम्बर तारिखे दरपेप एवं छापलान दरवारिलालेर पुत्रगण हओयार विषये दरवारिलालेर एकरारेर निदर्शन दाखिल करणेर हुकुम छापलानेर उकिलेर प्रति प्रकाश हइया स्थगित छिल, अद्य पुनराय दरपेस हइया सन १८२१ सालेर ८ जानेर तारिखेर हुकुम हओ बैजनाथ छहापेर दरखास्तेर नकल ओ सन १८२० सालेर ६ आपरेल तारिखेर लिखित जेला भागलपुरेर देओयानि आदालतेर नकल रुवकारि ओ सन १८१३ सालेर १४ शेतम्बर तारिखेर लिखित ऐ जेलार आदालतेर फयछलार नकल सम्वलित, जे सन १८३६ सालेर २१ दिजम्बर तारिखेर हुकुमानुसारे छापलानेर उकिल दाखिल करियाछिल, दृष्टे आइल। छापलान कहेन जे उहारा दरवारिलालेर पुत्रगण एवं उत्तराधिकारिगण बटेन, ओ फरिकसानि ऐ दरवारिलालेर आपन भ्रातष्पुत्र। बैजनाथछहापेर उत्राधिकारिगण जे कहेन छापेलान दरवारिलालेर छेमनितायफादार स्त्रीर गर्भे जन्मियाछे, ओ एइ हयने उक्त दरवारिलालेर विवाहिता स्त्रीर गर्भजात कन्या श्रीमती मल्लार तेजय

विषयेर जन्य उभय विवादिर विवाद उपस्थित आछे। ए जन्य कोन हुकुम प्रकाश हओनेर पूर्व्वे ए मोकद्दमार शास्त्रेर वृत्तान्त ज्ञात हओया उचित बोध हइया हुकुम हइल जे एइ रोवकारिर नकल एइ हुकुमे जे निचेर लिखित प्रश्नोत्तर नकल रुवकारि प्राप्तेर दिवसावधि एक सप्ताह मध्ये लेखेन ए आदालतेर पण्डितके अर्पण करा जाय इति—

प्रश्न :—

यद्यपि स्यात् एक व्यक्ति हिन्दुर अविवाहिता स्त्री अर्थात् उहार ढेमनि हइते सन्तान उत्पत्ति हइयाथाके, आर ऐ व्यक्ति कोन एक आदालते आपनाके ऐ पुत्रेर पिता एवं आत्मा दर्शाइया नालिस करे, तवे उक्त पुत्र ऐ व्यक्तिर मृत्युर पर ऐ व्यक्तिर उपरेर प्रसङ्ग करा एकरारेर दरुन्दे ऐ व्यक्तिर आपन भ्रातृपुत्र उत्तराधिकारिगण थाकितेओ ऐ व्यक्तिर विषयेर हकदार पश्चिम ओ वङ्गदेशीय चलित शास्त्रानुसारे हइते पारे कि ना इति—

श्रीज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतश्रीलियमवेराङ्गोनसाहेबधर्म्माधिकरणलिखितैरावोशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयफेब्रुवरीमासीयचायेन्दुमितदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्र यत्तरव्यवस्थामालवंनायाधिपनेत्रेन्दुमितदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्राप्तं तदवज्ञाकस्य याहृगबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते--

प्रभुसमर्पितप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति मृतधनिव्यक्तिविशेषो यदि ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यो वा स्यात्तदा तस्यैव व्यक्तिविशेषस्य स्वकधने अविवाहितस्त्रीगर्भजातस्य पुत्रस्य नाधिकारः, किन्तु धनिना मृतस्योत्तराधिकारिणामनुकूलत्वे यावज्जीवं ग्रासाच्छादनभागिता भवति। यदि च मृतधनिव्यक्तिविशेषः शूद्रजातीयस्तथापि यदि धनिनो मृतस्य विवाहितस्त्रीगर्भजातकन्यादौहित्राणां मध्ये कश्चिदास्ति, तदा तस्यैव व्यक्तिविशेषस्य स्वकधने अविवाहितस्त्रीगर्भजातस्य पुत्रस्य मृतधनिभ्रातृपुत्रस्य विद्यमानताया-

मधिकारः—इति पश्चिमदेशचलितमनुमिताक्षरावीरमित्रोदयप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी वङ्गदेशचलितदायभागदायतत्त्वदायक्रमसंग्रहप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी च व्यवस्थेति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

जातोऽपि दास्यां शूद्रेण कामतोंऽशहरो भवेत् ।

मृते पितरि कुर्य्युस्तं भ्रातरस्त्वर्द्धभागिकम् ॥

अभ्रातृको हरेत् सर्व्वं दुहितॄणां सुताहते ।—इति मिताक्षरादायभागप्रभृतिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य वचनम् ॥१॥

शूद्रेण दास्यां समुत्पन्नः पुत्रः कामतः पितुरिच्छया भागं लभते । पितुरूर्द्ध्वन्तु यदि परिणीता पुत्राः सन्ति, तदा ते भ्रातरस्तं दासीपुत्रमर्द्धभागिकं कुर्य्युः, स्वभागादर्द्धं दद्युरित्यर्थः । अथ परिणीतापुत्रा न सन्ति तदा कृत्स्नं धनं दासीपुत्रो गृह्णीयात् । यदि परिणीतादुहितरस्तत्पुत्रा वा न सन्ति तत्सद्भावे त्वर्द्धभागिक एव दासीपुत्रः । अत्र च शूद्रग्रहणाद् द्विजातिना दास्यामुत्पन्नः पितुरिच्छयाप्यंशं न लभते, नाप्यर्द्धं दूरत एव कृत्स्नं किन्त्वनुकूलश्चेज्जीवनमात्रं लभते—इति मिताक्षरा(पृ० २१६)ग्रन्थलिखनम् ॥२॥

शूद्रस्य पुनरपरिणीतदास्यादिशूद्रापुत्रः पितुरनुमत्या पुत्रान्तरतुल्यांशहरः—इति दायभाग(पृ० १४३)ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥३॥

व्यवस्थान्तरलिखनव्यग्रतया स्वकर्त्तव्यकार्य्यान्तरव्यग्रतया चैतद्व्यवस्थादाने एतावान् विलम्बो जातः इति निवेदनमिति ॥—

ईशवीयाब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयजुनमासीयद्विपक्षमितदिनसम्बन्धिबृहस्पतिवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रनिवेदनपत्राभ्यां सहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीदुर्गा

तरजमा सओयाल—

(११२)—जिला साहाबादेर सदर आमिन आला सैयद मनीअर अलि मोकाम गाटर मुनिसिफेर आपिल नम्बर ३:५—

नरकुसिंह मुद्दाआलेह आपीलाण्ट बनाम मेघसिंह ओ अम्बरसिंह रेस्पाण्डेण्टान्—

मोकाम कलिकातार सदर देओयानि आदालतेर पण्डितेर प्रति सयाल। एइ ये, यद्यपि एक व्यक्ति हिन्दुजाति आपन मौरुशी धन हइते किञ्चित आपन पुत्र ओ भ्रातृपुत्र विद्यमान थाकिते भगिनीपुत्र ओ पितृष्वसृपुत्रेर प्रतिपालनेर हप्टे ऐ व्यक्तिके दान करिया एवं अशी करिया ताहार दस्तावेज, जाहार नकल एइ सवालसकलेर सङ्गे आछे लिखिया दिया थाके। तवे ए प्रकार दस्तावेज शास्त्रानुसारे सिद्ध ओ यथार्थ ओ दानमहीतासकलेर स्वत्वेर प्रति गुणदायक हइवेक कि ना, एवं दानकर्त्ता अर्थात् अंशीकारकसकलेर जीवद्दशाय दानकर्त्तासकलेर पुत्रपौत्रादिर प्रतिबन्धकता ताहाते अर्शिते पारिवेक कि ना इति ॥—

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं विचारपत्रमक्करेझीशब्दप्रतिपाद्यादरपत्र दस्तावेजशब्दप्रतिपाद्यपत्रमाशानत्र च यदीशवोधकमविपाय मुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीय जानवरीमासीयगुणेन्दुमितदिनसम्बन्धिशुक्रवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रभुसमर्पितप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सत्येतादृशदस्तावेजशब्दप्रतिपाद्यपत्रं तदत्रलिखितनियमजातदृष्टिविवेचनाभ्यां शास्त्रानुसारेण सिद्ध्यति, एवं दानमहीतृणां स्वत्वे प्रमाणं भवति। दानकर्तृणां विद्यमानतायां तेषां पुत्रपौत्रादीनां तद्विषये प्रतिबन्धकता न सम्भवति—इति पश्चिमदेशचलितमनुमिताक्षरावीरमित्रोदयप्रभृतिग्रन्थानुसारिणो व्यवस्थेते ॥—

अत्र प्रमाणम्—

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनम् ॥१॥

पण्यमूल्यं भृतिस्तुष्ट्या स्नेहात् प्रत्युपकारतः ।
स्त्रीशुल्कानुग्रहार्थञ्च दत्तं दानविदो विदुः ॥—इति मिताक्षरा(पृ० २४५)वीरमित्रोदय(पृ० ३६७)प्रभृतिग्रन्थधृतनारद(नमसं० पृ० ६०) वचनम् ॥२॥

व्यवस्थान्तरलिखनव्यग्रतया स्वकर्त्तव्यकार्यान्तरव्यग्रतया रोगग्रस्ततया चैतद्व्यवस्थादाने एतावान् विलम्बो जात इति निवेदनमिति—

ईशावीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताङ्गरीयजुनमासीयमुनिपक्षमितदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रविचारपत्राङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्याक्षरपत्रदस्तावेजशब्दप्रतिपाद्यपत्रैः प्रभुयाचितनिवेदनेन च सहितेयं व्यवस्था दत्तेति —

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्री श्रीदुर्गा

(२२४)—नं० २३९ इं सन १८३५ साल—

रोवकारि मिछिल मोकाम कलिकातार सद्र देओयानि आदालत वक्त आदालतेर कायेम मोकाम हाकिम श्रीयुत फाणशोप करुण इपमिथ साहेबेर बैठके—तारिख २२ माह जुन इङ्गरेजी सन १८३७ साल मोताबक बाङ्गला सन १२४४ साल तारिख १० आषाढ दिवस वृहस्पतिवार ।

दुर्गादासधरेर पिता ओ अलि ओ अछि आलमचन्द्रधर—
आपीलाण्ट—

विजयगोविन्दबडाल ओ गयरह— रेस्पाडण्टान—

आपीलाण्टेर उकिल मुनशी होसेन आलि ओ हाजीर रेस्पाडण्ट विजयगोविन्दबडालेर उकिल जिमिप कोलब्रूक

श्रीदुर्गा

तरजमा सओाल—

(११३)—जिला साहाबादेर सदर आमिन आला सैयद मनौअर अलि मोकाम गाटर मुनिसिफेर आपिल लम्बर ३८५—
नरकुंसिंह मुद्दाआलेह आपीलाण्ट बनाम मेघसिंह ओ अमरसिंह रेसपाण्डेण्टान्—

मोकाम कलिकातार सदर देओयानि आदालतेर पण्डितेर प्रति सवाल। एइ ये, यद्यपि एक व्यक्ति हिन्दुजाति आपन मौरुशी धन हइते किञ्चित आपन पुत्र ओ भ्रातष्पुत्र विद्यमान थाकिते भगिनीपुत्र ओ पितृष्वसृपुत्रेर प्रतिपालनेर दृष्टे ये व्यक्तिके दान करिया एवं अर्शी करिया ताहार दस्तावेज, जाहार नकल एइ सवालसकलेर मद्धे आछे लिखिया दिया थाके। तवे ए प्रकार दस्तावेज शास्त्रानुसारे सिद्ध ओ यथार्थ ओ दानग्रहीतासकलेर स्वत्वेर प्रति गुणदायक हइवेक कि ना, एवं दानकर्त्ता अर्थात् अंशीकारकसकलेर जीवद्दशाय दानकर्त्तासकलेर पुत्रपौत्रादिर प्रतिबन्धकता ताहाते अर्शिते पारिवेक कि ना इति ॥—

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्र विचारपत्रमङ्करेजीयाब्दप्रतिपाद्यान्तरपत्र दस्तावेजशब्दप्रतिपाद्यपत्रमात्रापत्रं च यदीयवोदशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयमानवरीमासीयगुणेन्दुमितदिनसम्बन्धिशुक्रवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रभुसमर्पितप्रश्नलिखितवृत्तान्ते यस्यैतादृशदस्तावेजशब्दप्रतिपाद्यपत्रं तत्रत्रलिखितनियमबाधदृष्टिविवेचनाभ्या शास्त्रानुसारेण सिद्ध्यति, एव दानग्रहीतॄणां स्वत्वे प्रमाण भवति। दानकर्तॄणां विद्यमानतायां तेषा पुत्रपौत्रादीनां तद्विषये प्रतिबन्धकता न सम्भवति—इति पश्चिमदेशचलितमनुमिताक्षराधीरमित्रोदयप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनम् ॥१॥

पण्यमूल्यं भृतिस्तुष्ट्या स्नेहात् प्रत्युपकारतः।
स्त्रीशुल्कानुग्रहार्थञ्च दत्तं दानविदो विदुः॥—इति मिताक्षरा(पृ० २४५)वीरमित्रोदय(पृ० २६७)प्रभृतिग्रन्थधृतनारद(नमसं० पृ० ६०) वचनम् ॥२॥

व्यवस्थान्तरलिखनव्यग्रतया स्वकर्त्तव्यकार्य्यान्तरव्यग्रतया रोगग्रस्त-तया चैतद्व्यवस्थादाने एतावान् विलम्बो जात इति निवेदनमिति—

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयजुनमासीयमुनिपक्षमिल-दिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रविचारपत्राङ्गरेजीशब्द-प्रतिपाद्याक्षरपत्रदत्तावेक्षशब्दप्रतिपाद्यपत्रैः प्रभुयाचितनिवेदनेन च सहितेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्री श्रीदुर्गा

(११४)—नं० २२६ ई सन १८३५ साल—

रोवकारि मिछिल मोकाम कलिकातार सदर देवानि आदालत वक्त आदालतेर कायेम मोकाम हाकिम श्रीयुत फ्राणशीप फरुण इपमिल साहेबेर बैठके—तारिख २२ माह जुन इङ्गरेजी सन १८३७ साल मोताबक बाङ्गला सन १२४४ साल तारिख १० आषाढ दिवस बृहस्पतिवार।

दुर्गादासधरेर पिता ओ अलि ओ अछि आलमचन्द्रधर-

आपीलाण्ट—

विजयगोविन्दबडाल ओ गयरह— रेष्पाण्डण्टान—

आपीलाण्टेर उकिल मुनशो होसेन आलि ओ हाजीर रेष्पाण्डण्ट विजयगोविन्दबडालेर उकिल जिमिप कोलब्रुक

সদরলেণ্ড সাহেব হাজীর আইল। গতো কল্য এই মোকদ্দমা আমার বৈঠকে উপস্থিত। প্রথম আদালত সহর মুরশীদাবাদের কাগজ সকল আর এই আদালতের দাখিল হওয়া মৌজেবাত ও জওয়াব প্রভৃতি সাম্যক কাগজ এবং অন্য২ দলিলওকল যাহা গতো কল্য উভয়ে দাখিল করিয়াছিল, পড়া হইয়া দিবাবসান প্রযুক্ত মুলতবি ছিল, অদ্য পুনরায় উপস্থিত হইল। রেস্পাণ্ডেণ্টের উকিল ভৈরবচন্দ্রন্যায়বাগীশের এককেতা ব্যবস্থা ও রামতনুশর্ম্মান্যায়বাগীশের এক কেতা ব্যবস্থা ও বেদকণ্ঠশর্ম্মা এক কেতা ব্যবস্থা ও শিবনাথশিরোমণির এক কেতা ব্যবস্থা, একুনে চারি কেতা, তাহার চারি কেতা তরজমা সম্বলিত আর দুই কর্দ্দ ফিরিস্তি = আঠ অঙ্ক কিম্মতের দাখিল করিলেক। বোধ হইল যে আপীলাণ্ট মুদ্দই এক আনা অষ্ট গোণ্ডা দুই কড়া দুই কান্তী জমিদারি প্রভৃতির দখল পাওনের দাবিতে মবলগে ৬৫৮০ ॥৫॥ টাকার তায়দাদে বিজয়গোবিন্দবড়াল প্রভৃতি মোদ্দাআলেহের নামে সহর মুরশীদাবাদের আদালতে নালিস করে। তথাকার জজ সাহেব আপন তজবিজ কালিন বঁহার আপন ফয়শলার লিখিত হেতুতে এই মোকদ্দমার ব্যবস্থা তলবে তিন কর্দ্দ সওয়াল সহর মুরশীদাবাদ ও জেলা নদিয়া ও জেলা বিরভূমের দেওয়ানী আদালতের পণ্ডিতদিগের নামে পাঠান তিন জেলার পণ্ডিতদিগের ব্যবস্থাসকল সানন্দময়ীদাসীর তৃতীয় পুত্র, যে উক্ত সানন্দময়ীর ভ্রাতা মহানন্দদত্ত ও তস্য বনিতার মৃত্যুর পর জন্মিয়াছে, সত্ত্ব না রাখা বিবরণে পৌছিলে পর উক্ত ব্যবস্থাসকল এবং জজসাহেব মৌছুফের ফয়সলার লিখিত অন্য২ ব্যবস্থা অনুযাই ইঙ্গরেজী সন ১৮২৫ সালের ২১ জুলাই তারিখে মুদ্দই আপীলাণ্টের দাবি ডিসমিস হয়। মুদ্দই আপীলাণ্ট তাহার অসম্মতিতে আপীলের দ্বারায় এই আদালতে উপস্থিত আনে, আর যাহা ইঙ্গরেজী সন ১৮২৬ সালের ৩১ মার্চের হওয়া এই আদালতের রোবকারির লিখিত হেতুতে

श्रीयुत रावरट हाल डन राटरि साहेब हाकिमेर वैठके द्वितीय विवेचना ओ गौरेर जोन्य बोध हय इति—

जे हेतुक कोन हुकुम प्रकाश करखेर पूर्व्वे निचेर लिखित मतो विन सओयाल एइ आदालतेर पण्डितेर स्थाने जिज्ञाश्य उचित। प्रथमत, एइ जे मुरशीदाबाद मोतालनेर अज्ञीपुर साकिनेर छत्रीचन्द्रदत्त आपन पुत्रगण महानन्ददत्त ओ परमानन्ददत्त ओ कन्यागण आनन्दमयीदासी ओ सानन्दमयीदासी ओ पुरणानन्दमयीदासी ओ जमीदारि डिहिगएरह प्रभृति विषय राखिया देह त्याग करे। ताहार मृत्युर पर महानन्ददत्त ओ परमानन्ददत्त दुइ पुत्र आपन २ पितृ-वस्तुर पर दखलीकार थाकिया उक्त परमानन्ददत्तेर विवाह ना करिया मृत्यु हय। ताहार मृत्युर पर महानन्ददत्त आपन पितार तावत वस्तुर पर दखलिकार हइया आपन वनिता द्रवमयीदासीके ओयारिस राखिया निःसन्तान परलोक प्राप्त हय। ताहार मृत्युर पर द्रवमयी उहार आपन स्वामीर स्थावरादि विषयेर पर दखलिकार हइया स्वामीर भग्नीगण आनन्दमयी ओ सानन्दमयी ओ आनन्दमयीर गर्भजात पाँच पुत्र ओ सानन्दमयीर गर्भजात दुइ पुत्र ओ उक्त मृत महानन्ददत्तेर अवीरा भग्नी पूरणानन्दमयीर सन्मुखे मृत्यु हय। ततपरे आनन्दमयीर स्वामी देह त्याग करे, आर सानन्दमयीदासीर गर्भे तृतीय आर एक पुत्र जन्मे। परे जे पुत्र महानन्ददत्त ओ तस्य वनिता द्रवमयीदासीर मृत्युर पर मृत महानन्ददत्तेर भग्नी सानन्दमयीदासीर गर्भे जन्मियाछे, से पुत्र शास्त्रानुजाइ महानन्ददत्त ओ तस्य वनिता द्रवमयीर स्थावरादि धन हइते द्वितीय भ्रातागणेर तुल्यांश पाइते पारे कि ना। आर यदि इहार पर सानन्दमयीदासीर गर्भे पुनर्व्वार पुत्र जन्मे, से पुत्र महानन्ददत्त ओ तस्य वनितार स्थावरादि वस्तु हइते उहारदिगेर तुल्यांश पाओनेर सत्त्वाधिकारि हइते पारे कि ना। द्वितीय, सुवे वङ्गिस्या ओ वाङ्गलार शास्त्र ओ व्यवहार प्रथम

सञ्ओयालेर लिखित विषये ऐक्य आछे, किम्बा किछु अनैक्य।
तृतीय, ये हेतुक आनन्दमयीर पाच पुत्र ओ सानन्दमयीर दुइ पुत्र, सास्यक सात जन, आपन २ मातुल मृत महानन्ददत्तेर मृत्युर पर रित मते आदालते नालिस करिया आपन २ सत्वे डिगरि हासिल करिया तदानुजाइ सात जना आपन २ अंशेर पर आदालतेर हुकुमेर द्वाराय सरकारेर ताहुते नाम जारिते भोगवान हइया थाके। ए विषय अष्टम पुत्रेर, जे महानन्ददत्त ओ तस्य वनिता द्रवमयीदासीर मृत्युर पर जन्मियाछे, ताहार सत्वेर अन्यथार कोन हेतु हइते पारे, कि ना। ए प्रयुक्त हुकुम हइल जे एइ रोबकारिर नकल एइ मोकद्दमार फयसलार सम्वलित एइ आदालतेर पण्डितेर निकट एइ हुकुमे पाठान जाय जे उपरेर लिखित तिन सञ्ओयालेर उत्तर एइ हुकुम पौछार दिवस हइते तिन दिवसेर मध्ये लिखिया दाखिल करेण, आर अद्य एइ मोकद्दमा स्थगित थाके इति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिस्थानाभिषिक्तश्रीयुतकानस्टोद्रकवणइश्मित-साहेवधर्म्माधिकरणलिखिते शकीयाब्दमतिपाचमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयजुन-मासीयद्विपक्षमितदिवसीयविचारप्रश्नान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं तत्सम र्पितजयपत्रं च यत्तदब्दीयतन्मासीयमुनिपक्षमितदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रथमप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति मृतमहानन्ददत्तस्य भगिन्याः सानन्दमयीदास्या गर्भतो महानन्ददत्तस्य वनिताया द्रवमयीदास्याश्च मरणानन्तरं जनितो जनिष्यमाणपुत्रश्च महानन्ददत्तस्य वनिताया द्रवमयीदास्याश्च त्यक्तस्थावरप्रभृतिधनतोऽधोलिखितप्रथमप्रमाणेन भ्रात्रन्तरतुल्यांशभागी भवितुं शक्नोति। किन्तु अधोलिखितद्वितीयतृतीयप्रमाणाभ्यां भ्रात्रन्तरतुल्यांशभागी भवितुं न शक्नोतीति—

अत्र प्रमाणम्—

ये जाता येऽप्यजाताश्च ये च गर्भे व्यवस्थिताः ।

वृत्तिञ्च तेऽभिकाङ्क्षन्ति वृत्तिलोपो विगर्हितः ॥—इति दायभागादिग्रन्थधृतमनुवचनम् ॥१॥

वृत्तिलोपः पितामहधने निरंशकत्वम्—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकालिखनम् ॥२॥

क्रमागतजीवनोपाय एव वृत्तिशब्देनोच्यते—इति विवादभङ्गार्णवग्रन्थलिखनम् ॥३॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्यपि उत्कलदेशे प्राधान्येन प्रचलितग्रन्थः शम्भुकरवाजपेयी विद्याकरवाजपेयी च । तयोर्वारंवारमन्वेषणेऽप्यद्यापि तौ ग्रन्थौ न प्राप्तौ । तावदद्वा ताभ्यां वङ्गदेशचलितशास्त्रस्यैक्यमनैक्यं वेति निश्चयो न जातः । किन्तु उत्कलदेशे मिताक्षराप्रभृतिग्रन्थानुसारेणापि व्यवस्था भवति । अत एवोत्कलदेशे चलितशास्त्रव्यवहाराभ्यां वङ्गदेशचलितशास्त्रव्यवहारयोः प्रथमप्रश्नलिखितविषयभेदोऽस्त्येवेति—

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

तृतीयप्रश्नलिखितविषयो महानन्ददत्तस्य वरात्या द्रवमयीदास्याश्चोपरमानन्तरं जनितस्याश्रमपुत्रस्य स्वत्वस्यान्यथाकारको भवितुमर्हति, यतः शास्त्रानुसारेण राजाज्ञया च व्यक्तीभूतप्रादेशिकस्वत्वात्सदीभूततत्तद्भागंशे महानन्ददत्तस्य तत्पत्न्या द्रवमय्यदास्याश्चोपरमानन्तरं जनितस्य पूर्वधनस्वामिमृतमहानन्ददत्तपितृदौहित्रस्य स्वत्वं भवितुं नार्हति-इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति—

अत्र प्रमाणम्—

सकृदंशो निपतति सकृत् कन्या प्रदीयते ।

सकृदाह ददानीति त्रीण्येतानि सतां सकृत् ॥ इति मनुवचनम् ॥१॥

अस्वतन्त्राः प्रजाः सर्वाः स्वतन्त्रः पृथिवीपतिः—इति व्यवहार-तत्त्व(पृ० ६४)विवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवप्रभृतिग्रन्थभृतनारद(ना-सं० २६।पृ०२६)वचनञ्चेति ॥२॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयागस्त्यमासीयद्विपक्षमित-दिनसम्बन्धिशनिवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रादिसहितेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्ज्जयतितराम्—
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीर्ज्जयतितराम्

(११५)—तरजमा सवाल—

यद्यपि रामगोपालमिश्र नामे एक व्यक्ति कायस्थ जाति गुडवा तालुका जमीदारी खरिद करिया ताहाते दखिलकार छिलो। इहार पत्नीर गर्भे तीनि पुत्र। प्रथम महताप राम, द्वितीय गुलाबराम, तृतीय मानिकराम जन्मियाछिलो। ताहार मध्ये ऐ महतापराम ओ मानिकराम केवल आपन आपन स्त्रीके उत्तराधिकारिणी राखिया आपन पिता रामगोपालमिश्रेर साक्षाते निस्सन्तान मरियाछे। ओ ऐ मृत दुइ भ्रातार स्त्रीगण ए दयण पर्य्यन्त विद्यमाना आछेन। इहार पर गुलाबराम द्वितीय पुत्र ओ आपन पितार साक्षाते आपन चारि जन पुत्रके अर्थात अनूपराम ओ दुर्लभराम ओ मुकुन्दराम ओ माधवरामके राखिया मृत्यु हय। ओ रामगोपालेर मृत्युर पर ऐ गुलाबरामेर पुत्रगणेर नाम समस्त जमिदारीते दाखिल हइया लेखा गेलो। ताहार पर गुलाबरामेर प्रथम पुत्र अनूपराम ओ तृतीय पुत्र मुकुन्दराम केवल आपन आपन स्त्रीके राखिया क्रमे परलोक प्राप्त हइलेन, ओ द्वितीय पुत्र ऐ दुर्लभराम आपन कनिष्ठ भ्राता माधवराम ओ अनूप-

रामेर स्त्री ओ मुकुन्दरामेर स्त्रीर सहित साधारणे ओ एकान्ते ऐ जमीदारीते दखिलकार थाकिया एक स्त्री ओ अविवाहिता एक कन्या ओ आपन कनिष्ठ भ्राता माधवरामके राखिया परलोक गमन करिलेक। ताहार पर ऐ अविवाहिता कन्यार विवाह ऐ कन्यार पनेर टाका व्यय करिया किम्वा ऐ जमीदारीर उपस्वत्वेर द्वाराय माधवरामेर कर्तृत्व थाकिते हइलो। ताहार पर ऐ महताबरामेर स्त्री ओ मानिकरामेर स्त्री ओ अनूपरामेर स्त्री ओ मुकुन्दरामेर स्त्री ऐ जमीदारीर उपस्वत्व हइते आपन आपन खोरोपोसेर उपयुक्त धन लइवार नियम करिया कलकटरीते ऐ जमीदारीर नादावी विषयेर दरखास्त गुजराइया ऐ जमीदारीर दावी हइते निरास हइलेन। ए दयसे ओइ मृत दुर्लभरामेर स्त्री ओइ माधवरामेर अंश आठ आना जमीदारी ओ चारि आना जमीदारी ओइ चारि जना अधीरा स्त्रीगणेर खोरोपोषेर जन्ये मिनहा दिया वाकि चारि आना जमीदारीर हिस्या आपन स्वामीर अंश करार दिया, आपन स्वत्वेर एजहारे ओ आपन मृत्युर पर आपन कन्यार स्वत्वेर एजहारे आदालते नालिस करियाछे-ए प्रकारे वङ्गदेशेर चलित शास्त्रानुसारे मृत दुर्लभरामेर स्त्री ओइ जमीदारीर चारि आना अंशेर स्वत्वाधिकारिणी बटे कि ना इति—

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रे विचारपत्रमङ्करेखीशब्दप्रतिपाद्यलिपिमाशापत्रञ्च यदीशाधीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमितान्दीयापरेलमासीयवेदपक्षमितदिनसम्वन्धिचन्द्रवासरे मया प्रासन्तदत्रलोकस्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

एतत्प्रश्नलिखितविषये मूलधनिनो रामगोपालमिश्रस्य मरणानन्तरं विद्यमानानान्तत्पौत्राणामर्याद् गुलावरामस्य धनिद्वितीयपुत्रस्य पुत्राणामनूपरामदुर्लभरामनुकुन्दराममाधवरामाणां मूलधनिनो रामगोपालमिश्रस्य

त्यक्तस्थावरादिसमुदायधने पौत्रत्वेन समानाधिकारे जाते सति तेषाम्मध्ये दुर्ल्लभरामस्य पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्योपरमे तदीयांशे अर्थाद्रामगोपाल-मिश्रस्य दुर्ल्लभरामपितामहस्य त्यक्तचतुर्थांशे दुर्ल्लभरामपत्न्या एवाधि-कारः—इति वङ्गदेशप्रचलितमनुदायभागप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति—

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ॥—इत्यादि दायभागादि-ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥१॥

प्रथमं पुत्रस्तदभावे पौत्रस्तदभावे प्रपौत्र इति । प्रपौत्रपर्य्यन्ताभावे पत्नी च ।—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकालिखनञ्चेति ॥२॥

सदरदिमानीधर्म्माधिकरणसम्बन्धिसर्वकर्त्तव्यकार्यबाहुल्यप्रतया बहुदिना-न्यात्यन्तिकरोगग्रस्ततया चैतद्व्यवस्थादाने एतावान् विलम्बो जात इति निवेदनमिति । ईशवीयाब्दमतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयवितस्वरमा-सीयैकादशदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रविचारपत्राङ्क-रेजीशब्दप्रतिपाद्यलिपिभिः सहितेयं व्यवस्था पारशीकलिपिनिर्म्मिततत्प्रति-रूपपत्रेण प्रभुयाचितनिवेदनपत्रेण च सदरदिमानीधर्म्माधिकरणे एतद्व्य-वस्थाप्रतिरूपरक्षणार्थमेतद्व्यवस्थाप्रतिरूपपारशीकलिखितप्रश्नप्रतिरूपैश्च सहिता दत्तेति—

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण
मोकाबिला श्रीवैद्यनाथमिश्र

श्रीदुर्गा

(११६)—प्रश्न बनाम पण्डित आदालते सदर देओयानि-एर ये, रामप्रियादेव्या आपन स्वामी ओ पुत्रेर लोकान्तरेर पर आपन पुत्रवधूर सम्मित्याय आपन स्वामिर पूर्व्व पुरुषेर विषयेर मध्ये किञ्चित भूमि अर्थात ये विरधीय वस्तु आपीलाण्ट

सापेक्ष मुद्दइर पितार सहित आपन भगनीर गर्भजात कन्या श्रीमतिदेव्यार विवाह देओन कालिन कुलमर्य्यादा सरवे आपीलाण्टेर पिताके दान करिते पारे कि ना। यद्यपि करिते पारे, तवे तन्निमित्त शास्त्र सम्मत पुत्रवधूर सम्मतिर आवश्यक आछे कि ना—इहार उत्तर यथाशास्त्र एइ प्रश्नेर पार्श्वे लिखिवेन इति—

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं विचारपत्रद्वयं निवेदनपत्रमङ्गरेजीयाब्दप्रतिपाद्यलिपिमाशापत्रञ्च यदीशवोयान्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयापरेलमासीयवेदपक्षमितदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

एतत्प्रश्नलिखितविषये श्रीमतीदेव्या विवाहसमये कौलिकमर्य्यादार्थं विवादास्पदीभूतकिञ्चिद्भूमिदानं रामप्रियादेव्याऽवश्यकर्त्तव्यं चेत्तदा रामप्रियादेवीपुत्रवधूसम्मत्या रामप्रियादेवीकृतदानं शास्त्रानुसारेण सिद्धं भवितुमर्हति। तद्दानसिद्धौ रामप्रियादेव्याः पुत्रवध्वा अनुमतिरप्यावश्यकी। यदि च श्रीमतीदेव्या विवाहसमये कौलिकमर्य्यादार्थं विवादास्पदीभूतकिञ्चिद्भूमिदानं रामप्रियादेव्याऽवश्यकर्त्तव्यं नासीत्तदा रामप्रियादेव्याः पुत्रवध्वा अनुमत्यापि रामप्रियादेवीकृतदानं शास्त्रानुसारेण सिद्धं भवितुं नार्हति—इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति—

अत्र प्रमाणम्—

भर्त्ता जीवन् यथा यस्य पोषणादिकं यद् यद् वा कर्म्म करोति मृतभर्त्तृकापि स्वशक्त्यनुसारेण तथैव तस्य पोषणं तच्च कर्म्म कुर्व्वीत— इति विवादभङ्गार्णवग्रन्थलिखनम् ॥१॥

स्वामिनोऽनुमतिसत्त्वे तु अस्वामिकृतविक्रयोऽपि सिद्ध्यति, व्यवहारोऽपि तथा—इति तद्ग्रन्थलिखनम् ॥२॥

मृते भर्त्तरि साध्वी स्त्री ब्रह्मचर्य्यव्रते स्थिता।
स्नाता प्रतिदिनं दद्यात् स्वभर्त्रे सलिलाञ्जलीन्॥

कुर्य्याच्चानुदिनं भक्त्या देवतानाञ्च पूजनम् ।
विष्णोराराधनञ्चैव कुर्य्यान्नित्यमुपोषणम् ॥
दानानि विप्रमुख्येभ्यो दद्यात् पुण्यविवृद्धये[1] *।*
उपवासांश्च विविधान् कुर्य्याच्छास्त्रोदितान्छुभे ।—इति दायभागादि-ग्रन्थधृतव्यासवचनम् ॥३॥

अपुत्रा शयनं भर्त्तुः पालयन्ती गुरौ स्थिता ।
भुञ्जीतामरणात् क्षान्ता दायादा ऊर्द्ध्वमाप्नुयुः ॥—इतिदाय-भागादिग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥४॥

सदरदिमानीधर्म्माधिकरणसम्बन्धिस्वकर्त्तव्यकार्य्यजातव्यग्रतया बहुदिना-न्यासन्निकरोगग्रस्ततया चैतद्व्यवस्थादाने एतावान् विलम्बो जात इति निवेदनम् इति । ईशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयसितम्बर-मासीयैकादशदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्राङ्गरेजीशब्द-प्रतिपाद्यलिपिनिवेदनपत्रैर्विचारपत्राभ्याञ्च सहितेयं व्यवस्था पारशीकलिपि-निर्म्मिततत्प्रतिरूपपत्रेण प्रभुयाचितनिवेदनपत्रेण च सदरदिमानीधर्म्माधि-करणे एतद्व्यवस्थाप्रतिरूपरक्षणार्थमेतद्व्यवस्थाप्रतिरूपवङ्गदेशीयलिपि-निर्म्मितव्यवस्थाप्रतिरूपैश्च सहिता दत्तेति—

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

मोकाबिला श्रीवैद्यनाथमिश्र

श्रीश्रीदुर्गा

(११७) प्रश्नः—

यदि कोन अंशानामाय जीवतमान वेक्तीर अवर्त्तमान वेक्तीर

1. भुख्येभ्यो दद्यात् पुण्यविवृद्धये—पा० ।

सहित अंश हुनेयार कथा लेख्या थाके, से अंशनामा शास्त्रानुसारे ग्राह्य हइते पारे कि ना इति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं विचारपत्रद्वयं विभागपत्रमङ्करेजीशब्दप्रतिपाद्य-लिपिभाषापत्रञ्च यदीशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयमेमासीयाङ्कमितदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यदि कस्मिंश्चिद्विभागपत्रे विद्यमानव्यक्तिविशेषस्याविद्यमानव्यक्तिविशेषेण सहितांशभवनं लिखितं स्यात्तदा तद्विभागपत्रं स्वतोऽविद्यमानव्यक्तिविशेष-स्यांशप्राप्तितात्पर्य्येण ग्राह्यं भवितुमर्हति, अविद्यमानव्यक्तिविशेषस्य स्वतोंऽशग्राहकत्वाभावात्; किन्त्वविद्यमानव्यक्तिविशेषोत्तराधिकारिणामंश-प्राप्तितात्पर्य्येण ग्राह्यं भवितुमर्हति—इति वङ्गदेशचलितमनुदायभाग-प्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति—

सदरदिमानीधर्म्माधिकरणसम्बन्धित्वकर्त्तव्यकार्य्यबाहुल्यप्रतया बहु-दिनान्यात्यन्तिकरोगग्रस्ततया चैतद्व्यवस्थादाने विलम्बो जात इति निवेदन-मिति—

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयसितम्बरमासीयचतुःपञ्च-मितदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रविभागपत्रविचार-पत्रद्वयाङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यलिपिभिः प्रभुयान्वितनिवेदनपत्रपारशीकलिपिनि-र्म्मितव्यवस्थाप्रतिरूपपत्राभ्यां च सहितेयं व्यवस्था एतद्धर्म्माधिकरणे एतद्व्यवस्थाप्रतिरूपरक्षणार्थमेतद्व्यवस्थाप्रतिरूपपत्रवङ्गदेशीयलिपिनिर्म्मि-तप्रश्नपत्रपारशीकलिपिनिर्म्मितव्यवस्थाप्रतिरूपपत्रैः सहिता दत्तेति—

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण
मोकाविला श्रीवैद्यनाथमिश्र

---

(১১৮)—নং ৩২১ সন ১৮৩৫ সালের—

রুবকারি মিজিল আদালতে সদর দেওয়ানি মোকাম কলিকাতা। বৈঠক জান রাস হেচিসন সাহেব উক্ত আদালতের কায়েম মোকাম হাকিম সন ১৮৩৭ সাল তা০ ৬ সেবম্বর মোতাবেক সন ১২৪৪ সাল তারিখ ২২ ভাদ্র দিবস বুধবার—

সিউরবহাদুরসিংহ ও গয়রহ— আপীলাণ্টান—
বেতাকুঙর ও ওমেদকুঙর— রেস্পাণ্ডেণ্ডান্—

আপীলাণ্টের বকিলগণ মুনশী হোসনআলি ও জিমিস চারলেস কালবরক সদরলেণ্ডসাহেব ও মিরকবির হোসন ও কাজি পেগাম্বর বক্স মোক্তারগণ ও হাজির রেস্পাণ্ডেণ্টের উকিল মুনশী গোলাম আহম্মদ হাজির আসিল। গতো আগষ্ট মাহার ১০ তারিখে এ মকদ্দমা আমার বৈঠকে পেস হইয়া সকল কাগজ পত্র পড়া জাইয়া মুলতবি ছিল, অদ্য পুনরায় পেস হয়াতে বোধ হইল জে এই আদালতের ফয়ছলা অনুসারে কেহরসিংহের হিস্যা তাহার কন্যা জ্ঞানকুঙরেতে অর্শে, আর কেহরসিংহের দ্বিতীয় কন্যার পুত্র তোতাসিংহ, জে জ্ঞানকুঙরের মৃত্যুর পর সত্ব রাখিতো, জ্ঞানকুঙরের সাক্ষাতে মৃত হয়, আর তাহার পর জ্ঞানকুঙর আপন কন্যা উমেদকুঙরকে রাখিয়া মরে। আর এ দয়নে উক্ত তোতাসিংহের পুত্র সিউরবহাদুরসিংহ আর তোতাকুঙরের আবা নাথুসিংহের পুত্র নরেন্দ্রনারায়ণ ও গয়রহ, জে তোতাসিংহ আপন মাতার সাক্ষাতে ফৌত করিয়াছিল, আসল মালিক কেহরসিংহের বস্তুর উত্তরাধিকারি সুরতে ঐ হিস্যার দাবি রাখে। এ কারণ চূড়ান্ত হুকুম হওনের পূর্ব্বে এই মকদ্দমাতে শাস্ত্রের হুকুম জ্ঞাত হওয়া এই বিষয়েতে, জে বিবাদীয় হিস্যাতে উভয়ের মধ্যে কে স্বত্ব রাখে, উচিত হইয়া হুকুম হইল জে এই রুবকারির নকল এই হুকুমে জে বিবাদীয় হিস্যার প্রতি দৃষ্টি আর দাবিদারানেরদিগের প্রতি দৃষ্টি জে তাহারদিগের প্রসঙ্গ উপরে লেখা গেল (বিচার) করিয়া লেখেন জে পশ্চিম প্রচলিত শাস্ত্র অনুসারে কেহরসিংহের হিস্যা,

जाहा ज्ञानकुञ्चरेते पौंछियाछिल, ज्ञानकुञ्चरेर मृत्युर पर ताहार कन्याके किम्बा केहरसिंहेर दौहित्रगण नाथुसिंहेर पुत्रगणके ओ तोतासिंहेर पुत्रके पौंछिबेक—एइ आदालतेर पण्डितके समार्पन करा जाय इति —

श्रीज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिस्थानाभिषिक्तश्रीयुतजानरासहेचिमनसाहेबधर्म्माधिकरणलिखितेशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयसितम्बरमासीयरसमितदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदब्दीयतन्मासीयगजेन्दुमितदिनधर्म्मनिधिचन्द्रवासरे मया प्राप्तन्तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रभुसमर्पितविचारपत्रलिखितविषये ज्ञानकोमराख्यासंक्रान्तकेहरसिंहस्वत्कांशे ज्ञानकोमराख्याया उपरमानन्तरं तत्कन्यायाः स्वत्वं मिताक्षराबालम्भट्टविरचितमिताक्षराटीकाप्रभृतिग्रन्थानुसारेण भवितुमर्हति—इति पश्चिमदेशचलितमिताक्षराबालम्भट्टविरचितमिताक्षराटीकाप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति—

अत्र प्रमाणम्—

पितृमातृपतिभ्रातृदत्तमध्यग्न्युपागतम् ।

आधिवेदनिकाद्यं च स्त्रीधनं परिकीर्त्तितम्॥—इति मिताक्षरावीरमित्रोदयप्रभृतिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥१॥

पित्रा मात्रा पत्या भ्रात्रा च तद्दत्तं यच्च विवाहकाले अग्न्यावधिकृत्य मातुलादिभिर्द्दत्तम् । आधिवेदनिकमधिवेदननिमित्तमधिविन्नस्त्रियै दद्यादिति वक्ष्यमाणम् । आद्यशब्देन रिक्थक्रयसंविभागपरिग्रहाधिगमप्राप्तमेतत्स्त्रीधनं मन्वादिभिरुक्तम् । स्त्रीधनशब्दश्च यौगिको न पारिभाषिकः, योगसम्भवे परिभाषाया अयुक्तत्वाद्—इति मिताक्षराग्रन्थलिखनम् ॥२॥

*यथा मातृधनग्रहणे दुहितृदौहित्रीदौहित्रपुत्रपौत्रादिक्रमस्तथा पितृ*धने पुत्रपौत्रप्रपौत्रपत्नीदुहितृदौहित्रदौहित्र्यादिक्रमस्य प्रत्यासत्तितार-

तन्येन न्यायप्राप्तत्वात् स्रीधनं दुहितृणामप्रत्तानामप्रतिष्ठितानाञ्चेति गौतमवचनस्य पितृधनेऽपि समानत्वादित्यनुपदमेवोक्तत्वता विज्ञानेश्वरेण सूचितत्वात् तत्सम्मतमपीदमिति—इति बालम्भट्टविरचितमिताक्षराटीका-
रूपग्रन्थलिखनञ्चेति ।

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(११९) नं० २६२ सन १८३३ साल—

रोवकारि मिछिल आदालत सदर देओआनी मोकाम कलि-काता तारिख २१ सेप्तम्बर सन १८३७ साल मोतावके ६ आश्विन सन १२४४ वाङ्गला श्रीयुत चारलिस हारिडिङ्ग साहेब कायम मोकाम हाकिमेर बैठके—

वल्लभिकान्तचौधुरि अपीलाण्ड

नवकान्तचौधुरि— रेस्पाण्डण्ड

आपीलाण्डेर उकिल मुनशी आयास आलि ओ रेस्पाण्डण्डेर उकिलान मुनशी वंशीधरमिश्र ओ रामप्राणराय हाजिर आछी-लेन । अथ एइ मकद्दमा तरतिब मोताबेक आमार बैठके दरपेश हइया आर्जी ओ द्वितीय ओ एइ विचारस्थानेर तावत कागजात पड़ा गेलो । यदि स्यात एइ मकद्दमाय रेस्पाण्डण्डेर पुष्य-पुत्र राखनेर विशये जेता ओ एइ आदालतेर पण्डितलोकेर निकट जिज्ञाशा गियाछिल, ताहाते पण्डितान् आपन २ जओयाव पुष्य पुत्र सिद्धि हओनेर विशये लिखियाछेन । विशेसत एइ मकद्दमार हुकुम हओनेर पूर्व्वे सन्देह भञ्जनार्थ एइ आदालतेर पण्डितेर निकट कएक विशय जिज्ञाशा आवशयक हइया हुकुम हइल जे एइ रोवकारिर नकल एइ हुकुमे एइ आदालतेर पण्डितेर स्थाने समार्पन करा जाय जे निचेर लिखित प्रश्नसकलेर जओयाव वङ्गदेशीय चलित शास्त्रानुसारे काछारि बन्देर पर एक सप्ताहेर

मध्ये दाखिल करेन। प्रथम, एइ जे, यदि कोन पीड़ित व्यक्ति पीड़ाते अज्ञान हइया रय, आर तत्कालिन कोन एक व्यक्ति एक बालकके लइया ऐ पीड़ित व्यक्तिके कहे जे तुमि पुष्य पुत्र लइबा, आर से समय ऐ पीड़ित व्यक्तिर मुखे हइते हाँ शब्द निर्गतो हय, तबे शास्त्रानुसारे एइ प्रकार पुष्य पुत्र सिद्धि हइते पारे कि ना। द्वितीय एइ जे, पुष्य पुत्रेर विशये शास्त्रानुसारे बयेशेर किछु निरपन आछे कि ना। यदि निरपन थाके, तबे सेइ निरपन जावतीय हिन्दु जातीर निमित्तें, कि हिन्दुर मध्ये सकल जातीर विभिन्न्य घटे–विस्तार करिया लिखेन इति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिस्थानाभिषिक्तश्रीयुतचार्ल्सहारिङ्गटनाहेब-धर्म्माधिकरणलिखितेशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयचितस्वर-मासीयेन्दुपक्षमितदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं मत्तदब्दीयनव-स्वरमासीयेन्दुपक्षमितदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मया प्राप्तस्तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

रोगाभिभूतस्याज्ञानावस्थायां केनचिदेकं बालकमादाय तमेव रोगाभि-भूतव्यक्तिविशेषमुद्दिश्य त्वं दत्तकपुत्रं ग्रहीष्यसीत्युक्तो रोगाभिभूतव्यक्ति-विशेषमुखतो हाँ इति शब्दप्रयोगे सत्येवंभूतदत्तकपुत्रश्शास्त्रानुसारेण न सिद्ध्यति, दत्तकपुत्रतासिद्धिसम्पादकशास्त्रीयनियमजातनिष्पत्तेः प्रथम-प्रश्नलिखितविषयतो ज्ञातुमशक्यतया तन्नियमजातनिष्पत्तिमन्तरेण दत्तक-पुत्रतासिद्धेश्शास्त्रीयत्वस्य भवितुमशक्यत्वादिति—

अत्र प्रमाणम्—

पुत्रं प्रतिग्रहीष्यन् बन्धूनाहूय राजनि निवेद्य निवेशनस्य मध्ये व्या-हृतिभिर्हुत्वा अदूरबान्धवं बन्धुसन्निकृष्टमेव प्रतिगृह्णीयात्—इति दत्तक-मीमांसा(पृ० १०२)प्र(भृ)तिग्रन्थधृतवशिष्ठवचनम् ॥१॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

ब्राह्मणक्षत्रियवैश्यजातीयानामुपनयनप्राक्कालपर्य्यन्तं शूद्रजातीयानान्तु विवाहप्राक्कालपर्य्यन्तं दत्तकपुत्रता शास्त्रीया भवति—इति वङ्गदेशचलितदत्तकमीमांसादत्तकचन्द्रिकाप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति—

अत्र प्रमाणम्—

चूडाद्या यदि संस्कारा निजगोत्रेण वै कृताः ।
दत्ताद्यास्तनयास्ते स्युरन्यथा दास उच्यते ॥—इति दत्तकमीमांसाप्रभृतिग्रन्थधृतवचनम् ॥१॥

एवञ्च चूडाद्या इत्येतद्गुणसंविज्ञानबहुव्रीहिणा द्विजातीनामुपनयनलाभः, शूद्रस्य तु विवाहलाभः—इति दत्तकचन्द्रिकाग्रन्थलिखनञ्चेति ॥२॥

ईशवीयाब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयनवम्बरमासीयगुणपञ्चमितदिनसम्बन्धिबृहस्पतिवासरे प्रभुसमर्पितविचारपत्रसद्दिवेयं व्यवस्था मया दत्तेति—

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

---

(१२०)—तरजमा रोवकारि—

नम्बर ६१३१ । रोवकारी मिसिल आदालत दिमानी सदर मोकाम इलाहाबादे तारिख २५ माह अपरेल सन १८३७ ईशवी मोताबिक ५ माह वैशाख सन १२४४ फसली, रोज मङ्गलवार ओलियम मनकटन् साहेब कायम मोकाम हाकिम आदालत मजकुरार वैठके इति—

मोसम्मात लछुमना ओ ठाकुर— आपीलाण्टान्
वेचनलालेर मृत्युर पर ताहार पुत्र मुकुन्दलाल—रष्पाडण्ट
आपीलाण्टेर ओकीलगण शेख महम्मद सफी ओ लाला·

मथुरादास ओ रष्पाडएटेर ओकीलगण मौलवी इनामुल्लाह ओ लाला रामचन्द्र हाजीर हइलेन। ओलियम फिलमेकडीक साहेब हाकिमेर सन हालेर फिवरवरी मासेर तेइसा तारिखेर हुकुमानुसारे ए मोकद्दिमा अद्य आमार बैठके रोवकार हइया जिलार दुइ आदालतेर कागजात ओ वाराणसेर कोर्ट आपील आदालतेर कागजात ओ ए मोकद्दिमार तजविज-सानीर कागजात ओ ओइ हाकिमेर राय सम्वलित सन हालेर फेवरवरी मासेर तेइसा तारिखेर लिखित ओइ हाकिमेर रोवकारिर लिखित विस्तीर्ण हेतुसकल ओ सन १८२३ ईंशावीर अपरैल मासेर दशइ १० तारिखेर रजिस्तर साहेबेर फैसलार सम्पर्कीय फौजदारी आदालतेर कागजात ओ भजनलाल मद्दे ओ मोसम्मात लक्षुमना मुद्दाआलेहेर मोकद्दिमार कागजात ओ जज आपीलेर ओइ मोकद्दिमार सन १८२४ ईसवीर जुन मासेर १४ चौदही तारिखेर फैसलार सम्पर्कीय कागजात पढा गेलो। अतएव ए मोकद्दिमाते कलिकातार सदर दिमानी आदालतेर पण्डितेर निकट हइते व्यवस्था तलव करा आविश्यक बोध हइया हुकुम हइलो ये नीचेर लिखित विस्तीर्ण सवाल ये प्रकार एइ रोवकारीते लिखा आछे सेइ प्रकारे लिखिया एइ रोवकारीर नकल सम्वलित ओ पे आदालतेर रजिस्तर साहेबेर चिठीर सहित कलिकातार सदर दिमानी आदालतेर रजिस्तर साहेबेर निकट पाठानो जाय ये कलिकातार सदर दिमानी आदालतेर रजिस्तर साहेब कलिकातार सदर दिमानी आदालतेर पण्डित हइते ओइ सवालेर जवाब लइया ए आदालते पठाएन इति। सवाल एइ ये, यद्यपि दुइ भ्राता ताम्बुलि जाति पैतृक स्थावर धन विभागेर पर आपन आपन अंशेते दखिलकार छिलेन, ओ ओइ दुइ भ्रातार मध्ये एक जन एक स्त्री ओ एक अविवाहिता कन्या राखिया मृत्यु हइया थाके, ओ ओइ स्त्री आपन कन्यार विवाह कराइया थाके। ताहार पर ओइ कन्यार मृत्यु हय। ताहार पर ओइ मृत भ्रातार स्त्री आपन

पतिर विभक्त धने दखिलकार छिलो, द्वितीय पति करे। ए प्रकारे जिज्ञासा करा जाइतेछे ये मृत व्यक्तिर पत्नीर द्वितीय पति करण शास्त्रानुसारे सिद्ध वटे कि ना। यद्यपि सिद्ध हय तवे आपन प्रथम पतिर स्थावर धन याहा ओइ स्त्रीर दखले आछे. ताहा पाइवेक, किम्वा ओइ स्त्रीर दखली स्थावर धन ओइ स्त्रीर प्रथम पतिर भ्राताके अर्शिवेक। ओ यद्यपि ए विषयेर खुलासा शास्त्रे ना पाओया जाय तवे देशाचार ओ जात्याचार प्रमाण जाना जाइवेक कि ना। ओ एइ सवालेर जवाव वाराणस देशेर चलित शास्त्रानुसारे लेखेन इति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितविचारपत्रमङ्करेखोशब्दप्रतिपाद्यलिपिभाषापन्नं च यदीयावी-शब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयमैमासीयाङ्कपक्षमितदिनसम्बन्धि चन्द्र-वासरे मया प्राप्तस्तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

ताम्बुलिकजातीययोर्द्वयोर्भ्रात्रोः पैतृकस्थावरधनस्य विभागानन्तरं स्वस्वांशे आयत्तत्वं सम्पादितवतोरेकस्य पत्नीमेकामविवाहितां कन्यामेकां विहाय मृतस्य पत्नी स्वकन्याविवाहं कारितवती स्यात्, पश्चात् सा विवाहिता कन्या परलोकं जगाम, तदनन्तरं च मृतस्य भ्रातुः पत्नी स्वपतिरयक्त-विभक्तधने आयत्तत्वं सम्पाद्य पत्यन्तरं कृतवती चेत्तत्पत्यन्तरकरणं यद्यपि साध्वीस्त्रीणां शास्त्रसिद्धं न भवति। किन्तु साध्वीभिन्नानामपि स्त्रीणां कतिचित्प्रभेदाः शास्त्रे उक्ताः। तेषां प्रभेदानां तृतीयस्वैरिणीस्त्रीलक्षणं मिताक्षराप्रभृतिग्रन्थेषु स्पष्टतया लिखितम्। तद्दृष्ट्या वाराणसीप्रभृतिदेशे ताम्बुलिकजातीयस्त्रीणां पत्युर्मरणानन्तरं पत्यन्तरकरणं व्यवहृतं चेत्तदैतद्वि-वादसम्बन्धिन्या मृतस्य भ्रातुः पत्न्याः शास्त्रानुसारेण तृतीयस्वैरिण्याः पत्यन्तरकरणं तज्जातीयव्यवहारानुसारेण सिद्धं भवितुं शक्नोति। एवमुपरि-लिखितप्रकारेण तस्याः स्त्रियाः पत्यन्तरकरणस्य सिद्धौ तस्या मृत्युत्तराधिका-रित्वेन स्वायत्तीभूतप्रथमपतित्यक्तधने यावज्जीवं तस्या एवाधिकारस्तस्या-जीवनान्त्यान्तरप्रथमपतिभ्रातुर्जाधिकारः, उत्तराधिकारित्वेन स्वस्वोरत्यनन्तरं

केनचिद्दोषेण तत्स्वत्वनाशस्य शास्त्रानुसारेण भवितुमशक्यत्वात्—इति वाचस्पतिप्रदेशचलितमनुमिताचरावीरमित्रोदयप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति—

अत्र प्रमाणम्—

सकृदंशो निपतति सकृत्कन्या प्रदीयते ।

सकृदाह ददानीति त्रीण्येतानि सतां सकृत् ॥—इति मनु(९.४७) वचनम् ॥१॥

न द्वितीयश्च साध्वीनां क्वचिद् भर्त्तोपदिश्यते ॥—इति मिताक्षरावीरमित्रोदयप्रभृतिग्रन्थधृतमनुवचनम् ॥२॥

मृते भर्त्तरि तु प्राप्तान् देवरादीनपास्य या ।

उपगच्छेत् परं कामात् सा तृतीया प्रकीर्तिता ॥—इति उपरिलिखितग्रन्थधृतनारद(नास्मृ० ४० । पृ० १७६)वचनम् ॥३॥

जातिजानपदान् धर्म्मान् श्रेणीधर्म्मांश्च धर्म्मवित् ।

समीक्ष्य कुलधर्म्मांश्च स्वधर्म्मं प्रतिपालयेत् ॥—इति मनुवचनम् ॥४॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा—इत्यादि मिताक्षरावीरमित्रोदयप्रभृतिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥५॥

पत्नी गृह्णीयादित्येतद्वचनजातं विभक्तभ्रातृस्त्रीविषयम्—इति मिताक्षराग्रन्थलिखनम् ॥६॥

एतेषां विभागात् प्रागेव दोषभाक्त्वेनांशित्वम्, न पुनर्विभागोत्तरमपि दत्तविभागापहरणम्, प्रमाणाभावात्—इति वीरमित्रोदयप्रभृतिग्रन्थलिखनञ्चेति ॥७॥

कलिकाताख्यमहानगरसम्बन्धिसदरदिवानीधर्म्माधिकरणसम्बन्धिस्व-कर्त्तव्यकार्य्यजातव्यग्रतया बहुदिनान्यात्यन्तिकरोगग्रस्ततया चैतद्व्यवस्थादाने एतावान् विलम्बो जात इति निवेदनम् । इति ईशवीशब्दसम्पाद्य-मुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयनवम्बरमासीयमुनिपक्षमितदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे *मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रांगरेजीशब्दप्रतिपाद्यलिपिभ्यां सहितेयं व्यवस्था* पारशीकलिपिनिर्म्मितव्यवस्थाप्रतिरूपपत्रेण प्रभुयाचितनिवेदनपत्रेण कलि-

कातारव्ययदानगरसमन्वितसदरदिमानीसम्पर्षिकरणे एतद्व्यवस्थाप्रतिरूप-रक्षणार्थमेतद्व्यवस्थाप्रतिरूपपत्रपारसीकलिपिनिर्मितव्यवस्थाप्रतिरूपपत्रवि-चारपत्रप्रतिरूपपत्रैश्च सहिता दर्शिता—

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण
मुकाबिला श्रीवैद्यनाथमिश्र

---

(१२१)—तरजमा रोवकारी—

रोवकारी आदालत दिमानी जिला फतेहपूर जानेनैयावलि-सरेयाज साहेब जजेर बैठके। तारिख २ जुन सन १८३७ ईरावी। गङ्गापुत्रदिगेर ओ जमुनापुत्रदिगेर वृत्ति क्रमागत धन बदे कि यजमानेदिगेर एमत क्षमता आछे ये आपन आपन इच्छा मते याहाके तुष्ट हइया दिते चाहेन ताहाके दिते पारेन—ए विषय सदर दिमानी आदालतेर पण्डित हइते ज्ञात हओया आवश्यक बोध हइया हुकुम हइलो ये एइ रोवकारीर नकल अङ्गरेजी चिठीर सहित मोकाम एलाहाबादेर सदर दिमानी आदालतेर प्रबल-प्रताप हाकिमानेर हजुरे पाठान जाय, ये उपरेर लिखित ओइ पण्डितेर निकट हइते ए विषय ज्ञात हइया ए आदालते अनुग्रह-पूर्वक प्रेरण करेण इति—

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितविचारपत्रस्थीपत्राङ्करेबीशन्दमतिपार्श्वलिखितव्यवस्था यदी-शवीशन्दमतिपाद्मुनिगुणगजेन्दुमितान्दीयजुलाइमासीयरसमितदिनसत्र-निवगुरुवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—·

गङ्गापुत्राणां यमुनापुत्राणां च वृत्तिः प्राचीनपुरोहितानां तेषां क्रमागता भवितुमर्हति प्राचीनपुरोहितत्वात् पौरोहित्यकर्म्मानधिकारप्रयोजकशास्त्रीयदोषमन्तरेण यजमानाः परित्यज्य स्वस्वेच्छया पुरोहितान्तरं कर्त्तुं न शक्नुवन्ति इति—पश्चिमदेशचलितमनुमितास्तवीरमित्रोदयप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

ऋत्विजं यस्त्यजेद्याज्यो याज्यं चर्त्विक् त्यजेद्यदि ।
शक्ते कर्म्मण्यदुष्टं च तयोर्दण्डः शतं शतम् ॥—इति वीरमित्रोदय(पृ० ३८३)प्रभृतिग्रन्थधृतमनु(८।३८८ वचनम् ॥१॥

कलिकाताख्यमहानगरसम्बन्धिसदरदिमानीधर्म्माधिकरणसम्बन्धिस्वकर्त्तव्यकार्य्यबाहुल्यग्रस्ततया बहुदिनान्यारभ्य ऐकान्तिकरोगग्रस्ततया चैतद्व्यवस्थादाने एतावान् विलम्बो जात इति निवेदनमिति । ईशवीयशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयनवम्बरमासीयमुनिपक्षमितदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्राङ्करेजीशब्दप्रतिपाद्यलिपिसूचीपत्रैः सहितेयं व्यवस्था पारसीकलिपिविनिर्म्मितव्यवस्थाप्रतिरूपपत्रेण प्रभुयाचितनिवेदनपत्रेण कलिकाताख्यमहानगरसम्बन्धिसदरदिमानीधर्म्माधिकरणे एतद्व्यवस्थाप्रतिरूपरक्षणार्थमेतद्व्यवस्थाप्रतिरूपपत्रपारसीकलिपिविनिर्म्मितव्यवस्थाप्रतिरूपविचारपत्रप्रतिरूपपत्रैश्च सहिता दत्ता इति ॥

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

मोकाविला श्रीवैद्यनाथमिश्र—२

श्रीश्रीहरिः

(१२२)— नं० २५२ सन १८३५ सालेर—

रूबकारि निज्ञिल आदालते देओयानि सदर मोकाम कलि-

কালা বৈঠক জান রাম হেচিসন সাহেব, উক্ত আদালতের কায়ম মোকাম হাকিম। সন ১৮৩৭ সাল তারিখ ৬ সেতম্বর মোতাবেক সন ১২৪৪ সাল তারিখ ২২ ভাদ্র বুধবার—

সিতাবরায়বাহাদুর মৃত্যুর পর তাহার পুত্র গোপাললালের ওয়ালি—

বদামুকুন্দর আপীলাণ্ট
বুনিয়াদিসিংহ রেস্পাণ্ডেণ্ট

গতো মার্চ্চ মাহার ২৮ তারিখে এই মকদ্দমা আমার বৈঠকে পেস হইয়া সকল কাগজ-পত্র পড়া জাইয়া রানী কুঞ্জমনী আপীলাণ্ট ও রাজা উদ্যন্তসিংহ রেস্পাণ্ডেণ্ট এই মকদ্দমার এই আদালতের ফয়ছেলা মোনাছেব করণের কারণ আর মৃত আপীলণ্টের উত্তরাধিকারির হাজিরের নিমিত্ত ইস্তাহার জারি করণের কারণ মুলতবি ছিল। অত্র পেসকারের জ্ঞাত করান মতে জে মৃত আপিলণ্টের উত্তরাধিকারি সাবুদের বাবত রিটরন ফামেল পৌছিয়া মৃত আপিলাণ্টের জায়গায় গোপাললালের অতি মোক্তার বাদামুকুন্দরের নাম লেখা গিয়াছে; আর তাহার তরফ হইতে মুনসি হোসন আলির নামে ও জিমিস চারলেস কোলবরুক সদরলেণ্ট সাহেবের নামে ওকালতনামা দাখিল হইয়াছে। উক্ত ওকিলগণের হাজিরিতে আর রেস্পাণ্ডেণ্টর গরহাজিরিতে জে এয়ালামনামা জারিতে রসিদ লিখিয়া দেওয়াতেও ওকিলের দ্বারায় কিম্বা খোদ হাজির নাই। পুনরায় পেস হইবায় বোধ হইল জে কাজিয়ার মাম-সকল পূর্ব্বে হইতে ৩০০০ টাকা আগামিতে ইস্তক সন ১২২৩ নাগাদ সন ১২২৫ ফসলি সাববত সরমিয়াদে আপীলণ্টের পিতার ইজারা ছিল, আর ঐ আসামির টাকা আদায়র ও-য়াদা ইজারার অন্‌ত্যসনের অন্তে ছিল। যদি ওয়াদা মতে আদায় না হয়, তবে ঐ টাকা আদায় পর্য্যন্ত ইজারা বাহাল থাকিবেক। ইহার পরে বুনিয়াদিসিংহ রেস্পাণ্ডেণ্টর ও প্রতাব সিংহের পিতা খড়গনারায়ণ ৪৩০০ টাকা তমসুকসকলের দ্বারায় উক্ত ইজারাদারের নিকট হইতে লইয়া ১২২৫ সালে কাজিয়ার মাম

सकल आर दोसरा ग्रामसकल आर रेस्पाडेण्ट आर प्रतापसिंह नाबालग पुत्रगणके उत्तराधिकारि राखिया फौत करे। ताहार पर तमसुकेर टाका तलब तागादाय खड्गनारायणेर वनिता मतिकुंडर नाबालगदिगेर माता काजियार ग्रामसकल १२००१ टाकाते बयबेल उफा[१] राखिया किम्मतेर टाका हइते आशामिर टाका आर तमसुकेर टाका मिनाह दिया बाकि टाका आपनि लय। यदि स्यात्, रेस्पाडेण्ट प्रकाश करितेछे जे मतिकुंडर बयबेल ओफार द्वाराय काजियार ग्रामसकल हस्तान्तर करणेर क्षेमता राखे ना, आर इजारार आगामि टाका आदाएर ओयादा इजारार अन्त सने, न चेत ताहा आदाय पर्य्यन्त इजारा बाहालेर शरत छिल। आर इजारा बाहालेते रेस्पाडेण्टेर विषये स्थर्य्य वैतिरो कोन खेति छिल ना। किन्तु चुडान्त हुकुम हओनेर पूर्व्व शास्त्रेर हुकुम जाना एइ विषयते जे मतिकुंडरेर निकट हइते तमसुकेर टाका तलब करा आर तमसुक ओ गयरहेर टाका आदाय कारण काजियार ग्रामसकल हस्तान्तर करणेर मतिकुंडरेर क्षेमता छिल कि ना उचित हइतेछे। ए कारण हुकुम हइल जे एइ रूबकारिर नकल एइ हुकुमे जे लिखेर लिखित प्रश्नेर उत्तर पश्चिम देशीय प्रचलित शास्त्र अनुसारे रूबकारि पौंछियार तारिख हइते एक सप्ताहेर मध्ये लेखेन, एइ आदालतेर पण्डितके समर्पन करा जाय।

प्रथम, एइ जे, खड्गनारायणेर लिखित तमसुक ओ गयरहेर टाका मतिकुंडरेर निकट हइते तलब करा उचित छिल, कि ना।

द्वितीय, एइ ये, यदि स्यात् नाबालगगणेर अलि मतिकुंडरेर निकट हइते तमसुक ओ गरहेरय टाका तलब करा उचित हय, तबे उहार इजारार विषय परिवर्त्तं कारियार ग्रामसकल बयबेल ओफा राखिया तमसुकेर टाका आर आशामि टाका किम्मतेर टाका हइते मिनाह करणेर क्षेमता छिल कि ना इति—

१० ओफा इति अतः परः पाठः॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्म्माधिकरणाधिपतिस्थानाभिषिक्तश्रीयुतजानराबर्टचिसननामदेवध-र्म्माधिकरणलिखितेशवीयाब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयसितम्बरमासीयरसमितदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नद्वयप्रतिरूपपत्रं यत्तदब्दीयतन्मासीयगजेन्दुमितदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रभुसमर्पितविचारपत्रलिखनविषये सदगनारायणलिखितपत्रलेख्यप्रभृति राजतमुद्राधावनकरणं मतिकोमराख्याशचिषौ शास्त्रानुसारेणोचितमासीत्। पुत्रेषु विद्यमानेषु पितृऋणापाकरणस्य[1] प्रथमतः पुत्रैरेवकर्त्तुमुचितत्वात्। द्वितीयप्रश्नस्योत्तरमप्यर्थादत्रैव पर्यवसितमिति पृथङ्न लिखितमिति निवेदनम्—इति पश्चिमदेशचलितमनुमिताक्षरावीरमित्रोदयप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति—

अत्र प्रमाणम्—

ऋणमात्मीयवत् पित्र्यं पुत्रैर्देयं विभावितम्—इति मिताक्षरा(पृ० १५२)प्रधृतमन्यधृतबृहस्पति(पृ० ११७ वचनम् ॥१॥

तत्र क्रमोऽप्ययमेव—पित्रभावे पुत्राः—इति मिताक्षरा(पृ० १५२)ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥२॥

ईशवीयाब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयदिसम्बरमासीयरसमितदिनसम्बन्धिबुधवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रस्थितेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीदुर्गा

(१२३)—१०० नं० जारि—

जेला चव्विस परगणार मवालक्ष थाँकि नवावगञ्जेर मोन-

---

१. पितृर्णापाकरण०—मूल०।

छफी काछारि हइते सदर देओयानि आदालतेर श्रीयुत पण्डितेर निकट व्यवस्थार कारण सओयाल एइ—

गुरुप्रशादराय—१ डिगरिदारान्
इन्द्रनारायणराय—१
सा. काठालिया—
परगणे कलिकाता।
श्रीमतीगुणमयीदासी देनादार—
सा. सुकचर प० ऐ—

दावि २१७१९ टाका—
मा० जारिर खरचा—

यद्यपि देनादार श्रीमत्या गुणमयीदासीर स्वामी रघुनाथ-वल्लभ स्थावर ओ अस्थावर बिछ्यादि एवं श्रीराखालवल्लभ नामक अप्राप्तवयेष एक नाबालक पुत्र एवं स्त्री दासी मजकुराके राखिया लोकान्त हय। ऐ रघुनाथ मजकुरेर लोकान्तेर पर तस्य वनिता अर्थात दासी देनादार मजकुरा अप्रओल जन्य ऐ नाबालग पुत्रर प्रतिपालनार्थे ऐ डीगरिदारानेर निकट सुखा तामाकु कर्ज्ज लइया व्यवसा करिया ऐ नाबालगेर प्रतिपालने खरच करे। ऐ तामाकुरेर किम्मत परिशोद ना हओयाते डिगरिदार मजकुरान नालिसेर द्वाराय डिगरि हासिल करिया ऐ डिगरि जारि करिया ऐ रघुनाथ, मतोओफार जायदाद ।४ दाफा जाहा ऐ नाबालगेर हक ताहा क्रोक कराइयाछे। अतएव शास्त्रानुसारे नाबालग राखालवल्लभेर पिता ओ रघुनाथ वल्लभ मतओफार जायदाद श्रीमतीगुणमयीदासीर देना परिशोधार्थे विक्रय हइते पारे कि— इहार व्यवस्था इति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्र विचारपत्रमङ्करेजीलिपिमात्रपत्र च यदीयवी-शब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयमैमासीयनागेन्दुमितदिनसम्बन्धिच •

(१२४)—सञ्ओयाल—

यद्यपि कोन एक व्यक्ति हिन्दु आपन जातीय धर्म्म हइते जात्यन्तर हइया अन्य धर्म्मावलम्बीय हय, आर ताहार स्त्री आपन जातीय हिन्दु धर्म्म अवलम्बी थाकिया आपन ऐ स्वामीर निकट जाइते असम्मतो हय, तबे हिन्दुदिगेर शास्त्रानुसारे ऐ स्त्री आपन जात्यन्तरीय स्वामी हइते विच्छेद हइया आपन पितृ कि भ्रातृ आलये थाकिते पारे, किम्वा विचारकर्त्ता हाकिम आपन क्षमताय ऐ स्त्रीके ताहार ऐ जात्यन्तरीय स्वामीके अर्पन करिते पारेन—इहार व्यवस्था शास्त्रानुसारे जाहा हय, एइ प्रश्नेर प्रति उत्तर लिखेन इति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं विचारपत्रमङ्करेजीशब्दप्रतिपाद्यलिपिमाशापत्रं च यदीशावीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयजुलाइमासीयरसमितदिनस्य-म्बन्धिवृहस्पतिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधोजातस्तदनुसारे-णोत्तरं लिख्यते—

प्रश्नलिखितविषये हिन्दूजातीया काचित् स्त्री स्वजातीयधर्म्मनिरता सती स्वजातीयधर्म्मच्युतजात्यन्तरधर्म्मानुष्ठातृपतिसन्निधौ गन्तुमसम्मता चेत्तदा स्वजातीयधर्म्मच्युतजात्यन्तरधर्म्मानुष्ठातृपतिविरहिता एव पितुर्भ्रातु-र्वा गृहे स्थातुं शक्नोति, एवं राज्ञापि शास्त्रानुसारेण स्वजातीयधर्म्मच्युतजात्य-न्तरव्यवहर्तृ[1]पतिसन्निधौ स्थापयितुं योग्या न भवति-इति मनुदायभागविवा-दभङ्गार्णवमितक्षरावीरमित्रोदयप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति—

अत्र प्रमाणम्—

नष्टः प्रव्रजितः क्लीवः पतितो राजकिल्विषी ।

लोकान्तरगतो वापि परित्याज्यः पतिः स्त्रियाः ॥ इति विवाद-भङ्गार्णवप्रभृतिग्रन्थधृतदेवलवचनम् ॥१॥

दम्पत्योः परस्परधर्म्मव्यतिक्रमे सत्यन्यतरज्ञाने दण्डेनापि स्वधर्म्मव्यव-

१. व्यवहृत०-व्यव०

दरवारे हाजिर नाइ। एइ मकद्दमा सन हालेर २१ सेप्तम्बर तारिखे आमार बैठके दरपेस हइया मिछिलेर कागजसकल दृष्ट करणेर पर तारिख मजकुरेर रोवकारीर लिखितानुसारे कएक प्रश्न एइ आदालतेर पण्डितेर स्थाने जिज्ञास्य हइया स्थगित छिल। परे अद्य रोवकार हइया पण्डितेर दाखिल करा एइ मासेर २३ तारिखेर लिखित व्यवस्था दृष्टे आइल। ताहाते एइ मकद्दमार खास आपील मञ्जुरेर पूर्वे एइ आदालतेर पण्डित एइ आदालतेर सोओालेर जओाबे जेलार आदालतेर पण्डितेर व्यवस्थाय रेप्पाडएडेर पुष्य पुत्र सिद्धिर विषये जेलार पण्डितेर व्यवस्था जथार्थ लिखियाछेन। आर पण्डित मौछफेर हालेर दाखिल करा व्यवस्थार द्वाराय जेलार आदालतेर व्यवस्थार अनक्यो बोध हइतेछे। अतएव हुकुम हइल जे पुनराय शाबेक व्यवस्था ओ एइ आदालतेर पण्डितेर हालेर व्यवस्था ओ जेला आदालतेर पण्डितेर व्यवस्थार नकल एइ रोवकारिर नकल सम्बलित एक सप्ताह मेयादे पण्डितेर स्थाने समर्पण करा जाय जे आपन साबेक व्यवस्था ओ हालेर व्यवस्था ओ जेला आदालतेर व्यवस्थार मजमुनेर प्रति विचक्षण विवेचना करिया रेप्पाडएडेर पुष्य पुत्रेर विषये जाहा यथार्थ हय विवरण करिया लेखेन, एइ आदालतेर पण्डितेर कैफियत दाखिल करा पर्य्यन्त एइ मकद्दमा स्थगित थाके इति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिस्थानाभिषिक्तश्रीयुलचारलिपहारडिगसाहेब-धर्माधिकरणलिखितेशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयनवम्बरमासीयगजपक्षमितदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं तत्समर्पितमहत्तप्राचीनार्व्वाचीनव्यवस्थाप्रतिरूपपत्रं जिलाख्याबान्तरधर्म्माधिकरणनियुक्तपण्डितलिखितव्यवस्थाप्रतिरूपपत्रं च यच्चदब्दीयदिशाम्बरमासीयमुनिमितदिनसम्बन्धिबृहस्पतिवासरे मया प्राप्तन्तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेण निवेद्यते—

व्यवस्थार सूची

---

* सूचीपत्र द्रष्टव्य

* त्रिंशदधिकशततमव्यवस्थामारभ्य अन्तान्त यावद्व्यवस्थानुली मूलकोषे नास्ति ।

एकान्ने थाकिया ज्येष्ठ भ्राता दोकान करे। ए प्रकारे कनिष्ठ भ्राता ऐ दोकानेर किछु हिस्सार हकदार हइते पारे कि ना, ताहार व्यवस्था ॥ ४७६–४८०

१५९—गोशाम्चिन्द्रकविराज आपिलाण्ट
मोछम्मात जयमणि जीवतमान ओ कृष्णमणि मोतओफात रेस्पाण्डण्टान
कोन व्यक्ति मिलकियतेर दावि एवं दानेर दुइ बुनियादे दरपेश करे। दुइ मतेइ डिगिरि हय। तत्परे दोयरार्के हेवा करिया मृत्यु हय। एमत हेवा सिद्ध हइते पारे कि ना, ताहार व्यवस्था ॥ ४८०–४८२

१६०—लक्ष्मीप्रिया आपिलाण्ट
भैरवचन्द्रचौधुरि ओ गैरह— रेस्पण्डण्टान
उत्तराधिकारिर एवं श्वेत कुष्ठ थाकिले उत्तराधिकारित्व हइते पारे कि ना, इत्यादिर व्यवस्था ॥ ४८२–४८६

१६१—दुलारसिंह ओ गैरह आपिलाण्टान
राणी पद्मावती ओ गैरह रेस्पण्डण्टान
मन्नलालेर पुत्रावधि प्रपितामह पुत्र अर्थात गरिवदासेर पुत्र पर्यन्त ना थाकिले रत्नलालेर प्रपितामह गरिवदासेर पौत्र दुलारसिंह प्रभृतिर उत्तराधिकारिर व्यवस्था ॥ ४८६–४९०

१६२—मसम्मात लक्ष्मीप्रिया आपिलाण्ट
भैरवचन्द्रचौधुरि ओ गैरह रेस्पाण्डण्टान
उत्तराधिकारिर व्यवस्था ४९१–४९३

१६२—वल्लविकान्तचौधुरि वनाम कृष्णप्रियाचौधुराणी ओ नवकान्तचौधुरि
कोन व्यक्ति मुमुर्षु व्यक्तिके कहिले तुमि पोष्यपुत्र ग्रहण करह।
ऐ व्यक्ति हुँ वलि उत्तर दिलेक। एमत पोष्यपुत्र सिद्ध हय—ये
पण्डित लिखियाछेन, ताहा वटे, कि ना—ताहार जबाव
व्यवस्था॥ ५८४–५८८

१६३—एक व्यक्ति भग्नीर जन्मान्ध पुत्र एवं पितृव्यगणके राखिया
निःसन्तान मृत्यु हय—ताहार उत्तराधिकारिर व्यवस्था॥
५८८–५९१

१६४—पनाइलालमण्डलेछ आपिलाण्ट
गोश ओ दुर्गु ओ गोरह रेस्पाण्डएटान
कोन व्यक्ति स्त्री दुइ पुत्रवधू ओ पतिर भ्रातृपुत्रके राखिया
मृत्यु हय, ताहार पश्चिम देश चलित शास्त्र मते उत्तराधिकारिर
व्यवस्था॥ ५९२–५९३

१६५—विमलामयी देव्या आपिलाण्ट
श्रीमतीअन्नपूर्णा ओ दिनाजपुरेर कलेकटर साहेब रेस्पाण्डएटान
शम्भुचन्द्रेर मोक्तारेगय ताहार तीनि पुत्रेर अधिकार हइया दुइ
पुत्रेर मृत्यु हय, ऐ दुइ पुत्रेर मोक्तारेगर अंश शम्भुचन्द्रेर पुत्र
पाइवेक, कि शम्भुचन्द्रेर कन्यागण पाइवेक—ताहार व्यवस्था॥
५९३५९६

१६६—मृत हेमन्तलसिंहेर स्त्री चौधराणी वादी
मृत दयालसिंहेर पुत्र नारायणसिंह प्रतिवादी
पश्चिमदेशीय क्षत्र पञ्चम पुरुष पर्य्यन्त एतद्देशे वास करिया पुत्र
ओ अवीरा कन्या ओ द्वितीय स्त्री ओ ताहार अदत्ता कन्या
वर्त्तमान राखिया मृत्यु हय, तत परे ऐ पुत्रेर मृत्यु हय—इहार

१६२—वज्रविक्रान्तचौधुरि बनाम कृष्णप्रियाचौधुराणी श्रो नवकान्तचौधुरि
कोन व्यक्ति मुमुर्षु व्यक्तिके कहिले तुमि पोष्यपुत्र ग्रहण कर। ऐ व्यक्ति हुँ बलि उत्तर दिलेक। एमत पोष्यपुत्र सिद्ध हय—ये पण्डित लिखियाछेन, ताहा बटे, कि ना—ताहार जबाब व्यवस्था ॥ ५८४–५८८

१६३—एक व्यक्ति भग्नीर जन्मान्ध पुत्र एवं पितृव्यगणके राखिया निःसन्तान मृत्यु हय—ताहार उत्तराधिकारिर व्यवस्था ॥
५८८–५६१

१६४—कनाइलालमफतेह्   आपिलाएट
गोरा श्रो दुखु श्रो गैरह   रेस्पाण्डएटान
कोन व्यक्ति स्त्री दुइ पुत्रवधू श्रो पविर भ्रातृपुत्रके राखिया मृत्यु हय, ताहार पश्चिम देश चलित शास्त्र मते उत्तराधिकारिर व्यवस्था ॥ ५६२–५६३

१६५—विमलामयी देव्या   आपिलाएट
श्रीमतीअन्नपूर्णा श्रो दिनाजपुरेर कलेकटर साहेब रेस्पाण्डएटान
शम्भुचन्द्रेर मोसाहेराय ताहार तीनि पुत्रेर अधिकार हइया दुइ पुत्रेर मृत्यु हय, ऐ दुइ पुत्रेर मोसाहेरार अंश शम्भुचन्द्रेर पुत्र पाइवेक, कि शम्भुचन्द्रेर कन्यागण पाइवेक—ताहार व्यवस्था ॥
५६३ ५६६

१६६—मृत हेमब्रजसिंहेर स्त्री चौराशी   वादी
मृत दयालसिंहेर पुत्र नारायणसिंह   प्रतिवादी
पश्चिमदेशीय क्षत्रि पञ्चम पुरुष पर्य्यन्त एतद्देशे वास करिया पुत्र श्रो अवीर कन्या श्रो द्वितीया स्त्री श्रो ताहार अदत्ता कन्या वर्त्तमान राखिया मृत्यु हय, तत परे ऐ पुत्रेर मृत्यु हय—इहार

---

१ वतसरेर व्यय.

२४८—प्रानन्ददास बनाम राधाचन्द्र बाछ

कोन व्यक्ति तीर्थवासि हइया किछु मिलकियत खरिद करिया भोगवान थाकिया स्त्रीके राखिया मृत्यु हय। शास्त्रानुसारे उत्तराधिकारि मृतस्य सम्पर्कीर आत्मबन्धु हइवेक, कि ऐ स्त्री दखलिकार हइया दान विक्री करिते पारिवेक—ताहार व्यवस्था॥ ७३८—७४०

२४९—प्रतापनारायणचक्रवर्त्ति हिसाविदार
परमानन्दचक्रवर्त्ति श्रो गैरह तरफसानियान
निजामपुरेर ब्राह्मण वहेगादिगेर शयन पूजन विषये बिलार पण्डित ये व्यवस्था दियाछेन ताहा यथार्थ बटे कि ना—इत्यादिर व्यवस्था॥ ७४०—७४६

२५०—सिउप्रसाद श्रो कुञ्जवेहारिलाल बनाम मोहम्मदाक्षान मन्सुयविवि श्रो गै(रह)

कोन व्यक्ति अविवाहिता स्त्रीर सन्तान हइयाथाके। ऐ सन्तानेर पिता बलिया आदालते अलि दर्शाइया नालिश करिया थाके, तबे उहार उत्तराधिकारि ऐ सन्तान हइवेक कि भ्रातष्पुत्र हइवेक—इहार उत्तराधिकारिर व्यवस्था॥ ७४७—७४९

२५१—नरकुसिंह मुद्दाबालेह आपिलाएट
बनाम
मेघासिंह श्रो असुरसिंह रेस्पाडएटान
एक व्यक्ति पुत्र श्रो भ्रातष्पुत्र विद्यमाने मौरशी धन हइते किञ्चित भगिनीर पुत्रके श्रो पितृस्वस-पुत्रके दान, एवं अर्शी करिया दियाथाके, ए प्रकार दस्तावेज यथार्थ बटे कि ना-इत्यादिर व्यवस्था॥ ७५०—७५१

२५२—दुर्गादासधरेर पिता श्रो अलि श्रो अछि आलम—
चन्द्रधर आपिलाएट
विजयगोविन्दवडाल श्रो गयरह रेष्पाडएटान
पितृ-दौहित्रेरा अधिकारि हइया विभाग करिया लइते पुनराय

शुद्धिपत्रम्

पृष्ठे	पङ्क्तौ	अशुद्धम्	शुद्धम्
४	१०	मनुवचनञ्जेति	मनुवचनञ्चेति
५	१५	दाखिल	दखिल
६	५	भन	भनं
६	६	देवोयानि	देश्रोयानि
६	११	श्रदालतेर	श्रादालतेर
६	२०	दरखाश्त	दरखास्त
११	८	ञ्पटो	ञ्पट्टी
११	८	शतरञ्जी	सतरञ्जी
११	२२	जो	जे
१४	१८	श्रापीलायदेर	श्रापीलावडेर
१५	१	शास्त्र मते	शास्त्र मत
१५	१५	एतदर्म्मधि०	एतद्धर्म्माधि०
१६	५	प्रभारोशा०	प्रभोराशा०
१६	८	शताम्	शतम्
२५	२२	निबन्धनुमु०	निबन्धनमुर०
२५	२२	मुकावल्या	मुक्तावल्यां
२६	११	सस्काराणामभन्न्नतः	संस्काराणामन्यतः
२६	१५	मुद्द त	मुद्दत
३२	२	उद्ध्र्वे	ऊर्द्ध्वं
४६	४	मोजाक	मोजोक
५४	६	भ्रातृपर्य्यान्ता०	भ्रातृपर्य्यन्ता०
६१	६	माहार	माहार लिखित
६४	१३	गर्म्भजातित्वेन	गर्म्भजातत्वेन
६७	फूटनोट	स्वेवञ्चतनु०	स्वेच्च तच्च द्०

पृष्ठे	पङ्क्तौ	अशुद्धम्	शुद्धम्
७१	८	राधावन्वव	राधावल्लभ
७१	१८	१७२२	१७३१२
७१	२५	सलवाह	सरवराह
७२	४	पाडा	पाट्टा
७२	७	से	से व्यक्ति
७२	८	राखे ना	राखे कि ना
७२	१६	भूम्युत्सर्ज०	भूम्युत्सर्ज०
७२	२०	देवस्वभूम्यादे०	०भूम्यादे०
७६	१६	दाखिलकार	दखिलकार
८०	२१	व्यवस्या	व्यवस्था
१०१	१०	श्रोजं०	श्रोजं०
१०४	८	साहेवेर	साहेवेर हुजुर
१०४	१३	दे	देन
१०४	१४	यदि	यः
१०४	१६	मेकनटन	मेकनाटन
१२१	१४	व्यवस्थार	व्यवहार
१२१	२१	करायाय	करारय
१२१	२२	शास्त्रेर	शास्त्रेर आज्ञा
१२२	२१	वाप्युपधि	वाप्युपाधि
१२६	२२	ततरकन्याया	तरकन्याया
१३०	२२	लिखित्वात्	लिखितत्वात्
१३३	१०	प्रतिष्ठितानां	अप्रतिष्ठितानां
१४०	१४	मातृणां	भ्रातृणां
१४१	१४	दाखिले	दाखिल
१४१	२२	घन	घन हइते
१४३	१४	रामकनिर	रामकालीर
१४३	१५	इवसालि	इवसालि

पृष्ठे	पङ्क्तौ	अशुद्धम्	शुद्धम्
१४३	२१	सउ टाकार	सओ टाकार
१४४	१४	कारिष्यामिती०	करिष्यामीति०
१४४	१२	राषo	रत्न०
१४८	२	दुद	दुद
१५०	१७	कुमार्य्यभावे	कुमार्य्यभावे
१५४	१६	व्यक्त	व्यक्ति
१५७	१५	१८१८	१८२८
१५६	११	स्वत्वाकी	स्वत्व वाकी
१६२	८	१८१८	१८२८
१६६	१२	अच्छादनेर	आच्छादनेर
१७०	१२	यावज्जीव	यावज्जीवं
१७२	१३	आजिमावादेर	आजिमावादेर
१७४	१६	०स्वशांशहरणे	०स्वांशहरणे
१८८	२०	मार्च्च	मार्च्च
१८६	६	चौधरिरी	चौधरि
२०१	१७	कोठ	कोटे
२२०	२२	सराजका	सराजकरा
२२२	३	कारिया	करिया
२२३	२४	समानजातीययोः	समानजातीययोः
२२५	१४	करग्रहण०	करग्रहण०
२२७	२२	० व्ययाय	० व्ययार्थ
२३७	१०	पितुर्य्युपरते	पितर्य्युपरते
२३८	१	०तर्कालङ्कार०	०तर्कालङ्कार०
२३८	१६	प्रश्नेर	प्रश्नेर
२४४	१०	व्यवहारिकै०	व्यावहारिकै०
२५२	३	सद्गन्धे	सम्मन्धे
२५५	३	सत्व०	सर्व्व०

पृष्ठे	पङ्क्तौ	अशुद्धम्	शुद्धम्
२५५	१६	८७	८३
२६२	४	नेजामह्निनेर	नेजामह्निनेः
२७८	२	व्यतिरिक्तो उत्तरा०	व्यतिरिक्तोत्तरा०
२६७	६	पत्ते	पते
२६७	१८	याज्ञवल्य:	याज्ञवल्क्यः
३०२	५	०प्रत्यीय०	०प्रत्यर्थि०
३०४	३	मन्यकारैर्वा	ग्रन्थकारैर्वा
३०४	२६	पितुरच्छयैव	पितुरिच्छयैव
३०५	२	काङचान्ति	काङ्क्षन्ति
३०५	१६	निरुद्दो	निरूढो
३०५	२५	मरणपातित्यादि	मरणपातीत्यादि
३०६	६	लिखितैतद्दोय	लिखितैतद्ग्रन्थीय
३१६	४	त्रिशत्सहस्रो०	त्रिंशत्सहस्रो०
३२४	७	०धिकारः	०धिकारः
३२६	१६	०प्रपौत्रपर्य्यन्त०	०प्रपौत्रपर्यन्त०
३२७	२४	०द्दीय०	०न्दीय०
३३७	६	आयत्ति०	आपत्ति०
३६५	७	यदेतन्दीय	यदेतद्ग्रन्थीय०
३६५	१५	भ्राता भ्रा०	भ्रात्रा भ्रातृ०
३६८	१	ग्रहादि०	संग्रहादि०
३७५	६	तद्ग्राहकाणां	तद्ग्राहकाणां
३७६	५	शब्दस्वचनस्यैक०	शब्दस्ववचनस्यैक०
३७६	१५	दद्याः	दद्युः
३७७	८	वचनेभ्यो	वचनेभ्यो
३७८	३	निबादशांशत्वांश	निबादशांशत्वांशं
३७८	१६	वैयर्थ्या०	वैयर्थ्या०
३७६	१	विषयपन्त्वस्था०	विषयकत्वस्था०

पृष्ठे	पङ्क्तौ	अशुद्धम्	शुद्धम्
३८१	१३	पितर्य्यपरते	पितर्य्युपरते
३८२	६	०योग०	०योग०
३८६	१८	वर्षसहस्त्रे०	वर्षसहस्रै
३९१	१०	०याग्ये	०योग्ये
४१८	६	पतद्धर्म्माधिकरणा०	एतद्धर्म्माधिकरणा०
४५२	२४	विवारयिष्यन्तीति	निवारयिष्यन्तीति
४५५	६	ग्रिन्थ०	ग्रन्थ०
४६६	२३	सदिपुप०	साध्वुप०
५४६	२१	दानकयादेः	दानकयादेः
५५३	२५	तच्छत्रसम्मतं	तच्छास्त्रसम्मतं
५५७	७	दीपचन्द्रमागिनी	दीपचन्द्रभगिनी
५५७	१४	"	"
५६०	१७	ब्राह्मयो०	ब्राह्मयो०
५६०	२५	प्रावल्येय	प्रावल्येन
५६६	१६	दायभागादि०	दायभागादि०
६१२	२५	लिखितेशब्द	लिखितेशवीशब्द०
६९८	१२	भर्त्त०	भर्तृ०
७१३	१६	भर्त्ता	भर्त्रा
७१३	२६	भर्त्ता	भर्त्रा
७२४	२६	धनाहकाः	धनार्हकाः
७३४	४	भर्त्ता	भर्त्रा
७७४	८	श्रूर्या०	शूया०
७७४	१८	०प्रतिवाद्य०	०प्रतिपाद्य०

—❀—